काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

BANARAS HINDU UNIVERSITY

वार्षिक रिपोर्ट

२०१४-२०१५

सम्पादन समिति

अध्यक्ष
प्रो. सुशीला सिंह
अंग्रेजी विभाग, म.म.वि.

सदस्य
प्रो. वी. के. सिंह
सांख्यिकी विभाग, विज्ञान संकाय

प्रो. जे. पी. श्रीवास्तव
पादप कार्यिकी विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान

प्रो. एम. एस पाण्डेय
अंग्रेजी विभाग, कला संकाय

प्रो. वी.एन. त्रिपाठी
हिन्दी विभाग, कला संकाय

प्रो. ए. वी. शर्मा
यूजीसी एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज

डॉ. पी. दलाई
अंग्रेजी विभाग, कला संकाय

सदस्य सचिव
श्री मनोज कुमार पाण्डेय
संयुक्त कुलसचिव (शिक्षण)

लेआउट एवं डिजाइन परिकल्पना: **टी. नाथ**
कुलसचिव, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित।

संस्थापक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय

२५.१२.१८६१ – १२.११.१९४६

(पौष कृष्ण अष्टमी, वि. सं. १९१८ – मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी, वि. सं. २००३)

The Founder

of the

BANARAS HINDU UNIVERSITY

Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya

25.12.1861 – 12.11.1946

(Paush Krishna Ashtami, V.S. 1918 – Margashirsha Krishna Panchami, V.S. 2003)

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

"I do not covet kingdom, neither heaven, nor Nirvana
the only desire to serve Disconsolate."

– Mahamana Malaviya

Dr. SHANTI SWARUP BHATNAGAR
Eminent Scientist
who composed the BHU Kulgeet

कुलगीत

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर,
यह सर्वविद्या की राजधानी।

यह तीनों लोकों से न्यारी काशी।
सुज्ञान धर्म और सत्यराशी।।
बसी है गंगा के रम्य तट पर,
यह सर्वविद्या की राजधानी। मधुर-।।

नये नहीं है यह ईंट पत्थर।
है विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर।।
रचे हैं विद्या के भव्य मन्दिर,
यह सृष्टि की राजधानी। मधुर-।।

यहाँ की है यह पवित्र शिक्षा।
कि सत्य पहले फिर आत्म-रक्षा।।
बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर,
यह सत्य शिक्षा की राजधानी। मधुर-।।

यह वेद ईश्वर की सत्यबानी।
बने जिन्हें पढ़ के ब्रह्मज्ञानी।
थे व्यास जी ने रचे यहीं पर,
यह ब्रह्मविद्या की राजधानी। मधुर-।।

वह मुक्तिपद को दिलाने वाले।
सुधर्म पथ पर चलाने वाले।।
यहीं फले फूले बुद्ध शंकर,
यह राज ऋषियों की राजधानी। मधुर-।।

सुरम्य धारायें वरुणा अस्सी।
नहाए जिनमें कबीर, तुलसी।।
भला हो कविता का क्यों न आकर,
यह वाग् विद्या की राजधानी। मधुर-।।

विविध कला अर्थशास्त्र गायन।
गणित खनिज औषधि रसायन।।
प्रतिचि-प्राची का मेल सुन्दर,
यह विश्वविद्या की राजधानी। मधुर-।।

यह मालवी की है देश भक्ति।
यह उनका साहस यह उनकी शक्ति।।
प्रकट हुई है नवीन होकर,
यह कर्मवीरों की राजधानी। मधुर-।।

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर,
यह सर्वविद्या की राजधानी।

Kul-Geet (English Translation)

So sweet, serene, infinitely beautiful
This is the presiding centre of all learing.

Radiant Kashi, wonder of the three worlds
Treasure-Chest of Jnana, Dharma and Satya
Nestling on Ganga's bank, centre for all disciplines.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

No Recent work of brick and stone
Primordial design of divinity alone
Mansions of Vidya, centre for all creation.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Clear here is the doctrine pure
Truth first, then only one's self
Home of Harishchandra, Truth's testing ground.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

The Voice of God in Vedic record
Constant Inspiration for soul-accord
Work-shop of Veda Vyasa, centre for Brahma Vidya.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Find here the steps to freedom
Tread here the path of Dharma
Flaming trail Buddha's and Shankara's centre for philosopher-kings.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly- -)

Life-Giving waters of Varuna and Assi
Sustenance of Kabir and Tulsi
Fountainhead of eloquent speech and poetry.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Music, Economics, other arts so many
Maths, Mining, Medicine and Chemistry
Fraternal forum of East and West, university in truest sense.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Patriotism of Malaviyaji
His intrepidity and energy
All in youthful manifestation,
centre for men of action

So sweet, serene, infinitely beautiful
This is the presiding centre of all learing.

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
An Institution of National Importance established by an Act of Parliament

प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी
कुलपति

Prof. Girish Chandra Tripathi
Vice-Chancellor

VARANASI-221 005 (INDIA)
Phone : 91-542-2368938, 2368339
Fax : 91-542-2369100, 2369951
e-mail : vc@bhu.ac.in
website : www.bhu.ac.in

दिसम्बर ०४, २०१५

प्राक्कथन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सत्र २०१४-१५ का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस प्रतिवेदन में उन शैक्षणिक, पाठ्यक्रम-सहायक एवं विकासात्मक कार्यक्रमों और गतिविधियों का उल्लेख है जो विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों, संकायों, विभागों, विद्यालयों, केन्द्रों एवं अन्य इकाईयों ने इस समयावधि में प्रस्तुत, प्रदर्शित तथा सफलतापूर्वक सम्पन्न किए हैं।

हमारी इस ख्यातिलब्ध एवं प्रशंसित संस्था के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी का देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत होना हमारे लिए अत्यन्त हर्ष और गौरव का विषय है। एक मर्मज्ञ स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ ही शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान एवं भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय भावधारा का प्राण फूंकने वाले महामना को यह सम्मान प्रदान करना सर्वथा उचित एवं प्रशंसनीय है। इस 'अलंकरण' को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में रखे जाने के निर्णय से इसके छात्रों, अध्यापकों एवं विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को निरंतर प्रेरणा मिलती रहेगी।

महामना के स्वप्न तथा उनके निर्देशित पथ के अनुरूप विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की जीवनशैली में एक नवीन् शक्ति के संचार करने तथा जीविकोपार्जन निपुणता में वृद्धि लाने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कायक्रमों और नीतियों को समग्र शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वित करने का प्रयास किया गया है। एक मूल्यपरक एवं संस्कृति सम्पन्न शिक्षा की एक सुदृढ़ नींव प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न संकायों द्वारा झाँकी एवं जुलूस निकालने की स्वस्थ परम्परा एवं विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए साप्ताहिक गीता प्रवचन आदि को पुनर्जीवित किया गया है तथा दीक्षांत समारोह में भारतीय परिधान का प्रयोग आदि, हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रयास रहे हैं। प्राचीन भारतीय ज्ञान सम्पदा, संस्कृति, साहित्य, संगीत और परम्परा की भव्यता और समृद्धि को आधुनिक ज्ञान की धारा से जोड़ने एवं उनके समुचित अध्ययन के निमित्त 'भारत अध्ययन केन्द्र' की स्थापना भी हमारा एक महत्त्वपूर्ण कदम रहा है। इन्हीं सब के साथ विद्यार्थियों के समुन्नयन हेतु अन्य अनेक योजनाएँ भी प्रारम्भ की गयी हैं।

'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत और समृद्ध भारत', इस अभियान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के रूप में विश्वविद्यालय ने कई विकासात्मक कार्यक्रमों की शुरूआत की है, यथा- एक अत्याधुनिक सुविधा सम्पन्न ट्रॉमा सेन्टर का विधिवत शुभारम्भ, अधिक उत्पादन वाली फसलों का विकास, अंगीकृत गाँवों के समग्रिक विकास हेतु 'सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ' एवं विश्वविद्यालय – उद्योग जगत सहभागिता प्रकोष्ठ की स्थापना आदि। यह विश्वविद्यालय अंतर्विज्ञानिक नवोन्मेषी तथा उद्योगोन्मुखी अनुसंधान को सामग्रिक सुविधा सम्पन्न बनाने के लिए एक 'केन्द्रीय अन्वेषण केन्द्र' की स्थापना करने की दिशा में भी अग्रसर है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय दिनांक २५ जनवरी, २०१५ से ही अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस शताब्दी वर्ष में विभिन्न शैक्षणिक, साहित्यक, सांस्कृतिक एवं खेल गतिविधियों को समारोह पूर्वक सम्पन्न कराने की एक अनोखी योजना भी बनाई गई है।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नैक) द्वारा चार स्तरीय मानक के आधार पर इस विश्वविद्यालय को ३.४१ अंकों के साथ फिर एक बार 'ए' श्रेणी प्रदान किया गया है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

इस विश्वविद्यालय में शिक्षण एवं शोध के क्षेत्र में अधिकाधिक गुणात्मक उत्कर्ष लाने, पठन-पाठन तथा प्रशासन में ई-गवर्नेंस को प्रभावी बनाने तथा शिक्षा एवं शोध में रत् नवोन्मेषी शिक्षकों एवं शोधार्थियों को पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित करने की योजना पर भी हम निरन्तर प्रयासरत् हैं एवं अपने सतत् प्रयास के फलस्वरूप विश्वविद्यालय ने देश के शीर्ष तीन विश्वविद्यालयों में लगातार अपना स्थान बनाये रखा है।

सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों और इससे सम्बद्ध उन सभी व्यक्तियों को जिन्होंने इस वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने में अक्लान्त परिश्रम किया है, उनकी सराहना करता हूँ और उन्हें हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

(गिरीश चन्द्र त्रिपाठी)

विषय सूची

भाग- १

१. भूमिका

१.१. विश्वविद्यालय - एक दृष्टि में १५-२२
१.२. शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ की प्रमुख विशेषताएँ २३-३२

२. विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अवयव (अंग)

२.१. मुख्य परिसर

२.१.१. संस्थान

२.१.१.१. कृषि विज्ञान ३७-४४
२.१.१.२. चिकित्सा विज्ञान (आधुनिक, आयुर्वेद, दन्त चिकित्सा) ४५-५३
२.१.१.३. पर्यावरण एवम् संपोष्य विकास ५४-५६

२.१.२. संकाय

२.१.२.१. कला ५८-६२
२.१.२.२. वाणिज्य ६३-६४
२.१.२.३. शिक्षा ६५-६६
२.१.२.४. विधि ६७-६८
२.१.२.५. प्रबन्ध शास्त्र ६९-७२
२.१.२.६. संगीत एवं मंच कला ७३-७५
२.१.२.७. विज्ञान ७६-८४
२.१.२.८. सामाजिक विज्ञान ८५-८८
२.१.२.९. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान ८९-९०
२.१.२.१०. दृश्य कला ९१-९३

२.१.३. महिला महाविद्यालय ९४-९५

२.१.४. अध्ययन केन्द्र

२.१.४.१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ९७
२.१.४.२. आनुवांशिकी विकार ९८-९९
२.१.४.३. डी. एस. टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान १००-१०१
२.१.४.४. नेपाल अध्ययन १०२
२.१.४.५. महिला अध्ययन एवं विकास १०३-१०४
२.१.४.६. मालवीय शांति अनुसंधान १०६-१०७
२.१.४.७. समन्वित ग्रामीण विकास १०८
२.१.४.८. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन १०९-११०
२.१.४.९. मस्तिष्क अनुसंधान १११-११२
२.१.४.१०. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र ११३
२.१.४.११. नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र ११४

२.१.५. स्कूल
२.१.५.१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल ११६-११८
२.१.५.२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल १२०-१२१
२.१.५.३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय १२२-१२३
२.१.६ का.हि.वि.वि. ग्रंथालय प्रणाली १२४-१३१
२.१.७ यू.जी.सी. ऐकेडमिक स्टाफ कॉलेज १३२-१३४
२.१.८ मालवीय भवन १३५-१३६
२.१.९ भारत कला भवन १३७-१३८
२.२. दक्षिणी परिसर १४०-१४३
२.३. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय
२.३.१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज १४६-१४९
२.३.२. वसन्त महिला महाविद्यालय १५०-१५३
२.३.३. वसन्त कन्या महाविद्यालय १५४-१५७
२.३.४. दयानन्द पी.जी. कॉलेज १५८-१६०
३. अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम १६१-१६७
४. प्रदत्त उपाधियाँ/ सनद/ प्रमाण पत्र १६८-१६९
४.१. छात्रों की संख्या १७०-१७२
५. मानव संसाधन रूपरेखा १७३-१७५
६. वित्तीय संसाधन १७६-१७७
७. पुरस्कार, सम्मान व पेटेन्ट १७९-२००
८. छात्रवृत्तियाँ/ अध्येतावृत्तियाँ (छात्रों के लिये) २०१
९. सुविधाएँ
९.१. आवास २०४
९.१.१. छात्रावास (बालक) २०४
९.१.२. छात्रावास (बालिका) २०६
९.१.३. छात्रावास (विवाहित/विदेशी छात्र) २०६
९.१.४. विश्वविद्यालय कर्मचारियों के निवास हेतु आवास सुविधाएँ २०६
९.२. अतिथि गृह संकुल २०७
९.३. इन्टरनेट एवं संगणक २०७
९.४. सम्मेलन कक्ष २०७
९.५. पुरातन छात्र प्रकोष्ठ २०८
९.६. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् २०८-२०९
९.७. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय २०९-२१०
९.८. अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र २१०-२११
९.९. समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ २११-२१४
९.१०. विद्युत, जल और दूरभाष केन्द्र २१४
९.११. अनुरक्षण (भवन एवं उपकरण) २१४-२१७

९.१२. स्वास्थ्य देखभाल (अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्र)	२१८-२२०
९.१३. विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद्	२२०-२२३
९.१४. छात्र अधिष्ठाता द्वारा आयोजित कार्यक्रम	२२३-२२६
९.१५. अभिरुचि केन्द्र	२२६
९.१६. जलपान गृह	२२६-२२८
९.१७. राष्ट्रीय सेवा योजना	२२८-२३२
९.१८. नेशनल कैडेट कोर	२३२-२३४
९.१९. बैंक एवं डाक घर	२३४
९.२०. रेल आरक्षण पटल	२३४-२३५
९.२१. एयर स्ट्रीप एवं हेलीपैड	२३५
९.२२. विपणन संकुल	२३५
९.२३. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क्लब	२३५
९.२४. छात्र कल्याण	
९.२४.१. संस्थापन सेवा	२३५-२३६
९.२४.२. विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र	२३६-२३८
९.२४.३. छात्र परिषद्	२३८
९.२४.४. नगर छात्र निकाय	२३८
९.२४.५. छात्र कल्याण: समान अवसर एवं समावेशी पद्धति	२३८-२४०
९.२४.६. पाठ्येतर क्रियाकलाप	२४०-२४५
९.२५. हिन्दी प्रकाशन समिति	२४५

भाग – २

परिशिष्ट-१	विश्वविद्यालय के कोर्ट, कार्यकारिणी परिषद् व विद्वत् परिषद् के सदस्यगण एवं अधिकारीगण	२४७-२५६
परिशिष्ट-२	वर्ष २०१४-१५ में विश्वविद्यालय के शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान का विवरण	२५७-२७०
परिशिष्ट-३	विभिन्न अभिकरणों द्वारा वित्तपोषित शोध परियोजनाओं की सूची	२७१-२७७
परिशिष्ट-४	वर्ष २०१४-१५ में आयोजित कुछ प्रमुख संगोष्ठियाँ, सम्मेलन एवं कार्यशालाएँ	२७८-२८४
परिशिष्ट-५	वर्ष २०१४-१५ में शैक्षणिक विचार-गोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षकों की संख्या का विवरण	२८५-३१५
परिशिष्ट-६	वर्ष २०१४-१५ में सीधी नियुक्ति और पदोन्नति	३१६

मालवीय भवन

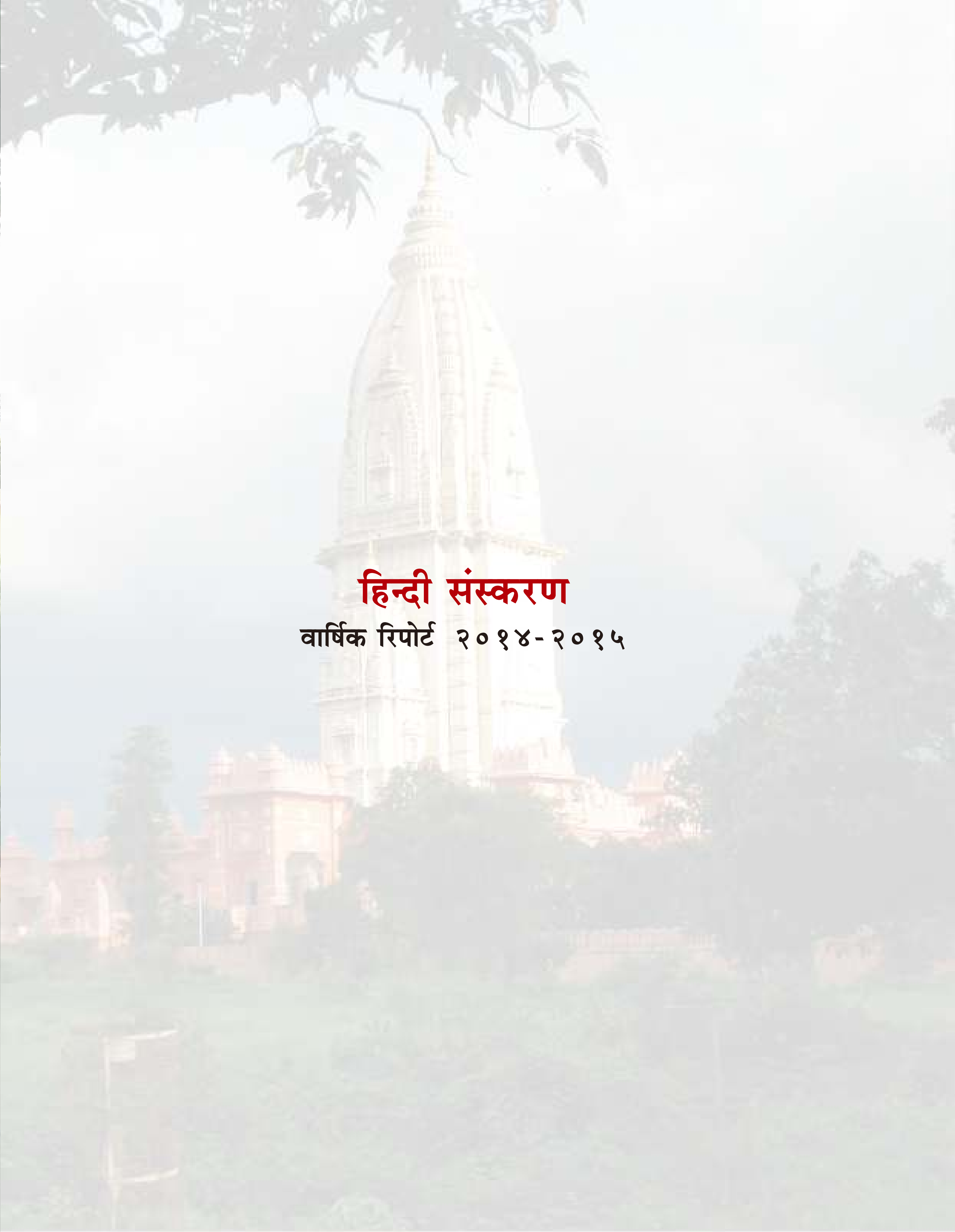

हिन्दी संस्करण

वार्षिक रिपोर्ट २०१४-२०१५

अद्‌भुत स्थापत्य कला

प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

१ - भूमिका

महामना के परिसर की दृष्टि १९१६ में

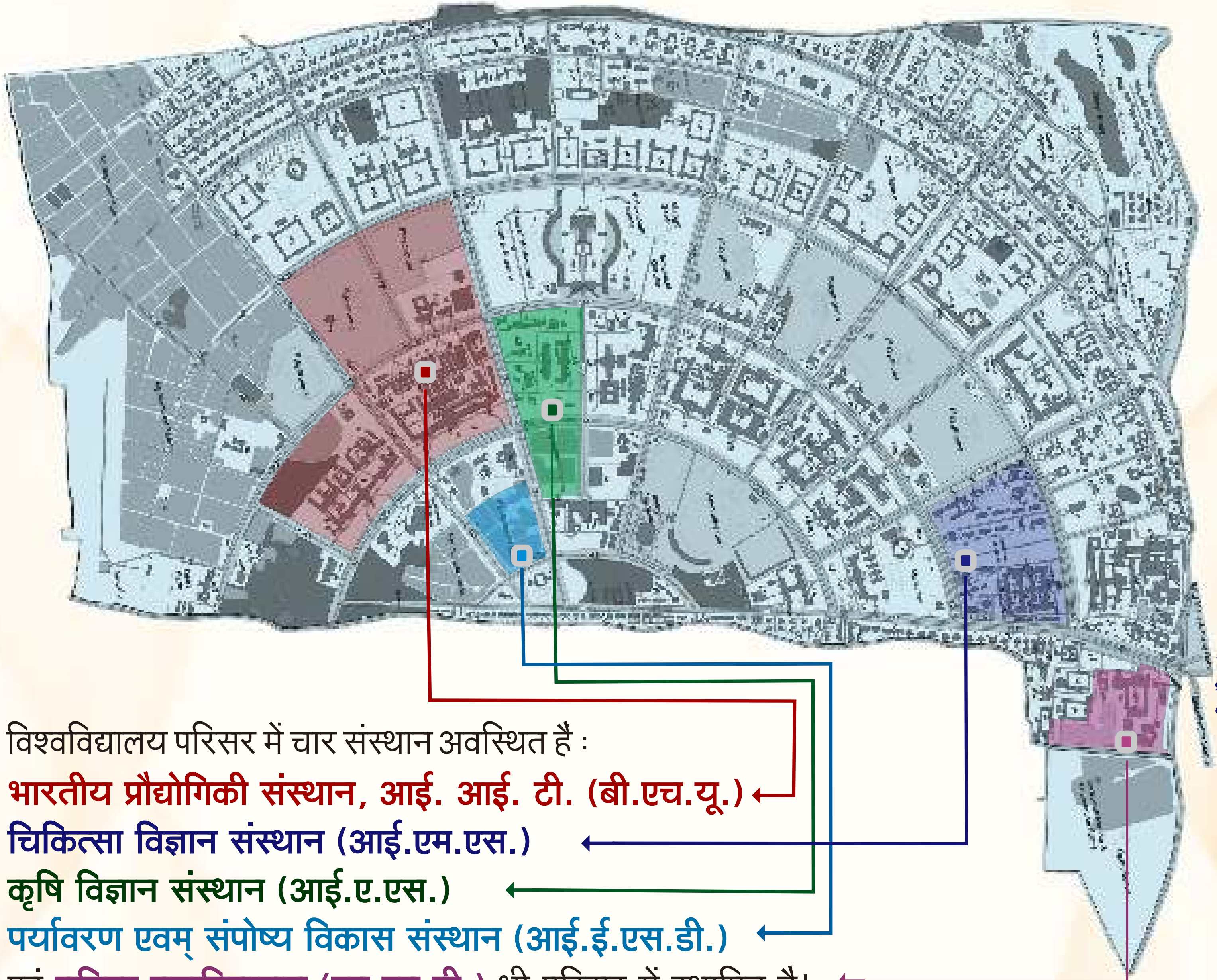

विश्वविद्यालय परिसर में चार संस्थान अवस्थित हैं :

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आई. आई. टी. (बी.एच.यू.)

चिकित्सा विज्ञान संस्थान (आई.एम.एस.)

कृषि विज्ञान संस्थान (आई.ए.एस.)

पर्यावरण एवम् संपोष्य विकास संस्थान (आई.ई.एस.डी.)

एवं महिला महाविद्यालय (एम.एम.वी.) भी परिसर में स्थापित है।

१.१. विश्वविद्यालय - एक दृष्टि में

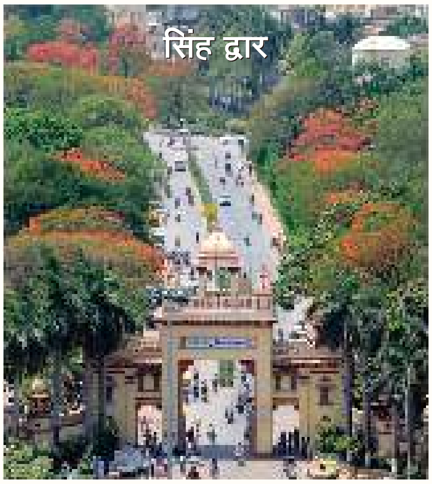

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (का.हि.वि.वि.), देश के अति-प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है जिसकी स्थापना महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी द्वारा सन् १९१६ में की गयी थी। यह एक स्वायत्तशासी उत्कृष्ट संस्था है जिसके विज़िटर भारत के महामहिम राष्ट्रपतिजी हैं। यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है। पं. मदन मोहन मालवीयजी, डॉ. एनी बेसेंट एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन् जैसे मनीषियों की दूरदर्शिता का जीवन्त प्रतीक यह राष्ट्रीय संस्था प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन दृष्टि का एक अद्भुत संगम है। अपने ज्ञानदीप्त संस्थापक द्वारा पल्लवित-प्रतिपादित शिक्षा की समग्र और पवित्रतामूलक पद्धति को नूतन आयामों से जोड़कर यह विश्वविद्यालय युवा वर्ग का उन्नयन तथा उनकी सृजनात्मक प्रतिभा का संपोषण एवं सुविधाएँ प्रदान कर रहा है।

संस्थापक की दृष्टि

- ''यह मेरी हार्दिक इच्छा और उम्मीद है कि आज से स्थापित होने वाले इस प्रकाश स्तम्भ से ऐसे स्नातक दीक्षित हों जो न केवल बौद्धिकता में विश्व के किसी भी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समतुल्य हों बल्कि एक सुसंस्कृत जीवन यापन करने वाले देशभक्त तथा धर्मनिष्ठ हों।''
- ''एक आवासीय विश्वविद्यालय अपने उद्देश्य के प्रति अपूर्ण है यदि वह अपने स्नातकों में समान उत्कंठा से उनकी भावावेगों को समुन्नत नहीं करता जिस प्रकार उनके बौद्धिक विकास हेतु वह सचेष्ट है। अतएव इस विश्वविद्यालय ने अपना मूल लक्ष्य युवकों का चरित्र निर्माण के लिए निर्धारित किया है। यह संस्थान न केवल अभियन्ताओं, वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, धार्मिक विचारकों, व्यापारियों को बनाने के लिए प्रयत्न करेगा बल्कि ऐसी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करेगा जो अत्यंत चरित्रवान, नैतिक तथा सम्मान के योग्य होंगे, जिनका उदाहरण महान विश्वविद्यालय के महनीय उद्देश्यों के समरूप दिया जा सकेगा।''

विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय की स्थापना चरित्र निर्माण तथा अभिभावकत्व की मूल परिकल्पना के अनुरूप एक आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में की गई। यह सम्भवत: विश्व का अनूठा विश्वविद्यालय है जिसमें ५५० हेक्टेयर (१३६० एकड़) के चहारदीवारी से घिरे तथा स्थापत्य की दृष्टि से अनुपम भवनों के परिसर में नर्सरी से लगायत डॉक्टरेट उपाधि तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। इस विशाल हरीतिमा से परिपूर्ण परिसर में विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं तकनीकी, मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य, विधि, शिक्षा, दृश्यकला, मंचकला, संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान, कृषि, पुस्तकालय विज्ञान, पत्रकारिता तथा बड़ी संख्या में भारतीय एवं विदेशी भाषाओं आदि लगभग समस्त विधाओं की शिक्षा प्रदान की जाती है।

विश्वविद्यालय के ११ विभागों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत (इनमें ६ उच्चानुशीलन केन्द्र तथा ६ विभाग डी. आर. एस. लेवल १ और ४) वित्तीय अनुदान प्राप्त हैं। अन्य ५ विभागों/ स्कूलों को विज्ञान एवं तकनीकी विभाग (भारत सरकार) के डी. एस. टी. - फिस्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत वित्तीय अनुदान मिल रहा है। शहर में अवस्थित चार महाविद्यालयों को विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्रदान की गयी है। विश्वविद्यालय तीन विद्यालयों का भी संचालन करता है इसके अतिरिक्त एक केन्द्रीय विद्यालय भी परिसर में अवस्थित है। इनके अलावा मुख्य परिसर से ७५ किलोमीटर दूर मिर्जापुर जिले के बरकछा नामक स्थान पर १०९२.६ हेक्टेयर (२७०० एकड़) भूमि के विस्तृत परिसर में सन् २००६ में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर की भी स्थापना की गई है।

उत्कृष्टता का प्रतीक

इंडिया टुडे (३१ मई, २०१०) में प्रकाशित इंडिया टुडे-नील्सन सर्वेक्षण के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रथम श्रेणी प्राप्त हुआ है। यह महत्वपूर्ण सर्वेक्षण प्रसिद्धि, शैक्षणिक गुणवत्ता, संकाय गुणवत्ता, शोध प्रकाशन/रिपोर्ट/परियोजना, बुनियादी संरचना एवं रोजगार अवसरों जैसे छ: विशिष्ट मानकों के विश्लेषण पर आधारित था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षण एवं शोध की गुणवत्ता के आयाम में सुधार करने के लिए निरंतर प्रयास किये गये हैं। सत्र २००९-१० के दौरान प्रतिष्ठित पत्रिका करेंट साइंस में प्रकाशित दस वर्षीय सर्वेक्षण में सूचकांक जर्नलों में अधिकतम शोध-पत्रों के प्रकाशन के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को सर्वोच्च २५ भारतीय विश्वविद्यालयों में पहले स्थान पर रखा गया है। इंडिया टुडे के (जून २०१३) में प्रकाशित इंडिया टुडे-नील्सन के द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारत के पाँच शीर्ष विश्वविद्यालयों में स्थान रखता है। अन्य एजेंसियों ने भी इस विश्वविद्यालय एवं इसके विभिन्न संकायों/विभागों को समान प्रकार की श्रेणी दी है।

कृषि विज्ञान संस्थान

समग्र कृषि और संबद्ध विज्ञान के सतत् और समान विकास के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध, मानव संसाधन विकास अध्यापन, अनुसंधान एवं विस्तार के एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से स्वतंत्रता, सुरक्षा और समृद्धि के द्वारा मानव संसाधन का विकास करना ज्ञान निर्माण कारक उपयोग दक्षता, फसलों / सब्जियों / फलों / पशुओं / मुर्गी / मछली में उत्पादन, गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन सुधार, आजीविका सुरक्षा में सुधार और भुखमरी मुक्त समाज के सपने को साकार करने की दिशा में संस्थान ने सतत् २०१२-१३ में उपलब्ध संसाधनों एवं विशेषज्ञताओं के सहयोग से शिक्षा (खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों सहित) और अनुसंधान (प्रसार गतिविधियों सहित) के क्षेत्र में उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

आई.आई.टी. (बी.एच.यू.)

कृषि विज्ञान संस्थान

चिकित्सा विज्ञान संस्थान

सर सुन्दरलाल चिकित्सालय

ब्रोचा छात्रावास

चिकित्सा विज्ञान संस्थान एवं चिकित्सालय

विश्वविद्यालय द्वारा उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड आदि राज्यों से आने वाले गरीबों को १२०० बिस्तर की क्षमता वाले सर सुन्दरलाल चिकित्सालय द्वारा सस्ती चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के अंतर्गत १५० करोड़ रुपये की लागत से ट्रॉमा सेन्टर का निर्माण किया जा रहा है तथा इसके द्वारा बड़े पैमाने पर प्रसार, शोध एवम् अध्ययन-अध्यापन कार्यक्रमों का विस्तार होगा।

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने वर्ष २०१० में एक राष्ट्रस्तरीय पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान स्थापित किया। संस्थान का उद्देश्य संपोष्य विकास के बारे में शिक्षा (समाविष्ट के बारे में जागरूकता विकसित करना) एवं संपोष्य विकास हेतु शिक्षा (संपोष्यता की प्राप्ति हेतु शिक्षा को एक औजार के रूप में उपयोग करना) को शामिल करना है। संस्थान का मिशन ऐसा शिक्षण, शोध व विस्तार कार्य करना है जिससे भविष्योन्मुख भारत का संपोष्य विकास हो तथा गरीबी मिटे और देश के प्राकृतिक संसाधनों का कुशल व समुचित प्रबंधन बरकरार रहे।

एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में संपूर्ण भारत एवं विश्व के ६५ देशों के ३०,००० छात्र एवं छात्राऐं अध्ययनरत् हैं। विभिन्न विषयों के लगभग १५,००० अन्त:वासी छात्र-छात्राओं के लिए इन्टरनेट सहित सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त ६४ छात्रावास उपलब्ध है। १४०० कर्मचारी आवास एवं ७ अतिथि गृह भी हैं।

एन.सी.सी.कैडेट्स के लिए फ्लाइंग प्रशिक्षण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जिसके पास अपनी हवाई पट्टी एवं तीन हेलीपैड है। इनका उपयोग एन.सी.सी. कैडेट्स के प्रशिक्षण के लिए किया जाता है।

पुस्तकालय

का.हि.वि.वि. के केन्द्रीय पुस्तकालय तंत्र में १३,००० ऑनलाइन शोध पत्रिकाओं, ५०,००० ई-पुस्तकों, डिजिटलाइज़्ड पाण्डुलिपियों सहित १५ लाख पुस्तकों का विशाल संग्रह है। यह पुस्तकालय विभागीय, संकायों तथा संस्थानों के पुस्तकालयों की शृंखला का समुच्चय है। इसके अतिरिक्त दिन-रात कार्यरत २०० से अधिक सीटों की एक वातानुकूलित साइबर लाइब्रेरी है जो गरीब छात्रों के लिए देर रात्रि तक अध्ययन की सुविधा प्रदान करता है विशेष रूप से उन छात्रों के लिए जो परिसर से बाहर रहते हैं। छात्राओं को यह सुविधा रात्रिपर्यन्त (रात्रि १० बजे से प्रात: ५ बजे तक) उपलब्ध हो इसके लिए बसों से छात्रावास तक आने जाने की सुविधा सुरक्षाकर्मियों की देख-रेख में उपलब्ध कराई गई है। नवीनीकृत वातानुकूलित पत्रिका अध्ययन कक्ष की भी स्थापना की गई है जिसमें ६० व्यक्तिगत कक्ष शोध छात्रों एवं शिक्षकों के लिए उपलब्ध हैं।

सूचना एवं संचार संरचना

विश्वविद्यालय में १०० किलोमीटर लम्बी फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क है जो समस्त शैक्षणिक एवं प्रशासनिक भवनों तथा छात्रावासों को लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) द्वारा

हवाई पट्टी

साइबर लाइब्रेरी

केन्द्रीय पुस्तकालय

महिला महाविद्यालय

संगणक केन्द्र

संगणक केन्द्र से जोड़ता है एवं उच्च क्षमता की संगणना एवं प्रशिक्षण की सुविधाओं से युक्त है। विश्वविद्यालय को एन.एम.ई.आई.सी.टी. के अंतर्गत नेशनल नॉलेज नेटवर्क के तीन १ जी. बी. पी. एस. नोड् उपलब्ध है।

ब्राण्ड का.हि.वि.वि.

भारत का यह ऐसा पहला केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जिसने 'ग्राफिक आइडेन्टिटी कार्यक्रम' को लागू किया है। इसके अन्तर्गत सील, लोगो, द्विभाषी लोगोटाइप्स, टैगलाइन, कलर आइडेंटिटी के अतिरिक्त कार्यालयीय उपयोग की स्टेशनरी एवं साइनेज़ सिस्टम का मानकीकरण डिज़ाइन स्टूडियो, सोविनियर शॉप, इलेक्ट्रॉनिक, वेब एवं सोशल मीडिया की सहायता से किया जा रहा है।

मन्दिर

परिसर के केन्द्र में भगवान शिव का मन्दिर स्थित है जो 'श्री विश्वनाथ मन्दिर' के नाम से जाना जाता है। सफेद संगमरमर से निर्मित इस मन्दिर का विस्तृत ले-आउट एवं नक्शा स्वयं मालवीय जी की देखरेख में तैयार हुआ था। हरीतिमा युक्त मन्दिर परिसर तथा सुरुचिपूर्ण उद्यान दर्शनार्थियों के नेत्रों को ठंडक तथा मन को शांति प्रदान करता है। मन्दिर के केन्द्र में शिवलिंग तथा दीवारों पर हिन्दू शास्त्रों के श्लोक चित्रों सहित उत्कीर्ण हैं।

भारत कला भवन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का संग्रहालय - भारत कला भवन है जिसमें प्राचीन कलात्मक वस्तुओं का अद्भुत संग्रह उपलब्ध है। भारत कला भवन में १३ कला वीथिकाएँ हैं जिनमें एक लाख से अधिक दुर्लभ कला वस्तुओं तथा दुर्लभ मूर्तियाँ, मिनिएचर पेन्टिंग्स, राजस्थान, मुगल एवम् पहाड़ी पेन्टिंग, सिक्के, गहनें, रत्न आदि सहित ऐतिहासिक महत्व की साहित्यिक वीथिका में प्रसिद्ध लेखकों की हस्तलिखित कृतियाँ संग्रहीत हैं। यहाँ दुर्लभ पुस्तकों का एक पुस्तकालय भी है।

पर्यावरण जागरूकता एवम् सौन्दर्यीकरण

- का.हि.वि.वि. परिसर ५७५.७५ एकड़ का प्रक्षेत्र सुन्दर बागीचों एवं हरीतिमा युक्त है।
- ३३.५ कि.मी. का कटिलें बाड़ों का घेरा है।
- संस्थानों, संकायों, मैदानों एवम् आवासीय परिसरों के चारों तरफ १,४२,८०० झाड़ियाँ लगाई गयी हैं।
- ११ एकड़ की नर्सरी जिसमें ४०,५०० फलदार पौधे, २०,००० वन वृक्ष, १५००० सजावटी पौधे, १५ लाख मौसमी फल के पौधे एवं ५००० अन्य पौधे हैं।

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने मिर्जापुर जिले के बरकछा में अपने दक्षिणी परिसर का विस्तार किया है। समाज के कमजोर वर्गों एवं जनजातियों के युवकों एवं युवतियों के लिए विशेषत: स्थापित इस शिक्षा केन्द्र का विकास शिक्षण, प्रशिक्षण एवम् उद्यमशीलता के लिए किया जा रहा है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य इस पिछड़े क्षेत्र के निवासियों के लिए जीवनभर के लिए उपयुक्त शैक्षणिक सुविधाओं तथा नवीन अनुसंधान से लाभान्वित होने का अवसर उपलब्ध कराना है।

श्री विश्वनाथ मंदिर

भारत कला भवन

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय BANARAS HINDU UNIVERSITY

Bilingual Logotype with Seal

बीएचयू

सर्वविद्या की राजधानी

Logo with Tagline

शोध एवं शिक्षण

का.हि.वि.वि. ने गुणवत्तापूर्ण शोध के साथ अध्यापन को प्रोत्साहित किया है। इसमें कुछ मील के पत्थर है जो निम्नलिखित हैं:

- यू.जी.सी. द्वारा 'पोटेंशियल फॉर एक्सलेंस' की मान्यता।
- परिसर स्थित 'भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आई.आई.टी. (बी.एच.यू.) की स्थापना।
- दक्षिणी परिसर में पशु चिकित्सा विज्ञान संकाय की स्थापना हेतु विद्वत्/ कार्यकारिणी परिषदों की स्वीकृति।
- डी.बी.टी. (भारत सरकार) की सहायता से सेंटर फॉर फूड साइंस एवं टेक्नोलॉजी द्वारा स्नातक/ स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का संचालन।
- डी. एस. टी. समर्थित अन्तर्वैषयिक सेंटर फॉर मैथेमेटिकल साइन्सेस।
- डी.बी.टी. समर्थित सेंटर फॉर जेनेटिक डिसआर्डर।
- डी.बी.टी. समर्थित अन्तर्वैषयिक जीव विज्ञान स्कूल।
- पी.एम.एस.एस.वाई. द्वारा ट्रॉमा सेंटर की स्थापना।
- यू.एस.ए.आई.डी.कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि विज्ञान संस्थान तथा अमरीकी विश्वविद्यालयों - कारनैल, जॉर्जिया, ओहियो, यू. सी. डेविस, टस्किजी, बफैलो, परदू तथा इलिनायस् के मध्य इनोवेशन पार्टनरशिप।
- फैकल्टी ऑफ डेंटल साइन्स।
- आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली द्वारा कृषि शिक्षा का सशक्तिकरण एवं विकास।
- आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान संस्थान में बायो कन्ट्रोल, टीशू कल्चर, फिशरीज़ एवं उच्च तकनीक संपन्न प्रयोगशालाओं के जरिए प्रयोग आधारित शिक्षण।
- भौतिकी विभाग के लिए टैन्डेट्रान एक्सेलेरेटर की मंजूरी।
- इसरो द्वारा का.हि.वि.वि. में स्पेस साइंस एवं शोधकार्यो का सशक्तिकरण।
- आई.सी.ए.आर. द्वारा केन्द्रीय सुविधाओं के अन्तर्गत कृषि विज्ञान संस्थान में सीड इन्फ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटीज़।
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सेंटर फॉर ह्यूमन वैल्यूज़ एण्ड एथिक्स एवम् सेंटर फॉर इण्टर कल्चरल स्टडीज़ की स्थापना के लिए सहयोग।
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र का स्थापना हेतु सहयोग।
- अनूठा भोजपुरी अध्ययन केन्द्र एवं लोक कला संग्रहालय।

का.हि.वि.वि. में अन्तर्राष्ट्रीय पीठ

- यूनेस्को शान्ति एवं अन्तर्सांस्कृतिक सहमति पीठ
- नेपाल पीठ
- प्रस्तावित यूनिसेफ बाल अधिकार पीठ

भावी योजना

- राजीव गांधी दक्षिणी परिसर में ट्राइबल एवं जेनारिक मेडिसीन संस्थान।
- गंभीर संक्रामक बीमारियों पर अनुसंधान के लिए बायोसेफ्टी लेवेल चतुर्थ (बीएसएल-४) सुविधा।
- ट्रांसलेशनल अनुसंधान केन्द्र।
- सेन्टर फॉर बोन मैरो ट्रांसप्लांट एवं स्टेम सेल रिसर्च सेंटर।
- सेंटर फॉर एडवांस्ड फंक्शनल मैटेरियल्स।
- जेनोमिक्स एवं प्रोटियेमिक्स में शोध को बढ़ावा।
- संगणक केन्द्र, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सेंटर, डिज़ाईन स्टूडियो, सोफिस्टिकेटेड इन्स्ट्रूमेन्टेशन सेंटर आदि सुविधाओं से युक्त 'अनुसंधान भवन'।
- इण्डियन कल्चरल हेरिटेज के अध्ययन को प्रोत्साहन।
- विश्वस्तरीय सुविधाओं से संपन्न एकीकृत खेलकूद परिसर।
- आवासीय अपार्टमेंट का बहुमंजिला भवन।
- १०,००० की क्षमता का कन्वेन्शन सेन्टर।
- ५०० कमरों की क्षमता का अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास।

हमारे कुलपति

यहाँ के यशस्वी कुलपतियों में महामना मालवीयजी, सर सुन्दरलाल, डॉ.एस. राधाकृष्णन् एवं आचार्य नरेन्द्र देव जैसे महापुरुष रहे, जिन्होंने इस महान विश्वविद्यालय का नेतृत्व किया।

- सर सुन्दर लाल (०१.०४.१९१६ - १३.१२.१९१८)
- डॉ. पी.एस. शिवस्वामी अय्यर (१३.०४.१९१८ - ०८.०५.१९१९)
- पंडित मदन मोहन मालवीय (२९.११.१९१९ - ०६.०९.१९३८)
- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् (१७.०९.१९३९ - १६.०१.१९४८)
- डॉ. अमर नाथ झा (२७.०२.१९४८ - ०५.१२.१९४८)
- पंडित गोविन्द मालवीय (०६.१२.१९४८ - २१.११.१९५१)
- आचार्य नरेन्द्र देव (०६.१२.१९५१ - ३१.०५.१९५४)
- डॉ. सी.पी. रामास्वामी अय्यर (०१.०७.१९५४ - ०२.०७.१९५६)
- डॉ. वी.एस.झा (०३.०७.१९५६ - १६.०४.१९६०)
- जस्टिस एन. एच. भगवती (१६.०४.१९६० - १५.०४.१९६६)
- डॉ. त्रिगुण सेन (०९.१०.१९६६ - १५.०३.१९६७)
- डॉ. ए.सी. जोशी (०१.०९.१९६७ - ३१.०७.१९६९)
- डॉ. के. एल. श्रीमाली (०१.११.१९६९ - ३१.०१.१९७७)
- डॉ. मोती लाल धर (०२.०२.१९७७-१५.१२.१९७७)
- डॉ. हरि नारायण (१५.०५.१९७८-१४.०५.१९८१)
- प्रो. इकबाल नारायण (१९.१०.१९८१ - २९.०४.१९८५)
- डॉ. आर. पी. रस्तोगी (३०.४.१९८५-२९.४.१९९१)
- प्रो. सी. एस. झा (०१.०५.१९९१ - १४.०६.१९९३)
- प्रो. डी. एन. मिश्रा (०८.०२.१९९४ - २७.०६.१९९५)
- डॉ. हरि गौतम (०२.०८.१९९५ - २५.०८.१९९८)
- प्रो. वाई. सी. सिम्हाद्रि (३१.०८.१९९८ - २०.०२.२००२)
- प्रो. पटचा रामचन्द्र राव (२०.०२.२००२ - १९.०२.२००५)
- डॉ. पंजाब सिंह (०३.०५.२००५ - ०७.०५.२००८)
- प्रो. डी. पी. सिंह (०८.०५.२००८ - २१.०८.२०११)
- डॉ. लालजी सिंह (२२.०८.२०११ - २२.०८.२०१४)
- प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी (२७.११.२०१४)

दीक्षान्त सम्बोधन

८८वां दीक्षान्त समारोह : २००६;
भारत के राष्ट्रपति, महामहिम
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

८९वां दीक्षान्त समारोह : २००७;
भारत के उपराष्ट्रपति, महामहिम
डॉ. श्री भैरो सिंह शेखावत

९०वां दीक्षान्त समारोह : २००८;
माननीय भारत के प्रधानमंत्री,
डॉ. मनमोहन सिंह

९१वां दीक्षान्त समारोह : २००९;
भारत की राष्ट्रपति, महीयसी
श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल

९२वां दीक्षान्त समारोह : २०१०;
भारत के उपराष्ट्रपति, महामहिम
श्री हामिद अंसारी

९३वां दीक्षान्त समारोह : २०११;
माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री
श्री कपिल सिब्बल

९४वां दीक्षान्त समारोह : २०१२;
माननीय लोक सभा स्पीकर
श्रीमती मीरा कुमार

९५वां दीक्षान्त समारोह : २०१३;
कुलाधिपति, का.हि.वि.वि.
डॉ. कर्ण सिंह

महामना मालवीय की १५०वीं जन्मशती के अवसर पर आयोजित
विशेष दीक्षान्त समारोह : २५ दिसम्बर २०१२;
भारत के राष्ट्रपति, **महामहिम श्री प्रणब मुखर्जी**

९६वां दीक्षान्त समारोह : २०१४;
पद्म विभूषण
प्रो. जयन्त विष्णु नार्लिकर

९७वां दीक्षान्त समारोह : २०१५;
पद्म विभूषण
डॉ. जी. माधवन नायर

पुरातन छात्र

अपने प्रतिष्ठित विद्वानों के माध्यम से विशिष्ट क्षेत्रों में उच्चतम शिक्षा व ज्ञान के प्रसार में योगदान करने के साथ ही सामुदायिक मूल्यों का पुनर्स्थापन एवं सतत् प्रवाह का प्रमाण है कि यहाँ से ज्ञान प्राप्त विशिष्ट व्यक्तियों की एक लम्बी शृंखला सम्पूर्ण विश्व में विभिन्न व्यावसायिक संगठनों के प्रमुख पदों पर आसीन हैं।

BHU
capital of knowledge

बीएचयू
सर्वविद्या की राजधानी

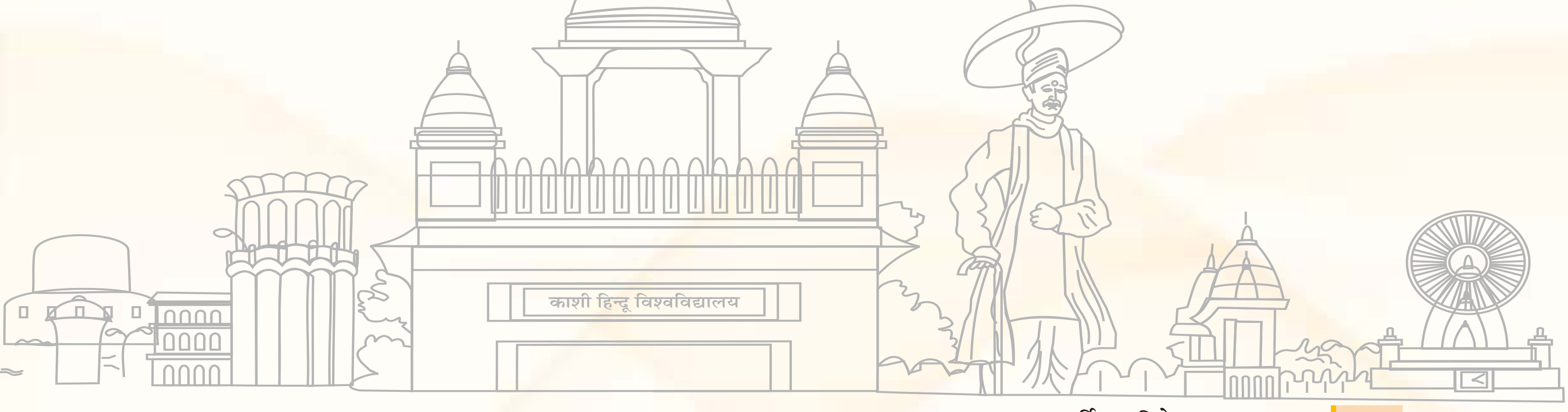

प्रशासन

विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था मुख्य रूप से कार्यकारिणी परिषद् एवं विद्वत् परिषद् द्वारा संचालित की जाती है। इस उच्च अधिकारयुक्त मण्डल में सत्र २०१४-१५ के सदस्यों के नाम परिशिष्ट-१ में वर्णित हैं। वर्तमान आंकलन अवधि (२०१४-१५) के अन्तर्गत निम्नलिखित महानुभाव विश्वविद्यालय के वैधानिक अधिकारियों के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं :

कुलाधिपति

डॉ. कर्ण सिंह

कुलपति

प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी (२७.११.२०१४ से)

डॉ. लालजी सिंह (२२.०८.२०१४ तक)

प्रो. विनय कुमार सिंह (२२.०८.२०१४ से ०३.०९.२०१४ तक)

प्रो. राजीव संगल (०३.०९.२०१४ से २७.११.२०१४ तक)

रेक्टर

प्रो. कमलशील (१२.०९.२०१४ से)

कुलसचिव

प्रो. जी.एस. यादव (०८.०७.२०१४ तक)

डॉ. के.पी. उपाध्याय (०५.०९.२०१४ तक)

प्रो. विनय कुमार सिंह (०८.०७.२०१४ से ०५.०९.२०१४ तक)

छात्र अधिष्ठाता

प्रो. महेन्द्र कुमार सिंह (०८.०७.२०१४ से)

प्रो. विनय कुमार सिंह (०८.०७.२०१४ तक)

मुख्य कुलानुशासक

प्रो. सत्येन्द्र सिंह (२१.११.२०१४ से)

प्रो. अरविन्द कुमार जोशी (२१.११.२०१४ तक)

वित्ताधिकारी

श्री ए. के. ठाकुर

परीक्षा नियंता

डॉ. के. पी. उपाध्याय

पुस्तकालयाध्यक्ष

डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का ९६वाँ दीक्षान्त समारोह : मार्च २७, २०१४

१.२. शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ की प्रमुख विशेषताएँ

इस अवधि के दौरान कई महत्वपूर्ण शैक्षणिक एवं विकास संबंधी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। उत्कृष्टता, दक्षता हेतु नई गतिविधियाँ शुरू एवं कार्यान्वित की गईं। वर्ष २०१४-१५ के दौरान की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ और गतिविधियाँ निम्नानुसार हैं:

प्रवेश

नया शैक्षणिक सत्र गुरूवार ०३ जुलाई, २०१४ से प्रारंभ हुआ तथा विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में १२,३८६ नए विद्यार्थियों (पुरुष-७८६४, महिला-४५२२) का नामांकन हुआ। विभिन्न स्नातक/ स्नातकोत्तर/ शोध पाठ्यक्रमों में छात्र एवं छात्राओं के नामांकन का संकायवार विवरण अध्याय ४.१ में दिया गया है।

इस अवधि के दौरान २४० नए विदेशी विद्यार्थियों (पुरुष-१५४, महिला-८६) को विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया गया। इन विद्यार्थियों का देशवार विवरण अध्याय ४.१ में दिया गया है।

शैक्षणिक योगदान

का.हि.वि.वि. के संकाय सदस्य उच्च स्तर के शैक्षणिक वातावरण को प्रोत्साहित करने में सदैव अग्रणी रहे हैं। वर्ष २०१४-१५ की अवधि के दौरान का.हि.वि.वि. से ४,०७० से ज्यादा प्रकाशन हुए जिनमें ३,२१२ शोध पत्र (१,६६० अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में एवं १,५५२ राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित) शामिल हैं (विस्तृत विवरण अनुलग्नक-२) में दिए गए हैं।

वर्ष २०१४-१५ की अवधि में शिक्षकों का शैक्षणिक योगदान

शोध पत्र			लेख			पुस्तकें			मोनोग्राफ्स	५५
राष्ट्रीय	१५५२		राष्ट्रीय	३१३		राष्ट्रीय	२५७		मैनुअल्स	११
अन्तर्राष्ट्रीय	१६६०		अन्तर्राष्ट्रीय	४४		अन्तर्राष्ट्रीय	३७		लीफलेट्स/अन्य	१४२
योग	**३२१२**		**योग**	**३५७**		**योग**	**२९४**		**योग**	**२०८**

महामना को भारत रत्न प्रदत्त

हमारे विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में एक भव्य समारोह में ३० मार्च, २०१५ को 'भारत रत्न' अलंकरण से विभूषित किया गया। भारत सरकार ने 'भारत रत्न' को विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विश्वविद्यालय परिवार के अन्य सभी सदस्यों की सतत् प्रेरणा हेतु इस काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को प्रदान किया। विश्वविद्यालय ने 'भारत रत्न' अलंकरण विश्वविद्यालय के संग्रहालय 'भारत कला भवन' में अवस्थित करने का निर्णय लेने के साथ ही महामना मालवीय को समर्पित एक 'महामना मालवीय वीथिका' के निर्माण की योजना बनाई है, जिसमें ध्वनि एवं प्रकाश के माध्यम से महामना के जीवन से जुड़ी स्मृतियों को प्रदर्शित किया जायेगा।

३० मार्च, २०१५ को राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी जी द्वारा पण्डित मदन मोहन मालवीय जी को भारत रत्न (मृत्योपरान्त) अलंकरण से सम्मानित किया गया

सम्मान/ पुरस्कार/ मान्यता

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान को विभिन्न प्रकार के सम्मानों से पहचान मिली (अध्याय-७ में सूचीबद्ध)। कई शिक्षक श्रेष्ठ अकादमियों के फेलो चयनित हुए (जैसे भारतीय विज्ञान अकादमी, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान अकादमी)। कई शिक्षकों को विदेश में अग्रणी अनुसंधान करने के लिए फेलोशिप/ अशोसिएटशिप प्रदान की गई (जैसे-अलेक्जेंडर वान हाबोल्ट फेलोशिप, जर्मनी; आईएनएसए-डीएफसी फेलोशिप, जर्मनी; फुलब्राइट-नेहरू विजिटिंग फेलोशिप)। अन्य उपलब्धियों में कई पुरस्कार, व्यावसायिक संगठनों के पदाधिकारी के रूप में चयन, शैक्षणिक संस्थापनों और सम्मेमलनों के सभापति, राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय समितियों की सदस्यता, शोध पत्रिकाओं के सम्पादकीय पद इत्यादि शामिल हैं।

शोध परियोजनाएँ

वर्ष के दौरान कुल रु.१,०२१ लाख से ज्यादा अनुदान की ४२ नई शोध परियोजनाएँ स्वीकृत की गईं। साथ ही साथ, ४३२ चालू परियोजनाएँ (कुल अनुदान रु. १२,६३० लाख से ज्यादा) जारी रखी गईं। देश के अधिकांश वित्तीय एजेंसियों ने का.हि.वि.वि. को शोध सहयोग प्रदान किया है। शोध परियोजनाओं के विस्तृत विवरण अनुलग्नक-३ में दिए गए हैं।

२०१४-१५ के दौरान अनुसंधान परियोजना

वित्त प्रदायी अभिकरण	नवीन परियोजनाएँ		पूर्व से संचालित परियोजनाएँ	
	संख्या	स्वीकृत धनराशि (लाख रु.)	संख्या	स्वीकृत धनराशि (लाख रु.)
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	४	२१.६०	९५	७५३.३७
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्	१	१.४१	४६	४२५.५१
परमाणु उर्जा विभाग	१	३३.५६	१५	५११.०९
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्	४	२०.४२	१९	१६५२.७५
भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्	१	२२.८७	११	१७९.८३
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्			७	२९.६५
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, उ.प्र.	५	१०४.०१	१४	२६६.३६
केन्द्रीय आयुर्वेद विज्ञान शोध अनुसंधान परिषद्	१	३.९८	३	८१.३७
विदेशी अभिकरण	४	११५.७३	१६	५७०.८६
भारत सरकार (आयुष)			२	८१.७९
रक्षा मंत्रालय	१	४०.०३	१०	२२८.१९
मानव संसाधन विकास मंत्रालय			१	५.९३
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन			२	३४.७१
सी आई एम एम वाई टी (अन्तर्राष्ट्रीय एवं मक्का और गेहूँ अनुसंधान केन्द्र)			१	८.०७
भू-विज्ञान मंत्रालय	१	२४.२७	४	८५.८३
उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी			४	७४.२१
भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन			३	३७.७९
अन्तर विश्वविद्यालय त्वरक केन्द्र			१	३.४२
जैव प्रौद्योगिकी विभाग	३	१२१.७१	१५	७५१.९९
संस्कृति मंत्रालय			३	१२७.८३
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्			२	२१.००
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	२	६.५२	४	२१.०९
अन्य सरकारी अभिकरण			१३	१७३.१४
तेल और प्राकृतिक गैस निगम			१	२.८६
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग	१२	४९९.७४	१२२	७०९०.६३
निजी अभिकरण	२	६.०५	१२	९५.२०
सीएएसपीईआर माइक्रो क्रेडिट			१	९.४९
कृषि अनुसंधान उत्तर प्रदेश परिषद्			४	३५.४५
उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड			१	२४.०४
योग	**४२**	**१०२१.९**	**४३२**	**१२६३०.०८**

सम्मेलन

विभिन्न विषय क्षेत्रों में हुई प्रगति का आंकलन करने एवं शैक्षणिक विचार-विमर्श के अवसर प्रदान करने के लिए कई विभागों, संकायों द्वारा वर्ष पर्यन्त शैक्षणिक सम्मेलन आयोजित किए गए जिनमें काफ़ी संख्या में बाहरी प्रतिभागियों ने भी सहभागिता की। सत्र २०१४-१५ के दौरान बीएचयू में कुल ११० सम्मेलन आयोजित किए गए (विस्तृत विवरण अनुलग्नक-४ में दिए गए हैं)।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने सक्रिय रूप से देश और विदेश में सम्पन्न विभिन्न परिसंवादों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं इत्यादि में भाग लिया। वर्ष २०१४-१५ के दौरान विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षकों की संख्या थी; विदेश में-८५, देश में-१०१ (विवरण अनुलग्नक-५ में दिए गए हैं)। विदेश के लिए प्रतिनियुक्तियों में अनेक देशों जैसे-यूएसए, कनाडा, अर्जेन्टिना, दक्षिण कोरिया, दुबई, दक्षिण अफ्रीका, चीन, यूके, जापान, भूटान, आस्ट्रेलिया, जर्मनी इत्यादि शामिल हैं।

उच्च गुणवत्ता वाले शोध को मान्यता

विश्वविद्यालय ने शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले शोध की गुणवत्ता को पुरस्कृत करने हेतु नगद पुरस्कार देने की योजना क्रियान्वित की है। इस पुरस्कार योजना का उद्देश्य विश्वविद्यालय के शिक्षकों के बीच गुणवत्तापरक शोध को प्रोन्नत करना है। तदनुसार शिक्षकों के शोधपत्रों का उन जर्नलों जिसमें वे प्रकाशित हुए हैं के इम्पैक्ट फैक्टर के आधार पर गत वर्ष से शिक्षकों को नगद राशि के रूप में पुरस्कृत करने की योजना प्रारम्भ की गयी है। प्रथम पुरस्कार वितरण समारोह गत वर्ष ९६वें दीक्षांत समारोह के उपरांत, मार्च २७, २०१४ को आयोजित किया गया। इस योजना से शिक्षकों में शोध कार्य में उत्कृष्टता लाने हेतु प्रतियोगी भावना को बल मिल रहा है। इस योजना के क्रियान्वयन के पश्चात हुए अनुभवों के आधार पर इस योजना का विस्तार अन्य मानदंडों जैसे शिक्षकों की शैक्षणिक गुणवत्ता इत्यादि को भी सम्मिलित करते हुये करने का भी निर्णय लिया गया है।

संकाय सदस्यों (शिक्षकों) की भर्ती हेतु संशोधित/पुनरीक्षित प्रक्रिया:

अध्ययन-अध्यापन एवं शोध की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने एवं असाधारण गुणवत्ता निर्मित हेतु आई.आई.टी. और आईआईएस-सी द्वारा अपनायी जाने वाली प्रक्रिया की तर्ज पर नव-प्रवर्तनकारी संकाय भर्ती प्रक्रिया क्रियान्वित की गई है। संकाय चयन की प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने, शिक्षण के उच्च गुणवत्ता युक्त अभ्यर्थियों को आकर्षित करने हेतु रोलिंग विज्ञापन द्वारा आन-लाइन चयन प्रक्रिया अपनायी जा रही है। इस प्रक्रिया द्वारा लगभग ६०० से अधिक रिक्त पदों हेतु ऑन-लाइन आवेदन विज्ञापित किए जा चुके हैं। अध्यापकों की सीधी भर्ती की संशोधित प्रक्रिया का परिणाम काफी उत्साहजनक रहा है। इस प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी और कुशल बनाने हेतु यूजीसी विनियमों को ध्यान में रखा गया है।

ख्यातिलब्ध शिक्षकों की अल्पकालिक नियुक्ति

विश्वविद्यालय में ख्यातिलब्ध शिक्षकों की नियुक्ति की योजना रही है। विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर इस योजना के अंतर्गत संबंधित विभागों की नीति एवं आयोजना समिति की अनुशंसा पर विजिटिंग प्रोफेसरों, मानद् प्रोफेसरों, विजिटिंग फेलो तथा एक्सटर्नल ऐडजंक्ट फैकल्टी के रूप में ख्यातिलब्ध विद्वानों व विशेषज्ञों की नियुक्ति की जाती है। एक्सटर्नल ऐडजंक्ट फैकल्टी की नियुक्ति योजना को आकर्षक बनाने के लिए इसमें अपेक्षित सुधार किया गया है। रिपोर्ट अवधि के दौरान उक्त योजना के अंतर्गत नियुक्तियां भी की गई हैं।

शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ में प्रारंभ किये गये पाठ्यक्रम

- पंचवर्षीय बी०ए० एल०एल०बी०
- कम्प्यूटेशनल साइंस एण्ड एप्लीकेशन्स इन सिग्नल प्रोसेसिंग में दो वर्षीय एम०एस०सी०
- फोरेन्सिक साइंस में दो वर्षीय एम०एस०सी०
- एक वर्षीय एल०एल०एम०
- स्टेटिसटिक्स एण्ड कम्प्यूटिंग में दो वर्षीय एम०एस०सी०
- फोरेन्सिक साइंस एवं मेडिकल ज्यूरिसप्रुडेंस में एक वर्षीय पार्ट टाइम पी०जी० डिप्लोमा
- कर प्रबंधन में एक वर्षीय पार्ट टाइम पी०जी० डिप्लोमा
- मास कम्यूनिकेशन और मीडिया लॉ में एक वर्षीय पार्ट टाइम पी०जी० डिप्लोमा
- मानव संसाधन प्रबंधन, सेवाएं एवं औद्योगिक विधि में एक वर्षीय पार्ट टाइम पी०जी० डिप्लोमा
- सूचना प्रौद्योगिकी विधि में एक वर्षीय पार्ट टाइम पी०जी० डिप्लोमा
- कारपोरेट गवर्नेंस में एक वर्षीय पार्ट टाइम पी०जी० डिप्लोमा
- स्टेटिसटिक्स एण्ड कम्प्यूटिंग में एक वर्षीय डिप्लोमा

नैक द्वारा मूल्यांकन एवं प्रत्यायन

वर्ष २०११ से देय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन की प्रक्रिया को पूर्ण करने हेतु नैक के समीक्षा दल ने फरवरी माह, २०१५ में विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया, जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय को ३.४१ (चार स्तरीय मानकों के आधार पर) अंकों के साथ 'ए' श्रेणी प्राप्त हुई।

च्वायस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस)

विश्वविद्यालय द्वारा सीबीसीएस को चरणबद्ध रूप से कार्यान्वयन करने की प्रक्रिया को प्रारम्भ किया गया है। यह व्यवस्था विश्वविद्यालय में संकाय स्तर पर पहले से ही क्रियान्वित की जा चुकी है। अगले शैक्षणिक सत्र से इस व्यवस्था को अन्तर्संकाय स्तर पर लागू करने हेतु पाठ्यक्रमों के तार्किक पुनर्संरचना की रूपरेखा बनाई जा चुकी है।

शताब्दी वर्ष (२०१५-१६) समारोह की योजनाएं

२५ जनवरी २०१५ को विश्वविद्यालय ने अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश किया। शताब्दी वर्ष के दौरान विभिन्न गतिविधियों के आयोजन हेतु एक समिति गठित की जा चुकी है। इस अवधि में वर्ष पर्यन्त विश्वविद्यालय विभिन्न शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं क्रीडा सम्बन्धी गतिविधियां आयोजित करेगा जिसमें अनेक खण्डों में महामना मालवीय जी के सम्पूर्ण कार्यों का प्रकाशन, मालवीय जी की एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पर लिखित पुरातत्वों का पुनर्मुद्रण, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास का लेखन, विश्वविद्यालय एवं संकाय स्तर पर प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान शृंखला का आयोजन, प्रत्येक संकाय में युवा संसद का आयोजन तत्पश्चात विश्वविद्यालय स्तर पर युवा संसद का आयोजन, राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विश्वविद्यालय की क्रीडा गतिविधियों का आयोजन, विभिन्न कलाकारों को आमंत्रित कर सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन और स्मृति स्वरूप डाक टिकट एवं विभिन्न मूल्यों की मुद्राओं को जारी करना इत्यादि प्रमुखता से सम्मिलित है।

शताब्दी वर्ष में पुरातनछात्र प्रकोष्ठ ने अन्तर्राष्ट्रीय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुरातनछात्र सम्मेलन और 'विज्ञान तथा आध्यात्म: महामना का दृष्टिकोण' विषयक संगोष्ठी आयोजित करने की योजना बनाई है।

साइबर लाइब्रेरी अध्ययन केंद्र की स्थापना

इलेक्ट्रानिक संसाधनों के अधिकतम उपयोग की दृष्टि से विद्यार्थियों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करने हेतु एक साइबर लाइब्रेरी अध्ययन केंद्र

की स्थापना की गई है। यह विद्यार्थियों एवं शोधर्थियों को चौबीसो घंटे ऑनलाइन इलेक्ट्रानिक संसाधनों (जर्नल एवं पुस्तक) तक पहुंच प्रदान करता है। इसमें २२० कंप्यूटर, तीव्र गति का इंटरनेट एक्सेस तथा एक साथ २०० छात्रों के बैठने की सुविधा उपलब्ध है। विद्यार्थियों के लिए यह रात-दिन खुली रहती है। बीएचयू साइबर लाइब्रेरी एक ऑनलाइन इलेक्ट्रानिक लाइब्रेरी है जो बेव ऑफ साइंस, ऐनुअल रिव्यू, मैथ सिनेट, साइफाइंडर स्कालर एंड कैब ऐब्सट्रैक्ट नामक ऑनलाइन पूर्ण टेक्स्ट जर्नल एवं डाटाबेस तक पहुंच प्रदान करती है। यह डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इण्डिया, वर्ल्ड डिजिटल लाइब्रेरी, यूनीवर्सल डिजिटल लाइब्रेरी तथा प्रोजेक्ट गुटनबर्ग तक भी पहुंच प्रदान करती है। साइबर लाइब्रेरी में उपलब्ध ई-बुक्स हैं- सेज ई-बुक्स, स्प्रिंगर ई-बुक्स, टेलर एंड फ्रांसिस, कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस, इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, मेडिकल साइंस रिसोर्स एंड पबमेड, इंजीनियरिंग साइंस रिसोर्स तथा इंस्टीट्यूशनल रिपॉजिटरीज। साइबर लाइब्रेरी में हिंदी समय, हिंदी साहित्य दर्पण, हिंदी कवितायन, कविता कोष, साहित्य शिल्पी नामक हिंदी व संस्कृत संसाधन तथा संस्कृत थीसिस एवं संस्कृत ई-बुक्स भी ऐक्सेस के लिए उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों के बीच साइबर लाइब्रेरी की जबरदस्त लोकप्रियता और इसके गहन उपयोग को देखते हुए विश्वविद्यालय ने समान क्षमता के इसके एक और तल को विस्तारित करने का निर्णय लिया है। इसके विस्तार का कार्य जारी है और उम्मीद है कि उपयोग के लिए शीघ्र उपलब्ध होगा। पुस्तकालय द्वारा 'मोबाइल पर पुस्तकालय' भी लांच किया गया है जिसके अंतर्गत पुस्तकालय के ई-संसाधन मोबाइल फार्मेट में उपलब्ध कराए गए हैं जिसे इंटरनेट एक्सेस के साथ स्मार्ट फोन पर एक्सेस किया जा सकता है।

माननीय प्रधानमंत्री महोदय का विश्वविद्यालय में आगमन

२५ दिसंबर, २०१४ को महामना मदन मोहन मालवीयजी के जन्मदिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आगमन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुआ। इस अवसर पर उनके साथ मानव संसाधन विकास मंत्री, श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी और संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री, डा. महेश शर्मा भी उपस्थित थे।

अपने आगमन के दौरान माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय अध्यापक और प्रशिक्षण मिशन का शुभारम्भ किया। इस मिशन का उद्देश्य समन्वित रूप से अध्यापकों, अध्यापन, अध्यापक निर्माण, व्यावसायिक विकास, पाठ्यक्रम संरचना, निर्माण और मूल्यांकन पद्धतियों का विकास, अध्यापन कौशल के क्षेत्र में शोध तथा प्रभावी अध्यापन पद्धतियों के विकास आदि विषयों पर समग्र दृष्टि से विचार करना है। एक ओर यह मिशन सामयिक और अत्यावश्यक मुद्दों जैसे योग्य अध्यापकों की आपूर्ति, प्रतिभाओं को अध्यापन व्यवसाय की ओर आकर्षित करने और विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्यापन की गुणवत्ता सुधारने जैसे मुद्दों को संबोधित करेगा, दूसरी ओर यह मिशन अध्यापकों के व्यावसायिक विकास और नवोन्मेष परक अध्यापन हेतु उच्च स्तरीय सांस्थानिक सुविधाएँ प्रदान करने और प्रस्तुतिकरण के उच्च मानक स्थापित कर अध्यापकों के सुदृढ़ व्यावसायिक काडर के निर्माण का दीर्घकालिक लक्ष्य भी प्राप्त करने पर विचार करेगा। यह मिशन स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, तकनीकि शिक्षा आदि के विभिन्न स्तरों में बिना कोई विभाजन किए सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र से संबद्ध विषयों के बारे में समग्रता से विचार करते हुए इन उद्देश्यों पर ध्यान केन्द्रित करेगा। इस राष्ट्रीय मिशन के एक हिस्से के रूप में विश्वविद्यालय परिसर में माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने अध्यापक प्रशिक्षण के अन्तर्विश्वविद्यालयी केन्द्र की स्थापना के लिए भी नींव रखी।

माननीय प्रधानमंत्री ने विश्वविद्यालय परिसर में वाई-फाई सुविधा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया साथ ही वाराणसी में पाँच दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव (संस्कृति) का उद्घाटन भी किया। इस पाँच दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संगीत, नृत्य, नाटक, कविता, सांस्कृतिक विषयों पर आधारित फिल्मों का प्रदर्शन साहित्यिक और कला प्रदर्शनियों के माध्यम से रेखांकित करना है।

माननीय प्रधानमंत्री ने 'युक्ति' प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उचित तकनीकि की सहायता से दस्तकारों का कौशल विकास करना है। 'युक्ति' पहल के अन्तर्गत माननीय प्रधानमंत्री ने ६ दस्तकारों को भी पुरस्कृत किया।

स्थापना दिवस (बसंत पंचमी) समारोह के पारम्परिक स्वरूप की पुनर्वापसी

२४ जनवरी, २०१५ को बसंत पंचमी के अवसर पर विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह के दौरान विगत लगभग तीस वर्षों से स्थगित पारम्परिक झांकी एवं जूलूस निकालने की स्वस्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों, संकायों एवं विभाग के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी जी के नेतृत्व में पूरे जोश एवं उत्साह से भाग लिया।

गीता प्रवचन

विश्वविद्यालय की गीता समिति की पुनर्रचना करते हुए विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों हेतु गीता प्रवचन की अद्वितीय प्रक्रिया का पुनरारम्भ किया गया।

ट्रामा सेंटर

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) के अंतर्गत प्राप्त रु. १२० करोड़ के अनुदान से वर्ष २००९ में बीएचयू के ट्रामा सेंटर के निर्माण की शुरुआत हुई। मेडिसिन संकाय के अंतर्गत आर्थोपेडिक्स, न्यूरोसर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी एवं कार्डियो वैस्कुलर सर्जरी समेत कई विशेषीकृत विभाग ट्रामा सेंटर के भाग हैं। भवन निर्माण, सहायता विस्तार एवं अन्य संबंधित निर्माण कार्य, माड्यूलर ओटी का निर्माण, गैस पाइपलाइन, रसोईघर एवं लांड्री का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। साथ ही, नर्सिंग व पैरा मेडिकल कर्मचारियों की भर्ती की प्रक्रिया लगभग पूर्ण की जा चुकी है। विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधा के अलावा परिसर में उद्यान, सुंदर मार्ग, बुर्ज, जल संचयन सुविधा, तालाब, एक आइलैण्ड व फौव्वारा, एक जन औषधि केंद्र (जहाँ मरीज को कम लागत पर जेनरिक दवायें प्रदान की जाएंगी) तथा तीन कैंटीन भी होंगे। इस ट्रामा सेंटर द्वारा रोगियों को चिकित्सकीय सेवाएं उपलब्ध होना प्रारम्भ हो चुकी हैं। ३२४ बिस्तरों वाला बीएचयू का यह ट्रामा सेंटर देश के सबसे बड़े ट्रामा सेंटरों में से एक है।

सत्र २०१४-१५ में माननीय प्रधानमंत्री का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आगमन

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा महामना जी को पुष्पांजलि

एक पहल 'युक्ति'-प्रदर्शनी

राष्ट्रीय मिशन ''पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण'' का माननीय प्रधानमंत्री द्वारा २५ दिसम्बर, २०१५ को शुभारम्भ

''कैम्पस कनेक्ट (वाई-फाई)'' का शुभारम्भ

माननीय प्रधानमंत्री जनसमूह को सम्बोधित करते हुए

यूजीसी-''आईयूसीटीई'' का माननीय प्रधानमंत्री द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शिलान्यास

केंद्रीय अन्वेषण केन्द्र की स्थापना

विश्वविद्यालय द्वारा एक केंद्रीय अन्वेषण केन्द्र की स्थापना की जा रही है जहाँ पर आधुनिक उपकरणों, उच्चीकृत संगणन, डिजिटल मीडिया सहित अन्तर्विषयी शोध हेतु उच्च स्तरीय सुविधाओं हेतु विभिन्न केन्द्रों को स्थापित किया जायेगा। विश्वविद्यालय एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (बी.एच.यू.) के नवाचारपरक शोध में रूची रखने वाले अध्यापकों को शोध हेतु केन्द्रीयकृत सुविधा प्रदान की जायेगी। इस केन्द्र का भवन निर्माणाधीन है।

मालवीय हेरिटेज संकुल

विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय जी की स्मृति स्वरूप महामना की १५०वीं जयन्ती के अवसर पर २५ दिसम्बर, २०१२ को संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि से निर्मित होने वाले मालवीय हेरिटेज संकुल केन्द्र एवं अन्तरसांस्कृतिक अध्ययन केंन्द्र का शिलान्यास माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा किया गया। इसके भवन के निर्माण की प्रक्रिया पूरी गति से जारी है जिसके शीघ्र पूर्ण होने की संभावना है।

बोन मैरो ट्रांसप्लांट एवं स्टेम सेल रिसर्च सेंटर

चिकित्सा के क्षेत्र में बोन मैरो ट्रांसप्लांट के महत्व, योगदान एवं इस क्षेत्र में उन्नत सुविधाओं के अभाव को दृष्टिगत रखते हुए लगभग १.५ एकड़ क्षेत्रफल के स्थापना स्थल पर चिकित्सा विज्ञान संस्थान के अंतर्गत नवनिर्मित ट्रामा सेंटर के पास विश्वविद्यालय द्वारा देश में अपनी तरह का पहला स्टेम सेल रिसर्च एवं बोन मैरो ट्रांसप्लांट केन्द्र की स्थापना की जा रही है। इस केन्द्र का निर्माण कार्य ज़ोरों पर चल रहा है और शीघ्र ही परियोजना के पूर्ण होने की उम्मीद है। इस प्रस्तावित शोध केन्द्र में cGLP तथा cGMP मानकों के अनुरूप चिकित्सकीय एवं मौलिक शोध व मरीजों पर सर्जिकल कार्य एवं अन्य चिकित्सकीय उपचार करने के लिए अपेक्षित मूलभूत संरचनाएं एवं संसाधन उपलब्ध होंगे।

सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ की स्थापना

विश्वविद्यालय द्वारा कुछ राष्ट्रीय योजनाओं जैसे 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' और कौशल विकास को मानक मानते हुये उनके आधार पर विश्वविद्यालय परिसर के निकटवर्ती पांच गांवों को मॉडल गांव के रूप में विकसित करने हेतु गोद लिया गया है।

भारत अध्ययन केंद्र की स्थापना

भारतीय अध्ययन केन्द्र की स्थापना प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक ज्ञान से जोड़न हेतु की गई है। इस अध्ययन केन्द्र में प्राचीन भारतीय ज्ञान, संस्कृति, साहित्य, संगीत एवं परंपराओं का अध्ययन एवं संपोषण किया जायेगा। विश्वविद्यालय द्वारा इस केन्द्र के स्थापना के निर्णय की देश भर में सराहना की जा रही है।

गंगा नदी विकास एवं जल संसाधन प्रावधान हेतु मालवीय शोध केन्द्र की स्थापना

नदियों एवं जल संसाधनों की समस्याओं के अध्ययन एवं निराकरण हेतु मालवीय शोध केन्द्र की स्थापना की गई है।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत

गांधी जयंती के अवसर पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' की औपचारिक शुरूआत ०२ अक्टूबर, २०१४ को की गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों एवं विभागों द्वारा वाद-विवाद एवं निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया साथ ही स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता संबंधी विभिन्न विषयों पर प्रोजेक्ट का आयोजन कर अपने आवासीय परिवेश की स्वच्छता हेतु जन-जागरण का अभियान चलाया गया। इसके अलावा विश्वविद्यालय स्थित राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर के माध्यम से छात्र-छात्राओं सहित विश्वविद्यालय के अन्य सदस्यों द्वारा न केवल विश्वविद्यालय परिसर वरन् परिसर के आस-पास के परिवेश में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। विश्वविद्यालय द्वारा परिसर में प्लास्टिक एवं थर्माकोल से निर्मित वस्तुओं के उपयोग की पूर्ण रूप से रोक की नीति अपनाई गयी है।

छात्रावासों की मरम्मत एवं उच्चीकरण

काफी अंतराल के बाद सी०पी०डब्ल्यू०डी० द्वारा विश्वविद्यालय के छात्रावासों की वृहद् मरम्मत का कार्य पूर्ण होने को है।

छात्र-छात्राओं के प्रगति में सहायक गतिविधियाँ

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा छात्र-छात्राओं को उचित व्यवसाय के चुनाव हेतु व्यवसाय काउंसलिंग योजना का आरंभ किया गया है। इस योजना के तहत दो पूर्ण कालिक काउंसिलरों की नियुक्ति भी की जा चुकी है जो विश्वविद्यालय के छात्रावासो का दौरा कर छात्र-छात्राओं से सीधा संवाद स्थापित करते हुए उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने मे सहायता प्रदान करते है। इस योजना के अन्तर्गत संकल्प जैसी अन्य प्रख्यात उद्यमी संस्थाओं के विख्यात व्यक्तियों को आमंत्रित कर छात्र हित से संबंधित व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है। छात्र-छात्राओं को साक्षात्कार हेतु अंग्रेजी बोलने एवं उनका साक्षात्कार कौशल बढ़ाने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। छात्र-छात्राओं में उद्यमशीलता का विकास भी किया गया है।

सभी छात्रावासों में छात्रों के सम्पूर्ण विकास हेतु न्यूनतम खेल सुविधाओं का विकास किया जा चुका है। विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले सभी छात्रों को महामना मदन मोहन मालवीय जी के जीवन, कार्यो एवं उनकी दृष्टि के बारे में परिचय कराने हेतु एक पुस्तिका का वितरण किया जाता है। विश्वविद्यालय के नवप्रवेशी छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय से भलीभांति परिचित कराने हेतु, प्रवेश के समय उन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गौरव पूर्ण इतिहास एवं विश्वविद्यालय के पुराछात्रों एवं अध्यापकों द्वारा उनके अपने-अपने क्षेत्रों में दिये गए अमूल्य योगदान सहित विश्वविद्यालय में मौजूद सभी सुविधाओं पर आधारित एक वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

दीक्षांत समारोह

विश्वविद्यालय के ९७वें दीक्षांत समारोह के भाग के रूप में विभिन्न संस्थानों/संकायों का दीक्षांत समारोह दिनांक २५ अप्रैल, २०१५ को आयोजित किया गया। २६ अप्रैल, २०१५ को दीक्षांत समारोह के मुख्य कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलाधिपति डॉ. कर्ण सिंह द्वारा की गई। इस अवसर पर इसरो के पूर्व अध्यक्ष पद्मविभूषण डॉ. जी. माधवन नायर जी ने दीक्षांत भाषण दिया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का ९७वाँ दीक्षांत समारोह - २६ अप्रैल, २०१५

पद्मविभूषण डॉ. जी माधवन नायर द्वारा दीक्षांत भाषण

अंगीकृत पारम्परिक भारतीय परिधान में दीक्षांत शोभायात्रा

पुरस्कृत छात्र एवं छात्राएँ

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान ४,४२८ विद्यार्थियों को स्नातक, ३३८० विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर एवं २९ विद्यार्थियों को एम.फिल. की उपाधियां प्रदान की गईं तथा ४९२ विद्यार्थियों को पी.एचडी. की उपाधि प्रदान की गई। उपाधि प्राप्तिकर्ताओं का संकाय एवं पाठ्यक्रमवार विवरण अध्याय-४ में दिया गया है।

दीक्षांत वेशभूषा में पारम्परिक भारतीय परिधानों का प्रयोग

विश्वविद्यालय के पुराछात्रों द्वारा दीक्षांत समारोह के अवसर पर भारतीय वेशभूषा अपनाने को प्रस्ताव दिया गया था जिसकी अत्यन्त सराहना हुई। तद्नुसार विद्वत परिषद् ने एक मत से यह प्रस्ताव पारित किया कि दीक्षांत समारोह के अवसर पर विदेशी गाउन के स्थान पर भारतीय परिधान को अकादमिक वेशभूषा के रूप में अंगीकृत किया जाये, विद्वत परिषद् के इसी निर्णय के तारतम्य में विश्वविद्यालय के स्नातकों, छात्र-छात्राओं, विद्वत परिषद् के सदस्यों एवं दीक्षांत समारोह के अवसर पर उपस्थित मंचासीन अतिथियों हेतु ९७बेवें दीक्षांत समारोह से भारतीय वेशभूषा अंगीकृत की जा चुकी है। यह विश्वविद्यालय के इतिहास में विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय संस्कृति के पोषण हेतु एक नवीन प्रयास है।

ई- गवर्नेंस हेतु पहल

प्रवेश प्रक्रिया को गतिशील बनाने के उद्देश्य से भविष्योन्मुखी कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापो को विधिवत संचालित करने हेतु स्वचालित आनलाइन प्रक्रिया का प्रारंभ विश्वविद्यालय में किया गया है। शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र, काउंसलिंग आदि आनलाइन किये गये। साथ ही नामांकन प्रक्रिया, परीक्षा हेतु आवेदन पत्र एवं अन्य परीक्षा संबंधी प्रक्रिया भी विद्यार्थियों के निमित प्रारंभ कर दी गयी है।

शैक्षणिक प्रशासन के अन्य क्षेत्रों में भी ई-गवर्नेंस प्रक्रिया पूर्ण गति पर है। इस प्रकार विश्वविद्यालय 'पेपर लेस' कार्यालय की दिशा में गतिशील है इस निमित्र शीघ्र ही निविदाएं आमंत्रित की जाएंगी। वित्तीय मामलों से संबंधित प्रक्रिया अधिक पारदर्शी बनाने की दृष्टि से 'ई-टेन्डरिंग' प्रक्रिया निविदाएं आमंत्रित करने हेतु प्रारम्भ हो चुकी है।

विश्वविद्यालय के व्यापार प्रकोष्ठ का गठन

उच्चतर शिक्षा एवं शोध को समाज एवं अर्थव्यवस्था के प्रति और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए विश्वविद्यालय में एक व्यापार प्रकोष्ठ स्थापित किया गया है। व्यापार प्रकोष्ठ की अवधारणा का केन्द्रक बिन्दु यह है कि उद्योग क्षेत्र को चाहिए कि वह निर्देशन हेतु इनपुट प्रदान करे जिससे विश्वविद्यालय में शोध कार्य हो सके और दूसरी ओर शोध के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा तकनीक, उत्पाद और प्रक्रियाऐं विकसित हों जिनका पर्याप्त मात्रा में विपणन हो ताकि औद्योगिक क्षेत्र उन्हें अपनाऐं और नवप्रवर्तनों का उत्पादनपरक उपयोग हो सके। विश्वविद्यालय के व्यापार प्रकोष्ठ के लिए यह अनिवार्य है कि वह उचित तकनीक के विकास, तकनीक के हस्तांतरण, व्यापार विकास और औद्योगिक-शैक्षणिक आपसी प्रभाव हेतु दिशा-निर्देश दे। विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों द्वारा विकसित कुछ शोध उत्पादों के व्यापारिक उपयोग हेतु विश्वविद्यालय द्वारा अरविंद रेमेडीज़ प्रा. लि. के साथ एक आपसी मसौदे पर हस्ताक्षर किया गया है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं SEBI, NSE, ऐक्सिस बैक एवं अन्य औद्योगिक संस्थानों के मध्य शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु समझौता पत्र विचाराधी है।

शिकायत निवारण तंत्र का सुदृढ़ीकरण

सभी शिकायतों को प्रस्तुत करने और संसाधित करने हेतु एक केन्द्र बिन्दु प्रदान करने के लिए सभी शिकायत समितियों के एक संपर्क अधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए उप-कुलसचिव की अध्यक्षता में केन्द्रीय कार्यालय में एक केन्द्रीयकृत शिकायत निवारण प्रस्थापित किया गया है। सभी शिकायत समितियों को पर्याप्त प्रबंधकीय व सचिवीय सहायता प्रदान करने और शिकायत समितियों से संबंधित दस्तावेजों के रख-रखाव हेतु प्रकोष्ठ को पर्याप्त कर्मचारी मुहैया कराए गए हैं।

महत्वपूर्ण बैठकें :

कार्यकारिणी परिषद् की बैठक

जून २९, २०१४; सितम्बर ११, २०१४; नवम्बर ११, २०१४

बी.एच.यू.कोर्ट की बैठक

नवम्बर २८, २०१४

विद्वत् परिषद् की बैठक

अप्रैल ०८, २०१४

अप्रैल १६, २०१४

वित्त समिति की बैठक

मई १३, २०१४;
अक्टूबर १०, २०१४

संकाय की बैठकें

कला संकाय	१६.१२.२०१४
सामाजिक विज्ञान संकाय	१६.०७.२०१४
चिकित्सा संकाय दन्त चिकित्सा विज्ञान संकाय आयुर्वेद संकाय	०६.०२.२०१५ १०.०२.२०१५
आयुर्वेद संकाय	१५.०७.२०१४
कृषि विज्ञान संकाय	१९.१२.२०१४
	१७.०३.२०१५
	३०.०३.२०१५

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना

क. संस्थान

- चिकित्सा विज्ञान संस्थान
- कृषि विज्ञान संस्थान
- पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान

ख. संकाय

- कृषि
- कला
- आयुर्वेद
- वाणिज्य
- दन्त चिकित्सा विज्ञान
- शिक्षा

- पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास
- विधि
- प्रबन्ध शास्त्र
- चिकित्सा
- मंच कला
- संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान
- विज्ञान
- सामाजिक विज्ञान
- दृश्य कला

ग. महाविद्यालय

अंगीभूत महाविद्यालय : महिला महाविद्यालय (वूमेन्स कॉलेज) परिसर के अन्दर स्थित

घ. अन्तर्विषयी उच्च शिक्षापीठ (स्कूल)

- जैव-प्रौद्योगिकी स्कूल
- जीवन विज्ञान स्कूल

च. अध्ययन केन्द्र

- खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- आनुवांशिक विकृति
- डीएसटी.सेन्टर फार इंटर डिसीप्लीनरी मैथमेटिकल साइंस
- नेपाल अध्ययन केन्द्र
- महिला अध्ययन एवं विकास
- मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
- समन्वित ग्रामीण विकास
- सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र

छ. विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित विद्यालय

- सेन्ट्रल हिन्दू ब्वाय़ज स्कूल
- सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल
- श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

ज. विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय

- आर्य महिला पी.जी. कॉलेज
- दयानन्द पी.जी. कॉलेज
- वसन्त महिला महाविद्यालय (राजघाट)
- वसन्त कन्या महाविद्यालय

झ. यू.जी.सी. - एस ए पी : सी ए एस व डी आर एस कार्यक्रम

विशेष सहायकता कार्यक्रम (डी आर एस, डी एस ए एवं सी ए एस स्तर)

- प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व (सी.ए.एस.)-१
- जीवविज्ञान (सी.ए.एस.)-५
- मनोविज्ञान (डी.आर.एस.)-१
- वनस्पति विज्ञान (सी.ए.एस.)-५
- जैव प्रौद्योगिकी स्कूल (डी.आर.एस.)-३
- प्रबन्ध शास्त्र संकाय (डी.आर.एस.)-२
- सस्य विज्ञान (डी.आर.एस.)-२

ट. यूजीसी-इनोवेटिव/टीआरआईईए/अन्य कार्यक्रम

- भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय – इस्टैब्लिशमेन्ट ऑफ नेटवर्किंग रिसोर्स सेन्टर
- मनोविज्ञान विभाग – पी.जी. डिप्लोमा (वन इयर) इन काउन्सिलिंग, गाइडेन्स एण्ड साइकोलॉजिकल इन्टरवेन्शन (अन्डर इनोवेटिव 'टीआरआईईए' प्रोग्राम ऑफ यूजीसी)।
- आनुवांशिकी विकार केन्द्र – क्रोमोजोमल जेनेटिक एण्ड मॉलेक्यूलर डायग्नोस्टिक में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, इनोवेटिव 'टीआरआईईए' प्रोग्राम ऑफ यूजीसी।
- तेलुगू विभाग, कला संकाय – स्नातकोत्तर डिप्लोमा ट्रांसलेशन स्कील फॉर वैरीड कॉम्पीटेन्सीज, इनोवेटिव 'टीआरआईईए' प्रोग्राम ऑफ यूजीसी।

ठ. विशेषज्ञ अनुसंधान के अन्य केन्द्र/कार्यक्रम

- सी.एफ.एस.टी., कृषि विज्ञान संस्थान – इन्हेन्सिंग रिसर्च कैपेसिटी एण्ड इनिसिएटिंग इन्टिग्रेटेड एम.एससी./एम.टेक. व पीएच.डी. प्रोग्राम इन द एरिया ऑफ फूड साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी।
- महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान।
- सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान।
- नेपाल अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान।
- चिकित्सा विज्ञान संकाय, चि. वि. सं. – सेन्टर फार एक्सीलेन्स इन एच.आई.वी. केयर
- चिकित्सा विज्ञान संकाय, चि. वि. सं. – डिटरमाइनिंग फैक्टर्स एसोसिएटेड विथ ए.आर.टी. ड्रग एडहेरेन्स एच आई वी पाजिटिव्स इन इंडिया (एन.ए.सी.ओ.), चिकित्सा विज्ञान संस्थान।
- विज्ञान संकाय – स्ट्रेन्थेनिंग स्पेस साइन्स एक्टीविटीज इन यूनिवर्सिटीज, भौतिकी विभाग।
- बौद्ध अध्ययन केन्द्र, पालि तथा बौद्ध अध्ययन विभाग, कला संकाय – स्कीम ऑफ एपॉक मेकिंग ऑफ सोशल थिंकर्स ऑफ इण्डिया।

ड. डी एस टी-फीस्ट कार्यक्रम

(विश्वविद्यालय एवं उच्च शैक्षणिक संस्थानों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लिए आधारभूत कार्यक्रमों (फीस्ट) के उन्नयन के लिए कोष)

- जैव रसायन, चि.वि.स.
- भूगर्भ विज्ञान
- भौतिकी

मालवीय जयन्ती के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री महामना को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

२. विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अवयव (अंग)

२.१. मुख्य परिसर

२.१.१. संस्थान

२.१.२. संकाय

२.१.३. महिला महाविद्यालय

२.१.४. अध्ययन केन्द्र

२.१.५. स्कूल

२.१.६. का.हि.वि.वि. ग्रंथालय प्रणाली

२.१.७. यू.जी.सी. ऐकेडमिक स्टाफ कॉलेज

२.१.८. मालवीय भवन

२.१.९. भारत कला भवन

२.२. दक्षिणी परिसर

२.३. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय

जौ की HUB 113 किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिक समूह का सम्मान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ''गौशाला'' में स्थापित स्वचालित दूध निकालने का यंत्र

२.१.१.१. कृषि विज्ञान संस्थान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इस साल अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषि विज्ञान संस्थान पिछले ८४ वर्षों से कृषक समुदाय की सेवा कर रहा है। कृषि क्षेत्र के लिए, सुरक्षा एवं शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार, उत्पादन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण एवं ज्ञान के आधार पर सक्षम मानव संसाधन का विकास इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य है। संस्थान अपने क्रियाकलापों के माध्यम से कृषि और संबद्ध विज्ञान के संपूर्ण स्थायी और समान विकास के उद्देश्यों के लिए न केवल प्रतिबद्ध है बल्कि कृषक समुदाय की दक्षता बढ़ाने और उत्पादन के विस्तार के लिए फसलों/सब्जी/फल/ पशुधन/ पोल्ट्री/ मत्स्य सुधार/ गुणवत्ता बीज उत्पादन और भूख मुक्त समाज के सपने को साकार करने की दिशा में प्रयासरत है। कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार और शिक्षा के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। साथ ही खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों सहित सत्र २०१४ में आवंटित व उपलब्ध धन का उपयोग विशेषज्ञता के अनुरूप किया गया है।

२०१४-१५ के दौरान, बी. एससी. (कृषि) की प्रति सीट के लिए १८० आवेदक और एम. एससी. (कृषि) में प्रति सीट पर २८ आवेदक प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित हुए। इससे कड़ी प्रतिस्पर्धा का पता चलता है। जुलाई २०१४ में २०३ छात्रों ने स्नातक (कृषि) १९९ छात्रों ने स्नातकोत्तर (कृषि) एवं ५१ शोध छात्रों ने संस्थान की ग्यारह इकाइयों/ विभागों में प्रवेश लिया। इसके अतिरिक्त १४७ छात्रों ने छः विशिष्ट स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और ३० ने एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। इस संस्थान में कुल ५०४ छात्र (कुल १५२७ की वर्तमान संख्या मे से) भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय अभिकरणों से विविध शोध फेलोशिप/ छात्रवृत्ति इत्यादि पा रहे हैं।

संस्थान में सत्र २०१४-१५ में कुल १२९ छात्रों ने बी. एससी. (कृषि), २०९ छात्रों ने एम. एससी. (कृषि) (ग्यारह विभागों से एवं छः विशिष्ट कोर्स को मिलाकर) और २५ शोध छात्रों (११ विषयों को मिलाकर) ने सफलता पूर्वक अपना अध्ययन पूरा किया। २६ अप्रैल २०१५ को आयोजित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ९७वें दीक्षांत समारोह में सफल छात्रों को उपाधि एवं पदक प्रदान किये गए।

हमारे शोध के घटको के अन्तर्गत संसाधन प्रबंधन (वर्षा, जल प्रबंधन और नई भूमि उपयोग प्रणाली) के साथ-साथ फसल सुधार, फसल मौसम बातचीत और आई पी एम, राष्ट्रीय गुणवत्ता के बीज उत्पादन, जैव उर्वरक के वितरण कार्यक्रम, बुनियादी और सामरिक अनुसंधान (बायोएनर्जी, बी.एन.एफ., पी.जी.पी.आर. और मृदा संरक्षण, क्यू टी एल, मैपिंग, सूक्ष्म और बेहतर मानव पोषण के लिए गेहूं का बायोफोर्टिफिकेशन), विपणन प्रबंधन, औषधीय सुगंधित पेड़ो की

वृद्धि इत्यादि सम्मिलित हैं। वर्तमान में १० अंतर्विषयक क्षेत्रों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (२९.९३ करोड़ रू०), एक आला क्षेत्र परियोजना (२.९६ करोड़ रूपये) एक यू एस ए आइ डी पी, दो आइ सी ए आर नेटवर्क परियोजना, एक NISAGNET, ५० नव स्वीकृत तदर्थ अनुसंधान परियोजनाओं (कुल १२.४७ करोड़ रूपये) और पूर्व से चल रही ४२ तदर्थ अनुसंधान परियोजनाओं (कुल परिव्यय २८.०२ करोड़ रूपये) का समर्थन विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों, उद्योगों और एक मेगा बीज परियोजना द्वारा किया गया। जिनका परिणाम २५ शोध कार्यो, २१२ स्नातकोत्तर (कृषि), ३३८ शोध पत्रों, ६८ लेखों और १५० पुस्तकों/ अध्यायों में परिलक्षित किया जा सकता है।

इस सत्र में कई शिक्षकों को कृषि शिक्षण, शोध, प्रोद्यौगिकी परिवर्तन आदि के क्षेत्र में योगदान हेतु राष्ट्रीय /अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसीयों ओर वैज्ञानिक संस्थानों द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

इसके अलावा कृषि विज्ञान संस्थान के इतिहास में पहली बार भा.कृ.अ.प. के सहयोग से समस्त ११ विभागों में से स्नातकोत्तर स्तर पर एक शिक्षक एवं स्नातक स्तर पर दो शिक्षकों को सर्वोत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस संस्थान की समृद्ध फैकल्टी द्वारा कुल २० शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय (कॉन्फेन्स) सम्मेलनों और १२१ शोध पत्रों को राष्ट्रीय सम्मेलनों/ संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में प्रस्तुत किये गये। शोध के क्षेत्र में (विभिन्न संस्थाओं जैसे एन.बी.पी.जी.आर., डी.डब्लू.आर., आई.आर.आर.आई., सी.आर.आर.आई., यूएसएआईडी- एआईपी, इग्नू, इक्रीसंट, सिमिट मैक्सिको, आइफपीआरआई, कॉर्नल यूनिवर्सिटी, इलिनयोस, जॉर्जिया, डेनमार्क, आई आर आर आई और विभिन्न डीबीआई और भा.कृ.अ.प. के शोध संस्थानों का सहयोग कृषि विज्ञान संस्थान को प्राप्त है।

उत्कृष्टता के इसी क्रम में दो नए डिप्लोमा पाठ्यक्रम (१) बीज प्रौद्योगिकी और विपणन एवं (२) सब्जी उत्पादन मुख्य परिसर में संचालित किये जा रहे हैं।

११ विभागों और संस्थान की तीनों ईकाइयों-डेयरी, कृषि फार्म और कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किये गये शोध, विकास और प्रसार क्रियाएँ अत्यंत उत्कृष्ट और सराहनीय रही हैं।

संस्थान के ०५ छात्रों का कृषि शोध सेवा (आई सी ए आर के द्वारा संचालित) में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से चयन हुआ। इसके अलावा १४ प्रतिष्ठानों और एन.जी.ओ. द्वारा संस्थान के चयन प्रकोष्ठ के सहयोग से कैंम्पस में साक्षात्कार का आयोजन किया गया, जिसमें १२० नए स्नातक/परास्नातक छात्रों का एक अथवा अधिक सेवाओं के लिए, ११ छात्रों का सहायक प्रोफेसर/ वैज्ञानिक पद के लिए और २३ छात्रों का आइ सी ए आर- जे आर एफ परीक्षा और प्रतिष्ठित बिजिनेस स्कूलों के लिए चयन किया गया।

;संस्थान के नए अकादमिक ब्लॉक और सभागार के निर्माण का कार्य, विभाग स्तर पर हॉस्टल, शोध फार्म और कार्यालय स्तर पर जीर्णोद्धार का कार्य पूरा किया गया है।

संस्थान के विद्यार्थियों ने अन्य गतिविधियों यथा सांस्कृतिक/ साहित्यिक क्षेत्रों में संस्थान स्तर एवं विश्वविद्यालय और अंत: विश्वविद्यालय स्तर पर और खेलों में सराहनीय उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

कृषि विज्ञान संस्थान के क्रिया कलापों की संक्षिप्त रिपोर्ट

काशी हिन्दू विश्वविद्याालय के दार्शनिक संस्थापक भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ने इस विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट परास्नातक कृषि अध्ययन को राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के लिए अद्भुत फलदायी बताते हुए सन् १९३१ में कृषि शोध संस्थान की स्थापना की। कृषि शिक्षा की साधारण लोगों के लिए महत्ता और आवश्यकता के कारण इस संस्थान को कई अलग अलग नाम दिये गये। अन्तत: १९८१ में शिक्षण और कृषि शोध विकास को एकीकृत करके इसे कृषि विज्ञान संस्थान का दर्जा दिया गया। तब से यह संस्थान कृषक उपयोगी, कृषि उपयोगी, पर्यावरण के अनुरूप तकनीक और विभिन्न उपयोगी प्रोद्योगिक और मानव-कृषि विकास से सम्बन्धित उपकरण देता आ रहा है।

कृषि विज्ञान संस्थान के वार्षिक दिवस समारोह के अवसर पर कुलपति द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन २०१३-१४ का विमोचन

सितम्बर १९-२०, २०१४ को संस्थान द्वारा आयोजित ''टीचिंग एक्सीलेंस एण्ड लर्निंग'' विषयक कार्यशाला

संस्थान के एक समारोह में माननीय राधा मोहन सिंह, कृषि मंत्री, भारत सरकार द्वारा पुस्तक का विमोचन

संकाय में कृषि को मानवता के लिए मूल सेवा माना है। भारतीय कृषि लगातार अर्ध व्यवसायिक स्थिति से पूर्णत: व्यवसायिक रूप में परिवर्तित हुई है। इन सब बदलावों को ध्यान में रखते हुए संस्थान अपने शैक्षणिक, शोध एवं विकास में पर्यावरण मूलों (मिट्टी, जल, वन एवं वानिकी) जो कृषि के वृद्धि के लिए आवश्यक हैं, विपणन और अन्न व्यवसाय और सहायक प्रौद्यौगिकी की सहायता से उत्पाद और कृषि पश्चात प्रबन्धन की बाधाओं को कम करने के प्रयास में निरन्तर अग्रसर है।

संस्थान में विद्यार्थी बी. एससी. (कृषि), एम. एससी. (कृषि) और पी. एचडी. (कृषि) पाठ्यक्रमों में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सम्मिलित प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश प्राप्त करते हैं। संस्थान की इकाइयों/विभागों में कृषि अर्थशास्त्र, सस्य विज्ञान विभाग, पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग, कीट विज्ञान एवं कृषि जन्तु विभाग, प्रसार शिक्षा विभाग, कृषि अभियांत्रिकी विभाग, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, उद्यान विज्ञान विभाग, कवक एवं पादप रोग विज्ञान विभाग, पादप कार्यिकी विभाग, मृदा एवं कृषि रसायन विज्ञान विभाग सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त विशिष्ट परास्नातक पाठ्यक्रम जैसे पी.एचडी. (कृषि अभियांत्रिकी), एम.टेक. (मृदा एवं जल संरक्षण), एग्री बिजनेस प्रबन्धन मे परास्नातक, एम.एससी. (कृषि) कृषि वानिकी, एम.एससी. पादप बायोटेक्नोलोजी, एम.एससी. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सत्र २००८-०९ से शुरू किये गये हैं। इसके अतिरिक्त एक नया डिप्लोमा कोर्स, सीड टेक्नोलोजी एवं मार्केटिंग २०१३-१४ से संचालित हो रहा है।

यह संस्थान वेटेनरी एवं पशु विज्ञान विभाग के अन्तर्गत नवीन कोर्स बी.वी.एस.सी. चलाने हेतु अथक प्रयासरत है।

हमारे पाठ्यक्रमों का मुख्य आकर्षण है इसकी अद्यतन अध्ययन सामग्री जो भा.कृ.अ.प. द्वारा संस्तुत है और जो इस क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों की कृषि आवश्कता को पूर्ण करती है।

इनमें स्नातक, परास्नातक तथा पी.एचडी. स्तर पर पाठ्यक्रमों में कृषि की स्थानीय आवश्कताओं पर आधारित विषयों को सम्मिलित किया जाता है। इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि सभी छात्रों को विभिन्न अभिकरणों द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं।

शताब्दी वर्ष में संस्थान की तीन प्रमुख प्राथमिकताएँ सुनिश्चित की गई हैं। इन प्राथमिकताओं में गरीबी उन्मूलन, खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों का समावेश और भूख मुक्त राष्ट्र बनाना शामिल हैं। उनका कृषि पर प्रभाव कैसा होगा, उसके लिए संस्थान स्नातक स्तर के छात्रों को नए औद्योगिक, विकसित प्रौद्योगिकी एवं नए कृषि प्रंबधन सीखने के लिए प्रेरित कर रहा है।

अलग-अलग विभागों की कार्यशालाओं औजारों, प्रौद्योगिकी अन्वेषण औजारों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्थान की उत्कृष्टता को बढ़ावा दे रही हैं। इन कार्यशालाओं का उपयोग हम अपने सह विभागों और संस्थानों के साथ मिलकर कर रहे हैं। इस प्रकार हम आदर्श, बहुउद्देशीय शोध कार्यो को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके कार्यान्वयन के लिए हमें भा.कृ.अ.प. का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है।

हमारे शोध घटकों में कुल संसाधन प्रबन्घन के साथ ही साथ प्रयुक्त फसल सुधार, फसल एवं मौसम का पारस्परिक प्रभाव, समेकित नाशीजीव प्रबन्धन, राष्ट्रीय गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादक, जैविक नियंत्रण, जल कृषि प्रतिरूप एवं खुम्ब उत्पादन, कार्बनिक पदार्थो का पुन:चक्रण एवं जैव-कचरे का प्रयोग, अल्पमूल्य के पंपों, मालवीय सीडड्रिल एवं वीडर का विकास, जैव उर्वरकों का आधारभूत एवं परीक्षित उत्पादन एवं वितरण (जैव नत्रजन स्थिरीकरण, पादप-वृद्धिकारक, सूक्ष्मजीव एवं मृदा संरक्षण, कवक में मात्रात्मक गुणों की जीन अवस्थिति (क्यूटीरल) का मानचित्रण और अरहर की जिनोमिक्स, औषधीय, सुगंध पौधों का जैव सुहृदीकरण) सम्मिलित है।

वर्तमान समय में संस्थान में कुल १० बहुविषयक भा.कृ.अ.प. अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ (रू.२९.३९ करोड़) एक राष्ट्रीय कृषि नवोन्वेषी परियोजना (रू.६.०३ करोड़), एक निचेरिया परियोजना (रू.२.९६ करोड़) ५० नवीन स्वीकृति तदर्थ अनुसंधान परियोजनाएँ (कुल परिव्यय रू.१२.४७ करोड़) एवं ४२ तदर्थ अनुसंधान परियोजनाएँ (कुल परिव्यय रू.२८.०२ करोड़) विभिन्न राष्ट्रीय अभिकरणों एवं उद्यमों द्वारा स्वीकृत की गई हैं। इसके साथ ही एक मेगा सीड परियोजना (फसल, बीज, उद्यनिकी, मत्स्यपालन एवं खुम्ब उत्पपादन समेत कुल परिव्यय रू.१.५ करोड़) भी संस्थान में संचालित की जा रही है। जिसका परिणाम ५० पी.एचडी. शोध प्रबंध,

२२४ एम.एससी. (कृषि) शोध प्रबंध, ३७१ शोध पत्र, ६६ लेख एवं १७५ पुस्तकें/ पुस्तक अध्यायों के सृजन के रूप में सामने आया है। इसके अलावा नए उपकरणों मे भी वृद्धि हुई है। कृषि विज्ञान संस्थान अपने विशेषज्ञ पौध प्रजनकों द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की उन्नत प्रजातियों के लिए न केवल उत्तर प्रदेश में, वरन् सम्पूर्ण अनुशंसित क्षेत्र में भी विख्यात है। संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रजातियों की कुल संख्या ११ (गेहूँ) ०१ (जौ) ०१ (धान) ०२ (मक्का) ०३ (अरहर) ०५ (मूंग) ०२ (मटर) ०३ (राजमा) ०१ (मसूर) ०१ (कुसुम) है।

संस्थान द्वारा फलवृक्षों, आलंकारिक पुष्प वृक्षों और वृक्षों की आशाजनक प्रजातियों की पौध तैयार करके उनके बहुगुणन के पश्चात इच्छुक कृषकों में उन्हें वितरित किया गया ताकि इनकी खेती एवं सम्वर्धन को प्रोत्साहित किया जा सके।

भा.कृ.अ.प. एवं उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से संस्थान के तमाम छात्र नियमित रूप से कृषि अनुसंधान सेवाओं के लिए चयनित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त तमाम प्रतिष्ठानों एवं बैकों द्वारा संस्थान के नियोजन प्रकोष्ठ के माध्यम से आयोजित परिसर साक्षात्कारों में लगभग ९० प्रतिशत स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र विभिन्न सेवाओं के लिए चयनित किए जाते हैं।

छात्रों के सम्रग विकास, प्रोत्साहन और उनको आवश्यक सुविधाएँ आदि उपलब्ध कराने हेतु संस्थान पूर्णत: कृतसंकल्प है। छात्रों की साहित्य, खेल और अन्य गतिविधियों जैसे सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं (सृष्टि) अंत: फैकल्टी सांस्कृतिक प्रतियोगिता (स्पन्दन) और अंत: विश्वविद्यालय स्तरीय (एग्रीयूनिफेस्ट) में भाग लेने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने हेतु संस्थान समर्पित भाव से प्रयास करता है।

हमारे छात्रावास बाहर के छात्रों के लिए घर के समान हैं। संस्थान के छात्रों एवं छात्राओं के लिए दो छात्रावास हैं जहाँ वार्डन और सह-संरक्षिकाएँ विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हमेशा तत्पर रहतें हैं।

विद्यार्थियों को पांरपरिक भारतीय मूल्य प्रणाली और ज्ञान से परिचित करवाने के लिए छात्रावास एवं संकाय में विशिष्ट व्याख्यान देने के लिए संस्थान ने अनेक विद्वानों और आध्यात्मिक विभूतियाँ को आंमत्रित किया है। संस्थान महामना मालवीय के दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्ध है, जिन्होंने हमेशा विनम्रता के साथ लोगों के लिए मानवीय मूल्यों और सेवा के साथ समक्ष मानव संसाधनों का सपना देखा था। हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को लागू कर रहे हैं जो न केवल आधुनिक ज्ञान के साथ तकनीकी श्रम-शक्ति पैदा करती है बल्कि गरीबों में भी सबसे अधिक गरीब की सेवा करने का भाव उत्पन्न करती है। हमारे शोध, पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार करने, प्राकृतिक संसाधनों के आधार बनाए रखने एवं कृत्रिम रसायनों के उपयोग को कम करते हुए, देश की बढ़ती हुई आबादी के लिए सुरक्षित, पौष्टिक और सस्ती खाद्य सामग्री उत्पादित करने की दिशा में सहयोग कर रहे हैं। ये संस्थान के अनिवार्य लक्ष्यों यथा एकीकृत शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार जो कि राष्ट्रीय कृषि प्रणाली के आधार स्तंम्भ हैं, को प्राप्त करने की दिशा में एक अग्रणी कदम के रूप में देखे जा सकते हैं।

गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की उपलब्धियों का विवरण

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियाँ- पाँच प्रमुख फसलों की बुआई एवं कटाई से पहले पूर्वानुमानित और प्रसारित मूल्य, चीनी उद्योग एवं सरकार के नितिगत ढ़ाँचा, पानी की उत्पादकता में सुधार लाने के लिए सुझाए हुए तरीके, शुष्क भूमि के विकास के लिए २० प्रौद्योगियों का विकास एवं कृषक समुदाय में उनका संस्थानान्तरण, विभिन्न प्रकार की संरक्षण तकनीकियों का विकास एवं किसानों के बीच उनका प्रसार, पारथेनियम एवं इकाइनोकोलोवा के प्रभावी नियंत्रण के लिए पादप उत्पादों से जैव-ऐजेन्ट का विकास, विभिन्न प्रकार की स्वदेशी एंव पारम्परिक डेयरी उत्पादों की प्रकिया अनुकूलन, ट्राईकोग्रामा एवं कराईसोपेरेला कारनी जैसे विभिन्न बायोएजेंन्ट का विभागीय स्तर पर उत्पादन, फसल के कीटों के प्रबन्धन के लिए इन जैव एंजेन्टों के उत्पादन की तकनीकी का किसानों तक प्रसार, १५४० कीटों के साथ-साथ कीट जैव-विविधता का एक विशाल संग्रह (अध्ययन के लिए), A terygotes से संबधित कीटों को विभिन्न प्रजातियों के लिए जाँच सूची व स्टैण्ड कुँजी का निर्माण। अधिक उपज देने वाली नई एवं जौ की विशिष्ट किस्म HVB113 (महामना ११३) का विकास एवं CVRC द्वारा जारी, छ: तय लादनों का विभिन्न बुआई की स्थितियों में अखिल भारतीय समन्वित परीक्षण विधि से परीक्षण। इसके अतिरिक्त २०१४-१५ में जौ की ४२ लाइनें NBDSN में परीक्षण के लिए भेजी गई है, एवं स्टेरोइड्स एवं दवाईयों के बहुत सारे अन्य प्रभाव पाये गये है, जबकि पादप स्टेरोरेड्स उपयोगी पाये गए है। इसी प्रकार Asparagus Sp. के स्टेरोइडल सेपोनिन के लिए आनुवांशिक एवं फाइटोकेमिकल्स का विश्लेषण किया गया है। इन महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की दो अधिक उपज देने वाली जीनोटाइप की पहचान के साथ-साथ ६४ से अधिक आयुर्वेदिक दवाओं और फार्मूलों के सक्रीय संघटक का पता चला है। चावल की विशिष्ट हाईब्रीड्स विकसित की गई है। ये संकर किस्में बड़े भू-खण्डों में परिक्षण के बाद मानक परीक्षणों के लिए भेजी जायेंगी।

पहली बार यह भी प्रदर्शित किया गया है कि Actinomycetes, streptomyces rocheives ethylene मध्यस्थता संकेत पारगमन मार्ग के द्वारा चने में प्रतिरोध की क्रिया को सक्रिय किया है। पादप-रोगजनक की पारस्परिक क्रिया में Nitric Oxide की भूमिका विशेष रूप से Aspergillus sp & Xanthomonas crytae के साथ चावल, तम्बाकू, एवं मटर में अत्यंत अनुकूल प्रतिक्रिया के विकास के द्वारा स्थापित की गई है। ये ROS एवं SAR की रोग प्रतिरोधक क्षमता के बचाव रास्ते से मध्यस्थ की जाती है। वाराणसी में गंगा के मैदानों के लिए K-Sphisilising bacterial isolates का विकास किया गया है।

छात्रों के लिए उपलब्ध अनुसंधान की सुविधाओं का विवरण

संस्थान के सभी कक्षा कक्ष एलसीडी प्राजेक्टरों एवं ऑडियो सिस्टम से लैस हैं। यहाँ शिक्षण में PPT का उपयोग किया जाता हैं। व्याख्यान की विडियो रिर्काडिंग आनलाइन पोर्टल पर अपलोड की जाती है ताकि विद्यार्थियों के लिए व्याख्यान 2 4X7 आधार पर उपलब्ध रहें। संस्थान में SAS Shopioticated Software के आणविक प्रजनन पर केद्रीकृत प्रयोगशालाएँ, जैव-नियंत्रण-खाद्य प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटिग

प्रयोगशालाएँ उपलब्ध हैं। नए उपकरण जैसे sorchlet Apparatus, kieldau digestion & distillation unit, AAS, Tray Dryer & Colour Labs, इत्यादि भी लाए गए हैं।

नये कार्यक्रम : हाल ही में सिंचाई और प्रंबधन कृषि विज्ञान में पी.एचडी. के लिए नये पाठ्यक्रम को मंजूरी दी गई है यह पाठ्यक्रम UGC SAP कार्यक्रम के तहत संचालित किया जायेगा।

विभाग/केन्द्र/ईकाईवार मुख्य अनुसंधान उपलब्धियाँ (२०१४-१५)

कृषि अर्थशास्त्र विभाग

(१) बुआई पूर्व एवं कटाई के समय पाँच मुख्य फसलो के मुल्यों का पूर्वानुमान एवं किसानों तक उसका प्रेषण। (२) चीनी उद्योग संबधित नितिगत सुझाव। (३) जल की उत्पादकता सुधार हेतु विभिन्न संस्तुतिया (४) बुआई पूर्व एवं कटाई के समय पाँच मुख्य फसलो के मुल्यों का पूर्वानुमान के पश्चात ५०० किसानों को लघु संदेश द्वारा प्रेषण एवं टेलीविजन एवं समाचार पत्रों के माध्यम से प्रसारण, किसान उत्पादक संगठन सम्बधि जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम।

सस्य विज्ञान विभाग

(१) शुष्क खेती सम्बन्धी २० तकनिकीयों का विकास एवं किसानों तक स्थान्नापन। (२) सिंचित अवस्था में १ हेक्टेयर भूमि का समन्वित कृषि मॉडल का विकास। (३) संरक्षण आधारित विभिन्न तकनिकीयों का विकास एवं किसानों तक स्थान्नापन। पैरैथिनियम एवं इक्नोकोला के प्रभावी नियंत्रण हेतु पौधे से बायोहरबिसाइड का विकास (४) पूर्वी उत्तर प्रदेश के कृषि प्रक्षेत्रों पर सरसों का १० अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनी कराया गया।

पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग

(१) दुग्ध उत्पादों के विभिन्न ग्रामीण एवं घरेलू तकनिकि पद्वति का मानिकीकरण। (२) समाज के लिए दुध मे मिलावट सम्बन्धी जाँच की परिक्षण सुविधा स्थापित। (३) समाज में सूक्ष्म पोषक तत्वो की कमी के निवारण हेतु विटामिन एवं अन्य पोषक तत्वों के साथ दुग्ध फोर्टिफिकेशन पर कार्य जारी।

कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान विभाग

(१) दालो एवं सब्जियों और तिलहन सम्बन्धी स्थान आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन मॉडल विकसित एवं किसानों तक प्रसारित। (२) टाईकोडर्मा एवं टाईकोगामा, साईकोपरलेकेरना का विकास। इन तनिकियों को किसानों तक पहुंचा कर इसका विकास एवं प्रबंधन कराना। (३) टेक्शोनामी अध्ययन हेतु १५४० कीटों का संग्रहण जैव विविधता के अनुसार। (४) कीटों के विभिन्न प्रजातियो के आधार पर टिडीयोगोडस का चेक लिस्ट तैयार करना। (५) धान की कृषि पारिस्थितिकी मे ड्रैगन मक्खी की विभिन्न शिकारी प्रजातियों की पहचान की गयी और उनका संरचनात्मक निरूपण किया गया। कोलेमबोला की ६ प्रजातियों की संरचना का निरूपण किया गया और स्कैनिंग इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी से उनका अध्ययन किया गया। (६) डिजिटल चित्रों के साथ ८५ फसलों / वृक्षों पर कीटों के प्रकोप के लक्षण, ४५ शत्रु कीटों और ३६ प्राकृतिक शत्रुओं के जीवन की अवस्थावों का प्रलेखीकरण किया गया। पौधभक्षी चिचड़ियों के विकास की अवस्थाओं का भी प्रलेखीकरण किया गया।

प्रसार शिक्षा विज्ञान विभाग

(१) कृषक प्रशिक्षण मे प्रसार केन्द्रों की केन्द्रीय भूमिका रही। (२) वैयक्तिक एवं संस्थागत स्तर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारीयों/कर्मचारियों मे लगभग २० प्रतिशत का ई - अन्तराल रहा।

प्रक्षेत्र अभियांत्रिकी विभाग

भारत से कॉफी निर्यात करने के पूर्वानुमान का एक सांख्यिकीय माडल विकसित किया गया।

आनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग

(१) जौ की नई उच्च ऊपज वाली श्रेष्ठ प्रजाति एज. यू. बी. - ११३ (महामना - ११३) विकसित की गयी तथा सी. बी. आर. सी. द्वारा अवमुक्त की गई। (२) छः नियत लाइनों को अखिल भारतीय समन्वित प्रदर्शनों के माध्यम से विभिन्न बुवाई की दशा मे परिक्षण। (३) वर्ष २०१४-१५ में जौ की ४२ लाईनों को एन. बी. डी. एस. एन. में परीक्षण के लिए भेजा जा चुका हैं। (४) सतावर का स्टेराइडल सेपोनिन हेतु आंनुवाशिक एवं फाइटोकेमिकल विश्लेषण किया गया। जिसे ६४ से अधिक आयुवेर्दिक औषधियों मे प्रयोग किया जा सकता हैं। (५) श्रेष्ठ संकर धान विकसित किया गया जिसने नियन्त्रण प्रजाति पर सार्थक परिणाम दिये । इन संकर प्रजातियों का प्रक्षिक्षण बड़े प्रक्षेत्रों पर उनकी गुणवत्ता जानने हेतु समन्वित प्रदर्शनों हेतु भेजा गया। (६) धान की उत्कृष्ठ मेन्टेनर लाइन्स की पहचान की गई, जिन्हे बैक क्रास के माध्यम से नई सी. एम. एस. लाईन्स को विकसित करने मे किया गया। (७) गेहूँ के ८६३ जर्मप्लाज्म का मुल्यांकन सस्य क्रियाओं तथा उत्पादन के आधार पर किया गया। (८) गत वर्ष २०१४-१५ मे गेहूँ के १४८३ जर्मप्लाजम को प्रक्षेत्र मे बोया गया। (९) एच. यू. आर. - ९१७ को एस. बी. आर. सी. से अवमुक्त किया गया तथा नोटिफिकेशन के लिए जमा किया गया। (१०) धान की एच. यू. आर. - १०५ की उपजाति १-बी. सी.३ की लाइम विकसित की गई। उसकी पृष्ठभूमि एच. यू. आर. - १०५ की हैं। (११) ए. बी. आर. लाइन्स की पहचान तथा इसका संकर प्रजनन कार्यक्रम में उपयोग।

उद्यान विज्ञान विभाग

औद्यानिक फसलों की सफलता के लिए उच्च गुवत्ता वाला पौधें सामाग्री अतिआवश्यक हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में अमरूद, आम, ऑवला, बेल आदि फलों की प्रमुख फसलें हैं। जिनकी व्यवसायिक स्तर पर खेती की जाती हैं। लेकिन इनकी पौध साम्रगी सीमित हैं। परिमाण स्वरूप यहाँ इनकी खेती में निरन्तर कमी आ रही हैं। विभाग से निम्न फलों की पौध सामग्री किसानो को विक्रय की गई। आम (आम्रपाली, लंगड़ा, दशहरी एवं मल्लिका), अमरूद (इलाहाबाद सफेदा, लखनऊ - ४९, ललित तथा गोरख विलास पंसद), नीबू (किन्नो, कागजी निब्बू, लेमन - कागजी काला), आँवला (एन.ए-९७, एन.ए-६ और चकैया), बेल (कागजी, एन.बी-९, एन.बी-७, सी.आई.एस.एच.बेल -१ और -२), कटहल, पपीता (पूसा डिलीसिपस, पूसा नन्हा, पूसा मेजेस्टों तथा पूसा

ड्वार्फ), बेर (बनारसी कड़ाका और गोला), जामुन (मालवीय जामुन-१), गुलाब तथा प्याज (एग्री फाउण्ड लाइट रेड) की पौध

कवक एवं पादप रोग विभाग

(१) जैव नियंत्रक अभिकर्मक से नेनोपेस्टिसाइड का विकास तथा गेहूँ के स्पॉटब्लॉच पैथोजन पर सफल परीक्षण (२) उच्च गर्म अवस्था पर अच्छा परिणाम देने वाला एक जैव नियंत्रक एजेन्ट पहचाना गया तथा इसकी गर्मी सहने की प्रणाली को प्रोटियोनिज्म पर अध्ययन किया। (३) बाइपोलेरिस सोनोकिनमाना के नियंत्रण हेतु कई फिजियोलाजिकल तथा मॉलिकूलर मार्कर्स की पहचान की गई। (४) मटर में जी अल्फा सबनिट आइरिस पीसी के संक्रमण के दौरान सक्रिय रहता है, इसकी पहचान की गई। (५) चने में सक्रिय इथाइलीन मेजेमेटिड सिगनल ट्रान्सडकषन पाथवे को एक्टीनोमाइसिटी स्ट्रेप्टोमाइसिस रोची प्रतिरोधिता को प्रथम बार प्रदर्शित किया गया। (६) एम-आर एन ए को इक्यूवेशन के विभिन्न अन्तरालों पर पृथक किया गया।

पादप कार्यिकी विभाग

(१) सीड प्राइमिंग के साथ अकार्बनिक साल्ट्स तथा पी.जी.आर. का धान की विभिन्न प्रजातियों के गुणों पर प्रभाव पर शोध कार्य प्रगति पर है। (२) मसूर में शुष्क अवस्थाओं में फीनोलोजिकल विकास मार्फोफिजियोलोजिकल तथा जैव रसायनिक बिन्दुओं पर जीनोटाइपिक अन्तर मिलते हैं। अत: फली बनते समय नमी की उपस्थिति इस फसल के लिए क्रान्तिक होती है। (३) कार्बन आइसोटोपिक डिस्क्रिमिनेशन (सी.आई.डी.) तकनीकी का प्रयोग मसूर में सहिश्णु तथा संवेदी प्रजातियों में नमी का दबाव चिन्हित करने के लिए किया जा सकता है। इसका एक विकल्प एस.एल.डब्ल्यू. का आकलन भी है। (४) ब्रेसनोलाइड और ब्रेसनोस्टेराइड मूँग की प्रजातियों एच.यू.एम.-२३ और एच.यू.एम.-१६ में सार्थक रूप से मार्फोफिजियोलोजिकल जैव रासायनिक और एण्टी आक्सीडेन्ट प्रणाली में सुधार करके पाये है। (५) एस्कार्बिक एसिड क्षारीय अवस्थाओं में उपज में वृद्धि करने में सक्षम रहा। (६) नाइट्रिक ऑक्साइड, तम्बाकू, धान और मटर में एसपरजेलस तथा जेन्थेमोनास ओराइजी के प्रति हाइपर सेन्सटिव रेस्पोन्स उत्पन्न करने में सक्षम पाया गया। (७) ट्राइकोडर्मा एसपरलम टी-४२, जेन्थोमोनास ओराइजी के ऊपर प्रभावी रहा।

कृषि रसायन एवं मृदा विज्ञान विभाग

(१) फॉस्फोरस और सल्फर युक्त कार्बनिक खनिज उर्वरकों का मूँग में एनपीके के साथ प्रयोग उत्तम पाया गया। (२) गंगा के मैदानी भागों में १७ फास्फोरस विलेयक जीवाणुओं का विकास किया गया। (३) नैनो क्ले बायो पॉलीमर कम्पोजिट का संश्लेषण किया गया। (४) सल्फर, जिंक और बोरॉन (४०:५:१.५ किग्रा./हे.) धान-गेहूँ प्रणाली में उत्तम पाया गया।

खाद्य विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी केन्द्र

(१) अमरूद के पावडर द्वारा श्रीखण्ड, चॉकलेट और कैण्डी विकसित किये गये। (२) कृषि उच्छिष्ट के प्रयोग के द्वारा इंजाइम और मेआवोलाइट का उत्पादन। (३) फल और सब्जियों के एन्टीऑक्सीडेन्ट द्वारा दुग्ध का पोषण संवर्धन।

निच एरिया परियोजना

(१) गेहूँ में स्पाट ब्लॉच प्रतिरोधिता से संबंध दो प्रमुख क्यू.टी.एल. सफलता पूर्वक विकसित किये गये। (२) कुछ अरहर के एस.एस.आर. मार्कर फयूजेरियम प्रतिरोधिता से जुड़े पाये गये। (३) गेहूँ में स्पॉट ब्लॉच प्रतिरोधिता के लिए कुछ एकल पौधों की पहचान की गई।

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (गेहूँ सुधार)

(१) परीक्षणों में कुल ११ प्रजातियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें एचयूएम-६८८, उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में दूसरे वर्ष परीक्षित किया गया। (२) प्रादेशिक प्रजाति परीक्षणों में गेहूँ की कुल १४ प्रजातियों का परीक्षण किया गया। (३) एडवान्स वैराइटल ट्रायल, नेशनल वैराईटल ट्रायल, स्पेशल ट्रायल समेत कुल ७ सम्नवित परीक्षणों का आयोजन किया गया। (४) गेहूँ की नर्सरी में एन. जी. एस. एन. गेहूँ वायोफोर्टिफिकेशन तथा मल्टीलोकेशन, जर्मप्लाज्म नर्सरी समेत कुल ३ पौधाशालाओं का आयोजन किया। (५) उपरोक्त के अतिरिक्त २ स्टेशन ट्रायल भी आयोजित किये गये। (६) कुल ८५ नये संकरणों का प्रयास किया गया। (७) क्रासिंग ब्लाक में पुराना क्रासिंग ब्लाक ३४९ तथा ८० रहा।

अखिल भारतीय समन्निवत अनुसंधान परियोजना (भा.कृ.अनु.प.)

जौ उन्नतीकरण

जौ की उच्च उत्पादन प्रजाति एच. यू. बी. - ११३ (महामना - ११३) संस्थान द्वारा विकसित की गई तथा सी. बी. आर. सी. द्वारा अवमुक्त की गई।

चावल उन्नतीकरण

एच. यू. आर. - ९१७ धान के छोटे दाने वाली प्रजाति का प्रस्ताव सी. बी. आर. सी. लखनऊ को जमा किया गया। कृषि भवन लखनऊ में २७.११.२०१४ को सी. बी. आर. सी. की आयोजित बैठक में इस पर विचार किया गया और पूरे उत्तर प्रदेश के लिए इस प्रजाति को अवमुक्त करने हेतु चिन्हित किया गया।

इस प्रजाति को सी. बी. आर. सी., नई दिल्ली द्वारा अधिसूचित कराने की दिशा में प्रयास जारी है। सभी समन्वित परीक्षण जो खरीफ २०१४ हेतु मिले थे सफलतापूर्वक संपन्न किये गये।

मक्का उन्नतीकरण

आई. वी. टी. एवं ए. बी. टी. मे मूल्यांकन हेतु चार प्रविष्टियाँ (बी. इ. एच. क्यू. १४ - १, बी. इ. एच. क्यू. ११ - १, बी. इ. एच. १४-१, बी. इ. एच. १४ - २) दी गई।

अरहर उन्नतिकरण

अरहर मे आई. पी. एम. का रूपांतरण एवं पुष्टिकरण किया गया। मुख्य कीट एवं बीमारियों के विरूद्ध अरहर के जीनोटाइप्स की छटनी की गई। पेस्ट बोरर कमप्लेक्स की विरूद्ध नये कीटनाशों का मूल्यांकन किया गया।

मुलार्प सुधार

क्षेत्र में मौजूद मुख्य कीट एवं बीमारियों की प्रतिरोधी प्रजनक पंक्तियों को चिन्हित किया गया। मुलार्प के विभिन्न फसलों हेतु आई पी

एम माड्यूल विकसित किये गये। मूँग, उर्द, मसूर एवं मटर में प्रयोग हेतु बाद मे होने वाले खरपतवार नाशियों का मूल्यांकन किया गया। मटर के पावडरी मिलड्यू हेतु प्रतिरोधी मार्कर का पुष्टिकरण किया गया एवं नये जीन आधरित विकसित किये गये। सभी परीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न किये गये और सूचित कियें गये। केन्द्र उत्पादन को सौपा गया बीज उत्पादन का कार्य पूरा किया गया।

राई एवं सरसों उन्नतिकरण

वर्षा आधारित स्थिति में सरसों का उत्पादन अधिकतम पाया गया तथा सूखे के तनाव को दूर करने में १ प्रतिशत ख्ध्३ का पर्णीय छिड़काव (५० प्रतिशत फूल लगते वक्त ३ ५० प्रतिशत दाना भरने की अवस्था में) कारगर पाया गया।

शुष्क क्षेत्र कृषि

(१) वर्षा जल प्रबन्धन : (अ) चने में विभिन्न सूख प्रबन्धन क्रियाओं के अन्तगर्त २ प्रतिशत यूरिया ३ २ प्रतिशत पोटेशियम क्लोराइड ३ ०.४ प्रतिशत सेलेनियम का पुष्पन पूर्व एवं फली निर्माण अवस्था पर पर्णीय छिड़काव सार्थक रूप से फसल को उपज में वृद्धि करने में सफल रहा। (ब) मुख्य परिसर में लगाई गई उच्च मूल्य की फसलों में लौकी से सर्वाधिक उपज (२०६५० किग्रा/हे०) प्राप्त हुई जिसका लाभ/लागत अनुपात ९.०३ रहा। इसके पश्चात् भिंडी का स्थान रहा जिसकी उपज ५९२५ किग्रा/हे० रही और लाभ/ लागत अनुपात ४.०७ रहा।

(२) वैकल्पिक भू-उपयोग प्रणाली: विन्ध्य क्षेत्र में ०.५ से.मी. की दूरी पर की गई ४० से.मी. गहरी कस्टर्ड एप्पल रूट प्रूनिंग बाजरे की फसल की अच्छी पैदावार मे सहायक साबित हुई।

(३) कृषि प्रणाली: समन्वित कृषि प्रणली के अन्तर्गत पड़री, मिर्जापुर मे ऑवला, मूँग, सरसों प्रणाली द्वारा प्राप्त लाभ-लागत अनुपात ४.२१ रहा जबकि अमरूद्बाजरे से प्राप्त उक्त अनुपात ३.२१रहा।

(४) तकनीक प्रदर्शन : एन. आई बी आर ए (निकरा) परियोजना के अर्न्तगत परस्पर सहयोग द्वारा ए आई सी आर पी संचालित शुष्क श्वेत कृषि (मुख्य केन्द्र वाराणसी) में स्टेशन पर एवं प्रक्षेत्र पर दोनो ही तरह से उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

समन्वित कृषि प्रणाली : (१) धान-गेहूँ प्रणाली के २५ वर्षो के धान की धनात्मक सिद्ध हुई है जबकि गेहूँ के लिए ठीक इसका उल्टा पाया गया हैं। (२) सिंचित क्षेत्रो में वाराणसी के लघु एवं सीमांत कृषको के लिए एक हेक्टेयर क्षेत्रफल की समन्वित कृषि प्रणाली विकसित की गई। (३) दीर्घावधि के भूमि प्रयोगों के आधार पर धान-आलू-मूँग के बाद धान-मटर-भिंडी को धान-गेहूँ के प्रणाली के विविधिकरण के अच्छे विकल्प के रूप मे त्रिंहित किया गया हैं।

राष्ट्रीय बीज परियोजना (भा.कृ.अनु.प.)

उत्पादित नाभिकीय एवं प्रजनन बीजों की मात्रा धान मे क्रमश: ३५ एवं २४० कुन्तल, गेहूँ में क्रमश: ४० एवं १३५ कुन्तल, अरहर में क्रमश: २ एवं ४० कुन्तल, मटर मे क्रमश: ५ एवं १५ कुन्तल, मूँग मे क्रमश: ३ एवं ५८ कुन्तल एवं मसुर मे क्रमश: २ एवं २८ कुन्तल रही।

रिवाल्विंग निधि की स्थिति (२०१४-१५)

इसके अन्तर्गत रू० ४०१५२३०.०० लाभार्जित किया गया जिसमे से रू० २००९९८०.०० लाभ प्रजनक बीज उत्पादन के लिए उपयोग किया गया एवं रू० २००५२५०.०० शेष बचा हैं।

मशरूम उत्पादन

(१) २५०० बाटल मशरूम स्पान उत्पादित किया गया। (२) कृषकों के लिए हिंदी भाषा में मशरूम उत्पादन नामक पुस्तक लिखी गई।

राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (एन. ए. आई. पी.) की प्रमुख उपलब्धियाँ

(१) इसके अतर्गत मिर्जापुर एवं सोनभद्र के तीन विकास खण्डों में ८ चेक डैम एवं २८ जल संचयन मेड़ निर्मित किये गए एवं कृषक समूहों में ४४ डीजल इंजन पम्प सेट और २५२८४ पी वी सी पाइप वितरित किये गए। (२) तीन कलस्टर मे सिंचाई के अंतगर्त कुल ३६९.६ हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्रफल को सम्मिलित किया गया। इसमें २९.२ हेक्टेयर दबावयुक्त सिंचाई क्षेत्रफल भी सम्मिलित हैं। (३) परियोजना के ३ क्लस्टर मे ३२८ परिवारों मे धान की सीधी बुवाई को १३८ हेक्टेयर क्षेत्रफल मे अपनाया जिसके फलस्वरूप परम्परागत क्रियाओं के तुलना में प्रति परिवार १०,९०१ रूप्ये की आमदनी दर्ज की गई। (४) विन्ध्य क्षेत्र के लघु एवं सीमांत कृषक परिवारों के लिए जलसंभर आधारित एकीकृत कृषि पद्धति मॉड्यूल को विकसित किया गया। (५) मिर्जापुर एवं सोनभद्र के ४६०० से ज्यादा कृषक परिवारों के लिए जीवन यापन सुरक्षा सुनिश्चित किया गया। (६) विन्धय क्षेत्र के कृषकों को धान के गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया।

यू. एस. ए. आई. डी. एग्रीकल्चर इन्नोवेशन पार्टनरशिप कार्यक्रम की उपलब्धियाँ

(१) धान के प्लाट मे उर्वरको की निर्देशित मात्रा (१२०:६०:६०) + S, Zn & B एवं को ४०:०५:१.५ किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करने पर उच्चतम उत्पादन मिला। (२) उर्वरक की निर्देषित मात्रा के साथ सल्फर, जिंक और बोरोन (४०-५.०-१.५ किग्रा प्रति हेक्टेयर) से अधिकतम उत्पादन हुआ परन्तु ऑर्गेनिक २५ प्रतिशत नाइट्रोजन का उपयोग धान-गेहूँ के प्रणाली को भविष्य में भी लाभान्वित करती प्रतीत होती हैं। (३) अकार्बनिक स्त्रोतों से दिये गये जिंक से मृदा मे अच्छी मात्रा बनी। इसमें कार्बनिक सप्लीमेंट मुख्यत: सीवेज स्लज भी शामिल हैं। (४) ओ. एल. ए. टी. पर ५६० वीडियों व्याख्यान अपलोड किये गए।

कृषि अनुसंधान प्रक्षेत्र

(१) जलीय-कृषि- वानिकी के अन्तर्गत मत्स्य पालन के लिए दो तालाबों का आवंटन किया गया जिसमे से एक तालाब को मेगा सीड परियोजन के मत्स्य हैचरी घटक को स्थानान्तरित कर दिया गया। इस तालाब का माप ९५`४५`३ मी० थी। (२) वर्तमान समय मे कुल २१ अनुसंधान परियोजनाये प्रक्षेत्र पर चल रही हैं। इनमे माडल परियोजना, मुलार्प परियोजना, गेहूँ एवं जौ परियोजना, ई. आर. आर. आई. परियोजना, शुष्क क्षेत्र परियोजना, मक्का परियोजना, दलहन

परियोजना, मेगा सीड परियोजना, एन. एस. पी. परियोजना, एस. टी. सी. आर. परियोजना, तिलहन परियोजना, धान परियोजना, यू. एस. ए. आई. डी. आई. पी. (एन. आर. एम.) परियोजना आदि सम्मिलित हैं। (३) वर्ष २०१४ - १५ के दौरान प्रक्षेत्र द्वारा कुल ९१ छात्र/ छात्राओं (३६ एम. एस. सी. तथा ५७ पी. एच. डी.) को परिक्षणों को पूरा करने के लिए सुविधायें प्रदान की गयी। (४) प्रक्षेत्र पर विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत उन्नत प्रजाति के बीजों का उत्पादन किया जा रहा हैं ये बीज परियोजनाओं के मुख्य अन्वेषक के माध्यम से बिक्री के लिए उपलब्ध कराये जाते हैं।

डेयरी प्रक्षेत्र

(१) वर्तमान में डेयरी प्रक्षेत्र का उपयोग छात्र/छात्राओं के प्रायोगिक एवं अनुसंधान कार्यो के लिए किया जा रहा है। इन छात्रों मे पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान, खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के का.हि.वि.वि. केन्द्र एवं संस्थान के अन्य विभागों के छात्र/छात्राऍं सम्मिलित हैं। (२) प्रक्षेत्र द्वारा कृषि प्रक्षेत्र, औद्यानिक इकाई तथा विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को दुग्ध, एवं जानवरों की खाद भी उपलब्ध कराई जाती हैं। (३) वर्तमान मे प्रक्षेत्र की पशुशाला में कुल ४०५ पशु हैं जिसमें से १९ भैसे तथा ३८६ अन्य दुग्ध पशु हैं। इनमें से ६३ शुष्कावस्था में हैं और ३२ नर बछड़े हैं। (४) प्रक्षेत्र पर एक पशुचिकित्सालय भी है जिसमें पशु चिकित्सक के साथ एक पशु चिकित्सा कम्पाउण्डर भी कार्यरत है। ये सभी प्रोफेसर इन्चार्ज की देखरेख में कार्य कर रहे हैं जो प्रक्षेत्र पशुओं के स्वास्थ्य प्रबन्धन एवं उपचार की देखभाल करते हैं। इसके साथ ही साथ प्रक्षेत्र पर उत्तर प्रदेश सरकार से सम्बद्ध एक अन्य पशुचिकित्सालय भी संचालित किया जा रहा है जिसमें कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा के द्वारा पशु की नस्लों का प्रबंधन किया जाता हैं। (५) अगस्त २०१४ से प्रक्षेत्र परिसर में पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान द्वारा एक पशु किलीनिक खोला गया हैं जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सक जटिल समस्याओं जैसे डिस्टोकिया का उपचार तथा आकस्मिक शल्य चिकित्सा भी की जारही हैं। (६) प्रक्षेत्र मे पहली बार जानवरों के पहचान के लिए कान पर मुहरें लगाई गयी हैं। (७) प्रक्षेत्र पर उत्पन्न गोमूत्र को विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान के आयुर्वेद संकाय को भी उपल्बध कराया गया हैं। (८) इस वित्त वर्ष के दौरान ४ लीटर से अधिक क्षमता वाले पशुओं के दुग्ध निष्कासन के लिए शुरू हुआ हैं। (९) वर्तमान वर्ष में प्रक्षेत्र पर ४ वर्ष से अधिक आयु वाली ओसरों को विशेष महत्व दिया गया और उन्हें विशिष्ट आहार जिसमें प्रोटीन, खनिज लवण तथा कैल्शिमयुक्त थे, दिये गये इस कारण इस वित्त वर्ष में ४ वर्ष से अधिक आयु की कुल ४४ ओसरों मे से १६ ने बच्चे दिए ७ गर्भ की अन्तिम अवस्था में तथा १० गर्भ काल के मध्य पहुच गई हैं। (१०) ब्यांत के मध्य अन्तर कम करने के लिए हमने वैज्ञानिक विधियों जैसी गायों की कृत्रिम गर्भधान के नियोजन का सहारा लिया। इससे लगभग ९५ प्रतिशत दुग्धावस्था वाली गायो ने बच्चें दिए अथवा गर्भ धारण किया जिसके कारण ब्यांत का अन्तराल १५-२४ माह से घट कर १२-१४ महिने हो गया। (११) हरे चारों की आवश्कता पूर्ति के लिए इस वर्ष प्रायोगित स्तर पर एजोला की खेती प्रारम्भ की गयी हैं। (१२) प्रस्तुत वित्त वर्ष में वर्ष २०१३-१४ की अपेक्षा दुग्ध उतपादन में लगभग १५,००० लीटर की वृद्धि हुई। वर्ष २०१४-१५ में कुल दुग्ध उत्पादन २,२६,७४४ लीटर रहा तथा दुग्ध देने पशुओं की संख्या ८१ से बढ़कर ११५ हो गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र

(१) प्रतिवेदन वर्ष में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कुल ०९ प्रक्षेत्र परीक्षणों के माध्यम से २२ तकनीकियों का परीक्षण ३९ कृषकों की सहभागिता से उनके प्रक्षेत्रों पर किया गया। ये परीक्षण फसल सुरक्षा, समेकित पौध-पोषक तत्व प्रबंधन उर्वरक प्रबन्धन नाशवान उत्पादों के प्रक्षेत्र पर भंडारण (लघु अवधि के लिए), पोषण वाटिका तथा घर के पिछवाड़े कुक्कुट-पालन द्वारा पोषण सुरक्षा से सम्बधित थे। इन परिक्षणों में खाद्यान्न, दलहन, शाकीय फसले फल वृक्ष सम्मिलित हैं। (२) प्रतिवेदन वर्ष में कुल २१४ अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत कुल ८४.१३ हेक्टेयर क्षेत्रफल का आच्छादन सुनिश्चित हुआ। इनके माध्यम से कुल ३५ तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया। ये प्रदर्शन जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में किसानों के खेती पर आयोजित किये गये। (३) तिलहन मे चार तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया जिनमें १६ किसानों की सहभागिता रही और तिल, सरसों तथा सूरजमुखी को मिलाकर कुल २२ हेक्टेयर क्षेत्रफल में इसका आच्छादन रहा। इसी प्रकार दलहन में क्रमशः ०९ तकनीकी, ६० किसान और २४.६७ हे० क्षेत्रफल था जिसमें अरहर, मूँग, उर्द, मटर , चना और मसूर सम्मिलित किए गए हैं। (४) खाद्याान्न फसलों पर कुल १११ प्रदर्शन आयोजित किए गए जिनमें १४ तकनिकियों का प्रदर्शन कुल २३.८६ हे० क्षेत्रफल पर किया गया। इनमें धान, गेहूँ तथा मक्का शामिल थे। इसी प्रकार शाकीय फसलों मे टमाटर, भिन्डी तथा सब्जी मटर पर कुल ०६ तकनिकियों का प्रदर्शन ११ किसानों के खेतो पर ०३ हे० क्षेत्रफल मे किया गया । (५) संकर किस्मो पर ०२ तकनिकियो का प्रदर्शन १६ किसानों के खेतो पर १०.६० हे० क्षेत्रफल मे किया गया। (६) प्रतिवेदित वर्ष मे कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा १२८ प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमे कुल २५२१ प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की। इनमें २११० पुरूष तथा ४११ महिलाए थी। (७) कृषकों के लिए आयोजित ७५ प्रशिक्षणों मे १२७२ पुरूषों तथा २०१ महिलाओं समेत कुल १४७३ प्रतिभागी थे। ग्रामीण युवाओं के लिए १४ प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया जिनमे २५५ पुरूष और ६० महिलाए थी। (८) प्रसार कार्यकत्ताओं के लिए आयोजित कुल १४ प्रशिक्षणों मे १८१ प्रतिभागी थे जबकि ०९ प्रायोजित प्रशिक्षणों मे १६४ पुरूष और ४९ महिलाए समेत २१३ प्रतिभागी दर्ज किए गये। (९) प्रतिवेदित वर्ष मे केन्द्र द्वारा १६ रोजगार परक पाठ्यक्रमों पर प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया जिनमें २३८ पुरूष एवं १०१ महिलाओं समेत कुल ३३९ प्रतिभागी थें। (१०) प्रतिवेदित वर्ष में केन्द्र द्वारा कुल ५७३ प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें कुल ९२०७ प्रतिभागी उपस्थित रहें। इनमें ८१४७ किसान तथा ४८७ प्रसार कार्यकर्ता थे। (११) प्रसार कार्यक्रमों में सलाहकारी सेवाओं, नैदानिक भ्रमण, प्रक्षेत्र दिवस, समूह चर्चा, किसान गोष्ठी, फिल्म प्रदर्शन, स्वंय सहायता समूह का गठन, किसान मेला प्रदर्शनी, पूर्व प्रशिक्षु सम्मेलन, पशु/पौध स्वास्थ्य शिविर, कृषक संगोष्ठी/कार्यशाला/विधि प्रदर्शन, हिन्दी दिवस का आयोजन प्रमुख थे।

२.१.१.२. चिकित्सा विज्ञान संस्थान

वर्तमान में चिकित्सा विज्ञान संस्थान के अन्तर्गत नर्सिंग महाविद्यालय सहित तीन संकाय–आधुनिक चिकित्सा, आयुर्वेद एवं दंत चिकित्सा विज्ञान संकाय कार्यरत हैं। सन् १९२२ में प्रारम्भ हुए संस्कृत विद्या धर्म संकाय में आयुर्वेद विभाग के रूप में इसे संस्थापित किया गया। शनैः शनैः यह विधा एक बीज से विशाल वट वृक्ष के रूप में पल्लवित हुई। सन् १९२७ में यह आयुर्वेद चिकित्सा महाविद्यालय के रूप में स्थापित हुआ और यही महाविद्यालय सन् १९६६ में चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। पद्मश्री प्रो. के.एन. उडुप्पा के त्याग, समर्पण व अथक परिश्रम के फलस्वरूप यह सन् १९७१ में चिकित्सा विज्ञान संस्थान के रूप में मूर्त हुआ और सन् १९७८ में इसके अन्तर्गत दो संकाय चिकित्सा विज्ञान व आयुर्वेद अस्तित्व में आये। पूरे देश में यह पहला और अनूठा संस्थान है जहाँ पर दोनो विधाएँ समानान्तर रूप से पुष्पित और पल्लवित हो रही है। इन दो विधाओं में से रोगी किसी भी पद्धति का चुनाव कर सकता है। अपने स्थापना काल के बाद निरन्तर ४५ वर्षों से यह संस्थान दोनों चिकित्सा पद्धतियों में देश को चिकित्सक उपलब्ध कराता आ रहा है। यह संकल्पना अपने आप में अनूठी है।

वर्तमान में चिकित्सा विज्ञान संस्थान में २३ सामान्य व ११ विशिष्ट विशेषज्ञता वाले विभाग अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। समानान्तर आयुर्वेद संकाय के १५ विभाग भी इसी की उन्नति के लिए अहर्निश प्रयत्नशील हैं। दंत चिकित्सा विज्ञान संकाय एवं साथ में नर्सिंग कालेज भी अपनी विद्या की छटा बिखेर रहे हैं। संस्थान से सम्बद्ध सरसुन्दर लाल चिकित्सालय में सम्प्रति आयुर्वेद की १८२ रोगी शैय्या सहित कुल १२४३ रोगी शैय्याएँ उपलब्ध हैं। साथ ही डी.एम./एम.सी.एच. छात्रों के लिए अलग से २४५ रोगी शैय्या आबंटित है। हाल ही में ट्रामा सेन्टर का माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा लोकार्पण किया गया है। अब ट्रॉमा सेन्टर रोगियों के लिए खोल दिया गया है। यह पूर्वांचल की जनता के लिए वरदान सिद्व हो रहा है। चिकित्सा विज्ञान संस्थान के चिकित्सा संकाय के अन्तर्गत एम.बी.बी.एस. स्नातक प्रशिक्षण सन् १९६० में और परास्नातक प्रशिक्षण सन् १९६३ में आरम्भ हुआ। वर्तमान में यहाँ विशिष्ट विशेषज्ञता वाले पाठ्यक्रम डी.एम./ एम.सी.एच. की कुल ८४ सीटे, परास्नातक एम.डी./एम.एस. की १३४ सीटे एवं विशिष्ट विशेषज्ञता की कुल २२ सीटें उपलब्ध हैं। आयुर्वेद संकाय में स्नातक पाठ्यक्रम ए.बी.एम.एस. की कुल ८४ सीटों के साथ परास्नातक पाठ्यक्रम एम.डी./एम.एस. की कुल ३९ सीटें उपलब्ध हैं।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के दंत चिकित्सा विज्ञान में स्नातक बी.डी.एस. की ५० सीटों के साथ परास्नातक एम.डी.एस. में ५ सीटें उपलब्ध हैं। इसके नर्सिंग कालेज में १०० छात्र/छात्राएँ प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सारे विभाग डिप्लोमा व सर्टिफिकेट संचालित करते हैं जैसे सामुदायिक चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत जैव सांख्यिकी में परास्नातक पाठ्यक्रम की १७ सीटें हैं तथा पैथोलाजी, नेफ्रोलाजी, रेडियोथिरेपी द्वारा विभिन्न विधा में प्रशिक्षण दिया जाता है।

यहाँ कायचिकित्सा विभाग द्वारा पंचकर्म थेरेपी पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। शोध उपाधि के पाठ्यक्रम अधिकतर सभी विभागों द्वारा संचालित किये जाते हैं, जिससे लगभग २०० छात्र लाभान्वित होते हैं।

आयुर्वेद संकाय के अन्तर्गत १० एकड़ में फैला हुआ लगभग २०० औषधीय पौधों से आच्छादित एक औषधीय उद्यान है। आयुर्वेद संकाय के अन्तर्गत रसशास्त्र विभाग में एक हर्बेरियम स्थापित है, जिसमें ४५० वनौषधियों के नमूने एकत्रित किये गये हैं। शल्य तंत्र विभाग द्वारा क्षारसूत्र इकाई की स्थापना की गई है जिससे जनसमूह गुदा सम्बन्धी व्याधि में लाभान्वित हो रहा है।

यह संस्थान विभिन्न पाठ्यक्रमों के द्वारा छात्रों को उच्च प्रशिक्षण और शोध की सुविधा प्रदान करता है। प्रत्येक विभाग में उच्चीकृत प्रयोगशाला है। संस्थान के पास समृद्ध ग्रन्थालय है जो २४ घंटे खुला रहता है। ग्रन्थालय में इंटरनेट व फोटोकापी की सुविधा भी उपलब्ध है। संस्थान से सम्बद्ध कर्मचारी एवं छात्र स्वास्थ्य संकुल अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। सर सुन्दरलाल चिकित्सालय पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं पडोसी देश नेपाल के रोगियों की सेवा कर रहा है। यही नही ६ हजार विश्वविद्यालय परिवारों को व लगभग २० हजार छात्रों को भी यह चिकित्सालय स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराता है। यह देश का बहुत बडा रेफरल सेन्टर है। इसके अतिरिक्त यहाँ ब्लड बैंक स्थापित है जो गंभीर रोगियों के लिए वरदान है। यहाँ पर एमआरआई, ६४ स्लाइस सीटी स्कैन, डेक्सा मशीन, आई.सी.यू, सीसीयू आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर वेल बेबी एण्ड इम्यूनाइजेशन क्लीनिक, जेरियाट्रिक क्लीनिक, डी-एडिक्शन क्लीनिक, एडोलसेन्ट एण्ड उण्ड क्लीनिक, क्षारसूत्र क्लीनिक, एआरटी क्लीनिक, डाट्स क्लीनिक, एडोलसेन्ट एण्ड मेनोपाजल क्लीनिक, हेमैटोलॉजी क्लीनिक, ग्लूकोमा क्लीनिक, क्षार सूत्र क्लीनिक आदि चौबीसों घण्टे रोगियों की सेवा में तत्पर रहते हैं। आपातकालीन चिकित्सा में रोगियों की सेवा बड़ी तत्परता से होती है। यहाँ पर अन्नपूर्णा भोजनालय तथा आश्रय धर्मशाला की अतिरिक्त सुविधाएँ हैं। डायलिसिस की सुविधा से सम्पन्न यह चिकित्सालय सुरम्य वातावरण में स्वस्थ, समाज की संरचना में अपनी सेवाएँ दे रहा है।

विद्यार्थियों द्वारा किया गया अकादमिक योगदान

सत्र २०१४-१५ में चिकित्सा विज्ञान संस्थान के छात्रों एवं रेजीडेन्टों द्वारा लिखित २४ शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। पुस्तक लेखन में १२ अध्यायों के लेखन में योगदान दिया, ११८ राष्ट्रीय एवं१० अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपनी सहभागिता दर्ज की तथा ४ फेलोशिप प्राप्त की जिनमें २ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की थीं। विद्यार्थियों एक दर्जन से अधिक क्विज में पुरस्कार प्राप्त कियें।

संकाय प्रतिनिधियों द्वारा अर्जित पुरस्कार, परियोजना, शोध एवं शैक्षणिक पद

सत्र २०१४-१५ में चिकित्सा विज्ञान संस्थान में विभिन्न एजेन्सियों द्वारा वित्त पोषित ४५ राष्ट्रीय एवं ०३ अन्तर्राष्ट्रीय परियोजनाएँ संचालित की जा रही हैं। संस्थान द्वारा ४७ संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ व सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किये गये एवं ३३० शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में एवं ३५५ शोध पत्र राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। संस्थान के अध्यापकों द्वारा १८ पुस्तकें एवं ६३ अध्याय विभिन्न विषयों पर लिखे गये। संस्थान में ३ अतिथि व्याख्यानों के लिए अध्यापक पुरस्कृत हुए। अध्यापकों द्वारा के.टी. ढोलकिया गोल्ड मेडल, के सी सोमानी गोल्ड मेडल, महिमा आयुर्वेदिक, आयुर्वेद भूषण आदि सम्मान प्राप्त किये गये। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद मार्तण्ड और आयुर्वेद शोध विभूति सम्मान से भी अध्यापक सम्मानित हुए। संस्थान के अध्यापकों को अन्तर्राष्ट्रीय फेलोशिप जैसे एफ.ए.एस.सी, सी.एन.राव इजूकेशन फाउंडेशन अवार्ड, कुलपति अवार्ड, एफएसीआरएसआई, एफएमएएस, एफआईसीएस, एफआईसीएमसीएच, कामनवेल्थ एकेडेमिक स्टाफ फेलोशिप, एनएएमएस, एआरओआई किर्लोस्कर थिरेप्यूटिक फेलोशिप, यूएसए अमेरिकन कालेज आफ सर्जन्स इण्टरनेशनलगेस्ट स्कालरशिप, वैद्य साइंटिस्ट फेलोशिप एण्ड पियरे फौचार्ड एकेडमी आदि से सम्मानित किया गया।

संस्थान के अध्यापकों ने इस सत्र में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के शैक्षणिक पदों को सुशोभित किया जैसे अध्यक्ष, इलेक्टेड आईएसएनसीसी,सीजीइआई एसजीइआई, आईएनएसएल, आईसीएमआर की टास्क फोर्स कैसर गाल ब्लेडर का अध्यक्ष, सदस्य एनएएसी, एमसीआई, इथिकल कमेटी, गवर्निंग कौसिल आफ एसोसिएशन आफ सर्जन्स आफ इण्डिया, सीएसआईआर टास्क फोर्स, आईएएलएनएएमएस, आईएसडब्लूएम, डब्लूएएमइ, आईएएसए, आईएसजीआई, आईएएसएल, जीओयूटीडब्लूएन, एनआईएएसए, आईएसजीआई,आईएएसएल,जीओयूटीडब्लूएन,एन आइइए, एपीआई, आईएएन, एनएसआई,डीएनए, एमडीए, एनएसआई, आईएएन, आईइए, एपीआई, आईएजी, आईएमए, सीएसआईआर, सोसायटी फार न्यूरोसाईस (यूएसए) आईबीआरओ, आयुष एवं अन्तर्राष्ट्रीय एकेडमी आफ पेरीडोन्टोलाजी आदि अध्यापक यहाॅ के कई सलाहकार मंडलों में नामित हैं। वे ३८ राष्ट्रीय एवं १२ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में मुख्य एवं २९ राष्ट्रीय एवं ४ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रबन्ध संपादक के रूप में प्रतिष्ठित है। २ अध्यापक, २ राष्ट्रीय एवं ३ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में निर्णायक हैं। चिकित्सा विज्ञान संस्थान के चिकित्सकों ने ३०० राष्ट्रीय एवं ८० अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं में अतिथि व्याख्यान दिया और शोध पत्रों को प्रस्तुत किया। अध्यापकों ने मुख्यतया नेपाल, बंगलादेश, श्रीलंका, ब्राजील, अमेरिका, इटली, दक्षिणी कोरिया, इंग्लैड एवं जापान आदि देशों का दौरा किया।

प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा संस्थान का दौरा

भारतीय विद्वानों में प्रो. जी.सुब्रमनियम (तमिलनाडु), प्रो. ए.मिश्रा (शिलांग), प्रो. पीएम सिन्हा (बंगलौर), डॉ. एस.५शेट्टी (कर्नाटक), डॉ. बी.एस.परमार (गुजरात), डॉ. एम. सिंह (बिहार), डॉ.ए.के. बारिक (कटक), डॉ. एस.चक्रवर्ती (पश्चिमी बंगाल), प्रो. जे. कलिटा (लखनऊ), प्रो. विनय गोयल (नई दिल्ली), प्रो. एस.थामस (केरला), डॉ. एन.चौधरी (दिल्ली), डॉ. आर. कुमार (दिल्ली), प्रो. एस. प्रधान (लखनऊ), प्रो. आर.शुक्ला (लखनऊ), और विदेश के संस्थानों से प्रो. पी.लायर (संयुक्त राज्य अमेरिका), डॉ. रिचर्ड पी. (संयुक्त राज्य अमेरिका), डॉ. वी.जोन्स (अमेरिका), एम.किरकर (यू.के.), प्रो.

सर सुन्दरलाल अस्पताल, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी द्वारा चिकित्सा विज्ञान संस्थान में NMOCON-2015 का उद्घाटन

एस.के. मिश्रा (अमेरिका), डॉ. ए.पिकादो (यू.के.), डॉ. एम.फकीला (यू.के.), प्रो. पी.एम. काये (यू.के.), डॉ. इप्को हस्कर (बेल्जियम), डॉ. बी.ओस्टिन (बेल्जियम), मिस इ मोस्टमन्स (बेल्जियम), अरावेलिया एच(बेल्जियम), प्रो. ज ब्लैकवेल (आस्ट्रेलिया), डॉ. सी इंगवर्डा (आस्ट्रेलिया), डॉ. जे.ओमेन (आस्ट्रेलिया), डॉ. एस. नाइलेन (स्वीडन), प्रो. आर. बेकर (जर्मनी), डॉ. डी. सिंहल (आस्ट्रेलिया), प्रो. के किलानमा (फिनलैण्ड), डॉ. एस.पाण्डेय (कनाडा), प्रो. एस.पाण्डेय कनाडा एवं डॉ. एम.एल.दास (नेपाल) आदि ने चिकित्सा विज्ञान संस्थान का दौरा किया।

संस्थान द्वारा सम्पन्न शिक्षणेत्तर कार्यक्रम

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा हृदय रोग, मधुमेह, एचआईवी/एड्स, मिर्गी रोग के बारे में वाराणसी एवं निकट जनपदों के विद्यालयों और महाविद्यालयों में और ग्राम सभा पर शिविर लगाकर जागरूकता पैदा की गई। यह जागरूकता कार्यक्रम ऑल इण्डिया रेडियो एवं दूरदर्शन के माध्यम से भी प्रसारित किया गया।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत न्यूरो समेत कई अन्य रोगों के बारें में जन समूह को जागरूक किया गया एवं नि:शुल्क औषधियों का वितरण किया गया। संस्थान द्वारा कई स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ मिलकर भी स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को सम्पन्न किया गया। संस्थान ने कैंसर जागरूकता, दंत स्वास्थ्य शिविर, नेत्र शिविर, प्लास्टिक सर्जरी शिविर, स्वास्थ्य मेला आदि कार्यक्रमों का वर्ष पर्यन्त आयोजन किया। आयुर्वेदिक औषधियों की जानकारी भी विभिन्न माध्यमों से जन समूह को दी गई।

भविष्य में होने वाले कार्यक्रमों के लक्ष्य

केन्द्रीयगत सुविधाओं की अवस्थापना, नये कार्डियक सेन्टर का विकास और शिशु कार्डियक सर्जरी की शुरुआत, त्वचा एवं रतिरोग विभाग को उच्च शैक्षणिक, गुणवत्ता वाले केन्द्र के रूप में विकसित करना, हार्मोन डायनामिक टेस्ट एण्ड इंटेसिव केयर सुविधा को उपलब्ध कराना, मधुमेह रोगियों के लिए वैसकुलर लैबोरेटरी की स्थापना करना, डीएनए फिंगर प्रिंटिग टेक्नोलॉजी एवं टीश्यू एण्ड आर्गन बैकिंग टेक्नोलॉजी का विकास, एडवान्स गैस्ट्रोइन्टेरोलाजी साइंस को एक केन्द्र के रूप में विकसित करना, एचआईवी एवं कालाजार रोग में शोध कार्यो को बढावा देना, सर्जिकल आईसीयू की स्थापना, नेशनल बैक्टीरियोफेज थिरेपी रिसर्च सेन्टर की स्थापना करना, गुर्दा प्रत्यारोपण में और विकास करना, न्यूरोसर्जरी ओटी में इन्ट्रा- आपरेटिव सीटी स्कैन की स्थापना करना, प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग में प्रापर लैप्रोस्कोपिक एण्ड आईवीएफ सेटअप की स्थापना करना, एफआईएसएच तकनीक की स्थापना करना, इन्ट्रा आपरेटिव डायग्नोस्टिक सुविधा का विकास, पेलिएटिव केयर सुविधा को प्रारम्भ करने के लिए लिक्विड बेस्ड साइटोलॉजी का विकास करना, केमोथिरेपी रोगियों के लिए डे केयर सुविधा उपलब्ध कराना, आईएमआरटी एवं कन्फार्मल थिरेपी, सर्जिकल आंकोलाजी विभाग में कैंसर शोध प्रयोगशाला का विकास, बाल पुनर्वास केन्द्र की स्थापना करना, आयुर्वेद की अवधारणा के अन्तर्गत आयुर्वेदिक दवाओं की वैज्ञानिक पुष्टि करना आदि इन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु संस्थान कटिबद्ध है।

नर्सिंग महाविद्यालय

नर्सिंग स्कूल को नर्सिंग कॉलेज के रूप में सन् २००९-२०१० में ६० विद्यार्थियों की क्षमता के साथ उच्चीकृत किया गया। वर्तमान में इसकी क्षमता १०० छात्रों की हो गयी है। कालेज के छात्रों ने सात संगोष्ठियों एवं ६ शोध पत्रों में अवदान दिया। २ शोध पत्र राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इस महाविद्यालय द्वारा दो परियोजनाएँ संचालित की जा रही है। ये हैं– नर्सो को एचआईवी/एड्स में सावधानियों के लिए जीएफएटीएम परियोजना एवं नर्सेज एवं मिडवाइफरी की सेवाओं में सुधार के लिए एनआरएचएम परियोजना। इसके अतिरिक्त बहुत से शिक्षणेत्तर कार्यक्रम महाविद्यालय द्वारा चलाये गये जैसे स्तन पान दिवस, जनसंख्या विस्फोट, दूषित पेय जल से होने वाली बीमारियाँ आदि।

भविष्य की योजनाएँ

१. नर्सिंग कॉलेज में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।
२. नर्सिंग में स्नातक उपाधि इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रारम्भ करना।

छात्र/रेजिडेन्टों की गतिविधियाँ

- जनवरी २०१५ में आई एस एनसीसी राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान अखिल भारतीय न्यूरोएनेस्थिसिया विषय में डॉ. एस. लोहा व डॉ. भाग्यारंजन, एनेस्थिओलॉजी विभाग को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- एनाटॉमी विभाग के डॉ. प्रसेनजीत बोस को रु. २५०००/- का आईसीएमआर फेलोशिप मिली।
- बायोकेमेस्ट्री विभाग के डॉ. कौशिक विश्वास, जूनियर रेजिडेन्ट को मैराथन दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- ईएनटी विभाग के तृतीय वर्ष के जूनियर रेजिडेन्ट डॉ. राजेश पाण्डेय और डॉ. अम्बर केसरवानी को जनवरी ०९-११, २०१५ को रायपुर में सम्पन्न एओआईसीओएन-२०१५ के दौरान आयोजित अखिल भारतीय वार्षिक ईएनटी प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त हुआ।
- फोरेन्सिक मेडिसिन विभाग की शोध छात्रा सुश्री नेहा चौरसिया ने इस वर्ष एक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा उनके तीन शोध पत्र प्रकाशित हुए।
- फोरेन्सिक मेडिसिन विभाग के डॉ. अवधेश, जूनियर रेजिडेन्ट तृतीय वर्ष ने इस वर्ष दो अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया और उनके तीन शोध पत्र प्रकाशित हुए।
- फोरेन्सिक मेडिसिन विभाग के डॉ. मयंक गुप्ता, जूनियर रेजिडेन्ट तृतीय वर्ष ने इस वर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और उनके तीन शोध पत्र पकाशित हुए।
- फोरेन्सिक मेडिसिन विभाग के डॉ. नवीन कुमार और जूनियर रेजिडेन्ट तृतीय वर्ष ने इस वर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और तीन शोध पत्र पकाशित किये।
- फोरेन्सिक मेडिसिन विभाग के डॉ. नीलेश कुमार शाक्य, जूनियर रेजिडेन्ट तृतीय वर्ष ने इस वर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और उनके तीन शोध पत्र पकाशित हुए।

- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के डॉ. दीपक कुमार ने एसएसआर सम्मेलन (राष्ट्रीय)-माइक्रोकॉन-२०१३, इन्वेसिव फंगल इन्फेक्शन कान्फ्रेन्स-२०१३ में भाग लिया।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के डॉ. सुजीत भारती, जूनियर रेजिडेन्ट-तृतीय वर्ष ने माइक्रोकॉन-२०१३ (राष्ट्रीय), हैदराबाद और इहनकॉन २०१३ (अंतर्राष्ट्रीय), आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी में भाग लिया।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के डॉ. धीरेन्द्र कुमार, (जूनियर रेजिडेन्ट-तृतीय वर्ष) ने सिहाम-२०१४, कोयम्बटूर, फर्स्ट नेशनल कान्फ्रेन्स ऑन लाइफ थ्रेटनिंग फंगल इन्फेक्शन २०१३, एसजीपीजीआई लखनऊ तथा इहनकॉन (अन्तर्राष्ट्रीय) २०१३, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी में भाग लिया।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के डॉ. सत्येन्द्र कुमार कौशल, (जूनियर रेजिडेन्ट-द्वितीय वर्ष) ने फर्स्ट नेशनल कान्फ्रेन्स ऑन लाइफ थ्रेटनिंग फंगल इन्फेक्शन २०१३, एसजीपीजीआई लखनऊ तथा इहनकॉन (अन्तर्राष्ट्रीय) (इंटरनेशनल कांफ्रेन्स एण्ड सर्टिफिकेट कोर्स ऑन हास्पिटल मैनेजमेंट-२०१३), आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी में भाग लिया।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग की डॉ. प्रियदर्शिनी, जूनियर रेजिडेन्ट ने सिहाम-२०१४, कोयम्बटूर में भाग लिया।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग की डॉ. अन्नपूर्णा परीदा, जूनियर रेजिडेन्ट ने तृतीय वर्ष ने सिहाम-२०१४, कोयम्बटूर में भाग लिया।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, शोध छात्र (सीएसआईआर-एसआरएफ) के दो अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित हुए।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के अंजन कुमार वर्मा (सीएसआईआर-का एसआरएफ) एक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र, व लता कुमारी, अजय कुमार वर्मा, दीन दयाल गिरि, धनेश तिवारी, गोपाल नाथ, प्रदीप कुमार मिश्रा, तृतीय बायोटेक ने ''बायोडिग्रेडेशन ऑफ नेवी एन५आरएल१ कार्पेट डाई बाई स्टैफिलोकोकस प्रोफाइटीकस्ट्रेन बीएचयूएसएसएस३'' का शोध पत्र प्रकाशित हुआ।
- माइक्रोबायोलॉजी विभाग के जय कुमार वर्मा, सौरभ के. पटेल, चन्द्रभान प्रताप, मयंक गंगवार और गोपाल नाथ शोध पत्र माइक्रोबियल एन्डोफाइट: देयर रेजिलिएन्स फार इन्नोवेटिव ट्रीटमेंट सल्यूशन टू नेग्लेक्टेड ट्रापिकल डिजिज़ेज-एडवान्सेज इन इन्डोफाइटिक रिसर्च २०१४, जेज १६१-१७६ (बुक चैप्टर) प्रकाशित हुआ।
- माइक्रोबायोलॉजी इकाई विभाग की शोध छात्रा सुश्री कीर्ति शिला सोनकर ने तीन महीने के प्रशिक्षण के लिए फिनलैण्ड की सीआईएमओ फेलोशिप प्राप्त की।
- माइक्रोबायोलॉजी इकाई विभाग की शोध छात्रा सुश्री मोनिका पटेल को जापान में प्रशिक्षण के लिए जापान इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी की फेलोशिप प्राप्त हुई।
- आब्स्टेट्रिक्स एण्ड गाइनेकोलॉजी विभाग की डॉ. श्रेया थापा को सीएस-डान एवार्ड फार बेस्ट रिसर्च प्राप्त हुआ।
- यूपीकान-२०१४ में आब्स्टेट्रिस्स एण्ड गाइनेकोलॉजी विभाग की डॉ. श्रेया थापा और डॉ. पूजा पीजी क्विज विजेता रहीं।
- पैथालॉजी विभाग के डॉ. अतिम कुमार सिन्हा और डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह ०९.०८.२०१४ को केजीएमयू, लखनऊ में सम्पन्न इंडिया सोसाइटी ऑफ क्लिनिकल हीमेटोलॉजी के क्लिनिकल हीमेटोलॉजी क्विज में उपविजेता रहे।
- पैथालॉजी विभाग के डॉ. अमित कुमार सिन्हा और डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह २१.०९.२०१४ को एआईआईएमएस द्वारा नई दिल्ली में आयोजित इंडियन सोसाइटी ऑफ क्लिनिकल हिमेटालॉजी के जोनल स्तरीय क्लिनिकल हिमेटालॉजी क्विज में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- पैथालॉजी विभाग की डॉ. नेहा चौरसिया और डॉ. नीरज धमेजा को यूजी साइटेकॉन २०१४ में ''डिटेक्शन ऑफ माइक्रोफाइलेरिया इन टू केसेज ऑफ एब्डामिनल मैलिग्नेन्सी'' शीर्षक पोस्टर प्रस्तुति में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- डॉ. बिटान नाइक को आइएमएस बीएचयू द्वारा आयोजित पिडकॉन २०१४ में स्नातकोत्तर स्तर के लिए क्विज में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

बाल चिकित्सा विभाग के एम.डी. छात्र

- डॉ. प्रियंका दुआ ने केजीएमयू, लखनऊ में आयोजित हिमेटा-आन्कोलॉजी डिविजनल लेबेल क्विज प्रतियोगिता में भाग लिया।
- डॉ. प्रियंका दुआ ने नई दिल्ली में आयोजित हीमेटोकॉन के हिमेटो-आंकोलॉजी राष्ट्रीय स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में भाग लिया।
- डॉ. अंकुर शर्मा और डॉ. प्रियंका दुआ आईएमएस, बीएचयू में आयोजित डिविजनल राउण्ड ऑफ एनएमएफ क्विज प्रतियोगिता में विजेता रहे।
- डॉ. अंकुर शर्मा और डॉ. प्रियंका दुआ हैदराबाद में आयोजित जोनल राउण्ड ऑफ एमएनएफ क्विज प्रतियोगिता में विजेता रहे।
- डॉ. नवीन कुमार और डॉ. राजेश कुमार ने पटना में आयोजित नीओकॉन में पोस्टर प्रस्तुति की।
- डॉ. मिथिलेश कुमार ने नई दिल्ली में आयोजित पिडिकॉन में पोस्टर प्रस्तुति की।
- डॉ. विनोद कुमार और डॉ. अनिल शर्मा ने चेन्नई में आयोजित फोकॉन में पोस्टर प्रस्तुति की।
- डॉ. विनोद को चेन्नई में आयोजित सम्मेलन मेें भाग लेने के लिए फोकॉन ट्रेवलिंग फेलोशिप प्राप्त हुई।
- डॉ. अभिषेक अभिनय, डॉ. विनोद और डॉ. ग्रेसी मिंज द्वारा वाराणसी में आयोजित रेस्पिकॉन में पोस्टर प्रस्तुति की गयी।
- प्लास्टिक सर्जरी विभाग के दो सीनियर रेजिडेन्टों ने मुम्बई में आयोजित नेशनल कांफ्रेंस ऑफ एजीएसआई में भाग लिया। उन्होंने प्रीकॉफ्रेंस एक्रिडिएशन कोर्स, आपरेटिव कार्यशाला मेें भाग लिया और शोधपत्र प्रस्तुत किये।
- रेडियाडाइग्नोस्टिक एवं इमेजिंग विभाग के डॉ. आनंद बंसल, जेआर

III ने वर्ल्ड मॉलीक्यूलर इमेजिंग कांफ्रेंस २०१४, सीओल में पोस्टर प्रस्तुत किया।

- रेडियाडाइग्नोस्टिक एवं इमेजिंग विभाग की डॉ. शिवी जैन ने थर्ड इंटरनेशनल ऑफ रेडियोलॉजी में शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने आईआईटी, बीएचयू में आयोजित राष्ट्रीय कांफ्रेन्स में और नेशनल साइंटिफिक सिम्पोजियम एण्ड वर्कशाप में भी शोधपत्र प्रस्तुत किये।
- आइटीआरएम विभाग के डॉ. लालतेन्दु महाराना ने आईसीआरओ में २डी व ३डी ट्रीटमेंट प्लानिंग व टीचिंग कार्यक्रम में भाग लिया।
- आइटीआरएम विभाग के डॉ. दुलाल किरन मण्डल ने आईसीआरओ में लंग कैन्सर शिक्षण कार्यक्रम प्रबंधन में भाग लिया और एआरओआई व आइसीआरओ के नेशनल कांफ्रेंस एण्ड ब्रैकीथिरेपी कार्यशाला में भी भाग लिया।
- आइटीआरएम विभाग के डॉ. लालतेन्दु महाराना, डॉ. कृष्णा प्रताप व डॉ. बुझावन खेविन कुमार ने आईसीआरओ में रेडियोबायलॉजी-टीचिंग कार्यक्रम में भाग लिया।
- आइटीआरएम विभाग के डॉ. सोवन सारंग धर ने एसजीपीजीआई में पैलिएटिव केयर एन कैन्सर वर्कशाप में भाग लिया।
- आइटीआरएम विभाग के डॉ. दीपक कुमार ने एसजीपीजीआई में ऑडिट एन कैन्सर वर्कशाप में भाग लिया।
- आइटीआरएम विभाग के डॉ. सोवन सारंग धर डॉ. अविप्सा दास ने अपोलो कैन्सर हास्पिटल, हैदराबाद में आयोजित अपोलो कैन्सर कॉन्क्लेव में भाग लिया।

आयुर्वेद संकाय

द्रव्यगुण विभाग

- दिनांक ०३.०२.२०१५ से १०.०२.२०१५ तक एम.डी. (आयु.) द्वितीय वर्ष और अन्तिम वर्ष का एक हर्बल एक्सकर्सन का आयोजन विभाग के उपाचार्य डॉ. ए.के. सिंह द्वारा वाराणसी कालका-शिमला-मण्डी/कुल्लू-पपरोला में सम्पन्न कराया गया।
- इस विभाग के उपाचार्य डॉ. बी. राम द्वारा फरवरी १५, २०१५ से फरवरी २८, २०१५ तक बी.ए.एम.एस. II प्रोफ. (बैच २०१२) के छात्रों के लिए वाराणसी-यशवन्तपुर-मैसूर-उडागामाण्डा मेटूपल्लम-कोयम्बटूर-इर्नाकुलम-मडगाँव-मुंबई में हर्बल एक्सकर्सन का आयोजन किया गया।

कौमारभृत्य-बालरोग विभाग

डॉ. रवि शंकर खत्री द्वारा–

- कौमारभृत्य-बालरोग विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं., बीएचयू द्वारा आयोजित ''इविडेन्स बेस्ड कान्टेम्पोरेरी मैनेजमेंट ऑफ कामन अनावाहा-स्रोतसाथा व्याधि (गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल डिसआर्डर) इन चिल्ड्रेन'' पर सीएमई-III में सह संयुक्त सचिव के रूप में भाग लिया गया।
- ज्ञानवाणी केन्द्र में बालरोग विशेषज्ञ के रूप में बच्चों की देखभाल पर ४५ मिनटों का व्याख्यान दिया गया।
- संज्ञाहरण विभाग, चि.वि.सं., बीएचयू द्वारा आयोजित कार्डियो-सीरेब्रो-पलमोनरी रिसुसिटेशन पर कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।
- पीडियाट्रिक्स विभाग, चि.वि.सं., बीएचयू द्वारा आयोजित एडवांस्ड नीओनेटल वेन्टिलेशन पर कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।
- मालीक्यूलर बायोलॉजी इकाई, चि.वि.सं., बीएचयू द्वारा आयोजित मालीक्यूलर एण्ड आयुर्वेदिक बायोलॉजी ऑफ इन्फ्लेमेशन पर कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।
- सर सुन्दरलाल चिकित्सालय, बीएचयू में इन्टरनेशलन कान्फ्रेंस एण्ड सर्टिफिकेट कोर्स आन हास्पिटल मैनेजमेंट में तीन दिवसीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम सफलता पूर्वक पूर्ण किया गया।
- कौमारभृत्य-बालरोग विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं., बीएचयू द्वारा आयोजित मैनेजमेंट इन नेशनल कान्फ्रेंस आन टेंडर लविंग केयर आफ न्यूबार्न चाइल्ड (नवजात शिशु परिचर्या) में आयोजित सचिव के रूप में भाग लिया गया।
- संज्ञाहरण विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं., बीएचयू द्वारा आयोजित १६वें नेशनल कान्फ्रेंस एसोसिएशन आफ एनेस्थेसियोलाजिस्ट्स आफ इंडियन मेंडिसिन में ''कान्ट्रीब्यूसन आफ आयुर्वेदिक मास्टर्स इन नीओनेटल रीसुसिटेशन'' शोध पत्र पर प्रस्तुति के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया गया और इन्हें स्व. आर.आर. पाण्डेय मेमोरियल बेस्ट पेपर पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस आन रीसेंट एडवांसमेंट इन कोग्निशन एण्ड हेल्थ में ''रोल आफ फोर मध्यरसायन्स (हर्बल कोग्निटिव इन्हेन्सर्स) शोध पत्र पर सर्वोत्तम शोध पत्र का पुरस्कार प्राप्त किया गया।

कायचिकित्सा विभाग

- विश्व आयुर्वेद परिषद द्वारा आयोजित ''मेनस्ट्रीमिंग आफ आयुर्वेद : इसूज, चैलेन्जेज एण्ड साल्यूसन'' विषयक भाई उद्धवदास मेहता मेमोरियल ''अखिल भारतीय आयुर्वेद पीजी स्टूडेन्ट्स लेख प्रतियोगिता २०१४'' में विभाग के विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- महिला रिसर्च फाउंडेशन एण्ड सोशल वेलफेयर, बीएचयू, वाराणसी द्वारा अक्टूबर २०१४ में आयोजित ''इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस आन रिसेंट एडवान्सेज आन द रोल आफ बेसिक साइंसेज इन आयुर्वेदिक मेडिसिन'' में विभाग के डॉ. सत्यपाल सिंह, सीनियर रेजिडेंट को उत्तम शोधपत्र प्रस्तुति हेतु पुरस्कार मिला।
- नेशनल मेडिकोज द्वारा असम और अरूणाचल प्रदेश में आयोजित धन्वन्तरि सेवा यात्रा में डॉ. उमेश चौधरी व डॉ. प्रतीक अग्रवाल ने भाग लिया।

क्रिया शरीर विभाग

डॉ. रपोलू सिनिल बुचिरामुलु बिर्स्टेन (जर्मनी) ने १४-१५ सितम्बर २०१४ को आयोजित प्रथम इंटरनेशनल रिसर्च सेमिनार इन आयुर्वेदा में ''सर्टेन आटोनामिक रिस्पोंसेज इन हेल्दी इंडिविजुअल्स मे हैव सम एसोसिएशन विथ कान्स्टीट्यूशनल टाइप डिफाइन्ड इन

आयुर्वेदा'' शीर्षक शोध पत्र प्रस्तुत किया; रिंकी कुमारी, अरूणा अग्रवाल, के./लांगो, दीपांकर करमाकर, जी.पी.आई.; सिंह, जी.पी. दूबे-१; शर्मिष्ठा सिंह-१; डॉ. पीयूष कुमार त्रिपाठी-२; डॉ. चन्दर प्रकाश गुनावत-७; डॉ. रश्मि पाण्डेय-६ और डॉ. दीप्ती सिंह-३ ने शोध पत्र/मौखिक/पोस्टर प्रस्तुत किये।

अध्याय लेखन : डॉ. पीयूष कुमार त्रिपाठी, - २; डॉ. चन्दर प्रकाश गुनावत,-१; डॉ. रश्मि पाण्डेय,-१; और डॉ. दीप्ती सिंह-१ ने कान्फ्रेंस रिपोर्ट प्रकाशित किये।

औषधीय रसायन विभाग

शोधपत्र/ मौखिक/ पोस्टर प्रस्तुति, सीएमई१ कार्यशाला में सहभागिता : रमाकान्त-५, सीएसआईआर-जेआरएफ छात्रवृत्ति, बेस्ट मौखिक प्रस्तुति; विशाल सिंह-२ और मानवेन्द्र सिंह-२।

श्री वरूण कुमार सिंह को भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा इंस्पायर फेलोशिप तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

शोधपत्र/ मौखिक/ पोस्टर प्रस्तुति, सीएमई१ कार्यशाला में सहभागिता : डॉ. भास्वस्ती भट्टाचार्या-२; डॉ. हिमांधू बरूआ-३; डॉ. राकेश ब्रहमांकर-१; डॉ. अभिषेक कुमार शुक्ला-१; डॉ. कपिल देव यादव-३; डॉ. शशि वर्मा-१; डॉ. चन्द्रशेखर-१; डॉ. विनम्र शर्मा-१; डॉ. शिल्पा जी. पाटिल-१ और डॉ गुरूप्रसाद निल्ले-७।

संज्ञाहरण विभाग

डॉ. आलोक श्रीवास्तव-०२ कान्फ्रेंस, ०४ शोध पत्र प्रकाशित, ०१ कार्यशाला और ०२ सीएमई; डॉ. दिलीप कुमार सिंह-०२ कान्फ्रेंस, ०२ शोध पत्र प्रकाशित, ०१ कार्यशाला और ०२ सीएमई; डॉ. मुन्नालाल-०२ कान्फ्रेंस, ०१ कार्यशाला और ०२ सीएमई; डॉ. रमेशचन्द्रा-०२ कान्फ्रेंस, ०१ कार्यशाला और ०२ सीएमई, डॉ. वी.के. गुप्ता-०१ सीएमई; डॉ. श्रीराम टी मोरेय- ०१ सीएमई; डॉ. मनि भूषण कान्त-०१ कान्फ्रेंस, ०१ कार्यशाला और ०१ सीएमई; डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय-०१ सीएमई और डॉ. योगेश के. गुप्ता-०१ सीएमई।

सिद्धांत दर्शन विभाग

रेजिडेंटो ने आयुष्प्रज्ञा के कार्यक्रमों में भाग लिये और विश्वविद्यालय स्तरीय निबन्ध लेखन प्रस्तुत किये। शोध छात्रों ने विभिन्न संगोष्ठियों में १० शोध पत्र प्रस्तुत किये।

विकृति विज्ञान विभाग

- डॉ. रवि दबास जे.आर.-१ ने भारत में चिकित्सा शिक्षा पर मालवीय जी की दृष्टि पर मौखिक प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।
- डॉ नीरा सैनी, शोध छात्रा को बेस्ट पेपर एवार्ड व वाद विवाद प्रतियोगिता में विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा १५ संगोष्ठियों में प्रतिभागिता की, ५ शोध पत्र प्रकाशित और १ अध्याय लेखन किया।
- डॉ. शशि कान्त तिवारी, सीनियर रेजिडेंट ने ०५ संगोष्ठियों में सहभागिता की, ०२ प्रकाशन हुए, लोक सेवा आयोग, उत्तराखण्ड में प्रवक्ता-पैथोलॉजी (विकृति विज्ञान) के पद पर चयनित हुए।

प्रकाशन : डॉ. दुर्गेश गुप्ता जे.आर.-III - पुस्तक में अध्याय -१, शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र - ०२; डॉ. नेहा दूबे जे.आर.-II - पुस्तक में अध्याय - ०१, शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र - ०२ और डॉ. जितेन्द्र कुमार - जे.आर.-II - पुस्तक में अध्याय - ०१, शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र-०१, संगोष्ठियों में सहभागिता - ०६, पुरस्कार - ०१ बेस्ट पोस्टर प्रस्तुति पुरस्कार।

दन्त चिकित्सा संकाय

राष्ट्रीय

- डॉ. श्रेया शर्मा जे.आर.- III ने चेन्नई में ५-७ जून, २०१४ को सम्पन्न १५वें आई.ए.सी.डी.ई. एण्ड आई.ई.एस. राष्ट्रीय पी.जी. कन्वेन्सन और जयपुर में ५-७ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न २९वाँ आई.ए.सी.डी.ई. व २२वाँ आई.ई.एस. राष्ट्रीय सम्मेलन तथा १९-२१ दिसम्बर २०१४ को वाराणसी में सम्पन्न ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुति की।
- डॉ. सुनील रथ जे.आर.- III ने कोलकाता २०१४ में ४९ १०एस कान्फ्रेंस, मेरठ २०१४ में १०एस पी.जी. कन्वेन्सन और ३७वाँ यूपी स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. मंजू जायसवाल जे.आर- III ने कोलकाता २०१४ में ४९ १०एस कान्फ्रेंस, मेरठ २०१४ में १०एस पी.जी. कन्वेन्सन और ३७वाँ यूपी स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. प्रतीक गुप्ता जे.आर- II ने १०एस पी.जी. कन्वेन्सन मेरठ २०१४ और ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. रश्मि सिन्हा जे.आर- II ने कोलकाता २०१४ में ४९ १०एस कान्फ्रेंस, १०एस पी.जी. कान्फ्रेंस मेरठ २०१४ और ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. श्रेया सिंह जे.आर- II ने ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. रीमा मलिक जे.आर- II ने चेन्नई में ५-७ जून २०१४ को सम्पन्न १५वाँ आई.ए.सी.डी.ई. एण्ड आई.ई.एस. नेशनल पी.जी. कान्फ्रेंस और जयपुर में ५-७ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न २९वाँ आई.ए.सी.डी.ई. एण्ड २२वाँ आई.ई.एस. नेशनल कान्फ्रेंस और वाराणसी में १९-२१ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. उत्सव भारती जे.आर- I ने कोलकाता २०१४ में ४९ १०एस कान्फ्रेंस तथा ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. विमलेश सिंह जे.आर- I ने कोलकाता २०१४ में ४९ १०एस कान्फ्रेंस तथा ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. मिधुन राधव जे.आर. I ने कोलकाता २०१४ में ४९ १०एस कान्फ्रेंस तथा ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस २०१४ में शोध पत्र प्रस्तुत किये।

- डॉ. प्रगति सचान जे.आर. I ने जयपुर में ५-७ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न २९वाँ आई.ए.सी.डी.ई. एण्ड २२वाँ आई.ई.एस. नेशनल कान्फ्रेंस और वाराणसी में १९-२१ दिसम्बर २०१४ तक सम्पन्न ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. विजय पराशर जे.आर. I ने जयपुर में ५-७ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न २९वाँ आई.ए.सी.डी.ई. एण्ड २२वाँ आई.ई.एस. नेशनल कान्फ्रेंस और वाराणसी में १९-२१ दिसम्बर २०१४ तक सम्पन्न ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. अरूण पाण्डेय जे.आर. I ने गोवा में १४-१७ नवम्बर २०१४ तक सम्पन्न ३९वाँ नेशनल ए.ओ.एम.एस.आई. कान्फ्रेंस और वाराणसी में १९-२१ दिसम्बर २०१४ तक सम्पन्न ३७वाँ यू.पी. स्टेट डेन्टल कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- डॉ. विशाल वर्मा जे.आर. I ने गोवा में १४-१६ नवम्बर २०१४ तक सम्पन्न ३९वाँ नेशनल ए.ओ.एम.एस.आई. कान्फ्रेंस में भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय

- डॉ. श्रेया शर्मा जे.आर- III ने ग्रेटर नोयडा, भारत में ११-१४ सितम्बर, २०१४ तक सम्पन्न यू.एफ.डी.आई. २०१४ : एनुअल वर्ड डेन्टल कांग्रेस में शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. रीमा मलिक जे.आर- II ने ग्रेटर नोयडा, भारत में ११-१४ सितम्बर, २०१४ तक सम्पन्न एफ.डी.आई. २०१४ : एनुअल वर्ड डेन्टल कांग्रेस में शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. प्रगति सचान जे.आर- I ने ग्रेटर नोयडा, भारत में ११-१४ सितम्बर, २०१४ तक सम्पन्न एफ.डी.आई. २०१४ : एनुअल वर्ड डेन्टल कांग्रेस में शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. विजय पराशर जे.आर- I ने ग्रेटर नोयडा, भारत में ११-१४ सितम्बर, २०१४ तक सम्पन्न यू.एफ.ओ.आई. २०१४ : एनुअल वर्ड डेन्टल कांग्रेस में शोध पत्र प्रस्तुत किया।

३७वें उत्तर प्रदेश दंत सम्मेलन-२०१४ के अवसर पर माननीय राज्यपाल उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'अभियुक्ति' का विमोचन

प्रस्तावित आई.ई.एस.डी. भवन

२.१.१.३. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसम्बर, २००२ में अपने ५७वें सत्र में वर्ष २००५-२०१४ तक की अवधि के धारणीय विकास हेतु 'शिक्षा-दशक' (डीईएसडी) के रूप में घोषित किया था। डीईएसडी के दृष्टिकोण से धारणीय विकास हेतु शिक्षा द्वारा व्यक्तियों, समूहों, समुदायों, संगठनों एवं देशों की संपोष्य विकास के पक्ष में निर्णय लेने तथा विकल्प चुनने की क्षमता विकसित व मजबूत होगी। संयुक्त राष्ट्र के इस दृष्टिकोण के अनुसार उपयुक्त ज्ञान के विकास एवं संपोष्य विकास क्षमता के क्षेत्र में उच्चतर शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने वर्ष २०१० में एक राष्ट्र स्तरीय पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान स्थापित किया। वर्ष २०११ में शैक्षिक पदों पर भर्ती की गई। वर्तमान में संस्थान में चार प्रोफेसर (आचार्य) एवं आठ असिस्टेंट प्रोफेसर (सहायक आचार्य) कार्यरत हैं।

संस्थान के उद्देश्यों में धारणीय विकास के बारे में शिक्षा (समाविष्ट के बारे में जागरूकता विकास करना) एवं धारणीय विकास हेतु शिक्षा (संपोष्यता की प्राप्ति हेतु शिक्षा को एक औजार के रूप में उपयोग करना) को शामिल करना है। संस्थान का मिशन ऐसा शिक्षण, शोध व विस्तार कार्य करना है जिससे भविष्योन्मुख भारत का संपोष्य विकास हो, गरीबी मिटे और देश के प्राकृतिक संसाधनों का कुशल व समुचित प्रबंधन हो सके। संस्थान के उद्देश्य- १. पर्यावरणीय एवं धारणीय विकास शिक्षा को बढ़ाना, इसमें सुधार करना एवं तत्संबंधी शिक्षा प्रदान करना, २. पर्यावरणीय एवं धारणीय विकास शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए अंतर-अनुशासनिक उपागम में कार्य करना, ३. समुदाय स्तर पर धारणीय सामाजिक एवं आर्थिक विकास संबंधी मुद्दों और चुनौतियों के बारे में जन-जागरूकता बढ़ाने में योगदान देना, ४. धारणीय विकास के संदर्भ में पर्यावरणीय एवं सामाजिक समस्याओं की बेहतर समझ प्रदान करने के लिए विचार-विमर्श का मंच तैयार करना, वैज्ञानिक चर्चाओं को बढ़ावा देना एवं निर्णयकर्ताओं के लिए उपयुक्त उपागम व विश्लेषण नीति विकसित करना तथा ५. एक राष्ट्रीय नीति विकसित करने एवं धारणीय विकास संबंधी पहलों को क्रियान्वित करने के लिए सरकारी एजेंसियों के साथ कार्य करना है।

शिक्षण कार्यक्रम

संस्थान पर्यावरण एवं धारणीय विकास के क्षेत्र में अंतर-अनुशासनिक शिक्षा प्रदान करता है। पर्यावरण एवं धारणीय विकास संकाय, आईइएसडी ने शैक्षिक सत्र २०१३-१४ और उससे आगे के लिए एकीकृत एम.फिल.-पीएच.डी. कार्यक्रम शुरू किया है। एकीकृत एम.फिल.-पीएच-डी. उपाधि कार्यक्रम संबंधी पाठ्यक्रम एवं अध्यादेश दिनांक ५ मार्च, २०१२ के एसीआर सं.-६८ के अंतर्गत विश्वविद्यालय की शिक्षण परिषद् द्वारा अनुमोदित किए गये थे। इसे ध्यान में रखते हुए आईइएसडी के संकाय सदस्य बी.एस-सी (विज्ञान संकाय), बी.ए. (मंच कला संकाय) एवं बी.ए.एम.एस. (आयुर्वेद संकाय) के छात्रों को पर्यावरणीय अध्ययन पाठ्यक्रम की शिक्षा देते हैं। संकाय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय में एमएससी जैव सूचना, विज्ञान संकाय में एम.एस.सी. टेक. भूभौतिकी एवं एम.एस.सी. पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण एवं विनिबंध मार्गदर्शन कार्यक्रम में भी सहभागिता की।

आईईएसडी के संकाय सदस्य एम.फिल.-पी.एच.डी. के एकीकृत छात्रों को पर्यावरण विज्ञान एवं धारणीय विकास की शिक्षा देते हैं। संकाय

ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में एम.एस.सी. भू-भौतिकी और एम.एस.सी. पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण और विनिबंध मार्गदर्शन के कार्यक्रम में भी सहभागिता की।

शोध कार्यक्रम

संस्थान सामाजिक आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से पूरा करने वाली प्रणाली का निर्माण, मूल्यांकन व प्रबंधन करने वाले अंतर-अनुशासनिक एवं सहयोगी शोध का आयोजन एवं नेतृत्व करता है। आईइएसडी द्वारा चिन्हित पाँच प्राथमिकता प्राप्त शोध क्षेत्र हैं : १. वैश्विक परिवर्तन एवं वातावरण-प्रदूषण, २- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन ३- धारणीय कृषि, ४- वैकल्पिक ऊर्जा संसाधन तथा ५- धारणीय विकास के सामाजिक-आर्थिक एवं विधिक आयाम। आईइएसडी के संकाय सदस्यों ने शैक्षिक सत्र २०१४-१५ के दौरान ०५ शोध परियोजनाएँ संचालित की। इन परियोजनाओं के लिए ज्यादातर धनराशि भारत सरकार प्रयोजक एजेंसियों यथा- पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, जल संसाधन मंत्रालय एवं पर्यावरण व वन मंत्रालय से प्राप्त हुई। आमतौर पर इसरो, आई.एम,डी., डी.बी.टी, यूजीसी तथा एसडीएमसी-सार्क, नई दिल्ली जैसे संगठनों ने भी आईइएसडी के संकाय-संदस्यों की परियोजनाओं को अनुदान प्रदान किया।

डॉ. ए.एस. रघुवंशी, आचार्य एवं निदेशक, आई.ई.एस.डी. : विंध्य पर्वत भारत के वक्र उष्ण कटिबंधीय शुष्क वन और प्राकृतिक स्थापना में परिपक्व अध्ययन संचालित है। शुष्क उष्ण कटिबंधीय पर्यावरण में अधिकांश प्रजातियों की अपेक्षित विकास दर भूमि की आर्द्रता से निर्धारित होती है। वृक्षों की प्रजातियों की वृद्धि प्रतिक्रिया जीवन के अधिकांश स्तरों पर मूल क्रियात्मक विशेषताओं जैसे- विशिष्ट पर्ण क्षेत्र व पर्ण नाइट्रोजन और क्लोरोफिल सान्द्रण में परिवर्तन के अनुकूल हो जाती है। नवोद्भिद स्तर पर रंध्री चालकत्व सबसे महत्वपूर्ण चर है जिसका विभिन्न स्थानों और अस्थायी ढलानों के भू-जल की उपलब्धता के नवोद्भिद वृद्धि बनावट के स्वरूप में महत्वपूर्ण भूमिका है। जबकि परिपक्व स्तर पर प्रकाश संश्लेषण दर टी.डी.एफ.एस. में वृक्ष विकास का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है। प्रो. रघुबंशी ने सत्र २०१४-१५ में ०८ अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र एवं ९वें जीएसएस लीडिंग एक्सपर्ट सेमिनार ''चैलेन्जेज इन द अर्बनाईजेशन प्रोसेस ऑफ वाराणसी, द ओल्डेस्ट इण्डियन सीटी'' इण्टर-ग्रेजुएट प्रोग्राम फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट एण्ड सर्वावल सोसाईटीज, क्योटो यूनिवर्सिटी, जापान (२४-३० जनवरी, २०१५) में व्याख्यान दिया।

डॉ. (श्रीमती) कविता शाह, आचार्या, संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष : प्रो. कविता शाह ने एंजाइम पर्यावरणीय जैव तकनीकी, बायोइन्फारमेटिक्स, वाटर रिसोर्स व हेल्थ मैनेजमेंट के क्षेत्र में सार्थक योगदान दिया। डोपामीन स्तरों के लिए न्यूरोलोजिकल रोगियों की सहायता, राइस-पेरोक्सीडेस स्तरों के लिए न्यूट्रोलॉजिकल रोगियों की सहायता, राइस-पेरोक्सोडेस एन्जाइम बायोसेन्सर का विकास आपके द्वारा किया गया एक आदर्श योगदान है। टोमैटो में सूखा और उष्म तनाव सहनशील रूपान्तरण टोमैटो लाइन्स से प्राप्त फूलों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि लाइकोपीन व विटामिन सी, प्रचुर मात्रा में पाया गया जो मनुष्य के प्रयोग हेतु सुरक्षित है जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रो. शाह के सत्र २०१४-१५ में ११ अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित हुए। आपके द्वारा जेनबैंक (एनसीबीआई) परिग्रहण ओपन स्कूल में नौ जीन दृश्यों को वियोजन में मेलेनिन जैवसंश्लेषण जीनों के लिए (संदर्भ एनसीबीआई ऑनलाइन) जमा किया गया– KF358695.2, KF358696.2, KF358697.1, KF358698.1, KF358699.1, KF358700.1, KF358701.1, KF358702.1, KF358703.2, Bipolaris sorokiniana डॉ. शाह ने चावल से विकसित पीएमडीबी आईडी के साथ इंजाइम प्रोटीन के लिए प्रोटीन मॉडल डेटाबेस (पीएमडीबी) में ३-डी प्रोटीन मॉडल जमा किया है: २०१४-१५ के दौरान PM0078437, PM0078438, PM0078894, PM0078819, PM0078897, PM0078821, PM0078820, PM007881 HeÇes. Meen । 2014-15 के दौरान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में आपके ११ प्रकाशन हुए है।

डॉ. जी.एस. सिंह, आचार्य : जैव विविधता, प्राकृतिक स्रोत प्रबंधन, अर्थव्यवस्था विश्लेषण पारम्परिक ज्ञान अनुयोग आधारित, धारणीय विकास, सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण, जलवायु प्रभाव/परिवर्तन में योगदान। विभिन्न वैज्ञानिक स्थानों और वैज्ञानिक ज्ञान निर्माणों में इन जानकारियों का आदान-प्रदान। डॉ. सिंह के २०१४-१५ के दौरान ०३ शोध पत्र प्रकाशित हुए एवं सम्मेलनों में ०५ विशिष्ट व्याख्यान दिये। आपको ''इन्सपायरिंग लीडरशिप फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट'' के लिए संस्था द्वारा लीडर चुना गया।

डॉ. आर. के. मल्ल, आचार्य : वर्तमान शोध जलवायु चरता, जलवायु परिवर्तन विज्ञान, जल स्रोतों का प्रभाव और ग्राह्यता और कृषि/खाद्य सुरक्षा में जलवायु प्रयोग, जल विज्ञान, भूजल और फसली मौसम आदर्श, सिस्टम सिमुलेशन, जीआईएस और रिमोट सेंसिंग तकनीकी और निर्माण सहायक व्यवस्था के विकास पर आधारित है। उन्होंने सार्क देशों ''आपरेशनलाईजिंग जलवायु परिवर्तन पर थिम्पू विवरण: लड़ाई, डीआरआर- सीसीए एकीकरण के लिए योजना'' के लिए बनी नीति का दस्तावेज तैयार किया जिसे २१-२५ जून २०१४ को बैंकाक में ६वें एशियाई मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के दौरान जारी किया गया।

डॉ. जे. पी. वर्मा, सहायक आचार्य : धारणीय कृषि में पौध वृद्धि विकासक रीजोबैक्टिरिया और इसके महत्व से सम्बन्धित शीर्षक पर डीएसटी और डीबीटी में आपके दो शोध प्रोजेक्ट प्रस्तुत हुए हैं। आपने मृदा और जल के जीवाणुओं के विशेषीकरण और वियोजन पर शोध कार्य किया है। डॉ. वर्मा के २०१४-१५ के दौरान ६ शोध पत्र (२ राष्ट्रीय और ४ अंतर्राष्ट्रीय) प्रकाशित हुए हैं और ६ मार्च २०१५ को शंघाई में पर्यावरण माइक्रोबायोलॉजी (आईएमएसईएम१) विषय पर आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में आपने चीन में भाग लिया।

डॉ. आर. पी. सिंह, सहायक आचार्य : के विभिन्न अपशिष्ट पदार्थो को परिमाणित करना तथा उनके प्रबंधन के तरीकों के बारे में अध्ययन। इन पर सत्र २०१४-१५ में आपके ०२ अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित हुए। अपशिष्ट पदार्थों का पर्यावरण पर पड़ने वाले बुरे असर का निवारण करना तथा उनसे जैविक खाद का निर्माण करना जिससे सम्पोषीय कृषि का विकास करना आपका प्रमुख शोध कार्य है।

डॉ. पी.सी. अभिलाष, सहायक आचार्य : वर्तमान शोध का उद्देश्य

सूक्ष्मजीव ग्राह्यता और जलवायु परिवर्तन की स्थिति में मृदा प्रतिक्रिया में अनुकूलन पर प्रकाश डालना है। डॉ. अभिलाष के २०१४-१५ के दौरान १० शोध पत्र (६ राष्ट्रीय और ४ अंतर्राष्ट्रीय) प्रकाशित हुए हैं और शंघाई, चीन में पर्यावरण माइक्रोबायोलॉजी (आईएमएसईएम१) पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपने भाग लिया है।

डॉ. टी. बनर्जी, सहायक आचार्य : आपके वर्तमान शोध का उद्देश्य आदर्श मौसम विज्ञान, वायु प्रदूषण प्रभाव, वायु प्रदूषक स्रोत विभाजन और क्षोभमण्डलीय वायुकणों का विशिष्टीकरण, वायुकण और वायुमण्डलीय रसायन एवं क्षेत्रीय वायु गुणात्मक जलवायु परिवर्तन प्रभावों से सम्बन्धित है। इसके साथ ही वे एयरोसोल ऑप्टिकल गहराई के क्षेत्रीय कवरेज और इसके खड़ी प्रोफाइल के लिए एमओडीआईएस और सीएएलआईपीएसओ उपग्रह चित्रों का अध्ययन कर रहे है। डॉ. बनर्जी के २०१४-१५ के दौरान ५ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रों में शोध पत्र प्रकाशित हुए है।

डॉ. सुधाकर श्रीवास्तव, सहायक आचार्य : पौधों के ऊपर भारी धातुओं (मुख्यतया आर्सेनिक) के प्रभाव का अध्ययन। इसका मुख्य दृष्टिकोण यह है कि आर्सेनिक प्रभावित स्थानों, जैसे पश्चिम बंगाल में कृषि उत्पादों (चावल) की उत्पादकता बनी रहे और खाने योग्य अनाजों और सब्जियों में आर्सेनिक की मात्र विषैले स्तर से कम ही रहे। इन उद्देश्यों की सफलता के लिए विभिन्न प्रकार के उपायों पर अध्ययन करना और कृषि तकनीकियों में सुधार करना। इसके साथ ही भारी धातुओं से हुए प्रदूषण की समस्या के समाधान के लिए पौधों के इस्तेमाल पर अध्ययन करना। यह तकनीक वानस्पतिक परिवेशोद्धार के नाम से जानी जाती है। डॉ. श्रीवास्तव के २०१४-१५ के दौरान ४ अंतर्राष्ट्रीय पत्र प्रकाशित हुए हैं। आपने राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, भारत में २०१५ में १०२वां भारतीय विज्ञान मुंबई में आयोजित कांग्रेस में और पर्यावरण प्रदूषण पर ५वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. के. राम, सहायक आचार्य : वायुमण्डलीय रसायन शास्त्र, कार्बनिक वायुकणों तथा ब्लैक कार्बन के जलवायु प्रभाव का अध्ययन। इन्होंने घर के अन्दर एवं बाहरी वायु प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव और उसके शमन का अध्ययन किया और बायोमास, कोयला और वाहनों से होने वाले उत्सर्जन और उनके स्रोत प्रभाजन का अध्ययन भी किया है। प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके चार शोध पत्र प्रकाशित हुए है। उनको एक अनुवर्ती कार्यक्रम 'कनेक्ट' के रूप में २३-२५ मई २०१४ के दौरान इंजीनियरिंग संगोष्ठियों पॉट्सडैम, जर्मनी के ६ इंडो-जर्मन फ्रंटियर्स में भाग लेने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा अनुदान प्राप्त हुआ है, वे ६-२९ जून २०१५ के मध्य जर्मनी के कर्लस्रूहे संस्थान भी गए।

डॉ. विशाल प्रसाद, सहायक आचार्य : उन्होंने पौधों पर जैविक और अजैविक दुष्प्रभावी कारकों के प्रभाव एवं उन प्रभावों से बचाव के लिए पौधों के द्वारा अपनाये गये उपायों का अध्ययन किया। डॉ. प्रसाद का २०१४-१५ के दौरान पर्यावरण जीव विज्ञान और संरक्षण में एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ है। उन्होंने का.हि.वि.वि. में ७-८ अक्टूबर २०१४ में पीजीपीआर रिसर्च के क्षेत्र में अग्रिम पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में ०३-०७ जनवरी २०१५ और १०२वाँ भारतीय विज्ञान मुंबई में आयोजित कांग्रेस, में भाग लिया।

डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव, सहायक आचार्य : डॉ. श्रीवास्तव इस संस्थान में फरवरी २०१५ में शामिल हुए हैं। यहाँ आने से पहले वे नासा, यूएसए में अपना योगदान दे रहे थे। डॉ. प्रशान्त हाइड्रोलॉजिकल साइंस लैबोरेटरी, नासा जीएसएफसी, मरीलैण्ड, यूएसए में शोध वैज्ञानिक के रूप में कार्य कर रहे थे। वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं जिसमें मरीलैण्ड पोस्टडॉक्टोरल फेलोशिप, यूएसए, कामनवेल्थ फेलोशिप, यूके, सीएसआईआर (दो बार), भारत से एमएचआरडी व यूजीसी फेलोशिप इत्यादि शामिल है। इनके ७० से अधिक प्रकाशन अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल्स में, ४ पुस्तकें और बहुत से अध्याय प्रकाशित हुए है। सत्र २०१४-१५ में डॉ. प्रशान्त के ०३ अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

सुदूर पहुँच/विस्तार

यह संस्थान अपनी सुदूर गतिविधियों के माध्यम से समुदाय स्तरीय प्रदर्शन एवं संगोष्ठियों इत्यादि समेत धारणीयता को बढ़ावा देने के लिए भागीदारों को शामिल करना चाहता है। संस्थान का उद्देश्य तथ्यपत्र, स्थिति रिपोर्ट एवं शैक्षणिक संसाधन तैयार करना भी है। इस दिशा में सार्क आपदा प्रबंधन केन्द्र (एसडीएमसी), नई दिल्ली ने आईइएसडी को ''सार्क देशों में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन पर सारांश'' तैयार करने का जिम्मा सौंपा है।

आईइएसडी संकाय सदस्यों द्वारा शैक्षणिक/शोध/प्रशासनिक कार्यकलाप

१. पर्यावरण एवं धारणीय विकास का स्नातकोत्तर स्तर पर एम.फिल. शिक्षण (प्रथम सेमेस्टर के छात्रों के लिए)
२. पर्यावरण एवं धारणीय विकास का स्नातकोत्तर स्तर पर एम.एस.सी. टेक. शिक्षण।
३. पर्यावरणीय विज्ञान में पी.एच.डी. कोर्स वर्क।
४. भू-भौतिकी विभाग, इन्वायरन्मेंट साइंस एण्ड आप्लाईड माइक्रोबायोलॉजी में एम.एस.सी. कक्षाएँ।

छात्र-छात्राओं के लिए शोध सुविधाओं हेतु संस्थान में सेन्ट्रल इन्स्ट्रूमेन्टल लैब की सुविधा प्रदान की गयी है जिसमें गैस क्रोमैटोग्राफी, एचपीएलसी, सोलर फोटोवोल्टेक ट्रेनिंग किट, यूवी-विजिबल स्पेक्ट्रोमीटर, इलेक्ट्रोफोरेसिस सिस्टम, एरोसॉल सैम्पलर इत्यादि हैं।

दाखिले की प्रक्रिया में बदलाव– आरईटी, एकीकृत एम.फिल./पीएचडी में प्रवेश के लिए प्रवेश प्रक्रिया में परिवर्तन के फलस्वरूप कार्यक्रम संशोधित किया गया था।

२.१.२. संकाय

२.१.२.१. कला संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अद्वितीय स्वप्नद्रष्टा एवं महान राष्ट्रवादी चिंतक पं. मदन मोहन मालवीय के सपनों का मूर्त रूप है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मानविकी के केन्द्र के रूप में कला संकाय का गठन हुआ जो पहले सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज के रूप में जाना जाता था जिसकी स्थापना १८९८ में श्रीमती एनी बेसेन्ट के द्वारा की गया थी। यही वह आधार भी है जिस पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का भव्य भवन व उन्नत भविष्य का सम्पूर्ण स्वप्न टिका हुआ है। इसलिए कला संकाय से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का सम्बन्ध आवयविक है जहाँ ज्ञान के संरक्षण व उसके प्रसार का कार्य अबाधगति से चलता रहता है।

कला संकाय ज्ञान की पारम्परिक व आधुनिक पद्धतियों के बीच एक विलक्षण संतुलन स्थापित करते हुये व्यक्तित्व के समग्र विकास की दिशा में सतत चिंतन-मनन करता रहता है। यहाँ अपनी आंतरिक उर्जा के संरक्षण के साथ अन्य विषयों से प्रेरणा ग्रहण करते हुय अन्य संकायों के साथ-साथ सतत् अन्तर-संवाद चलता रहता है जिससे यहाँ के ज्ञान की मुख्य अवधारणा में मानवमुक्ति के स्वप्न हमेशा ही साकार रूप धारण करते रहते हैं। २१ विभागों के अतिरिक्त इसके अन्तर्गत चार प्रमुख केन्द्रों की स्थापना भी की गयी है- भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, अनुवाद-अध्ययन केन्द्र तथा अन्त:सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र जिनके माध्यम से संस्कृति एवं ज्ञान के विभिन्न आयामों पर बौद्धिक महत्व की चर्चा होती रहती है। संकाय में छात्रों व शिक्षकों को जागरूक,जीवंत एवं चिंतनशील बनाने के लिए अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशालाओं का आयोजन होता रहता है। संकाय द्वारा 'कम्परेटिव लिटरेचर' में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन भी एक महत्वपूर्ण प्रयास है जिसमें शिक्षकों को साहित्य की अन्तर अनुशासनिक गुणवत्ता का लाभ मिलता है। संकाय द्वारा महत्वपूर्ण वार्षिक शोधपत्रिका 'अपूर्वा' का भी प्रकाशन किया जाता है जिसमें संकाय के शिक्षकों के उल्लेखनीय शोधपत्र प्रकाशित होते हैं।

विगत २०१४-१५ शैक्षणिक सत्र में कला संकाय परिसर में बुनियादी ढ़ांचे के रूप में कुछ महत्वपूर्ण निर्माण कार्य किये गये जिसमें 'हिन्दी भवन' में एक चार मंजिल का भवन विशाल सभागार के साथ निर्मित हुआ है और सायबर पुस्तकालय भी प्रारम्भ हो चुका है।

संकाय की ज्ञान-संरचना बुनियादी तौर पर त्रिआयामी है - सर्वप्रथम यह छात्रों को भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं का भी ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्रदान करती है। इनमें एक ओर हिन्दी, संस्कृत, पालि, उर्दू, तेलगु, तमिल, मराठी, बंगाली, आदि भारतीय भाषाओं का तथा दूसरी ओर अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, रूसी, जापानी, अरबी, फारसी, नेपाली आदि विदेशी भाषाओं का शिक्षण अंतर्भुक्त है। दूसरे, यह संकाय इतिहास संस्कृति, पुरातत्व, कला-इतिहास, दर्शन और धर्म के क्षेत्रों में नवीनतम विकास से भी छात्रों को परिचित कराता है। संकाय का तीसरा आयाम पत्रकारिता एवं जनसंचार, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, पर्यटन एवं परिभ्रमण प्रबंधन, संग्रहालय विज्ञान और प्रयोजनमूलक हिन्दी जैसे व्यवसायपरक पाठ्यक्रम से सम्बद्ध है। यह

कहना अतिशयोक्ति न होगा कि कला संकाय मानव विकास से सम्बद्ध एक स्वस्थ चित्त वाले राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। संकाय से सम्बद्ध रहे विख्यात विद्वानों की एक लम्बी सूची है जो पाण्डित्य एवं ज्ञान के लिए देश-विदेश में समान रूप से जाने जाते रहे हैं और जिन्होंनें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गौरव में श्रीवृद्धि की है। इनमें से कुछ प्रमुख व्यक्तित्व हैं - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ,डॉ. भीखन लाल आत्रेय, टी.आर.वी.मूर्ति, जे.एल.मेहता, डॉ. देवराज (दर्शन विभाग); रायकृष्णदास, राय आनन्दकृष्ण, कपिला वात्स्यायन (कला-इतिहास); ए. एस. अल्तेकर, वासुदेव शरण अग्रवाल, राजबली पाण्डेय, आर.सी. मजूमदार, ए.के. नारायण (प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व); रामावतार शर्मा, ए.बी.ध्रुव, पी.एल.वैद्य, बलदेव उपाध्याय, सत्यव्रत शास्त्री, रेवा प्रसाद द्विवेदी (संस्कृत); बाबू श्याम सुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य केशव प्रसाद मिश्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, डॉ. नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, डॉ. केदारनाथ सिंह (हिन्दी); सी.एन. मेनन, डॉ. रामअवध द्विवेदी, डॉ. बी.एल. साहनी, विक्रमादित्य राय, हरीश त्रिवेदी, एस.एम. पाण्डेय (अंग्रेजी)। कहना न होगा कि ये विद्वान् परवर्ती पीढ़ियों के लिए सतत् प्रेरणा और शक्ति के स्रोत बने हुए हैं।

कला संकाय विश्वविद्यालय का न केवल प्राचीनतम संकाय है बल्कि वृहत्तम संकाय भी है, जिसमें २५० शिक्षक-शिक्षिकाएँ, ४००० छात्र-छात्राएँ और १२० गैर-शैक्षणिक कर्मचारी कार्यरत हैं। संकाय के २१ शैक्षणिक विभाग भी इसकी दुर्लभ विशिष्टता के द्योतक हैं, जिनमें स्नातक-परास्नातक एवं शोध के पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त कार्यालय प्रबंधन, सचिव स्तरीय तकनीक, विज्ञापन एवं विपणन कला, बीमा प्रबंधन, लेखा एवं अंकेक्षण, पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान तथा पर्यटन-परिभ्रमण-प्रबंधन जैसे विषयों में अल्पकालिक पाठ्यक्रमों के शिक्षण की व्यवस्था है। इन विभागों के द्वारा संकाय प्रमाणपत्रीय एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों से लेकर पी.एच.डी., डी.लिट्. तथा स्तरीय शोध परियोजनाओं तक की विविध शैक्षणिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं। अनेक भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन भी संकाय में होता है।

विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों का मुख्य सांस्कृतिक समारोह अन्तर्संकाय युवा महोत्सव-'स्पंदन' है। 'स्पंदन'-२०१५ में कला संकाय द्वारा संस्कृति-२०१५ के माध्यम से चयनित छात्रों एवं छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर कला संकाय के लिए 'ओवरऑल चैंपियनशिप' प्राप्त किया।

शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित शैक्षणिक गतिविधियाँ

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

इस विभाग ने भारत विद्या संबंधी अध्ययन अनुसंधान के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा अर्जित की है। विभाग ने कला एवं वास्तुविद्या, धर्म, पुरालेख, शिलालेख, आर्थिक इतिहास, प्राक् आदिम इतिहास एवं प्रारम्भिक इतिहासपरक पुरातत्व, पुरा-धातुविज्ञान एवं पुरातात्विक सामग्री विज्ञान एवं तकनीक आदि के क्षेत्रों में मौलिक लेखन व शोध किया है जिसको ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विभाग को ''उच्चानुशीलन केन्द्र'' की मान्यता प्रदान की है।

विगत सत्र में इस विभाग ने पुरातत्व, प्राक्, आदिम इतिहास और पुराधातु विज्ञान से जुड़ी दो राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया। विभाग के प्रो. ए.के. सिंह को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एक शोध परियोजना की स्वीकृती दी गयी है।

अरबी विभाग

सत्र २०१४-१५ में विभाग द्वारा अध्ययन एवं शोध के क्षेत्र की सामान्य क्रियाओं का संचालन सुचारू रूप से किया गया।

बंगाली विभाग

विभाग द्वारा इस अवधि में छात्रों के ज्ञान के विकास हेतु कई सम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसमें बंगाली साहित्य के विद्वानों के विचारों का लाभ मिला । उक्त व्याख्यानों में 'बंगाली नाटक' (१५-१६ अप्रैल, २०१४) पर प्रो. सौमित्र बसु, रविन्द्रभारती विश्वविद्यालय, कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल); 'आधुनिक बंगाली साहित्य और इसके महत्व' (२२ जुलाई, २०१४) पर प्रो. अमलेंदु चक्रवर्ती, प्रोफेसर, गोहाटी विश्वविद्यालय (आसाम); 'बंगाली लघु कहानियां' (१३ अक्टूबर, २०१५) पर प्रो. मानस मजूमदार, कोलकता विश्वविद्यालय (पश्चिम बंगाल); प्रो. दर्शन चौधरी, भूतपूर्व प्रोफेसर, कल्याणी विश्वविद्यालय, नादिया, (पश्चिम बंगाल), प्रो. श्रुतिनाथ चक्रवर्ती, बंगाली विभाग, विद्ययासागर विश्वविद्यालय, कोलकाता, और प्रो. शर्मिला बागची, टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय २१.११.२०१४ आदि के व्याख्यान महत्वपूर्ण हैं ।

विभाग ने छात्रों के लिए फुटबॉल और क्रिकेट जैसे खेल गतिविधियों का आयोजन किया। विभाग के संकाय सदस्यों एवं छात्रों द्वारा गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुण्यतिथि मनायी गयी । छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा २१ फरवरी, २०१५ को अंतर्राष्ट्रीय भाषा दिवस मनाया जाता है।

अंग्रेजी विभाग

विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर २६, अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च पेपर ०४ और ०१ राष्ट्रीय लेख का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त इस सत्र में विभाग द्वारा ०३ पुस्तकों का भी प्रकाशन किया गया। २० दिसम्बर, २०१४ को 'बौद्ध धर्म, संस्कृति, साहित्य और भारत के संविधान' पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

'हू'ज हैमलेट' विषय पर प्रो. तीर्थंकर बोस, साइमन फ्रेजर विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क शहर का राष्ट्रीय स्तर के दो व्याख्यान आयोजित किये गये।

विदेशी भाषा विभाग

१९४८ में स्थापित विदेशी भाषा विभाग में दुनिया की सात मुख्य भाषाओं की पढ़ाई होती है -चीनी, जापानी, सिंहलीज, रूसी, इटालियन, स्पेनिश और पोलिश। वर्ष २०१४-१५ में जापान, पोलैंड जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फाउडेशन और सरकारों से विभिन्न छात्रवृत्ति

कार्यक्रमों की पेशकश हुई। चीन, ताइवान, सिंगापुर, जापान, अमरीका, फ्रांस और स्वीडन से विद्वानों ने विभाग का दौरा किया। चीनी अनुदाग प्राप्त स्नातकोत्तर छात्रवृत्ति के छात्रों को जेनगेशन विश्वविद्यालय, चीन में अध्ययन करने की स्वीकृति प्राप्त हुई। संदर्भित सत्र में चीनी भाषा विभाग के प्रो. कमलशील को भारत चाइना सांस्कृतिक सम्बन्ध की दिशा में ठोस पहल करने हेतु प्रस्तावित परियोजना के अन्तर्गत संयोजक के रूप में आमंत्रित किया गया। विभाग ने भी सक्रिय रूप से अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन और अनुवाद अध्ययन में अंत:विषयक केन्द्रों के विकास में भाग लिया।

फ्रेंच विभाग

विभाग द्वारा सत्र २०१४-१५ के दौरान शिक्षण और शोध की नियमित गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया।

जर्मन अध्ययन विभाग

विभाग द्वारा सत्र २०१४-१५ के दौरान शोध की नियमित गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया।

कला इतिहास विभाग

विभाग द्वारा सत्र २०१४-१५ के दौरान शोध की नियमित गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया।

हिन्दी विभाग

१९२० में प्रारम्भ हुए इस विभाग की गणना देश के प्राचीनतम हिन्दी विभाग के रूप में की जाती है। पिछले शैक्षणिक सत्र की भांति इस सत्र में भी विभाग की सर्जनात्मकता बनी रही जिसमें विभागीय सहयोगियों के ८२ आलेख व ७२ शोधपत्र राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हुए। इसके साथ ही १३ पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ। विभाग के शिक्षकों ने देश व विदेश में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया। स्वयं विभाग द्वारा भी ०६ राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन साहित्य के विभिन्न पक्षों पर विचार हेतु किया गया।

इसके साथ ही प्रो. राजकुमार को प्रतिष्ठित अशोक बाजपेयी फेलोशिप से सम्मानित किया गया है। विभाग के प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. सदानन्द शाही, प्रो. वशिष्ठ द्विवेदी अनूप एवं प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी को मॉरीशस में 'कर्मयोगी सम्मान' प्रदान किया गया।

भारतीय भाषा विभाग

वर्ष २०१४-१५ के दौरान विभाग के शिक्षकों ने व्याख्यान दिये और यूजीसी द्वारा 'नेट' की परीक्षा के लिए पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्त किये गये। डॉ. संजय राय को 'भानुभक्ता' सम्मान और 'नई ईश्वरालाभ' पुरस्कार २०१४ से सम्मानित किया गया।

पत्रकारिता एवं जनसम्प्रेषण विभाग

पत्रकारिता एवं जनसम्प्रेषण विभाग की स्थापना १९७३ में हुई थी। विभाग द्वारा स्वास्थ्य सम्प्रेषण में नवप्रवर्तन की पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। विभाग द्वारा १८ अप्रैल २०१५ को ५वां सत्यजीत रे स्मृति व्याख्यान एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था – 'भारतीय सिनेमा : १०० वर्ष का फ्लैशबैक और भविष्य की पटकथा'।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

१९४१ में स्थापित कला संकाय के इस प्रतिष्ठित विभाग ने संदर्भित सत्र में ४ शोध छात्रों को शोध उपाधि प्रदान की। इस शैक्षणिक सत्र में विभाग के छात्रों ने शिमला स्थित विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया। विभाग से पिछले शैक्षणिक वर्ष में ५ जेआरएफ ११ यूजीसी नेट छात्रों ने सफलता प्राप्त किया। विभाग के छात्रों की देश भर में कई पुस्तकालयों में नियुक्ति होती है।

भाषा विज्ञान विभाग

संदर्भित सत्र में विभाग के अध्यापकों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों और सम्मेलनों में भाग लिया। विभाग एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (बी.एच.यू.) ने एक साथ विभिन्न शाखाओं पर कार्य करने हेतु सहमति बनायी है। डॉ. अभिनव मिश्र जी को सत्र २०१४-१५ में ऑस्टन विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड द्वारा कामनवेल्थ अकादमी फेलोशिप का सम्मान प्राप्त हुआ है।

मराठी विभाग

विभाग की सामान्य शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों के अलावा विभाग के डॉ. प्रमोद पड़वल ने प्रपत्र प्रकाशित किये गये तथा कई बैठक एवं सम्मेलनों में भागीदारी की।

दर्शन शास्त्र विभाग

इस संदर्भ सत्र में विभाग द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में उल्लेखनीय कार्यक्रम निम्न रहे : विभाग द्वारा 'रोल ऑफ रीजन इन इस्ट एण्ड वेस्ट' विषय पर रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन 'इण्डियन लॉजिक' एण्ड 'वेदान्ता क्लासिकल एण्ड मोर्डन' विषय पर कार्यशाला का आयोजन, जिसमें राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों द्वारा प्रतिभागियों का दर्शन के क्षेत्र में उभरने वाली नई संभानाओं के बारे में विस्तार से ज्ञानार्जन हुआ। आईसीपीआर द्वारा प्रायोजित विश्व दर्शन दिवस का आयोजन।

इस सत्र के दौरान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. ए.के. चटर्जी को आईसीपीआर, नई दिल्ली द्वारा दर्शन शास्त्र के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान हेतु 'लाइफ टाइम एचिवमेंट एवार्ड' से सम्मानित किया गया। इसी क्रम में आईसीसीआर द्वारा महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मोरिशस में आयोजित समारोह में डॉ. देवेन्द्र नाथ तिवारी आईसीसीआर प्रोफेसर की पदवी से सम्मानित किया गया। विभाग के ३ छात्र राजीव गाँधी राष्ट्रीय छात्रवृति, १२ छात्र को यू.जी.सी. जे.आर.एफ, ३ आईसीपीआर जेआरएफ और ८ छात्र यूजीसी नेट में सफलता प्राप्त किये।

फारसी विभाग

बुनियादी स्तर पर २१ दिनों की मेनुस्क्रिपटोलॉजी और पालियोग्राफि राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा २ राष्ट्रीय, ३ अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र और ७ पुस्तकें प्रकाशित की गई। विभाग के प्रो. (श्रीमती) शमीम अखतर को 'राष्ट्रपति पुरस्कार' वर्ष २०१४-१५ से सम्मानित किया गया।

पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग

भिक्खु जगदीश कश्यप के नेतृत्व में १९४० से आरम्भ हुए पालि अध्ययन के क्षेत्र में यह विभाग देश के सभी विभागों में अग्रणी रहा है।

पुस्तक 'आधी आबादी-संदर्भ एवं प्रसंग' का कुलपति द्वारा विमोचन समारोह

१६-१७ जनवरी, २०१५ को धर्म, कर्म एवं पुरातत्व पर आयोजित आईएएसआर के
९वें सम्मेलन के अवसर पर न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय जी द्वारा सम्बोधन

संदर्भित सत्र में यू.जी.सी. ने विभाग को 'बौद्ध अध्ययन केन्द्र' की मान्यता प्रदान की है। शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ के दौरान विभाग के प्राध्यापकों द्वारा १३ राष्ट्रीय और ५ अंतराष्ट्रीय शोध पत्रों के साथ दो पुस्तकों का सम्पादन किया गया। इस सत्र में ४ विद्यार्थियों को शोध उपाधि प्रदान की गयी।

शारीरिक शिक्षा विभाग

संकाय के शारीरिक शिक्षा विभाग ने २०१४-१५ में कई आयामों को प्राप्त किया। इस सत्र के दौरान विभाग एवं एनएसएनआईएस के संयुक्त तत्वाधान में एक ६ सप्ताह के सर्टिफिकेट कोर्स का संचालन किया गया जिसमें १०० छात्रों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। विभाग द्वारा फुटबाल खेल के रेफरियों हेतु १ सप्ताह का डी लाइसेंस सर्टिफिकेट कोर्स का भी संचालन किया गया। विभाग के दो छात्रों का चयन उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा में सहायक प्रोफेसर पद पर हुआ साथ ही २० लड़कों ने नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की और ४ छात्रों को जे.आर.एफ. प्राप्त हुआ। इस सत्र में शैक्षणिक भ्रमण की शृंखला में बी.पी.एड. के छात्रों ने सात ताल, नैनीताल एवं एम.पी.एड के छात्रों ने पंचमढ़ी का भ्रमण किया।

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग एवं वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग (भारत सरकार) के संयुक्त तत्वावधान में १४-१८ जून २०१४ को एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्कृत के कई महत्वपूर्ण आचार्यो ने भाग लिया। इसी क्रम में पंडित राम अवतार शर्मा स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन हुआ। साथ ही कुछ महत्वपूर्ण शोध संगोष्ठियों का आयोजन भी विभाग द्वारा किया गया जिसमे भारत तत्वचिंतन सभा के तत्वाधान में आयोजित संगोष्ठी उल्लेखनीय है।

उर्दू विभाग

विभाग द्वारा सत्र २०१४-१५ में ३ राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा १ राष्ट्रीय अनुसंधान पत्र, राष्ट्रीय स्तर के ६ लेख और ६ अंतर्राष्ट्रीय पत्र प्रकाशित किए गए।

तेलुगू विभाग

इस विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा १ किताब, २ राष्ट्रीय शोध पत्र और ३ लेख का प्रकाशन उल्लेखनीय है।

मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र

केन्द्र की समस्त गतिविधियाँ एक कार्यकारी समूह, जो कि कुलपति और समन्वयक द्वारा नामित किया जाता है, की सहायता से संचालित की जाती है। अकादमिक क्षेत्र में नीति एवं मानवीय मूल्य के संदर्भ में केन्द्र द्वारा निरन्तर परिचर्चा एवं अन्य क्रियात्मक कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। केन्द्र द्वारा वर्तमान समय में नीति एवं मानवीय मूल्य में द्विवर्षीय डिप्लोमा कोर्स का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है, जिससे वर्ष २०१३ में आरम्भ किया गया था। इसके अतिरिक्त केन्द्र भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा अनुदानित दो परियोजना कार्यो का भी सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। प्रथम परियोजना- महामना अभिलेखागार एवं वीथिका निर्माण परियोजना- जो महामना एवं विश्वविद्यालय के इतिहास पर केन्द्रित है, दूसरी परियोजना महामना मालवीय के जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित करने वाली महामना वेबसाइट निर्माण परियोजना है। दोनो परियोजनाएँ सक्रिय एवं सफलतापूर्वक गतिमान है। उपरोक्त कार्यो के अतिरिक्त केन्द्र ने अकादमिक वर्ष २०१४-१५ में कुछ अन्य कार्यक्रमों का भी सफलतापूर्वक आयोजन किया है, जो निम्न हैं :-

- सत्र २०१४-१५ से केन्द्र द्वारा बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए ऐच्छिक विषय के रूप में नीति एवं मानवीय मूल्य पाठ्यक्रम का संचालन का प्रारम्भ किया गया।
- १२ जनवरी, २०१५ को स्वामी विवेकानंद जयन्ती (युवा दिवस) का आयोजन केन्द्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर ''देश के नवनिर्माण में युवाओं की भूमिका: स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ।
- १२-२१ जनवरी, २०१५ के मध्य केन्द्र ने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के लिए ''जीवन मूल्य और अकादमिक क्षमता का विकास'' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया।
- ०६-०७ फरवरी, २०१५ को केन्द्र द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसका विषय था- ''वर्तमान समाज और मानव मूल्य''।
- श्री ज्ञान पाण्डेय, प्रधान तकनीकी सलाहकार, वृन्दावन चन्द्रोदय मंदिर परियोजना, मथुरा का ''जीवन वृत्ति के विकास में मानवीय मूल्यों का महत्त्व'' विषयक विशिष्ट व्याख्यान दिनांक २७ मार्च, २०१५ को आयोजित किया गया। विभिन्न संकायों के अध्यापक एवं विद्यार्थी इस महत्त्वपूर्ण और प्रेरक व्याख्यान में सम्मिलित हुए।
- केन्द्र की शोध पत्रिका 'मूल्यविमर्श' का प्रकाशन मार्च २०१५ में किया गया।

व्यावसायिक अध्ययन के विशेष पाठ्यक्रम

छात्रों में कौशल विकास को बढ़ाने के लिए कला संकाय व्यावसायिक अध्ययन हेतु और विशेष विषय प्रदान करता है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम १९८५ के बाद से संकाय में चल रहे हैं। पर्यटन और ऑफिस मैनेजमेंट में दो साल अंशकालिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम संकाय में बहुत लोकप्रिय पाठ्यक्रम है। इन कार्यक्रमों के रूप में अच्छी तरह से क्षेत्रीय स्तर पर अनुभव के लिए उद्योग और शैक्षिक दौरे में व्यावहारिक कक्षा शिक्षण शामिल हैं।

२.१.२.२. वाणिज्य संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का वाणिज्य संकाय, जो आज देश के बड़े वाणिज्य संकायों में से एक है, का प्रादुर्भाव सन् १९४० में विश्वविद्यालय के रजत जयंती समारोह के अवसर पर अर्थशास्त्र विभाग का.हि.वि.वि. के एक अनुबंध के रुप में हुआ। सन् १९५० में यह एक स्वतंत्र विभाग बना और सन् १९६५ में उच्चीकृत होकर इसने एक संकाय का दर्जा प्राप्त किया। इस संकाय द्वारा सत्र २०१४-१५ की अवधि में बी.कॉम्. (प्रतिष्ठा), एम.कॉम्. तथा पीएच.डी. का पाठ्यक्रमों का संचालन जारी रहा। इसके साथ ही एम.एफ.एम., एफ.एम.आर.आई. और एफ.एम.टी. जैसे विशेष स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम भी आधार पर संचालित किये गये। इसके अतिरिक्त वर्तमान सत्र में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर (रा.गाँ.द.प.), बरकछा, मिर्जापुर में भी वाणिज्य संकाय के नियंत्रण में पेड सीट श्रेणी के आधार पर बी.कॉम्. (प्रतिष्ठा) और एफ.एम.एम. के पाठ्यक्रम भी संचालित किये गये।

संकाय ने केन्या, नाइज़ीरिया, नेपाल, अफ्गानिस्तान, भूटान, तिब्बत और श्रीलंका जैसे अनेक विदेशी राष्ट्रों के छात्रों को आकृष्ट किया है। वर्तमान सत्र में संकाय के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त छात्राओं की संख्या सन्तोषजनक रही। इस सत्र में छात्राओं की संख्या ५०% रही। नवीन प्रवेश छात्र ३९२ में से ५९ महिलाएं थीं।

संकाय के सदस्यों ने पीएच.डी. धारक तैयार करने, शोध पत्रों/लेखों एवं पुस्तकों के प्रकाशन, भारत व विदेशों में विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुए। संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में सहभागिता तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थानों तथा महिला महाविद्यालय और राजीव गाँधी दक्षिण परिसर, बरकछा, मिर्जापुर सहित का.हि.वि.वि. के अन्य विभागों में परीक्षकों तथा अतिथि व्याख्यानदाताओं के रूप में कार्य किया।

छात्रों के लिए सुविधाएँ

छात्रों को गुणवत्ता एवं उनके प्रदर्शन में उत्थान की दृष्टि से संकाय उन्हें अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करता है। वे सुविधाएँ हैं :-

- विभागीय पुस्तकालय में
- वाणिज्य संघ पुस्तकालय
- एम.एफ.एम./एम.एफ.एम.आर.आई./एम.एफ.टी पुस्तकालय
- पाठ्यपुस्तक बैंक सुविधा,
- नि:शुल्क छात्रता,
- योग्यता एवं प्रतिभा छात्रवृत्ति,
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शोध छात्रवृत्ति
- बीएचयू पी.एच.डी. अनुसंधान छात्रवृत्ति
- अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति के छात्रों को छात्रवृत्ति,
- एन.सी.सी.,

- एन.एस.एस.,
- अतिथि शिक्षक व्याख्यान,
- परियोजना प्रशिक्षण,
- व्यापारिक अधिकारियों के साथ संवाद।

छात्रों को अन्य सुविधायें : कम्प्यूटर-८०, लैपटाप-३४, फोटो कापियर-०२, लेजरप्रिंटर-६५ उपरोक्त सुविधाओं के साथ ही छात्रों के लिए वाई फाई इर्न्टरनेट सुविधा भी उपलब्ध है।

परिसर विकास कार्यक्रम

- संकाय के प्रशिक्षण एवं नियोजन प्रकोष्ठ को और अधिक सुदृढ़ किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप परिसर में चयन हेतु संकाय में अनेक संगठनों का आगमन हुआ।
- मास्टर ऑफ फाइनेंसियल मैनेजमेंट (एम.एफ.एम.), मास्टर ऑफ फाइनेंसियल मैनेजमेंट (रिस्क एण्ड इन्श्योरेन्स), एम.एफ.आर.आई. और मास्टर ऑफ फारेन ट्रेड (एम.एफ.टी.) पाठयक्रमों के छात्रों को व्यावसायिक अधिकारियों के साथ प्रत्यक्ष विमर्श करने का अवसर प्रदान करने हेतु उद्योगों के साथ इंटरफेस कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- विभाग के छात्रों को व्यवहारिक अभ्यास कार्य हेतु एक पूर्ण सुसज्जित कम्प्यूटर प्रयोगशाला प्रारम्भ किया गया।

१४-१५ फरवरी, २०१५ को संकाय द्वारा ''मानव संसाधन विकास'' पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला

२.१.२.३. शिक्षा संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रारम्भिक एवं आधारभूत संकायों में एक शिक्षा संकाय है। इसकी स्थापना १५ अगस्त १९१८ को एक अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र 'टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज' के रूप में हुई थी जो बाद में पूर्णत: एक संकाय के रूप में विकसित हुई। यह शिक्षक शिक्षा के दो विभिन्न क्षेत्रों में स्नातक, परास्नातक एवं शोध सुविधाओं युक्त इकलौता विभाग है। यह संकाय बी.एड., एम.एड., विशिष्ट बी.एड. (दृष्टिबाधित), विशिष्ट बी.एड. (श्रवणबाधित), विशिष्ट एम.एड. (दृष्टिबाधित), एम.एड. (अंशकालिक) एवं विशिष्ट शिक्षा में शोध कार्यक्रम प्रदान करता है। संकाय ऐसे शिक्षकों, जो हमारे समाज को सांस्कृतिक परम्परा एवं परिवर्तनशील समय के आधुनिकता के साथ बना सके, को तैयार करने में अपना सर्वोत्तम प्रयास कर रहा है। प्रारम्भ से ही संकाय ने पीछे की ओर नहीं देखा और वर्तमान समय में भी यह शिक्षार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में सफलतापूर्वक प्रशिक्षित कर रहा है। यहाँ इग्नू का एक अध्ययन केन्द्र भी है।

वर्तमान में संकाय में १५ प्रोफेसर, ०४ एसोसिएट प्रोफेसर एवं १५ एसिस्टेन्ट प्रोफेसर हैं। वर्तमान सत्र में संकाय में बी.एड., बी.एड. (विशिष्ट), एम.एड., एम.एड. (विशिष्ट), एम.एड. (अंशकालिक) पाठ्यक्रम संचालित हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा शास्त्र में सशक्त शोध कार्यक्रम भी हैं जिसमे १६९ शोध छात्र, ४३ कनिष्ठ शोध वेत्ता एवं एक पोस्ट डॉक्टरल फेलो पंजीकृत है।

संकाय विभिन्न भारतीय राज्यों के अतिरिक्त विदेशी छात्रों को भी आकर्षित करता है। अकादमिक सत्र में यहाँ विभिन्न राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिसा, पश्चिम बंगाल, राजस्थान एवं दिल्ली के विद्यार्थियों तथा थाइलैण्ड, जिम्बाम्ब्वे, कम्बोडिया, ईरान, केन्या, यमन, डेनमार्क, जॉर्डन और नेपाल सहित विदेशी विद्यार्थियों ने भी प्रवेश लिया।

शिक्षा शास्त्र में शिक्षक प्रशिक्षण एवं शोध कार्य हेतु आवश्यक मूलभूत सुविधाएँ संकाय मे उपलब्ध हैं। संकाय में उच्चकोटि की ग्रन्थालय की भी सुविधा है, जिसमे अट्ठारह हजार से भी अधिक पुस्तकें एवं बीस शोध पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। सुनिश्चित ज्ञान अधिग्रहण एवं सुसाध्य शोध कार्य के लिए सभी विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों को नि:शुल्क इन्टरनेट एवं पर्याप्त संख्या में कार्यरत कम्प्यूटरों की सुविधा उपलब्ध है। प्रत्येक कक्षा शिक्षण कार्य के लिए सूचना सम्प्रेषण एवं तकनिकी (आई.सी.टी.) के अधिकतम उपयोग हेतु मल्टिमीडिया प्रोजेक्टर सुविधा से भी सुसज्जित है।

सत्र के दौरान सम्पन्न क्रिया-कलाप

- वर्तमान सत्र के दौरान निम्नलिखित अकादमिक पाठ्य-सहगामी व प्रसार क्रियाओं को आयोजित किया गया:
- संकाय में पुरातन विद्यार्थी संगठन (ए.ए.ई.) द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय जन-जागरण संगोष्ठी।

- पुरातन विद्यार्थी संगठन (ए.ए.ई.) द्वारा विद्यालयीय अध्यापकों के लिए तीन दिवसीय शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन।
- बी.एड. के समस्त विद्यार्थियों के लिए एक सप्ताह का ''काऊट गाइड कार्यक्रम'' का आयोजन।
- छात्रों ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ''स्पन्दन'' के विभिन्न कार्यक्रमों में भागीदारी की।

अकादमिक उपलब्धि एवं संवृद्धि

- अकादमिक सत्र के दौरान संकाय सदस्यों को विभिन्न फंडिग एजेन्सियों द्वारा सात फंडेड रिसर्च प्रोजेक्ट की अनुज्ञप्ति प्रदान की गयी जो अधोलिखित है:
- आइडेन्टिफिकेशन ऑफ को-स्कालास्टीक एसेसमेंट प्रेक्टिसेस एण्ड सजेस्टिंग फॉर देयर यूनिफारर्मिटी इन सीबीएसई स्कूल ऑफ वाराणसी अंडर डॉ. अंजली बाजपेई (पी.आई.) संजय सोनकर (को.पी.आई.) स्पोंस र्ड वाई यू.जी.सी., नई दिल्ली।
- प्रेवेलेन्य टू स्कूल वोईलेंस एट हायर सेकेण्डरी लेवेल अण्डर डॉ. आलोक गार्डिया एण्ड डॉ. दीपा मेहता स्पोंसर्ड वाई आईसीएसएसआर, नई दिल्ली।
- संकाय सदस्यों द्वारा १६ शोध पत्र राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं तथा ०८ शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए और साथ ही ११ राष्ट्रीय लेख, ०३ अन्तर्राष्ट्रीय लेख एवं ०९ किताबों का भी प्रकाशन किया गया और ०२ मैनुअल किताबों का भी प्रकाशन किया गया। ०७ कार्यक्रम (गायन सम्बन्धि) प्रस्तुत किये गये।
- संकाय के अधिकतर सदस्यों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग एवं प्रपत्र प्रस्तुत किया।
- संकाय के अधिकतर सदस्यों को राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया उनके द्वारा व्याख्यान भी दिया गया।
- संकाय सदस्यों ने ०८ राष्ट्रीय स्तर का अवार्ड ग्रहण किया।

पूर्ण किये गये विकासात्मक प्रयास

- विद्यार्थियों के लिए चालीस टर्मिनल युक्त साइबर पुस्तकालय क्रियान्वित है।
- पचास कम्प्यूटर टर्मिनलों के साथ कम्प्यूटर प्रयोगशाला है।
- भाषा प्रयोगशाला बनने की प्रक्रिया में है।
- संकाय में निरन्तर बिजली आपूर्ति हेतु ५० एच.पी. जनरेटर की व्यवस्था है।
- विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों हेतु संकाय में कैंटीन की व्यवस्था है।

आगामी कार्य

- पांच सौ से अधिक क्षमता वाले सभागार का निर्माण कार्य।
- बागवानी एवं क्रीड़ा क्षेत्र का विकास।
- संकाय में नवीन मुख्य द्वार का निर्माण।
- वाहनों के पार्किंग हेतु निर्माण कार्य।

२.१.२.४. विधि संकाय

विधि संकाय अपने स्थापना से ही विधिक शिक्षा के सुधार और उसको समाजिक रुप से संगत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान करता आ रहा है। यह संस्था विधि स्नातक पूर्णकालिक तीन वर्षीय पाठ्यक्रम एवं पूर्णकालिक दो वर्षीय विधि स्नातकोत्तर को लागू करने में अग्रणी रही है। १९९८-९९ में इस विधि महाविद्यालय ने दो वर्षीय विधि स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम ''मानवधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा'' एवं २००१-२००२ में एक नया पाठ्यक्रम ''पशु विधि'' को लागू किया।

विधि संकाय ने बार कौंसिल आफ इडिया के निर्देशानुसार विधि पूर्वस्नातक पाठय्क्रम में आमूल चूल परिवर्तन किया और सत्र २००९-१० से एल.एल.बी. (आनर्स) प्रारम्भ किया। आगे, विधि संकाय ने विश्वविद्यालय के उपयुक्त अध्यादेशों के अनुसरण में सत्र २०१०-२०११ से एल.एल.बी.(आनर्स), एल.एल.एम. और एल.एल.एम.(मानव अधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा) के पाठ्यक्रम में विकल्प आधारित क्रेडिट पद्धति को अंगीकृत किया। इसके अतिरिक्त, विधि संकाय ने जनवरी २०११ से पी.एच.डी. पाठ्यक्रम में कोर्स वर्क भी प्रारम्भ किया।

इसके अतिरिक्त विधि संकाय पाँच वर्षीय (दस सेमिस्टर) बी.ए.एल.एल.बी.(आनर्स) डिग्री पाठय्क्रम, एक वर्षीय एल.एल.एम. पाठ्यक्रम और आठ (अंशकालिक स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठयक्रम) (फारेन्सिक विज्ञान और मेडिकल विधि शास्त्र, कर प्रबन्ध, मास संसूचना और मीडिया विधि, मानव संसाधन प्रबन्ध सेवा एवं औद्योगिक विधि, सूचना टेक्नोलॉजी विधि, कार्पोरेट गर्वर्नेन्स, पर्यावरणीय विधि, नीति और प्रबन्ध और बौद्धिक सम्पत्ति अधिकारी) प्रारम्भ करने के लिए सभी आवश्यक उपाय कर रहा है।

विधि स्नातक अध्ययन के स्तर पर इस महाविद्यालय का मूल झुकाव विधि विद्यार्थियों को रोजगार परक प्रशिक्षण देना रहा है ताकि वे अपने को विधिक शिक्षा में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिये तैयार कर सके और सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने में विधि स्नातकों की बढ़ती हुई मांग को पूरा कर सकें। विधि महाविद्यालय ने विधि में समाजोन्मुख पाठ्यक्रम को भी शुरु किया जिसमें समाज से सम्बन्धित विधि और पर्यावरण, उपभोक्ता, महिलाओं, एवं बच्चों से सम्बन्धित विधि इत्यादि शामिल है। विधि महाविद्यालय ग्रामीण

समस्याओं पर भी विधि शिक्षा प्रदान करता है जिसमें कृषि भूमिविधि एवं सुधार समाहित है। यह महाविद्यालय सन् १९७८ से ही गरीब और दलित व्यक्तियों को विधिक सहायता एवं सेवायें प्रदान कर रहा है।

विधि संकाय 'बनारस लॉ जर्नल' नाम से एक उत्कृष्ट विधिक जर्नल का वार्षिक प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका में देश एवं विदेश के महत्वपूर्ण विधिवेत्ताओं एवं विधि अध्यापकों के शोध परक लेख एवं पुस्तक समीक्षा प्रकाशित होती है। यह पत्रिका अनेक महत्वपूर्ण भारत और विदेश के पत्रिकाओं के विनिमय का एक स्रोत रहा है। उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों तथा शोध विद्यार्थियों के द्वारा यह पत्रिका उद्धृत की जाती है।

शैक्षणिक क्रिया कलाप

- प्रवेश एवं अध्यापन सम्बन्धी कार्य निश्चित अवधि के अन्दर पूरी कर ली गयीं तथा परीक्षायें शांतिपूर्ण ढंग से समाप्त हुई।
- कई अध्यापकों ने स्रोत व्यक्ति के रुप में एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज में चलाये जा रहे पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और ओरिएण्टेशन कोर्स में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त संकाय के कई अध्यापकों ने विभिन्न राष्ट्रीय कार्यशालाओं में भी भाग लिया।
- विश्वविद्यालय के ९७वें दीक्षान्त समारोह के अन्तर्गत संकाय का दीक्षान्त समारोह मार्च २६, २०१५ को सम्पन्न हुआ।
- बड़ी संख्या में विधि स्नातकोत्तर तथा विधि स्नातक के विद्यार्थियों का चयन न्यायिक अधिकारी एवं अभियोजन अधिकारी, के रुप में कई राज्यों में यथा बिहार, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि में हुआ।
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा सत्र २०१४-१५ में आयोजित अन्तर संकाय युवा पर्व २०१५ और 'स्पन्दन' के बैनर के अन्तर्गत सम्पन्न हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों यथा लघु नाट्य, प्रश्नोत्तर, नृत्य, गीत आदि और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में संकाय के छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और पुरस्कार एवं प्रशंसा प्राप्त किया।
- सत्र २०१४-२०१५ के दौरान विधि संकाय को विधि संस्थान में परिणित करने की दिशा में कार्य प्रगति पर रहा।

अध्यापन का कार्यक्रम

देश के विभिन्न विधि महाविद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विधि के पारम्परिक विषयों के अलावा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विधि महाविद्यालय में और पाठ्यक्रमों जैसे अपराध एवं दंडशास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विधि, सार्वजनिक नियंत्रण एवं सहयोग विधि, ग्रामीण विकास सम्बन्धी विधि, किराया नियंत्रण विधि, सैन्य विधि, हिन्दू विधि शास्त्र एवं मुस्लिम विधिशास्त्र के लिये भी प्रबन्ध किये गये हैं। इसी प्रकार विधि महाविद्यालय में अनेक सेमिनार पाठ्यक्रमों जैसे विधि एवं समाज, विधि एवं गरीबी, विधि एवं शिक्षा, विधि एवं धर्म, विधि एवं महिलायें, विधि एवं बच्चे, विधि एवं योजना, विधि एवं उपभोक्ता एवं विधि एवं चिकित्सा के लिये भी प्रबन्ध किये गये हैं। इनमें से अधिकतर पाठ्यक्रमों का अध्यापन विगत कई वर्षो से हो रहा है।

विधि संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विधि स्नातकोत्तर में मानवाधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा के अध्ययन की व्यवस्था है जिसमें मानवाधिकार विधिशास्त्र, मानवाधिकार और भारत, मानवाधिकार की अन्तर्राष्ट्रीय विधि, मानवाधिकार एवं अपराधिक न्याय, अन्तर्राष्ट्रीय शारणार्थी विधि, अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय विधि, मानवाधिकार एवं पर्यावरण, मानवाधिकार एवं महिलायें, मानवाधिकार एवं बच्चे, जैसे विषय शामिल हैं। विधि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विधि स्नातकोत्तर उपाधि की आशिंक पूर्ति हेतु एक लघु शोध प्रबन्ध का लिखना भी अपेक्षित होता है।

पुस्तकालय

विधि संकाय पुस्तकालय विधि संकाय परिसर के भौक्षिक खण्ड के प्रथम तल पर स्थित है। इसका कार्पेट क्षेत्रफल १८७०० वर्ग फीट है। इसके अध्ययन कक्ष में एक साथ १५० विद्यार्थियों बैठकर अध्ययन कर सकते है। पुस्तकालय में कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

विधि संकाय पुस्तकालय निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान करता है : अध्ययन कक्ष, सन्दर्भ सेवाएं, विद्यार्थी पुस्तक ऋण सुविधा, पुस्तक बैंक सुविधा (अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिए), फोटोकापी सेवा, कम्प्यूटर और इन्टरनेट सुविधा, आनलाइन विधिक डेटाबेस (मनुपात्रा, बेस्ट लॉ इंडिया)।

२.१.२.५. प्रबन्धशास्त्र संकाय

विश्वविद्यालय ने साठ के दशक के अंत में अपने महान संस्थापक के स्वप्न को कार्यान्वित करने की दिशा में एक और मील का पत्थर पार किया जब सन् १९६८ में 'वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत प्रबन्ध में परास्नातक एंव विद्यावाचस्पति के अध्ययन' का शुभारम्भ हुआ।

प्रबन्ध में उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने की बढ़ती आवश्यकता के विचार से सन् १९८४ में प्रबन्ध अध्ययन विभाग को प्रबन्ध शास्त्र संकाय में परिणत किया गया और तब से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के प्राध्यापकों के स्फूर्त नेतृत्व में व्यवसाय जगत के नवप्रवर्तनशील एंव आवश्यकता पर आधारित कार्यक्रमों को चलाने की भी चेष्टा की गई है।

आवश्यकता पर आधारित कार्यक्रम

व्यवसाय जगत की परिवर्तनशील आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रबन्ध शास्त्र संकाय ने इन वर्षो के दौरान विभिन्न नवप्रवर्तनशील प्रबंध पाठ्यक्रमों का संचालन किया है।

प्रबन्ध में विद्यावाचस्पति के अतिरिक्त संकाय ने द्विवर्षीय पूर्णकालिक स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रमों - विशारद प्रबन्ध अध्ययन चलाया जो कि कालान्तर में विशारद व्यवसाय प्रबन्ध के नाम से जाना जाने लगा और वर्तमान में विशारद प्रबन्ध प्रशासन के नाम से जाना जाता है।

कार्यरत् अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए प्रबन्ध अध्ययन में त्रिवर्षीय अंशकालिक उपाधि पाठ्यक्रम विशारद व्यवसाय प्रबन्ध भी संकाय द्वारा चलाया गया। इसके अतिरिक्त त्रिवर्षीय अंशकालिक स्नातकोत्तर सनद पाठ्यक्रम कार्मिक प्रबन्ध विपणन प्रबन्ध एंव वित्त प्रबन्ध में कार्यरत अभ्यर्थियों के लिए चलाया गया।

सतत् पुनरीक्षण एवं नवप्रवर्तन के साथ संकाय सदैव ही वर्तमान एवं भविष्य की जटिल व्यवसायिक गतिविधियों को सम्भालने में सक्षम प्रबन्धकों को निखारता आया है।

भविष्यगत योजनाएँ

संकाय प्रबन्धकीय ज्ञान एवं विकासशील सामाजिक संवेदनशील नेतृ-प्रबन्धको के कार्यक्षेत्र को पुनर्परिभाषित करने हेतु प्रतिबद्ध एवं सर्वप्रशंसित वैश्विक, उत्कृष्ण केन्द्रो में से एक बनने का अभिलाषी है।

लक्ष्य

प्रबन्ध शास्त्र संकाय का लक्ष्य, उत्कृष्ट शिक्षा, शोध, मंत्रणा एवं अन्य सेवाओं द्वारा व्यवसाय, उद्योग तथा अन्य आवश्यक आयामों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।

उद्देश्य : प्रबन्ध क्षेत्र में अपना भविष्य सँवारने के अभिलाषी होनहार युवा प्रतिभागियों को आवश्यकता आधारित शिक्षा प्रदान करना।

- प्रबन्ध शिक्षा क्षेत्र को व्यवहारिक एवं वैचारिक दोनों प्रकार के शोध कार्यों एवं गुणवत्ता प्रकाशन के द्वारा समृद्ध बनाना।
- प्रबन्धकीय विकास कार्यक्रमों द्वारा व्यवसायिक प्रबन्धकों की निर्णय निर्धारण प्रवीणता एंव प्रशासनिक सामर्थ्य को बढ़ाना तथा मंत्रणा सेवा द्वारा उनकी विशिष्ट समस्याओं को सुलझाना।
- गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न प्रबन्ध संस्थानों के अध्यापकों के ज्ञान एवं प्रवीणता को समृद्ध करना।
- निगम एवं विश्वस्तरीय शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग करके प्रबन्ध शिक्षा के शोध को प्रोत्साहन प्रदान कर विभाजन रेखा का अन्तर मिटाना।
- संभाग के छात्रों और युवाओं में उद्यमिता के प्रति उन्मुखता को अंतर्निविष्ट करना।

व्यवसाय जगत के साथ सहयोग

संकाय के व्यवसाय जगत से प्रबल सम्बन्ध है। संकाय में सामयिक विषयों पर अतिथि व्याख्यानों और छात्रों एवं संकाय के सदस्यों के साथ पारस्परिक व्यवहार हेतु संकाय उच्च व्यवसायिक कार्यकारियों को आमंत्रित करने में निरन्तर प्रयासरत रहा है।

संकाय द्वारा आयोजित विभिन्न शैक्षणिक आयोजनों जैसे कि वर्ष पर्यन्त व्याख्यान शृंखला, संगोष्ठियाँ, सम्मेलन, कार्यशालाएँ, बुद्धिशीलता/विचारावेश संकाय विकास कार्यक्रम, प्रबन्धकीय विकास और अन्य कार्यक्रमों में उद्योग जगत के वरिष्ठ कार्यकारियों को हमेशा ही से मुख्य संसाधक विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किये जाते रहे हैं। इन शैक्षणिक पारस्परिक व्यवहारों ने निश्चित ही संकाय में शिक्षकों के ज्ञान को बढ़ाया है। हमें अपने पाठयक्रम पुनरीक्षण में भी उद्योग जगत से सहयोग और सामृद्धिक सुझाव मिलते रहे हैं।

व्यवहारिक प्रशिक्षण, शोध प्रबन्ध एवं अंतिम स्थापन

व्यवसाय जगत के साथ सहयोग का एक और क्षेत्र है हमारे प्रबन्ध छात्रों का व्यावहारिक प्रशिक्षण पाठयक्रम का भाग होने के नाते हमारे छात्र प्रतिवर्ष गर्मियों के दौरान आठ सप्ताह का व्यवहारिक प्रशिक्षण लेते है।

हमें उद्योग से इस हेतु अपार सहयोग प्राप्त हुआ है। शोध प्रबन्ध की सफलता पूर्वक सम्पन्नता में भी हमारे छात्रों को सहयोग मिलता है।

परिसर स्थापन भी उद्योग जगत से अच्छे सम्बन्धों का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अनेक प्रतिष्ठित निजी एवं सरकारी क्षेत्र के संगठन परिसर स्थापन में सहयोग करते हैं। इनमे से भारतीय रिजर्व बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय कोयला निगम, डीएलएफ, पेन्टालून्स, इन्फोसिस, फाईनों, बैंक ऑफ इंडिया, देना बैंक, इण्डोगल्फ, आईसीआरएम, आईडीबीआई, एनसीएमएसएल, एक्सिस बैंक, वीजा स्टील, यूको बैंक, स्टैग इन्टरनेशनल कुछ प्रमुख नाम हैं।

पुरा छात्र सम्बन्ध

संकाय के ४५०० से भी अधिक पुरा छात्र विश्व भर में सेवारत हैं। पुरा छात्र संगठन संकाय के उद्योग जगत से सम्बन्धों के सशक्त बनाने में सक्रियता से सहयोग करता रहा है।

सहयोग

- इलाहाबाद बैंक चेयर
- नीमेट के अन्तर्गत संकाय विकास कार्यक्रम
- प्रबन्ध विकास कार्यक्रम, एनटीपीसी
- ग्रामीण विद्युतीय निगम राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
- आईसीआईसीआई के साथ एक वर्षीय सनद पाठ्यक्रम
- मंत्रणा परियोजना यूएनडीपी के साथ
- विश्व स्वास्थ्य संग ठन के साथ अध्येतावृत्ति कार्यक्रम

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं के साथ सहयोग

उच्चतम शिक्षा के विश्व प्रतिष्ठा संस्थानों के साथ शैक्षणिक संयोजन के लिए संकाय दृढ़ता से अनुकरण करता आया है हाल ही में विभिन्न देशों के संस्थानों से चोटी के शिक्षकों ने संकाय का भ्रमण किया है।

इस पहल में विश्वविद्यालय ने हाल ही में जिन संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं -

- इथियोपिया लोक सेवा कॉलेज, इथियोपिया
- विल्कीस विश्वविद्यालय, पेन्सिलेविया, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
- व्यवसाय विद्यालय, क्लेपियन विश्वविद्यालय, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
- लॉसित्ज विश्वविद्यालय, जर्मनी (हस्ताक्षर होना है)
- उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त, संकाय ने विभिन्न अवसरों पर अन्य संस्थाओं के साथ भी बौद्धिक एवं शैक्षणिक भागीदारी की है। इनमें से कुछ निम्न हैं -
- व्यवसाय विद्यालय, कंसास विश्वविद्यालय, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
- कृषि एंव संगणक विज्ञान विद्यालय, टैनेसी राजकीय विश्वविद्यालय, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
- वैश्विक सामरिक प्रबन्ध इंक., संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
- ग्राहक सम्बन्ध प्रबन्ध संस्थान, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

मान्यताएँ

- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा छः दिवसीय गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम केन्द्र के रूप में अभिज्ञात।
- प्रबन्ध में राष्ट्रीय विद्यावाचस्पति अध्येतावृत्ति हेतु पोषक संस्थान के रूप में मान्यता।
- डी.आर.एस. - प्रावस्था द्वितिय (विशिष्ट सहयोग कार्यक्रम) वि.अ.आ.।
- उद्योग संस्थान भागीदारी प्रकोष्ठ (अ.भा.त.शि.प.)

योगदान

नियमित शैक्षिक कार्यक्रम

संकाय ने स्थापना से लेकर अब तक ४५०० से भी अधिक प्रबन्ध

स्नातक निर्मित किये हैं जो कि विश्वभर में सरकारी एवं निजी क्षेत्र के संगठनों में मुख्य पदों पर अपनी सेवा दे रहे हैं। यह संख्या संकाय द्वारा संचालित स्नातकोत्तर सनद पाठयक्रमों एवं विद्यावाचस्पति प्रबन्ध शोध के सैकड़ों अभ्यर्थियों के अतिरिक्त है।

शोध प्रकाशन

संकाय की अपनी शोध पत्रिका - काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रबन्ध समीक्षा - समसामाजिक प्रबन्ध शोध की एक पत्रिका (आईएसएसएन - २२३१०१४२) है। संकाय सदस्यों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की पत्रिकाओं में लगभग ५०० से अधिक शोध पत्र एंव १०० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करवाई हैं।

विस्तृत गतिविधियाँ

- उद्योग शैक्षिक सम्मेलन २०१२
- उभरती अर्थव्यवस्थाओं में विपणन परिपेक्ष्य पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला।
- पोस्ट एकोनोमिक मेल्ट डाऊन इरा पर एमडीसा के साथ अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला।
- सम्मिलित वृद्धि एवं सूक्ष्म वित्त अभिगम्य पर सम्मेलन (सिगमा)
- उच्चतर शिक्षा में गुणवत्ता परिप्रेक्ष्य पर डायरेक्टर्स कान्क्लेव।
- भारतीय विश्वविद्यालय संघ के साथ उच्चतर शिक्षा संस्थानों में वित्तीय प्रशासन पर राष्ट्रीय कार्यशाला।
- चिरस्थायी विकास हेतु ऊर्जा पर्यावरण एवं आपदा प्रबन्ध पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
- कृषि एंव ग्रामीण विकास पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन।

इसके अतिरिक्त संकाय ने पिछले दो वर्षों के दौरान ५० सभाओं का आयोजन भी किया। निम्न के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किये गये।

- ग्रामीण विद्युतिकरण निगम लि.।
- मानव संसाधन विकास प्रकोष्ठ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
- मा.सं.मं. के सहयोग से माईक्रोसाफ्ट द्वारा शिक्षण सशक्तिकरण कार्यक्रम।
- विज्ञान एवं तकनीकी विभाग नीमेट के सहयोग से संकाय विकास कार्यक्रम।
- अ.भा.त.शि.प. के सहयोग से गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम।

व्यवसाय निदानगृह

संकाय द्वारा व्यवसाय निदान गृह की स्थापना हेतु एक नव प्रवर्तनीय कदम था। इस पहल का उद्देश्य - कक्षा के उपरान्त व्यवसाय अध्ययन के व्यवहारिक एवं सैद्धान्तिक अन्तर को मिटाना एवं व्यवसायियों एंव उद्यमियों को विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान कराना है।

सामुदायिक सेवाएँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित विशेष सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत डीआरएस१ की पहल के तहत संकाय के छात्रों के सामाजिक संघ-सेवार्थ, मानवता के लिए भी स्थापना की गई। इस पहल का उद्देश्य युवा पीढ़ी को समाज कल्याण के लिए आकर्षित करना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना का अन्तर्रनिविष्टीकरण करना है।

अबतक की गतिविधियाँ

रक्तदान शिविर, सरसुन्दरलाल अस्पताल में भर्ती गरीब रोगियों को कम्बल वितरण, सामाजिक उद्यमियों से पारस्परिक व्यवहार, सामाजिक उद्यमों का भम्रण, देने का आनन्द सप्ताह समारोह आदि।

पुराछात्र गतिविधियाँ

प्रबन्ध अध्ययन कार्यक्रम के सूत्रपात से आज दिन तक, विश्वविद्यालय ने ४५०० से भी अधिक प्रबन्ध स्नातक निर्मित किए हैं। जो कि विश्व की शासकीय और निजी संस्थानों में महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रबन्ध पुरा छात्र संघ इस बिरादरी को सशक्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 'भूमा' के भारत एंव विश्व में प्रादेशिक खण्ड हैं। संघ संकाय की विकासीय पहलों में भी योगदान दे रहा है। व्यवसाय जगत से सम्बन्धों के प्रबलीकरण तथा संकाय के छात्रों में प्रशिक्षण एवं स्थापन की व्यवस्थाएँ आदि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। संघ नियमित रूप से विश्वविद्यालय परिसर में वार्षिक सम्मेलन आयोजित करता है। संकाय अध्यक्ष इस संघ के पदेन अध्यक्ष एंव संरक्षक होते हैं।

छात्रों हेतु सुविधाएँ– छात्रावास, पुस्तकालय, पुस्तक बैंक, निःशुल्कता एंव छात्रवृत्ति एवं संगणक अध्ययन की सुविधा उपलब्ध हैं।

ग्रीष्म प्रशिक्षण, शोध प्रबन्ध, लघु परियोजना, प्रेरण एंव इंटर्नशिप–

आठ सप्ताह की ग्रीष्म प्रशिक्षण शोध प्रबन्ध, लघु परियोजना आलेख एवं प्रेरक संकाय के एम.बी.ए., एम.बी.ए. आई.बी. और एम.बी.ए. एग्रीबिजनेस पाठयक्रमों का अन्य भाग है। छात्र इन परियोजना समनुदेशनों को संकाय सदस्यों के परामर्श पर करते हैं।

संकाय उक्त पाठयक्रमों के नवप्रवेशी छात्रों के लिए एक सप्ताह का प्रेरण कार्यक्रम भी आयोजित करता है। इसका उद्देश्य नवागन्तुकों को संकाय, संकाय सदस्यों एंव उद्योग पर्यावरण वृत्तिक बनने के लिए आवश्यक मापदण्डों से परिचित करवाना है । इनमें से कुछ विषय प्रसंग निम्नानुसार हैं–

- सम्प्रेषण कौशल
- व्यक्तित्व विकास
- समूह चर्चा/साक्षात्कार तकनीक
- व्यवहार कुशलता विकास
- गैर लेखा कर्मियों के लिए लेखा ज्ञान
- पारसांस्कृतिक प्रशिक्षण
- सांगठनिक कौशल एंव समूह निर्माण

छात्रों की प्रतिपुष्टि के आधार पर संकाय अपने पाठयक्रमों के तत्व क्षेत्र, अवधि को औद्योगिक एंव शैक्षिक विशिष्टताओं के मिश्रण के साथ अद्यतन करती है।

शोध के नव प्रवेशियों को छ: माह पाठयक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण करना अनिवार्य है जो कि मूलतः छात्रों को शोध कार्य पद्वति, सम्प्रेषण कौशल, सूचना प्रौद्योगिकी अस्त्र एवं तकनीकी तथा गहन साहित्य पुनरीक्षण से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करने में सहायक है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक छमाही में एमबीए एग्रीबिजनेस के नव छात्रों हेतु विशिष्टतः आकल्पित एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य परिसर में आयोजन किया जाता है। प्रतिदिन कक्षाओं का आरम्भ लगभग ४५ मिनट के चिन्तन सत्र से होता है जो कि छात्रों को दिवस पर्यन्त पाठयक्रमों व गैर पाठयक्रमेत्तर गतिविधियों के दौरान स्फूर्ति देता है।

परिसर विकास

कक्षाओं को स्मार्ट कक्षाओं में परिवर्तित करने का कार्य सम्पन्न हो गया है। संकाय के द्वितीय तल एवं पश्य भाग में निर्माण कार्य का भी समापन हो गया है संकाय सदस्यों के प्रकोष्ठों का नवीनीकरण भी पूरा हो गया है। पुस्तकालय का नवीनीकरण समापन की ओर अग्रसर हो जिसमें निम्न सम्मिलित हैं।

- पुस्तकालय में बहुखण्डीय ताक का प्रतिस्थापन।
- बन्द परिपथ दूरदर्शन निगरानी प्रणाली।
- शैक्षणिक शोध एंव गुणवत्ता पठन-पाठन के उच्चीकरण हेतु, आईसीटी सुगमीकरण ।
- परिसर में आईपी ६ में समर्थ वाई-फाई का प्रतिस्थापन।
- नए पार्किंग क्षेत्र तथा नए भण्डार गृह का निर्माण सम्पन्न हुआ।
- वैद्युत पुनर्तारीकरण तथा नवीन एंव प्राचीन भवनों की प्रथम एवं द्वितीय तलों हेतु मुख्य/उप विद्युत वितरण पटलों का प्रतिस्थापन।
- संकाय परिसर में जलपान गृह निर्माण का अनुमोदन।

प्रबन्ध शास्त्र संकाय द्वारा १७ नवम्बर, २०१४ को आयोजित ''भविष्य के नेतृत्व हेतु मंत्र'' विषय पर कार्यशाला

२.१.२.६. संगीत एवं मंच कला संकाय

भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं में भारतीय कलाओं के साथ संगीत का विशेष महत्व है। महामना के संकल्प के अनुसार सन् १९५० में पं. गोविन्द मालवीय तथा संगीत मार्तण्ड पं. ओंकार नाथ ठाकुर (संस्थापक प्राचार्य) के प्रयत्नों से संगीत एवम् ललित कला महाविद्यालय की स्थापना हुई। गायन, वादन एवं शोध अनुभाग के स्वरूप में निरन्तर उन्नति और पल्लवन के फलस्वरूप सन् १९६६ में संगीत एवं मंच कला संकाय के रूप में परिणत हुआ। संगीत के लक्ष्य (प्रायोगिक) लक्षण (शास्त्र) दोनों आयामों में विद्यार्थियों को सम्पुष्ट करने एवं शास्त्र पक्ष को एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से शोध अनुभाग को संगीतशास्त्र विभाग का स्वरूप प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि का.हि.वि.वि. देश में एकमेव केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जिसमें सर्वप्रथम संगीतशास्त्र विभाग प्रतिष्ठित हुआ था। संकाय में सन् १९९९ से संकाय प्रमुख के अधीन नृत्य अनुभाग में स्नातक पाठ्यक्रम संचालित हो रहा था। सन् २००७-०८ में नृत्य विभाग की स्थापना हुई तथा उसमें स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारंभ हुआ।

वर्तमान में संगीत एवम् मंचकला संकाय के अन्तर्गत चार विभाग संचालित हो रहे हैं - गायन, वाद्य, संगीतशास्त्र तथा नृत्य। इस संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित हैं : पी.एचडी. (चारों विभागों में), एम.फिल.संगीतशास्त्र में, गायन एवं वादन में स्नातकोत्तर (एम.म्यूज.), स्नातक (बी. म्यूज.) नृत्य में स्नातकोत्तर (एम.पी.ए.), स्नातक (बी.पी.ए.), संगीतशास्त्र में स्नातकोत्तर (एम. म्यूजिकोलॉजी), गायन (हिन्दुस्तानी/कर्नाटक), वादन (सितार/वायलिन/बाँसुरी/तबला), नृत्य (कथक/भरतनाट्यम) में कनिष्ठ डिप्लोमा, संगीतशास्त्र में एक वर्षीय प्रमाण पत्रीय पाठ्यक्रम तथा रवीन्द्र संगीत में दो वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

संकाय के क्रियाकलाप एवं गतिविधियाँ

संकाय की विशिष्ट गतिविधियों में विद्यार्थियों तथा संगीत प्रेमियों के लाभार्थ गुरूवासरीय कार्यक्रम वर्ष भर चलते रहते हैं। संकाय द्वारा छात्रों एवं संकाय परिवार के लाभार्थ विभिन्न सुप्रसिद्ध कलाकारों के सोदाहरण व्याख्यान एवं मंच प्रस्तुतियां निरंतर आयोजित की जाती हैं।

संकाय में पूर्वाचार्य स्मृति संगीत समारोह आयोजन की एक गरिमामय परम्परा रही है। यह आयोजन संगीत प्रेमियों के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय है। यह समारोह संगीत के क्षेत्र में प्रसिद्ध एवं महान कलाकारों को समर्पित है।

गुरूवासरीय कार्यक्रम

- दिनांक २७.७.२०१४-तालवाद्य कचेरी (श्री विजय भास्कर)
- दिनांक २१.७.२०१४-हाल का उद्घाटन (श्री श्रुति बन्दोपाध्याय, कोलकाता) नृत्य
- दिनांक ५.३.२०१४-शिक्षक दिवस
- दिनांक ११.९.२०१४-गुरूवासरीय (सामूहिक सितार निर्देशन- प्रो. विरेन्द्र नाथ मिश्रा, गायन- डॉ. सुचित्रा गुप्ता)
- दिनांक १८.९.२०१४- गुरूवासरीय भारतनाट्यम निर्देशन-श्री पी.सी. होम्बल, गायन - पं.देवाशीष डे)
- दिनांक ९.१०.२०१४- गुरूवासरीय (गायन सामूहिक निर्देशन- डॉ. राम शंकर,सितार- प्रो. विरेन्द्र नाथ मिश्रा

- दिनांक १६.१०.२०१४- गुरूवासरीय (नृत्य निर्देशन- डॉ. विधि नागर, गिटार- डॉ. कमला शंकर जी।
- दिनांक १३.११. २०१४- गुरूवासरीय (तबला-डा देवव्रत भट्टाचार्य, स्वतंत्र वादन, गायन-डा ओजेश प्रताप सिंह, दिल्ली)
- दिनांक २५.१२.२०१४-संगीत नाटक एकादमी महोत्सव (२५ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २०१४)
- दिनांक ६.२.२०१५- वाइलिन -डॉ. एम. राजम (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र), सितार- प्रो. विरेन्द्र नाथ मिश्रा, वक्तव्य- पं.देवाशीष डे
- दिनांक २९.४.२०१५-संकाय दिवस एवं विदाई समारोह।

गायन विभाग

- २८.४.२०१४ -ताल वाद्य कार्यक्रम-पं. जया भास्कर, हैदराबाद।
- १.८.२०१४ - गायन कार्यक्रम-पं. प्रसन्ना गुडी।
- २२.९.२०१४- डॉ. अलंकार सिंह- अतिथि वक्तब्य, पटियाला।
- १४.११.२०१४ - डॉ. टी. वी. मणिरून्दन- अतिथि वक्तब्य, दिल्ली विश्वविद्यालय।

विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ

- यू.जी.सी. जे. आर. एफ.- पाँच विद्यार्थियों का चयन
- यू.जी.सी. नेट - आठ विद्यार्थियों का चयन

स्पंदन में उपलब्धियाँ

- ग्रुप गायन - द्वितीय पुरस्कार
- सोलो गायन लाइट - प्रथम पुरस्कार - श्री आदित्य भंडारी
- क्लासिकल गायन- प्रथम पुरस्कार - श्री गरूण मिश्रा

विश्वविद्यालय जोनल युवा महोत्सव पुरस्कार

- क्लासिकल गायन- प्रथम पुरस्कार - सुश्री विलिना महापात्रा।
- सोलो गायन लाइट - प्रथम पुरस्कार - श्री आदित्य कुमार सारस्वत।

वाद्य विभाग

युवा महोत्सव जोनल/राष्ट्रीय
पूर्वी जोन युवा महोत्सव

- प्रथम पुरस्कार - श्री रवि प्रजापति (बांसुरी) युवा महोत्सव २०१४
- प्रथम पुरस्कार - श्री आनन्द मिश्रा (तबला) युवा महोत्सव २०१४

राष्ट्रीय

- द्वितीय पुरस्कार- श्री रवि प्रजापति (बांसुरी) युवा महोत्सव २०१४
- द्वितीय पुरस्कार- श्री आनन्द मिश्रा (तबला) युवा महोत्सव २०१४

ऑल इंडिया रेडियो म्युजिक प्रतियोगिता

- प्रथम पुरस्कार - श्री शारदा प्रसन्ना दास (वाइलिन) ए.आई.आर. ग्रेडेशन एवं साइटेशन।
- द्वितीय पुरस्कार- श्री अंकुर मिश्रा (सितार) ए.आई.आर. ग्रेडेशन एवं साइटेशन।

राष्ट्रीय छात्रवृति युवा कलाकारों के लिए (एम.एच.आर.डी.)

श्री वेद व्यास सी. एस. (बांसुरी)

यू.जी.सी. एस.आर.एफ.	:	६
राजीव गांधी वरिष्ठ शोध छात्रवृति	:	१
यू.जी.सी. जे.आर.एफ.	:	१
यू.जी.सी. नेट	:	३
आई.सी.सी.आर. विदेशी विद्यार्थियों के लिए (सिल्वर जुबली छात्रवृति)	:	१

स्पंदन में उपलब्धियाँ

- प्रथम पुरस्कार - श्री वेद व्यास सी. एस. (बांसुरी)
- प्रथम पुरस्कार - श्री आनन्द कुमार मिश्रा (तबला)

यू.पी. संगीत नाटक एकादमी प्रतियोगिता

- द्वितीय पुरस्कार - श्री प्रांजल यादव (बांसुरी)

प्रयाग संगीत समिति प्रतियोगिता

- द्वितीय पुरस्कार - श्री आलोक कुमार

नृत्य विभाग

	विद्यार्थियों के नाम	पुरस्कार/उपलब्धियाँ
१.	सुश्री कृतिका जायसवाल	- नेट
२.	सुश्री रितिका दास	- स्पंदन में प्रथम पुरस्कार
३.	श्री अमृत मिश्रा	- स्पंदन में तृतीय पुरस्कार
४.	सुश्री उर्वशी संण्ड	- एम.एच.आर.डी छात्रवृति
५.	ग्रुप नृत्य (फोक)	- स्पंदन में द्वितीय पुरस्कार
६.	सुश्री पूजा चौधरी	- प्रथम पुरस्कार युवा वर्ग संगीत नाटक एकादमी
७.	सुश्री पायल दास - द्वितीय पुरस्कार,युवा वर्ग संगीत नाटक एकादमी	

सुविधायें

दृश्य तथा श्रव्य प्रयोगशाला, छात्रावास सुविधायें, ग्रन्थालय, प्रेक्षागृह, साप्ताहिक सजीव कार्यक्रम, शोध छात्रों के लिए पाण्डुलिपियाँ, सोदाहरण व्याख्यान आदि।

२१ जून, २०१४ को मंच कला संकाय में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस'

संकाय द्वारा आयोजित एक समारोह में पद्मविभूषण पं. छन्नूलाल मिश्रा एवं पं. विश्वमोहन भट्ट (ग्रैमी पुरस्कार विजेता)

२.१.२.७. विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. मदन मोहन मालवीय ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शिक्षण तथा अनुसंधान पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। उनकी इच्छा थी कि स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए प्रत्येक छात्र के सीखने के लिए अनुकूलतम वातावरण तैयार किया जाय। यहाँ पर वैज्ञानिक चेतना एवं सोच को प्रेरित करने और बढ़ावा देने के लिए बुनियादी सुविधाओं से युक्त संग्रहालय, वानस्पतिक उद्यान और जैव विविधता से परिपूर्ण पर्याप्त खुला जीवंत स्थान उपलब्ध है।

आज विज्ञान संकाय को इस तथ्य पर गर्व का अनुभव हो रहा है कि वह अपने पुरातन छात्रों, पूर्व शिक्षकों और भारतीय विज्ञान के लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिकों जैसे प्रो. आर. के. असुंधी, एस.एस. भटनागर, एम.एस. कानूनगो, ए. बी. मिश्रा, गणेश प्रसाद, एस.एस. जोशी, सी.एन.आर. राव, यू.आर. राव, जे.वी. नार्लिकर, के.के. माथुर, राजनाथ, जी.बी. सिंह, आर. मिश्रा, एच.एस. राठौर, एच.एल. छिब्बर, आर.एल. सिंह, एस.एल. कायस्था, वी.के. पटौदी, वी.के. गौर, एम.एस. श्रीनिवासन और अन्य अनेक भारतीय विज्ञान शिक्षाविदों से मार्गदर्शन प्राप्त कर शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में सतत् उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। विज्ञान संकाय के शिक्षक प्रौद्योगिकी में विकास का प्रयास करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण एवं अनुसंधान में सदैव उत्कृष्टता एवं नवाचार हेतु कटिबद्ध हैं। संकाय अपने छात्रों को विश्व वैज्ञानिक समुदाय के मुकाबला करने हेतु तैयार करने हेतु वचनबद्ध है। छात्रों को उनकी परीक्षाओं की मूल्यांकन पद्धति को देखने की अनुमति द्वारा पारदर्शिता बरती जा रही है।

संकाय के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से लिया जाता है। यहाँ पर अध्यापन पूर्ण रूप से सेमेस्टर आधारित है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्यक्रम की विषय वस्तुओं को नियमित रूप से पुनरीक्षित किया जाता है। पाठ्यक्रमों के लिए क्रेडिट प्रणाली और मूल्यांकन के ग्रेड प्वाइंट प्रणाली संकाय में लागू की गई है, जिससे निष्पक्षता और पारदर्शिता को बढ़ावा मिला है। स्नातक स्तर पर अन्र्तसंकायी परिचित पाठ्यक्रमों और परास्नातक स्तर पर लघु ऐच्छिक पाठ्यक्रमों ने विज्ञान छात्रों के लिए अन्तर्विषयी मौलिक ज्ञान को विस्तार और व्यापक दृष्टिकोण को मजबूती प्रदान की है। कुछ विभागों में स्नातकोत्तर छात्रों को प्रतिष्ठित संस्थाओं एवं औद्योगिक घरानों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाता है। इसके साथ ही पुनरीक्षित पी.एचडी. पाठ्यक्रम सत्र २००९-१० से प्रारम्भ किया गया है। यहाँ पर कैम्पस साक्षात्कार के माध्यम से छात्रों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं।

वर्तमान में, संकाय में १३ विभाग, ०२ स्कूल और २ अन्तर्विषयी केन्द्र हैं जो संकायाध्यक्ष द्वारा नियंत्रित और समन्वित होते हैं। इसके अतिरिक्त जन्तु विज्ञान विभाग में कार्यरत एक ब्रेन रिसर्च सेन्टर व भौतिकी विभाग में कार्यरत हाईड्रोजन एनर्जी सेन्टर है। संकाय में ८

विभागों में से ५ उच्चानुशीलन केन्द्र हैं जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष अनुदान कार्यक्रम के अन्तर्गत सहायता प्राप्त कर रहे हैं जबकि तीन डी.एस.ए./डी.आर.एस. स्तर पर सहायता प्राप्त कर रहे हैं, जो यहाँ के शिक्षण और अनुसंधान की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। कुछ विभागों को डी.एस.टी. से फिस्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत सहायता प्राप्त हो रही है। डी.एस.टी. पर्स कार्यक्रम के तहत लगभग ३५ करोड़ रुपये की उल्लेखनीय सहायता प्राप्त हुई है। डी.बी.टी., भारत सरकार द्वारा जैव प्रौद्योगिकी स्कूल एवं अन्तर्विषयी जीव विज्ञान स्कूल को सहायता प्राप्त हुई है।

अनुसंधान के क्षेत्र में विज्ञान संकाय के शिक्षकों के योगदान को विगत दिनों देश में शीर्ष स्थान के अन्तर्गत तीसरे स्थान पर रखा गया है। वर्तमान वर्ष के अन्तर्गत संकाय द्वारा ७३७ स्नातकोत्तर उपाधि और १२७ शोध-छात्रों को पी.एचडी. उपाधि प्रदान की गई है। इसके साथ-साथ लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा लगभग १२७४ शोध-प्रकाशन किये गये हैं और लगभग रुपयों ४७ करोड़ से अधिक की धनराशि अनुसंधान व संबंधित बुनियादी ढांचे के विकास (जिसमे डी.एस.टी. एफ.आई.एस.टी. के अन्तर्गत प्राप्त अनुदान भी शामिल है) के लिए प्राप्त हुई हैं।

संकाय में सम्पन्न उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यो के परिणामस्वरूप विगत वर्षो में नैनोसाइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अन्तर्विषयी गणितीय विज्ञान, जेनेटिक डिस्ऑडर्स और ब्रेन रिसर्च जैसे शोध केन्द्रों की स्थापना की गई। डी.बी.टी.-बी.एच.यू. अन्तर्विषयी जीवन विज्ञान स्कूल को जैव-प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा और भौतिकी विभाग में अन्तरिक्ष विज्ञान में अनुसंधान एवं शिक्षण के विकास के लिए इसरो द्वारा सहायता प्रदान की गयी।

जैव रसायन विज्ञान विभाग

जैव रसायन विभाग दिसम्बर १९८३ में स्थापित हुआ। वर्तमान में इस विभाग में तीन प्रोफेसर, दो एसोसिएट प्रोफेसर एवं दो असिसटेन्ट प्रोफेसर कार्यरत है। विभाग स्नातकोत्तर के द्विवार्षिक (चार सेमेस्टर) पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उपाधि प्रदान करता है। प्रत्येक वर्ष ३० विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर जैव रसायन पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जैवरसायन विज्ञान के विविध क्षेत्रों, जैसे- कोशिका जैविकी, शरीर क्रिया विज्ञान, पोषण विज्ञान, जैविक अणु विज्ञान, आणविक जैविकी, चयापचय, प्रतिरक्षा विज्ञान (इम्यूनोलॉजी), इन्जायमोलॉजी, पादप जैव रसायन, तंत्रिका जैव रसायन, इत्यादि को समाहित करते हुए १४ सैद्धान्तिक प्रपत्र हैं। इन प्रपत्रों के अतिरिक्त एसाइन्मेन्ट आधारित व्याख्यान एवं परियोजना कार्य, गहन मौखिक परीक्षा तथा प्रायोगिक परीक्षाएँ भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। विभाग में विभिन्न क्षेत्रों जैसे- इन्जाइम एवं इन्जाइम तकनीक, पौधों में दबाव मेटाबोलिजम, परजैविक इम्यूनोबायोलॉजी और क्लीनिकल जैव रसायन, इत्यादि में शोध कार्य होता है। वर्तमान पाठ्यक्रम सन् २०१२ में संशोधित किया गया है।

इस विभाग के अध्यापकों व शोधार्थियों के २८ लेख अर्न्तराष्ट्रीय एवं ०२ राष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

जैवप्रौद्योगिकी स्कूल

यहाँ प्रयोगात्मक पीसीआर, डीएनए स्क्येन्सर, फ्लोसाइटोमीटर तथा स्प्रेक्ट्रोफोटोमीटर पर आधारित प्रायोगिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है। परीक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता अपनायी गई है। स्कूल को यूजीसी सैप (फेज-II) २०१३-२०१८ के तहत रू. ८०.०० लाख का अनुदान प्राप्त हुआ है।

जैवसूचना केन्द्र : स्कूल में सन् १९८९ में जैवप्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वित्त-पोषित एक जैवसूचना केन्द्र भी विकसित किया गया है, जिसमें इण्टरनेट सुविधा, डाटाबेस, जैवसूचना मशीन, दूरभाष, फैक्स मशीन मौजूद हैं। छात्रों, अध्यापकों तथा शोध छात्रों के अलावा विश्वविद्यालय के अन्य विभागों व बाहरी संस्थाओं द्वारा इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है।

वृहद्शोध क्षेत्र : वर्तमान में शोध कार्य हेतु स्कूल के प्राध्यापकों की सक्रियता निम्नलिखित क्षेत्रों में परिलक्षित होती है:–

- कोशिकीय एवं आणुविक प्रतिरक्षा एवं अर्भुद विज्ञान
- कर्क एवं इन्फ्लेमेटरी रोगों का प्रतिरक्षात्मक उपचार
- संक्रामक रोगों का सूक्ष्मजीव विज्ञान
- किण्वक आधारित इलाज एवं बनावट-क्रियाकलाप में संबंध
- आणुविक सूक्ष्मजीव विज्ञान
- क्रियात्मक जीनोमिक्स
- जीवद्रव्य संरक्षण एवं प्रसार पर आधारित पादप जैवप्रौद्योगिकी

छात्रो के शोध कार्य के लिये प्रमुख सुविधाएँ : स्कूल आफ जैव प्रौद्योगिकी की केन्द्रीय उपकरण प्रयोगशाला में मुख्य रूप से निम्न उपकरण मौजूद है- फ्लोरीसेंस माइक्रोस्कोप, फ्लोसाइटोमीटर, डीएनए सिक्येन्सर, फ्लेक्सीड्रायर, एलाईजा प्लेट रीडर, नैनोड्रोप, अल्ट्रासोनिकेटर, एफपीएलसी, थरमोसाइकिलर आदि। एम.एस.सी. एवं शोध छात्रों के लिये उपकरणों के रख रखाव और उपयोग की विधि बतलाई जाती है, स्कूल में प्रत्येक प्राध्यापक की अपनी-अपनी शोध प्रयोगशालाएँ हैं, जिसमें एम.एस.सी. एवं शोध छात्रों के लिये जैव प्रौद्यौगिकी में शोध और शिक्षा के लिये भिन्न-भिन्न तरह की सुविधाएँ मौजूद हैं। सेंटर फोर बायोइंफोरमैटिक्स में ३० कम्प्यूटर इंटरनेट एवं प्रोटोमिक्स व जीनोमिक्स सोफ्टवेयर से सुविधायुक्त शिक्षण व शोध कार्य में उपयोग में लाए जाते हैं।

नये सहयोगात्मक शोध : ओएनजीसी, अहमदाबाद, आईआईव्हीआर, वाराणसी, सीडीआरआई, एनवीआरआई, लखनऊ एवं आईसीपीओ, नोएडा के साथ सहयोगात्मक शोध कार्य शुरू किये गये हैं।

केन्द्रीय प्रयोगशाला में जेल डाक्युमेंटेशन सिस्टम, फ्लोरासेंस माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी), स्पेक्ट्रोफ्लोरीमिटर, थर्मल साइक्लर, एलाइजा रीडर, डीएनए सीक्वेंसर, रेफ्रीजरेटेड सेंट्रीफ्यूज इत्यादि उपकरण मौजूद हैं, जिनका इस्तेमाल शोध तथा स्नातकोत्तर छात्र प्रतिदिन कर रहे हैं। शोध छात्रों के इस्तेमाल लिए कोल्डरूम की सुविधा भी बराबर मौजूद है।

जैव प्रौद्योगिकी स्कूल में अन्य पिछड़ा वर्ग अनुदान के तहत एक चार मंजिला नई इमारत का कार्य अंतिम चरण में है। इसमे प्रयोगशाला के अलावा शिक्षण एवं शोध की सुविधाएं माह दिसम्बर २०१५ तक उपलब्ध हो जायेंगी।

वनस्पति विज्ञान विभाग

वनस्पति विज्ञान विभाग देश के प्राचीनतम एवं आरम्भिक स्नातकोत्तर एवं अनुसंधान केन्द्रों में से एक है। वानस्पतिक उच्चानुशीलन केन्द्र ने मार्फोजेनेसिस व उत्तक संवर्द्धन एवं कोशानुवांशिकी जैसे गैर-प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में सार्थक योगदान करने के साथ-साथ पारिस्थितिकी विज्ञान, शैवाल विज्ञान, कवक व पादप रोग विज्ञान जैसे प्राथमिकता वाले विशेष-क्षेत्रों में देश के सर्वोत्तम वनस्पति विज्ञान विभागों में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है।

संक्षिप्त विवरण : अनुसंधानीय योगदान, कार्यक्रम एवं महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

इस विभाग में वनस्पति विज्ञान में स्नातक तथा स्नातकोत्तर छात्रों के लिए शिक्षण कार्यक्रम का संचालन करने के साथ-साथ स्नातक स्तर पर औद्योगिकीय सूक्ष्मजैविकी में व्यावसायिक पाठ्यक्रम और स्नातकोत्तर स्तर पर पर्यावरण विज्ञान एवं अनुप्रयुक्त सूक्ष्मजैविकी पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के आलोक में इस विभाग के शिक्षकगण इस विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राओं के पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम का अध्यापन भी करते हैं। विभाग द्वारा विज्ञान संकाय के अन्य विभागों के एम.एससी. छात्रों के लिए माइनर इलेक्टिव पेपर्स भी पढ़ाये जाते हैं। विभागीय शिक्षकगण विज्ञान संकाय के गणित विषयों के स्नातक स्तरीय छात्रों के लिए जीवविज्ञान के एन्सीलरी पाठ्यक्रमों का अध्यापन भी करते है। यहाँ के एम.एससी. कक्षाओं के छात्रगण प्रयोगशालयी अध्ययन हेतु उपयोगी पादप सामग्रियों को एकत्र करने के साथ ही पादपों के प्राकृतिक आवासों और उनकी पारिस्थितिकीय अध्ययन के लिए क्षेत्र भ्रमण पर गये थे। यहाँ के छात्रों ने चतुर्थ सेमेस्टर के दौरान परियोजना कार्य भी सम्पन्न किया है।

यह विभाग पारिस्थितिक विज्ञान, शैवाल विज्ञान, फफूँद व पादप रोग विज्ञान, मार्फोजेनेसिस व उतक संवर्द्धन तथा कोशानुवांशिकी जैसे प्रमुख विषयों में अनुसंधान प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। यहाँ के शिक्षक एवं शोध छात्र अनुसंधान के निम्नलिखित क्षेत्रों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं : पारिस्थितिक विज्ञान : पादप जैवविविधता : अनुवीक्षण, दोहन एवं प्रबंधन; उष्णकटिबंधीय वृक्षों का फिनोलाँजी; पारिस्थितिक तंत्र की कार्यप्रणाली पर वायुमण्डलीय निक्षेपणों का प्रभाव; परिनगरीय कृषि पर वायु प्रदूषण का प्रभाव; वाराणसी नगर में वायु गुणवत्ता की स्थिति; पौधों पर कृत्रिम अम्ल वर्षा का प्रभाव; फसली पौधों पर फ्लाई ऐश मिश्रित मिट्टी का प्रभाव; कृषि पारिस्थितिक तंत्रों में मृदीय पोषकों के स्रोत के रूप में वृक्ष-पर्ण; कृषि पारितंत्रों में खर-पतवार विविधता; कृषि पारितंत्रों में सूक्ष्मजीवी जैवभार गतिकी, जल प्रदूषण का जैविक नियंत्रण, जैवरासायनिक आक्सीजन माँग के अनुमान के लिए आंकलन नमूना; शुष्क उष्णकटिबंधीय वनीय जातियों पर बढ़े हुए कार्बन डाईआक्साइड एवं नाइट्रोजन निक्षेपणों की अनुक्रिया, अतिक्रमणकारी जातियों की पारिस्थितिकी, आणुविक औजारों के उपयोग द्वारा मीथेनपोषी जीवाणुओं का अध्ययन; शैवाल विज्ञान : नील-हरित शैवाल में नाइट्रोजन एवं उपापचय, शैवाल में जैवविविधता, नील-हरित शैवाल एवं मीथेनपोषी धातु अधिशोषण एवं जैवअणु उत्पादन के लिए शैवालीय एवं नील-हरित शैवालीय तकनीकी, शैवाल एवं नील-हरित शैवालों में प्रतिबल सह्य क्रियाविधि, नील-हरित शैवालों का कोशानुवांशिकी एवं दबाव के प्रति शैवाल एवं नील-हरित शैवालों की अनुक्रिया; फफूँद एवं पादप रोग विज्ञान : मृदोत्पन्न पादप रोगकारियों का जैविक नियंत्रण, समन्वित रोग प्रबन्धन, मशरूम उत्पादन, टमाटर, सोयाबीन एवं चना में उत्प्रेरित प्रतिरोध, शाकीय रोगनाशी, लवण-क्षारीय मृदा के पुनर्स्थापन के लिए माइकोराइजल तकनीकें, फफूँदीय विविधता एवं फफूँदों की नयी जातियों का वर्णन और आर.ए.पी.डी. तथा एरीक पी.सी.आर. तकनीकों के उपयोग द्वारा जल का सूक्ष्म-जैवकीय अध्ययन; मार्फोजेनेसिस व उतक संवर्द्धन : वृक्षों का सूक्ष्मसंवर्द्धन, प्रतिबल सह्य पौधों का उत्पादन एवं कायिक भ्रूणजनन का जैवरासायनिक विवरण, कुछ आर्थिक महत्व के पौधों के कायिक उत्तकों की पुनर्जनन संभाव्यता और उच्च पादपों का कोशानुवांशिकी : लवण सह्य पादपों का आनुवांशिकी, पामों का कोशिका विज्ञान, द्वितीयक मेटाबोलाइट्स के संश्लेषण पर संकरण प्रभाव, एस. मेलान्जेना का कोशिका विज्ञान एवं बाजरे की आनुवांशिकी।

छात्र-छात्राओं के लिए उपलब्ध अनुसंधान सुविधाओं का विवरण

छात्र-छात्राओं के लिए आधुनिक अनुसंधान सुविधाओं के साथ सुसज्जित प्रत्येक शिक्षकों के लिए व्यक्तिगत प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त विभाग के केन्द्रीय उपकरण प्रयोगशाला में अनेक अतिविशिष्ट यंत्र उपलब्ध हैं। जहाँ विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के छात्र भी इनका लाभ प्राप्त करते हैं।

ओबीसी ग्रान्ट के अन्तर्गत मुख्य भवन के पीछे नवीन भवन का निर्माण कार्य पूरा हुआ तथा इसका लोकार्पण माननीय कुलपति द्वारा किया गया।

रसायन शास्त्र विभाग

विभाग के विभिन्न समूहों के अनुसंधानों का सक्षिप्त सारांश :

- विभागों के विभिन्न अनुसंधान समूह सक्रिय रूप से अनुसंधान और विकास की गतिविधि से जुड़े हैं, जो कि उनके अनुसंधान पत्र के रूप में प्रतिबिम्बित और प्रकाशित हैं। उनके कार्यो का संक्षिप्त विवरण (२०१४-१५) निम्नवत् है।
- जटिल संक्रमण धातुओं पर आधारित एन/एस डोनर लिगेंड का संश्लेषण निरूपण एवं जैविक गतिविधियों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।
- लैंथानाइड के जटिल यौगिको जिनका सूत्र [Ln2(C2H)3NO3](NO3)2 है।
- यस एम बी का संश्लेषण निरूपण विभिन्न वर्णक्रमिय तकनीकी का प्रयोग करते हुए किया गया है।
- इस्टर सबस्टीट्यूटेड क्रोयल हाइड्रोजोन का दूसरे सक्रिय समूह का अध्ययन एवं उनके जटिल यौगिक के साथ अध्ययन एवं बैंजलोक्सी

प्रतिस्थापित एरोइलहाइड्रेजोन्स की संरचना और गुण का भी अध्ययन किया गया है।

- बहुत से बड़ेचक्रीय सिच्क्रिय, त्रिचक्रिय और लक्ष्य विशिष्ट द्विकर्यात्मक प्रिनिधियों का भी संश्लेष्ण किया गया है।
- नए समन्वयक बहुलक को भी विकसित किया गया है जो कि CO_2 को अवशोषित करने में सक्षम है।
- ऐसे जटिल यौगिक को संश्लेषित किया गया जिनमें डाई थायो लिगेंड उपस्थित है जो कि एन जटिल यौगिक अधिचालक और प्रकाश संदिपित गुण दर्शाते हैं।
- BDP डाई का भी संश्लेषण किया गया है जिनमे, प्रकाश संबंधित गुण का अध्ययन किया गया है यह BDP डाई विभिन्न प्रकार के nesdipyromethe का प्रयोग कर के बनाई गयी है, इनके कुछ RU जटिल यौगिक ऐसे भी है जो कि Antitumour गतिविधि भी दर्शाते हैं।
- Pd उत्पेरित कार्बो/ हेट्रो एंटीट्यूमर संश्लेषण का प्रयोग करके cyclopentane pyrane और pyridine annulated quinoines का भी संश्लेष्ण किया गया है।
- कुछ बहु घटक प्रतिक्रिया और धातुओं द्वारा उत्पेरित जैविक परिवर्तन के लिए विभिन्न विधियाँ विकसित की गई है, जो कि हमारे पर्यावरण के हित में है।
- लिपाइड केंसर और पेपटाइड अल्सर के लिपाइड प्रतिआक्सीकरण और एन्टीऑक्सीडेन्ट कि स्थिति के लिए भी कुछ अध्ययन किये गये हैं।
- जैविक इकाइयों और विभिन्न माध्यम में Hg^2+, Zn^2+, PB^2+, AG+ACo और CNion कि उपस्थिति का अध्ययन किया गया है। कई संवेदनशील और कुशल कार्यात्मक प्रदत्तों को भी विकसित किया गया है।
- जीवित बहुलीकरण तकनीकी का उपयोग कर ऐसे बहुलकों का संश्लेषण किया गया है। यह विकसित नव प्रणाली चिकित्सा क्षेत्र में लाभकारी है।
- एरोमेटिक अणुओं के तहत पैटर्न का भी अध्ययन किया गया है इसमें बायोएक्टिव और फ्लेक्स्सिवल प्रणाली का भी अध्ययन किया गया है।
- चतुषभुजीय तारांकित पालिमर का भी जो कि pentaerytheiol macro initiator T rimer of β-cyclodexerib आधारित हैं का क्लिक रसायन विधि का भी उपयोग कर संश्लेषण किया गया है।
- सुविधाजनक विधियों को विकसित किया गया है, जिसमे OH redical k keâes plasma liquid interface में उत्पन्न कराया जा सके, इसके लिए glow discharge electrolysis विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें OH radical की प्राप्ति १०० प्रतिशत बढ़ जाती है, जिससे कि १० मिली प्रति फैराडे विद्युत की प्राप्ति होती है।
- Kinetic और abnormal slow proton transfer तंत्र का apolar aprotic media में अध्ययन किया गया है। विशिष्ट विधि द्वारा structural effect का मात्रात्मक विशलेषण किया गया है।
- Electrical और super paramagnetz गुणों का विस्तृत अध्यन्न NI-Fe nanocomposition ceramic nitrides and carbides पर किया गया है
- नव electroocatalytic प्रणाली को भी विकसित किया गया है । यह प्रणाली fuel cell me ethanol/ methanol आक्सीकरण विधि द्वारा प्राप्त की गई है
- नव semiconducting materials (ZnO/Tio2) को विकसित किया गया है, साथ ही इसके photoelectrode गुणों का भी अध्ययन किया गया है। विभिन्न प्रकार के dyes (natural dye / metal complex) का उपयोग प्रकाश संश्लेषण के रूप में किया गया है। solar cell में भी इनके योगदान को पाया गया है।
- जैविक अपघटित और जैविक समतुल्यता के द्विचरणीय amphiphilic खण्डीय का नियन्त्रण संश्लेषण किया गया है इनके निम्न उदाहरण हैं, जो कि निम्न पर आधारित है- poly(N-uiny) purrolidone, poly E-caprolatone, poly(loutide), polurethane, polyglyconomer इत्यादि
- Intersysem crossing (ISC) के महत्त्व की भी गणना की गयी है। रासायनिक क्रिया जैसे कि O(3np)+acetylene क्रिया में इसका अध्ययन किया गया है।
- Uniral biomolecules पर enantioseletive seperation और ultratrace प्रदातों का सफल अध्ययन किया है। इसमे MIP nanosensor और complentory microsolid phase extraction तकनीकी का प्रयोग किया गया है।
- Sol-gel procesing तकनीकी, nanotechnology और Material Science के कायदों के लिए lectrochemical पर आधारित रासायनिक तकनीकी को विकसित किया गया है।

छात्रों के लिए उपलब्ध शोध सुविधा

एन.एम.आर. (३०० मेगाहर्डज) सिंगल क्रिस्टल एक्स.आर.डी., एफ.टी.आई.आर., यू.वी.-वीज जी.सी. एम.एस. एलिमेंटल एनालाईजर इलेक्ट्रोकेमिकल सिस्टम फ्लूरेंसेंस, स्पेट्रोफोटोमिटर, इलेक्ट्रोमिटर, डी.एस.सी., टी.जी.ए./डी.टी.ए., ए.एफ.एम., हाई स्पीड कम्प्यूटिंग सिस्टम पाउडर एक्स.आर.डी. एण्ड एच.पी.एल.सी., परचेस ऑफ एन.एम.आ. (५०० मेगाहर्डज) आदि प्रक्रियाधीन हैं।

संगणक विज्ञान विभाग

इस विभाग की स्थापना १४ सितम्बर सन् १९८७ को हुई थी। विभाग में प्रारम्भ से ही तीन त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पढ़ाये जाते हैं। कम्प्यूटर विज्ञान विभाग में वर्ष १९९० में परास्नातक प्रोग्राम शुरू किया गया था। शिक्षण गतिविधियां सितम्बर २००२ तक भौतिकी विभाग में आयोजित की गई। विभाग सितम्बर २००२ से अपने स्वयं के भवन में कार्य कर रहा है। विभाग को एमसीए कोर्स चलाने की जिम्मेदारी शैक्षणिक सत्र २००६ से दी गई थी। एमसीए कोर्स शैक्षणिक सत्र २००७ से पेड सीट श्रेणी के तहत राजीव गाँधी दक्षिण परिसर में शुरू किया गया था।

अन्य पिछड़ा वर्ग अनुदान के तहत नवनिर्मित इमारत उपयोग में ली जा चुकी है। एक शोध छात्रा को पी.एचडी. डिग्री से सम्मानित किया गया तथा कई छात्रों को विभिन्न सॉफ्टवेयर कंपनियों में कैम्पस प्लेसमेंट मिला है।

भौमिकी विभाग

यह विभाग उन प्रथम कुछ विभागों में से एक है जिसे विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना द्वारा सन् १९२० में एक संयुक्त विज्ञान भूगर्भ, खनन एवं धातुकी विभाग के रूप में स्थापित किया गया था। सन् १९२२ में यह एक स्वतंत्र विभाग के रूप में स्थापित हुआ। वर्तमान में ३५ अनुमोदित शैक्षिक पदों वाला यह विभाग देश में न केवल सबसे बड़ा है, अपितु शिक्षण एवं शोध विषयों के अनुसार भी सर्वाधिक विविधतापूर्ण है।

विभाग को स्तरिकी, जीवाश्म विज्ञान, सूक्ष्म-जीवाश्म विज्ञान एवं समुद्र विज्ञान, ईंधन भौमिकी, अवसादनी, आर्थिक भूविज्ञान, आग्नेय शैल विज्ञान, कायान्तरित शैल विज्ञान, भूजल विज्ञान, जी.आई.एस, सुदूर संवेदन, भूरसायन, संरचनात्मक भू-विज्ञान एवं विवर्तनिकी इत्यादि में उत्कृष्ट शोध कार्यो हेतु देश एवं विदेश में जाना जाता है। भारत के खनिज एवं ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आगामी शैक्षणिक सत्रों में नये पाठ्यक्रमों की शुरुआत की जायेगी।

यह विभाग डी.एस.टी. - फिस्ट द्वितीय चरण द्वारा प्रयोजित है। उत्कृष्ट शोधों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विभाग को सन् २०१० में उच्चानुशीलन अध्ययन केन्द्र के रुप में प्रोन्नत कर दिया है। इस विभाग में कई आधुनिक अनुसंधान उपकरण हैं जिनमें मुख्य हैं- स्कैनिंग इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप, एक्सरे डिफ्रैक्टोमीटर, उन्नत रिफ्लेक्टर लाइट व फ्ल्यूरोसेन्स माइक्रोस्कोप (कम्प्यूटरीकृत), उन्नत फ्ल्यूइड इन्क्लूसन स्टडी स्टेज माइक्रोस्कोप (कम्प्यूटरीकृत), उन्नत पेट्रोलोजिकल व स्टीरियोस्कोपिक माइक्रोस्कोप, थिन सेक्शन प्रिपरेशन वर्क स्टेशन आदि। हाल ही में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने विभाग की एक शोध परियोजना हेतु इलेक्ट्रान प्रोब माइक्रो एनालाइजर की संस्तुति की है। विभाग में आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण उन्नत किस्म का एक सभागृह है तथा साथ ही रिमोट सेंसिंग व जी.आई.एस. की एक पूर्णत: नेटवर्कित कम्प्यूटरीकृत प्रयोगशाला भी है।

प्रति वर्ष ६ अक्टूबर को विभाग में भू-विज्ञान दिवस मनाया जाता है जिसमें विद्यार्थियों के लिए कई प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं। इस वर्ष देश-विदेश के कई वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया गया जिन्होंने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये। साथ ही कुछ पुराने शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

विद्यार्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए उल्लेखनीय संख्या में विद्यार्थियों को देश के विभिन्न विख्यात सार्वजनिक एवं निजी उपक्रमों की शोध-प्रयोगशालाओं में भेजकर समर-ट्रेनिंग भी करवाई गई। दूसरे अन्य विश्वविद्यालय तथा इंस्टीट्यूट्स के कुछ विद्यार्थियों को इस विभाग में मरीन-माइक्रोपेलेंटॉलाजी, कोल पेट्रोग्राफी, पेट्रोलॉजी तथा संरचनात्मक भू-विज्ञान एवं विवर्तनिकी में विशिष्ट प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त हमारा विभाग विद्यार्थियों के प्लेसमेंट में भी सहायता करता है। इस समय विद्यार्थियों की नौकरी की दृष्टि से हमारे विभाग की स्थिति बहुत सुदृढ़ है। वर्तमान में हमारे विद्यार्थी न केवल तेल व खनन क्षेत्र में नौकरी पाते हैं, अपितु परोक्ष रूप से इनके लिए अर्बन प्लानिंग, इन्वायरमेंटल रिस्टोरेशन, विश्लेषणात्मक व शोध प्रयोगशालाओं में भी प्रचुर संभावनाएँ हैं। आजकल की विश्व मन्दी में भी कैम्पस प्लेसमेंट द्वारा ६० प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों का चयन किसी कीर्तिमान से कम नहीं है।

विभाग में एक सुव्यवस्थित संग्रहालय (प्रो. राजनाथ स्मृति संग्रहालय) है जिसमें देश-विदेश से लाये गये भौमिकीय महत्व के शैलों एवं जीवाश्मों का अनोखा संग्रह है। विभाग में एक समृद्ध पुस्तकालय (प्रो. के.के. माथुर स्मृति पुस्तकालय) है जिसमें पर्याप्त संख्या में किताबें, मेम्वायर, रिकार्डो तथा शोध पत्रिकाओं का संग्रह है।

क्रियाकलापों एवं कार्यक्रमों की उपलब्धियों का विवरण

संचालित, मान्यता प्राप्त अथवा संबद्ध संस्थानों की सूचनाएँ अध्याय-द्वितीय के समान सूचनाएँ

- विभाग को उच्चानुशीलन अध्ययन केन्द्र के रुप में प्रोन्नत कर दिया गया है।
- महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में भौमिकी में स्नातक की पढ़ाई आरम्भ हो गई है।

विद्यार्थियों हेतु शोध की सुविधाएँ

२५ (पच्चीस) कम्प्युटरों वाली बेतार वाई फाई सुविधायुक्त एक सेन्ट्रल फैसिलिटी लैब, डी.एस.टी.फिस्ट तथा अन्य सहयोगों से प्राप्त अन्य उपकरणों की सुविधा विद्यार्थियों तथा शोध छात्रों हेतु उपलब्ध है। इन उपकरणों में शामिल हैं:-

(१) स्कैनिंग इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप (२) मोटर ग्राइंडर (३) थर्मल गैस डिसार्पशन फार सी.बी.एम. (४) पार्टिकल साइज एनेलाइजर (५) थिन सेक्शन प्रिपरेशन यूनिट (६) फ्लूड इंक्ल्यूजन माइक्रोस्कोप एवं फ्रीजिंग स्टेज़ (७) लाइका डी एम आर एक्स पोलराइज़िग एंड स्टीरियोस्कोपिक डिस्कशन माइक्रोस्कोप एंड आर्थोप्लान (८) रॉक इवाल पाइरोलाइजर (९) फ्रैंज आइसोडाइनामिक सेपरेटर (१०) आर्क व्यू जी आई एस एवं रिमोट सेंसिंग उपकरण। (११) एक्स.आर.डी. (१२) जीपीएस एवं सर्वे उपकरण (१३) इलेक्ट्रानिक बैलेंस (१४) रिफ्लेक्टैंस मेजरमेंट फोटोमेट्री सिस्टम (१५) पेट्रोलियम सिस्टम माडलिंग एडवान्स्ड साफ्टवेयर। इन्टरनेट की सुविधा सभी कक्षाओं एवं प्रयोगशालाओं में उपलब्ध कराई जा रही है। प्रयोगशाला की यह सुविधा विभाग के विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य विभागों के शोधार्थियों हेतु भी उपलब्ध है।

केन्द्रीय सुविधाओं के अंतर्गत जिरॉक्स मशीन, प्लाटर, स्कैनर, प्रिंटर, सर्वर आदि की व्यवस्था उपलब्ध है। विभागाध्यक्ष के कमरे में फैक्स की सुविधा भी उपलब्ध है तथा टाटा इंडिकाम की सुविधा विभाग के प्रत्येक शिक्षक तथा प्रयोगशाला, लाइब्रेरी, म्यूजियम, ऑफिस तथा स्टोर में उपलब्ध है। यह प्रयास भी किया जा रहा है कि केन्द्रीय

माइक्रोस्कोप की सुविधा प्रत्येक शिक्षक, शोधकर्ता तथा परास्नातक विद्यार्थियों के लिए हो जाए। एक नये शिक्षक संगोष्ठी कक्ष को उन्नत किया गया है। नये एक्स.आर.डी. तथा जियोकेमेस्ट्री प्रयोगशाला का निर्माण किया गया है।

भूगोल विभाग

भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, भारत ही नहीं अपितु कुछ हद तक एशिया का विशालतम् एवं प्रतिष्ठित संस्थान है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भूगोल का अध्यापन इण्टरमीडिएट स्तर पर स्वर्गीय प्रोफेसर राजनाथ की अध्यक्षता में भौमिकी विभाग में आरम्भ किया गया। एक स्वतंत्र एवं पूर्ण विकसित रूप में भूगोल विभाग १९ अगस्त १९४६ (सोमवार, भाद्रपद कृष्ण सप्तमी संवत् २००३,जन्माष्टमी) को प्रोफेसर हरवंश लाल छिब्बर (१८९९-१९५५) की प्रथम विभागाध्यक्षता के रूप में सृजित किया गया।

अपनी प्रतिष्ठा एवं सुविधाओं के बल पर यह विभाग देश के सभी हिस्सों तथा विदेश, जैसे जापान, ईरान, नेपाल, थाईलैण्ड, बांग्लादेश, नाईजीरिया, केन्या, वेस्ट इण्डीज, भूटान इत्यादि से शिक्षार्थियों को आकर्षित करता रहा है। अपने ६९ वर्ष के यशस्वी अस्तित्व के दौरान विभाग ने भारत पर किये गये भौगोलिक अध्ययनों में अपने योगदान के आधार पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पहचान प्राप्त किया है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP),दि थर्ड वर्ल्ड एकेडमी ऑफ सांइसेज् (TWAS), इटली; तथा बीद्रपीद्र कोईराला इंडो-नेपाल फाउन्डेशन द्वारा प्रायोजित १९९५ में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी इस दिशा में एक असाधारण सफलता है। विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा औसतन प्रतिवर्ष लगभग एक से दो पुस्तकों तथा १०-१५ शोध पत्रों का प्रकाशन होता रहा है। साथ ही एक से दो संकाय सदस्य प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों/विदेशी कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं।

शोध सुविधाओं का विवरण

भूगोल विभाग में छः प्रयोगशालायें भी है: (१) सर्वेक्षण प्रयोगशाला, थीयोडोलाइट, डम्पी लेवल, प्रिज्मीम कम्पास, इत्यादि युक्त; (२) पर्यावरणीय प्रयोगशाला जिसमें मृदा व जल परीक्षण सचल किट्, मफ्फल फर्नेस, बी. ओ. डी. इन्क्यूबेटर, ध्वनि प्रतिचयक, उच्च तापीय फ्लेम फोटोमीटर तथा स्पेक्ट्रो फोटोमीटर, इत्यादि है; (३) मानचित्रण प्रयोगशाला, दूरबीनयुक्त दपर्ण स्टीरियोस्कोप, इत्यादि युक्त (४) भू-सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) प्रयोगशाला जिसमें आर्क इंफो (यू.एल.के. किट्), ई.एन.व्ही.आई. इमेज प्रोसेसिंग साफ्टवेयर (लगभग रू. १० लाख मूल्य), ४०''स्कैनर, ए.ओ.साईज प्रिन्टर, उच्च रिजल्यूशन युक्त मोनिटर, मल्टी-मीडिआ प्रोजेक्टर, तथा १५ कम्प्यूटरों का नेटवर्क सेट (लगभग रू. २० लाख मूल्य); (५) संगणक प्रयोगशाला इंटरनेट सुविधा-युक्तहार्डवेयर एवं जिरोक्स सुविधा युक्त; (६) पी.जी.कम्प्यूटर प्रयोगशाला जिसमें स्नातकोत्तर शिक्षार्थियों एवं शोध छात्र-छात्राओं हेतु कम्प्यूटर्स, प्रिंटर्स, स्कैनर्स, इंटरनेट की सुविधा है।

भू- भौतिकी विभाग

सत्र २०१४-१५ में कुछ छात्रों को विभिन्न सरकारी, अर्धसरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में नियुक्तियाँ मिली एवं कुछ छात्रों ने एन.ई.टी./जी.ए.टी.ई. परीक्षा उर्त्तीण की। पूर्व की भाँति मौसम विज्ञानी आँकड़े, भूकम्पीय आँकडे एवं ओजोन संबन्धित आंकडों के लिए भारत सरकार की संस्था आई.एम.डी. के साथ विभाग ने सहयोग किया है। सत्र के कई छात्र अपने परास्नातक स्तर के शोध के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में गये एवं शोध ग्रंथ को पूर्ण किया।

भू-भौतिकी विभाग भारत सरकार के भारत मौसम विज्ञान विभाग के साथ मिलकर एक मौसम वेधशाला, एक भूकम्प वेधशाला, एक ओजोन प्रयोगशाला का संचालन करता है एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड के साथ प्राथमिक आंकड़ों के लिए पीजोमीटर टैप का संचालन करता है। भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान के साथ मिलकर पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सी.ए.आई.पी.ई.ई.एक्स. कार्यक्रम के लिए वर्षाजल के रसायनिक शोध दर के अध्ययन पर कार्य करता है।

विभाग के विभिन्न शिक्षकों का शोधकार्य मुख्यत: निम्नलिखित विषयों से संबंधित है:

- भविष्य की जलवायु का आकलन।
- भारत में भूकम्प के स्वरूप एवं भविष्य के भूकम्प के स्थान का आकलन।
- हिन्द महासागर की ऊर्जा एवं इसका भारतीय मानसून पर प्रभाव।
- गंगा के मैदानी क्षेत्र के एरोसोल आप्टिकल गुणों का अध्ययन।
- शीतकाल में पश्चिम विक्षोभ की ऊर्जा का आकलन।

शोध सम्बन्धित सुविधाएँ

विभाग के शोधकार्य मुख्यत: विभिन्न संबन्धित विषयों के आकलन, एकत्र किये गये आंकड़ों के अध्ययन एवं माडलिंग अथवा स्वयं एकत्र किये गये आंकड़ों के अध्ययन से संबन्धित है। इन कार्यो के लिए संगणक एवं इंटरनेट की सुविधाओं को प्रदान किया गया है।

गृह विज्ञान

गृह विज्ञान विषय ज्ञान का एक अन्त:विषयक क्षेत्र है। गृह विज्ञान विभाग की स्थापना १९७५ में हुई थी। उसके बाद १९८४ में परास्नातक तीन विशेष क्षेत्रों एम.ए./एम.एस.सी. गृह विज्ञान (आहार एवं पोषण) (प्रसार एवं संचार) और (गृह प्रबन्ध) में प्रारम्भ किया गया । कुछ समय उपरान्त गृह प्रबन्ध विषय विशेषज्ञ की सेवा निवृत्ति के कारण बन्द कर दिया गया। इन्ही क्षेत्रों में पी.एचडी. कार्यक्रम शुरू किया गया था जो निरन्तर सफलतापूर्वक चल रहा हैं । हालाकि शिक्षण और शोध के उद्देश्य से यह कई एलाइड विषयों से जुड़ा हुआ है जैसे इस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर सांइस, इस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस और फैकल्टी ऑफ साइंस इत्यादि मुख्य हैं।

- गृह विज्ञान में परास्नातक स्तर पर उच्चतम अंक प्राप्त, एक छात्रा को चांसलर मेडल प्रदान किया गया।
- एम.ए./एम.एस.सी. चौथे सेमेस्टर गृह विज्ञान (प्रसार एवं संचार प्रबन्ध) २०१४ की छात्राओं ने किसान मेला जो कि ७-८ मार्च २०१४ को था उसमें बढ़ चढकर भाग लिया और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

- यहाँ विभाग में पाँच शिक्षिकाएँ शिक्षण एवं शोध कार्य में जुडी हुई हैं, पिछले एक वर्ष में सात राष्ट्रीय और सात अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र छप चुके हैं। तीन राष्ट्रीय पुस्तक और एक अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकें छप चुकी हैं। विभाग की वारिष्ठ शिक्षिकाएँ भारत के कई स्थानों पर बतौर चयन कमेटी की विशेषज्ञ, कान्फ्रेस में चेयरिंग सेशन के तौर पर तथा कांन्फ्रेंस और वर्कशाप में मुख्य वक्ताओं के रूप में सक्रिय रही हैं।
- विभाग में शोध के लिए उपकरणों से युक्त पूर्ण प्रयोगशाला है। गृह विज्ञान में छात्राओं को अन्त:विषयक गुणात्मक शोध करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैं।
- इस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर सांइस द्वारा व्यवस्थित किये गये किसान मेला में स्नातक तथा परास्नातक दोनों कक्षाओं की छात्राओं ने भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किया।
- विभाग की दो प्रयोगशाला को पुनर्सज्जित किया गया।

अन्तर्विषयी जीव विज्ञान स्कूल

अन्तर्विषयक जीवन विज्ञान स्कूल (आईएसएलएस) विज्ञान संकाय में स्थापित किया गया है। स्कूल २३.८९ करोड़ रुपये के अनुदान द्वारा जैव प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली से ५ वर्ष के लिए समर्थित है। स्कूल का उद्देश्य जीवन विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तर इंटरैक्टिव अंत:विषय अनुसंधान को बढ़ावा देना है। जीवन विज्ञान स्कूल में सात प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की गई है- संरक्षण जीव विज्ञान, रोग जीव विज्ञान, कार्यात्मक जीनोमिक्स, सूक्ष्म पारिस्थितिकी, तंत्रिका जीव विज्ञान, प्रजनन जीव विज्ञान और तनाव जीव विज्ञान। अनुदान का उपयोग भवन के बुनियादी ढ़ाचे (इंफ्रास्ट्रक्चर) और उपकरण विशेष क्षेत्रों में नए कर्मचारियों की नियुक्ति बढ़ाने अंत:विषय अनुसंधान की शुरुआत और जीवन विज्ञान में एक नया शिक्षण एमएससी व पी.एचडी. कार्यक्रम शुरू करने के लिए किया जा रहा है।

उपकरण : आधुनिकतम उपकरण जैसे - प्रोटिओमिक सुविधा, माइक्रोएरे, प्रतिदीप्ति सक्रिय कोशिका छंटनी (एफ.ए.सी.एस.), आईसीपी स्पेक्ट्रोमीटर, अल्ट्रासेन्ट्रीफ्यूज, वास्तविक समय पीसीआर, उच्च प्रदर्शन तरल क्रोमैटोग्राफी (सी.पी.एल.सी.), फास्ट प्रोटीन तरल क्रोमैटोग्राफी (एफ.पी.एल.सी.), भास्वर इमेजर (फास्फर इमेजर), लाइव इमेजिंग सिस्टम, माल्ड़ी प्रणाली आदि उपकरण प्रायोगिक काम में भारी सुधार लाने के लिए खरीदे गये हैं। जैव प्रौद्योगिकी स्कूल के पास के क्षेत्र में अन्तर्विषयक जीवन विज्ञान स्कूल (आइ.एस.एल.एस.) इमारत का निर्माण किया गया है।

गणित विभाग

गणित विभाग सन् १९१६ में स्थापित हुआ और इसका एक सुविख्यात अतीत है। यह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्द्ध गणितज्ञों, शोधकर्ताओं एवं अध्यापकों द्वारा अभिसिंचित रहा है। अपने १७ अध्यापक गणों के साथ विभाग ने वर्ष २०१४ - १५ के दौरान महत्वपूर्ण विकास किया है। अध्यापकों, शोध छात्रों एवं पोस्ट डाक्टोरल फेलो की सक्रिय भागीदारी के कारण विभाग ने वर्तमान सत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य ६१ से अधिक शोध पत्रों एवं १ पुस्तक का प्रकाशन किया है। विभाग में इस वर्ष 'माडलिंग एण्ड सिमुलेशन आन डिफयूसिव प्रासेसेस एण्ड इट्स एप्पलीकेशन' पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं गणितीय समिति, का.हि.वि.वि. के ३०वें वार्षिक सम्मेलन 'मैथेमेटिकल एनालिसिस एण्ड एप्पलीकेशन' का आयोजन किया। विभाग नियमित रूप से लगभग २२०० छात्रों के लिए बी.एससी./बी.ए. (आनर्स), एम.एससी./ एम.ए.एवं शोध स्तर के पाठ्यक्रमों का क्रियान्वयन कर रहा हैं। हमारे कई स्नातकोत्तर एवं शोध छात्र लगातार राष्ट्रीय स्तर पर छात्रवृत्ति /फेलोशिप प्राप्त कर रहे हैं।

वर्तमान में विभाग में ३६ शोध छात्र एवं ०६ पोस्ट डाक्टोरल फेलो कार्य कर रहे हैं।

छात्रों हेतु उपलब्ध शोध सुविधाएं : विभागीय पुस्तकालय, स्नातक संगणक प्रयोगशाला ३१-यूजर मैथेमेटिका सुविधा के साथ, स्नातकोत्तर संगणक प्रयोगशाला, शोध छात्रों हेतु इन्टरनेट सुविधाओं से युक्त संगणक प्रयोगशाला। विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने हेतु फोटोकापीयर, नेटवर्क प्रिन्टर और दो लैपटाप सहित ४ एलसीडी प्रोजेक्टर।

भौतिकी विभाग

इस वार्षिक प्रगति पत्र में विभाग के शिक्षण सम्बन्धी कार्यों का ब्योरा दिया जा रहा है जिसमें मुख्य रुप से बी.एससी. एवं एम.एससी. शिक्षण कार्य हैं।

वर्तमान में इस विभाग में निम्न विषयों पर शोध कार्य चल रहा है : नैनो साईस एवं नैनो टेक्नालाँजी, हाईड्रोजन एकत्र करने का पदार्थ, डीएनए डीनेचुरेसन, पालीमर एवं प्रोटीन फोल्डिगं, लिक्विड क्रिसटल, क्वार्क ग्लूवान प्लाज्मा, लेसर स्पेक्ट्रोस्कोपी, वायोमॉलिक्यूल का स्ट्रक्चर, एट्मॉस्फेरिक्स साईस, एटामिक फिजिक्स एवं वाइब्रेसनल डीफेलिंग, उच्च ताप सुपरचालक, कोलोसल मैगनाइटस एवं अमारफस पदार्थ, लेजर ग्लासेस, अल्ट्रासॉनिक गेज सिद्धांत, ऑप्टिकल फाइबर, फील्ड सिद्धांत।

बी.एससी. एवं एम.एससी. में नये पाठ्यक्रम शुरु किए गए हैं : विज्ञान एवं प्राद्यौगिक विभाग द्वारा गठित सैद्धांतिक व्याख्यानमाला तथा भारतीय भौतिकी संगठन, स्थानीय वाराणसी पाठ में लगातार व्याख्यान होते रहते हैं। दर्जनों ख्याति प्राप्त भौतिक विद् विभाग में आकर व्याख्यान देते है और शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से मंत्रणा करते रहते हैं।

विभाग द्वारा भौतिकी में एम.एससी., स्पेट्रोस्कोपी एम.एससी. में डिप्लोमा और रिर्सच कोर्स की उपाधि प्रदान की जाती है।

सांख्यिकी विभाग

सांख्यिकी विभाग उन अध्ययन विभागों में से एक है जो एक से ज्यादा संकाय (जैसे विज्ञान संकाय, कला संकाय, सामाजिक विज्ञान संकाय) की आवश्यकताओं को पूरा करता है। स्नातक स्तर पर दो प्रकार के पाठ्यक्रम सांख्यिकी अनुप्रयुक्त और व्यवहारिक सांख्यिकी पाठ्यक्रम के अंतर्गत विज्ञान, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के छात्रों द्वारा प्रस्तावित किया जाता है। सांख्यिकी में तथ्यों और सांख्यिकी विधियों के सैद्धांतिक विकास पर मुख्य रूप से महत्व दिया जाता है। जबकि अनुप्रयुक्त सांख्यिकी में पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञान संकाय के छात्रों के लिए निर्मित किया गया है। इसमें विभिन्न सांख्यिकीय साधनों के उपयोग और उपयुक्त चयन पर मुख्य ध्यान दिया जाता है जिसे

प्रायोगिक समस्याओं के साख्यिकीय विशेषण में उपयोग किया जाता है। सैद्धांतिक प्रश्नपत्रों के अतिरिक्त प्रायोगिक प्रशिक्षण उचित सांख्यिकीय तकनीकि का उपयोग व्यवहार में स्नातक और परास्नातक स्तर के पाठयक्रमों में प्रायोगिक प्रश्नपत्र के रूप में उपयोग किया जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदेशों के अनुसार चार सेमेस्टर (छ:माही) परास्नातक कार्यक्रम विभाग में २००६ से पूर्ण रूप से संशोधित पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है जो कि २०१५ में पूर्ण रूप से संशोधित किया गया। स्नातक और परास्नातक दोनों पाठ्यक्रमों में संक्षिप्त प्रायोगिक प्रशिक्षण परियोजना कार्य के रूप में दिया जाता है।

सामान्य पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विभाग में विभिन्न संकायों के छात्रों के लाभ के लिए प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम भी उन छात्रों के लिए चलाया जाता है जो कि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग अपने शोधकार्य में करना चाहते है। विभाग में २०१४-१५ में दूसरे विभागों के शोध छात्रों के लिए एक स्ववित्तपोषित सांख्यिकी और संगणन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य दूसरे संकाय के शोध छात्रों के लिए सांख्यिकी में गणना एवं विशलेषण सम्बन्धी अनुभव प्रदान करना है।

विभाग के सदस्य सांख्यिकी पाठ्यक्रम को अन्य विभागों जैसे- गृहविज्ञान, जैवप्रौद्योगिकी, संगणक विज्ञान, जैव सूचना विभाग, पर्यावरण विज्ञान इत्यादि में पढ़ाते है। विभाग के सदस्य अन्य संकायों और विभागों के शोध छात्रों को मुफ्त सलाह उनके आंकड़ों के उचित सांख्यिकी विश्लेषण हेतु देते रहते हैं।

शोध गतिविधियाँ

विभाग में शोध गतिविधियाँ संतोषजनक रूप में विभिन्न क्षेत्रों सांख्यिकीय निष्कर्ष, जीवन परीक्षण और विश्वसनीयता, बेसियन निष्कर्ष, प्रतिचयन सिद्धांत, माडलीकरण और जनसंख्या अध्ययन में सुचारु रूप से प्रतिपादित हो रही हैं। औसतन ५०-६० शोधपत्र विभाग में शोध छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। कुछ परियोजनाएँ हालही में विभाग द्वारा पूर्ण की गयी हैं। विभाग में सम्मेलन, संगोष्ठी और कार्यशाला लगातार संचालित किये जाते हैं। एक नयी मुख्य शोध परियोजना विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संस्तुत की गई है। इस अनुदान की संस्तुति राशि ५९७५० डॉलर है जो कि २०१३-१४ में पूर्ण की गई।

सांख्यिकी एवं संगणन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम २०१४-१५ से विभाग में सांख्यिकी एवं संगणन विषय में अन्य विभागों के शोध छात्रों हेतु लागू किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य उन सभी शोध छात्रों को सांख्यिकी विशलेषण एवं संगणन में ज्ञान प्रदान करना है।

अन्य विभागों को अध्यापन सहयोग प्रदान करना

पूर्व वर्षो की भांति विभाग के सदस्यों ने विश्वविद्यालय के अन्य विभागों जैसे, संगणक विज्ञान विभाग, गृह विज्ञान विभाग जैव प्रौद्योगिकीय स्कूल, जैव सूचना विज्ञान विभाग, वाणिज्य संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान के स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रम सांख्यिकी विषय एंव संगणक विज्ञान पर आधारित विषयों में सहयोग प्रदान किया।

विस्तृत एवं लघुस्तरीय सर्वेक्षण और शोध परियोजनाओं का आयोजन : स्नातक और परास्नातक उपाधि के आंशिक पूर्ति हेतु लगभग १०० लघुस्तरीय शोध परियोजनाएं स्नातक व परास्नातक छात्रों द्वारा विभाग में आयोजित की गयी। ८० से अधिक परियोजनाएँ स्नातक छात्रों द्वारा एवं ५० से अधिक परियोजनाएं परास्नातक छात्रों द्वारा जमा किया गया। ये सभी लघुस्तरीय परियोजनाएँ विभाग के सदस्यों द्वारा संरक्षित एवं निर्देशित की गयीं।

आणविक एवं मानव अनुवंशिकी विभाग

आणविक एवं मानव आनुवंशिकी विभाग (स्थापना वर्ष-२००४) अपने पाँच शिक्षकों के साथ एक विलक्षण विषय का पठन-पाठन सफलतापूर्वक कर रहा है, जिसमें विज्ञान संकाय के अन्य विभागों के शिक्षकों के साथ-साथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान के शिक्षकों की भी मदद ली जाती है।

इस वर्ष २२ विद्यार्थियों (द्वितीय वर्ष) में से ०८ विद्यार्थियों ने गेट, ०३ विद्यार्थियों ने डी.बी.टी. नेट-जे.आर.एफ., ०३ विद्यार्थियों ने नेट-जे.आर.एफ. तथा ०१ विद्यार्थी ने नेट-एल.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण किया। हमारे विभाग में एम.एससी. तथा शोध विद्यार्थियों के लिये अलग-अलग सुसज्जित प्रयोगशालायें है। शोध के लिये आवश्यक सभी मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ प्रयोग के लिये सभी उपकरण उपस्थित हैं। साथ ही साथ विभाग में एक सार्वजनिक प्रयोगशाला भी सभी मूलभूत सुविधाओं के साथ एम.एससी. तथा शोध विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध है।

विद्यार्थियों को दी गयी सुविधाएँ

हास्टल, पुस्तकालय तथा सुसज्जित प्रयोगशाला की सुविधायें उपलब्ध हैं। विभाग में इण्टरनेट सुविधा के साथ १० कम्प्यूटर छात्रों के उपयोग के लिये उपलब्ध हैं।

जन्तु विज्ञान विभाग

विभाग में पूर्ण विकसित शोध प्रयोगशालाएँ, केन्द्रीयकृत उपकरण प्रयोगशाला, इन्टरनेट सुविधायुक्त संगणक कक्ष एवं नेटवर्क युक्त प्रयोगशालाएँ एवं व्याख्यान कक्ष स्थापित है। विभाग फिस्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत आधारभूत सुविधाओं को विकसित करने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग से अनुदान प्राप्त कर चुका है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से पुनरीक्षण समिति ने विभाग का निरीक्षण किया और पूर्व अवस्था की प्रगति का पुनरीक्षण किया। विभाग द्वारा की गयी अच्छी प्रगति को देखते हुए समिति ने विभाग में उच्चानुशीलन केन्द्र कार्यक्रम को जारी रखने की स्वीकृति दी। विभाग ने पंचम अवस्था का द्वितीय वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण किया है और प्रगति का पुनरावलोकन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सलाहकार समिति द्वारा किया जा चुका है। वर्तमान में डी.एस.टी. (प्रावस्था-२) कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है।

विभाग में विगत वर्ष ४ जून, २०१४ को एक उपभवन का शिलान्यास हुआ और अब यह यहाँ बी.एससी.व एम.एससी. कक्षाएँ व प्रायोगिक कार्य में अपनी पूरी क्षमता से कार्यरत हैं। इसी वर्ष हमारे विभाग के २ प्रयोगशाला परिचालकों ने 'हिन्दी स्लोगन लेखन' में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। विभाग अपने बगीचे व हरियाली को सुन्दर रखने के लिये सदैव प्रयासरत रहा। जिसके तहत वर्ष २०१४ में विभाग को पुष्प प्रदर्शनी में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी वर्ष विभाग में ५ स्पेशल पेपर हेतु कक्षायें निर्मित हुयी।

शोध

विभाग के अध्यापक जैव रसायन, कोशानुवांशिकी, पुनरूत्पत्ति जीव विज्ञान व अन्तरासर्ग विज्ञान, पारस्थिकायिकी, जैव सांख्यिकी और कालक्रम जीव विज्ञान (क्रोनोबायोलॉजी) के व्यापक क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। ४१ शोध परियोजनाएं विभाग में सुचारु रुप से सम्पादित हो रही हैं जिनकी अनुमानित लागत १०६८.०० लाख है।

विद्यार्थियों के लिए सुविधा

छात्रों की सुविधा के लिए छात्रावास, पुस्तकालय व वाचनालय, सुसज्जित शोध प्रयोगशाला व अन्य सामान्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं। नेटवर्किंग सुविधा से सम्पन्न एक केन्द्रीय संगणक कक्ष स्थापित किया गया है, जो कि शोध छात्र/छात्राओं, स्नातकोत्तर एवं स्नातक तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों की शिक्षा के उपयोग के लिये है। कम्प्यूटर सेन्टर की सुविधा विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है।

संकाय द्वारा आयोजित पन्द्रहवाँ प्रो. एस.पी. राय चौधरी स्मृति व्याख्यान शृंखला

जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा २५-२७ फरवरी, २०१५ को 'प्रजनन जीव विज्ञान एवं तुलनात्मक अंतःस्रावी विज्ञान' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद के अवसर पर कुलपति द्वारा पुस्तिका का विमोचन

२.१.२.८. सामाजिक विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संकायों में से समाज विज्ञान संकाय- एक प्रमुख संकाय है। जिसने शैक्षणिक शोध एवं प्रसार के संदर्भ में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ से उच्च गुणवत्ता का शोध पत्र प्रकाशन, प्रकाशित शोध कार्यों का संदर्भन, संकाय के शिक्षकों द्वारा शोध परियोजना धनराशि को प्राप्त करना और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन सहित अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ समाज विज्ञान संकाय की शैक्षणिक उत्कृष्टता के साक्ष्य हैं। संकाय ने सार्थक शैक्षणिक प्रगति की है जो प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या, विभाग और केन्द्रों की संख्या, पाठ्यक्रमों में विविधता और प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा कैरियर एडवांसमेंट के द्वारा प्रमाणित होता है। विभाग ने एक लम्बी यात्रा की और पिछले सौ वर्षों के दौरान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के तथ्यपरक विकास का एक दल और साक्षी रहा है।

हालांकि संकाय के कुछ विभाग (अर्थशास्त्र एवं इतिहास- १९१८, राजनीति विज्ञान विभाग- १९२९) विश्वविद्यालय के शुरुआती दौर में बनाये गये, अन्य (मनोविज्ञान- १९४९ और समाजशास्त्र- १९६६) के बाद में जोड़े गये। बाद में सन् १९७१ में कला संकाय से अलग कर संकाय को पाँच विभागों के साथ स्थापित किया गया। यह सौभाग्य की बात है कि इसके भविष्य निर्माण के स्थापना वर्षों में ऐसे विद्वान, समर्पित और व्यवहारिक अध्येताओं और शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शित किया गया जो उभरते क्षेत्रों की विविधताओं की मांग और शिक्षण के अवयवों के रूप में अनुसंधान की आवश्यकताओं को समझते थे। सन् १९७६ में नेपाल अध्ययन केन्द्र (सी.एस.एन.) को सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत में एक सबसे पुराने क्षेत्र अध्ययन केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया। वर्तमान में सी.एस.एन. के साथ ही संकाय में चार केन्द्र जिनके नाम- मालवीया सेन्टर फॉर पीस रिसर्च (एम.सी.पी.आर.), सेन्टर फॉर वोमेन्स स्टडी एण्ड डेवलपमेंट (सी.डब्ल्यू.एस.डी.), सेन्टर फॉर स्टडी ऑफ सोशल एक्सक्लूजन एण्ड इन्क्लूसिव पॉलिसी (सी.एस.एस.ई.आई.पी.) और सेन्टर फॉर इंटीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट (सी.आई.आर.डी.) हैं। सन् २०१०-११ में यूनेस्को चेयर फॉर पीस एण्ड इन्टर कल्चरल अण्डरस्टैंडिंग टू द एम.सी.पी.आर. संकाय के सिरमौर की तरह है और नैक द्वारा ''एक उत्तम अभ्यास'' के रूप में पहचान दी गयी।

पाठ्यक्रम/ कार्यक्रम

अध्यापन किये गये पाठ्यक्रम/कार्यक्रम- समय की विविधताओं के साथ संकाय के विभागों और केन्द्रों ने कई एक व्यावसायिक और विशेषज्ञता पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया। पारस्परिक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अलावा संकाय में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों जैसे एम.ए. (पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन), मास्टर इन परसोनल मैनेजमेंट एण्ड इन्डस्ट्रियल रिलेशन्स, एम.ए. (सोशल वर्क) और कौन्सलिंग और

साइकोथिरेपी कौन्सलिंग गाइडेन्स व साइको में इन्टरवेन्सन, कान्फ्लिक्ट मैनेजमेंट एण्ड डेवलपमेंट, जेन्डर एण्ड वोमेन्स स्टडीज में भी स्नातकोत्तर डिप्लोमा चलाये जाते हैं।

इस संकाय में मास्टर इन कान्फ्लिक्ट मैनेजमेंट एण्ड डेवलपमेंट, इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट एण्ड वोमेन स्टडीज जैसे कुछ एकमात्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गये।

- पाठ्यक्रम विकसित करने की प्रणाली यहाँ पर पाठ्यक्रमों के निरन्तर अद्यतन करने की प्रणाली है जो छात्रों और उद्योगों से मिले सुझावों/विचारों तथा शिक्षकों और अन्य संस्थानों के शिक्षण विशेषज्ञों से मिले प्रेरणा के आधार पर किया जाता है। इस वर्ष अनेक विभागों और केन्द्रों द्वारा अपने पाठ्यक्रमों को अद्यतन किया गया और विभाग स्तर पर विस्तृत विचार-विमर्श के बाद उसे विचार और संस्तुति के लिए संकाय को प्रेषित किया गया।
- छात्रों के सम्पूर्ण विकास के लिए सबके लिए कार्यक्रम संकाय के छात्रावासों के साथ मिलकर इस संकाय ने सम्पूर्ण शिक्षण के सम्पूर्ण विकास के लिए अनेक व्याख्यान और कार्यक्रम आयोजित किये गये। वर्ष २०१४-१५ में ऐसे कार्यक्रमों की संख्या बढ़ गयी

शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन

यह संकाय शैक्षणिक गतिविधियों का केन्द्र है। छात्रगण एवं अनुसंधानकर्ताओं को नियमित रूप से संगोष्ठियों, परिसंवादों और कार्यशालाओं के माध्यम द्वारा बाहरी विशेषज्ञों और अनुसंधानकर्ताओं के साथ शैक्षणिक विचार-विमर्श कराया जाता है।

व्याख्यान

संकाय के विभाग और केन्द्र विद्वानों और शिक्षाविदों के व्याख्यान अभिव्यक्ति करते रहते हैं। शैक्षणिक वर्ष के अन्तर्गत आयोजित व्याख्यानों की सूची देना व्यावहारिक रूप से असम्भव है। इस रिपोर्ट में व्याख्यानों की प्रकृति के उदाहरण के तौर पर उनमें से कुछ का वर्णन किया जा रहा है-

- १० फरवरी २०१५- प्रो. यूइफ मेल्स्ट्राम, प्रोफेसर ऑफ जेन्डर स्टडीज, कर्लस्टाड विश्वविद्यालय, स्वीडेन द्वारा ''मैस्कुलिनिरी स्टडीजः एन इन्ट्रोडक्शन एण्ड ओवरव्यू'' पर विशिष्ट व्याख्यान दिया गया।
- ३ नवम्बर २०१४- जेसिका इरिक्सॉन, अध्यक्ष, भाष विज्ञान, साहित्य और अन्तर्सांस्कृतिक अध्ययन विभाग कर्लस्टाड विश्वविद्यालय, स्वीडेन द्वारा ''डेवलपमेंट ऑफ वोमेन्स परसोनल राइटिंग्स इन नार्दन यूरोप'' पर विशिष्ट याख्यान दिया गया।
- २ अप्रैल २०१४- राजनीतिशास्त्र विभाग द्वारा अनिल कुमार मिश्र झुन्ना फाउन्डेशन, वाराणसी के साथ मिलकर वर्ष २०१४ का आम चुनाव- वाराणसी संसदीय क्षेत्र की दशा दिशा पर व्याख्यान।
- ९-११ अप्रैल २०१४- प्रो. करेन एस. बुड्डु, मनोविज्ञान विभाग, डी पॉल विश्वविद्यालय, शिकागो, यू.एस.ए. द्वारा तीन दिवसीय व्याख्यान शृंखला प्रस्तुत की गयी।
- १७ नवम्बर २०१५- सुश्री मारित्स सफ्दार एच. हसनखाल (संकाय शिक्षक, एन्टोन डी कॉम विश्वविद्यालय, परामारिबो और पूर्व गृह मंत्री, सूरीनाम) द्वारा डायस्पोरा स्टडीज, विदेशिया, द इंटरनेशनल रिसर्च एण्ड एक्जिविशन प्रोजेक्ट ऑन हिन्दुस्तानी माइग्रेशन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, जो पूर्वोत्तर भारत के सुरीनाम और नीदरलैंड, इतिहास विभाग के भोजपुरी/हिन्दुस्तानी लोगों की कहानियाँ और माइग्रेशन स्मृतियों पर व्याख्यान दिया गया।
- १३ अक्टूबर २०१४- प्रो. हरे राम तिवारी, आई.आई.टी., खड़गपुर, सी.एस.एस.आई.पी. द्वारा ''ग्लोबेलाइजेशन एण्ड सोशल एक्सक्लूजनः इन्टेरोगेटिंग द पर्सपेक्टिव ऑन डेवलपमेंट इन इंडिया'' पर व्याख्यान दिया गया।
- १७ अक्टूबर २०१४- डॉ. अजीत जायसवाल, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, सी.एस.एस.आई.पी. द्वारा 'एन्थ्रोपोलॉजी ऑफ हेल्थ' और 'कास्ट सिस्टमः एन एन्थ्रोपोलॉजी स्किल विजन' पर व्याख्यान दिया गया।
- १८ दिसम्बर २०१४- सुश्री माग्रेट विडेन्हॉफ्ट, कालामाजो कालेज ऑफ लिबरल आर्ट्स, यू.एस.ए., सी.एस.एस.आई.पी. द्वारा इन्टरनेशनेलाइजेशर ऑफ हायर एजुकेशन'' पर व्याख्यान दिया गया।
- १८ फरवरी २०१५- प्रो. आके सैन्डर, यूनिवर्सिटी ऑफ गोथेनबर्ग, स्वीडेन, सी.एस.एस.आई.पी. द्वारा ''मेथेडोलॉजी एण्ड रेलिवेन्स ऑफ रीलिजियस स्टडीज'' पर व्याख्यान दिया।

अन्य कार्यक्रम

वर्ष २०१४-१५ के दौरान संगोष्ठियों, कार्यशालाओं आदि के अतिरिक्त संकाय के केन्द्रों द्वारा अनेक अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

- ११ नवम्बर २०१४, सेन्टर फॉर सोशल रिसर्च, नई दिल्ली, सी.एस.आर., सी.डब्ल्यू.एस.डी. के साथ मिलकर ''बीजिंग+२० ग्लोबल रिव्यू'' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्रसार कार्यक्रम

आम लोगों के बीच शोध उपलब्धियों को पहुँचाने के उद्देश्य से समाज विज्ञान संकाय ने अनेक प्रसार गतिविधियाँ सम्पन्न किये। वर्ष २०१४-१५ के दौरान इस प्रकार की अनेक प्रसार गतिविधियाँ आयोजित की गयी। यहाँ पर उनमें से कुछ को दिया जा रहा है।

- महिला अध्ययन केन्द्र ने अनेक कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किये। इनमें सिलाई, महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्मिलित हैं।
- सी.डब्ल्यू.एस.डी. ने अमरा गाँव को गोद लिया।
- सेन्टर फॉर इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट ने एक वनौषधि कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न किया।
- संकाय के सी.एस.एस.ई.आई.पी. और एन.एस.एस. किंग ने एक गाँव गोद लिया।

- आचार्य नरेन्द्र देव छात्रावास ने दो प्राथमिक स्कूलों को गोद लिया जहाँ छात्रावासी जाकर छात्रों को पढ़ाते हैं और उन्हें पुस्तकें और अध्ययन सामग्री प्रदान करते हैं।
- मनोविज्ञान विभाग के छात्र एक एन.जी.ओ. के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम चलाते हैं।
- मनोविज्ञान विभाग विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए एक परामर्श केन्द्र चलाते हैं।

प्रदत्त पी-एच.डी. उपाधियाँ

संकाय ने सदैव ही शोध छात्रों द्वारा गुणवत्तायुक्त शोध कार्यों के सृजन पर बल दिया है। यू.जी.सी. द्वारा शुरू की गयी पी-एच.डी. पाठ्यक्रम कार्य का शिक्षण किया जाता है और शोध छात्रों को क्षेत्र ज्ञान भी कराया जाता है। हालांकि गुणवत्ता नियंत्रण की काफी कड़ी प्रणाली रहने के बावजूद संकाय ने शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ के दौरान काफी संख्या में पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध बनाये हैं। इस अवधि में सभी विभागों और केन्द्रों द्वारा कुल मिलाकर ६० से अधिक पी-एच.डी. उपाधियाँ प्रदान की गयी, जिनमें से सबसे अधिक संख्या में अर्थशास्त्र (२१), उसके बाद राजनीति विज्ञान (१५) और फिर इतिहास, मनोविज्ञान तथा अन्य हैं। अनेक विभागों ने पी.डी.एफ. भी बनाये हैं। इनमें मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और इतिहास सम्मिलित हैं।

आधारभूत संरचना

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पास विपुल आधारभूत संरचनाएँ हैं और समाज विज्ञान संकाय भी विश्वविद्यालय के किसी भी अन्य संकायों से कम नहीं है। संकाय शिक्षकों के कक्ष डेस्क कम्प्यूटरों, प्रिन्टरों और इंटरनेट सुविधा से सुसज्जित है और अधिकांशत: कक्षाओं में एल.सी.डी. प्रोजेक्टर/सफेद बोर्ड लगे हैं। वर्ष २०१४-१५ के दौरान अनेक विभागों द्वारा इस प्रणाली (प्रोजेक्टर और मल्टीमीडिया) को लगवाया गया।

उपलब्धियाँ

- वर्ष २०१५: यूनेस्को (पेरिस) ने एक हितकारी समीक्षा के उपरान्त मालवीया सेन्टर फॉर पीस रीसर्च के यूनेस्को चेयर फॉर पीस और अन्तरसांस्कृतिक समझौते का नवीनीकरण किया।
- प्रो. प्रियंकर उपाध्याय को जनवरी से अगस्त २०१४ की अवधि के लिए डबलिन सिटी विश्वविद्यालय, आयरलैंड का आई.सी.सी.आर. चेयर प्रोफेसरशिप प्रदान किया गया।
- सत्र २०१४-१५ में लीनियस-पामे इन्टरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम, स्वीडेन द्वारा समाज विज्ञान शोध विधियाँ और क्षेत्रीय अध्ययन हेतु एम.सी.पी.आर. के शोधकर्ताओं के लिए दो अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये।
- संकाय के केन्द्रों की अन्य गतिविधियों में एक मुख्य कार्य अनियतकालीन शोध पत्रों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं की रिपोर्ट इत्यादि को प्रकाशित करना है। वर्ष २००३ से एम.सी.पी.आर. ने एक बार अन्तर्राष्ट्रीय सम्पादक मंडल के साथ ''जर्नल ऑफ कान्फ्लिक्ट मैनेजमेंट एण्ड डेवलपमेंट'' नाम का वार्षिक प्रकाशन कर रहा है।
- वर्ष जून २०१४ में दो अनुसंधानकर्ताओं को पीस रिसर्च इन्स्टीट्यूट, ओस्लो यूनिवर्सिटी ऑफ ओस्ला, नार्वे में ६ सप्ताह का एडवांस ट्रेनिंग प्रोग्राम हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति प्रदान की गयी।
- प्रो. आर.सी. मिश्रा (मनोविज्ञान विभाग) ने 'एडोल्सेन्ट डेवलपमेंट: इसूज एण्ड चैलेन्जेज' विषयक संगोष्ठी में मुख्य व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान मनोविज्ञान अनुसंधान इकाई, इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट कोलकाता में जनवरी २९-३०, २०१४ को सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही सेन्टर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन साइकोलॉजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा सितम्बर २१-२२, २०१४ तक आयोजित संगोष्ठी में ''सोशल एक्सक्लूजन एण्ड मेन्टल हेल्थ'' पर व्याख्यान दिया।
- प्रो. ए.पी. सिंह (मनोविज्ञान विभाग) ने २३-२४ जनवरी २०१५ को ५०वें नेशनल एण्ड इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑफ इंडियन एकेडेमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी में प्रो. सुल्तान अख्तर स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- प्रो. ए.पी. सिंह (मनोविज्ञान विभाग) को इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, २०१५ को ''फेलो'' प्रदान किया गया।
- डॉ. योगेश कुमार आर्य (मनोविज्ञान विभाग) द्वारा जुलाई ८-१३, २०१४ तक पेरिस डेस कांग्रेस-२, फेस डी ला पोर्टे मैल्लॉट, पेरिस (फ्रांस) में सम्पन्न २५वें इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी में सहभागिता की और शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. संदीप कुमार (मनोविज्ञान विभाग) द्वारा जुलाई ८-१३, २०१४ तक पेरिस डेस कांग्रेस-२, फेस डी ला पोर्टे मैल्लॉट, पेरिस (फ्रांस) में सम्पन्न २५वें इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी में सहभागिता की और शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. तुषार सिंह (मनोविज्ञान विभाग) ने जुलाई ८-१३, २०१४ तक पेरिस डेस कांग्रेस-२, प्लेस डी ला पोर्टे मैल्लॉट, पेरिस (फ्रांस) में सम्पन्न २५वें इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी में ''हेल्थ एण्ड वेलबींग'' पर एक परिसंवाद आयोजित किया।
- प्रो. के.के. मिश्र (अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग) ने वासुदेव शास्त्री पुरस्कार-२०१४ प्राप्त किया।
- प्रो. आर.आर. झा (राजनीति विज्ञान विभाग) ने विभिन्न राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं/ ओरिएन्टेशन/ रिफ्रेशर प्रोग्रामों में ०७ व्याख्यान प्रस्तुत किये।

सामाजिक विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित आचार्य नरेन्द्र देव जी की १२५वीं जन्म दिवस समारोह

श्री प्रकाश सिंह, पूर्व पुलिस महानिदेशक, उत्तर प्रदेश सरकार का 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सुरक्षा' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान

मनोविज्ञान विभाग द्वारा 'रिसेन्ट एडवान्सेस ऑन कॉग्निशन एण्ड हेल्थ' विषय पर १९-२१ दिसम्बर, २०१४ को आयोजित तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

२.१.२.९. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

संस्कृतभाषा विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसका वाङ्मय भारतीय संस्कृति के सभी अंगों की प्रामाणिक एवं व्यापक अभिव्यक्ति करता है। इस भाषा एवं साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व का अनुभव करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत कालेज (महाविद्यालय) की स्थापना सन् १९१८ में हुई थी। बाद में इसी का नामान्तर प्राच्यविद्या धर्मविज्ञान संकाय हुआ। वर्तमान में यह संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय के नाम से सुविख्यात है।

यह संकाय मुख्य रूप से प्राचीन शास्त्रों, संस्कृत भाषा और साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है। साथ ही इसका एक अन्य प्रयोजन पूर्व और पश्चिम में सार्थक संवाद स्थापित करना है।

यह संकाय अपनी प्रकृति में विलक्षण है। इसमें शास्त्रीय ग्रंथों का शब्दश: अध्ययन-अध्यापन प्राचीन पद्धति के अनुसार होता है। इसमें छात्रों का मौखिक और लिखित-उभयविध परीक्षण किया जाता है। इस संकाय को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के व्यापक परिवेश में आधुनिक चिंतन, विज्ञान और तकनीक से संवाद स्थापित करने का विशिष्ट अवसर प्राप्त है, क्योंकि इस प्रकार का व्यापक परिवेश भारत के अन्य किसी भी संस्थान में दुर्लभ है।

वर्तमान में इस संकाय के अन्तर्गत कुल आठ विभाग कार्यरत हैं- वेद विभाग, व्याकरण विभाग, साहित्य विभाग, ज्योतिष विभाग, वैदिकदर्शन विभाग, जैनबौद्ध दर्शन विभाग, धर्मशास्त्र मीमांसा विभाग एवं धर्मागम विभाग। इन विभागों में लगभग २३ विषयों का शिक्षण होता है तथा त्रिवर्षीय (छ: सेमेस्टर) शास्त्री सम्मान और द्विवर्षीय (चार सेमेस्टर) आचार्य उपाधियाँ दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त सभी विषयों में उच्चकोटि के अनुसंधान की सुविधा भी उपलब्ध है जिसके माध्यम से विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है। इन पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त धर्मागम विभाग के अन्तर्गत एकवर्षीय संस्कृत प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम तथा द्विवर्षीय 'डिप्लोमा इन शैवागम' पाठ्यक्रम भी संचालित होते हैं। इन पाठ्यक्रमों का भारतीय और विदेशी - सभी छात्र समान रूप से लाभ लेते हैं। वेद और ज्योतिष विभाग क्रमश: कर्मकाण्ड में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम और ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्र में द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। शोध सहित सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोधार्थियों के लिए छात्रवृत्ति एवं छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। संकाय का अपना स्वतंत्र पुस्तकालय है, जिसमें लगभग २५ हजार सामान्य और दुर्लभ पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियों का संग्रह है। यह ग्रंथालय भारतीय एवं विदेशी जिज्ञासुओं को अपनी सेवाएं प्रदान करता है। शिक्षकों एवं छात्रों के अनुसंधानपरक गंभीर लेखों के प्रकाशनार्थ 'संस्कृतविद्या' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी यह संकाय करता है। प्रकाशन की गतिविधियाँ संकाय के प्रकाशन अनुभाग के माध्यम से संचालित होती हैं। संकाय का पंचांग अनुभाग सन् १९२६ से नियमित रूप से विश्वपंचांग का प्रकाशन कर रहा है।

इस संकाय के छात्रों के लिए सावधि जमा छात्रवृत्ति, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की छात्रवृत्ति , राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा प्रदत्त अनेक छात्रवृत्तियों की सुविधा उपलब्ध है। इस वर्ष छात्रों की योग्यता के आधार पर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा कई छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त समस्त शोध छात्रों को ८०००/- रु. प्रतिमाह विश्वविद्यालय द्वारा यू.जी.सी. छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है तथा निर्धन छात्रों को श्री विश्वनाथ मंदिर द्वारा नि:शुल्क भोजन भी प्रदान किया जाता है।

संकाय के विद्वानों द्वारा विभिन्न संगोष्ठियों में सहभागिता

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में इस संकाय के विद्वानों की सहभागिता रही है तथा व्याख्यान दिये हैं, जिनमें विद्वानों ने विविध सत्रों की अध्यक्षता के साथ ही शोध-पत्रों का वाचन किया है तथा व्याख्यानमालाओं में व्याख्यान प्रस्तुत किये हैं।

संकाय के विभागों में स्वीकृत एवं प्रस्तावित परियोजनाएं

	प्रधान अन्वेषक का नाम	प्रदत्त संस्था का नाम	विषय
१.	डॉ. शंकर कुमार मिश्र- प्र.इन्वेस्टिगेटर डॉ. माधव जनार्दन रटाटे- को.इन्वेस्टिगेटर	यू.जी.सी.	संस्कार्स एण्ड दि ह्यूमन वैल्यूज - एक क्रिटिकल स्टडी
२.	डॉ. शीतला प्रसाद पाण्डेय, असि.प्रो., धर्मागम विभाग	यू.जी.सी.	ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ माईनर आगम्स
३.	प्रो. राजाराम शुक्ल	यू.जी.सी.	द्वैतप्रमाण मीमांसा की अन्त:शास्त्रीय समीक्षा

संकाय ग्रंथालय

संकाय ग्रंथालय में लगभग २५,००० से भी अधिक पुस्तकों तथा सैकड़ों पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है। संकाय के पंचांग अनुभाग द्वारा प्रतिवर्ष विश्वपंचांग का निर्माण एवं संपादन होता है। संकाय के प्रकाशन अनुभाग द्वारा महत्त्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। इस अनुभाग द्वारा 'संस्कृतविद्या' शोध-पत्रिका का प्रकाशन प्रतिवर्ष किया जाता है।

भावी योजनाएँ

वेद विभाग

- अध्यापन में शैक्षणिक श्रेष्ठता लाने के लिए वैदिक ग्रन्थों के व्याख्यान में वेदों के आधिदैविक पक्ष के विज्ञान को प्रकाशित करना।
- वेदों में निहित प्राचीन विज्ञान को शोध एवं प्रकाशनों के द्वारा लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना
- अनुसन्धानपरक उपर्युक्त तथ्यों को सामने लाने के लिए वैदिक प्रयोगशाला प्रस्तावित है।
- वैदिक श्रौत यागों का प्रयोग एवं प्रशिक्षण
- महत्त्वपूर्ण वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद
- सर्टिफिकेट कोर्स एवं डिप्लोमा कोर्स चलाने का प्रस्ताव

व्याकरण विभाग

- छात्रों को संस्कृत भाषा में निपुण बनाकर व्याकरण शास्त्र का गम्भीर ज्ञान कराना एवं व्याकरण शास्त्र को समाजोपयोगी बनाना विभाग का प्रथम संकल्प है।
- पाणिनिव्याकरण के प्राचीन ग्रन्थों का परम्परागत पद्धति से पंक्तिश: अध्ययन एवं अध्यापन के माध्यम से व्याकरण शास्त्र की संरक्षा।
- पाणिनीय व्याकरण में निहित भाषातात्त्विक तत्त्वों को शोध, परिसंवाद तथा दृश्यश्रव्यांकन के माध्यम से आधुनिक सम्बद्ध शोधार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करवाना।
- प्राचीन व्याकरणग्रन्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद।
- व्याकरण शास्त्र का वृहद् कोश तैयार कराना।
- प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को संगोष्ठी के माध्यम से काशी की शास्त्रार्थ परम्परा को छात्रों तक पहुंचाने का प्रयास करना।
- शोध-छात्रों को परम्परागत वास्तविक शोधविधियों का ज्ञान कराना तथा उच्च शोध कराने का प्रयास करना। साथ ही पारम्परिक विषयों में नवीनतम शोध के माध्यम से उनका विश्लेषण करना।
- किसी पारम्परिक विद्वान् को विभाग में आहूत कर 'वैयाकरणसिद्धान्तलघुमंजूषा'जैसे दार्शनिक ग्रन्थ का पंक्तिश: अध्ययन कराना तथा उस पर दिये गये समस्त व्याख्यानों को टीका के रूप में प्रकाशित कराना।

ज्योतिष विभाग

- वेधशाला का निर्माण
- लघुयंत्रों का व्यावहारिक प्रशिक्षण
- संगणक प्रयोगशाला
- आचार्यभट्ट वराहमिहिर व्याख्यानमाला
- विस्तार भाषण एवं कार्यशालाएं

वैदिक दर्शन विभाग

- योग प्रयोगशाला का निर्माण
- प्रस्तावित पीजी डिप्लोमा इन योग शिक्षा
- महत्वपूर्ण दर्शन के प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद एवं संपादन
- कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का आयोजन

२.१.२.१०. दृश्य कला संकाय

दृश्य कला संकाय (स्थापित १९५०), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, भारतवर्ष के प्रमुखतम् कला संस्थानों में है, जहाँ ललित कला के मुख्य पाठ्यक्रमों में व्यावहारिक कला, चित्रकला, टेक्सटाइल डिजाइनिंग, प्लास्टिक आर्ट (मूर्तिकला) तथा पॉटरी-सिरेमिक में स्नातक (बीएफए) और परास्नातक (एमएफए) की उपाधियाँ प्रदान की जाती है। संकाय परास्नातक के उपरान्त परास्नातकोत्तर (डॉक्टोरल) पाठयक्रम के अर्न्तगत शोध-कार्य के अवसर भी प्रदान करती है। दृश्य कला का इतिहास एवं रूपांकन एक आवश्यक विषय के रूप में, स्नातक एवं परास्नातक के साथ कला की समस्त शाखाओं में शोध के अवसर भी प्रदान करता है। दृश्य कला संकाय उन गिने-चुने संस्थानों में से एक है, जहाँ उपर्युक्त सभी पाठ्यक्रमों में परास्नातक की उपाधि प्रदान करने की विशिष्टता के कारण, न केवल सम्पूर्ण भारत, बल्कि सार्क राष्ट्रों (एसएएआरसी) एवं दूरस्थ अमेरिका-यूरोप के छात्र भी इसकी ओर आकर्षित होते हैं। यह संस्थान अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों में सृजनात्मक विचारों को विकसित करने के साथ उनमें उद्यमशीलता को भी बढ़ावा देने का सतत् प्रयास कर रहा है, जिससे छात्र समाज में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए सार्थक चिंतन के साथ, समग्र राष्ट्र की समसामयिक कलात्मक गतिविधियों में परस्पर सामंजस्य स्थापित कर सके।

वैश्विक अनुरूप सेमेस्टर प्रणाली से शिक्षा को मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास किया गया है, जिससे समसामयिक कलात्मक गतिविधियों को आत्मसात् करते हुए देश की मुख्य धारा से जुड़ सके। बीएफए एवं एमएफए स्तर के निर्धारित सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक है तथा समस्त उपाधि-धारक देश-विदेश में विभिन्न नियोजकों द्वारा रोजगार प्राप्त कर अपनी दक्षता का परिचय देते आ रहे हैं।

गतिविधियों की संक्षिप्त विवरण

१ जुलाई २०१४ को नया सत्र का आरम्भ हुआ। बीएफए प्रथम वर्ष में कुल ९६ तथा एमएफए प्रथम वर्ष में ८२ छात्रों ने प्रवेश लिया। चित्रकला एवं व्यावहारिक कला के एक वर्षीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में २० छात्रों ने प्रवेश लिया। वर्तमान में संकाय में कुल ३३ शोध छात्र पंजीकृत हैं।

निर्धारित शैक्षणिक तालिका के अनुसार १५ जुलाई २०१५ से अध्यापन कार्य आरम्भ हुआ। सेमेस्टर प्रणाली के अर्न्तगत होने वाली बीएफए (सेमेस्टर एक, दो, तीन, चार, पांच छः, सात एवं आठवाँ) तथा एमएफए (सेमेस्टर एक एवं दो तथा तीन एवं चार) की परीक्षाएं क्रमश दिसम्बर २०१४ एवं मई २०१५ में सम्पन्न करा ली गयी। सत्र (२०१४-१५) में दो बार होने वाली स्केच प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। वर्ष पर्यंत पूरे सत्र में कुल ११ प्रदर्शनियाँ जिनमें ०८ एकल एवं ०३ सामूहिक प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई। डॉ. निर्मला चौधरी द्वारा लिखित पुस्तक 'राजस्थानी चित्र शैली एवं सूर साहित्य' का विमोचन उल्लेखनीय है।

इसके अलावा संकाय की पूर्व एवं नवनिर्मित प्रदर्शनी-कक्षों को हमारे विश्वविद्यालय के संस्थापक भारतरत्न पं. मदन मोहन मालवीय एवं प्रथम प्राचार्य जदुनाथ मुरलीधर अहिवासी के नाम पर समर्पित क्रमशः महामना वीथिका एवं अहिवासी वीथिका का नामकरण माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी के कर-कमलों द्वारा २२ दिसम्बर, २०१४ को किया गया तथा महामना के जन्म दिवस पर दिनांक २५ दिसम्बर, २०१४ को 'संस्कृति महोत्सव' का शुभारंभ भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा किया, जिसमें कला एवं संगीत के भव्य कार्यक्रमों, प्रदर्शनी एवं कला प्रदर्शनी के साथ साहित्य संगोष्ठियों का सप्ताह-व्यापी कार्यक्रम आयोजित हुए।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ९७वाँ दीक्षान्त समारोह के अंश रूप में दृश्य कला संकाय दीक्षान्त समारोह, २५ अप्रैल २०१५ को संकाय के व्याख्यान कक्ष-प्रथम में आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत सत्र २०१३-१४ में उत्तीण बीएफए, एमएफए एवं शोध छात्रों को उपाधि वितरित की गयी।

उपलब्धियाँ

सृजनात्मक विकास की दृष्टि से वर्तमान शैक्षणिक सत्र , अति सफल कहा जा सकता है। संकाय के अध्यापकों द्वारा देश-विदेश में विभिन्न संगोष्ठियों में हिस्सेदारी, एकल प्रदर्शनियाँ, सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी, शोध-प्रपत्रों का प्रकाशन, मूल्यांकन हेतु विभिन्न संस्थानों में आमंत्रित तथा प्रदर्शनियों के निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में नामांकित किये गये। ३१ मार्च २०१४ से अप्रैल १२, २०१५, टेक्सटाईल डिजाईन, पॉटरी सिरेमिक, अप्लाइड आर्ट्स, एवं चित्रकला तथा बीएफए प्रथम वर्ष की वार्षिक प्रदर्शनियाँ संकाय की कला दीर्घा में प्रदर्शित की गयी। सम्पूर्ण सत्र में एकल एवं सामूहिक कुल ११ प्रदर्शनियों में संकाय के शिक्षकों की प्रदर्शनियाँ भी शामिल है। का.हि.वि.वि. द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले सांस्कृतिक उत्सव स्पंदन-१५, में दृश्य कला संकाय उपविजेता एवं फाईन आर्ट्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रही।

दिनांक २४ फरवरी, २०१५ को नैक समिति के सदस्यों ने दृश्य कला संकाय का भ्रमण किया, आकलन हेतु आये अधिकारियों द्वारा संकाय के विभिन्न कार्यक्रमों के क्रियान्वयन को देखा और सराहा गया तथा उन लोगों ने इस संकाय को उत्कृटता की श्रेणी में रखते हुए ए+ ग्रेड दिया।

व्यावहारिक कला विभाग के प्रोफेसर डॉ. हीरालाल प्रजापति द्वारा निर्मित 'लोगो' का चयन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के 'लोगो' रूप में हुआ, उक्त 'लोगो' का अनावरण मालवीय भवन में बसन्त पंचमी (स्थापना दिसव) के दिन माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी द्वारा किया गया।

वसंत पंचमी २०१४ के अवसर पर दृश्य कला संकाय के विद्यार्थियों द्वारा निकाली गयी झाँकी

दृश्य कला संकाय के संकाय प्रमुख प्रो. हीरालाल प्रजापति को ९७वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पाश्चात्य ड्रेस-कोड को परिवर्तन कर नये भारतीय-परिधान को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी गयी, उनके सुझाव पर दीक्षांत समारोह हेतु निर्धारित परिधान का प्रयोग ९७वें दीक्षान्त समारोह में सफलतापूर्वक हुआ।

डिग्री/डिप्लोमा अधिनिर्णय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ''९७वें दीक्षान्त समारोह'' के अंश रूप में दृश्य कला संकाय के व्याख्यान कक्ष प्रथम में दिनांक २६ अप्रैल २०१५ को आयोजित किया गया, जिसमें शैक्षणिक सत्र २०१३-१४ में उत्तीर्ण बीएफए, एमएफए एवं शोध छात्रों (पीएच. डी.) को उपाधि एवं पदक वितरित किया गया। स्वर्ण पदक प्राप्त छात्रों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले बीएफए एवं एमएफए के एक-एक छात्र को २७ मार्च २०१५ को आयोजित मुख्य दीक्षान्त समारोह में पदक प्रदान किया गया। संकाय के चित्रकला एवं एडर्वटाइजिंग डिजाइन में सफलता पूर्वक पाठ्यक्रम को पूरा करने पर एक वर्षीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के प्रमाण पत्र दिये गये।

ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित प्रदर्शनी

महामना कला वीथिका एवं अहिवासी कला वीथिका का कुलपति द्वारा उद्घाटन

वर्तमान सत्र में संकाय कलादीर्घा में आयोजित विभिन्न प्रदर्शनियाँ

क्रम	प्रदर्शनी के प्रकार	प्रदर्शक/कलाकार	अवधि
१.	एकल	श्रीमती सरीता लखोटिया	९ सित. २०१४
२.	एकल	श्री अभिषेक पाण्डेय	१५ से १९ सित. २०१४
३.	समूहिक	श्री आशीष कुमार गुप्ता	१३ से १६ अक्टू. २०१४
४.	एकल	बीएफए चतुर्थ वर्ष की वार्षिक प्रदर्शनी	१० से १४ नव. २०१४
५.	समूहिक	मिठाई लाल	१८ से २२ नव. २०१४
६.	एकल	बीएफए तृतीय वर्ष की वार्षिक प्रदर्शनी	२४ से २८ नव. २०१४
७.	संकाय कला दीर्घा का अनावरण एवं पुस्तक का विमोचन	माननीय कुलपति का.हि.वि.वि.	२२ दिस., २०१४
८.	संस्कृति महोत्सव	माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उद्‌घाटित। आयोजक संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	२५ से २९ दिस., २०१४
९.	एकल	श्रीमती सरीता लखोटिया	१३ से १७ जन. २०१५
१०	एकल	श्री सन्त लाल	२७ जन. २०१५
११	एकल	श्री विवेक श्रीवास्तव	८ फर. २०१५
१२	समूहिक	संकाय के छात्रों द्वारा	१८ से २० मार्च, २०१५
१३	सामूहिक	स्वाति एवं गौरव	२३ मार्च, २०१५

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष २०१५-१६ के 'लोगो' का कुलपति द्वारा लोकार्पण

२.१.३. महिला महाविद्यालय

'पुरुषों की शिक्षा की तुलना में स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ही भारत की भावी सन्तानों की माता हैं। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्वज्ञानियों, व्यापार तथा कला कौशल के नेताओं आदि की प्रथम शिक्षिका भी हैं। उनकी शिक्षा का प्रभाव भारत के भावी नागरिकों पर विशेष रूप से पड़ेगा।' (पंडित महामना मदन मोहन मालवीय जी के द्वारा प्रदत्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का दीक्षान्त भाषण, १४ दिसम्बर, १९२९) भारतीय परिवार, समाज और राष्ट्र को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु महामना पंडित मदन मोहलन मालवीय ने सन् १९२९ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के परिसर में सिंह द्वार के सन्निकट ४५ एकड़ जमीन पर वीमेंस कॉलेज (वर्तमान में महिला महाविद्यालय) की स्थापना की।

महिला महाविद्यालय वाराणसी में महिलाओं हेतु उच्च शिक्षा की प्रथम संस्था है। इसमें छह संकायों - कला, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, दृश्य कला, मंचकला एवं शिक्षा के अंतर्गत इकतीस विषयों को पढ़ाया जाता है। यहाँ स्नातक उपाधि हेतु ३ वर्षों का पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। प्रत्येक संकाय से सम्बद्ध विषयों की परीक्षा हेतु छः सेमेस्टर का विधान किया गया है। स्नातकोत्तर बायोइन्फ़ॉरमेटिक्स एवं गृहविज्ञान विषयों में दो वर्षों के पाठ्यक्रम में चार सेमेस्टर होते हैं। यहाँ भरतनाट्यम और नृत्य विषय में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बड़ी बारीकी से प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही विश्वविद्यालयीय स्तर की परीक्षा के उपरान्त 'स्नातकोत्तर डिप्लोमा' का प्रमाण पत्र छात्राओं को दिया जाता हैं।

आधारभूत संरचना

आज की नवीन शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों को देखते हुए शिक्षोपयोगी वस्तुओं के संसाधन जुटाने के यत्न और वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुकूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु महिला महाविद्यालय की संरचनात्मक प्रक्रिया उन्नत शिखर की ओर निरन्तर गतिमान है। महिला महाविद्यालय में ऐतिहासिक विरासत के रूप में मुख्य भवन हेरिटेज हॉल (इस कक्ष में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने सन् १९४५ में छात्राओं को संबोधित किया था।), प्राचार्या कक्ष, समिति कक्ष, कार्यालय कक्ष, शिक्षण कक्ष, प्रयोगशाला कक्ष, प्राध्यापिकाओं के कक्ष तथा ५३,५१२ पुस्तकों से परिपूर्ण कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय स्थित है। मुख्य भवन की बॉयी ओर तीन मंजिलों में पन्द्रह कक्षों की इमारत है। उसी दिशा में न्यू लेक्चर थियेटर संकुल (शोध कार्य की सुविधा के लिए छोटे-बड़े कक्षों से युक्त) का निर्माण किया गया है। मुख्य भवन के पिछले भाग में सावित्री देवी डालमिया विज्ञान भवन स्थित है। इस भवन में आधुनिक संसाधनों, नवीन उपकरणों और प्रकाश से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, प्राध्यापिकाओं के कक्ष, विशाल व्याख्यान कक्ष तथा कान्फ्रेंस हॉल निर्मित है। यू वी विज़िबल स्पेक्ट्रो फोटो मीटर, जल डोक्युमेंटेशन्स-८०० एवं २०० गहरा फ्रीज़र तथा रोटा वेपर से संयुक्त केन्द्रीय उपकरण प्रयोगशाला, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, भैतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, संगणक विज्ञान, सांख्यिकी, मनोविज्ञान एवं गृहविज्ञान की पृथक्-पृथक् प्रयोगशालाएँ हैं।

महिला महाविद्यालय में छात्राओं के व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास हेतु नगर निकाय कक्ष एवं प्रेक्षागृह निर्मित हैं। छात्राओं की आवासीय सुविधा हेतु स्वस्ति कुंज, कीर्ति कुंज, ज्योति कुंज, श्रीमती कुन्दन देवी छात्रावास, पावगी छात्रावास तथा प्रज्ञा कुंज छात्रावास हैं। पेयजल एवं जलपान की सुविधा हेतु रुचिरा कैन्टीन एवं अन्य दुकान मौजूद है। महाविद्यालय में छात्राओं के ज्ञान वर्धन के लिए १८ संजाल युक्त साइबर हट की व्यवस्था भी की गई है।

अकादमिक फोरम

अकादमिक फोरम के तहत विषय विशेषज्ञ विद्वानों को आमंत्रित करके छात्राओं एवं प्राध्यापिकाओं के ज्ञानवर्धन हेतु व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में दिनांक ०१.०४.२०१४ को डी.बी.टी. स्टार कॉलेज योजना के अन्तर्गत डॉ. अंचल श्रीवास्तव, भौतिक विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि. ने व्याख्यान दिया।

प्रो. मोहन राम, एफ एन ए, नई दिल्ली ने २८ अप्रैल २०१४ को ''कार्निवोरस प्लान्ट्स'' विषय पर व्याख्यान दिया। महिला महाविद्यालय के द्वारा ''फर्स्ट जेण्डर सेंसिटाइजेशन वर्कशाप'' का संयोजन किया गया और कम्प्लेन्ट्स अगेन्स्ट सेक्सुअल हरासमेण्ट, बी.एच.यू. के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला भी आयोजित की गई।

दिनांक १५.०९.२०१४ से प्रारम्भ ''स्पिरिचुअलिटी, हीलिंग एण्ड ह्यूमन वैल्यूस इन मार्डन लाइफ'' विषय पर पाँच दिनों तक व्याखानमाला का आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रो. सन्ध्या सिंह कौशिक, डॉ. अभय कुमार ठाकुर, प्रो. पुष्पा अग्रवाल, डा.पदिमनी रवीन्द्रनाथ तथा डॉ. सरस्वती कुमारी ने विशेष व्याख्यान दिये। दिनांक २३.०२.२०१५ को सनराइज कोस्ट विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया से पधारे अतिथि वक्ता प्रो. अबि ने बायोटेक्नोलॉजी इन अक्वाकल्चर पर व्याखान दिया। फरवरी १३-१५, २०१५ में ''जेण्डर इक्वेलिटी, पावर, वायलेन्स अगेन्स्ट वीमन, कम्बैटिंग मिथ्स एण्ड अण्डर स्टैंडिंग लीगल प्रोविजन्स'' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

छात्राओं के सहायतार्थ

- ओरिण्टेशन कार्यक्रम का आयोजन।
- मेण्टर (शिक्षक-विद्यार्थियों का समूह) व्यवस्था।
- छात्र सलाहकार की नियुक्ति।
- शिक्षक-विद्यार्थी का सम्बन्ध - विद्यार्थियों को विविध विषयों की जानकारी देना और उसकी प्रतिक्रिया जानना तथा उनसे बातचीत करके उनके सुझावों पर ध्यान देना।
- योग्य विद्यार्थियों और आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को सहायता के लिए छात्रवृत्ति और आर्थिक सहयोग।
- नव प्रवेशी छात्राओं को परामर्श देना।
- महिला महाविद्यालय में छात्राओं को परिसर में नियोजित साक्षात्कार की सूचना देने का संसाधन उपलब्ध है। इसके लिए एक अधिकारी भी नियुक्त है।

महामना की दूरगामी दृष्टि, सार्वभौमिक व सार्वकालिक मूल्यपरक विचारों से अभिभूत महिला महाविद्यालय ८९वाँ वर्ष पूरे कर रहा है। यह महाविद्यालय स्त्रियों की उच्च शिक्षा को निरन्तर बहुमुखी और उन्नत दिशा की ओर ले जाने के लिए प्रयासरत है। वैश्विक ज्ञान-विज्ञान के नवीन क्षितिज को तलाशने की जिज्ञासा लिए हुए छः संकायों का यह संस्थान अन्तर्विषयक पाठ्यक्रम को छात्राओं के लिए अपूर्व ढंग से संचालित कर रहा है। युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व को निखारने एवं जीवन शैली की समृद्धि के लिए छात्राओं को मूलभूत मानवीय तथ्यों से यहाँ निरन्तर अवगत कराया जाता है।

वसंत पंचमी के अवसर पर महिला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा निकाली गयी झाँकी

२.१.४. अध्ययन केन्द्र

२.१.४.१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
२.१.४.२. आनुवांशिकी विकार
२.१.४.३. डी.एस.टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान
२.१.४.४. नेपाल अध्ययन
२.१.४.५. महिला अध्ययन एवं विकास
२.१.४.६. मालवीय शांति अनुसंधान
२.१.४.७. समन्वित ग्रामीण विकास
२.१.४.८. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन
२.१.४.९. मस्तिष्क अनुसंधान
२.१.४.१०. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र
२.१.४.११. नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र

२.१.४.१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ मिलकर खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर अनुसंधान कार्य संचालित कर रहा है। यहाँ पर दुग्ध, खाद्य, फल एवं सब्जी प्रसंस्करण, खाद्य जैव प्रौद्योगिकी, किण्वन प्रौद्योगिकी, इन्जाइम तकनीकी और फंक्शनल फूड डेवलेपमेंट इत्यादि क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य होता है।

वर्ष २०१४-१५ में खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा विभिन्न विषयों जैसे गुणवत्ता संवर्धित युक्त दुग्ध उत्पादों, जैव उत्प्रेरकों तथा जैव पदार्थो के उत्पादन, ग्लूटन मुक्त उत्पाद, अनाज आधारित खाद्य उत्पादों आदि पर शोध किया गया। केन्द्र की तरफ से विभिन्न अतिथि व्याख्यान, कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। केन्द्र के शिक्षक वर्ग ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में भाग लिया तथा विभिन्न तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। विद्यार्थियों को उच्च तकनीकों का प्रयोगकर शिक्षित किया गया तथा उन्हें उच्च ख्याति प्राप्त खाद्य उद्योगों में नौकरी दिलवाने के लिए प्रयास किया गया। केन्द्र के शिक्षकों के वर्ष २०१४-१५ में ११ अंतर्राष्ट्रीय तथा ७ राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित हुए।

केन्द्र की उपलब्धियाँ

- अमरूद पाउडर से श्रीखंड, चाकलेट तथा टाफी जैसे गुणवत्तायुक्त उत्पादों का विकास,
- कृषि परिष्कृत पदार्थो से जैव उत्प्रेरकों व जैव पदार्थो का उत्पादन,
- फल तथा सब्जियों के एंटीआक्सीडेंट को दुग्ध उत्पादों में मिलाकर उच्च गुणवत्ता युक्त खाद्य पदार्थ बनाना,
- त्वरित अनाज आधारित उत्पादों की तकनीक का विकास,
- ग्लूटन मुक्त आटे का उपयोग कर बेकरी उत्पाद बनाना,

अन्य गतिविधियाँ

- शिक्षकों ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेकर व्याख्यान दिये तथा विभिन्न सत्रों में अध्यक्षता की।
- केन्द्र ने किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।
- केन्द्र ने देश विदेश से वैज्ञानिकों को बुलाकर उनके व्याख्यान आयोजित किये।
- डेरी तथा फल-सब्जियों के प्रसंस्करण के लिए प्रायौगिक संयत्र की स्थापना की।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खाद्य प्रयोगशाला का संचालन।
- त्वरित खाद्य उत्पाद बनाने के लिए रिटॉट मशीन की स्थापना की।
- एम एफ पी आई परियोजना के अंतर्गत स्प्रे ड्रायर, ट्रे ड्रायर एवं क्लरीमीटर खरीदा गया।

२.१.४.२. आनुवांशिकी विकार केन्द्र

प्रारम्भ में डी.बी.टी. द्वारा वित्तपोषित (२००६-२०११) आनुवंशिक रोग केंद्र २००८ में काशी हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान संकाय में स्थापित एक नया केंद्र है। यह एक श्रेष्ठ केंद्र के रूप में रोगों की जाँच, शिक्षण, प्रशिक्षण एवं मानव आनुवंशिकी क्षेत्रों में शोध कार्यो में संलग्न है। रोग के आणविक कारणों को समझ कर तथा उनके उपचार एवं/अथवा उचित प्रबंधन की खोज कर, आनुवंशिक रोगों के भार को कम करना इस केन्द्र का मुख्य कार्य है। यह केंद्र गुणसूत्रीय व जेनेटिक रोगों की जांच द्वारा रोगियों को सेवा प्रदान करता है। इसमें एक एक-वार्षिक गुणसूत्रीय, जेनेटिक व आणविक नैदानिकी पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा २०११-१२ सत्र से संचालित किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त केन्द्र में निम्नलिखित कार्यक्रमों का संचालन हो रहा है–

- आनुवांशिक रोगों की जाँच– रेफर किये गये मामलों की विभिन्न गुणसूत्रीय एवं जेनेटिक रोगों की जाँच की जाती है।

शोध

- पूरे जीनोम का अनुक्रमण - मानव दाँत न बनने के कारणों का पता लगाना।
- वृक्क कोशिका कैंसर का आण्विक विश्लेषण।
- पारंपरिक, आयुर्वेदिक एवं औषधीय पौधों के उत्पादों या मिश्रणों से कैंसर विरोधी गतिविधियों का आकलन।
- बहुपुटीय वृक्क विकार का जीनोमिक्स।
- विशेषत: पार्किंसन रोग के संदर्भ में, तंत्रिका अपकर्षक विकरों की आनुवंशिकी।
- प्रत्यारोपण हेतु मिश्र धातु से बना जैवअनुकूल दंत का विकास।
- दुर्लभ आनुवंशिक विकारों के अध्ययन के लिए लिम्फोब्लास्ट्वाइड कोशिका नस्लों का संवर्धन।
- अल्जाइमर रोग की आनुवंशिकी।
- डाउन सिंड्रोम के लिए मातृ जोखिमों का मूल्यांकन।
- बांझ महिलाओं में उम्मीदवार जीन का एसोसिएशन विश्लेषण।
- कटे होंठ एवं तालू विकार की आणविक आनुवांशिक विश्लेषण।
- स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि. के सहयोग से जन्मजात हाथ एवं पैरों की विरूपताओं और सामान्य अंग विकास का जीनोमिक विश्लेषण।
- स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि. के सहयोग से डीएमडी के लिए स्टेम कोशिका एवं जीन उपचार का विकास।
- माइलोप्रॉलिफिरेटिव विकारों के लिए जिम्मेदार उत्परिवर्तन की पहचान के लिए पैथोलॉजी विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि. के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान।
- मोतियाबिंद की आणविक आनुवांशिक विश्लेषण।

शिक्षण कार्य

- मानव और रोग आनुवंशिकी पर पी.एच.डी. कार्यक्रम।
- क्रोमोसोमल, जेनेटिक एवं मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक्स पर एक वर्षीय स्नातकोत्तर सनद कार्यक्रम।

- अन्तर-विभागीय एवं अन्तर-संस्थानीय शिक्षण कार्य -आणविक एवं मानव आनुवंशिक विभाग एवं नर्सिंग महाविद्यालय, का.हि.वि.वि. में शिक्षण कार्य।
- डिसर्टेशन एवं प्रशिक्षण – एम.डी./एम.एस./एम.एस.सी. डिसर्टेशन एवं ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण।

कार्यक्रमों की उपलब्धियों का विवरण

१. आनुवंशिक जांच

विभिन्न रोगों जैसे डाउन सिंड्रोम, टर्नर सिंड्रोम, डी.एम.डी./बी.एम.डी., थैलोसेमिया, आवर्तक गर्भपात, न्यूरज ट्यूब दोष इत्यादि के कुल ८०० रिफर किये गये केसों की जाँच की गई एवं उनके रिपोर्ट एस.एस. चिकित्सालय, बी.एच.यू. को सौंपे गये। कुछ मामलों में परामर्श भी दिया गया।

२. शोध

- डाउन सिंड्रोम बच्चों की युवा माताओं में फोलेट उपापचय जीन में गड़बड़ी देखी गई।
- नाइट्रिक ऑक्साइड मधुमेह घाव fibroblasts में connexins ३१, ३१.१ और ४३ की अभिव्यक्ति और कोशिकीय प्रसार को नियंत्रित करता है।
- Asparagus racemosus के पत्ते का रस स्वभोजिता बढ़ा कर और PRCCTFE3 संलयन प्रोटीन को घटाकर, UOK146 (प्राथमिक अंकुरक वृक्क कोशिका कार्सिनोमा) कोशिका विकास को बाधित करता है।
- एक वंशानुगत नया GLI3c.750delC ट्रंकेशन उत्परिवर्तन परिवार के एक रोगी में अंगूठे की तरह उंगली एवं अन्य असामान्य लक्षणों सहित एक ५ पीढ़ी के परिवार में ग्रेग Cephalopolysyndactyly सिंड्रोम का एक नया कारण खोजा गया।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश में BCR-ABL फ्यूजन tran scripts के सह अभिव्यक्ति की उच्च आवृति पाई गई।
- भारतीय समाज में CRYAA में नये उत्परिवर्तन मोतियाबिंद के कारण खोजे गये।

प्रकाशन : राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में कुल १८ प्रकाशन हुए।

प्रस्तुतियाँ: सम्मेलनों में कुल १६ मौखिक एवं १० पोस्टर प्रस्तुतियां की गईं।

१. शिक्षण कार्य

- अन्य संस्थानों से १ इंसा. ग्रीष्मकालीन, १ एम.एस. एवं ३ एम.एससी. २ बी.टेक. छात्रों ने डिजर्टेशन एवं ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया है।
- आमंत्रित फैकल्टी के रूप में आणविक एवं मानव आनुवंशिकी विभाग में तथा नर्सिंग महाविद्यालय, बी.एच.यू. में शिक्षण कार्य।

छात्रों के लिए उपलब्ध शोध सुविधाओं का विवरण

- जैव आधारित प्रयोगशाला के साथ डीएनए, आरएनए, प्रोटीन, पीसीआर, जीनोटाइपिंग, डीएनए अनुक्रमण, इत्यादि की सुविधाएँ।
- कोशिका संवर्धन प्रयोगशाला के साथ सम्पूर्ण रक्त संवर्धन, स्टेमकोशिका संवर्धन (लिम्वल, एम्नीयाटिक झिल्ली आदि) सेललाइन्स एवं लिम्फोब्लास्ट्वाइड सेल लाइन्स।
- मानक कोशिका आनुवंशिकी प्रयोगशाला के साथ गुणसूत्र स्लाइड बनाने, वैण्डींग, कैरियोटाइपिंग इत्यादि की सुविधाएँ।
- सेन्ट्रीफ्यूज जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस, ळ्ट्र ट्रान्सएलूमिनेटर, जेल डाकुमेण्टेशन तंत्र, झ्प् मापक, इंकुवेटर, ओवेन, तोलनयंत्र, रेफ्रिजरेटर, -२००ण एवं -८००ण रेफ्रिजरेटर, कोल्ड चैम्बर, पीसीआर मशीन, लैमिनार फ्लो, स्वत: कैरियोटाइपिंग मशीन, सूक्ष्मदर्शियाँ, स्वत: डीएनए अनुक्रमण, कम्प्यूटर तंत्र इत्यादि।

इस केन्द्र में क्रोमोसोम जेनेटिक एवं आणविक डाइग्नोस्टिक पर एक वर्षीय पी.जी. डिप्लोमा सत्र २०११-१२ से संचालित किया जा रहा है।

२.१.४.३. डी.एस.टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र

डी.एस.टी. अंतर्विषयक गणितीय विज्ञान केंद्र, गणितीय विज्ञान में प्रशिक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए और अपने चुने हुए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान की सुविधाओं को विकसित करने के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थापित किया गया था। डी.एस.टी. अंतर्विषयक गणितीय विज्ञान केंद्र में २०१४-१५ के दौरान विभिन्न तरह की गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसकी गतिविधियों का विवरण नीचे दिया गया है। इसके साथ ही, अंतर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र ने अपने उत्कृष्ट बुनियादी ढाँचे को लगातार विकसित किया है। यहाँ शिक्षकों, छात्रों और बाहर से आये हुए विद्वानों को शैक्षणिक गतिविधियों से जोड़ने के लिए एक अनुकूल और जीवंत माहौल मिला है।

केंद्र की कार्य प्रणाली

- प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं कार्यशालाओं का आयोजन,
- व्याख्यानों के आयोजन,
- महत्वपूर्ण एवं संबंधित क्षेत्रो में अनुसंधान,
- का.हि.वि.वि. के बाहर शैक्षिक एवं अनुसंधान गतिविधियों में अपने सदस्यों के माध्यम से भागीदारी एवं पारस्परिक विचार-विमर्श,
- बढ़ती मूलभूत सुविधाएँ जैसे निर्माण, कम्प्यूटेशनल साफ्टवेयर सहित सुविधाएँ, पुस्तकालय के लिए किताबें आदि की जानकारी विस्तार से प्रदान की गयी है।

डिग्री एवं डिप्लोमा के अधिनिर्णय

- गणितीय विज्ञान में पीएचडी,
- सांख्यिकी और कम्प्यूटिंग में एमएससी,
- कम्प्यूटेशनलविज्ञान और सिग्नल प्रोसेसिंग में एमएससी।

भवन में निम्नलिखित सुविधाएँ है–

समन्वयक का कमरा, कार्यालय, शिक्षकों का कमरा, शोध छात्रों का कमरा, आगन्तुकों के लिए कमरा, व्याख्यान एवं सम्मलेन के लिए कमरा, समिति कक्ष, कंप्यूटर लैब्स, व्याख्यान थियेटर, पुस्तकालय, अध्ययन कक्ष, स्टोर कक्ष, शौचालय।

कार्यशालाएँ/प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डीएसटी फण्डेड 'जीव विज्ञान के लिए लागू सांख्यिकीय तरीके' पर राष्ट्रीय कार्यशाला (एएसएमबीएस) (०४.०४.२०१४)
- एन. बी. एच. एम. फण्डेड नेशनल प्रोग्राम 'आइएसएल ज्यामितीय टोपोलॉजी' (०७.०७.२०१४-१९.०७.२०१४)
- डीएसटी फण्डेड नेशनल प्रोग्राम 'सिग्नल, छवि, वाणी और भाषा प्रसंस्करण पर द्वितीय स्कूल' (२१.०७.२०१४-०१.०८.२०१४)
- डीएसटी फण्डेड 'शिक्षा के क्षेत्र में ५ वें पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के लिए एसपीएसएस' पर एक सप्ताह के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (२१.०७.२०१४-२८.०७.२०१४)

- डीएसटीले फण्डेड नेशनल प्रोग्राम 'टेक्स प्रशिक्षण कार्यक्रम – २०१४' (०७, १४, २१ - २८.०९.२०१४)
- डीएसटी फण्डेड 'क्षेत्र सिद्धांत में नए रुझानों पर' अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (एनटीएफटी) (०१.११.२०१४- ०५.११.२०१४)
- डीएस फण्डेड 'टीमेट्लैब पर प्रशिक्षण कार्यक्रम पर हाथ' (१०.११.२०१४-१६.११.२०१४)
- एन. बी. एच. एम. फण्डेड नेशनल प्रोग्राम '२०१४ - क्षेत्रीय गणितीय ओलंपियाड' (०७.१२.२०१४)
- एन. बी. एच. एम फण्डेड नेशनल प्रोग्राम 'माधव गणित प्रतियोगिता २०१५' (०४.०१.२०१५)
- डीएसटी फण्डेड 'सी एंड मेट्लैब पर प्रशिक्षण कार्यक्रम पर हाथ' (२७.०१.२०१५-०२.०२.२०१५)
- डीएसटी, फण्डेड नेशनल प्रोग्राम 'रिमानियन् ज्यामिति पर कॉम्पैक्ट कोर्स' (१६.०२.२०१५-२८.०२.२०१५)
- डीएसटी फण्डेड 'एमएस एक्सेल और एस.पी.एस.एस. से समझौता सांख्यिकी' पर कार्यशाला (१६.०३.२०१५-२५.०३.२०१५)
- एन.पी.डी.इ, डीएसटी फण्डेड 'बायोमैथमेतिक्स पर एक मिनी कार्यशाला' (२८.०३.२०१५-३०.०३.२०१५)

गणमान्य वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान

- प्रो. राजकुमार बुय्या, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालय, ०८ और १०.१०.२०१४
- प्रो. राममोहन राव कोटागिरी, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालय, ०९.१०.२०१४
- प्रो. के. शिओहामा, फुकुओका प्रौद्योगिकी संस्थान, फुकुओका, जापान, १२.११.२०१४
- प्रो. रंगन गुप्ता, दक्षिण अफ्रीका, ०८.१२.२०१४
- प्रो. एजियो वेंतुरिनो, गणित विभाग, टोरिनो विश्वविद्यालय, इटली, २३.०२.२०१५
- प्रो. लुका पवारिनो, मिलानो विश्वविद्यालय, इटली, २६.०२.२०१४
- प्रो. पी. कोली फ्रांजोन, पाविया, इटली के विश्वविद्यालय, २६.०२.२०१४
- प्रो. बली राम, समाजशास्त्र और नृविज्ञान, कार्लटन विश्वविद्यालय, ओटावा, कनाडा, मार्च - मई २०१५
- प्रो. एचएम श्रीवास्तव, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, विक्टोरिया विश्वविद्यालय, ब्रिटिश कोलंबस, कनाडा, २५-३० अप्रैल, २०१५
- प्रो. (डॉ.) रेखा श्रीवास्तव, विक्टोरिया, कनाडा के विश्वविद्यालय, २५-३० अप्रैल, २०१५
- डॉ. रवींद्र नाथ दास, सांख्यिकी विभाग, बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान, पश्चिम बंगाल, ०२.०४.२०१४- ०४.०४.२०१४
- प्रो. वी.वी. मेनन, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अनुप्रयुक्त गणित विभाग, आईटी-बीएचयू, ११ २५.०४.२०१४
- डॉ. मनीष कुमार गुप्ता, सूचना धीरूभाई अंबानी संस्थान और संचार प्रौद्योगिकी, गांधीनगर, गुजरात, २६ २७.०५.२०१४
- प्रोफेसर चंदन दलवाट, हरीश चंद्र संस्थान, इलाहाबाद, ०३.०६.२०१४
- प्रो. जे. चट्टोपाध्याय, आईएसआई, कोलकाता, १४.०८.२०१४
- प्रो. रवि एस कुलकर्णी, प्रेसिडेंट, रामानुजन गणितीय सोसायटी, १८.०९.२०१४
- डॉ. टी. सिंह, गणित विभाग, पिलानी, गोवा बिट्स, ०७.११.२०१४
- प्रो. बी.के. दास, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, ०८.१२.२०१४
- डॉ ए.के. सिंह, विज्ञान और प्रौद्योगिकी (डीएसटी), दिल्ली ०८.१२.२०१४

२.१.४.४. नेपाल अध्ययन केन्द्र

नेपाल अध्ययन केन्द्र सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना १९७६ में क्षेत्रीय अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा की गयी। शुरू में यह केवल नेपाल के अध्ययन के लिए समर्पित था। समय के साथ भारतीय उपमहाद्वीप को समग्र रूप से समझने के लिए नेपाल के अध्ययन के साथ ही ट्रांस-हिमालयन क्षेत्र (पार-हिमालयी क्षेत्र) को शामिल कर अध्ययन के क्षेत्र को विस्तृत किया गया। इसकी आगे की इच्छा अध्ययन के क्षेत्र को सम्पूर्ण दक्षिण एशियाई क्षेत्र तक विस्तृत करना है, जिससे नेपाल और पार-हिमालयी क्षेत्र को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकें। केन्द्र द्वारा अध्ययन सत्र २०१४-२०१५ में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए जैसें कार्यशाला, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी इत्यादि।

कार्यक्रम और क्रियाओं की उपलब्धियाँ

नेपाल अध्ययन केन्द्र द्वारा अध्ययन सत्र २०१४-१५ में विभिन्न क्रियाओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

- क्षेत्र अध्ययन में शोध-कार्यप्रणाली पर कार्यशाला : ९ से १६ फरवरी, २०१५
- दक्षिण एशिया में गरीबी और वंचन'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी : ९ से ११ मार्च, २०१५
- मूलभूत और व्यावहारिक अर्थनीति'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला : १३ से १९ मार्च २०१५
- नैक दल का भ्रमण : २४ फरवरी, २०१५

भविष्य के कार्यक्रम

- केन्द्र में १७ से १९ सितम्बर, २०१५ को तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी शीर्षक ''दक्षिण एशियाई धरोहर और क्षेत्रवाद की वृद्धि की खोज'' के आयोजन का प्रस्ताव है।
- क्षेत्रीय अध्ययन में शोध पद्धति'' पर कार्यशाला अक्टूबर, २०१५ में होने के लिए प्रस्तावित है।

विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध शोध सुविधाएँ : ग्रन्थालय, संगणक एवं क्षेत्र कार्य।

केन्द्र के पास एक वर्गीकृत ग्रन्थालय है, जिसके अन्तर्गत शोध छात्र, प्रोजेक्ट होल्डर्स और शिक्षा परिषद के सदस्य बड़े स्तर पर जो शैक्षिक कार्यों के विस्तार के लिए केन्द्र में कार्यरत हैं, उनके लिए विभिन्न प्रकार के सूचनाओं के साथ क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम, विस्तृत एवं समृद्ध अध्ययन सामग्री, किताबें और पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। वर्तमान में केन्द्र के ग्रन्थालय के पास तीन हजार पाँच सौ से भी अधिक अधिसंपत्ति है, जिनमें से अधिकतम बहुत अधिक मूल्यवान, दुर्लभ और प्राचीन दस्तावेज हैं और एक हजार चार सौ से भी अधिक जिल्द वाली पत्रिकाएँ हैं।

२.१.४.५. महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र

'महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' महिला अध्ययन के क्षेत्र में देश के अग्रगामी केन्द्रों में से एक है तथा १९८८ से ही यह लैंगिक अन्याय एवं विषमता मिटाने की दिशा में अभिन्न योगदान दे रहा है। इसकी स्थापना वर्ष १९८८ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सातवीं योजना के अन्तर्गत की गयी थी। जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कुछ विश्वविद्यालयों में महिला अध्ययन केन्द्र की स्थापना करने का निर्णय लिया तो उसने देश के सात मानिंद विश्वविद्यालयों को चुना जिनमें से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एक था। इस केन्द्र को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर ख्याति प्राप्त हो चुकी है। इसके उत्तम कार्य प्रदर्शन तथा प्रदेश में लैंगिक संवेदनशीलता प्रसारित करने के लिए इसके द्वारा किये गये सतत् प्रयास के परिणाम स्वरूप यू.जी.सी. निरीक्षण समिति ने १९९७ में इसे भारत का एक प्रमुख केन्द्र घोषित किया जो कि किसी भी महिला अध्ययन केन्द्र की श्रेष्ठता का उच्चतम मानक है। बारहवें पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा केन्द्र को ०६ शैक्षणिक पद एवं ०८ गैर शैक्षणिक पद मिले हैं।

इसके अतिरिक्त यह केन्द्र महिला अध्ययन के क्षेत्र में शिक्षण व प्रशिक्षण प्रदान करने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। केन्द्र ने यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज द्वारा आयोजित १४ पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों के आयोजन में सहयोग किया है। इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम तीन सप्ताह के रहे हैं और इसके द्वारा ५३० से अधिक अध्यापक, अध्यापिकाओं को महिला अध्ययन में शिक्षित किया गया है। इसी क्रम में केन्द्र शोध छात्रों के लिए १५ अभिविन्यास पाठयक्रमों का भी आयोजन कर चुका है। यह गर्व का विषय है कि अब तक इस पाठ्यक्रम के द्वारा ३६३ से अधिक शोध छात्रों को महिला अध्ययन में प्रशिक्षित किया गया है। ये शोध छात्र मानविकी, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों, कृषि विज्ञान एवं विधि से सम्बन्धित थे। इस अभिविन्यास पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अब तक विभिन्न विषय क्षेत्रों के सौ से अधिक विशेषज्ञों ने शोधार्थियों को महिला अध्ययन में प्रशिक्षित किया है। २०१०-११ सत्र से केन्द्र में जेन्डर एवं महिला अध्ययन में पी. जी. डिप्लोमा कोर्स की शुरुआत की गयी है। लगभग २५ गैर सरकारी संस्थान के साथ मिलकर विभिन्न महिला मुद्दों पर वाराणसी क्षेत्र में सर्वेक्षण किया गया।

केन्द्र ने अन्य महिला अध्ययन केन्द्रों, गैर-सरकारी संस्थाओं और उच्चशिक्षा संस्थाओं के साथ एक समृद्ध सम्पर्क तन्त्र (नेटवर्किंग) विकसित किया है। समय-समय पर यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित कार्यशाला "उच्चशिक्षा में महिला मैनेजर्स के लिए क्षमता निर्माण" और "सेन्सीटाईजेशन/मोटिवेशन/ अवेयरनेस" का आयोजन भी केन्द्र द्वारा किया जाता है। प्रसार के क्षेत्र में केन्द्र का अभूतपूर्व इतिहास रहा है। इसने वाराणसी के निर्वाचित ग्राम पंचायत नेतृत्वकर्ताओं के साथ बैठकों, वाराणसी की ग्रामीण महिलाओं के साथ लैंगिक संवेदनशीलता कार्यशालाओं, स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों, वाराणसी जिले में विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य तथा वैधानिक साक्षरता जागरूकता कार्यक्रमों, वाराणसी के ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता उत्पन्न करने संबंधित शिविरों, स्वच्छ पेय जल तथा पर्यावरण शुद्धीकरण सम्बन्धी शिविरों का आयोजन किया है। इस वर्ष प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र का मुख्य ध्येय ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक स्वावलम्बन एवं शिक्षा रहा। केन्द्र द्वारा अमरा खैरा गाँव, वाराणसी में व्यथित ग्रामीण महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र तथा ग्रामीण महिला/बालिका शिक्षण केन्द्र चलाया जा रहा है।

केन्द्र ने विभिन्न कार्यक्रमों यथा-महिला अदालत, पोस्टर

प्रतियोगिता तथा संकाय सदस्यों, छात्रों तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के सदस्यों के साथ शैक्षणिक बैठकों में सक्रिय प्रतिभागिता की। केन्द्र ने लैंगिक संवेदनशीलता सृजन सम्बन्धित अध्ययन सामग्री तथा जागरूकता सृजन के क्षेत्र में सराहनीय प्रगति की है। केन्द्र ने अपना प्रथम जर्नल 'जेण्डर एवं जस्टिस' २०१२ में प्रकाशित किया। अब तक इसने हिन्दी में एक प्रशिक्षण पुस्तिका, ३२ प्रोजेक्ट प्रतिवेदनों, विभिन्न पुनश्चर्या कार्यक्रमों, अभिमुखीकरण पाठ्यक्रमों एवं राष्ट्रीय परिसंवादों की ४८ से अधिक विवरण पुस्तिकाओं तथा द्विभाषीय त्रैमासिक पत्र ''नारी दर्पण'' के १३ अंक, ३ अवसरिक प्रपत्रों, १६ डॉज़ीयर का प्रकाशन किया है। साथ ही दो सामयिक राष्ट्रीय परिसंवादो में प्रस्तुत किये गये प्रपत्रों के योग तथा परियोजना प्रतिवेदन से कुल ८ पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है।

केन्द्र ने विभिन्न स्तरों पर संगठन के लिए किये गये प्रयास द्वारा अन्य विभागों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। अब तक यह केन्द्र तीन स्तरों पर सम्बन्धीकरण का कार्य कर चुका है: (१) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की सहोदर संस्थाओं के साथ, (२) वाराणसी के विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं के साथ; जिनमें प्रमुख है: वर्ल्ड लिट्रेसी ऑफ कनाडा, यू.पी. वालंटियरी हेल्थ एसोसियेशन, श्री शम्भुनाथ रिसर्च फाउन्डेशन, महिला समाख्या, अस्मिता आदि, (३) केन्द्र द्वारा अपना एक प्रकोष्ठ 'तेजस्विनी', आर्य महिला महाविद्यालय, वाराणसी में स्थापित किया गया है। केन्द्र ढाँचागत सुविधाओं की दृष्टि से समृद्ध है। केन्द्र का अपना एक साधन संपन्न पुस्तकालय और एक सुसज्जित परिसंवाद कक्ष है जहां इन्टरनेट सुविधा भी उपलब्ध है।

विभिन्न गतिविधियाँ

वर्तमान वर्ष की कुछ प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं-

- महिला अध्ययन में चौदहवाँ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम ०६-२६ अगस्त २०१४
- अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला 'बीजिंग +२० ग्लोबल रिव्यू' ११ नवम्बर २०१४
- पंद्रहवाँ अभिविन्यास पाठ्यक्रम १८ नवम्बर - ०२ दिसम्बर २०१४
- एक दिवसीय फुलब्राइट एफ.एल.टी.ए. कार्यक्रम: १३ फरवरी २०१५
- दो दिवसीय संगोष्ठी 'भारत में जेन्डर विभेद एवं महिला सुरक्षा' १२-१३ मार्च २०१५
- व्याख्यान 'शेक्सपीयर के नाटकों के पात्रों का महिला कलाकार द्वारा मंथन की परम्परा' १७ मार्च, २०१५
- व्याख्यान 'जाकरी: हरयाणवी महिलाओं के लोकगीत'१८ मार्च, २०१५
- दो दिवसीय कार्यशाला ''महिला अधिकार और कानूनी पक्ष'' २६-२७ मार्च २०१५

विद्यार्थियों के लिए सुविधायें

- अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम
- विविध प्रसार एवं सेवा गतिविधियों में विद्यार्थियों की भागीदारी
- पुस्तकालय में इन्टरनेट की सुविधा
- विद्याथियों के लिए समय-समय पर कार्यशाला का आयोजन
- परामर्श की सुविधा (व्यक्तिगत, शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक आदि)।

पुस्तकालय

महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र में उत्तम पुस्तकालय सुविधा है जिसमें ५० से अधिक शोधार्थियों के बैठने की क्षमता है। इस पुस्तकालय में कुल ३००० (उपहार स्वरूप प्राप्त पुस्तकों सहित) पुस्तकें हैं। १ अप्रैल २०११ से ३१ मार्च २०१२ के मध्य ९५ नवीन पुस्तकें क्रय की गयीं। केन्द्र में ९ पत्रिकायें, १ जर्नल तथा ८ दैनिक समाचार पत्रिकायें भी उपलब्ध हैं। पुस्तकालय के पास आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/ सम्मेलनों एवं महिलाओं से सम्बन्धित सरकारी प्रकाशन भी उपलब्ध हैं।

मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय द्वारा २९-३० नवम्बर, २०१४ को
'सेलिब्रेटिंग मल्टीपल आईडेन्टेटीज़ इन इण्डिया' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

२.१.४.६. मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आंठवी पंचवर्षीय योजना में संस्तुत (मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, एम.सी.पी.आर.): मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र की स्थापना वर्ष १९९८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र, अंतर्विषयी केन्द्र के रूप में समाज विज्ञान संकाय के अन्तर्गत की गई। मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र ने कुछ ही समयान्तराल में अपने कार्यों से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त की है। एक अंतर्विषयी केन्द्र होने के कारण मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र विभिन्न विषयों के विद्वानों को शोध के अवसर प्रदान करता है एवं राजनीतिज्ञों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा राजनयिकों, गैर सरकारी संस्थाओं एवं अन्य जो संघर्षों के निवारण में कार्यरत है, के लिए महत्वपूर्ण विचार स्थली बन गया है। एम.सी.पी.आर. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार के संघर्षों के विश्लेषण एवं समाधान के लिए शोधरत है।

मालवीय शांति अनुसंधान केन्द का प्रमुख उद्देश्य है- गोष्ठियों, वाद-विवादों एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना। स्थापना के साथ ही अनेक राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक अधिकारी एवं राजनयिक, गैर सरकारी संस्थाओं के सदस्य, शोध छात्र एवं छात्राएं, शिक्षकगण एवं समाजसेवक केन्द्र की इस प्रकार की गतिविधियों में भाग ले चुके हैं। इस प्रकार की गोष्ठियाँ, परिचर्चाएं एवं कार्यशालाएँ केन्द्र की संघर्ष विषयक सूचनाओं एवं शोध के लिए आकड़ों को विस्तृत करने में मददगार सिद्ध हुई हैं। गोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं कार्यशालाओं से प्राप्त जानकारियों का केन्द्र के शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य में उपयोग किया जाता रहा है।

बौद्धिक गतिविधियों के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उत्तर भारत में स्थापित मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, भारत तथा विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण संसाधन केन्द्र के रूप में सेवारत है। मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र का समाज विज्ञान संकाय में होना तथा संकाय के शिक्षकगणों का शान्ति अध्ययन के प्रति रुझान एम.सी.पी.आर. के विकास का एक प्रमुख कारण रहा है एवं यह संकाय के छात्रों एवं शोधार्थियों को शान्ति अध्ययन संबंधी एक नवीन आयाम प्रदान करता रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय संस्थानिक सहयोग

- यूनेस्को द्वारा केन्द्र में प्रतिष्ठित 'यूनेस्को शांतिपीठ एवं अन्तर-सांस्कृतिक सहमति' की स्थापना की गयी है।
- मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र ने टोनी ब्लेयर फेथ फाउण्डेशन, यू.के. के साथ शैक्षणिक एवं शोध कार्य में सहयोग हेतु सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है।
- केन्द्र ने इन्टरनेशनल पीस रिसर्च इन्स्टीट्यूट, नार्वे के साथ शैक्षणिक एवं शोध कार्य में सहयोग हेतु सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है।

- मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र ने संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेश पत्र द्वारा स्थापित यूनिवर्सिटी फार पीस, कोस्टा रिका के साथ शांति अध्ययन के क्षेत्र में नये पाठ्यक्रम एवं परास्नातक पाठ्यक्रम में सह-शिक्षण की नयी तकनीकी के विकास के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है।
- मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र ने कार्लस्टाड विश्वविद्यालय, स्वीडेन, वेज़ली कालेज, अमेरिका, एवं त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल के साथ संस्थानिक सहयोग के लिए समझौता किया है।
- सन् २००६ से ही संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत शैक्षणिक फांउडेशन, नई दिल्ली से मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र में संयुक्त राज्य अमेरिका से फुलब्राइट प्रोफेसर एवं स्कॉलर केन्द्र में अध्यापन एवं शोध कार्य हेतु आते रहे है।

उपलब्धियाँ

- सन् २०१५ में यूनेस्को (पेरिस) द्वारा मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र में प्रतिष्ठित 'यूनेस्को शांति एवं अन्तर-सांस्कृतिक सहमतिपीठ' की गहन समीक्षा के उपरान्त पुन: नवीनीकरण किया गया एवं पीठ की उपलब्धियों की सराहना की गई।
- प्रो. प्रियंकर उपाध्याय को डबलिन सिटी विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद की प्रतिष्ठित पीठ प्रदान की गयी। (जनवरी-अगस्त २०१४)
- २०१४-१५ में मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र के दो शोध अध्येता अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति (लिनियस पाल्मे कार्यक्रम) के अन्तर्गत स्वीडेन के कार्लस्टाड विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए गए।
- केन्द्र की गतिविधियों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू समसामयिक पत्रों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठी रिपोर्ट तथा शोध प्रपत्रों के प्रकाशन का है। सन् २००३ से मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय सम्पादकीय समिति के निर्देशन में शोध पत्रिका 'संघर्ष प्रबंधन एवं विकास' प्रकाशित कर रहा है।
- मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र के दो शोध अध्येताओं ने ओस्लो विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रम शांति अनुसंधान में छह सप्ताह का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के लिए पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट, ओस्लो ने छात्रवृत्ति प्रदान की।

पुस्तकालय

केन्द्र के पास अपना एक पुस्तकालय है, जिसमें कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकें एवं शोध पत्रिकाएँ शामिल हैं। केन्द्र की अपनी एक वेबसाइट (www.mcpr-bhu.org) है। साथ ही केन्द्र के पास एक श्रेष्ठ डिजिटल लाइब्रेरी भी मौजूद है जिसमें लगभग २००० प्रपत्र शामिल हैं, जो विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय किताबों, जरनल एवं समाचार पत्रिका से लिए गए है। केन्द्र ऑनलाइन प्रकाशन के माध्यम से उन लोगों को प्रोत्साहित करता है जो अपने लेख एवं विचारों को वेबसाइट के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते है।

पाठ्यक्रम

केन्द्र 'संघर्ष प्रबंधन और विकास' विषय में दो वर्षीय परास्नातक/एक वर्षीय परास्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा 'शांति अध्ययन' में शोध कार्य सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है। इस पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान एवं संबद्ध विषयों के स्नातक तथा विशेषकर प्रशासनिक अधिकारी, राजनेता, गैर सरकारी संगठनों के सदस्य तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के समाधान में संलग्न व्यक्ति भाग ले सकते हैं।

कोर्स	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
पीएच.डी.	शांति अध्ययन	विश्वविद्यालय नियमानुसार
एम. ए.	संघर्ष प्रबन्धन एवं विकास	दो वर्ष
पी. जी. डिप्लोमा	संघर्ष प्रबन्धन एवं विकास	एक वर्ष
बी.ए.	शांति एवं संघर्ष अध्ययन: एक परिचय	एक सेमेस्टर
पाँच साप्ताहिक पाठ्यक्रम (३ क्रेडिट पाठ्यक्रम)	शांति और संघर्ष समाधान: मूलभूत पाठ्यक्रम	पाँच सप्ताह
मौक्स कार्यक्रम	धर्म, संघर्ष एवं वैश्विकरण	४ क्रेडिट पाठ्यक्रम

मेसिव ओपेन आनलाइन कार्स (मौक्स) : मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र ने मौक्स कार्यक्रम के अन्तर्गत ४ क्रेडिट आनलाइन पाठ्यक्रम धर्म, संघर्ष एवं वैश्विकरण की शुरूआत की। यह पाठ्यक्रम धार्मिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं, शांति कार्यकर्ताओं एवं सामुदायिक विकास से जुड़ी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। यह नवोन्मेषी पाठ्यक्रम धार्मिक एवं अन्तर सांस्कृतिक सहमति को संघर्ष समाधान के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप उपयोग करने की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

२.१.४.७. समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र

भारत गाँवों का देश है तथा गाँवों के विकास में ही देश का विकास सन्निहित है। संपोषित विकास, आर्थिक सुधार और गाँव के आम आदमी की चिंता नवीन वास्तविकताएँ है। चुनौतियाँ फिर भी बरकरार हैं। इसके निराकरण हेतु भारत सरकार के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण विकास की अवधारणा के पश्चात् १९८० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पहल पर समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र की स्थापना की गयी।

ग्रामीण विकास कार्यक्रम की नेटवर्किंग

ग्रामीण विकास में संलग्न गाँव के तथा अन्य संगठनों के एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रमों के संजालीकरण में समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र सकारात्मक भूमिका निभाता है।

संरचना एवं सदस्यता

समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त ईकाई के रूप में कार्य करता है तथा सामाजिक विज्ञान संकाय के अधीन विश्वविद्यालय के अन्य विभागों से सकारात्मक सहयोग करता है।

यह केन्द्र विश्वविद्यालय के रख-रखाव खर्च द्वारा आबंटित एवं अनुमोदित धनराशि से संचालित होता है तथा विश्वविद्यालय के अन्य संकायों, विभागों एवं संस्थानों से निरन्तर सहयोग बनाए रखता है। साथ ही यह केन्द्र ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों की व्यापकता एवं सृजनशीलता के मद्देनजर सशक्त आर्थिक सहयोग की अपेक्षा करता है।

समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र द्वारा चिरईगाँव विकास खण्ड के अमौली गाँव में ग्राम्य अनौषधि औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति नामक संस्था का संचालन १९८७ से केन्द्र के परियोजना अधिकारी के नेतृत्व में किया जा रहा है। इस औद्योगिक इकाई को वाराणसी जिला प्रशासन द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान कर समूचे प्रदेश में पहली बार औषधीय पौधों के आर्थिक विकल्प को खेती के अतिरेक स्वीकृति प्रदान की गयी है। साथ ही चिरईगाँव विकास खण्ड को हर्बल ब्लाक घोषित किया गया है।

एक नजर

महिला सशक्तिकारण प्रशिक्षण कार्यक्रम

काशी विद्यापीठ विकास खण्ड के तथा विश्वविद्यालय परिसर के नजदीक के गाँव की ४० महिलाओं को सिलाई, कताई, कढ़ाई की नियमित कक्षाओं का संचालन पूर्वाह्न १० से १ बजे तक दोपहर २ बजे से ५ बजे अपराह्न में किया जाता है।

एक वर्षीय समन्वित ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन में पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम

सामाजिक विज्ञान संकाय अन्तर्गत समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र द्वारा एक वर्षीय ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन का पी.जी. डिप्लोमा वित्त पोषित कोर्स के रूप में चलाया जाता है। जिसमें विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान, कृषि विज्ञान संस्था, प्रौद्योगिकी संस्थान तथा सामाजिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र से सम्बन्धित शिक्षक शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्य करते है। इसमें सत्र २०१४-१५ में कुल २४ छात्रों ने प्रवेश लिया।

सर्वेक्षण कार्य

एक वर्षीय ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन के पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम के २२ छात्रों ने केन्द्र द्वारा चयनित आराजीलाइन के मोहनसराय गाँव में सर्वेक्षण का कार्य किया। छात्रों द्वारा चयनित शोध प्रपत्र का कार्य कृषि, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र विषयों के अन्तर्गत किये जा रहे विकास कार्यों पर आधारित था।

२.१.४.८. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र

भारत वर्ष में सामाजिक वैज्ञानिकों ने सामाजिक रूप से बहिष्कृत वर्गों को केवल एक वर्ग या एक पहचान के रूप में माना हैं, इनको जाति, धर्म, वर्ग एवं लिंग के रूप में समझा गया है। ये वर्ग अपने को समाज का कमजोर वर्ग मानते हैं, जिनको आधार बनाकर पहचान के विभिन्न आयामों का अध्ययन, स्वयं के सम्मान से जुड़ा आन्दोलन, सामाजिक न्याय, समानता, शक्ति, आरक्षण इत्यादि का विश्लेषण किया जाता रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिया गया सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने प्रस्तावित किया है कि सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों का वर्ग एक ऐसे परिप्रेक्ष्य का द्योतक है जो कि भारतीय समाज एवं इतिहास का अध्ययन, उपनिवेषवाद तथा राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र एवं समग्र जगत के बृहद समाज से जुड़े समकालीन या वर्तमान अनुभवों के अध्ययन करने में मदद करता है। वास्तव में, सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों को एक साथ जुड़े रखने के पीछे एक ऐसी संरचनात्मक वास्तविकता होती है जो कि ऐतिहासिक एवं सामाजिक रूप से बहिष्कृत होती है, जिनकी पहचान को नकारा जाता रहा है।

केन्द्र की संक्षिप्त रिपोर्ट

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थापित इस केन्द्र के निम्न उद्देश्य एवं लक्ष्य हैं।

- इस अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत दो वर्ष का परास्नातक पाठ्यक्रम प्रस्तावित है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के भेदभावों की प्रकृति एवं जाति, जनजाति, लिंग अपंगता, धर्म, कला, साहित्य से जुड़े बहिष्करण और साथ ही साथ समावेशी नीति से संबंधित विभिन्न आयामों-संवैधानिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक-का अध्ययन किया जा रहा है।
- इस केन्द्र के अर्न्तगत एम.फिल एवं पी.एचडी. स्तर पर उपाश्रित वर्गों का अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। इसके अर्न्तगत सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति हेतु विभिन्न सैद्धांतिक एवं शोध प्रारूप का प्रयोग करके एक नीति का निर्धारण हो सकेगा जो कि उपाश्रित वर्गों का मुख्य धारा में समायोजन हेतु लाभकारी होगा।
- सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूहों के समस्याओं को समझने में सैद्धान्तिक एवं अनुभवात्मक परिपक्वता प्राप्त करने हेतु यह केन्द्र अनुसंधान एवं विस्तार कार्यक्रम को प्रोत्साहित करता है। इस परिप्रेक्ष्य में केन्द्र के विद्यार्थीगण, शिक्षकगण एवं अन्य कर्मचारी अध्यापन एवं शोध कार्य के माध्यम से एक ऐसी नीति का निर्माण कर सकेंगे जो कि समाज के प्रताड़ित लोगों के अधिकार को संरक्षित कर सकेगा।
- यह केन्द्र उपर्युक्त उद्देश्यों में संलग्न विभिन्न प्रकार के संस्थाओं से संबंध स्थापित करके सामाजिक बहिष्करण के परिप्रेक्ष्य में पैनापन लाकर अपने उद्देश्यों के संबंधित तथ्यों को मजबूती प्रदान करेगा।
- यह केन्द्र निरन्तर व्याख्यान माला, सेमिनार, संगोष्ठी तथा कार्यशालाओं का आयोजन करता है जहां कि प्रबंधन शास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं कला विज्ञान के विद्यार्थी एवं विद्वान तथा राजनीतिक एवं सामाजिक नेता भाग लेते है।

- यह केन्द्र प्रविधि को बढ़ावा देकर पहुँच से दूर समुदाय के विभिन्न पहलुओं के बहिष्करण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करता है।

शैक्षिक गतिविधियां

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस सत्र में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया गया। इस शैक्षिक सत्र के दौरान ०४ विशेष व्याख्यान श्रृंखलाओं का आयोजन किया गया।

पुस्तकालय सुविधा

अ) संदर्भ पुस्तके केवल पुस्तकालय में पढ़ने एवं परामर्श हेतु उपलब्ध है।

आ) पुस्तकालय में अलग से एक साथ ३० लोगों के बैठने की उचित व्यवस्था है।

केन्द्र द्वारा आयोजित व्याख्यान श्रृंखलाओं के दौरान विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यानों का आयोजन

२.१.४.९. मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र

कई वर्षों से जैवरसायन अनुभाग जन्तु विभाग, बी.एच.यू. के संकाय सदस्यों मस्तिष्क के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित शोध कार्य किये जा रहे हैं। ''मस्तिष्क शोध केन्द्र'' के शोध में उसके सफल रिकार्ड के आधार पर उसको जन्तु विभाग के बायोकैमिस्ट्री सेक्शन स्थित नोडल सेन्टर के साथ, विज्ञान संकाय में यू.जी.सी. के ग्यारहवें पाँचवर्षीय योजना के पार्ट के रूप में अनुमोदित किया गया था।

- मस्तिष्क विकास, वृद्धावस्था एवं न्यूरोलाजिकल व्याधियों के क्षेत्र में उच्चीकृत स्तर के शोध करना।
- न्यूरोलाजी के क्षेत्र में युवा शोधार्थियों को प्रशिक्षित करने तथा इस क्षेत्र के ज्ञान को प्रसारित करने के लिए लघु अवधि के संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन करना।
- जनसामान्य एवं युवा छात्रों के बीच न्यूरोसाइंस के महत्व को लोकप्रिय करने के लिए मस्तिष्क जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(ब) मस्तिष्क शोध केन्द्र ने निम्नलिखित को आयोजित किया।

१. ०५-२० सितम्बर, २०१५ के दौरान तंत्रिका विज्ञान के आईबीआरओ – एपीआरसी स्कूल।

२. प्रो. रत्ना सिरकार (निदेशक, न्यूरोसायकोफारमाकोलॉजी लेबोट्री डिपार्टमेन्ट ऑफ साइकोलॉजी, द सिटी कॉलेज ऑफ न्यूयार्क) द्वारा शीर्षक ''टिनएज ड्रिकींग एण्ड कोगनीटिव फनसनींग: न्यूरोबायलाजिकल अन्डरपिनिंगस'' पर २८ अक्टूबर २०१४ को सेमिनार।

वैज्ञानिक उपलब्धियों की मुख्य विशेषताएँ

१. क्रोमेरीन मोडीफाइंग एंजाइम स्मृति पुष्ट करने की प्रक्रिया में प्रमाणिक भूमिका निभाता है जो उम्र बढ़ने के साथ कम हो जाता है। हमने प्रमाणित किया है कि वृद्धा अवस्था में हिस्टोन डी एसिटाइलेज़ (एचडीएसी)[२] के अपरेगुलेशन और डीएनए मिथाइल १ ट्रांसफरेज (डीएनएमटी) का डाउन रेगुलेशन का सम्बन्ध स्मृति के पहचान में कमी परस्पर सम्बन्धित है।

२. सेनेप्टिक एडहेस मालीकूल के टूटने से प्राप्त ये याददास एक्यूशन और सेनाप्टिक प्लास्टिसीटी में इनाउव होता है। व्रेड एंजिग में एनपी नहीं खोजा गया है।

३. नोगा-A और रिसेप्टर नोगा-६६ सिनेप्टीक प्लास्टीसीटी के साथ संयुक्त होता है जो सामान्यत: उम्र बढ़ने की प्रक्रिया के साथ कम हो जाता है। हमने ज्ञात किया है कि नर और मादा चूहे के सेरेब्रम में उम्र बढ़ने के क्रम में (NgR)1 आकृति में कोई परिवर्तन नहीं हाता है। किन्तु नोगो –A mRNA और प्रोटीन के स्तर में कमी हो जाती है। हमने कल्पना की है कि उम्र बढ़ने के क्रम में सिनेप्टीक प्लास्टीसी के परिवर्तन में Nogo-A का डाउन रेगुलेशन अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

४. बिस्फेनोल-A (BPA) ए वेल नो इंडोक्राइन डिस्रूपटर है रोडेन्ट में याददास और सीखने में क्षति करता है। किन्तु BPA का यांत्रिक आणविक अण्डरलेइंग अनुमान किया। सीखो और स्मृति में कमी का अनुमान होता है यह नहीं जाना जाता। हमने प्रदर्शित किया कि प्रसवकालीन जोखिम को बीपीए सिनेप्टी प्रोटीन्स न्यूरेक्सीन१ और न्यूरेक्सीन ३ की आकृति में अपरेगुलेशन के द्वारा स्पास्टिक मेमरी की क्षति करता है और प्रसव के बाद नर चूहों के हिप्पोकैम्पस और संरेबल कार्टेक्स में डेन्ड्रायड स्पाइन डेन्सीटी में वृद्धि करता है।

५. प्रेसेनिलिन (PS)1 और 2 के चूहे के सेरेब्रल काटेक्स में प्रारम्भिक सन्नियानिक स्टेज से एडलहुड तक भिन्न एक्प्रेशन प्रोफाइल में होता है। (PS)1 और 2 विकासात्मक कार्यों मध्यस्थता कैसे को समझने के क्रम में हम विकास के दौरान माउस सेरेब्रल कॉर्टेक्स के प्रोटीन के साथ (PS)1 और 2 की बातचीत की जांच की। हम PS1 और PS2 उनकी बातचीत विशिष्ट चान पर आधारित है और मस्तिष्क के विकास के लिए आवश्यक विविध कार्यों में शामिल है, बातचीत से पता चला माउस सेरेब्रल कॉर्टेक्स के विभिन्न प्रोटीन के साथ किस हद तक अलग-अलग करने के लिए सुझाव हैं।

६. विभिन्न भोज्य एन्टीआक्सीडेन्ट जैसे हल्दी और क्यूरीटीन में कार्सीनोजेनिक विरोधी क्रिया का परीक्षण किया गया है और उनके आणविक मैकेनिज्म (क्रिया विधि) को लिम्फोमा ग्रस्त चूहों और कोशिका रेखा में चिन्हित किया गया है।

७. यकृत संक्रमण का तंत्रिका विज्ञान: यकृत संक्रमण के निदान में अ-एनएमडीएआर लक्ष्यों का चरित्रीकरण करने के लिये एनएमडीएआर और pannexin-1 के बीच का कार्यात्यम खिंचाव जो कि एक अर्द्ध चैनल होता है, कई प्रकार की तंत्रिका रोग विज्ञान में पाया जाता है को एक सत्य पुराने विफल यकृत के ढांचे जो कि यकृत संक्रमण का दशा में देखा गया। panx-1 बनाम एनएमडीएआर उपइकाईयों की रूप रेखा को चूहे की यकृत संक्रमण की कार्टेक्स और सेरीबेलम में उपस्थित n Nos सक्रियन के साथ तुलना की गयी।

८. कैंसर रोधी तत्वों का कैंसर माडल में जैवरासायनिक और आणविक वर्गीकरण में फिसेटीन और इमोडीन दो प्राकृतिक तत्व है जो AFB1 हियेटिक कासीनोमा माडल्स में कासीनोजेसिस के Akt-HIF1- α पाथवे को नियमित कर कम कर सकते हैं। ये तत्व सामान्य उतक पर बिना किसी निषाक्त प्रभाव डाले सिर्फ ट्यूमर कोशिका में एपोटरोसिस उत्पन्न कर देते हैं।

९. AMPAR $GluR^2$ उपइकाई के प्रकयीकरण में विकास और आयु-आधारित बदलाव : हिप्पोकैम्पस में $GluR^2$ उपइकाई का प्रकटीकरण विभेदात्मक रूप से ठीक की जाती है जो कि विकास और आयु के फलन के रूप में होती है। यह भी देखा गया है कि $GluR^2$ उपइकाई का विभेदात्मक प्रकटीकरण आयु आधारित यातायात प्रोटीन जैसे कि स्ट्राजिन, PSD95 और PICK1 के विभेदात्मक प्रकटीकरण से सम्बन्धित होता है।

१०. टेस्टोस्टीरोन के द्वारा Fmr-1 जीन के प्रकटीकरण का आयु आधारित दुरूस्तीकरण: Fmr-1 जीन का वयस्क चूहे के मस्तिष्क

में प्रकटीकरण कम दुरूस्त हा पाता है। जबकि यह उस चूहे में जिसमें जननांगों का द्विपार्श्विक बन्ध्याकरण किया जा चुका हो में अच्छी तरह से ठीक हा जाता है। बछिया चूहे में टेस्टोस्टेरोन देने पर Fmr-1 जीन के प्रकटीकरण में जो कि ताजे नियंत्रित दोनो आयु वर्ग के चूहों में था में बन्ध्याकरण का विपरीत प्रभाव देखा गया।

11. Fmr-1 जीन के प्रकटीकरण में विकास आधारित बदलाव: जन्म के ७ दिन बाद सेरीब्रल कार्टेक्स में Fmr-1 नकल बहुत अच्छी तरह से दुरूस्त हो जाती है। हमारे आकड़े यह बताते है कि Fmr-1 जीन के प्रकटीकरण में विकास आधारित बदलाव का दुरूस्तीकरण नकल कारक SP1 के विभेदात्मक खिचाव का कथन होता है साथ ही इसके ज्ञानात्मक एफएमआर-१ उत्साहक क्रम का भी फलन होता है।

12. $CoCl_2$ प्रेरित अल्प ऑक्सीजन आपूर्ति के कारण प्रति आक्सीकारक किण्व के प्रकटीकरण में बदलाव : जैसे रासायनिक अल्प ऑक्सीजन आपूर्ति अवस्था सुपर आक्साइड डिस्म्युटेज तथा कैटलेज के प्रकटीकरण का कम दुरूस्तीकरण करते हैं जो कि उनका मस्तिष्क में कम सक्रिय होने से सम्बन्धित होता है।

१३. लिम्फोमा से प्रभावित प्लीहा में प्लीहा विशेष समरूपी पीएएक्स ५ और एटाक्सिन-७ को दर्शाना बहुत ही रोचक था। यह भी मुल्यांकन किया गया कि भौतिक रसायन विज्ञान प्लीहा विशेष किण्विक और प्रोटीन के इंगितकर्ता प्लीहा के बढ़ने पर लसिकीय विभाजन अनियमितता किस प्रकार से एक डाल्टन लिम्फोमा से ग्रसित चूहे में कैसा व्यवहार दिखाता है।

विभाग/केन्द्र का नाम **मस्तिष्क शोध केन्द्र**	नम्बर स्पोन्सर्ड आर एवं डी प्रोजेक्ट्स	मूल्य (लाखों में)	अवधि	स्पोन्सर्ड एजेंसी का नाम
प्रो. एम.के. ठाकुर	(१) विभिन्न आयु में चूहों के मस्तिष्क में पेरिनेटल एक्सपोजर टू बीसफिनोल ए का उनके सायनेप्टिक प्रोटीन्स के अभिव्यक्ति एवं नियमन पर प्रभाव।	५१.६३	२०१२-२०१५	डी.बी.टी.
	(२) पेरिनेटल वायरल इन्फेक्शनः चूहों में विकास, वयस्कावस्था एवं वृद्धावस्था के समय न्यूरोइम्यूनोलाजिकल, मालेक्यूलर एवं संज्ञानात्मक परिणाम।	२८.४०	२०१२-२०१५	डी.बी.टी.
प्रो. एस.के. त्रिगुन	(१) एल्कोहल I-एफ्लोटोक्सीन बी.१ उत्पन्न हेपैटोसेल्युलर कार्सिनोमा में सी.ओ.एक्स.२ - ई.पी.आई. पाथवे का निहितार्थ एवं इसका एलोइ - एमोडीन द्वारा मोड्युलेशन।	२०.२८	२०११-२०१४	सी.एस.आई.आर.
	(२) वृद्ध चूहों में न्यूरोनल डीरेन्जमेन्ट्स के हायपरमोनेमिक मॉडल में एन.एम.डी.ए.आर. - एस.आई.आर.टी.-१ पाथवे का निहितार्थ।	३५.००	२०१३-२०१६	आई.सी.एम.आर.
	(३) नाइट्रिक आक्साइड सिन्थेसिस का माड्युलेशन एवं फाइसटिन द्वारा हेपैटोसेल्युलर कार्सिनोमा में एपोप्टोसिस का उत्पन्न होना।	११.८०	२०१२-२०१५	यू.जी.सी.
प्रो. एस. प्रसाद	(१) चूहों के मस्तिष्क में बाकोपा मोनियेरा एक्सट्रेक्ट द्वारा हायप्रोक्सिया प्रभाव से उत्पन्न मेटाबोट्रोपिक ग्लूटामेट रिसेप्टर के अभिव्यक्ति में बदलाव एवं उसके नियमन का अध्ययन।	९.०३	२०१३-२०१६	यू.जी.सी.
	(२) ड्रग -इन्ड्यूस्ड परकिन्सन डिजिज (पी.डी.) माउस मॉडल के मस्तिष्क में स्मृति सम्बन्धित जीन के अभिव्यक्ति में दलाव का विश्लेषण।	५०.००	२०१३-२०१६	आई.सी.एम.आर.
डा. आर. मिश्रा	(१) लिम्फोमा प्रोटेओमिक एण्ड एन्जायमेटिक अध्ययनः नान-हाड्गकीन लिम्फोमा में पैक्स ५ एवं ट्रायोसीन काइनेस की भूमिका।	१६.००	२०१३-२०१६	आई.सी.एम.आर.
	(२) चूहों के वृद्ध मस्तिष्क में पैक्स ६ के अभिव्यक्ति एवं नियमन पर अध्ययन।	३.५०	२०११-२०१४	यू.जी.सी.
	(३) पैक्स ६ के कार्यों की क्रियाविधि पर अध्ययन।	१६.५०	२०१२-२०१५	सी.एस.आई.आर.

२.१.४.१०. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र

हाइड्रोजन तीन प्रकार से फासिल एवं पेट्रोलियम को दुगुर्णो से बचाने में समर्थ है। पानी से सौर ऊर्जा द्वारा उत्पन्न वह आई.सी. इंजन और फ्यूल सेल के प्रयोग के पश्चात् जलकर पुन: पानी में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार यह स्वदेशी, शुद्ध और जलवायु सहयोगी और न समाप्त होने वाला ईंधन है। हाइड्रोजन के प्रसार में सबसे बड़ी बाधा इसके संग्रहण में है। यह वायु से ५६ गुना हल्की होती है। विभिन्न शोधों से यह सिद्ध हो गया है कि इसकी संभरण की सबसे उत्तम अवस्था विधि हाइड्राइड के सालिड रूप में है।

बी.एच.यू. हाइड्रोजन एनर्जी केन्द्र इसके प्रत्येक अवयव जैसे की उत्पादन संग्रहण और प्रयोग के सम्बन्ध में प्रयत्नशील है। विशेष महत्व इसके सग्रहण (storage) पर दिया जा रहा है, जैसे विशेष सॉलिड सांकेतित के रूप में इसे उत्पन्न कर लिया गया है। बी.एच.यू. हाइड्रोजन उर्जा केन्द्र ने दो पहिया वाहन संचालित करने में सफलता प्राप्त की है और विश्व में यह पहला सफल प्रयोग माना जा रहा है। (Peter Hoffman R H Hinds १९९७-२००३) जो कि Sonalika International Cars & Motors Ltd. के सहयोग से हुआ है। पहला तीन पहिया हाइड्रोजन चालित वाहन का.हि.वि.वि. के कुलपति द्वारा २००८ में हस्तान्तरित किया गया। इसका सार्वजनिक प्रदर्शन दिल्ली के Auto Expo उपनाम MUSTANG जिस पर BHU, MNRE, ICML अंकित था, में किया गया।

वर्तमान में हाइड्रोजन चालित दो तिपहिया वाहन मुख्य द्वार से मन्दिर के बीच संचालित किये जा रहे हैं। हाइड्रोजन चलित टाटा नैनो कार भी २०१३ में सफलतापूर्वक तैयार की गयी है। प्रो. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जिन्होंने जुलाई १०,२०१३ बी.एच.यू. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र के आर एण्ड डी का निरीक्षण किया इससे प्रोत्साहित हुए और कहा कि इसके प्रसार के लिये वाराणसी भारत के हाइड्रोजन सिटी ऑफ इण्डिया के रूप में परिवर्तित होना चाहिए।

यहाँ हाइड्रोजन एनर्जी आर एण्ड डी का विस्तार नये प्रयोगों, फोटोइलेक्ट्रो केमिकल, फोटोकेटालायटिव और फोटो इकोलॉज़िकल के मार्ग से किया जा रहा है। न्यू इलेक्ट्रोडेस पीइसी सोलर सेल जिसमें कार्बन नैनो ट्यूब,ग्राफेल के संयोग से यह जानकारी मिली है कि हाइड्रोजन उत्पादन की क्षमता ६० से ८० प्रतिशत बढ़ जाती है। यह हाइड्रोजन उत्पादन पेट्रोलियम की स्पर्धा के रूप में हो जायेगा। इसे नवीन स्टोरज़ मैटेरियलस जैसे की MgH_2 के रूप में भी विकसित किया गया है। हाइड्रोजन के प्रयोग द्वारा घरेलू भोजन सामग्री बनाने का भी प्रयत्न हो रहा है।

२.१.४.११. नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र

वर्ष २००६ में नैनो साइंस टेक्नोलॉजी इकाई की स्थापना डी.एस.टी. एवं बी.एच.यू. के संयुक्त प्रयास से हुई। यह एन.एस.टी.यू. टेक्नोलॉजी ऑफ इण्डिया के नाम से प्रख्यात हुई।

एन.एस.टी.यू. उत्तर विभागीय शोध एवं विकास के रूप में कार्यरत है। इसके शोध एवं विकास का क्षेत्र निम्नलिखित है -

- कार्बन नैनो ट्यूब फिल्टर का विकास।
- एमारफस और ग्लासी एलॉय का संयोग तथा माइक्रोस्ट्रक्चर के साथ यांत्रिक गुणों से सम्बन्ध।
- दिल की धमनी में थक्का रोकने पर सिल्वर नैनो कणों का प्रभाव।
- ग्रेफीन का संयोजन और विभाजन - दाब के बदलाव से ग्राफीन की परतों को निर्धारित करना।

अभी हाल ही में एनएसटीयू ने टारगेटेड ड्रग डिलेवरी क्षेत्र में शोध एवं विकास का उल्लेखनीय कार्य करते हुए ग्रेफीन को L.Crysteme से जोड़ दिया है। Amphotericine B दवाई के हस्तान्तरण के लिये Gr-cysteme कार्यवाहक से जोड़ने का कार्य किया गया।

इस संयोजन (F-Gr-AMB) की जाँच रमन स्पेक्ट्रोमीटर, एफटीआईआर, एसइएम और टीइएम द्वारा की गयी। F-Gr-AmB को दिखाने के लिये J774A की तरफ Laser Cytotoxicity पाई गई। AmB (प्रभाव ७०.४%) की जगह इ-Gr-AmB समूह (प्रभाव ८७.८%) की तुलना करते हुए प्रयोग किया गया और इ-Gr-AmB समूह को ज्यादा सुरक्षित और प्रभावशाली पाया गया।

उपरोक्त कार्य नेचर इण्डिया २०१३ के संस्करण में उच्च स्तरीय शोध के रूप में उदाहरण स्वरूप प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त टारगेटेड ड्रग डिलेवरी और नवीन नैनो पदार्थ जिसमें Glassy Alloys Multiferroic नवीन पदार्थ graphene के मिश्रण द्वारा नये पदार्थ विकसित किये जा रहे हैं।

बी.एच.यू., एन.एस.टी.यू. जिन शोध एवं विकास कार्यों में प्रयत्नशील है उसे एपेक्स वैक्सिन वैज्ञानिकों जैसे प्रो. सी.एन.आर. राव, प्रो. चिदाम्बरम, प्रो. एस.बी. बनर्जी द्वारा अत्यधिक सराहा गया है।

२.१.५. स्कूल

२.१.५.१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल
२.१.५.२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल
२.१.५.३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

२.१.५.१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल, कमच्छा

भारतीय संस्कृति एवं हिन्दूधर्म के प्रति समर्पित इंग्लैण्ड में जन्म लेने वाली डॉ. एनी बेसेण्ट ने भारत की प्राचीन सांस्कृतिक राजधानी काशी में ७ जुलाई, १८९८ को सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना की। सन् १९१४ में सी.एच.सी. ट्रस्ट द्वारा यह विद्यालय महामना मदनमोहन मालवीय जी को समर्पित कर दिया गया। इसी विद्यालय की आधारशिला पर सन् १९१६ बसन्त पंचमी को भव्य समारोह के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया गया। वर्तमान समय में यह विद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का अभिन्न अंग है। १९७७ से यहां की परीक्षा सी.बी.एस.ई. द्वारा सम्पन्न करायी जा रही है। उदार दानदाताओं द्वारा निर्मित अनेक कक्षों समेत काशी राज द्वारा प्रदत्त विशाल भवनों में संचालित इस विद्यालय के पास चतुर्दिक हरे भरे वृक्षों से परिवेष्टित विशाल मैदान, लगभग ३२ हजार पुस्तकों, आधुनिक पत्र-पत्रिकाओं से समृद्ध विशाल एवं भव्य ''तैलंग पुस्तकालय'' तथा आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित की प्रयोगशालाएँ है। विद्यालय का नव निर्मित भव्य प्रवेश द्वार विश्वविद्यालय की प्रतिच्छवि को धारण करता हुआ लोगों को बलपूर्वक अपनी ओर आकर्षित करता है। कैन्टीन सुविधा के साथ ही सुदूर स्थानों से आगत छात्रों के लिए ५० कक्षों वाला 'सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल छात्रावास' विद्यालय की गरिमा में चार चाँद लगाने का कार्य करता है। सम्प्रति १०० छात्र इस छात्रावास की सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। यद्यपि छात्रों की विशाल संख्या के सामने यह सुविधा अतिन्यून है। वर्तमान समय में विद्यालय में कक्षा छठवीं से बारहवीं तक छात्रों की कुल संख्या २०००, स्थायी शिक्षक/शिक्षिकाओं की संख्या ५६ तथा संविदा के अन्तर्गत नियुक्त शिक्षक/शिक्षिकाओं की संख्या २० है। विद्यालय में +२ स्तर तक कला, वाणिज्य तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक के साथ ही हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था है। एन.सी.सी. की चार शाखाएँ स्थल सेना, जूनियर डिवीजन की दो तथा सीनियर डिवीजन की एक तथा वायुसेना की एक विंग स्थापित है। विद्यालय में अध्ययनरत मेधावी परन्तु आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की सहायता हेतु 'विद्यार्थी सहायक संघ (वीएसएस)' की स्थापना की गई है जिससे प्रतिवर्ष अनेक छात्रों को शुल्कमुक्ति, समुचित आर्थिक मदद, पुस्तकें, यूनिफार्म आदि की सुविधा प्रदान की जाती है। कई ऐसे कोष स्थापित हैं, जिनसे मेधावी छात्रों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जाती है।

पाठ्यसहगामी क्रियाएँ

विद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्रों को चार सदनों (शिवाजी, टैगोर, अशोक, रमन) में विभाजित कर वर्ष पर्यन्त अन्तर्सदनीय वाद-विवाद, व्याख्यान, खेलकूद के साथ ही गणित, विज्ञान, कला, संगीत आदि की विविध स्पर्धाएं आयोजित होती रहती हैं। इसमें श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रार्थना सभा में पुरस्कृत किया जाता है। विद्यालय में विशिष्ट महापुरुषों की जयन्तियों जैसे-गाँधी जयन्ती, मालवीय जयन्ती, एनी बेसेण्ट जयन्ती, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती आदि का उत्साहपूर्वक आयोजन होता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की झाँकी शहर के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र होता है। वार्षिक खेलकूद के अन्तर्गत क्रिकेट, फुटबाल, बॉलीबाल, दौड़, कूद, बास्केटबाल, टेबल टेनिस की स्पर्धाएँ आयोजित होती है। छात्रों एवं शिक्षकों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाने के उद्देश्य से डॉ. डी.एन. शर्मा के मुख्य सम्पादकत्व में प्रतिवर्ष विद्यालयीय पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन २००३ से अनवरत् हो रहा है।

विशिष्ट उपलब्धियाँ

- सी.बी.एस.ई. कक्षा १२-२०१५ का परीक्षाफल ९८% रहा। शिवभानु सिंह (विज्ञान, गणित वर्ग) ९६% प्रणव कुमार मिश्र (जीव विज्ञान वर्ग) ९०.८%, सौरभ कुमार (कला वर्ग) ९३.६% तथा आदर्श अग्रवाल १२ (वाणिज्य वर्ग) ९०.८% अंक प्राप्त कर अपने अपने वर्ग में प्रथम स्थान पर रहे। सी.बी.एस.ई. कक्षा का परीक्षाफल १००% रहा तथा ४० छात्रों को सभी विषयों में १० सीजीपीए मिला। कक्षा ६ से ९ तक का विद्यालयीय परीक्षाफल ९५% प्रतिशत रहा। सीबीएसई के उत्कृष्ट ०.१% के अन्तर्गत ६ छात्र तथा ६ छात्राओं को दक्षता प्रमाण पत्र प्रदान किये गये जो उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन का परिचायक है।
- इस वर्ष विद्यालय को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित झांकी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान मिला ।
- अपने प्रथम प्रयास में ही विद्यालय के १७ छात्र जेईई - २०१५ की परीक्षा में अच्छी रैंक के साथ चयनित हुए, १ छात्र मेडिकल तथा ६० से अधिक छात्रों को यूपीटीयू की परीक्षा में अच्छे रैंक के साथ चयनित होने का सौभाग्य मिला।

नकद छात्रवृत्ति/ पुरस्कार प्राप्त करने वाले मेधावी छात्र

- प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विद्यालय के मेधावी छात्र नगर तथा प्रदेश की प्रसिद्ध संस्थाओं द्वारा वर्ष पर्यन्त आयोजित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं/परीक्षाओं में सम्मिलित होकर अपनी मेधा के बल पर पुरस्कार या छात्रवृत्ति के रुप में नकद धनराशि तथा प्रमाण पत्र प्राप्त करते है। ऐसे छात्रों की संख्या शताधिक है। कुछ मुख्य विजेताओं की सूची इस प्रकार है :-
- वाराणसी नगर की सुप्रसिद्ध संस्था एसएमएस (स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंस) वाराणसी द्वारा आयोजित ''स्मार्ट - २०१४'' में विद्यालय के श्री मयंक विश्वकर्मा १२ए१ ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर रुपये १००००/- की धनराशि पुरस्कार स्वरुप प्राप्त की। श्री अरविन्द कुमार १२ए१ , श्री हिमांशु कुमार १२ए१ श्री कार्तिक कुमार पाण्डेय १२ए३ तथा अक्षय गुप्ता इन चार छात्रों (प्रत्येक) को २५, २५ सौ रुपये की धनराशि पुरस्कार के रुप में प्राप्त हुई।
- गाँधी जयन्ती के अवसर पर 'हिन्दी कविता पाठ' प्रतियोगिता में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा अलीराजा १०ई को प्रथम पुरस्कार रुपये १०००/- श्री सौरभ कुमार १२एफ को द्वितीय स्थान रुपये ७५०/- श्री अनिन्द्य नारायण सिंह ९ तृतीय स्थान ५००/- श्री शुभम् त्रिपाठी १२एफ तथा श्री लखन कुमार मिश्र १२एफ को ३-३ सौ रुपये प्रोत्साहन स्वरुप प्रदान किया गया। इसी अवसर पर 'कला प्रतियोगिता' में रोमित राज ९डी को प्रथम स्थान रुपये १०००/- श्री अमूल वर्मा -११बी२ द्वितीय स्थान रुपये ७५०/- श्री राहुल सिंह ११एफ तृतीय स्थान रुपये ५००/- श्री आदर्श कुमार राव ११एफ तथा राकेश कुमार ९ए ने रुपये ३-३ सौ का सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में आयोजित 'हिन्दी निबन्ध लेखन' प्रतियोगिता में श्री अमन मिश्र-८बी तथा श्री प्रतीक रंजन १०बी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर रुपये १५-१५ सौ, श्री मुकेश कुमार १०डी ने द्वितीय स्थान १२००/- तथा निमिष १०सी तृतीय स्थान १०००/- का पुरस्कार प्राप्त कर विद्यालय को गरिमामण्डित किया है।
- आकाश इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित "ANYTSE – २०१४'' प्रतियोगिता में श्री गणेश रंजन यादव ७ ने अखिल भारतीय स्तर पर ५वीं रैंक लाकर १५०००/- की धनराशि पुरस्कार स्वरुप प्राप्त की, श्री केशव रंजन AIR-८वीं रैंक लाकर १००००/- श्री अमित विश्वकर्मा AIR-२४वीं रैंक लाकर, ८०००/- श्री अंकित कुमार AIR-४४वीं रैंक लाकर ८०००/- श्री प्रकाश तिवारी ने ४६वीं रैंक लाकर ८०००/- की धनराशि पुरस्कार स्वरुप प्राप्त कर विद्यालय का नाम रौशन किया है।
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा मालवीय भवन में आयोजित फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में शुभम तिवारी को तृतीय स्थान ४००/- प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। कला प्रतियोगिता में अमूल वर्मा XIB२ का तृतीय स्थान ४००/- तथा आदर्श कुमार राव ११एफ को २५०/- सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- मिस के.के. पेन्टल स्मृति छात्रवृत्ति'' के रुप में दो-दो हजार रुपये विद्यालय के तीन छात्रों को प्राप्त हुई। छात्रों के नाम हैं:- श्री प्रशान्त गुप्त, श्री सुधांशु यादव, तथा श्री विधुभूषण।
- गोस्वामी तुलसीदास अखाड़ा, संकट मोचन, वाराणसी द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में रोनित राज कक्षा ९डी को प्रथम स्थान ७००/- का पुरस्कार तथा भाषण प्रतियोगिता में आकाश कुमार को तृतीय स्थान ३००/- का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- विद्यालय के छः छात्रों को ''इण्डियन आयल स्कालरशिप'' के रुप में प्रत्येक का १८-१८ हजार रुपये की धनराशि प्राप्त हुई। यह छात्रवृत्ति सीबीएसई की परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रदान की जाती है। प्रतिभाशाली छात्रों के नाम है:- श्री अरविन्द कुमार ११, श्री रिषभ कुमार वर्मा ११ श्री आशुतोष कुमार सिंह ११ श्री अरुप कुमार ११ श्री शुभम उपाध्याय ११ एवं श्री लाल बाबू कुशवाहा १२।
- अंकित कुमार ७ को एन.ए.एस.आई.एस. द्वारा रुपये १०००/- की छात्रवृत्ति प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर प्राप्त हुई।
- श्री निवास रामानुजन स्मृति अन्तर्विद्यालय गणित प्रतियोगिता २०१४'' जो जनपद स्तर पर आयोजित होती है तथा जिसमें वाराणसी के प्रतिष्ठित विद्यालयों के मेधावाी छात्र प्रतिभाग करते हैं, में विद्यालय के कुल ३१ छात्रों को अपनी-अपनी कक्षा में विशिष्ट प्रदर्शन के आधार पर नकद धनराशि छात्रवृत्ति के रुप में प्राप्त हुई है।
- वर्ष पर्यन्त विभिन्न विद्यालयों /संस्थाओं द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित करने वाले छात्रों की संख्या ६० है।

- छात्रों में आध्यात्मिकता की भावना के साथ ही नैतिकबल, साहस, सत्संस्कार, मूल्यबोध, दायित्वबोध आदि भावनाओं को विकसित करने के उदेश्य से समय-समय पर विभिन्न विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा त्रिदिवसीय मूल्यबोध कार्यक्रम।
- गीता जयन्ती के अवसर पर गीतापाठ, गीता अन्त्याक्षरी।
- गायत्री परिवार द्वारा त्रिदिसीय आध्यात्मिक पुस्तक मेला।
- गायत्री परिवार द्वारा ही भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा। चातुर्वेद संस्कृत प्रचार संस्थानम द्वारा भारतीय वैभव ज्ञान परीक्षा सम्पन्न हुई। इन प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त छात्रों को नकद धनराशि, प्रमाण-पत्र पदक एवं स्मृति चिह्न द्वारा सम्मानित किया गया।
- ०७ अगस्त से १३ अगस्त २०१४ तक संस्कृत सप्ताह मनाया गया, जिसमें अन्याक्षरी, संस्कृत सम्भाषण, श्लोक वाचन आदि की प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं।
- राजभाषा प्रकोष्ठ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्देशन मे राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में २ सितम्बर से १६ सितम्बर तक 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं गोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। विद्वानों के व्याख्यान हुए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया।
- इस वर्ष केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, स्मृति ईरानी द्वारा प्रदत्त विद्यालय के छात्रों को परीक्षा में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्टिफिकेट ऑफ एपरेसिएशेन से सम्मानित किया गया। विद्यालय के छ: शिक्षकों को भी यह सम्मान प्राप्त हुआ।
- विज्ञान में रुचि जागृत करने के उद्देश्य से इंशपिरेशन एण्ड इनोवेशन्स कार्यक्रम के तहत 'विज्ञान-ज्ञान विजन इण्डिया' द्वारा श्रीमती अनीता मेश्राम (अध्यापिका) के निर्देशन में 'आओ वैज्ञानिक बनें' का त्रिदिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें विज्ञान के विभिन्न पहलुओं, आविष्कारों, क्रियाओं से छात्रों को अवगत कराया गया।
- इस विद्यालय के साथ ही साथ नगर के विद्यालयों के मेधावी एवं निर्धन छात्रों को 'मिस के.के. पेन्टल स्मृति छात्रवृत्ति' के रूप में हजार रु. प्रति छात्र को प्रदान किया जाता है। यह कार्य मिस पेन्टल (भूतपूर्व प्राचार्या, से.हि. गर्ल्स स्कूल के भ्रातृज श्री नागेन्द्र सिंह ममिक जी द्वारा सम्पन्न किया जाता है)। इस वर्ष उन्होंने इस छात्रवृत्ति की धनराशि को बढ़ाने के उद्देश्य से एक लाख रुपये और विद्यालय को प्रदान किया है। इसके लिए विद्यालय परिवार उनका कृतज्ञ है। इसकी कुल धनराशि दो लाख रुपये जमा है।
- रेसोनेन्स इंस्टीट्यूट, कोटा, राजस्थान द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर स्टार्ट (स्कालरशीप एण्ड टेलेंट रेवार्ड टेस्ट) आयोजित हुआ इसमें हमारे विद्यालय के छात्रों ने अखिल भारतीय स्तर पर अच्छे रैंक लाकर इन्होंने स्वयंको, अपने माता-पिता को तथा विद्यालय को गौरवान्वित किया है। इसके लिए उन छात्रों को कोटा में पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन के बदौलत विद्यालय को ५०,०००/- तथा प्राचार्य को ५०,०००/- की धनराशि का चेक पुरस्कार स्वरुप प्राप्त हुआ। संस्था के क्षेत्रीय संयोजक श्री सुशील कुमार मिश्र ने विद्यालय के एक विशेष समारोह में यह धनराशि प्राचार्य को समर्पित की।
- सनातन धर्म इण्टर कॉलेज, वाराणसी द्वारा आयोजित शताब्दी वर्ष महोत्सव- २०१४ में हमारे विद्यालय के शुभम् गौड़ कक्षा ११ को बेस्ट कोरियोग्राफी के लिए प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्रीराम नाईक द्वारा स्मृति चिहन तथा प्रमाणपत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।
- संस्कार भारती, काशी के तत्त्वावधान में दिनांक १०/०२/२०१५ को विद्यालय के सरगा हाल में चित्रकला प्रतियोगिता जूनियर तथा सीनियर दो वर्गो में आयोजित हुई। दोनों वर्गो में नगर के लगभग ७० छात्रों ने प्रतिभागिता की। इस प्रतियोगिता का विषय था 'नशामुक्त, स्वच्छ पर्यावरण युक्त काशी महानगर'। निर्णायक के रूप में श्री सुनील विश्वकर्मा, असि. प्रोफेसर, ललित कला संकाय, काशी विद्यापीठ उपस्थित थे। प्रतियोगिता में मनीष कुमार कक्षा (जूनियर वर्ग) को प्रथम स्थान का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

शैक्षिक भ्रमण

विद्यालय के तीन शिक्षक/शिक्षिकाओं श्री रामआसरे, श्रीमती सोनी कुमारी, डॉ सोनी स्वरुप के निर्देशन मे इतिहास विभाग के १२ छात्रों का दल दिनांक १६.०१.२०१५ से १९.०१.२०१५ तक आगरा, फतेहपुर सीकरी का भ्रमण कर अपना ज्ञानवर्द्धन किया।

निर्माण

विश्वविद्यालय द्वारा विद्यालय के रसायन विज्ञान प्रयोगशाला के एक जर्जर भाग का जीर्णोद्धार कराया गया। अब यह प्रयोगशाला पूर्ण सुसज्जित रुप में छात्रों के लिए उपलब्ध है।

सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल द्वारा आयोजित विभिन्न शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

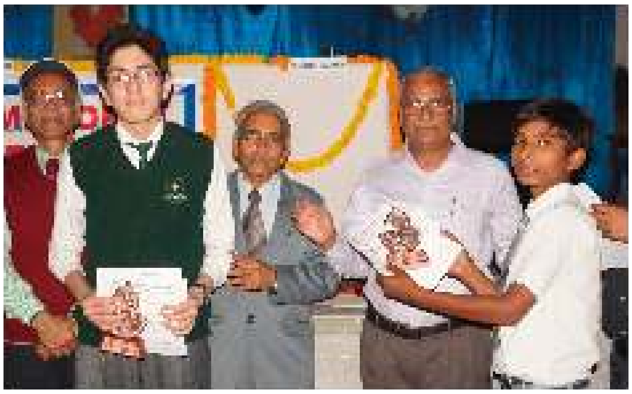

२.१.५.२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल

सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्राचीन एवं सर्वोत्कृट विद्यालयों में से एक हैं। यह प्राचीन मध्यकालीन तथा आधुनिक मूल्यों से नव जीवन के बौद्धिक तथा मानसिक विकास के साथ-साथ उन्हें नवीनता की ओर अग्रसर करने का माध्यम है। १९०४ में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज के नाम से इसकी नींव रखी गयी तथा ट्रस्ट बोर्ड ने इसे एनी बेसेन्ट के सपनों को महिला उत्थान हेतु अपनी हरी झंडी भी दे दी। १९१६ में यह महामना पं. मदन मोहन मालवीय के उज्जवल सपनों की मूर्ति के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक अभिन्न अंग बना। यह विद्यालय मालवीय जी के सुविचारों से ओत प्रोत होने के साथ-साथ बालिकाओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षित करने का भी कार्य करता है। यहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य व सांस्कृतिक विधाओं की मूल्यपरक शिक्षा दी जाती है। यहाँ सम्बन्धित विषयों की सुसज्जित प्रयोगशालाएं व पुस्तकालय है। यह विद्यालय सीबीएसई द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है।

शैक्षिक सुविधायें

सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल नर्सरी से कक्षा १२ तक शिक्षा प्रदान करता है। कक्षा नर्सरी से ५ तक की शिक्षा कोल्हुआ परिसर में दी जाती है, जिसकी प्रकृति सह-शैक्षिक है। कक्षा ६ से १२ तक की कक्षायें सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल कमच्छा परिसर में दी जाती है जो कि पूर्णतया बालिकाओं की शिक्षा से जुड़ा है। नर्सरी में प्रवेश लॉटरी प्रक्रिया से लिया जाता है। कक्षा ९ तथा ११ में प्रवेश, विद्यालय में, प्रवेश परीक्षा के माध्यम से होता है।

गतिविधियां

छात्र-छात्राओं के सर्वतोमुखी विकास के लिए विभिन्न क्लब, गतिविधियाँ तथा पाठ्य सहगामी क्रियायें क्रियान्वित की जाती हैं, जिसमें वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, चित्रकला, नृत्य, संगीत प्रतियोगिताएँ, खेल सम्बन्धी विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त इकोक्लब, साइंस क्लब, साहित्यिक क्लब, योगा, स्पोर्टस क्लब, रेडक्रॉस, एनसीसी आदि क्रिया-कलाप वर्ष पर्यन्त चलते रहते हैं। विद्यालय राजभाषा हिंदी के उन्नयन के लिए सतत् प्रयत्नशील है।

हमारे एन.सी.सी. प्रशिक्षण तथा सर्टिफिकेट कोर्स हेतु जूनियर डिविजन एन.सी.सी. ब्रांच २८ यू.पी. गर्ल्स बटालियन बी.एच.यू. से संचालित है। वोकेशनल गाइडेंस जो प्रो. उमेश सिंह, बी.एच.यू. द्वारा दिया गया, छात्राओं के भविष्य के लिये सफल प्रयास रहा।

हमारा विद्यालय अपने प्रांगण की छिपी, नवनिर्मित, प्रगतिशील प्रतिभा को एक साहित्यिक धरातल, वार्षिक पत्रिका 'पारमिता' के माध्यम से प्रदान करता है।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियो को एनी बेसेन्ट, लक्ष्मी बाई, गोदावरी बाई तथा सरोजिनी नायडू सदन के माध्यम से पूर्ण कराया जाता है। हमारे प्रांगण में सभी महत्वपूर्ण जन्म दिवस, हिन्दी दिवस, पर्यावरण दिवस, राष्ट्रीय एकता दिवस, साक्षरता दिवस तथा स्वच्छता अभियान दिवसों को हर्षोल्लास से मनाया गया।

महत्वपूर्ण शैक्षिक उपलब्धियाँ

- विद्यालय में एआईएसएससीई की परीक्षा २०१४-१५ में विद्यालय का परीक्षाफल ९९% तथा एआईएसएससीई में परीक्षाफल १००% रहा।
- वर्ष २०१४-१५ में कक्षा १२ की छात्रा नेहा पाण्डे ने (बायो ग्रुप) ९७% अंक प्राप्त किया जो कि भारत में तृतीय प्रदेश में प्रथम तथा विद्यालय में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
- कक्षा १२ की ही छात्रा इमोन चक्रवर्ती ने ९५.८% अंक प्राप्त करते हुये विद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

- आर्या केशरवानी ने पी.एम.सी. ग्रुप से एआईएसएससीई में ९५.६% अंक प्राप्त किया।
- अदित्यांशू भारद्वाज कक्षा १२ कला वर्ग की छात्रा ने ९४.८% अंक पाकर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- बुसरा खानम ने ९४.६% अंक प्राप्त कर कक्षा १२ कला वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- एआईएसएससीई कक्षा १० की परीक्षा में १३ छात्राओं ने १० सीजीपीए (ग्रेड प्वाइन्ट) पाकर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया।
- अर्पिता बसाक कक्षा १२ (कला वर्ग) ने संगीत गायन में शत प्रतिशत अंक प्राप्त किया।
- अस्मिता परमार कक्षा १२ (कला वर्ग) ने इतिहास में शत प्रतिशत अंक प्राप्त किया।
- श्रद्धा सिंह कक्षा १२ (विज्ञान वर्ग) ने संगीत वादन में शत प्रतिशत अंक प्राप्त किया।

विशेष उपलब्धियाँ

- सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल को श्री कृष्ण जन्माष्टमी झांकी उत्सव १७.०९.२०१४ के अवसर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।
- बनारस दुर्गोत्सव समिति द्वारा आयोजित भजन प्रतियोगिता में सुश्री पूजा बसाक को द्वितीय पुरस्कार दिया गया।
- बनारस दुर्गोत्सव समिति द्वारा आयोजित 'रंवीन्द्र संगीत' गायन में सुश्री पूजा बसाक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- सुश्री गौरी कविमंडन को भजन प्रतियोगिता जो कि मालवीय भवन में आयोजित थी को तृतीय पुरस्कार मिला।
- दुर्गोत्सव समिती बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी ने ''कलियुग की दुर्गा'' नामक नृत्य नाटिका को प्रथम स्थान दिया।
- ५वीं उत्तर प्रदेश स्पीड बॉल चैम्पियनशिप कानपुर २०१४ में विद्यालय की सुश्री पद्मजा पाण्डेय कक्षा १२ ने स्वर्ण पदक सीनियर वर्ग में तथा जूनियर वर्ग में सुश्री काजल कुशवाहा कक्षा ९ ने कॉस्य तथा सुश्री शैलजा पाण्डेय कक्षा १० ने रजत पदक जीता।
- ४वीं फेडेरेशन नेशनल स्पीड बॉल कप दिल्ली २०१४ में सुश्री पद्मजा पाण्डेय कक्षा १२ ने रजत पदक प्राप्त किया।
- ४३वीं सीनीयर स्टेट खो-खो चैम्पियनशिप आगरा २०१४ ने प्रेरणा सुश्री तनेजा कक्षा ९, सुश्री अरवि कक्षा ९, तथा सुश्री काजल कक्षा ९ को ब्रोंज मेडल से सम्मानित किया।
- सुश्री काजल कुशवाहा कक्षा ९ को ६वीं उत्तर प्रदेश स्पीड बॉल चैम्पियनशीप के लिये स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।
- अन्डर १४ ईयर्स एज ग्रुप में ०३ छात्राओं ने भाग लिया, जिसमें सुश्री काजल कुशवाहा कक्षा ९ ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- सी.बी.एस.ई. क्लस्टर ४ एथलीट मीट डी.ए.वी. पब्लिक सकूल कैंट एरिया गया बिहार २०१४ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में सुश्री दीपस राय कक्षा १२ ने १५०० रेस में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- २९ अगस्त २०१४ को विद्यालय में रेड क्रॉस सोसायटी द्वारा डी.रे.का. 'सेन्ट जॉन एम्बुलेन्स' के सहयोग से एक कार्यशाला का आयोजन करवाया जिसमें प्राथमिक सहायता का जीवन्त प्रदर्शन किया गया।
- सुश्री ज्योति कुमारी कक्षा १२ को एन.सी.सी. फायरिंग प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- सुश्री सुनीता कुमारी को एन.सी.सी. कैम्प में वॉलीबॉल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिला।
- राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले एनएसटीएसआर - २०१४ प्रतियोगिता में सुश्री नेहा पाण्डे कक्षा १२ को प्रदेश में प्रथम, देश में तृतीय तथा विद्यालय में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विद्यालय प्रांगण में एक सेमिनार का भी आयोजन किया गया जिसका विषय था 'हिन्दी की प्रासंगिकता'।
- गाँधी जयन्ती २०१४ कला प्रतियोगिता बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित में स्प्रीहा मौर्या कक्षा १२ को प्रथम पुरस्कार स्वरूप रू.१०००/- प्राप्त हुये।
- गाँधी जयन्ती की इसी प्रतियोगिता में सुश्री सोनाली पाल को कविता पाठ हेतु प्रथम पुरस्कार रू.१०००/- तथा सुश्री अस्मिता परमार को द्वितीय पुरस्कार स्वरूप रू.७५०/- से सम्मानित किया गया।

२.१.५.३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

श्री रणवीरसंस्कृत विद्यालय का पिछला इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। पं. अम्बा दास शास्त्री एवं पं. अनन्त राम शास्त्री, जो पूज्य मदन मोहन मालवीय के गुरुतुल्य अध्यापक रहे, इस विद्यालय के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। प्रवेशिका (कक्षा - ८) से आचार्य (एम ए) स्तर की कक्षाऐं इस विद्यालय में चला करती थी और यहाँ तक की प्रमाणपत्र भी उपर्युक्त महानुभावद्वय के हस्ताक्षर द्वारा जारी होते थे।

प्रारम्भ में इस विद्यालय की स्थापना जम्मू के सदरे रियासत द्वारा १८८३ में प्रचीन भारतीय ज्ञान के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जम्मू संस्कृत पाठशाला के रुप में जम्मू कश्मीर भवन, जो टेढ़ीनीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी में स्थित है, में हुई थी। कालान्तर में यह विद्यालय सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल कालेजियट सोसायटी के रुप में तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. एनी बेसेन्ट को हस्तांतरित हुई। तदनन्तर विद्यालय का कार्यस्थल कमच्छा स्थित महाराजा काशी नरेश के ऐतिहासिक राजभवन में हो गया एवं विद्यालय का नाम श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय जम्मू सदरे रियासत महाराजा प्रताप सिंह के पिता के नाम पर कर दिया गया। विकास के इस क्रम में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसायटी अस्तित्व में आयी और इस प्रकार रणवीर संस्कृत विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक अभिन्न अंग बन गया जिसका वर्तमान परिसर कमच्छा स्थित काशी नरेश राजभवन है।

प्राच्य विद्या एवं धर्मविज्ञान संकाय (वर्तमान में संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय) के अस्तित्व में आने पर मध्यमा एवं आचार्य पर्यन्त उसकी अग्रिम कक्षाएं वहीं (विश्वविद्यालय) से चलना प्रारम्भ हुई एवं इस विद्यालय में केवल प्रथमा (कक्षा - ८) तक कक्षाएं शेष रह गयीं। यह स्थिति सन् १९६८ तक रही।

जुलाई १९७८ से मध्यमा कक्षाओं में सभी विषयों के चारों भाग (साहित्य, वेद, व्याकरण, ज्योतिष एवं दर्शन) रणवीर संस्कृत विद्यालय में जो पाठ्यक्रम चल रहे हैं, वे निम्नलिखित हैं -

- प्राइमरी कक्षा १ से ५
- प्रथमा (कक्षा ६ से ८)
- प्रवेशिका (कक्षा ९ एवं १०)
- मध्यमा (कक्षा ११ एवं १२)

इस विद्यालय में छात्रों को परम्परागत विषयों (वेद, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन, साहित्य) के साथ-साथ आधुनिक विषयों अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन का भी ज्ञान दिया जाता है जो कि प्राचीन और अर्वाचीन ज्ञान को जोड़ते हुए एक सेतु का कार्य कर रहा है। विज्ञान एवं ज्योतिष प्रयोगशालाओं को विकसित करने हेतु विद्यालय प्रयासरत है। विद्यालय एक विकासशील संस्था के रूप में अग्रसर है।

- वर्तमान में इस विद्यालय का अध्यापन कार्य २० अध्यापक/अध्यापिकाओं द्वारा संचालित होता है, जिसमें ९ अध्यापक विश्वविद्यालय द्वारा संविदा के आधार पर नियुक्त हैं।
- सन् २०१४-१५ में विद्यालय के प्राइमरी विभाग में छात्र/छात्राओं की कुल संख्या १६९ है तथा प्रथमा से मध्यमा कक्षा ६ से १२ तक छात्रों की कुल संख्या ३३३ है।

अन्तरविद्यालय प्रतियोगिताएं

अन्तरविद्यालयीय स्तर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यालय के विभिन्न छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा पुरस्कार अर्जित किये जिनका विवरण इस प्रकार है-

- १४ सितम्बर २०१४ को हिन्दी दिवस के अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ का.हि.वि.वि. द्वारा शीर्षक 'राष्ट्रीय एकता में हिन्दी भाषा का योगदान' पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में मध्यमा द्वितीय वर्ष के छात्र अविनाश पाठक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- सितम्बर २०१४ में ''शारदाभवन श्रीगणेशोत्सव'' में आयोजित 'शास्त्रार्थ प्रतियोगिता' में विद्यालय के मध्यमा द्वितीय वर्ष के छात्र मनीष दीक्षित ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- उसी प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में मध्यमा द्वितीय वर्ष के छात्र पवन मिश्र तथा अविनाश पाठक ने संयुक्त रूप से श्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त किया।
- सितम्बर २०१४ में आजमगढ़ में आयोजित मंडल स्तरीय प्रतियोगिता में मध्यमा द्वितीय के छात्र निलेश मिश्र तथा मध्यमा प्रथम के छात्र पुरुषोत्तम दूबे ने संस्कृत गीत प्रतियोगिता में क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पुरस्कृत छात्रों को राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के लिए भी चयनित किया गया। जिसमें लखनऊ में आयोजित राज्यस्तरीय श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता में मध्यमा द्वितीय के छात्र सत्यकेतु शुक्ल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- २ अक्टूबर २०१४ को स्वच्छता अभियान का शुभारम्भ करते हुए सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं, कर्मचारियों एवं छात्रों ने प्राचार्य के नेतृत्व में पूरे परिसर की सफाई की।
- ११ अक्टूबर २०१४ को 'भारत विकास परिषद् शिवा' के द्वारा वाराणसी जनपद स्तर पर आयोजित 'भारत को जानो' सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में विद्यालय के प्रथमा (कक्षा-६) के छात्र विवेक कुमार तथा प्रथमा (कक्षा-८) के छात्र विवेकानन्द पाण्डेय ने संयुक्त रूप से सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त किया तथा उनका चयन राज्य स्तर की प्रतियोगिता के लिये भी किया गया।
- नवम्बर २०१४ में विद्यालय में अक्षय नवमी के अवसर पर आँवला वृक्ष पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।
- ३० नवम्बर २०१४ को आयोजित जूडो कराटे प्रतियोगिता में प्रथमा के छात्र सुजीत कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- मालवीय जयन्ती के अवसर पर विश्वविद्यालय में आयोजित चित्रकला एवं फैन्सी प्रतियोगिता में प्राइमरी विभाग की छात्रा श्रुति वर्मा, कक्षा-२, गरिमा शुक्ला, कक्षा-५, नन्दिनी, कक्षा-१ को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- २६ जनवरी २०१५ को विद्यालय में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विद्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न समारोह एवं प्रतियोगितायें

- १५ अगस्त २०१४ को विद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर विद्यालय में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम छात्रों द्वारा प्रस्तुत किये गये।
- २८ अगस्त २०१४ को विद्यालय में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर छात्रों द्वारा विद्यालय प्रांगण में विविध झाकियाँ सजा कर भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया। ५ सितम्बर २०१४ को शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यालय में छात्रों द्वारा डॉ.राधाकृष्णन जी के जीवन दर्शन पर चर्चा की गयी एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।
- १४ सितम्बर २०१४ को हिन्दी दिवस के अवसर पर निबन्ध एवं भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना स्थान प्राप्त छात्रों को विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में पुरस्कृत किया गया।
- २५ सितम्बर २०१४ को गाँधी जयन्ती के उपलक्ष्य में विद्यालय प्रांगण में कक्षा १ से ८ के लिये चित्रकला प्रतियोगिता एवं कला ९ से १२ के लिये काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना स्थान प्राप्त छात्रों को २ अक्टूबर २०१४ को विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में पुरस्कृत किया गया।
- २५ दिसम्बर २०१४ को विद्यालय में मालवीय जयन्ती के अवसर पर मालवीय दीपावली मनाई गई।
- २४ जनवरी २०१५ को 'वसन्तपंचमी' के उपलक्ष्य में सरस्वती पूजनोत्सव का आयोजन किया गया।

भविष्य में विद्यालय के भविष्य की विकास सम्बन्धी योजनाएँ:

- नए अध्यापन कक्षों का निर्माण करना।
- एक नवीन पुस्तकालय भवन का निर्माण करना।
- विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण करना।
- ज्योतिष सम्बन्धी उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला का निर्माण।
- एक सुसज्जित संगणक प्रयोगशाला की स्थापना।
- २०० छात्रों के लिए छात्रावास का निर्माण।
- कार्यालय भवन का निर्माण करना।
- मीटिंग हाल का निर्माण करना।
- भाषा प्रयोगशाला का निर्माण करना।
- विविध कार्यक्रमों के आयोजन हेतु स्टेज सहित मल्टी परपज हाल का निर्माण करना।
- साईकिल स्टैण्ड का मरम्मत कार्य कराना।

२.१.६. का.हि.वि.वि. ग्रंथालय प्रणाली

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय, देश के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक है। इस पुस्तकालय की शुरुआत न्यायमूर्ति स्व. काशी नाथ त्रयम्बक तैलंग की याद में उनके पुत्र प्रो. पी.के. तैलंग द्वारा दान स्वरूप प्रदान की गई पुस्तकों के संग्रह से सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज, कमच्छा के तैलंग हाल में हुई। अपने प्रारम्भिक काल में इसे प्रसिद्ध इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने सँवारा और बाद में पुस्तकालय आन्दोलन के जनक डॉ. एस.आर. रंगनाथन व उनके बाद प्रो. पी.एन. कौल व डॉ. जे. एस. शर्मा यहाँ के पुस्तकालयाध्यक्ष बने।

सन् १९१६ में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में स्थापित यह पुस्तकालय सन् १९२१ में आर्टस कॉलेज, वर्तमान कला संकाय के केन्द्रीय हाल में स्थनान्तरित हुआ। वर्तमान भवन में पुस्तकालय सन् १९४१ में आया। पुस्तकालय का वर्तमान भव्य भवन सन् १९२७ में बडौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ के २ लाख रुपये के दान से बना। इसलिए इसका नामकरण भी उन्हीं के नाम पर हुआ। १९३१ में जब मालवीयजी लन्दन के गोल-मेज सम्मेलन से लौटे तो उनके सुझाव पर इसे ब्रिटिश संग्रहालय के स्वरूप पर बनाया गया। इसके भव्य गोलाकार पठन कक्ष में बर्मा की प्रसिद्ध टीक लकड़ी से बने फर्नीचर आज भी विद्यमान है।

इस पुस्तकालय की वृद्धि में देश के प्रसिद्ध व्यक्तियों व उदार परिवारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। सन् १९३१ में ही यहाँ पुस्तकों की संख्या साठ हजार हो गयी। उदार दाताओं में दिल्ली के लाला श्रीराम, कोलकाता के सर आशुतोष चौधरी, श्री सेठ रूपमल गोयनका तथा वर्धा के श्री जमुना लाल बजाज उल्लेखनीय हैं। कई परिवारों ने अपने व्यक्तिगत संग्रह से भी पुस्तकों को दान में दिया जिसके कारण कई प्राचीन व दुर्लभ पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ पुस्तकें १८वीं सदी की भी हैं।

संग्रह

१५ संकायों एवं ११९ विभागों से युक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुस्तकालय की व्यवस्था में शीर्ष पर सयाजीराव गायकवाड़ ग्रन्थालय (केन्द्रीय ग्रन्थालय) है और इसके अतिरिक्त ३ संस्थान पुस्तकालय : चिकित्सा विज्ञान, कृषि विज्ञान तथा पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, ८ संकाय पुस्तकालय विशेषत: कला व विज्ञान संकाय हैं। जहाँ संकाय स्तर पर पुस्तकालय नहीं है वहाँ विभागीय पुस्तकालय हैं जिनकी संख्या ४२ है। साथ ही राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकच्छा, मिर्जापुर में स्थित पुस्तकालय भी कार्यरत है। सभी पुस्तकालयों को मिलाकर यहाँ १६ लाख से अधिक पुस्तकों का संग्रह है। भारत की वृहत विश्वविद्यालय पुस्तकालय व्यवस्था में यह पुस्तकालय व्यवस्था एक है। इस पुस्तकालय में वित्तीय वर्ष २०१४-१५ में ७११५

कुलपति द्वारा केन्द्रीय ग्रन्थालय में 'स्प्रिंगर कीऑस्क' का उद्घाटन

२४ दिसम्बर, २०१४ को केन्द्रीय ग्रन्थालय में 'महामना एवं हिन्दू गौरव ग्रन्थ' विषय पर आयोजित प्रदर्शनी का कुलपति द्वारा उद्घाटन

पुस्तकें एवं ५६०१० ऑनलाइन पुस्तकें जोड़ी गई। पुस्तकालय में १२२ विदेशी पत्रिकायें एवं ३२५ भारतीय पत्रिकायें मुद्रित प्रारूप में आती हैं। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में नि:शुल्क पत्रिकायें भी पुस्तकालय को प्राप्त होती हैं। पुस्तकालय में लगभग ७२२७ पाण्डुलिपियों के अद्वितीय संग्रह के अतिरिक्त दुर्लभ पुस्तक संग्रह, शोध प्रबन्ध संग्रह, विश्वविद्यालय संस्थापक संग्रह, कर्मचारी प्रकाशन संग्रह एवं स्थानीय इतिहास संग्रह भी उपलब्ध हैं।

केन्द्र, राज्य सरकार व उनके अधिकरणों के प्रकाशन विशेषत: समाज विज्ञान, विधि, वाणिज्य, व कृषि विषयों के लिए बहुत उपयोगी सूचना स्रोत हैं, जिन्हें पुस्तकालय या तो क्रय करता है या उपहार के रूप में प्राप्त करता है।

केन्द्रीय पुस्तकालय को संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसके अधिकरणों के प्रकाशन के लिए ''डिपॉजिटरी पुस्तकालय'' का स्थान प्राप्त है। सन् १९७३ में नि:शुल्क वितरण प्रथा के समाप्त हो जाने के बाद भी पुस्तकालय इन प्रकाशनों को डिपॉजिटरी पुस्तकालय सदस्यता योजना के अन्तर्गत खरीदता है। पुस्तकालय की यह विशेषता अन्य किसी भारतीय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में नहीं है।

पुस्तकालय समय

केन्द्रीय ग्रन्थालय वर्ष में ३५९ दिन खुला रहता है। स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, दशहरा, दीपावली, बसंत पंचमी व होली इन छह दिनों में पुस्तकालय बंद रहता है। सामान्यत: पुस्तकालय का समय सप्ताह के दिनों में प्रात: ९.०० बजे से रात्रि ९.०० बजे तक व रविवार व छुटिटयों में प्रात: १०.०० से रात्रि ९.०० बजे तक रहता है। साइबर लाईब्रेरी सुबह ८.०० बजे से सुबह ५.०० बजे तक (२१ घण्टे प्रतिदिन) खुली रहती है।

छायाप्रति सुविधा

केन्द्रीय पुस्तकालय में छायाप्रति सुविधा की भारी माँग रहती है। विश्वविद्यालय एवं बाहर के छात्रों व अध्यापकों की माँग पूरी करने के लिए यहाँ तीन फोटोकापी मशीने हैं। सत्र २०१४-२०१५ में पुस्तकालय ने १६३९२१ छायाप्रतियां प्रदान की।

दृष्टिबाधित विभाग

केन्द्रीय ग्रन्थालय में दृष्टिबाधित पाठकों की सुविधा के लिए अलग से अनुभाग है, जो पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सामग्री को साफ्ट कापी में दृष्टि बाधित पाठकों को उपलब्ध कराता है। वर्ष २०१४ - १५ में ७४ दृष्टिबाधित पाठकों को ग्रन्थालय द्वारा यह सुविधा उपलब्ध कराई गई एवं २५.१५ जीबी डेटाबेस तैयार किया गया। वर्तमान में कुल ३५२.७३ जीबी डेटाबेस तैयार हो चुका है।

ऑनलाइन पत्रिकायें, ऑनलाइन पुस्तकें एवं डाटाबेस

केन्द्रीय पुस्तकालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ई-जर्नल्स प्राप्ति हेतु यू.जी.सी. इंफोनेट, इण्डेस्ट और अरमेड कंसोर्सिया का सदस्य है। केन्द्रीय ग्रन्थालय के पास वर्तमान में १४५०० फुल टेक्स्ट आनलाइन जर्नल्स और बिब्लियोग्राफी डाटाबेस को सर्च करने की सुविधा उपलब्ध है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुस्तकालय नेचर पब्लिशिंग ग्रुप (६ पत्रिकायें), एमेराइल्ड मैनेजमेन्ट एक्सट्रा (२४१ पत्रिकायें), कैब एब्सट्रेक्ट (४०३ पत्रिकायें), इण्डियन जर्नल्स डाटकॉम (२४१) को सब्स्क्राइब कर रहा है। पुस्तकालय में अमेरिकन केमिकल सोसाईटी, रायल सोसाईटी आफ केमस्ट्री, नेचर, साइंस प्रोजेक्ट म्यूज (सोशल सांइस एवं ह्यूमिनिटी), इमेराइल्ड (लाइब्रेरी सांइस), एमेराइल्ड मैनेजमेन्ट एक्सट्रा, साइंस, इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स, अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स, अमेरिकन फिजिकल सोसाइटी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, स्प्रिंगर वारलॉग, क्लुवर ऑनलाइन, आदि के ई-स्रोतों को एक्सेस करने की सुविधा यू.जी.सी. इन्फोनेट के माध्यम से उपलब्ध है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय सेज, केम्ब्रिज, स्प्रिंगर, टेलर एवं फ्रांसिस, वर्ल्ड सांइटिफिक, पीर्यसन आदि से ५६०१० से अधिक ई-पुस्तकों को सब्सक्राइब कर रहा है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पास केमीकल एब्सट्रेक्ट (सांइस फाइण्डर), मैथ साइनेट, मनुपात्रा (लॉ) गेल, इण्डियन साइटेशन इन्डेक्स, स्प्रिंगर प्रोटोकोल (१९८०-२०१३) आदि डाटावेज की एक्सेस सुविधा भी उपलब्ध है। सभी ऑनलाइन जर्नल्स को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में नेटवर्क के माध्यम से सर्च किया जा सकता है इसकी विस्तृत जानकारी बी.एच.यू. की बेवसाइट http://www.bhu.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

प्रलेख प्रदान सेवा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुस्तकालय इन्फ्लिबनेट कार्यक्रम के अन्तर्गत, प्रलेख प्रदान सेवा केन्द्र के रूप में चिन्हित देश के पाँच पुस्तकालयों में से एक है। इस सेवा का उद्देश्य बाह्य पाठकों को शीघ्र एवं तुरन्त प्रलेखों की इलेक्ट्रानिक प्रति उपलब्ध कराना एवं स्रोत संसाधन साझेदारी को बढ़ाना एवं साझेदारी सुविधा उपलब्ध कराना है जिससे कम लागत में अधिक से अधिक पाठकों को सूचना आवश्यकता की पूर्ति हो सके।

दुर्लभ सामग्री का डिजिटाइजेशन

केन्द्रीय ग्रन्थालय को राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र के रुप में मान्यता दी गई है। ग्रन्थालय ने दुर्लभ सामग्री का डिजिटाइजेशन प्रारम्भ कर दिया है। वर्ष २०१४-१५ में लगभग ६० दुर्लभ ग्रन्थों के १७४११० फोलियो का डिजिटाइजेशन किया जा चुका है।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

- सयाजी राव गायकवाड़ ग्रन्थालय एवं केन्द्रीय पाण्डुलिपि मिशन, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में दुर्लभ पाण्डुलिपि के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक २३ जून २०१४ से २७ जून २०१४ तक सयाजी राव गायकवाड़ केन्द्रीय ग्रन्थालय में किया गया।
- केन्द्रीय ग्रन्थालय ने पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए २३ जून २०१४ से मोबाइल स्मार्ट फोन के माध्यम से आन लाइन पत्रिकाओं एवं ई-पुस्तकों के पठन हेतु मोबाइल बेवसाइट की शुरुआत की है।
- साइबर लाईब्रेरी (फेज-II), (पूर्ण वातानुकूलित) जो २०० कम्प्यूटर इन्टरनेट सुविधा युक्त है, का उद्घाटन दिनांक २ जूलाई २०१४

को तत्कालीन कुलपति डॉ. लालजी सिंह के द्वारा किया गया ताकि शोधार्थी आसानी से ई-संसाधनों व ई-बुक्स का अधिकतम उपयोग कर सकें।

- साइबर लाईब्रेरी प्रथम तल के उद्घाटन के साथ दिनांक २ जुलाई २०१४ को हिन्दी एवं संस्कृत वेब रिसोर्स पोर्टल का शुभारंभ एवं उद्घाटन किया गया।
- दिनांक १ सितम्बर २०१४ को साइबर लाईब्रेरी के प्रथम तल में कृषि एवं लाइफ साइंस विषयक सूचना साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कृषि विज्ञान के लगभग ७०० विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- ३१ अक्टूबर २०१४ को सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय ग्रन्थालय में पुस्तक प्रदर्शनी एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल से संबंधित चलचित्र का आयोजन किया गया।
- महामना की १५३वीं जयंती के अवसर पर २४ दिसम्बर २०१४ को महामना व हिन्दू गौरव ग्रन्थ पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन का.हि.वि.वि. के माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी के द्वारा किया गया।
- महामना की १५३वीं जयंती के उपलक्ष्य में २४ दिसम्बर, २०१४ को स्प्रिंगर के द्वारा केन्द्रीय ग्रन्थालय में वृहद् डाटाबेस उपयोग हेतु स्प्रिंगर कोऑस्क स्थापित किया गया। इस अवसर पर स्प्रिंगर डेटाबेस का सर्वाधिक उपयोग हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को सम्मान प्रदान किया गया।
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थालय में कार्यरत उप ग्रन्थालयी डॉ. विवेकानंद जैन ने २६ अगस्त २०१४ को पेरिस की कैथोलिक यूनीवर्सिटी (इंस्टीट्यूट कैथोलिक डी पेरिस) में ''भारत की जैन सांस्कृतिक धरोहर और उसका डिजिटल संरक्षण'' विषय पर व्याख्यान दिया।

सांख्यकीय

१. (क) पुस्तकें व पत्रिकाएँ

अ) वर्ष २०१४-१५ के शुरुआत में पुस्तकों कुल संख्या	११०६०२५
आ) वर्ष २०१४-१५ के शुरुआत पत्रिकाओं की संख्या	१३२४७६
इ) वर्ष २०१४-१५ में खरीदी गई पुस्तकों की संख्या	७११५
ई) प्रिंट संस्करण (किताब/शोधग्रंथ)	७११५
उ) ई-बुक्स डाटाबेस व बुक्स	५६०१०
ऊ) वर्ष २०१४-१५ में वापस लिया गया पत्रिकाओं की संख्या	७२
(ख) प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या (१ जनवरी से दिसम्बर २०१४)	
(अ) शुल्क देकर	४४७
(आ) ऑनलाइन पत्रिकायें	४८२
(इ) नि:शुल्क (अनियमित)	५५०
(ग) बाउंड संस्करणों की संख्या	३७२९
(घ) सी.डी.-रोम मार्च २०१५ तक	६३५
२. तकनीकी (अंग्रेजी)	
अ) तैयार पुस्तकों की संख्या	४२७९
आ) तैयार जिल्द बन्धी पत्रिकाओं की संख्या	१३४९
इ) तैयार शोध प्रबन्धों की संख्या	८१६
२.अ. तकनीकी (हिन्दी)	
अ) तैयार पुस्तकों की संख्या	**२५५७**
३. सेवाएं	
क) कार्य दिवस	
१) साप्ताहिक कार्य दिवस	प्रात:९.०० से सायं ९.०० बजे तक
२) रविवार व अवकाश के दिन	प्रात:१०.०० से सायं ९.०० बजे तक
३) ग्रन्थालय खुलने के दिवस (एक वर्ष में)	३५९
ख) सदस्य व पुस्तकों का वितरण	
१) सदस्यता	
क) छात्र	१६९१०
ख) कर्मचारी (३१.३.२०१४ तक)	३८२५

२) पुस्तकों का वितरण	
क) छात्र	५३३९४
ख) अनुभाग लाईब्रेरी	९१०
ग) सन्दर्भ विभाग	
क) बाह्य पाठकों की पंजीकरण संख्या	३६७
ख) प्राप्त कुल पंजीकरण शुल्क	रू.३०,२८०
ग) सन्दर्भ पुस्तकें उपयोग की गयी	लगभग ३० किताब प्रति दिन
घ) पाठ्य-पुस्तक विभाग	
पढ़ी गयी पुस्तकों की संख्या	३६१३१
ड.) स्टैक्स (पुस्तक भण्डार)	
क) दी गयी पुस्तकें	३३१२००
ख) बदली गयी पुस्तकें	३८५२००
च) स्टैक्स (पत्रिका)	
क) दी गयी पत्रिकाएँ	८०४००
ख) बदली गयी पत्रिकाएँ	९००००
छ) पत्रिका विभाग	
क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	७८७१५
ख) पढ़ी गयी पत्रिकाओं, दैनिकों की संख्या	८८४७५
ज) सं. राष्ट्र संघ व सरकारी प्रकाशन विभाग	
क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	१७०
ख) पढ़े गये दस्तावेजो की संख्या	६०८
ग) बढ़े दस्तावेजो मिमियोग्राफ सहित की संख्या	५४
झ) पांडुलिपि विभाग	
क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	२३५
ख) पढ़े गये दस्तावेजो की संख्या	३३७
घ) फोलिओज का डिजिटाइजेशन	१७४११०
ञ) शोध ग्रंथ विभाग	
क) पाठकों की संख्या	१५३१५
ख) पढ़ी गई शोध ग्रंथों की संख्या	१४७७५
ट) प्रतिलिपि इकाई	
फोटो कापी किये गये पृष्ठों की संख्या (कार्यालयी सहित)	१६३९२१
ठ) संगणक अनुभाग	
क) डाटा सीट तैयार करना	
ख) डाटा प्रवेश	
ग) डेलनेट सेवा	
ध) डेलनेट से सामग्री प्राप्त करना	
ड) दृष्टिबाधित अनुभाग	
क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	१२५६
ख) प्रिन्टआउट सेवा	५०५५
ग) डाटा सेवा	३५२.७३ जीबी

४) वित्त (१ अप्रैल २०१४ से ३१ मार्च २०१५)

अ) खर्चे	
क) पुस्तकें व पत्रिकाएँ रखरखाव अनुदान	
आवर्ती अनुदान	५०१६३६२५.००
विलय अनुदान	१८००००००.००
ख) विकास मद	७६५९२०.००
ग) जिल्द बँधवाई	१८४०७७.००
घ) प्रतिलिपि करना	२२८८४३.००
आ) आमदनी	
क) विलम्ब शुल्क	३७२८५३.००
ख) पुस्तक भरपाई मूल्य	११०९७०.००
ग) टोकन खोना	२८०.००
घ) प्रतिलिपिकरण	९१९४१.००
इ) इण्टरनेट सेवा	
क) इण्टरनेट प्रिन्टआउट	२७९०.००
ख) परामर्श शुल्क	२८४५०.००
ग) अन्य शुल्क	३७९६०.००

५) साईबर लाईब्रेरी अध्ययन केन्द्र (१ अप्रैल २०१४ से ३१ मार्च २०१५)

क) साईबर लाईब्रेरी समय सेवा	२४X७
ख) इन्टरनेट सर्च विद्यार्थियों की संख्या (प्रति दिन)	२२०९
ग) ऑन लाइन फर्म (बी.एच.यू. यूईटी/पीईटी) भरे विद्यार्थियों की संख्या	१२३२

कृषि विज्ञान संस्थान

विश्वविद्यालय स्तर पर केन्द्रीय पुस्तकालय के अलावा संस्थान में संगणक सुविधा एवं इन्टरनेट की सेवा के साथ स्वयं का पुस्तकालय भी है। भारतीय प्रकाशक – १०३६ कुल पुस्तकें १०२३

चिकित्सा विज्ञान संस्थान

चिकित्सा विज्ञान संस्थान का ग्रन्थालय १३५० वर्गमीटर में स्थित है, जिसमें २४० लोगों के बैठने का प्रबन्ध हैं। इसमें फोटो कापी, कम्प्यूटर पर पुस्तक सर्च, इंडेक्सिग, इंटरनेट आदि की सुविधा उपलब्ध है। ग्रन्थालय में लगभग १ लाख पुस्तकें उपलब्ध हैं।

पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान

छात्रों के लिए विश्वविद्यालय की केन्द्रीय ग्रन्थालय की सुविधा के साथ-साथ संस्थान में भी ग्रन्थालय की सुविधा उपलब्ध है जिसमें १५२ पुस्तकें शोध हेतु रखी गयी हैं।

शिक्षाशास्त्र संकाय

१८००० पुस्तकों और २० से भी अधिक शोध पत्रिकाओं के सब्सक्रिप्शन के साथ यह संकाय का सबसे अच्छा पुस्तकालय है। ज्ञान अर्जन करने और अनुसंधान की सुविधा के लिए नि:शुल्क इंटरनेट का उपयोग सभी छात्रों और शिक्षकों के लिए सुनिश्चित किया जाता है।

प्रबन्धशास्त्र संकाय

छात्रगण विभाग एंव विश्वविद्यालय दोनो स्तरों पर पुस्तकालय सुविधाओं का लाभ उठा सकते है। विभागीय पुस्तकालय ११०० वर्गमीटर के क्षेत्र में फैला है तथा एक साथ १२० छात्रों के बैठने की क्षमता रखता है। पुस्तकालय संदर्भग्रहण सूचि युक्त आंकड़ों से सुव्यवस्थित है। पुस्तकालय में ५००० से अधिक शीर्षकों की २०,००० से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध है। नियमित रूप से १०० से भी अधिक राष्ट्रीय एंव अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाएँ भी उपलब्ध कराई जाती है।

विधि संकाय

विधि महाविद्यालय पुस्तकालय की सुविधा लेने वाले एक हजार चार सौ से अधिक व्यक्तियों के लिये पठन पाठन एवं शोध आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जिसमें अध्यापक, शोधछात्र, विधि स्नातक और विधि स्नातकोत्तर के विद्यार्थी शामिल हैं। पुस्तकालय, परामर्श, निर्देशन एवं ग्रन्थ सम्बन्धी सेवायें प्रदान करता है। स्नातक स्तर के विधि विद्यार्थियों को कुछ पुस्तकें उधार के रूप में दी जाती हैं। विधि पुस्तकालय में छायाप्रति मशीन भी है। यह सुविधा इस पुस्तकालय में आने वाले अन्य विश्वविद्यालयों एवं संकायों के अन्य सदस्यों को भी दी जाती है। स्थानीय बार के सदस्य एवं वादकारी भी इस पुस्तकालय में अपने आवश्यकता के संदर्भ में आते हैं। पुस्तकालय का समय मई से जुलाई तक पूर्वान्ह १०-०० से सांय ५ बजे तक है और अगस्त से अप्रैल तक ११-०० पूर्वान्ह से सायं ७ बजे तक का है। यह विधि स्नातक और स्नातकोत्तर के परीक्षाओं के दौरान रविवार को भी खुलता है।

लाईब्रेरी संग्रह

संग्रह	ग्रन्थ की संख्या	ग्रन्थ की संख्या में बढ़ोत्तरी
ग्रन्थ	३७९२०	६१५
विधि पत्रिकाए सजिल्द	२८७१५	५०१
नवीन पत्रिकाएं	३१	--
विनिमय से प्राप्त विधि पत्रिकाएँ	३३ विदेश, ११७ भारतीय = १५०	--
थिसिस एवं डिसर्टेशन	१२८९	२५७
विद्यार्थी पुस्तक ऋण (ट्रस्ट संकलन)	४६४८	९२
मानव अधिकार सकंलन	२३२	०
पुस्तक बैंक सुविघा (अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के लिए)	१४२७०	३६१६
कुल योग	८७३७२	५०९९

दृश्य कला संकाय

कुल पुस्तकों की संख्या	:	९११८
कुल शोध पत्रिकाओं की संख्या (सजिल्द)	:	४५६
अवधि के दौरान आयी पुस्तकों की संख्या	:	८५३
रंगीन स्लाईड्स	:	३००
मूल ग्राफिक्स प्रिंट	:	३५०
सामयिक जर्नल	:	१५

सामाजिक विज्ञान संकाय

अर्थशास्त्र विभाग में पुस्तकों (लगभग १५००) का एक पाठ्य पुस्तक बैंक है, जो मुख्यत: विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए रखा गया है।

वाणिज्य संकाय

संकाय में लगभग २५,२७५ पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय छात्रों का प्रदान किया गया है।

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर

नवीनतम उपलब्ध साहित्य, पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों के साथ राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर का ग्रंथालय छात्रों, अध्यापकों एवं परिसर के कर्मचारियों के लिए उपलब्ध है। इस ग्रंथालय में संगणक कक्ष वायरलेस अंतरजाल की सुविधा के साथ उपलब्ध है। पढ़ने और चर्चा हेतु छात्रों और शिक्षकों के लिए अलग-अलग कक्ष की सुविधा उपलब्ध है। यह ग्रंथालय विद्यार्थी, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है। परिसर का यह ग्रंथालय मुख्य परिसर वाराणसी के केन्द्रीय ग्रंथालय के अधीन क्रियाशील है। ग्रंथालय का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों को किताबों, पत्र-पत्रिकाओं को ले जाने तथा समय से वापस करने एवं छायाप्रति की सुविधा उपलब्ध है।

वर्तमान सत्र के अन्तर्गत राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर ग्रंथालय के विकास का अवलोकन -

१. ३१ मार्च २०१४ तक
   कुल पुस्तकों की संख्या - ११,०५४ वौल्यूम्स

२. इस सत्र में बढ़ी हुई पुस्तकों की संख्या - ७६१ वौल्यूम्स

३. पुस्तक निर्गत/परामर्श
   (i) निर्गत की गई पुस्तकें - ३७,४००
   (ii) परामर्श की गई पुस्तकें - ४२,४४४

४. ग्रंथालय के खुलने का समय
   कार्य दिवसों में - ०९:३०पूर्वाहन से ०६:३०सांय
   रविवार - १०:०० पूर्वान से ५:०० सांय

५. ग्रंथालयों में कर्मचारियों की संख्या
   व्यवसायिक कर्मचारी - ०६
   गैर व्यवसायिक कर्मचारी - ०३

६. अन्य सारांश
   कम्प्यूटर लेबोरेटरी - ०१
   कम्पयूटर सहायक उपकरणों के साथ - ६०
   परामर्श लिये छात्रों की संख्या - ६९४०

भारत कला भवन

वर्तमान वर्ष में भारत कला भवन पुस्तकालय में विद्यार्थियों एवं शोध छात्रों के लिए निम्न पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ प्राप्त की गईं।

- वर्तमान में २२५१८ पुस्तकें, ६३०१ पत्रिकाएं, ११९६ पुनर्मुद्रित चित्र तथा ५६ प्रोजेक्ट रिर्पोट (नेहरू ट्रस्ट ऑफ इण्डियन कलेक्शन, विक्टोरिया एवं एलबर्ट संग्रहालय, नई दिल्ली) भारत कला भवन पुस्तकालय में हैं।
- इस वर्ष लगभग ३५०० विद्यार्थी तथा शोध छात्र भारत कला भवन पुस्तकालय में परामर्श हेतु आये।

वसन्त कन्या महाविद्यालय

विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा के लिये महाविद्यालय के गुणवत्ता युक्त पुस्तकालय का प्रत्येक वर्ष नव-साधनीकरण किया जाता है। सत्र २०१४-१५ में पुस्तकालय में १२४० नई पुस्तकों को खरीदा गया जिसके साथ वर्ष के अंत तक पुस्तकालय में कुल २५४०३ पुस्तकें तथा ८ शोध-पत्रिकाएँ छात्राओं को उपलब्ध कराई गई। स्नातक तथा

स्नतकोत्तर वर्ग की छात्राओं के साथ शोध छात्र-छात्राओं हेतु पुस्तकालय-स्वचलन की सुविधा को भी इस शैक्षणिक सत्र में विकसित किया गया। इसी के साथ इस वर्ष से पुस्तकालय में ई-जर्नल तथा ई-बुक की सुविधा प्रारम्भ कर दी गई है।

वसन्त महिला महाविद्यालय

महाविद्यालय के पुस्तकालय का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है। शिक्षक और शिक्षार्थियों को एक लाख पुस्तकें और ३५०० पत्र-पत्रिकायें पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध करायी जाती हैं। छात्राओं के लिए कम्प्यूटर के माध्यम से पुस्तकों की खोज तथा इंटरनेट की जानकारी सम्बन्धी कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

संस्थानों, संकायों व महाविद्यालयों के पुस्तकालय

अनेक विभागों के पास छात्रों एवं शिक्षकों के लिए उनके अपने पुस्तकालय हैं।

१. रसायन शास्त्र विभाग

पुस्तकें	७५८०
जर्नल	७६९६
शोध	४४५

२. भौमिकी विज्ञान विभाग

पुस्तकें	४८०१
पत्रिकायें	३०१

३. भूगोल विभाग

पुस्तकें	७९३०

४. भू- भौतिकी विभाग

पुस्तकें	२४९५

५. आण्विक एवं मानव अनुवांशिकी विभाग

पुस्तकें	५१२

६. जन्तु विज्ञान विभाग

पुस्तकें	८५०६
पत्रिकाओं के बंद ग्रंथ	३८२

७. सांख्यिकी विभाग

पुस्तकें	४००

८. जैव रसायन विभाग

पुस्तकें	१५८५

९. भौतिकी विभाग

पुस्तकें	१७००८
जर्नल	१४३४०

१०. गणित विभाग

पुस्तकें	४५७३
शोध पत्र	३५
पत्रिकायें	२५३२

११. वनस्पति विज्ञान विभाग

पुस्तकें	५४४८
शोध निबन्ध	५०२
शिक्षकीय चलचित्र	१६
पत्रिकायें/बँधी खण्डों की शोध	६८०
लघु शोध प्रबन्ध	४८५
शैवालों का माइक्रोफिट्ज	१६०००

१२. जैव प्रौद्योगिकी स्कूल

पुस्तकें	२४९२

१३. गृह विज्ञान विभाग

पुस्तकें	३०००

१४. डी.एस.टी.- अन्तविर्षयक गणितीय विज्ञान केन्द

पुस्तकें	७२२
जर्नल	५८५

१५. संगणक विज्ञान विज्ञाग

पुस्तकें	३६६२

१६. आनुवांशिकी विकार केन्द्र

पुस्तकें	६०

१७. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

पुस्तकें	२५०

१८. नेपाल अध्ययन केन्द्र

पुस्तकें	३५००

सम्बद्ध महाविद्यालयों के पुस्तकालय

१. आर्य महिला पी.जी.कालेज

पुस्तकें	२९३८६
जर्नल	५३
पत्रिका	२०

२. वसन्त महिला महाविद्यालय

पुस्तकें	१०००००
पत्र-पत्रिका	३५००

३. वसन्त कन्या महाविद्यालय

पुस्तकें	२५४०३
शोध पत्र	०८

४. डी.ए.वी. पी.जी कॉलेज

पुस्तकें	४२९६०
पत्र-पत्रिकाएँ	३४

विद्यालयों के पुस्तकालय

१. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

पुस्तकें	१०००००

२. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वाय़ज स्कूल

पुस्तकें	३२०००

२.१.७ यू.जी.सी. एकेडमिक स्टाफ कॉलेज

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (१९८६) ने शिक्षा की गुणवत्ता एवं अध्यापकों की अधुनातन ज्ञान अर्जन की प्रवृत्ति में संलग्नता को देखते हुए कुछ दिशा निर्देश तय किये। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में न केवल अध्यापक के महत्त्व को रेखांकित किया गया बल्कि इस बात पर भी बल दिया गया कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार निभाने के लिए उन्हें अधिकतम अवसर दिये जायें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के अन्तर्गत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज की स्थापना की। यहाँ शिक्षकों के लिए प्रथम पाठ्यक्रम २१.१२.१९८७ से ६.२.१९८८ तक आयोजित किया गया था जिसमें २६ प्राध्यापकों ने भाग लिया। इस समय इसका विस्तार १२वीं पंचवर्षीय योजना (अप्रैल २०१२ से मार्च २०१७) में कर दिया गया है और इसके स्थायीकरण की दिशा में कार्य प्रगति पर है।

एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज का मुख्य कार्य है, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में नव नियुक्त अध्यापकों और प्रशासनिक अधिकारियों को दिशानिर्देशन पाठ्यकमों एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षित करना। इसके अतिरिक्त यहाँ प्रशासकों के लिए कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। समय-समय पर संगोष्ठियाँ और विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के भाषण भी इस कॉलेज में आयोजित किये जाते हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अद्यतन दिशा निर्देशों के अनुसार दिशा निर्देशन एवं पुनश्चर्या पाठ्यकम में आई.टी. पर आधारित व्याख्यानों पर विशेष बल दिया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक कम्प्यूटर प्रयोगशाला वर्ष २००५-०६ में एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज में स्थापित की गई है और आई.टी. पर आधारित पाठ्यकमों का भी आयोजन किया जाता रहा है। वर्ष २००५-०६ में ही इसरो एडूसैट केन्द्र भी यहाँ स्थापित किया गया है।

अब तक यहाँ ४ विशेष ग्रीष्मकालीन स्कूल, २ विशेष शीतकालीन स्कूल, ६ एकेडेमिक एडमिनिस्ट्रेटर्स कार्यशाला, १० व्यावसायिक विकास कार्यक्रम गैर शिक्षण कर्मचारियों हेतु, ३ कार्यक्रम शोधरत विद्यार्थियों हेतु, ७१ दिशानिर्देशन एवं निम्नलिखत विषयों में १९९ पुनश्चर्या कार्यक्रम (३१ मार्च २०१५ तक) आयोजित किये गये हैं। ये पुनश्चर्या पाठ्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान, महिला अध्ययन, पत्रकारिता, तिब्बती अध्ययन, वाणिज्य, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, प्राणी शास्त्र, भौमिकी, भूगोल, समाज शास्त्र, गणित, विधि शास्त्र, अभियांत्रिकी, कृषि

विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, तुलनात्मक साहित्य, संगीत एवं गायन और सूचना एवं संचार तकनीक अनुप्रयोग विषय से संबद्ध रहे हैं।

संक्षिप्त रिपोर्ट

यू.जी.सी.-एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा इस सत्र में चार दिशा निर्देशन कार्यक्रम, १० पुनश्चर्या पाठ्यकम और ४ अन्य कार्यक्रम एवं ३ अल्पकालिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे कुल ६८९ प्रतिभागी लाभान्वित हुए जिनमें ५१८ पुरुष एवं १७१ महिलाएँ थीं। ये प्रतिभागी विभिन्न विषयों के थे जो अरुणाचल, असम, आन्ध्रप्रदेश, मिजोरम, नागालैण्ड, पश्चिम बंगाल, बिहार, पंजाब, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, गुजरात, त्रिपुरा, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश राज्यों से थे। इस वर्ष विभिन्न पुनश्चर्या पाठ्यकम महिला अध्ययन, अंग्रेजी, पर्यावरण अध्ययन, सूचना तकनीकी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, दर्शन एवं धर्मागम, शारीरिक शिक्षा, आयुर्वेद, तुलनात्मक साहित्य, मानवाधिकार, चिकित्सा विज्ञान, कृषि और संस्कृत विषयों में आयोजित हुए। इन कार्यक्रमों में देश के प्रमुख विषय विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यान से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया जिनमें प्रमुख रूप से पद्मभूषण डॉ. पी.एम. भार्गव, पद्मभूषण श्री चण्डी प्रसाद भट्ट, पद्मभूषण प्रो. यशपाल, पद्मश्री डॉ. लालजी सिंह, पद्मश्री शावली मित्रा, पद्मश्री मो. शाहिद, पद्मश्री प्रो. रामशकर त्रिपाठी, डॉ. एस.एन. सुब्बाराव (प्रख्यात समाजसेवी), प्रो. एच.पी. दीक्षित (महान शिक्षाविद) शामिल हैं।

ग्रन्थालय सुविधा

यू.जी.सी.-एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, में एक ग्रन्थालय भी है, जिसमें १८०६ पुस्तकें, ०७ जर्नल और विभिन्न कार्यक्रमों की प्रोसीडिंग्स उपलब्ध हैं।

अन्य सुविधायें

यू.जी.सी.-एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज के व्याख्यान कक्ष और कॉलेज के अतिथि गृह को विश्वविद्यालय के सहयोग से आधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाया जा रहा है। व्याख्यान कक्ष को वर्तमान सत्र में वातानुकूलित किया गया है। फरवरी २०१२ में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्ययन परिषद, बैंगलोर की टीम ने इस कॉलेज का निरीक्षण किया एवं कॉलेज के द्वारा आयोजित किए गए पाठ्यक्रमों एवं अन्य कार्यो की सराहना की तथा एक रिपोर्ट कॉलेज को और यू.जी.सी., नई दिल्ली को प्रेषित की।

विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्ययन परिषद् बैंगलोर द्वारा निरीक्षण के समय यू.जी.सी.-एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज का निरीक्षण भी २५ फरवरी, २०१५ को किया गया और टीम द्वारा इस कॉलेज द्वारा किये गये कार्यो की सराहना भी की गयी।

अपनी स्थापना के समय से ही यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ में सुनिश्चित किये गये उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरन्तर प्रयासरत है और पिछले २८ वर्षो में इस उद्देश्य को प्राप्त करने में हमें महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

वर्तमान सत्र से यू.जी.सी.-एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का नाम यू.जी.सी द्वारा परिवर्तित कर यू.जी.सी-ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट सेन्टर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कर दिया गया है। सत्र २०१४-१५ के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. आनंद वर्धन शर्मा ने १ अंतर्राष्ट्रीय एवं ५ राष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा १० प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्याख्यान दिये। संस्थान में कार्यरत सह प्राध्यापक डॉ. एस.के. तिवारी ने कई संगोष्ठियाँ एवं ११ प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्याख्यान दिये।

पाठ्यक्रम आयोजन (सत्र २०१४-१५)

क्रम सं.	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या पुरुष/महिला	लोकल/आउट स्टेशन
१.	दिशानिर्देशन पाठ्यकम -६८	जून १३-जुलाई १०, २०१४	२० १३/०७	०७/१३
२.	दिशानिर्देशन पाठ्यकम-६९	अगस्त २९ - सितम्बर २५, २०१४	२० ४/०६	०७/१३
३.	दिशानिर्देशन पाठ्यकम-७०	जनवरी ०६- फरवरी ०२, २०१५	२२ १८/०४	०४/१८
४.	दिशानिर्देशन पाठ्यकम-७१	जनवरी ०६- फरवरी ०२, २०१५	३१ २७/०४	०४/२७
	योग	**४**	९३ ७२/२१	२२/७१
पुनश्चर्या पाठ्यकम				
१.	शिक्षा का पाँचवाँ पुनश्चर्या पाठ्यकम	जुलाई १२ से अगस्त ०१, २०१४	२० १२/०८	१०/१०
२.	हिन्दी का सत्रहवाँ पुनश्चर्या पाठ्यकम	जुलाई १५ से अगस्त ०४, २०१४	२१ ०९/१२	०२/१९
३.	महिला अध्ययन का चॉदहवाँ पुनश्चर्या पाठ्यकम	अगस्त ०६-२६, २०१४	४० २०/२०	३०/१०
४.	संस्कृत का छठा पुनश्चर्या पाठ्यकम	अगस्त ०७-२७, २०१४	३९ ३६/०३	०३/३६
५.	अंग्रेजी का आठवाँ अगस्त ०६-२६, २०१४	अक्टूबर ०८-२८, २०१४	२० १३/०७	०४/१६
६.	पर्यावरण अध्ययन का सातवाँ पुनश्चर्या पाठ्यकम	अक्टूबर ०८-२८, २०१४	४४ ३३/११	१८/२६

७.	व्यवसाय प्रबन्धन का तृतीय पुनश्चर्या पाठ्यकम	अक्टूबर ३१ से नवम्बर २०, २०१४	२४ १८/०६	०५/१९
८.	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान का छठा पुनश्चर्या पाठ्यकम	नवम्बर २२ - दिसम्बर १२, २०१४	२७ २३/०४	०८/१९
९.	दर्शन एवं धर्म का चतुर्थ पुनश्चर्या पाठ्यकम	नवम्बर २९ - दिसम्बर १९, २०१४	१९ १४/०५	०३/१६
१०.	आधुनिक चिकित्सा का पुनश्चर्या पाठ्यकम	मार्च १० से ३०, २०१५	३३ २६/०७	३३/००
	योग	**१०**	२८७ २०४/८३	८३/१७१
अन्य पाठ्यकम				
१.	कला के शोध विद्यार्थियों के लिए द्वितीय अंतरसंवाद कार्यक्रम	मई १५ - जून ०४, २०१४	६० ३८/२२	६०/००
२.	चौथा विशेष समर स्कूल-२०१४	मई २० से जून ०९, २०१४	२२ १८/०४	११/११
३.	सामाजिक विज्ञान के शोध विद्यार्थियों के लिए तृतीय अंतरसंवाद कार्यक्रम	जून १३ से जुलाई ०३, २०१४	४३ २६/१७	४३/००
४.	द्वितीय विशेष विन्टर स्कूल-२०१३	दिसम्बर १५, २०१४ से जनवरी ०४, २०१५	४१ ३०/११	२०/२१
	कुल	**४**	१६६ ११२/५४	१३४/३२
अल्प अवधि के कार्यक्रम				
१.	बी.एच.यू. के गैर शिक्षण कर्मचारियों के लिए व्यवसायिक अभिरूचि कार्यशाला	अक्टूबर १३-१५, २०१४	४१ ३७/०४	४१/००
२.	बी.एच.यू. के गैर शिक्षण कर्मचारियों के लिए व्यवसायिक अभिरूचि कार्यशाला	अक्टूबर २९-३१, २०१४	३९ ३६/०३	३९/००
३.	बी.एच.यू. के गैर शिक्षण कर्मचारियों के लिए व्यवसायिक अभिरूचि कार्यशाला	मार्च २३-२५, २०१५	६३ ५७०६	६३/००
	योग	**३**	१४३ १३०/१३	१४३/००
	महायोग	**२१**	६५६ ९२/१६४	३८२/२७४

२.१.८ मालवीय भवन

मालवीय भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आदरणीय संस्थापक व स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में से एक पं. मदन मोहन मालवीय जी का पूर्व आवास होने के साथ-साथ विश्वविद्यालय-परिसर का मुख्य स्मारक भवन भी है। सन् १९६१ में मालवीय-शताब्दी वर्ष के अवसर पर इसे जनसाधारण के दर्शन हेतु खोल दिया गया था। स्मारक होने के साथ ही मालवीय-भवन मालवीयजी की शिक्षा उनके विचारों, उनके अतिप्रिय विषयों की पढ़ाई और जीवन के ऊपर शोध -कार्य का दायित्व भी लेता है। आज मालवीय भवन में निम्नलिखित प्रकल्प कार्यरत हैं -

१. योग साधना केन्द्र
२. गीता -समिति
३. गीता-योग पुस्तकालय
४. सभागृह एवं
५. मालवीय-मूल्य अनुशीलन केन्द्र।

सुविधायें और कार्यक्रम

गीता-समिति

गीता-समिति मालवीय भवन की प्राचीन संस्था है। यहाँ रविवार की सुबह भगवद्गीता के धार्मिक व दार्शनिक विषयों पर व्याख्यान का आयोजन होता है। यह समिति वार्षिक भगवद्गीता प्रवचन-प्रतियोगिता का आयोजन भी करती है।ये साप्ताहिक गीता-प्रवचन नियमित रूप से हर रविवार को आयोजित किये गये। कुल १८ नियमित प्रवचन इस सत्र में सम्पन्न हुए।

वर्तमान सत्र में साप्ताहिक गीता-प्रवचन का उद्घाटन आचार्य वागीश शास्त्री के उदबोधन द्रारा हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने किया। इस सत्र के गीता प्रवचन कार्यक्रम का उपसंहार आचार्य किशोर कुणाल जी पूर्व आई.पी.एस. के विद्वतापूर्ण प्रवचन से हुआ।

योग साधना-केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का योग साधना केन्द्र १९७५ फरवरी से कार्य कर रहा है। यह योग की शिक्षा, निर्देश और शोध कार्य की अन्तरानुशासनिक शैक्षणिक संस्था है और योग के क्षेत्र में विश्वविद्यालय-परिसर में होने वाली सभी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। यहाँ दो तरह के पाठ्यक्रम संचालित होते हैं जो इस प्रकार हैं :

१. सर्टिफिकेट कोर्स इन योग
२. डिप्लोमा इन योग

विगत वर्ष इन पाठ्यक्रमों की स्थिति इस प्रकार रही

पाठ्यक्रम	पुरुष	महिला	विदेशी	कुल
सर्टिफिकेट कोर्स इन योग	८६९	७१५	२०	१६०४
डिप्लोमा इन योग	१०६	६२	०३	१७१

गीता-योग-पुस्तकालय

मालवीय भवन का 'गीता- योग-पुस्तकालय', काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक प्रतिष्ठित पुस्तकालय है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की लगभग १०,००० पुस्तकें हैं जिनमें ५००० पुस्तकें विशेष रूप से केवल भगवद्गीता योग और आध्यात्म पर हैं। अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति यहाँ अध्ययनार्थ आते रहते हैं । गीता-योग-पुस्तकालय का निर्धारित समय प्रात: १०.३० से सायं ५.०० तक है। इस वर्ष इसमें 'कल्याण' जैसे कुछ आध्यात्मिक-धार्मिक पत्रिकाओं तथा हिन्दी-अंग्रेजी समाचार पत्रों के नियमित रूप से मँगाने की व्यवस्था भी की गई है।

महामना सभागार (सभागृह)

मालवीय भवन के सभागृह में विश्वविद्यालय के सभी महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। अगस्त २०१२ में मालवीय भवन के नवीनीकृत सभागृह का अर्पण कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर हुआ। यह सभागृह नियमित रूप से योग से सम्बंधित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, गीता, योग व मूल्य शिक्षा से सम्बद्ध व्याख्यानों तथा संगोष्ठियों के लिये उपयोग में लाया जाता है। वर्तमान सत्र में सभागृह में आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार हैं।

१.	गीता प्रवचन	-	१८
२.	विशेष व्याख्यान	-	०५
३.	भाषण	-	१०
४.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	-	०७
५.	धार्मिक कार्यक्रम (एक श्रीमद्भागवत-सप्ताह प्रवचन सहित)	-	०६
६.	त्यौहार	-	०२
७.	समारोह	-	०५
८.	प्रदर्शन	-	०६
९.	प्रतियोगिता	-	१३
१०.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	-	०७

(चार माह का एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम, एक-एक माह के पांच प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम तथा एक माह की कार्यशाला)

मालवीय मूल्य-अनुशीलन केन्द्र

मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र विगत कई वर्षो से उच्च शिक्षा के अन्तर्गत नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता आ रहा हैं। इन कार्यक्रमों के विस्तार हेतु केन्द्र को दसवीं योजना के अर्न्तगत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से ४ लाख रुपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई। इस केन्द्र का संचालन मालवीय भवन संकुल में स्थित डे-निवास भवन से हो रहा है। इस वर्ष केन्द्र ने विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं शोध छात्रों के लिए ''व्यक्तिगत जीवन एवं कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए जीवन मूल्य एवं व्यावहारिक कौशल'' विषय पर कई कार्यशालाओं का आयोजन किया। इसी क्रम में केन्द्र ने विद्वानों, चिन्तकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा तीन विशिष्ट अतिथि-व्याख्यान ''मानवीय मूल्य'' विषय पर आयोजित किए। केन्द्र एक अर्द्धवार्षिक पत्रिका, ''मूल्य विमर्श'' का भी प्रकाशन करता है, जिसमें समसामयिक विषयों पर आधारित जीवन मूल्यों से सम्बन्धित लेख प्रकाशित किये जाते है।

मालवीय भवन उद्यान

मालवीय-भवन के चारों तरफ एक प्राचीन सुन्दर बगीचा है जिसमें २९ प्रकार के पौधे लगे हुए हैं जिसमें ९ प्रकार के फूल, १३ औषधीय प्रयोग के पेड़ और ७ तरह की झाड़ियाँ लगी हैं।

भावी योजना

उपर्युक्त सुविधाओं को मजबूत करने व आगे बढ़ाने के लिये एक प्रस्ताव विश्वविद्यालय को दिया गया है जिसमें एक नये भवन का निर्माण, कार्यालय, कमेटी रूम, पुस्तकालय व एक अतिरिक्त व्याख्यान कक्ष, उन विशेष धार्मिक व आध्यात्मिक मेहमानों के लिये जो भाषण व व्याख्यान के लिये आमंत्रित किये जाते हैं कुछ अतिथि कक्षों का निर्माण भी सम्मिलित है।

२.१.९. भारत कला भवन

भारत कला भवन कला एवं पुरातत्व का एक विश्वविद्यालयीय संग्रहालय है, विशेषकर यह मुगल एवं राजस्थानी शैली के भारतीय लघु चित्रों के संकलनों के साथ-साथ पुरातात्विक वस्तुओं, मूर्तियों, वसनों, मुद्राओं के अतिरिक्त भारतीय साहित्य की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के लिए भी जाना जाता है। संग्रहालय में लगभग १.०४ लाख (एक लाख चार हजार) दुर्लभ वस्तुएँ हैं, इन विशाल संकलनों में से प्रत्येक वर्ग की केवल अद्वितीय प्रदर्शों को ही भूतल तथा प्रथम तल में निर्धारित १३ दीर्घाओं में प्रदर्शित किया गया है। बड़ी संख्या में आगंतुक, स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों एवं दर्शकों के अतिरिक्त विद्यार्थियों, देश-विदेश के शोध छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी संग्रहालय नियमित रूप से करता है। भारत कला भवन का अपना एक समृद्ध पुस्तकालय है जिसे भारत के उच्च कोटि के कला एवं पुरातात्विक सन्दर्भ पुस्तकालय का महत्व प्राप्त है।

संग्रहालय आय/उपार्जन

इस सत्र के दौरान भारत कला भवन का.हि.वि.वि. के विक्रय केन्द्र से रू. ७,८९,६८३/- की आय प्रवेश शुल्क एवं अन्य सामग्रियों की बिक्री से हुई।

दर्शकः	भारतीय	- ९१०७
	विदेशी	- ३३९२

नवीनीकरण एवं पुनर्निर्माण विकास कार्य

१. आधुनिक प्रदर्शन एवं प्रकाश व्यवस्था के साथ चित्र वीथिका का निर्माण कार्य प्रारम्भ।

२. मूर्ति वीथिका में ताम्र मूर्ति कक्ष की स्थापना।

३. वसन वीथिका की पुनर्स्थापना।

४. नवीन विज्ञान वीथिका की स्थापना।

५. आधुनिक तथा समकालीन कला वीथिका की संरचना।

६. लघु संगोष्ठी-कक्ष की स्थापना।

प्रदर्शन सिद्धान्त

आधुनिक प्रदर्शन सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए संग्रहालय में कुछ महत्वपूर्ण प्रयास किये गये। मूर्तिकला दीर्घा की आधार पीठिका को बलुआ पत्थर निर्मित फलकों की पीठिका में परिवर्तित किया गया, प्रकाश व्यवस्थित कैनोपी (छप्पर) लगाये गये तथा प्रकाश स्रोत को प्रकाशीय सिद्धांत के अनुरूप कम कीमत एवं कम ऊर्जा वाली एल.ई.डी. को प्राचीन टंगस्टन बल्ब के स्थान पर स्थापित किया गया। इसकी फलश्रुति अच्छे संरक्षणीय वातावरण (कार्बन उत्सर्जन तथा पराबैगनी प्रकाशहीन) स्थापित होने के साथ कक्ष के तापमान में भी गिरावट आयी। भूतल में स्थापित इस एकल एल.ई.डी. प्रकाश स्रोत से ही लगभग ५० हजार रुपये प्रति महीने की विद्युत की बचत हो जाती है।

भण्डारण कक्ष संरक्षण मापक यंत्र

संग्रहालय में रखे हुये लघु चित्र क्षणभंगुर प्रकृति के होते हैं जिन्हें एक विशेष तापमान की आवश्यकता होती है, इस हेतु एक इलेक्ट्रिक लोनाइज्ड डिहूमीडिटीफायर को चित्रों के भण्डारण कक्ष में तापमान, आर्द्रता तथा कीट-प्रकोप के नियंत्रण हेतु लगाया गया है।

डिजिटल लॉक की व्यवस्था

भण्डारण कक्ष की अच्छी सुरक्षा तथा प्रवेश रिकार्ड हेतु डिजिटल तालों को सभी भण्डारण कक्ष के बाहरी दरवाजों पर लगाया गया है।

विकास गतिविधियाँ

- भारत कला भवन के प्रवेश द्वार पर समय उपस्थिति पंजिका यंत्र (बायोमेट्रिक) लगाया गया।
- चित्रकला एवं वसन भण्डारण कक्ष में आर्द्रता मापक यंत्र लगाया गया।
- सुरक्षा की दृष्टि से भारत कला भवन के सभी भण्डारण कक्ष में बायोमेट्रिक लॉक लगाया गया।
- चोरी से सुरक्षा हेतु, सुरक्षा अलार्म को संग्रहालय के भीतर एवं बाहर लगाया गया।
- सुरक्षा की दृष्टि से वीथिकाओं में धूम्र यंत्र लगाया गया।
- बाहरी आगंतुकों एवं संग्रहालय कर्मियों की निगरानी हेतु संग्रहालय के भीतर एवं बाहर सी.सी.टी.वी. कैमरों को लगाया गया।
- वित्ताधिकारी, का.हि.वि.वि. के द्वारा १९.९६ लाख रूपये भारत कला भवन के प्रवेश स्थान, चित्रकला दीर्घा के नवीनीकरण तथा अन्य विकास कार्यो के लिए स्वीकृत किये गये।

प्रदर्शनियाँ/ गोष्ठियों, कार्याशालाओं में सहभागिता

- लैटिन अमेरिकन फोटोग्राफर श्री ह्यूगो सिफ्नेन्ट्स के २८ छायाचित्रों की प्रदर्शनी दिनांक २८.०८.२०१४ से ०४.०९.२०१४ तक भवन के केन्द्रीय कक्ष में लगाई गयी।
- डॉ. राधाकृष्ण गणेशन् (वरि.कलाकार, भारत कला भवन) द्वारा दिनांक २०.११.२०१४ से २३.११.२०१४ तक मेहता आर्ट गैलरी, वाराणसी में आयोजित 'डिवाइन लाइन' प्रदर्शनी।
- डॉ. अरुपा मजुमदार (पुस्तकालयाघ्यक्ष, भारत कला भवन) ने दिनांक २२ नवम्बर से १२ दिसम्बर, २०१४ तक यू.जी.सी. द्वारा आयोजित पुस्तकालय विज्ञान के रेफ्रशर कोर्स में भाग लिया।

इस वर्ष हमारे कर्मचारियों ने निम्न गोष्ठियों में सहभागिता की

- डॉ. राधाकृष्ण गणेशन, वरि.कलाकार, ने इन्डियन आर्ट हिस्टी कांग्रेस द्वारा दिनांक २८.११.२०१४ से ३०.११.२०१४ तक नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में सहभागिता की।
- डॉ. राधाकृष्ण गणेशन, वरि.कलाकार, ने संग्रहालय विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि. द्वारा दिनांक १०.०३.२०१५ से १२.०३.२०१५ तक आयोजित संगोष्ठी में सहभागिता की।
- डॉ. अनिल कुमार सिंह, सहा. संग्रहाध्यक्ष, ने इन्डियन आर्ट हिस्टी कांग्रेस द्वारा दिनांक २८.११.२०१४ से ३०.११.२०१४ तक नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में सहभागिता की।
- डॉ. देवेन्द्र बहादुर सिंह, सहा. संग्रहाध्यक्ष, भारतीय मुद्रा परिषद, का.हि.वि.वि. द्वारा पूर्वोत्तर विश्वविद्यालय, शिलांग में १८-२० दिसम्बर, २०१४ को आयोजित सम्मेलन में सहभागिता की।

अन्य आयोजन

२ अक्टूबर, महात्मा गाँधी के जन्म दिवस के अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री द्वारा आदेशित स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम को अपने कार्य-स्थल (भारत कला भवन) को स्वच्छ कर सफल बनाया गया।

संग्रहालय प्रदर्शनी

- निकोलस रोरिक दीर्घा को स्थानान्तरित कर नवीन कक्ष में स्थाई रूप से विधिवत नाम-पत्रों के साथ, अनुकूल एल.ई.डी. प्रकाश में प्रदर्शित किया गया।
- नवीन वसन वीथिका को स्थानान्तरित कर १० नये एल.ई.डी. प्रकाशयुक्त शो-केशों तथा विथिका परिचय व नाम-पत्रों के साथ मूर्ती विथिका के उपर वाले कक्ष में लगाया गया।
- चित्र वीथिका को आधुनिक प्रदर्शन तकनीक एवं अनुकूल प्रकाश व्यवस्था के साथ सुसज्जित किया जा रहा है।
- कला प्रेमियों एवं विद्यार्थियों हेतु एक लघु अस्थायी प्रदर्शनी विथिका की योजना क्रियान्वित की गई।

महत्वपूर्ण दर्शक

इस वर्ष १२ हजार से भी अधिक (३३९२ विदेशी तथा ९१०७ भारतीय) दर्शक भारत कला भवन संग्रहालय अवलोकनार्थ आए। इनमें विशिष्ट अतिथियों एवं महत्वपूर्ण दर्शकों ने भारत कला भवन की सम्मति-पुस्तिका में अपनी सम्मतियाँ व्यक्त की : बोयेग सतीश घलपाण्डे, ९जी.आर., इण्डियन आर्मी; उपेन्दर सिंह, प्रो. इतिहास, दिल्ली विश्व विद्यालय; रविन्द्र सिंह, सचिव, भारत सरकार; काटुली स्टफेन, अमेरिकी राजदूत, नई दिल्ली; डॉ. इन्द्र उदयन, विद्वान, बंगाल; फेक्रीदनेश्नर, चीफ, इंटरनेशनल गर्ल्स हास्टल; मिगवेल विजिल्गा, चीफ कम्युनिकेशन आफिसर, यू.एस.ए.; सुप्रिया, डिजाइनर, एन. आई. डी. अहमदाबाद; डॉ. श्रवण कुमार सिंह, सेन्टल गवर्नमेण्ट नॉमिनी, मा.सं.वि.मंत्रालय; प्रो. पी. के. साहा, त्रिपुरा यूनिवर्सिटी; धनंजय कुमार पाण्डेय, जज, पटना हाईकोर्ट, पटना; पवन कुमार, आई.एम.,अहमदाबाद; राहुल कुमार, एन.टी.पी.सी. नाबीनगर एवं डॉ. एच. एम. थाल्कर, शिवाजी यूनिवर्सिटी, मुंबई आदि मुख्य थे।

२.२. दक्षिणी परिसर

२.२. दक्षिणी परिसर

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकच्छा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, द्वारा संचालित एक मानकीकृत शैक्षिक संस्था के रूप में (इजारा/पट्टा) भारतमंडल ट्रस्ट द्वारा अप्रैल में स्वीकृत किए गए ११०४ हेक्टेयर भूखण्ड में विस्तारित है। यह मीरजापुर शहर से लगभग ८ किमी. दक्षिण पश्चिम राबर्टसगंज राजमार्ग पर स्थित है। भू-आकृति एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से यह समग्र विन्ध्य परिक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जो कि मध्य प्रदेश, बिहार एवं छत्तीसगढ़ प्रांत के निकटवर्ती है। राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है जहाँ सुदूर क्षेत्र के जनजाति और वंचित वर्ग विशेषतया युवाओं और महिलाओं के प्रशिक्षण और उद्यमिता पर विशेष बल दिया जा रहा है। परिसर विद्यार्थियों की समग्र प्रगति को केन्द्र में रखते हुए उनके हृदय और मस्तिष्क का विकास, शैक्षिक, सांस्कृतिक, भौतिक एवं सामाजिक आवश्यकतओं के लिए एक ऐसे वातावरण की स्थापना करता है जो कि विद्यार्थियों के मन एवं शरीर को समृद्ध बनाने में सहायक है। यहाँ के सभी संकाय सदस्य पूर्ण रूप से गुणवत्ता युक्त शिक्षा को अपने कौशल एवं ज्ञान द्वारा प्रदान करने के लिए संकल्पित हैं। परिसर न केवल सफल एवं उच्च पेशेवरों का निर्माण करता है अपितु उच्च शैक्षिक परिणामों के लिए तथा ग्रामीण अंचल के लोगों के उत्थान हेतु प्रयत्नशील है।

शैक्षणिक सत्र में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में अनेक शैक्षणिक व पाठ्येत्तर गतिविधियों, अभिविन्यास कार्यक्रम तथा प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों का आयोजन परिसर के विकास व उन्नति के लिए किया गया। विभिन्न महत्वपूर्ण अभियान जैसे वृक्षारोपण अभियान, रक्तदान शिविर इत्यादि को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। परिसर में विभिन्न उत्सवों जैसे जन्माष्टमी तथा महामना दीपावली को हर्षोल्लास से मनाया गया तथा हजारों दीयों को प्रज्ज्वलित कर परिसर को प्रकाशित किया गया। परिसर में इस सत्र में शैक्षिक ज्ञानवृद्धि के लिए विभिन्न व्याख्यानों का आयोजन किया गया। परिसर में दो दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक महोत्सव ''दिशा'' पूरे उत्साह और ऊर्जा के साथ मनाया गया। सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम के परिणाम स्वरूप परिसर वर्ष पर्यन्त प्रकृति के अनुकूल स्वच्छता से परिपूर्ण रहा।

मुख्य कार्यों का एक संक्षिप्त विवरण

- दिनांक १७ अगस्त २०१४ को राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, का.हि.वि.वि. के सभी छात्रावासों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को पूरे हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर श्रीकृष्ण की जीवन लीला एवं बाल लीला पर आधारित विभिन्न झाँकियों एवं नाट्य कलाओं का प्रदर्शन किया गया तथा परिसर में विभिन्न छात्रावासों को प्रतियोगिता के आधार पर क्रमवार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान दिये गये।
- परामर्श और मनोचिकित्सा में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा २ अक्टूबर २०१४ को महात्मा गाँधी जयंती एवं लालबहादुर शास्त्री जयंती के उपलक्ष्य में कक्षाओं एवं परिसर की सफाई का अभियान चलाया गया।

- २९ नवम्बर २०१४ को राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में एक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया।
- महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की १५३वीं जयन्ती के पावन अवसर पर तीन दिवसीय मालवीय जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिनांक २३-२४ दिसम्बर २०१३ को विभिन्न कार्यक्रमों जैसे चित्रकला प्रतियोगिता एवं साहित्यिक प्रतियोगिताएँ जैसे संभाषण व निबंध लेखन का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त श्रीमद भागवद् गीता के सस्वर पाठ का भी आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक २५ दिसम्बर की शाम मालवीय दीपावली का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत ११००० दीपकों को प्रज्ज्वलित कर महामना को श्रद्धांजलि दी गयी।
- माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने कार्य भार ग्रहण करने बाद पहली बार दिनांक ०७.०१.२०१५ को राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर का भ्रमण किया। परिसर के भ्रमण के क्रम में कुलपति सबसे पहले लोवर खजुरी स्थित वाटर लिफ्टिंग पम्प कैनाल देखने पहुँचे। इसके पश्चात् वे परिसर में जल आपूर्ति हेतु जल शोधन इकाई का भ्रमण करने पहुँचे। माननीय कुलपति जी ने विभिन्न छात्रावासों, व्याख्यान कक्ष संकुल, क्रीड़ा संकुल, सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल एवं कृषि प्रक्षेत्र का दौरा किया। कुलपति ने दक्षिणी परिसर कोर ग्रुप सभा की बैठक में अध्यक्षता की और परिसर के विकास से सम्बन्धित नीतिगत मुद्दों पर चर्चा एवं विचार विमर्श किया।
- दिनांक २६ जनवरी २०१५ को गणतन्त्र दिवस की ६६वीं वर्षगाँठ पर राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विशेष कार्याधिकारी प्रो. राम प्रताप सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हुए राष्ट्र के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस अवसर पर देश प्रेम की भावना से भरी हुई मनोरम प्रस्तुतियाँ जैसे गीत, कवितायें, समूह गान तथा समूह नृत्य दक्षिणी परिसर के विद्यार्थियों द्वारा की गयी। सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भी समूह नृत्य एवम् गायन के द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को आह्लादित कर दिया।
- दिनांक ७-८ फरवरी २०१५ को कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (शीर्षक सस्टेनेबल रूरल डेवलपमेंट थ्रो सोइल हेल्थ एंड फर्टिलिटी मैनेजमेंट इन एग्रीकल्चर) का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
- दिनांक १६, १८ एवं १९ फरवरी २०१५ को तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम ''दिशा'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ परिसर के कोर ग्रुप चेयरमैन प्रो. रवि प्रताप सिंह सिंह ने किया। कार्यक्रम के प्रथम दिवस लघु नाटिका, नाट्य, एकल अभिनय, माइम, मिमिक्री, सम्भाषण, वाद विवाद, निबन्ध प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, कविता, चित्रकला, कोलाज, फोटोग्राफी इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दूसरे एवं तीसरे दिन भारतीय समूह गायन, पाश्चात्य समूह गायन, समूह गायन, एकल एवं समूह नृत्य, वादन यंत्र इत्यादि की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की विश्वविद्यालय क्रीडा परिषद द्वारा दिनांक०८.०२.२०१५ से ०३.०३.२०२० तक प्रतिष्ठित ईस्ट जोन एण्ड इण्टरजोनल ऑल इण्डिया इण्टरयुनिवर्सिटी फुटबाल टूर्नामेंट (महिला) का आयोजन सत्र २०१४-१५ हेतु राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा के खेल मैदान पर किया गया।
- ११ से १८ मार्च २०१५ तक योग चिकित्सा पर आठ दिवसीय कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में किया गया।
- १७ से २४ मार्च २०१५ तक एम् एस एक्सेल में सांख्यकी नामक विषय पर आठ दिवसीय कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में किया गया।
- २४ से २१ मार्च २०१५ तक व्यक्तित्व प्रबंधन पर आठ दिवसीय कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में किया गया ।
- राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर बरकछा में पत्रकारिता एवं जनसम्प्रेषण विभाग के द्वारा फिल्म महोत्सव और समसामयिक मुद्दे पर कार्यशाला का आयोजन २६ मार्च से ०१ अप्रैल, २०१५ तक किया गया। कार्यक्रम मे पहले दिन शिक्षा पर आधारित फीचर फिल्म तारे जमीं पर, दूसरे दिन धर्म पर आधारित ओ माय गॉड, तीसरे दिन महिला सशक्तिकरण पर आधारित मैरी कोम, चौथे दिन राजनीतिक भ्रष्टाचार पर आधारित फिल्म अर्धसत्य और पाँचवें दिन भारतरत्न महामना के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र दिखाए गए। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में मानवीय धर्म, राजनीति मे नैतिकता, शिक्षा एवं जीवन मे सकारात्मक सोच की महत्ता पर प्रकाश डाला गया।
- राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में बी.फार्म. आयुर्वेद एवं एम फार्म आयुर्वेद पाठ्यक्रम द्वारा दो दिवसीय विशेष व्याख्यान ''भेषज २०१५'' का आयोजन ८ तथा ९ अप्रैल २०१५ को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आयुर्वेद क्षेत्र के विश्व विख्यात चिकित्सक एवं राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के भूतपुर्व कुलपति, प्रो. राम हर्ष सिंह जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सी.सी.आइ.एम. के भूतपूर्व उपाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश नारायण, विशिष्ट अतिथियों में वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, नैनी, इलाहाबाद से डॉ. के.जी.न्यूटन, वेटेनरी साइंस, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डॉ. रमा देवी तथा परिसर के मुख्य कार्याधिकारी प्रो. राम प्रताप सिंह जी उपस्थित थे। इस अवसर पर ०८ अप्रैल २०१५ को हेपेटाइटिस बी टीकाकरण का भी आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन डॉ. संध्या नारायण द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर के ५० छात्रों का टीकाकरण किया गया। भेषज २०१५ के दूसरे दिन विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया विजेताओं को केरला आयुर्वेद प्रा. लिमिटेड की तरफ से पुरस्कार वितरित किया गया। व्याख्यान श्रृंखला में दूसरे दिन डॉ. के.एन. सिंह, सहायक प्राध्यापक, शरीर रचना विभाग, का.ही.वि.वि. तथा श्री वरुण कुमार सिंह का व्याख्यान सम्पन्न हुआ।

कुलपति द्वारा राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा का निरीक्षण - ७ जनवरी, २०१५

- २३-२४ अप्रैल २०१५ को राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर के टेक्सटाइल डिजाइन एवं हस्त शिल्प कला विभाग में दो दिवसीय ग्रूप शो का आयोजन किया गया। ग्रूप शो का उद्घाटन दृश्य कला संकायाध्यक्ष, प्रो. हीरालाल प्रजापति द्वारा किया गया। टेक्सटाइल डिजाइन विभाग के छात्रों द्वारा डिजिटल प्रिंटिंग, कालीन, टेक्सटाइल, मुगल कला, म्यूजिकल कला व अन्य कलाओं पर आधारित लगभग १५० कृतियों की प्रदर्शनी लगायी गई जिसे सभी ने खूब सराहा। इसके अतिरिक्त जूट एवं बाँस से निर्मित हस्त शिल्प उत्पादों की प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केंद्र रही।

विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अनुसंधान सुविधाओं का विवरण

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में अनुसंधान गतिविधियों की मजबूत आधारशिला रखे जाने की आवश्यकता है। विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे एम.सी.ए., एम.एससी. (टेक) इन इन्वायरमेन्टल साइंस एण्ड टेक्नोलजी, बी.एससी. (एजी.) स्वायल एवं वाटर कंजरवेशन में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण, लुघशोध एवं मृदा प्रबंध के लिए संगणक प्रयोगशाला और रासायनिक प्रयोगशाला की सुविधा कुछ सीमा तक प्रदान की जा रही है।

- एम.बी.ए. (ए.बी.) के छात्रों के लिए संगणक प्रयोगशाला है जिसमें छात्रों को प्रबंधन सूचना प्रणाली एवं प्रौद्योगिकी उपकरणों के विभिन्न पहलुओं को जानने की सुविधा उपलब्ध है।
- राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में लगभग २ हेक्टेयर भूमि एस.एससी. (एजी.) इन एग्रोफोरेस्ट्री के छात्रों को शोध कार्य हेतु प्रदान की गई है जो शरीफा, अमरूद और बेल कृषि बागवानी प्रणाली पर आधारित है।
- राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रयोगशाला एम.फार्म. (आयुर्वेद) के छात्रों के लिए उपलब्ध है जिसमें विभिन्न उपकरण जैसे फोरियर ट्रान्सफॉर्म इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, यू.वी.स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, एटोमिक एब्जार्ब्शन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, रोटरी इवैपोरेटर, इन्क्यूबेटर्स, फर्नेस, ऑटोक्लेव, टैबलेट पंचिंग मशीन, टैबलेट पैकेजिंग मशीन, पिल मेकिंग मशीन, डिस इन्टीग्रेशन टेस्टर, हार्डनेस टेस्टर, लेमिनार एयरफ्लो, यू.वी. चेम्बर, कैप्सूल फिलिंग मशीन, टिशू होमोजेनाइजर, टिशू बाथ, इलेक्ट्रो कन्वल्जीयोमीटर, डिसटिलेशन एसेम्बली उपलब्ध हैं।

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में पादप जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला उपलब्ध है जिसमें विभिन्न उपकरण जैसे हारिजॉन्टल इलेक्ट्रोफोरेसिस यूनिट, मिनी स्पिन, रेफ्रीजरेटेड माइक्रोसेंट्रीफ्यूज, आइस फ्लेकिंग मशीन, वाटर बाथ, वोटैक्स, लेमिनार एयरफ्लो, थर्मलसाइक्लर, जेल डाक्यूमेंटेशन सिस्टम, औरबीटल शेकिंग सिस्टम, डीप फ्रीजर, फ्लोर सेंट्रीफ्यूज, इनवर्टेड माइक्रोस्कोप, यू.वी.स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, प्लांट ग्रोथ चेम्बर, टिशू कल्चर आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

२.३. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय

२.३.१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज
२.३.२. वसन्त महिला महाविद्यालय
२.३.३. वसन्त कन्या महाविद्यालय
२.३.४. दयानन्द महाविद्यालय (डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज)

२.३.१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज

किसी देश की सांस्कृतिक और शैक्षिक अस्मिता ही उसकी पहचान होती है। संस्कृति और सभ्यता के बहुआयामी स्वर को विकसित करने में शैक्षिक रचनात्मकता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। महर्षि ज्ञानानन्द जी की सुयोग्य शिष्या श्रीमती विद्यादेवी के योगदान से सन् १९५६ में स्थापित संस्था आर्य महिला महाविद्यालय ने कला, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान के साथ भारतीय परंपरा के गौरवशाली इतिहास में अपनी नई पहचान बनाई है। महाविद्यालय की प्रथम प्राचार्या सुश्री सुन्दरी बाई पाई के कुशल नेतृत्व में तथा आयुर्वेद रत्न पं. बृजमोहन दीक्षित के अभिभावकत्व में सन् १९५८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए. को अस्थायी तथा १९५८ में स्थायी सम्बद्धता प्राप्त कर आज इस महाविद्यालय में सुचारू रूप से स्नातक तथा स्नातकोक्तार कक्षाओं का अध्ययन- अध्यापन हो रहा है। काशी के इस प्रतिष्ठित प्राचीन संस्था का प्रबंध-संचालन महर्षि ज्ञानानन्द जी द्वारा संस्थापित श्री भारत धर्म महामण्डल की शाखा श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् द्वारा संपादित किया जाता है।

महाविद्यालय का मूल उद्देश्य स्त्री शिक्षा और उनका सशक्तीकरण रहा है, अत: आज के युग में इस संस्था की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

सहशैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ

सत्र २०१४-१५ का आरम्भ जुलाई २०१४से हुआ। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर छात्राओं ने विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। शिक्षक दिवस के अवसर पर स्नातक कला, सामाजिक विज्ञान, स्नातक वाणिज्य, शिक्षाशास्त्र विभाग तथा स्नातकोक्तार कक्षाकी छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा प्राध्यापिकाओं का सम्मान किया।

इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस तथा सरस्वती पूजनोत्सव के अवसर पर छात्राओं ने एकल नृत्य, समूह नृत्य, सितार वादन इत्यादि सुरुचिपूर्ण एवं सुन्दर प्रस्तुतियाँ कर अपनी बहुविध प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया।

९५वाँ स्थापना दिवस समारोह

श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् ने अपना ९५वाँ स्थापना दिवस १४ दिसम्बर २०१४ को मनाया, जिसमें महापरिषद् द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सम्माननीय प्रो. पृथ्वीश नाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, मुख्य अतिथि थे। प्रो. आर.के. मिश्रा, कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् के वरिष्ठ सदस्य श्रीमान् दीनानाथ झुनझुनवाला को सम्मानित किया गया। अवकाश प्राप्त शिक्षिकाओं तथा शिक्षणेतर कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

प्रबन्धक महोदय डॉ. शशिकान्त दीक्षित जी द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर महापरिषद् द्वारा संचालित सभी संस्थाओं द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। डॉ. उमापन्त, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग एवं रंजना मालवीय प्राचीन

भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व की पुस्तक का लोकार्पण मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा किया गया। साथ ही दर्शनशास्त्र विभाग की शोध पत्रिका 'विमर्श' का विमोचन भी हुआ।

नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

दिनांक १४ फरवरी, २०१५ को महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन सम्माननीय प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, कुलपति, का.हि.वि.वि. के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस भवन का निर्माण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के ओ.बी.सी. कोटा के तहत प्राप्त धनराशि से हुआ है।

संस्कृत-विभाग : दिनांक ०५ अप्रैल, २०१५ को 'सुकृति-२०१५' छात्राओं द्वारा रची गई पत्रिका का लोकार्पण प्रो. गोप बन्धु मिश्रा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, का.हि.वि.वि., वाराणसी द्वारा किया गया तथा 'वैश्विक स्तर पर संस्कृत अध्ययन के आधुनिक सन्दर्भ' विषयक व्याख्यान आयोजित हुआ।

दिनांक ०८ अक्टूबर, २०१४ को बाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर छात्राओं द्वारा वाल्मीकि रामायण के श्लोकों की सस्वर प्रस्तुति की गयी। दिनांक १७ फरवरी, २०१५ को श्लोक अन्त्याक्षरी एवं सूत्र अन्त्याक्षरी का आयोजन हुआ। छात्राओं ने ज्ञान प्रवाह की शैक्षणिक यात्रा की।

हिन्दी विभाग : दिनांक १४ सितम्बर २०१४ को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में एम.ए. द्वितीय वर्ष की दो छात्राओं कु. रागनी एवं कु. गरिमा ने उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय में हिन्दी भाषा का महत्व पर व्याख्यान दिया। डॉ. बृजबाला सिंह, मुख्य वक्ता थी।

१९ अक्टूबर, २०१४ को प्रो. रतन कुमार पाण्डेय, मुम्बई विश्वविद्यालय ने 'हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य' विषयक व्याख्यान दिया।

४ नवम्बर, २०१५ को सरदार बल्लभ भाई पटेल- जयन्ती के उपलक्ष्य में छात्राओं में पोस्टर प्रदर्शनी लगाई। १८ अक्टूबर, २०१४ को 'अधूरी कविताओं का कवि मुक्तिबोध' विषयक अन्तर्महाविद्यालयीय भाषण प्रतियोगिता का अयोजन किया गया। जिसमें डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, बसन्त महाविद्यालय, कमच्छा, उदय प्रताप स्वयत्तशासी महाविद्यालय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने सहभागिता की। मुख्य वक्ता प्रो. रामाज्ञा शशिधर, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि., विशिष्ट वक्ता श्री हिमांशु उपाध्याय, दैनिक जागरण तथा डॉ. उषा शर्मा, संत हिरदाराम कॉलेज, भोपाल थीं।

दिनांक १३.१४, फरवरी २०१५ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी,'साहित्य कला एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में मध्यकालीन समाज' का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता थे प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ थे। समापन सत्र की अध्यक्षता माननीय श्री गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, कुलपति का.हि.वि.वि. ने की।

शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ

बंगला विभाग : दिनांक २१ फरवरी, २०१५ को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा दिवस के अवसर पर 'नवजागरण के प्रतीक माइकल मधु सूदन दत्त विषयक' संगोष्ठी का आयोजित हुआ। जिसमें प्रो. प्रकाश कुमार मैत्या, अध्यक्ष, बंगला विभाग, मुख्य अतिथि थे।नव वर्ष वरन्, 'निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन' दिनांक १५.०४.२०१५ को आयोजित था, जिसमें बंगला विभाग की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री रामचन्द्र मिशन एवं यूनाइटेड नेशन इन्फार्मेशन सेंटर आफ इण्डिया एण्ड भूटान द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में छात्राएं पुरस्कृत की गई।

अंग्रेजी विभाग : बाल दिवस के अवसर पर छात्राओं ने काशी अनाथालय में जाकर पं. नेहरू के बारे में बताया और पुस्तकें वितरित कीं।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातक्त विभाग : दिनांक ११ अप्रैल,२०१४ को 'इण्डियन टेंपल आर्किटेक्चर' विषयक व्याख्यान डॉ. इरावती कर्षनन्दा द्वारा दिया गया। दिनांक ३१ मार्च, २०१५ को बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं द्वारा भारतीय इतिहास लेखन पद्धति पर प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दर्शनशास्त्र विभाग : दिनांक २५.११.२०१४ को 'विश्व दर्शनशास्त्र दिवस' का आयोजन किया गया। प्रो. पी.के मुखोपाध्याय, जादवपुर विश्वविद्यालय ने 'दर्शनशास्त्र की उपयोगिता' विषय पर व्याख्यान दिया। दिनांक १२ मार्च, २०१५ को 'श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग का आधुनिक संदर्भ में औचित्य' विषयक अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्लीसे अनुदानित व्याख्यान श्रृंखला में क्रमश: प्रो. पी.के. मुखोपाध्याय, 'फिलासफी और दर्शन', प्रो. एस.पी. व्यास 'दर्शनशास्त्र एवं जीवन मूल्य', डॉ. आर.के. राना, 'चाईनीज बुद्धिज्म' विषय परअपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किये।

संगीत (वादन) विभाग : महाविद्यालय में आयोजित स्वतन्त्रता दिवस, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, गणतन्त्र दिवस पर सांगीतिक प्रस्तुति की। युवा महोत्वसव, मेधा संकुल 'स्पंदन' का.हि.वि.वि. में सहभागिता की। कु. श्रुति मिश्रा ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

संगीत(गायन) विभाग : संगीत विभाग की छात्राओं ने महाविद्यालय में सम्पन्न होने वाले आयोजनों- स्वतंत्रता दिवस, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, गणतंत्र दिवस एवं स्थापना दिवस को सस्वर प्रस्तुतियों से अलंकृत किया। दिनांक २७ मार्च, २०१५ को प्रो. ऋात्विक सान्याल का 'संगीत का इतिहास' विषयक व्याख्यान आयोजित हुआ।

गृह विज्ञान विभाग : दिनांक २२.०४.२०१४ को 'अर्थ डे'मनाया गया। छात्राओं ने पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया। १ सितम्बर २०१४ से ७ सितबर २०१४ 'पोषण सप्ताह' मनाया गया जिसमें भोजन पोषण एवं विभिन्न आयु वर्ग के लोगों को फल खाने सम्बन्धित विशेष बातें बताई गईं।

दिनांक २७.१०.२०१४ को 'मधुमेह' पर डॉ. अनीता सिंह, अग्रसेन पी.जी. कॉलेज, वाराणसी का व्याख्यान हुआ। दिनांक

१३.१०.२०१४ से सप्तदिवसीय कार्यशाला एवं स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिनांक १२.११.२०१४ को 'हैण्डवाश डे' पर छात्राओं ने स्वच्छता पर विचार विमर्श किया। दिनांक ३१.१०.२०१४ को 'पढ़ो-पढ़ो-पढ़ो' शीर्षक रैली निकाली गई।दिनांक २२.०३.२०१५ 'वाटर डे' मनाया गया जिसमें जल संरक्षण पर विचार विमर्श हुआ।

अर्थशास्त्र विभाग : दिनांक ०५.०१.२०१४ को 'आर्थिक बाजार' विषयक व्याख्यान डॉ. रवीन्द्र हुलयंकर, पुणे द्वारा दिया गया। दिनांक २८ मार्च, २०१५ को 'पर्यावरण संरक्षण' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मनोविज्ञान विभाग : दिनांक २४.०३.२०१५ को 'पोस्ट हॉफ मेथड' विषयक व्याख्यान प्रो. तुषार सिंह, मनोविज्ञान विभाग, बी.एच.यू. द्वारा सम्पन्न हुआ। दिनांक ३०.०३.२०१५ को डॉ. पूर्णिमा अवस्थी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 'क्लाइन्ट सेन्ट्रेड थेरेपी' विषयक व्याख्यान हुआ। छात्राएं समय-२ पर 'संवेदन' एवं 'नयी सुबह' क्लीनिक में ज्ञानार्जन करने गयी।

समाजशास्त्र विभाग : दिनांक ३१ जनवरी, २०१५ को प्रो. जैकब जान कट्टकैयम, केरल विश्वविद्यालय ने 'उच्च शिक्षा में गुणवत्ता' विषयक व्याख्यान दिया।

दिनांक २४ सितम्बर, २०१४ को प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक ७ फरवरी, २०१५ को 'जेंडर प्रॉसपेक्ट आन हायर एजूकेशन' विषय पर प्रो. अविनश चन्द्र पाण्डेय, कुलपति, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी ने व्याख्यान दिया।

राजनीतिशास्त्र विभाग : १४ मार्च, २०१५ को रोटरैक्ट क्लब द्वारा आर्य महिला पी.जी. कॉलेज में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'प्रशासनिक नौकरियों के लिए किस प्रकार तैयारी करें'।

इतिहास विभाग : दिनांक ३.११.२०१४ को भाषण प्रतियोगिता 'सरदार पटेल की राष्ट्रीय एकता' विषय पर आयोजित की गई। २२ नवम्बर, २०१४ डॉ. ए. गंगा धरन का 'विज्ञान एवं तकनीकी पर स्वदेशी आन्दोलन का प्रभाव' शीर्षक व्याख्यान हुआ।

वाणिज्य विभाग : तीन वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनके शीर्षक है, जन-धन योजना, डिसइन्वेस्टमेंट इन पब्लिक इण्टरप्राइजेज एवं यू गर्वनमेण्ट इन्सेएटिव आफ फाइनेशियल इक्लूजन। विभिन्न विषयों पर बाजार सर्वेक्षण कराया गया जैसे- मार्केट सर्वे मोबाइल फोन, दो पहिये वाहन, कॅडवरीज चॉकलेट, मंजन, शीतल पेय इत्यादि। औद्योगिक भ्रमण में कोका कोला फैक्टरी का निरीक्षण किया गया। कैरियर गाइडेन्स पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण विभाग : सत्र की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि बी.एड. की कक्षा में आई.सी.टी. के अधिकाधिक प्रयोग के लिए एक प्रोजेक्टर की व्यवस्था थी।

प्रथम सेमेस्टर में ४० दिन का शिक्षणाभ्यास समस्त छात्राध्यापिकाओं द्वारा किया गया।

द्वितीय सेमेस्टर में ५ दिवसीय स्काउटिंग गाइडिंग कैंप (१७-२१ जून २०१५) तथा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (२३ जनवरी -०९ फरवरी २०१५) का आयोजन हुआ जिसके अन्तर्गत छात्राओं ने ब्यूटी कल्चर पेंटिग कुकिंग, डान्स, ढोलक मेंहदी, आभूषण बनाना इत्यादि कार्यक्रमों में भाग लिया। छात्राओं को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार भी दिये गये।

सामुदायिक कार्य के लिए छात्राध्यापिकाएं 'किरन संस्थान' गई जहां उन्होंने विकलांग बच्चों के साथ बातचीत की।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'भारत में बलात्कार एवं यौन शोषण एक पुनर्विचार' शीर्षक पर व्याख्यान डॉ. विनीता चन्द्रा काशी हिन्दू विश्वविघालय द्वारा दिया गया।

४ अप्रैल २०१५ को शिक्षा संकाय प्रमुख प्रो. हरिश्चन्द्र सिंह राठौर द्वारा 'शिक्षा का संप्रत्यय' विषयक व्याख्यान दिया गया।

१० अप्रैल २०१५ को बी.एड. पुरातन छात्रा समागम का आयोजन हुआ जिसमें पूजा मधोक को प्रतिष्ठित पुरातन छात्रा के रूप में सम्मानित किया गया।

बौद्ध अध्ययन केन्द्र : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दर्शन शास्त्र विभाग में बौद्ध अध्ययन केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत षड्मासिक सर्टीफिकेट कोर्स, पालिभाषा एवं बौद्ध दर्शन के ज्ञानार्जन हेतु चलाया जाता है।३० अक्टूबर, २०१४ को इस कोर्स का उद्घाटन प्रो. रमेश प्रसाद, पालि एवं थेरवाद विभाग, सं.स. विश्वविद्यालय ने किया।

१७ मार्च, २०१५ से २१ मार्च, २०१५ तक बौद्ध महोत्सव और राष्ट्रीय संगोष्ठी 'बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम' का आयोजन किया गया। सम्माननीय कुलपति प्रो. एल.एन. शास्त्री केन्द्रीय तिब्बती संस्थान, सारनाथ ने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा समापन सत्र का उद्‌बोधन सम्माननीय कुलपति प्रो. यदुनाथ दूबे, सं.सं. विश्वविद्यालय ने किया।

विशेष व्याख्यान- दर्शन, धर्म, बौद्ध कला, बौद्ध चिकित्सा, बौद्ध तंत्र, बौद्ध शिक्षा पर प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी, प्रो. मारूतिनंदन तिवारी, प्रो. लोकसंग टोन्जेन, डॉ. बनारसी लाल एवं प्रो. कल्पलता पाण्डेय द्वारा सम्पन्न हुआ।जातक कथाओं पर आधारित नृत्य एवं नाटक की मोहक प्रस्तुति भी की गयी। बौद्ध धरोहरों पर श्री प्रवीन सिंह, आर. चौहान द्वारा चित्रकला प्रदर्शनी लगाई गई।

प्रकाशन : महाविद्यालय में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं का विवरण निम्नवत् है-

१. न्यूज लेटर - प्रशिक्षण विभाग (बी.एड्.) समाचारपत्र
२. दर्पण - महाविद्यालयीय समाचारपत्र
३. सर्जना - महाविद्यालयीय वार्षिक पत्रिका (आई.एस.बी.एन. के साथ)
४. क्रियेशन - वार्षिक शोध पत्रिका (आई.एस.एस.एन. के साथ)
५. विमर्श - दार्शनिक पत्रिका

उपचार -कक्षाएँ

हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत की अल्पज्ञ तथा एस.सी./एस.टी./ओ.बी.सी. (क्रीमीलेयर के अधीनस्थ) वर्ग की छात्राओं के लिए यू.जी.सी. की ११वीं योजना के अन्तर्गत उपचार-कक्षाओं का संचालन किया जाता है जिनमें छात्राओं को विषय का आधारभूत ज्ञान कराने पर बल दिया जाता है। ये कक्षाएं सामान्यत: सप्ताह में २ दिन संचालित होती हैं।

अभिभावक-शिक्षक समागम समारोह

महाविद्यालय के प्राय: समस्त विभागों द्वारा अभिभावक-शिक्षक समागम का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत छात्राओं की प्रगति एवं कैरियर गाइडेंस के विषय में अभिभावकों के साथ विचार विमर्श किया गया। अभिभावकों के द्वारा फीड बैक फार्म भरवाया गया जिनमें शिक्षकों के गुण एवं कमियों पर अभिभावकों द्वारा विचार व्यक्त किये गये।

इग्नू

इग्नू सेण्टर महाविद्यालय में दिनांक ११.०८.२०११ को प्रारम्भ हुआ इसके अन्तर्गत ०९ विषय संचालित किये जाते है विभिन्न विषयों के अन्तर्गत इस वर्ष २५८ छात्राओं का पंजीकरण किया गया है।

अन्त:संरचना सुविधाएँ

महाविद्यालय में पाँच प्रयोगशालाएँ हैं जिनमें १ मनोविज्ञान विभाग में, ३ गृह विज्ञान विभाग में (फूड एवं न्यूट्रीशियन, टेक्सटाइल एण्ड क्लाथिंग, होम मैनेजमेंट एक्टेंशन एजुकेशन) तथा १ प्रशिक्षण विभाग में है।

महाविद्यालय में एक आडिटोरियम (हॉल), स्टेज, खेल का मैदान, पुस्तक एवं पठन-पाठन सामग्री केन्द्र, छायाप्रति-सुविधा एवं जलपान गृह की सुविधा है। कम्प्यूटर प्रयोगशाला में ४० कम्प्यूटर इन्टरनेट सुविधा से युक्त हैं। प्रोजेक्टर के माध्यम से प्राध्यापिकाओं के व्याख्यान कराने के लिए, पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण तथा अन्य दृश्य-श्रव्य उपकरणों की सुविधाएँ इस महाविद्यालय में उपलब्ध हैं। महाविद्यालय की अन्य सुविधाओं के अन्तर्गत छात्राओं के लिए चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है जिसमें सप्ताह में ०२ दिन छात्राओं के सामान्य चिकित्सकीय परीक्षण के लिए योग्य चिकित्सक नियुक्त हैं।

आर्य महिला पी.जी. कॉलेज द्वारा आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी समारोह

२.३.२. वसन्त महिला महाविद्यालय

महान दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति की संस्था वसंत महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत आती है इसलिए महाविद्यालय का संचालन विश्वविद्यालय के ऐकेडमिक कैलेण्डर के अनुसार होता है। सत्र २०१४-१५ के लिए महाविद्यालय ५ जुलाई, २०१३ को खुला। प्रवेश प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात् तत्कालीन प्राचार्य डॉ. विजय शिवपुरी ने नवागत छात्राओं का स्वागत किया। उन्होंने महाविद्यालय की ऐतिहासिक परम्परा के विषय में छात्राओं को बताया तथा अपने वक्तव्य में शिक्षक और शिक्षार्थियों की 'गुड रिलेशनशिप' पर बल दिया।

परीक्षा-परिणाम एवं योग्यता सूची

महाविद्यालय में सभी कक्षाओं का परीक्षा-परिणाम ९६% से अधिकतम तक रहा जो कि संतोषजनक है। का.हि.वि.वि. के दीक्षांत समारोह (२५-२६ अप्रैल, २०१५) में वाणिज्य संकाय की हिना रानी, बी.कॉम. तृतीय वर्ष को चम्पा देवी स्वर्ण पदक, श्री अजय जैन स्मृति स्वर्ण पदक, श्रीमती अन्नपूर्णा देवी अग्रवाल स्मृति स्वर्ण पदक, श्री सत्यनारायण प्रसाद स्मृति स्वर्ण पदक, का.हि.वि.वि. पदक, देवी प्रसाद अग्निहोत्री पदक कुल छः पदक प्राप्त हुए।

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

जुलाई २०१३ से जुलाई, २०१४ तक महाविद्यालय का शताब्दी वर्ष मनाया गया। इस अवसर पर वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए।

पुरातन छात्रा सम्मेलन

८ अगस्त, २०१४ को महाविद्यालय में पुरातन छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में वर्ष १९३५ से २०१० तक के बैच की छात्राओं को आमन्त्रित किया गया। इस कार्यक्रम में एक साथ चार पीढ़ियाँ शामिल हुई। इस आयोजन में डॉ. पुष्पलता प्रताप, डॉ. कुसुम अग्रवाल, प्रो. सुशीला सिंह, प्रो. कल्पलता पाण्डेय, डॉ. मंजु सुंदरम, डॉ. अल्पना राय चौधरी, डॉ. मनुलता शर्मा सहित कई पुरा छात्राओं ने अपने संस्मरण सुनाये। इस अवसर पर पुरा छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

महाविद्यालय के शताब्दी वर्ष का समापन समारोह

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. विजय शिवपुरी ने ९ अगस्त, २०१४ को संस्था की उपलब्धियों के विषय में विस्तार से जानकारी दी। इस समारोह के मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व यू.जी.सी. रिफार्म कमेटी के चेयरमैन प्रो. हरि गौतम थे। अपने वक्तव्य में प्रो. हरि गौतम ने कहा कि नए और पुराने लोगों के साथ मिलकर भविष्य का निर्माण किया जाना चाहिए।

विशिष्ट आमन्त्रित अतिथि व्याख्यान

१९ अगस्त, २०१४ को विश्व फोटोग्राफी दिवस पर चित्रकला विभाग द्वारा डॉ. परवीन सुल्ताना के संयोजन में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रोफेशनल छायाकार राजकुमार सिंह ने छात्राओं को फोटोग्राफी के विषय में जानकारी दी। ११, १२

सितम्बर, २०१४ को चित्रकला-विभाग में 'पोट्रेट पेन्टिंग' पर श्री प्रणाम सिंह चित्रकला-विभाग, का.हि.वि.वि. का तथा डॉ. प्रदोष मिश्र, हिस्ट्री ऑफ आर्ट्स, का.हि.वि.वि. का 'कटेम्परारी इंडियन आर्ट आर्टिस्ट एण्ड आर्ट इन द वेस्ट' विषय पर व्याख्यान तथा स्लाइड शो हुआ। ७ अक्टूबर, २०१४ को राजनीति विज्ञान विभाग तथा इतिहास विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रसिद्ध गाँधीवादी वक्ता श्री अमरनाथ भाई, पूर्व अध्यक्ष सर्व सेवा संघ का शिक्षार्थियों के साथ इंटरेक्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अर्थशास्त्र विभाग में अक्टूबर, २०१४ में डॉ. जी.पी. सिंह, आई.एम.एस., का.हि.वि.वि. का 'एस.पी.एस.एस. एण्ड एक्सेल का सांख्यिकी में प्रयोग' पर तथा श्री रवीन्द्र हुलयाकर ने 'वित्तीय बाजार' पर व्याख्यान दिया। २७ अक्टूबर, २०१४ को ज्ञान केन्द्र, पुस्तकालय में इण्टरेक्टिव कार्यक्रम में स्वीडन के डॉ. पारलोलॉफ फजालस्बी, कार्लस्टड, विश्वविद्यालय ने फैकेल्टी मेम्बर्स के साथ बातचीत की। ५ नवम्बर, २०१४ को हिन्दी-विभाग में डॉ. शशिकला त्रिपाठी के संयोजन में प्रो. रतन कुमार पाण्डेय, हिन्दी-विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय का 'इक्कीसवीं सदी में साहित्य' विषय पर व्याख्यान हुआ। ८ नवम्बर, २०१४ को संस्कृत-विभाग द्वारा 'संस्कृत सम्भाषण' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संवादशाला, गाँधी विद्या संस्थान, राजघाट के श्री अरविन्द मिश्र तथा पूनम मिश्र का व्याख्यान हुआ। १० नवम्बर, २०१४ को दर्शनशास्त्र-विभाग में प्रो. लक्ष्मी निधि शर्मा, का.हि.वि.वि. का 'धर्म' विषय पर व्याख्यान हुआ। १२ नवम्बर, २०१४ को प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व और इतिहास विभाग के तत्त्वावधान में श्रीमती के. सुब्बलक्ष्मी सेवानिवृत्त प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, आन्ध्र प्रदेश का 'मौर्य प्रशासन' विषय पर व्याख्यान हुआ। १८ नवम्बर, २०१४ को उर्दू-विभाग में प्रो. याकूब अली खान, अध्यक्ष, उर्दू-विभाग, का.हि.वि.वि. ने 'उर्दू अदब' पर व्याख्यान दिया। १९ नवम्बर, २०१४ को संस्कृत-विभाग में डॉ. कमला पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, वसंत कन्या महाविद्यालय ने 'न्याय' विषय पर व्याख्यान दिया। २५ नवम्बर, २०१४ को समाजशास्त्र-विभाग में 'शोध प्रविधि' विषय पर प्रो. सोहनराम यादव, अध्यक्ष, समाजशास्त्र-विभाग, का.हि.वि.वि. का व्याख्यान हुआ। २६ नवम्बर, २०१४ को 'एक्जाम फोबिया और टाईम मैनेजमेंट' विषय पर डॉ. अतहर महमूद, जयपुरिया संस्थान, लखनऊ ने अपना व्याख्यान दिया। प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग में २० फरवरी, २०१५ को 'हड़प्पा संस्कृति' विषय पर डॉ. डी.पी. शर्मा, भूतपूर्व निदेशक, भारत कला भवन संग्रहालय, का.हि.वि.वि. का वयाख्यान हुआ। १४ मार्च, २०१५ ट्रेवैल एण्ड टूरिज़्म मैनेजमेंट और मास कम्यूनिकेशन के विद्यार्थियों के बीच पर्यटन लेखक और वरिष्ठ पत्रकार श्री अनिल माथुर का व्याख्यान हुआ। २६ मार्च, २०१५ 'कोजेन्डर चैलेन्जज इन द मार्डन इरा: हिस्टोरिकल, पॉलिटिकल एण्ड लीगल डाइमेन्शन' विषयक कार्यशाला में डॉ. विभा त्रिपाठी, विधि संकाय, का.हि.वि.वि. का व्याख्यान हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

२०-२१ मार्च, २०१५ को वसंत महिला महाविद्यालय के शिक्षा-विभाग में डॉ. मीनाक्षी बिस्वाल के संयोजन में 'इक्कसवीं सदी के ज्ञान आधारित समाज में ई-लर्निंग की भूमिका' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से किया गया। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. पृथ्वीश नाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ थे। इस संगोष्ठी का बीज वक्तव्य डॉ. विपिन शर्मा, आकाशवाणी, इलाहाबाद ने दिया। इस संगोष्ठी के समापन समारोह में प्रो. यू.सी. वशिष्ठ, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने अपने विचार व्यक्त किये। इस संगोष्ठी में लगभग सत्तर शोध-पत्र पढ़े गये।

क्रियाकलाप

कला संकाय

चित्रकला-विभाग : ३०-३१ अगस्त, २०१४ को आनंदवन और वसंत महिला महाविद्यालय के तत्त्वावधान में चित्रकला शिविर और प्रदर्शनी आर्टिस्ट एण्ड आर्ट टीचर द्वारा आर्ट्स काम्पलेक्स में आयोजित की गई। इसमें छात्राओं द्वारा कार्यशाला में बनाई गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन प्राचार्य डॉ. विजय शिवपुरी ने किया।

संगीत-विभाग : ५ अक्टूबर, २०१४ को के.एफ.आई. एजूकेशन सेण्टर के रिट्रीट कार्यक्रम में सुश्री बिलम्बिता बानी सुधा ने अपना गायन प्रस्तुत किया। ८ दिसम्बर, २०१४ को सुश्री बिलम्बिता बानी सुधा ने सुबह-ए-बनारस, अस्सी घाट, वाराणसी के आयोजन में अपनी गायन प्रस्तुति दी। १९ जनवरी, २०१५ को डॉ. संजय वर्मा ने सुबह-ए-बनारस कार्यक्रम में अपना सितार वादन प्रस्तुत किया। २४ जनवरी, २०१५ को डॉ. संजय वर्मा को वसंत पंचमी महोत्सव पर श्री करुणामयी माँ शक्तिपीठ संस्था, गुड़गाँव, हरियाणा द्वारा संगीत साधक सम्मान २०१५ दिया गया। इस अवसर पर डॉ. संजय वर्मा ने अपनी संगीत प्रस्तुति दी। सुश्री बिलम्बिता बानी सुधा तथा संगीत-विभाग (गायन) की छात्राओं ने १३ मार्च, २०१५ को मृत्युंजय महोत्सव, नागरी नाटक मण्डली, वाराणसी में गायन की सह प्रस्तुति दी। १५ मार्च, २०१५ को भारत सुरक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा डॉ. संजय वर्मा को 'बनारस रत्न सम्मान' दिया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. संजय वर्मा ने अपनी संगीत प्रस्तुति दी। २८ मार्च, २०१५ को केदारघाट, वाराणसी पर शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद के जन्मोत्सव पर आयोजित स्वर्णाभिनंदन कार्यक्रम में डॉ. संजय वर्मा ने अपनी संगीत प्रस्तुति दी। महामृत्युंजय समारोह समिति द्वारा आयोजित महामृत्युंजय संगीत समारोह २०१५ में महाविद्यालय की संगीत विभागकी छात्राओं के साथ डॉ. संजय वर्मा, डॉ. सुजाता साहा मोहन वीणा वादन के साथ, तबला वादक श्री प्रमोद मिश्र एवं दिनेश मिश्र ने सामूहिक संगीत प्रस्तुति दी।

अंग्रेजी विभाग : डॉ. आरती निर्मल का हिन्दी - विभाग, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (३ फरवरी, २०१५) में ''अंग्रेजी भाषा में रचित बाल साहित्य'' विषय पर तथा हिन्दी विभाग का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (३१ मार्च, २०१५) में ''स्त्री के पक्ष में मानवाधिकार की चिन्तायें'' विषय पर व्याख्यान हुआ। हिन्दुस्तान टाईम्स समूह वाराणसी में ९ जुलाई, २०१४ को 'कन्या शिक्षा और सुरक्षा' विषय पर व्याख्यान दिया। नेशनल लॉ युनिवर्सिटी, रांची में २-४ दिसम्बर, २०१४ को 'लॉ एण्ड लिटरेचर' विषय पर चार व्याख्यान दिया।

सामाजिक विज्ञान संकाय

अर्थशास्त्र विभाग : १८ जून २०१४ को ऐकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, का.हि.वि.वि. में शोधार्थियों के लिए आयोजित इण्टरेक्शन प्रोग्राम में 'हाइपोथीसिस' विषय पर डॉ. विभाग जोशी का व्याख्यान हुआ।

२२ अगस्त, २०१४ को ऐकेडमिक स्टॉफ कालेज, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित पुनश्चर्या कार्यक्रम में डॉ. विभा जोशी ने 'फेमिनाइजेशन ऑफ एजिंग' विषय पर अपना व्याख्यान दिया ।

१५-१६ सितम्बर, २०१४ को ए. जी. आई. एण्ड आई.सी.ई.ई.ई. सी डी एस, त्रिवेन्द्रम द्वारा आयोजित आन इमेजिंग एण्ड इनपावरिंग द एलेल्डररी विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के टेक्निकल सेशन की अध्यक्षता डॉ. विभा जोशी ने की । ये सब इकनामिक आस्पेक्टस ऑफ एजिंग विषय पर था ।

दिशा-निर्देशन / पुनश्चर्या कार्यक्रम / स्पेशल विन्टर स्कूल/ कार्यशाला

डॉ. संजय वर्मा, डॉ. जय सिंह, सुश्री बिलम्बिता बानी सुधा ने पुनश्चर्या कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. विभा जोशी तथा डॉ. प्रीति सिंह ने अर्थशास्त्र विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

प्रकाशन

डॉ. आरती निर्मल की पुस्तक 'शिफ्टिंग होम्स एण्ड ट्रान्सनेशनल आइडेंटिटीज़' सत्यम् बुक्स, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई।

कृष्णमूर्ति अध्ययन केन्द्र

महाविद्यालय के शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत कृष्णमूर्ति अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत यह देश का पहला जे. कृष्णमूर्ति अध्ययन केन्द्र है। इस केन्द्र की समन्वयक डॉ. सुषमा जोशी हैं। डॉ. शारदा कुसुम मिश्र इस केन्द्र में रिसर्च एसोसिएट के पद पर कार्य कर रही हैं। इस केन्द्र में २५ मार्च, २०१५ को प्रो. पी. कृष्ण का जे. कृष्णमूर्ति के जीवन-दर्शन पर व्याख्यान हुआ। २६ मार्च, २०१५ को मुकेश कुमार ने 'कृष्णमूर्ति शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की चेतना का विकास', १३ अप्रैल, २०१५ को स्वामी चिदानंद ने 'गीता के श्रीकृष्ण और जे. कृष्णमूर्ति का अध्ययन', २४ अप्रैल, २०१५ को शक्ति कुमार ने 'कृष्णमूर्ति एवं उनकी शिक्षायें' विषय पर व्याख्यान दिया। भविष्य में इस केन्द्र के द्वारा कार्यशाला, व्याख्यानमाला, संगोष्ठी, परियोजना कार्य, तुलनात्मक व्याख्यानमाला जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

उड़ान : द ट्रेवल एकेडमिया- २०१४

१८ अक्टूबर, २०१४ को ट्रैवेल एण्ड टूरिज़्म मैनेजमेण्ट के द्वारा उड़ान : द ट्रेवल एकेडमिया आयोजन में 'पर्यटन में महिला सशक्तीकरण' केन्द्रित विषय पर महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पर्यटन-विभाग की निदेशक प्रो. कल्पलता पाण्डेय, प्राचार्य डॉ. विजय शिवपुरी, स्काईलाइन के एम.डी. प्रदीप राय ने अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में वसंत महिला महाविद्यालय के अतिरिक्त डी.ए.वी. कॉलेज, का.हि.वि.वि. के मुख्य तथा बरकछा परिसर और महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम श्री संजीव कुमार के संयोजन में हुआ।

राष्ट्रीय युवा दिवस

१२ जनवरी, २०१५ को स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री अभय कुमार ठाकुर, वित्त अधिकारी, का.हि.वि.वि. थे। डॉ. संजय वर्मा ने एकला चलो की वादन प्रस्तुति दी। स्वामी विवेकानंद पर केन्द्रित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस

३१ अक्टूबर, २०१४ को महाविद्यालय में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के जयंती समारोह को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। डॉ. वंदना झा ने सरदार बल्लभ भाई पटेल के राष्ट्रीय योगदान पर अपने विचार व्यक्त किये। श्री संजीव कुमार ने शिक्षकों और शिक्षार्थियों को शपथ दिलायी। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवियों को प्राचार्य डॉ. विजय शिवपुरी ने 'रन फॉर यूनिटी' के लिए रवाना किया।

प्रदर्शनी

१६-१७ अक्टूबर, २०१४ को महिला सशक्तीकरण के लिए के.एफ.आई. रूरल सेण्टर द्वारा हस्तनिर्मित कलात्मक वस्तुओं की प्रदर्शनी लगायी गई।

नेत्र शिविर

१७ सितम्बर, २०१४ को काशी नेत्रालय के सौजन्य से महाविद्यालय में नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. दीपक कुमार सिंह तथा डॉ. वंदना द्विवेदी ने सौ से अधिक छात्राओं की आँखों की जाँच की। चिकित्सकों ने पावर प्वाइंट के माध्यम से नेत्र रोग और उसके उपचार की जानकारी दी।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

राष्ट्रीय सेवा योजना की पाँच इकाईयाँ डॉ. संजय वर्मा, डॉ. सुशीला भारती, डॉ. राजेश चौरसिया, डॉ. श्वेता, डॉ. पुनीता पाठक के निर्देशन में कार्य कर रही हैं। १६ अक्टूबर, २०१४ के एक दिवसीय शिविर में स्वयं सेवियों को राष्ट्रीय सेवा योजना के विषय में विस्तार से बताया गया तथा कश्मीर बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ 'डोनेशन बॉक्स' तैयार किया गया। ३१ अक्टूबर, २०१४ के द्वितीय, एक दिवसीय शिविर में स्वयंसेवियों ने राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर 'रन फॉर यूनिटी' में भाग लिया। ०३ नवम्बर, २०१४ को तृतीय, एक दिवसीय शिविर में स्वयंसेवियों ने 'स्वच्छ भारत अभियान' के अन्तर्गत आदिकेशव घाट की सफाई की। राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर (२७ जनवरी २०१५ से ०२ फरवरी २०१५) के आयोजन में पाँच इकाईयों द्वारा सरायमोहाना तथा कोटवाँ गाँव को गोद लिया गया। इन क्षेत्रों में स्वयंसेवियों द्वारा स्वच्छता, स्वास्थ्य, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, वृद्धों की समस्याएँ आदि समस्याओं पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक तथा लोकगीत प्रस्तुति के माध्यम से जन जागरुकता अभियान चलाया गया। स्वयंसेवियों को भ्रमण के लिए राष्ट्रीय धरोहर सारनाथ तथा प्रेमचंद स्मारक, लमही ले जाया गया। शिविर के समापन समारोह में स्वयंसेवियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. पी. के. शर्मा, समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना, का.हि.वि.वि. थे। इस सत्र का अन्तिम और चतुर्थ एक दिवसीय शिविर २६ फरवरी, २०१५ को आयोजित हुआ जिसमें स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर की सफाई की गई।

स्काउट-गाइड शिविर

बी.एड. की छात्राओं के लिए सात दिवसीय शिविर सुश्री मधु पारीख के निर्देशन में लगाया गया। इस शिविर के द्वारा छात्राओं को स्काउट गाइड का इतिहास, सिद्धान्त, प्रतिज्ञा एवं अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी दी गई। इस शिविर में बी.एड. की छात्राओं ने गाइड के नियमों का पालन करते हुए विभिन्न क्रिया-कलापों में भाग लिया। बी.एड. की छात्रायें सामुदायिक कार्य के लिए 'जीवन ज्योति अंध विद्यालय' ले जायी गयीं।

स्पिक मैके

स्पिक मैके कार्यक्रम के अन्तर्गत अगस्त माह में उस्ताद सरफराज चिश्ती और उनके समूह ने कव्वाली प्रस्तुत की। प्रसिद्ध नृत्यांगना पद्मश्री गीता चन्द्रन ने भरतनाट्यम् प्रस्तुत किया। गायिका श्रीमती सुचरिता गुप्ता द्वारा उपशास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति की गई। महाविद्यालय में स्पीक मैके के कार्यक्रम डॉ. दीप्ति पाण्डेय के संयोजन में सम्पन्न हुए।

वसंत संघ/रक्तदान शिविर

वसंत संघ की ओर से नवागत छात्राओं का स्वागत किया गया। इस अवसर पर नवागत छात्राओं के लिए 'प्रतिभा प्रदर्शन' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाविद्यालय में ०१ अक्टूबर, २०१४ को एनी बेसेन्ट की जयन्ती का आयोजन हुआ। इसी दिन गाँधी जयन्ती की पूर्व संध्या पर व्याख्यान शृंखला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध गाँधीवादी अमरनाथ भाई ने गाँधी जी की विचारधारा पर प्रेरक व्याख्यान दिया तथा डॉ. प्रीति सिंह ने डॉ. एनी बेसेन्ट पर तथा डॉ. श्रेया पाठक ने श्रद्धेय लालबहादुर शास्त्री के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर छात्राओं ने बापू का प्रिय भजन और रामधुन प्रस्तुत की।

२४ सितम्बर, २०१४ को महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग सौ से अधिक छात्राओं तथा शिक्षकों ने रक्तदान किया। इस कार्यक्रम को श्री संजीव कुमार, डॉ. उषा दीक्षित, डॉ. श्रेया पाठक, डॉ. योगिता बेरी ने संचालित किया।

२.३.३. वसन्त कन्या महाविद्यालय

डॉ. एनी बेसेन्ट के शिक्षा सिद्धान्तों पर आधारित वसन्त कन्या महाविद्यालय थियोसोफिकल सोसायटी के भारतीय प्रभाग के सुरम्य परिसर में स्थित वह विद्या मन्दिर है जो नारी शिक्षा के क्षेत्र में विगत ५९ वर्षों से शिक्षा देने में संलग्न है। इस महाविद्यालय को २००७ में नैक द्वारा बी. स्थान प्राप्त हुआ है। १९५४ में स्थापित यह महाविद्यालय 'शिक्षा ही सेवा है' के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए छात्राओं में व्यक्तित्व विकास, अनुशासन और आदर्शों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न करने की ओर भी प्रयासरत है। वसन्त कन्या महाविद्यालय स्नातक स्तर पर कला एवं समाज विज्ञान के अन्तर्गत कुल १४ विषयों की शिक्षा विद्यार्थियों को प्रदान कर रहा है, साथ ही ५ विषयों (हिन्दी, समाजशास्त्र, अंग्रेजी, गृहविज्ञान एवं मनोविज्ञान) में परास्नातक स्तर पर भी शिक्षा दी जा रही है तथा इन्हीं परास्नातक विषयों में छात्र/छात्राएँ शोध कार्य भी कर रहे हैं। अन्तर्संकायिक शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अपनी वर्तमान प्रतिष्ठा को महिला उच्च-शिक्षा एवं शोध केन्द्र के रूप में रूपायित करता हुआ यह महाविद्यालय अपने को शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठापित करने की ओर निरन्तर अग्रसर है।

वर्तमान सत्र में स्नातक स्तर पर कुल १२९१ छात्राएँ पंजीकृत हुई। परास्नातक स्तर पर पंजीकृत कुल छात्राओं की संख्या २७७ तथा शोध-कार्य में संलग्न छात्र/छात्राओं की संख्या १४ है। वर्तमान सत्र में महाविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों के क्रम में मनोविज्ञान विभाग में दो, हिन्दी एवं गृहविज्ञान विभाग में एक-एक शोधार्थी को डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई।

कार्यशाला एवं प्रशिक्षण

गृहविज्ञान विभाग

- महाविद्यालय में दिनांक २५.०८.२०१४ को 'अनुपयोगी वस्तुओं के कलात्मक उपयोग' शीर्षक के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान से आए कलाकर सुरेश राव ने 'वेस्ट-मटीरियल से तस्वीर', मेज़पोश की कढ़ाई, ऊन से कढ़ाई और अन्य उपयोगी वस्तुओं के कलात्मक उपयोग का कौशल सिखाया। इसमें ७४ छात्राओं व १२ शिक्षिकाओं ने सहभागिता की।
- ड्रापिंग एण्ड पैटर्न मैकिंग' (दिनांक ०८.१०.१४ तथा ०९.१०.१४) वक्ता : सुश्री रुचिका बैद, फ्रीलान्सर। फैशन डिजाइनिंग की छात्राओं के लिए आयोजित की गयी।
- फैशन टैक्निक्श : मूड बोर्ड, थीम बोर्ड एण्ड कलर बोर्ड' (दिनांक ०९.१०.१४) वक्ता - सुश्री अनुश्री जायसवाल, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद। यह कार्यशाला एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए आयोजित की गयी।
- न्यू डिमेंसन्स ऑफ चिटर आर्ट' (दिनांक ०९.१०.१४) वक्ता - डॉ. सृष्टि पुरवार, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। यह कार्यशाला एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं के लिए आयोजित की गयी।

- खतवा वर्क : द अपलिक्यू ऑफ बिहार' (दिनांक १०.१०.१४) वक्ता - डॉ. सृष्टि पुरवार, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। इस कार्यशाला का आयोजन एम.ए. प्रथम वर्ष एवं बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिए किया गया।
- फैशन कम्यूनिकेशन' (दिनांक १०.१०.१४) वक्ता - सुश्री अनुश्री जायसवाल, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। इस कार्यशाला का आयोजन एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं के लिए किया गया।
- चिस सी.ए.डी. सॉफ्ट फॉर डिजाइन डेवलेपमेंट' (दिनांक ०२.१२.१४) वक्ता - सुश्री मनीषा सोनी, फ्रीलान्सर।
- मधुवाणी – इट्स इक्सिसटेंश एण्ड पोसीबिलिटि्ज' (दिनांक ०७ एवं ०८.०१.१५) वक्ता - सुश्री कन्चन, फ्रीलान्सर।
- जेरो वेस्ट गारमेंट थ्रो ड्रापिंग' (दिनांक १९.०१.१५) वक्ता - सुश्री अनुश्री जायसवाल, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। इस कार्यशाला द्वारा एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्राएँ लाभान्वित हुई।
- होम डेकर्स विथ स्मोकिंग टैक्निक्श' (दिनांक १९.०१.१५) वक्ता - डॉ. सृष्टि पुरवार, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। इस कार्यशाला द्वारा एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राएँ लाभान्वित हुई।
- पैर्टन इंजिनियरिंग' (दिनांक २०.०१.१५) वक्ता - सुश्री अनुश्री जायसवाल, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। इस कार्यशाला का आयोजन एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए किया गया।
- सरफेश आर्नामिंटशन टैक्निक्श' (दिनांक २०.०१.१५) वक्ता - डॉ. सृष्टि पुरवार, फैकल्टी मेम्बर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। इस कार्यशाला का आयोजन बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिए किया गया।
- फोटोग्राफी' (दिनांक २२.०१.१५) वक्ता - श्री राजकुमार सिंह, फ्रीलान्सर
- गृहविज्ञान एम.ए. प्रथम और द्वितीय वर्ष की छात्राएं ८ साप्ताहिक इंटर्नशिप के लिए उमराई फैशस मार्ट, लोहता व सी क्रियेशन जे.ए.वी. के प्रोड्क्शन हाउस में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। इनमें से लगभग १० छात्राएं फ्रिलेंशन डिज़ाइनर होम डेकोर एण्ड ऐपारेल डिजाइनिंग का कार्य कर रही हैं।
- मेन्टोरिंग एक्सपेक्टेशन एण्ड डवलपिंग कम्पेटेन्सिस इन गेन-वाई' विषयक कार्यशाला का आयोजन (दिनांक २२.०१.२०१५ एवं २३.०१.२०१५) को प्रबन्ध शास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि. में आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालय की १२ छात्राओं ने भाग लिया।

समाजशास्त्र विभाग

'रिसर्च मेथडोलॉजी एण्ड रिपोर्ट राइटिंग' (दिनांक ०४.०२.१५ से ०६.०२.१५) विषय पर समाजशास्त्र विभाग द्वारा द्विदिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में डॉ. कल्पलता डिमरी ने रिसर्च मेथडोलॉजी इन सोसल साइंसेज विषय पर व्याख्यान द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी के बारे में विस्तृत चर्चा की। द्वितीय सत्र से कार्यशाला में छात्राओं की मुख्य भागीदारी रही, जिसमें बी.ए. तृतीय वर्ष एम.ए. प्रथम वर्ष एवं एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राएं लाभान्वित हुई।

संगीत विभाग

महाविद्यालय के संगीत विभाग द्वारा 'तबला मरम्मत कार्यशाला' (दिनांक १८.०९.२०१४) का आयोजन किया गया जिसमें मरम्मकर्त्ता इमरान अली एवं कामरान अली द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। कार्यशाला में शिक्षकों सहित गायन एवं वादन विभाग के तीनों वर्षो के विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

- शैक्षणिक गतिविधियों के क्रम में वर्तमान सत्र में महाविद्यालय में यू.लर रिसर्च मेथडोलॉजी यू.जी.सी. द्वारा संचालित अंग्रेजी विभाग द्वारा 'स्पोकेन इंग्लिश' एवं गृहविज्ञान विभाग द्वारा 'फैशन डिजाइनिंग' का सर्टिफिकेट कोर्स चलाया गया जिससे छात्रायें लाभान्वित हुईं।
- गृहविज्ञान विभाग द्वारा ताना-बाना प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक ११.०४.२०१५ से १३.०४.२०१५ तक किया गया। प्रदर्शनी की उद्घाटन श्री वी.के. शुक्ला, निदेशक, खादी ग्रामोद्योग आयोग, संभागीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में लगभग २०० छात्राओं की सहभागिता रही।
- गृहविज्ञान विभाग ने एक बाल-मेला सहित 'अर्न विल यू लर्न' उद्देश्य से "हुनर" कार्यक्रम का आयोजन दिनांक १८.०३.२०१५ से २०.०३.२०१५ तक किया गया। इस कार्यक्रम में गृहविज्ञान विभाग की कुशल छात्राओं द्वारा महाविद्यालय की अन्य अकुशल छात्राओं को निर्धारित शुल्क पर प्रशिक्षित किया गया।
- संगीत विभाग द्वारा संगीत संचेतना कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक ३१.०३.२०१५ को स्व. श्री नारायण देसाई द्वारा रचित गाँधी कथा संगीत की प्रस्तुति विभागाध्यक्ष डॉ. स्वरवंदना शर्मा द्वारा की गयी जिससे दोनों विभागों के शिक्षक एवं छात्रायें लाभान्वित हुईं।

साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियाँ

महाविद्यालय की छात्राओं ने आई.आई.टी., बी.एच.यू. में दिनांक ०५.०९.२०१४ से ०७.०९.२०१४ तक मोडल यू.एन. कॉनफ्रेश में प्रतिनिधि सदस्य के रूप में सहभागिता की तथा २४ घंटे पूर्व प्राप्त विषय पर अपने विचारों को सफलता पूर्वक व्यक्त करते हुए प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

सनबीम भगवानपुर द्वारा दिनांक १८.०९.२०१४ को आयोजित अंतर महाविद्यालयीय-युवा-महोत्सव 'विविधा' २०१४ के अंतर्गत १० प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की कुल २५ छात्राओं ने भाग लिया तथा 'कोलाज एवं कार्टूनिंग' में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस हेतु क्रमशः शिवांजलि पाण्डेय तथा मेघना राज को रु.१०००/- नकद, चल वैजयन्ती प्रमाण-पत्र एवं विभिन्न प्रकार के उपहार प्राप्त हुए।

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने ज्ञानप्रवाह वाराणसी में दिनांक १८.०९.२०१४ को आयोजित 'वाराणसी : एक प्रश्नोत्तरी' नामक सांस्कृतिक प्रतियोगिता में भाग लेकर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

रोटरी क्लब वाराणसी की ओर से 'सनराइज़ डिबेट कॉम्पटीशन-२०१४' का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था 'विल इण्डिया बी डवलप्ड वाई २०२०?' प्रतियोगिता में राजनीति शास्त्र ऑनर्स की स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा कु. चाँदनी मूलचंदानी ने विषय के विरोध में अपने विचार व्यक्त किए तथा प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

आर्य महिला पी.जी. कॉलेज में 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भगवद्गीता के निष्काम कर्मयोग की प्रासंगिकता' विषय पर दर्शन शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय निबंध लेखन प्रतियोगिता दिनांक १२.०३.२०१५ में महाविद्यालय की छात्रा पल्लवी चौहान (स्नातक तृतीय वर्ष, दर्शन शास्त्र) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

ज्ञान-प्रवाह में आयोजित दिनांक २१.०२.२०१५ को 'कालिदास-अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता २०१४' में महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की चार छात्राओं ने भाग लिया जिसमें २ छात्राओं कुमारी स्वाति यादव एवं सारिका यादव को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

परामर्श एवं निर्देशन प्रकोष्ठ

- गृहविज्ञान एम.ए. प्रथम तथा द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने दिनांक १५.०५.२०१४ से १५.०७.२०१४ को क्षेत्रीय गाँधी आश्रम, बाराबंकी लखनऊ रोड तथा इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ८ सप्ताह की इंर्टनशिप की।
- दिनांक १७.१०.२०१४ को महाविद्यालय में नियोजन प्रकोष्ठ की ओर से टाइमस ऑफ इण्डिया ग्रुप एवं एच.डी.एफ.सी. बैंक के सहयोग से ''ग्रेडूएट टू प्रोफेशनलस ओरिएंटेशन'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बी.ए. (गृह विज्ञान) अंतिम वर्ष तथा एम.ए. (गृह विज्ञान) अंतिम वर्ष की छात्राओं की प्रतिभागिता रही।
- इसी क्रम में विश्वविद्यालय सेवायोजन एवं मंत्रणा केन्द्र तथा बी.एच.यू. के नियोजन प्रकोष्ठ (प्लेशमेंट सेल) के सहयोग से लगभग १३ कंपनियों ने नियोजन के लिए छात्राओं को सूचित किया।
- दिनांक ०२.०१.२०१५ को स्टार टीवी द्वारा प्रबन्ध शास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि. में कैम्पस इंटरव्यू आयोजित किया गया। इसमें महाविद्यालय की २५ छात्राओं नें भाग लिया।
- विश्वविद्यालय सेवायोजन एवं मंत्रणा केन्द्र, का.हि.वि.वि. की ओर से ''कैरियर काउंसिलिंग'' तथा व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन दिनांक १९.०१.१५ को किया गया। प्रो. रीता कुमार कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने विभिन्न विषयों में रोजगार के अवसर के बारे में विस्तृत जानकारी दी।
- दिनांक १२.०३.२०१५ को आईसीआईसीआई प्रोडेंशियल लाइफ इंश्योरेंश कार. के ग्रुप डिसकशन में ५ छात्राओं ने भाग लिया।
- एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा स्मृति अवस्थी नेस्ले कार. द्वारा कुलिनरि डिज़ाइनर के पद पर चयनित हुई।
- फैशन डिज़ाइनिंग की ५ छात्राएँ अपना स्वरोजगार स्थापित कर कार्य कर रही हैं।
- नवोदय इंस्टीट्यूट सीएडी एकेडेमि में २ छात्राएं पार्ट टाइम कार्य कर रही है।

शैक्षणिक परिभ्रमण

- गृहविज्ञान की छात्राओं को दिनांक २४.०१.१५बसनी गाँव, बाबतपुर में प्रसार शिक्षा उद्देश्य हेतु परिभ्रमण को कराया गया।
- गृहविज्ञान की बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं को दिनांक ११.०३.१५ को बिमलचन्द्र घोष मुख बधिर विद्यालय ले जाया गया।
- मनोविज्ञान की बी.ए. तृतीय वर्ष तथा एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं को दिनांक १६.०३.१५ को 'किरण केन्द्र' ले जाया गया।
- गृहविज्ञान की छात्राओं को प्रदर्शनी हेतु इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दिनांक २४.०२.१५ को ले जाया गया।
- संगीत विभाग द्वारा शैक्षणिक यात्रा के अन्तर्गत गायन एवं वादन विभाग की छात्राओं को दिनांक ०६.०२.२०१५ को का.हि.वि.वि. के मंचकला संकाय ले जाया गया एवं अग्रसेन कन्या पी.जी. कालेज में आयोजित संगीत के विविध आयाम कार्यशाला में दिनांक १६.०३.२०१५ को ले जाया गया। जिसमें प्रसिद्ध सितार वादक श्री नरेन्द्र मिश्र द्वारा सितार की बनावट, वादन संबंधी बारीकियां, डॉ. सीमा वर्मा द्वारा पी.पी.टी. माध्यम से संगीत की वर्तमान समय में आवश्यकता, उससे जुड़ी व्यवसायिक स्थापना एवं प्रायोगिक रूप से रियाज व बंदिशों में भाव सौन्दर्य में स्वर लगाव, कंठ संस्कार एवं डॉ. प्रवीण उद्धव द्वारा तबले का संगीत में महत्व, विभिन्न घरानों में वादन सौन्दर्य विषयक व्याख्यान से छात्राओं ने ज्ञानार्जन किया।

वार्षिकोत्सव

महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव 'अनुरंजन' का आयोजन दिनांक १५.०४.२०१५ को किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि बी.ई.एफ. के अध्यक्ष श्री एस. सुन्दरम थे। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्रबन्धक प्रो. सुशीला सिंह सहित अन्य प्रतिष्ठित विद्वानों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम में प्राचार्या ने डॉ. एनी बेसेन्ट के शैक्षणिक व्यवस्था की परिकल्पना बताते हुए छात्राओं के सर्वतोन्मुखी विकास पर महाविद्यालय के केन्द्रित होने की बात कही एवं शैक्षणिक सत्र २०१४-१५ की वार्षिक रिपोर्ट भी संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत की। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के पश्चात मुख्य अतिथि श्री एस. सुन्दरम् ने महाविद्यालय की स्थापना की पृष्ठभुमि एवं छात्राओं की प्रतिभान्मुखी कार्यकलापों की चर्चा करते हुए छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना एवं भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूक रहने की बात कही।

पुराछात्रा सम्मेलन

महाविद्यालय मे पुराछात्रा सम्मेलन 'आवर्तन' का आयोजन २८.०४.२०१५ को किया गया। समारोह में प्राचार्या ने डॉ. बेसेन्ट के मूल्यों पर चलते हुए स्त्री शिक्षा के प्रचार-प्रसार में महाविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका की ओर सबका ध्यान आकृष्ट कराया। इस अवसर पर महाविद्यालय में दो पुरा छात्राओं डॉ. कमला पाण्डेय को शिक्षा के क्षेत्र में

विशिष्ट योगदान के लिए एवं डॉ. रेवती साकलकर को संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। पुरा छात्राओं द्वारा ही कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। समारोह में पुरा छात्रा एवं महाविद्यालय की प्रबन्धक प्रो. सुशीला सिंह, पूर्व प्राचार्या डॉ. पुष्पलता प्रताप, डॉ. ज्योत्सना श्रीवास्तव एवं श्रीमती सरिता लखोटिया के साथ अन्य पुरातन छात्राओं ने अपने अनुभवों को साझा किया।

एनी बेसेन्ट चेतना प्रसार

- एनीबेसेण्ट जयन्ती समारोह का आयोजन दिनांक ०१.१०.२०१४ को डॉ. कमला पाण्डेय (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, व.क.म.) की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर हिन्दी विभाग की असोसियेट प्रोफेसर एवं इस समिति की संयोजिका डॉ. आशा यादव का ६० मिनट का व्याख्यान हुआ; जिसका विषय था ''एनी बेसेण्ट का जीवन-दर्शन एवं उनकी समग्र चिन्तन-दृष्टि''। इस अवसर पर संगीत-विभाग की छात्राओं द्वारा डॉ. स्वरवंदना शर्मा के निर्देशन में कुलगीत एवं सांगीतिक प्रस्तुति भी की गयी जिसमें सितार विभाग के तबला संगतकार श्री अमित ईश्वर ने तबले पर संगत किया।
- थियोसॉफिकल सोसाइटी का परिदर्शन दिनांक १३.११.२०१४ को कराया गया। जिसमें छात्राओं के साथ पूर्व संगीत विभागाध्यक्ष श्रीमती मंजु सुन्दरम् जी के साथ एक सार्थक परिचर्चा हुई; जिसमें छात्राओं ने डॉ. बेसेण्ट के जीवन, जीवन-संघर्ष, पारिवारिक पृष्ठभूमि, थियोसॉफी से जुड़ाव और थियोसॉफिकल-सोसायटी के लिये उनके अनुपम योगदान की जानकारी प्राप्त की। इतना ही नहीं उनके प्रकृति प्रेम, पशु-पक्षी प्रेम तथा आध्यात्मिक अनुभवों से जुड़े रोचक प्रसंगों की जानकारी प्राप्त कर छात्राएँ अत्यधिक प्रेरित व लाभान्वित हुईं।

शिक्षकों की उपलब्धियाँ (परियोजना, सम्मान एवं संगोष्ठी)

- जिन विशिष्ट पुरस्कारों ने संस्था की शैक्षणिक प्रतिष्ठा को द्विगुणित किया उनमें संस्कृत विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कमला पाण्डेय को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा प्रदत्त विशिष्ट पुरस्कार, अखिल भारतीय विद्वत् परिषद द्वारा प्रदत्त कृष्ण द्वैपायन व्यास पुरस्कार तथा जंगमबाड़ी ज्ञान सिंहासन पीठम् द्वारा प्रदत्त शैव भारती पुरस्कार उल्लेखनीय हैं। तथैव संगीत वाद्य विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मीनू पाठक को दिनांक १५.०३.२०१५ को पराड़कर स्मृति भवन में भारत सुरक्षा परिषद् द्वारा संगीत क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु 'बनारस श्री' उपाधि से अलंकृत किया गया।
- महाविद्यालय की शिक्षिकाओं द्वारा विभिन्न संगोष्ठियों में लगभग ५० राष्ट्रीय तथा १८ अन्तर्राष्ट्रीय शोध प्रपत्र प्रस्तुत किए गए तथा २९ राष्ट्रीय और ०३ अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोधपत्र प्रकाशित किए गए। गृहविज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. संगीता देवड़िया द्वारा दो पुस्तकें यथा १. हैण्ड बुक ऑफ वेट प्रोसेसिंग ऑफ सेलूलोसिक फाइबर्स २. टेक्निकल मेनुअल ऑफ प्री-प्रेपरेशन एण्ड डाइंगि ऑफ प्रोटिन फाइबरस) प्रकाशित की गयीं। महाविद्यालय की शिक्षिकाओं ने विभिन्न व्याख्यानों में अतिथि व्याख्याता के रूप में की, नोट वक्तव्य दिया।

वसन्त कन्या महाविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियाँ

२.३.४. दयानन्द महाविद्यालय (डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज)

डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज की स्थापना सन् १९३८ में इण्टरमीडिएट कॉलेज के रूप में हुई थी जिसकी मान्यता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई थी। पंडित राम नारायण मिश्र एवं बाबू गौरी शंकर प्रसाद जी, जो कि महामना के अन्यन्य अनुयायी थे, की परिकल्पना थी कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विस्तार शहर के मध्य में हो। इसी रूपरेखा का परिणाम डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना है। महाविद्यालय को सन् १९४७ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डिग्री कॉलेज के रूप में मान्यता तथा सन् १९५४ में स्थायी मान्यता प्रदान की गयी। महाविद्यालय प्रारम्भ में स्नातक स्तर पर वाणिज्य, कला एवं सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का संचालन करता था। सन् २००८ से विश्वविद्यालय द्वारा महाविद्यालय में परास्नातक एवं पी.एचडी. (शोध) कार्यक्रम का सफल संचालन प्रारंभ हुआ तथा सत्र २०१३-१४ तक महाविद्यालय के ७ विभागों द्वारा परास्नातक एवं शोध कार्यक्रमों का संचालन हो रहा है। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों जैसे यू.जी.डी.सी.ए., ट्रैवेल एवं टूरिज्म मैनेजमेण्ट, रिस्क एवं इन्श्योरेन्स मैनेजमेण्ट एवं कम्यूनिकेटिव इंग्लिश कार्यक्रमों का संचालन छात्र हित को ध्यान में रखते हुए हो रहा है। आज महाविद्यालय प्रदेश के पूर्वी प्रांतों के छात्रों को ही अपितु पार्श्ववर्ती राज्यों जैसे बिहार, झारखंड, उत्तराखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं मध्य प्रदेश के छात्रों को भी आकर्षित कर रहा है। महाविद्यालय के प्रदर्शन का सत्यापन सन् २०११ में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा प्रदत्त उच्चतम ग्रेड 'ए' द्वारा परिलक्षित होता है। सुदूरवर्ती राज्यों जैसे जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल, अरूणाचल प्रदेश इत्यादि के छात्र भी महाविद्यालय में आकर्षित होते हैं एवं इस महाविद्यालय में प्रवेश को प्राथमिकता देते हैं।

उपलब्धि एवं कार्यक्रमों का विवरण

छात्र एवं छात्राओं में विषय के ज्ञान को बढ़ाने हेतु कालेज ने विषय के आधार पर क्वेस्ट प्रतियोगिता का आयोजन वर्ष २०१४-१५ में किया। यह क्वेस्ट ०३ श्रेणियों (बहुविकल्पि प्रश्न, विस्तृत उत्तरी प्रश्न और क्यूज सम्बन्धित प्रश्न एवं प्रजेनटेशन) के आधार पर संचालित हुआ। यह प्रतियोगिता छात्रों को पुरस्कार एवं सम्मान पर आधारित थी जो कि छात्रों में विशेष रूचि जगाने वाली थी।

विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध शोध सुविधाओं का विवरण

महाविद्यालय परिसर में निम्नलिखित शोध सुविधायें उपलब्ध हैं

- विद्यार्थियों की सुविधा के लिए मनोविज्ञान विभाग में एक उत्तम प्रयोगशाला उपलब्ध है।

- वर्चुअल क्लास रूम की सुविधा।
- मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, अंग्रेजी एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व इत्यादि विभागों स्मार्ट क्लासरूम की सुविधा।
- सभी पी.जी. विभागों एवं पुस्तकालय में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट की सुविधा।
- इनफ्लिबनेट (ई-मैंगजिन एवं जर्नल्स)
- पुस्तकालय में लगभग ४२,००० पुस्तकें तथा अनेक शोध एवं पाक्षिक पत्रिकाएँ मंगवायी जाती है।
- मनोविज्ञान विभाग में विभागीय पुस्तकालय।
- अध्यापकों, शोध छात्रों एवं स्नातकोत्तर छात्रों के लिए अलग से बैठने की सुविधा पुस्तकालय में है।
- फोटोकॉपी की सुविधा।
- एल.सी.डी. प्रोजेक्टर की सुविधा।
- महाविद्यालय शोधार्थियों के लिए अध्ययन अवकाश प्रदान करता है।
- सभी विभागों द्वारा छात्रों के लिए 'क्वेस्ट' का आयोजन।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- महाविद्यालय में एक दिवसीय युवा महोत्सव ''हॉरमनी''का आयोजन ०७ अप्रैल, २०१५ तक किया गया। इसी प्रतियोगिता में से छात्रों का चयन 'स्पंदन-२०१५' के लिए किया गया।
- सभी विभागों के विद्यार्थियों ने विदाई समारोह आयोजित किया।
- भावना (एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर)-मोनो एक्टिंग में द्वितीय पुरस्कार
- अब्दुल खालिद (बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर)
- सभी विभागों के विद्यार्थियों ने शिक्षक दिवस का आयोजन किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

क्र.सं.	टुकड़ी प्रभारी का नाम	स्थान का नाम	दिनांक	विद्यार्थियों की संख्या	कार्यक्रम का विवरण
१. २. ३.	डॉ. पूनम सिंह डॉ. संजय कुमार सिंह डॉ. हबीबुल्लाह	मलिन बस्ती रामकटोरा	२६.०१.२०१५ से ०१.०२.२०१५ १९.१०.२०१४ १६.११.२०१४ २१.०१.२०१५ ०४.०३.२०१५	५०	• तालाबों की सफाई • जागरूकता अभियान • बेटी बचाओ रैली • रामकटोरा मलिन बस्तियों का आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक निरीक्षण • सफाई अभियान (डी.ए.वी. कालेज परिसर से पिपलानी कट रा तक) • कालेज परिसर की सफाई • ईश्वरगंगी पोखरे की सफाई कालेज परिसर की सफाई
४.	डॉ. जियाउद्दीन	ईश्वरगंगी पोखरा	१९.१०.२०१४	१००	• ईश्वरगंगी पोखरे की सफाई
		डी.ए.वी. पी.जी. कालेज	१४.११.२०१४	१००	• पोस्टर, रंगोली वाद -विवाद प्रतियोगिता • बौद्धिक संगोष्ठी का आयोजन
		कबीर मठ, कबीरचौरा	२३.११.२०१४	१००	महिला सशक्तिकरण

		रत्नाकर पार्क एवं बुनकर बस्ती (शिवाला)	२६.०१.२०१५ से ०१.०२.२०१५	५०	• जागरूकता एवं साफ -सफाई अभियान • बौद्धिक संगोष्ठी • मध्यपान एवं नशाखोरी आन्दोलन • शिक्षा पर जागरूकता अभियान एवं बौद्धिक संगोष्ठी • बेटी पढ़ाओं, बे टी बढ़ाओं जागरूकता रैली, बौद्धिक संगोष्ठी • समापन समारोह
		राजेन्द्र प्रसाद घाट	०८.०३.२०१५	१००	• बौद्धिक संगोष्ठी एवं वाद -विवाद प्रतियोगिता • सफाई अभियान
५.	डॉ. मधु सिसोदिया		३१.१०.२०१४ १६.११.२०१४ २३.११.२०१४	५०	• रन फॉर यूनिटी एवं बचत दिवस • वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता एवं स्वच्छ भारत अभियान • कबीर मठ में श्रमदान एवं अभिभाषण
८.	डॉ. राहुल		२६.०१.२०१५ से	५०	• तालाबों की सफाई • जागरूकता अभियान

कैम्पस डेवलमेंट

(अ) महाविद्यालय में तीन मंजिला इमारत का निर्माण हुआ है जिसमें

- २१ कक्षाएं, ०२ संगोष्ठी कक्ष और ०५ अध्यापक कक्ष हैं।
- १०५ डेस्कटॉप कम्प्यूटर के साथ एक कम्प्यूटर लैब।
- २० डेस्कटॉप कम्प्यूटर, सन्दर्भ ग्रंथों एवं समसामयिक महत्वपूर्ण जर्नल सभी विषयों के साथ एक अध्ययन कक्ष जो सिर्फ रिसर्च स्कालरों के लिए उपलब्ध।
- उपरोक्त नई ओबीसी भवन का अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त है जो इस सत्र (२०१४-१५) से आरम्भ हो गया है।

(ब) सम्पूर्ण महाविद्यालय परिसर 'वाई-फाई' सुविधा से युक्त कर दिया गया है।

(स) पुरातन भवन में नवीकरण/निर्माण कार्य।

- मनोविज्ञान विभाग में कक्षाएँ एवं प्रयोगशाला का नवीनीकरण का कार्य।
- छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए शुल्क-पटल का विस्तार

(द) मनोविज्ञान विभाग की कक्षाओं और प्रयोगशाला का निर्माण एवं मरम्मत/नवीनीकरण।

३. अध्ययन के पाठ्यक्रमों की सूची २०१४-१५

विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों, संकायों, महाविद्यालयों एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में शिक्षण हेतु प्रस्तावित पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं :

अ. पोस्ट डॉक्टोरल उपाधि

१. डॉक्टर ऑफ साइंस (डी.एससी.)
२. डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (डी.लिट्.)
३. डॉक्टर ऑफ लॉ (एलएल.डी.)

ब. शोध उपाधियाँ **न्यूनतम अवधि २-वर्ष**

१. डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी (पीएच.डी.)
२. चक्रवर्ती

स. मास्टर ऑफ फिलॉसाफी

१. सबअल्टर्न स्टडीज़ में एम. फिल्.
२. संगीतशास्त्र में एम. फिल्.
३. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास में एम.फिल्.

१. कला संकाय

कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
शारीरिक शिक्षण स्नातक (बी.पी.एड्.) १-वर्ष
कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) : २-वर्ष

१. अंग्रेजी
२. हिन्दी
३. संस्कृत
४. तेलुगू
५. जर्मन
६. फ्रेंच
७. नेपाली
८. बंगाली
९. उर्दू
१०. फारसी
११. अरबी
१२. पालि एवं बौद्ध अध्ययन
१३. मराठी
१४. भूगोल
१५. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
१६. भारतीय दर्शनशास्त्र एवं धर्म
१७. गणित
१८. सांख्यिकी
१९. कला इतिहास
२०. भाषा विज्ञान
२१. दर्शनशास्त्र
२२. गृह विज्ञान
२३. चीनी
२४. कन्नड़
२५. रूसी

व्यावसायिक पाठ्यक्रम : **२-वर्ष**

१. जन-संचार में स्नातकोत्तर
२. शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.पी.एड्.)
३. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम्.लिब्.एण्ड आई.एससी.)
४. प्रयोजनमूलक हिन्दी (पत्रकारिता)
५. एम.ए. इन म्यूज़ियोलॉजी
६. एम.ए. इन मैन्युस्क्रिप्टोलॉजी एण्ड पैलियोग्राफा

एडवांस पी.जी. डिप्लोमा **१-वर्ष**

१. पुरातत्व विज्ञान
२. कला इतिहास
३. भारतीय इतिहास एवं संस्कृति
४. अरबी
५. तेलुगू
६. हिन्दी
७. फ्रांसीसी अध्ययन
८. जर्मन
९. भारतीय दर्शनशास्त्र एवं धर्म
१०. नेपाली
११. मराठी
१२. फारसी
१३. उर्दू
१४. भारतीय भाषा (नेपाली में ब्रिज पाठ्यक्रम)
१५. तेलुगू (ब्रिज पाठ्यक्रम)

स्नातक डिप्लोमा : २ - वर्ष

१. हिन्दी
२. तमिल
३. तेलुगू
४. रूसी
५. चीनी
६. मराठी
७. फ्रांसीसी
८. अरबी
९. फारसी
१०. जर्मन अध्ययन
११. अंग्रेजी
१२. कन्नड़
१३. उर्दू
१४. नेपाली
१५. पाली
१६. संस्कृत
१७. इटालियन
१८. स्पेनिश
१९. प्राकृत
२०. जापानी

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम : **१-वर्ष**

१. हिन्दी
२. अंग्रेजी
३. पर्शियन
४. उर्दू
५. अरबी
६. इटालियन
७. पाली
८. फ्रांसीसी (ब्रिज कोर्स)

विशेष पाठ्यक्रम: २-वर्ष

१. पर्यटन प्रशासन में स्नातकोत्तर
२. कार्पोरेट कम्यूनिकेशन मैनेजमेंट में स्नातकोत्तर
३. पुरातत्त्व में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
४. कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यवसाय संचार में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम
५. पर्यटन प्रबन्धन में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम
६. भाषा प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
७. पाण्डुलिपि विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
८. स्वास्थ्य संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
९. खेलकूद पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
१०. विभिन्न दक्षताओं के लिए अनुवाद कौशल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक) १-वर्ष
११. भोजपुरी में अल्पावधि सटिफिकेट कोर्स (४ माह)

२. सामाजिक विज्ञान संकाय

कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

कला स्नातकोत्तर २-वर्ष

१. अर्थशास्त्र
२. इतिहास
३. राजनीति विज्ञान
४. समाजशास्त्र
५. मनोविज्ञान

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष

१. कार्मिक प्रबन्धन व औद्योगिक संपर्क में स्नातकोत्तर (एम पी एम आई आर)
२. समाज कार्य में स्नातकोत्तर
३. जन प्रशासन में स्नातकोत्तर (एम. पी. ए.)
४. कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंन्ट एण्ड डेवलेपमेन्ट में स्नातकोत्तर (एम. सी. एम. डी.)
५. जापानी अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १ वर्ष
६. कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंन्ट एण्ड डेवलेपमेन्ट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
७. एकीकृत ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
८. परामर्श एवं मनश्चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक) १-वर्ष
९. लिंग एवं महिला अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
१०. काउन्सलिंग गाइडेन्स एवं साइकोलॉजीकल इन्टरवेंशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

३. विधि संकाय

१. विधि स्नातक (एलएल. बी.) ३-वर्ष
२. विधि स्नातकोत्तर (एलएल. एम.) २-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम:

१. मानवाधिकार में विधि स्नातकोत्तर (एच आर. डी. ई.) २-वर्ष
२. बी.ए.एल.एल.बी. ५-वर्ष
३. एल.एल.एम. पाठ्यक्रम १-वर्ष
४. फोरेंसिक विज्ञान और चिकित्सा न्यायशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

५. टैक्स प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (अंशकालिक) १-वर्ष

६. जनसंचार और मीडिया कानून में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

७. मानव संसाधन प्रबंधन, सेवा और औद्योगिक कानून में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

८. सूचना प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

९. कारपॅरिट प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

१०. इण्डस्ट्रियल एण्ड इन्टेलेक्चुअल प्रापर्टी लॉ में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

११. इन्वायरनमेंटल लॉ, पॉलिसी एण्ड मैनेजमेन्ट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

४. शिक्षा संकाय : १ वर्ष

१. शिक्षा स्नातक (बी.एड.)

२. शिक्षा स्नातक (बी.एड. विशेष)

३. शिक्षा स्नात्तकोत्तर (एम.एड.)

४. शिक्षा स्नातकोत्तर (एम. एड्.विशेष)

५. वाणिज्य संकाय

१. वाणिज्य स्नातक (बी. काम्. प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

२. वाणिज्य स्नातकोत्तर (एम्. काम्) २-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम: २-वर्ष

१. मास्टर ऑफ फॉरेन ट्रेड (एम.एफ. टी.)

२. मास्टर ऑफ फाइनेन्सियल मैनेजमेन्ट (रिस्क एण्ड इन्श्योरेंस) (एम.एफ. एम.आर.आई.)

३. मास्टर ऑफ फाइनेन्स मैनेजमेन्ट (एम. एफ. एम)

६. प्रबंध शास्त्र संकाय: २-वर्ष

१. मास्टर ऑफ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (एम. बी. ए)

२. मास्टर ऑफ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (इंटरनेशनल बिज़नेस) (एम. बी. ए-आई.बी.)

विशेष पाठ्यक्रम : १-वर्ष (अंशकालिक)

१. बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.बी.ए.)

२. माइक्रोफाइनेन्स एण्ड इन्टरप्रेन्योरशिप में डिप्लोमा

३. लेज़र एण्ड हॉस्पिटलिटी मैनेजमेन्ट में डिप्लोमा

४. हेल्थ केयर मैनेजमेन्ट में प्रमाणपत्र ६ माह

७. विज्ञान संकाय

विज्ञान स्नातक (बी. एससी. प्रतिष्ठा) (गणित और जीव विज्ञान ग्रुप) ३-वर्ष

विज्ञान स्नातकोत्तर (एम. एससी.) २-वर्ष

१. रसायन विज्ञान

३. वनस्पति विज्ञान

३. गणित

४. सांख्यिकी

५. भौतिकी विज्ञान

६. प्राणि विज्ञान

७. भूगोल

८. जैवरसायन

९. गृह विज्ञान

१०. जैव प्रौद्योगिकी

११. संगणक विज्ञान

१२. मनोविज्ञान

१३. आणविक एवं मानव आनुवांशिकी

१४. बायोइन्फार्मेटिक्स (केवल महिलाओं के लिए, म.म.वि.)

१५. भू-भौतिकी विज्ञान में स्नातकोत्तर (टेक्) (एम. एससी. टेक्) ३-वर्ष

१६. भूगर्भ विज्ञान में मास्टर ऑफ साइंस (टेक्.) ३-वर्ष

१७. मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (एम.सी.ए.) ३-वर्ष

डिप्लोमा पाठ्यक्रम : १-वर्ष

१. स्पेक्ट्रोस्कोपी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

२. प्राकृतिक आपदा प्रबन्ध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

सांख्यिकी विधि १-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष

१. पर्यावरण विज्ञान में एम.एससी.

२. अनुप्रयुक्त सूक्ष्म जीव विज्ञान में एम.एससी.

३. पेट्रोलियम जिओसाइंस में एम.एससी.

४. कम्प्यूटेशनल साइंस और सिग्नल प्रोसेसिंग में एम.एससी.

५. फोरेंसिक साइंस में एम.एससी.

६. सांख्यिकी और कम्प्यूटिंग में एम.एससी.

७. एक्चुरियल साइंस में एकीकृत स्नातकोत्तर डिप्लोमा

८. जनसंख्या अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

९. क्रोमोसोमल जेनेटिक एण्ड मोलेकुलर डायग्नोस्टिक में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (पूर्ण कालिक)

१०. साख्यिकी और कम्प्यूटिंग में डिप्लोमा

११. रिमोट सेन्सिंग एण्ड जी.आई.एस. में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

८. दृश्य कला संकाय

स्नातक ललित कला (बी.एफ.ए.) : ४-वर्ष

स्नातकोत्तर ललित कला (एम.एफ.ए.): २-वर्ष

१. चित्र कला

२. अनुप्रयुक्त कला

३. प्लास्टिक कला

४. मृद्भाण्ड एवं मृतिका शिल्प

५. वस्त्र रूपांकन

विशेष पाठ्यक्रम : १-वर्ष (अंश कालिक)

१. चित्रकला में प्रमाण-पत्र

२. विज्ञापन एवं रूपांकन में प्रमाण-पत्र

९. मंच कला संकाय

संगीत स्नातक (बी.म्यूज.) : ३-वर्ष

१. गायन

२. वाद्य (सितार/वायलिन/तबला/बांसुरी)

प्रदर्शन कला में स्नातक (नृत्य में बी.पी.ए.) ३-वर्ष

१. नृत्य (कत्थक/भरतनाट्यम्)

संगीत स्नातकोत्तर (एम.म्यूज.): २-वर्ष

१. गायन

२. वाद्य (सितार/वायलिन/तबला/बांसुरी)

प्रदर्शन कला में स्नातकोत्तर (एम.पी.ए.) २-वर्ष

१. नृत्य (कत्थक/भरतनाट्यम्)

मास्टर ऑफ म्युजिकालॉजी २-वर्ष

म्युजिकोलॉजी

संगीत एवं नृत्य में जूनियर डिप्लोमा: ३-वर्ष

१. कंठ संगीत: हिन्दुस्तानी, कर्नाटक

२. वाद्य संगीत : (सितार/ वायलिन/ बांसुरी/ तबला/ कर्नाटक वीणा)

अ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -१

आ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -२

इ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -३

३. नृत्य (कत्थक/भरतनाट्यम्)

अ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -१

आ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -२

इ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -३

इस त्रिवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रत्येक वर्ष की समाप्ति पर अभ्यर्थियों को निम्नलिखित प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है :

प्रथम वर्ष -	कनिष्ठ प्रमाण-पत्र
द्वितीय वर्ष-	वरिष्ठ प्रमाण-पत्र
तृतीय वर्ष -	डिप्लोमा

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष

रविन्द्र संगीत शास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

१०. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

शास्त्री (प्रतिष्ठा) : ३-वर्ष

आचार्य : २-वर्ष

१. वेद-ऋग्वेद/यजुर्वेद (शुक्ल/कृष्ण)/सामवेद

२. धर्मागम

३. पुराणेतिहास और साहित्य (अलंकार प्रधान एवं काव्य प्रधान व नाट्य प्रधान)

४. ज्योतिष (गणित एवं फलित)

५. व्याकरण

६. मीमांसा

७. न्याय वैशेषिक

८. वेदान्त

९. जैन दर्शन

१०. बौद्ध दर्शन

११. प्राचीन न्याय

१२. सांख्य योग

१३. धर्मशास्त्र

स्नातकोत्तर डिप्लोमा: आगमतंत्र २-वर्ष

प्रमाण-पत्र: संस्कृत १-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष (अंशकालिक)

१. वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष में स्नातक डिप्लोमा

११. चिकित्सा विज्ञान संकाय

स्नातक मेडिसिन और स्नातक सर्जरी (एम.बी.बी.एस.) ५$^{१}/_{२}$-वर्ष

डॉक्टर ऑफ मेडिसिन (एम.डी.) ३-वर्ष

१. नि:संज्ञा विज्ञान

२. जैव रसायन

३. जैव भौतिकी

४. त्वचा विज्ञान

५. रतिरोग विज्ञान एवं कुष्ठ

६. विधि चिकित्सा शास्त्र

७. चिकित्सा

८. बाल चिकित्सा

९. सूक्ष्म जीव विज्ञान

१०. व्याधि विज्ञान

११. औषधि विज्ञान

१२. कार्यिकी
१३. निवारक एवं सामाजिक औषधि
१४. मनोरोग विज्ञान
१५. विकिरण निदान (विकिरण-निर्धारण)
१६. विकिरण चिकित्सा और विकिरण औषधि
१७. यक्ष्मा एवं श्वसन रोग विज्ञान

बैचरल ऑफ साइंस इन नर्सिंग ४-वर्ष
इंटर्नशिप के साथ

मास्टर ऑफ सर्जरी (एम.एस.): ३-वर्ष

१. शरीर रचना विज्ञान
२. नेत्र चिकित्सा
३. अस्थि रोग विज्ञान
४. कर्ण, नासा, कंठ विज्ञान
५. शल्य चिकित्सा
६. प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान

डाक्टोरेटस् मेडिसिनस् (डी. एम.): ३-वर्ष

१. तंत्रिकीय चिकित्सा
२. अंत:स्राव विज्ञान
३. जठरांत्र शोथ विज्ञान
४. हृदय रोग विज्ञान
५. वृक्क रोग विज्ञान

मैजिस्टर चिरूरगॉय (एम. सीएच.) : **३-वर्ष**

१. तंत्रिकीय शल्य चिकित्सा
२. प्लास्टिक शल्य चिकित्सा
३. मूत्र रोग विज्ञान
४. बाल शल्य चिकित्सा
५. हृदय-लसिका एवं वक्षीय शल्य चिकित्सा

स्वास्थ्य सांख्यिकी में स्नातकोत्तर २ वर्ष
प्रमाण पत्र

पेन एण्ड पैलिएटिव केअर में पोस्ट डॉक्टोरल सर्टिफिकेट कोर्स १ वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष

१. विगलन चिकित्सा (डायलिसिस) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
२. चिकित्सकीय तकनीकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (रेडियोथिरेपी)
३. प्रयोगशाला तकनीकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

१२. आयुर्वेद संकाय

स्नातक आयुर्वेदिक मेडिसिन और
सर्जरी (बी.ए.एम.एस.) ५१/२-वर्ष

डॉक्टर ऑफ मेडिसिन-आयुर्वेद (एम.डी.आयु.): ३-वर्ष

१. मौलिक सिद्धान्त
२. द्रव्य गुण
३. रस शास्त्र
४. काय चिकित्सा
५. प्रसूति तंत्र (स्त्री रोग)
६. प्रसूति (कौमारभृत्य/बालरोग)

मास्टर ऑफ सर्जरी - आयुर्वेद *(एम.एस.आयुर्वेद):* ३ वर्ष

१. शल्य
२. शालक्य

आयुर्वेदिक फार्मास्युटिक्स में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(पी. जी. डी. आयु. पी.)**:** ***२ वर्ष***

विशेष पाठ्यक्रम: *२ वर्ष*

१. पंचकर्म चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
२. मातृक स्वास्थ्य देखभाल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एम.सी.(आयुर्वेद))
३. नेओनाटाल एण्ड चाइल्ड केयर में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एन.सी.(आयुर्वेद))
४. क्षार कर्म में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
५. विकिरण एवं छाया में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
६. संज्ञाहरण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
७. अग्निकर्म एवं जलौका वाचरण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
८. प्रसव विज्ञान में प्रमाण पत्र (केवल महिलाओं के लिए) १-वर्ष
९. आयुर्वेदिक दर्द प्रबंधन में प्रमाणपत्र (केवल विदेशी छात्रों के लिए)

१३. दंत संकाय

बेचलर आफ डेन्टल सर्जरी (बी.ड़ी. एस.) ३-वर्ष
मास्टर आफ डेन्टल सर्जरी (एमड़ीएस.) ३-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष

१. डेन्टल मेकैनिक में स्नातक डिप्लोमा
२. डेन्टल हाइजेनिस्ट में स्नातक डिप्लोमा

१४. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान: ३-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम :

(१) पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर एम.एस.सी. (टेक.)

१५. कृषि संकाय

स्नातक कृषि विज्ञान (बी.एससी.एजी.) ४-वर्ष
स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान (एम.एससी.एजी.) : २-वर्ष

१. शस्य विज्ञान
२. कृषि अर्थशास्त्र
३. पादप कार्यिकी
४. कीट विज्ञान एवं कृषि जन्तु विज्ञान

५. प्रसार शिक्षा
६. आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन
७. पशु पालन एवं दुग्ध विज्ञान
८. कवक एवं पादप रोग विज्ञान
९. उद्यान विज्ञान
१०.मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन शास्त्र

विशेष पाठ्यक्रम : २ वर्ष

१. कृषि व्यवसाय प्रबन्ध में स्नातकोत्तर
२. एम.टेक्. इन् एग्रीकल्चरल इंजिनियरिंग (सॉइल एण्ड वाटर कन्जरवेशन इंज.)
३. एम.एससी. इन् फूड साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी
४. बीज तकनीकी में डिप्लोमा १-वर्ष
५. सब्जी उत्पादन में डिप्लोमा १-वर्ष

१६. महिला महाविद्यालय

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. विज्ञान स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
३. विज्ञान स्नातकोत्तर (गृह विज्ञान) २-वर्ष
४. विज्ञान स्नातकोत्तर (बायोइन्फारमेटिक्स) (महिलाओं के लिए) २-वर्ष
५. शिक्षा में स्नातकोत्तर २-वर्ष
६. नृत्य में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (कत्थक, भरतनाट्यम्) ३-वर्ष

१७. सम्बद्ध महाविद्यालय

१. आर्य महिला पी. जी. महाविद्यालय

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
३. शिक्षा स्नातक (बी. एड्.) १-वर्ष
४. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष
(क) संस्कृत
(ख) दर्शनशास्त्र
(ग) हिन्दी
(घ) प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व
५. कला स्नातकोत्तर (सामाजिक विज्ञान) में २-वर्ष
(क) मनोविज्ञान
(ख) इतिहास

२.वसन्त कन्या महाविद्यालय

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष
(क) हिन्दी
३. कला स्नातकोत्तर (सामाजिक विज्ञान) में २-वर्ष
(क) समाजशास्त्र
(ख) मनोविज्ञान
(ग) अर्थशास्त्र
४. स्पोकेन इंग्लिश में ६ माह का प्रमाण पत्र/ डिप्लोमा/ एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

३.वसन्त महिला महाविद्यालय (राजघाट)

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
३. शिक्षा स्नातक (बी. एड्.) १-वर्ष
४. शिक्षा स्नातकोत्तर (एम. एड्.) १-वर्ष
५. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष
(क) अंग्रेजी
(ख) भूगोल
(ग) हिन्दी
६. कला स्नातकोत्तर (सामाजिक विज्ञान) में २-वर्ष
(क) मनोविज्ञान
(ख) अर्थशास्त्र
(ग) इतिहास
७. पत्रकारिता और पर्यटन प्रबन्धन में १ वर्षीय पूर्णकालिक प्रमाण पत्र/ डिप्लोमा/ एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

४.दयानन्द पी. जी. महाविद्यालय (डी. ए. वी. डिग्री कालेज)

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
३. वाणिज्य स्नातकोत्तर (एम. काम) २-वर्ष
४. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष
(क) अंग्रेजी
५. कला स्नातकोत्तर (सामाजिक विज्ञान) में २-वर्ष
(क) अर्थशास्त्र
(क) राजनीति शास्त्र
(ख) मनोविज्ञान
(ग) समाजशास्त्र
(घ) अर्थशास्त्र
(च) इतिहास
६. पत्रकारिता और पर्यटन प्रबन्धन में प्रमाण पत्र/ डिप्लोमा/ एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम
१ वर्षीय पूर्णकालिक

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मिर्जापुर

अध्ययन हेतु नियमित पाठ्यक्रम

१. शिक्षा संकाय

शिक्षा स्नातक (बी.एड्.)
(पेड सीट श्रेणी के अन्तर्गत-स्नातक प्रवेश परीक्षा के चयनित अभ्यर्थियों द्वारा) १-वर्ष

२. आयुर्वेद संकाय

बी.फार्मा. (आयुर्वेद) ४-वर्ष
एम. फार्मा. (आयुर्वेद) २-वर्ष

३. विज्ञान संकाय

मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (एम.सी.ए.)
पेड सीट श्रेणी के अन्तर्गत) ३-वर्ष

४. वाणिज्य संकाय

स्नातक वाणिज्य (प्रतिष्ठा)
(पेड सीट श्रेणी के अन्तर्गत) ३-वर्ष

अध्ययन के विशेष पाठ्यक्रम के अन्तर्गत

१. कला संकाय **२-वर्ष**

१. पर्यटन प्रबन्धन में एम.ए.
२. कार्यालय प्रबन्धन और व्यवसाय संचार में डिप्लोमा
३. पर्यटन प्रबन्धन में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम
४. भ्रमण प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक) १-वर्ष
५. कॉरपोरेट सेक्रेटेरीशिप में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

२. प्रबन्ध शास्त्र संकाय

कृषि व्यवसाय में एम.बी.ए. (पूर्ण कालिक) २-वर्ष

३. विज्ञान संकाय

१. पी.जी.डिप्लोमा इन रिमोट सेन्सिंग एण्ड जी.आई.एस. १-वर्ष

४. वाणिज्य संकाय

वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा)
(फाइनेंशियल मार्केट मैनेजमेंट) ३-वर्ष

५. कृषि संकाय **२-वर्ष**

१. एम.एससी. (कृषि) एग्रो फोरेस्ट्री
२. एम.एससी. (कृषि) मृदा और जल संरक्षण
३. एम.एससी. इन प्लान्ट बायोटेक्नोलॉजी
४. पोस्ट हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष

६. सामाजिक विज्ञान संकाय **१-वर्ष**

१. परामर्श और मनश्चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक)
२. व्यापार अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

७. आयुर्वेद संकाय

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग उपचार में
स्नातक डिप्लोमा (बी.एन.वाई.एस.) ४१/२-वर्ष

८. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

१. कर्मकाण्ड में प्रमाण पत्र १-वर्ष

९. दृश्य कला संकाय **६ माह**

१. हथकरघा कढ़ाई एवं हस्तकला में प्रमाण पत्र
२. पाठ्यक्रम रंगाई और छपाई में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम
३. वस्त्र रूपांकन में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम

४. उपाधियाँ/सनद्/प्रमाण-पत्र

१. कृषि विज्ञान संकाय

बी.एससी.(एजी.)	१२८
एम.एससी.(एजी.)/एम.एससी.	२१८
पीएच.डी. (एजी.)	४२

२. चिकित्सा विज्ञान संकाय

एम.बी.बी.एस.	७७
एम.डी.	८२
एम.एस.	३६
डी.एम.	०८
एम.सीएच.	०६
बी.एससी. नर्सिंग	५४
स्वास्थ्य सांख्यिकी में स्नातकोत्तर	११
डिप्लोमा	३०
योग में डिप्लोमा	१३६
पीएच.डी.	३२

३. आयुर्वेद संकाय

बी.ए.एम.एस.	४६
एम.डी. (आयुर्वेद)	३२
एम.एस.(आयुर्वेद)	१२
बी.फार्म.(आयुर्वेद)	२५
एम.फार्म. (आयुर्वेद)	०७
डिप्लोमा (आयुर्वेद)	२७
पीएच.डी.	१२

४. दन्त चिकित्सा संकाय

बी.डी.एस.	२२
एम.डी.एस.	०३
डिप्लोमा	१०

५. पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान

एम.एससी. टेक	२४
एम. फिल.	०९

६. कला संकाय

बी.ए. (प्रतिष्ठा)	१३६३
एम.ए.	१०४०
एम.पी.एड्.	३५
बी.पी.एड्.	८४
एम्.लिब.और सूचना विज्ञान	३०
डिप्लोमा	२५२
पीएच.डी.	१४१

७. सामाजिक विज्ञान संकाय

बी.ए. (प्रतिष्ठा)	११७७
एम.ए.	७६३
डिप्लोमा	६८
पीएच.डी.	६७
एम. फिल्.	२०

८. विज्ञान संकाय

बी.एससी. (प्रतिष्ठा)	७१७
एम.एससी./एम.टेक.	६५७
डिप्लोमा	११
पीएच.डी.	१७०

९. प्रबन्ध शास्त्र संकाय

एम.बी.ए.	५०
एम.आई.बी.ए.	५३
एम.बी.ए. (कृषि व्यवसाय)	४२
डिप्लोमा	३६
पीएच.डी.	१३

१०. वाणिज्य संकाय

बी.काम्. (प्रतिष्ठा)	६९३
बी.काम्. (एफ.एम.एम.)	४२
एम.काम्.	१८१
एम.एफ.एम.- आर.आई.	२३
एम.एफ.टी.	२०
एम.एफ.एम.	४५
डिप्लोमा	०५
पीएच.डी.	१५

११. शिक्षा संकाय

बी.एड्.	६९३
बी.एड्. (विशेष)	८०
एम.एड्.	५१
एम.एड्. (विशेष)	२५
एम.एड्. (अंशकालिक)	२२
पीएच.डी.	२०

१२. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

शास्त्री (प्रतिष्ठा)	१०४
आचार्य	७७
डिप्लोमा	०१
चक्रवर्ती	१७

१३.दृश्य कला संकाय

बी.एफ.ए.	८०
एम.एफ.ए.	७३
पीएच.डी.	०९

१४. मंच कला संकाय

बी.म्यूज.	५७
एम.म्यूज.	५०
एम.म्यूजिकोलॉजी	१६
एम.फिल.इन म्यूजिकोलॉजी	१५
डिप्लोमा	०१
पीएच.डी.	०८

१५. विधि संकाय

एलएल.बी.	२४२
एलएल.एम. (सामान्य)	३७
एलएल.एम (एचआरडीई)	१५
डिप्लोमा	२२
पीएच.डी.	१०

४.१. छात्रों की संख्या नवपंजीकृत छात्र एवं छात्राएँ

विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों/संकायों/महाविद्यालयों में नवपंजीकृत छात्रों की संख्या नीचे वर्णित है:

क्र. सं.	संकाय / महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	योग
१.	कृषि विज्ञान संकाय	४६९	१७५	६४४
२.	पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संकाय	२४	३०	५४
३.	आधुनिक चिकित्सा संकाय	२४३	१८३	४२६
४.	आयुर्वेद संकाय	९८	८४	१८२
५.	दन्त विज्ञान संकाय	३२	२७	५९
६.	कला संकाय	२२११	९०८	३११९
७.	वाणिज्य संकाय	५२४	२८१	८०५
८.	शिक्षा संकाय	४९६	२४५	७४१
९.	विधि संकाय	४४५	१६१	६०६
१०.	प्रबन्ध शास्त्र संकाय	१४९	७१	२२०
११.	मंच कला संकाय	२५६	१९१	४४७
१२.	विज्ञान संकाय	१५३९	७८६	२३२५
१३.	सामाजिक विज्ञान संकाय	९३५	३६	१२९१
१४.	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय	३२९	२२	३५१
१५.	दृश्य कला संकाय	११४	९४	२०८
१६.	महिला महाविद्यालय	०	९०८	९०८
	सम्पूर्ण योग	**७८६४**	**४५२२**	**१२३८६**

सम्बद्ध महाविद्यालयों में नवपंजीकृत छात्रों की संख्या नीचे वर्णित है:

क्र. सं.	सम्बद्ध महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	योग
१.	वसंत कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय	०	५७९	५७९
२.	आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय	०	१०८५	१०८५
३.	वसन्त महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय	०	६९४	६९४
४.	दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय	१५३३	१०७	१६४०
	सम्पूर्ण योग	**१५३३**	**२४६५**	**३९९८**

विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित विद्यालयों में नवपंजीकृत छात्रों की संख्या नीचे वर्णित है:

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	योग
१.	सेन्ट्रल हिन्दू ब्वॉएज् स्कूल	५५३
२.	सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल	४७८
३.	श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय	१६२
	सम्पूर्ण योग	**११९३**

नवपंजीकृत विदेशी छात्र एवं छात्राएँ

क्र. सं.	देश का नाम	छात्र	छात्रा	योग
१.	अफगानिस्तान	४	०	४
२.	अमेरिका	३	३	६
३.	बांग्लादेश	१	१	२
४.	भूटान	१	०	१
५.	ब्रिटेन	२	०	२
६.	चीन	३	२	५
७.	कम्बोडिया	४	०	४
८.	इंग्लैण्ड	१	०	१
९.	इथियोपिया	१	०	१
१०.	फ्रांस	१	१	२
११.	जर्मनी	०	१	१
१२.	इण्डोनेशिया	१	०	१
१३.	ईरान	८	६	१४
१४.	इराक	१	०	१
१५.	इज़राइल	१	०	१
१६.	इटली	२	२	४
१७.	जापान	०	३	३
१८.	जॉर्डन	१	०	१
१९.	कोरिया	२	०	२
२०.	किर्गिज़स्तान	०	१	१
२१.	म्यांमार	३	०	३
२२.	नेपाल	७८	३६	११४
२३.	नायजेरिया	३	०	३
२४.	पाकिस्तान	१	०	१
२५.	फ़िलीपीन्स	०	१	१
२६.	रूस	२	२	४
२७.	सेशेल्स	१	०	१
२८.	दक्षिण अफ्रीका	०	१	१
२९.	दक्षिण कोरिया	०	२	२
३०.	स्पेन	०	१	१
३१.	श्रीलंका	४	८	१२
३२.	स्विट्ज़रलैण्ड	०	२	२
३३.	थाईलैंण्ड	१४	४	१८
३४.	तिब्बत	६	६	१२
३५.	संयुक्त अरब अमीरात	०	१	१
३६.	युक्रेन	१	०	१
३७.	वियतनाम	०	२	२
३८.	यमन	४	०	४
	योग	**१५४**	**८६**	**२४०**

वर्गानुसार और संकायानुसार सम्पूर्ण विद्यार्थियों की संख्या

क्र. सं.	संकायों के नाम	सामान्य वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की संख्या			अल्प संख्यक वर्ग के छात्रों की संख्या			शारीरिक विकलांग छात्रों की संख्या			विदेशी छात्रों की संख्या			कुल योग		
		पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग
१.	कृषि विज्ञान संकाय	३३९	१९९	५३८	१८५	३५	२२०	६०	२२	८२	४७२	१४३	६१५	४	२	६	२३	३	२६	६७	१४	८१	११५०	४१८	१५६८
२.	पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास	१६	२५	४१	९	६	१५	४	१	५	१३	१९	३२	२	०	२	०	०	०	०	०	०	४४	५१	९५
३.	चिकित्सा विज्ञान संकाय	४२७	३६६	७९३	१३१	८०	२११	४१	३१	७२	२१६	१४४	३६०	१२	४	१६	१०	३	१३	१५	९	२४	८५२	६३७	१४८९
४.	आयुर्वेद संकाय	१८४	१५३	३३७	५२	३०	८२	११	१२	२३	१२५	७५	२००	४	४	८	२	५	७	५	२	७	३८३	२८१	६६४
५.	दन्त विज्ञान संकाय	४०	५२	९२	१५	१७	३२	२	१	३	२६	२८	५४	१	२	३	१	१	२	१	१	२	८६	१०२	१८८
६.	कला संकाय	१९०६	७१९	२६२५	७५५	१९७	९५२	२५९	८४	३४३	१७०८	६०८	२३१६	५१	४६	९७	३२	८	४०	७८	४४	१२२	४७८९	१७०६	६४९५
७.	वाणिज्य संकाय	५२८	३३८	८६६	२३३	४७	२८०	८७	३२	११९	४२२	१७७	५९९	४७	१७	६४	३७	६	४३	५३	३२	८५	१४०७	६४९	२०५६
८.	शिक्षा संकाय	१७७	१३०	३०७	९९	२४	१२३	२७	१९	४६	२५४	११२	३६६	०	०	०	१८	२	२०	५	२	७	५८०	२८९	८६९
९.	विधि संकाय	५४८	१६०	७०८	१६५	३२	१९७	७०	१७	८७	३६७	७३	४४०	८	१	९	१८	४	२२	०	२	२	११७६	२८९	१४६५
१०	प्रबन्ध शास्त्र संकाय	१२५	५८	१८३	३३	१५	४८	८	१०	१८	८१	३७	११८	१५	९	२४	३	०	३	१०	९	१९	२७५	१३८	४१३
११	मंच कला संकाय	४९३	५६८	१०६१	२८	३२	६०	४	६	१०	६२	४९	१११	३	०	३	३	१	४	२५	१४	३९	६१८	६७०	१२८८
१२	विज्ञान संकाय	१६८९	१०९०	२७७९	५३०	२०३	७३३	१९०	८२	२७२	१४३५	५०६	१९४१	१५	१०	२५	६४	१९	८३	५८	२७	८५	३९८१	१९३७	५९१८
१३	सामाजिक विज्ञान संकाय	९१५	३७२	१२८७	३८०	१०२	४८२	१६६	३९	२०५	९३४	२८५	१२१९	३९	८	४७	६५	६	७१	४१	७	४८	२५४०	८१९	३३५९
१४	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय	८२०	१८	८३८	६	३	९	१२	१	१३	२४	१२	३६	०	०	०	२	०	२	६	१	७	८७०	३५	९०५
१५	दृश्य कला संकाय	५७	७९	१३६	९८	२७	१२५	२१	१९	४०	१८६	१२३	३०९	४	२	६	७	६	१३	११	२	१३	३८४	२५८	६४२
१६	महिला महाविद्यालय	०	१४५७	१४५७	०	३३०	३३०	०	१४५	१४५	०	५६३	५६३	०	४४	४४	०	५२	५२	०	२०	२०	०	२६११	२६११
	सम्पूर्ण योग	८२६४	५७८४	१४०४८	२७१९	११८०	३८९९	९६२	५२१	१४८३	६३२५	२९५४	९२७९	२०५	१४९	३५४	२८५	११६	४०१	३७५	१८६	५६१	१९१३५	१०८९०	३००२५

वर्गानुसार और सम्बद्ध महाविद्यालयों के सम्पूर्ण विद्यार्थियों की संख्या

क्र. सं.	महाविद्यालयों के नाम	सामान्य वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की संख्या			अल्प संख्यक वर्ग के छात्रों की संख्या			शारीरिक विकलांग छात्रों की संख्या			विदेशी छात्रो की संख्या			कुल योग		
		पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग
१.	वसंत कन्या महाविद्यालय	०	७७४	७७४	०	२२३	२२३	०	११२	११२	०	३७९	३७९	०	७१	७१	०	१०	१०	०	०	०	०	१५६९	१५६९
२.	आर्य महिला महाविद्यालय	०	११४१	११४१	०	४४१	४४१	०	११४	११४	०	८४९	८४९	०	१२९	१२९	०	१५	१५	०	०	०	०	२६८९	२६८९
३.	वसन्त महिला महाविद्यालय	०	९९१	९९१	०	३०७	३०७	०	५०	५०	०	४५५	४५५	०	२२७	२२७	०	१६	१६	०	०	०	०	२०४६	२०४६
४.	दयानन्द महाविद्यालय	२०३८	१८९	२२२७	७१७	१६	७३३	२४२	५	२४७	१२१४	७६	१२९०	०	०	०	४४	३	४७	०	०	०	४२५५	२८९	४५४४
	सम्पूर्ण योग	**२०३८**	**३०९५**	**५१३३**	**७१७**	**९८७**	**१७०४**	**२४२**	**२८१**	**५२३**	**१२१४**	**१७५९**	**२९७३**	**०**	**४२७**	**४२७**	**४४**	**४४**	**८८**	**०**	**०**	**०**	**४२५५**	**६५९३**	**१०८४८**

५. मानव संसाधन की रूपरेखा

अध्यापकों की संख्या

प्रतिवेदन अवधि में विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय सहित संस्थानों व संकायों में विभिन्न पदों के शिक्षक सदस्यों की संख्या इस प्रकार रही :

आचार्य और उनके समकक्ष (स्तर-V)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	१०६	१	-	-	१	-	२३	-	-	-	-	-	१२९	१	-	-	१	-
कृ.वि.सं.	७०	१	-	-	-	-	३	-	-	-	-	-	७३	१	-	-	-	-
कला	७३	१	-	-	३	-	२१	-	-	-	२	-	९४	१	-	-	५	-
विज्ञान	११५	१	१	४	२	-	८	-	-	-	-	-	१२३	१	१	४	२	-
सामाजिक वि.	३६	-	-	-	२	-	१०	-	-	-	-	-	४६	-	-	-	२	-
सं.वि.ध.वि.	१७	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१७	-	-	-	-	-
संगीत एवं मंच कला	४	-	-	-	-	-	४	-	-	-	-	-	८	-	-	-	-	-
दृश्य कला	३	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	४	-	-	-	-	-
वाणिज्य	२५	२	-	-	२	-	१	-	-	-	-	-	२६	२	-	-	२	-
विधि	१६	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-	-	१६	-	-	-	२	-
प्रबन्ध शास्त्र	१३	-	-	-	-	-	२	-	-	-	-	-	१५	-	-	-	-	-
शिक्षा	९	१	-	-	-	-	५	-	-	-	-	-	१४	१	-	-	-	-
म.महा.वि.	२	-	-	-	-	-	२५	-	-	-	२	-	२७	-	-	-	२	-
प.एवं स. वि.सं.	३	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	४	-	-	-	-	-
एकेडमिक स्टाफ कालेज	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-
योग	**४९३**	**७**	**१**	**४**	**१२**	०	**१०४**	०	०	०	**४**	०	**५९७**	**७**	**१**	**४**	**१६**	०

उपाचार्य/एसोसिएट प्रोफेसर (स्तर-IV)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	३३	४	-	-	३	-	९	-	-	-	-	-	४२	४	-	-	३	-
कृ.वि.सं.	१०	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१०	१	-	-	-	-
कला	१२	-	-	-	-	-	२	१	-	-	-	-	१४	१	-	-	-	-
विज्ञान	२५	१	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	२५	१	१	-	-	-
सामाजिक वि.	१	४	-	-	-	-	६	-	-	-	-	-	७	४	-	-	-	-
सं.वि.ध.वि.	४	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	४	-	-	-	-	-
संगीत एवं मंच कला	२	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	२	-	-	-	-	-
दृश्य कला	२	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	२	१	-	-	-	-
वाणिज्य	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	१	-	१	-	-	-
विधि	४	-	१	-	-	-	१	-	-	-	-	-	५	-	-	१	-	-
प्रबन्ध शास्त्र	२	१	-	१	-	-	-	-	-	-	-	-	२	१	-	-	-	-
शिक्षा	-	२	-	-	-	-	२	-	-	-	-	-	२	२	-	-	-	-
म.महा.वि.	३	-	-	-	-	-	१६	-	-	-	-	-	१९	-	-	-	-	-
प.एवं स. वि.सं.	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
एकेडमिक स्टाफ कालेज	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**९८**	**१४**	**१**	**१**	**३**	**०**	**३७**	**१**	**१**	**०**	**०**	**०**	**१३५**	**१५**	**२**	**१**	**३**	**०**

संयुक्त आचार्य/सेलेक्शन ग्रेड लेक्चरर (स्तर-III)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	४	१	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	४	२	-	-	-	-
कृ.वि.सं.	४	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	५	-	-	-	-	-
कला	६	-	-	-	१	-	४	-	-	-	-	-	१०	-	-	-	१	-
विज्ञान	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
सामाजिक वि.	१	१	-	-	१	-	१	-	-	-	-	-	२	१	-	-	१	-
सं.वि.ध.वि.	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-
संगीत एवं मंच कला	१	-	-	-	-	-	१	१	-	-	-	-	२	१	-	-	-	-
दृश्य कला	४	-	-	-	-	-	२	-	-	-	-	-	६	-	-	-	-	-
वाणिज्य	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
विधि	-	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-
प्रबन्ध शास्त्र	-	-	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-
शिक्षा	-	१	१	-	-	-	३	-	-	-	-	-	३	१	१	-	-	-
म.महा.वि.	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-
प.एवं स. वि.सं.	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
एकेडमिक स्टाफ कालेज	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-
योग	**२१**	**४**	**२**	**०**	**३**	**०**	**१३**	**२**	**०**	**०**	**०**	**०**	**३४**	**६**	**२**	**०**	**३**	**०**

सहायक आचार्य और उनके समकक्ष (स्तर-II)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	३०	१	१	-	-	-	६	१	-	-	-	-	३६	२	१	-	-	-
कृ.वि.सं.	१०	३	१	१	१	-	१	-	-	-	-	-	११	३	१	१	१	-
कला	२४	५	१	-	२	-	७	२	१	-	-	-	३१	७	२	-	२	-
विज्ञान	२३	११	३	-	३	-	१६	-	-	-	-	-	३९	११	३	-	३	-
सामाजिक वि.	७	-	-	-	-	१	४	-	-	-	-	-	११	-	-	-	-	१
सं.वि.ध.वि.	१४	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१४	-	-	-	-	-
संगीत एवं मंच कला	३	१	-	-	-	-	३	-	-	-	-	-	६	१	-	-	-	-
दृश्य कला	२	-	-	-	-	-	२	-	-	-	-	-	४	-	-	-	-	-
वाणिज्य	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-
विधि	-	१	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	१	-	-	-
प्रबन्ध शास्त्र	३	-	१	-	-	-	१	-	-	-	-	-	४	-	१	-	-	-
शिक्षा	३	-	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-	४	-	-	-	-	-
म.महा.वि.	४	१	१	-	-	-	२०	३	-	-	१	-	२४	४	१	-	१	-
प.एवं स. वि.सं.	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
एकेडमिक स्टाफ कालेज	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**१२४**	**२३**	**९**	**१**	**६**	**१**	**६१**	**६**	**१**	**०**	**१**	**०**	**१८५**	**२९**	**१०**	**१**	**७**	**१**

सहायक आचार्य (वरिष्ठ वेतनमान उपाचार्य और उनके समकक्ष (स्तर-I)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	३८	१०	३	१६	-	-	५	५	-	-	-	-	४३	१५	३	१६	-	-
कृ.वि.सं.	६	८	४	२	-	-	-	-	-	-	-	-	६	८	४	२	-	-
कला	४	-	-	-	-	-	२	१	-	-	-	-	६	१	-	-	-	-
विज्ञान	८	४	-	-	१	-	६	-	-	-	-	-	१४	४	-	-	१	-
सामाजिक वि.	४	२	१	१	-	-	३	२	१	१	-	-	७	४	२	२	-	-
सं.वि.ध.वि.	१	२	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	२	-	-	-	-
संगीत एवं मंच कला	-	-	-	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	१	-	-
दृश्य कला	३	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	३	१	-	-	-	-
वाणिज्य	८	-	-	-	-	-	१	१	-	-	-	-	९	१	-	-	-	-
विधि	५	१	-	३	-	-	१	-	-	-	-	-	६	१	-	३	-	-
प्रबन्ध शास्त्र	-	२	-	-	-	-	१	१	-	१	-	-	१	३	-	१	-	-
शिक्षा	३	-	-	-	-	२	-	-	१	१	-	-	३	-	१	१	-	२
म.महा.वि.	२	-	-	-	-	-	१	४	१	-	१	-	३	४	१	-	१	-
प.एवं स. वि.सं.	४	१	-	१	-	-	-	-	-	-	-	-	४	१	-	१	-	-
एकेडमिक स्टाफ कालेज	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**८६**	**३१**	**८**	**२४**	**१**	**२**	**२०**	**१४**	**३**	**३**	**१**	**०**	**१०६**	**४५**	**११**	**२७**	**२**	**२**

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या इस प्रकार है:

'अ' वर्गीय कर्मचारी

१.	कुलपति	१
२.	कुलसचिव	१
३.	परीक्षा नियन्ता	१
४.	वित्ताधिकारी	१
५.	निदेशक	१
६.	सयुक्त कुलसचिव	११
७.	उप-कुलसचिव	४
८.	उप-निदेशक	४
९.	पुस्तकालयाध्यक्ष	१
१०.	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष	६
११.	कार्यकारी अभियंता	३
१२.	सिस्टम प्रबन्धक	१
१३.	वरिष्ठ शोध अधिकारी	१
१४.	उप-चिकित्सा अधीक्षक (आई.एम.)	१
१५.	मुख्य चिकित्सा अधिकारी	१२
१६.	वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी	१०
१७.	प्रलेखन अधिकारी (एस.जी.)	१
१८.	सहायक कुलसचिव	१९
१९.	सहायक लेखा/वित्त अधिकारी	१
२०.	सहायक अभियंता	५
२१.	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	१४
२२.	प्रोग्रामर	४
२३.	सिस्टम प्रोग्रामर	२
२४.	सहायक सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी	१
२५.	विज्ञानी (फोटो वोल्टिक)	२
२६.	अनुरक्षण अभियंता (कनिष्ठ)	१
२७.	रेडियोलॉजिकल फिजिसिस्ट	१
२८.	कनिष्ठ शोध अधिकारी	२
२९.	सूचना अधिकारी	१
३०.	वेटरनरी ऑफिसर	१
३१.	आडियोलॉजिस्ट	१
३२.	वाणी उपचार	१
३३.	चिकित्सा अधिकारी	११
३४.	सहायक निदेशक	६
३५.	सूचना विज्ञानी	१
३६.	अनुरक्षण अभियंता	१
३७.	नेटवर्किंग इंजिनियर	१
३८.	शोध अधिकारी	२
३९.	सिस्टम अभियंता	१
४०.	हिन्दी अधिकारी	१
४१.	कम्प्यूटर प्रोग्रामर	३
४२.	सीनियर रेफरेक्सनिस्ट	१
योग ('अ' वर्ग कर्मचारी)		**१४४**

'ब' एवं 'स' वर्गीय कर्मचारी

वर्ग	सामान्य	अनु.जाति	अनु.ज.जाति	अ.पिछड़ा वर्ग	विकलांग वर्ग	योग
'ब' वर्गीय कर्मचारी	१२७	०२६	०१२	००१	-	१६६
'स' वर्गीय कर्मचारी	३००१	५९१	१५८	८९२	०६	४६४८
योग	**३१२८**	**६१७**	**१७०**	**८९३**	**०६**	**४८१४**

६. वित्तीय संसाधन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (का.हि.वि.वि.) केन्द्रीय विश्वविद्यालय होने के कारण संघ सरकार द्वारा नियमित बजट के माध्यम से अनुदान के रूप में आवश्यक वार्षिक बजटीय सहायता प्राप्त करता है। वर्तमान में अनुरक्षण व्यय एवं विकास व्यय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त क्रमश: ''गैर-योजना'' व ''योजना'' मद से पूरे किए जाते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा छात्र शुल्क, सम्पत्तियों से आय, दुग्धशाला एवं कृषि फार्म, चिकित्सालय, दुकानों की अनुज्ञप्ति शुल्क, आयुर्वेदिक औषधियों की बिक्री इत्यादि से आंतरिक संसाधन उपार्जित किये जाते हैं। विश्वविद्यालय के वर्ष २०१४-१५ हेतु वार्षिक लेखा को पहले ही अंतिम रूप दिया जा चुका है तथा वित्त समिति एवं कार्यकारिणी परिषद् ने क्रमश:- १३-०६-२०१५ एवं ०८-०७-२०१५ को आयोजित अपनी बैठक में इसे अनुमोदित कर दिया है।

विश्वविद्यालय का राजीव गांधी दक्षिणी परिसर जो मिर्जापुर जनपद में स्थित है, वाराणसी स्थित मुख्य परिसर से ८० किमी. दूर है। इस नए परिसर की स्थापना का मुख्य उद्देश्य जनजातीय बहुल विंध्य क्षेत्र के अल्प विकसित लोगों को रोजगारपरक उच्च शिक्षा तक पहुँच एवं सर्वांगीण विकास हेतु प्रशिक्षण व उद्यमी दक्षता हेतु अवसर प्रदान करना है। इस नए परिसर के विकास हेतु पूर्व योजना अवधि के दौरान आयोग द्वारा अलग से अनुदान प्रदान किए गए थे जिससे परिसर में अनेक आधारभूत संरचनाएँ व अन्य सुविधाएँ पहले ही निर्मित की जा चुकी हैं।

१२वीं योजना अनुदान के अंतर्गत रा.गां.द. परिसर हेतु कोई अलग से अनुदान आबंटित नहीं किया गया है। रा.गां.द. परिसर में आधारभूत संरचनाओं के विकास और अन्य विकास संबंधी गतिविधियों को प्रारंभ करने के लिए और अधिक अनुदान की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के रा.गां.द. परिसर हेतु १२वीं योजना में विश्वविद्यालय द्वारा रु. ८,५७०.०० लाख की आवश्यकता प्रस्तावित थी।

कोषों की प्रकृति के अनुसार, विश्वविद्यालय अपना लेखा-जोखा का रख-रखाव निम्नलिखित मदों के अन्तर्गत करता है:-

(अ) सामान्य कोष ('राजस्व' खाता)

विश्वविद्यालय की गैर-योजना (राजस्व) बजट को पूरा करने के लिए हैं:

- ऐसे शिक्षण/गैर-शिक्षण/ तकनीकि आदि के रूप में विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों के वेतन
- विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए पेंशनएवं लाभ
- विश्वविद्यालय के दैनिक संचालन एवं रखरखाव के खर्च जैसे बिजली, पानी, ईंधन, चिकित्सा, सुरक्षा, उपभोग्य (कार्यालय एवं प्रयोगशाला दोनों)
- उपकरणों, कम्प्यूटरों का वार्षिक रखरखाव का अनुबंध
- हाउसकीपिंग, सुरक्षा, भवन एवं बुनियादी ढांचों का रख-रखाव (छात्रावास एवं संबद्ध सुविधाओं के खर्चों की संख्या सहित)
- संस्था के कोई भी अन्य व्यय विशिष्ट, इस योजना बजट को पूरा नहीं करते हैं

विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों की स्थापना करने के लिए, विश्व स्तर के समर्थन और रखरखाव राशि मौजूद होना चाहिए। वैश्विक मानकों के अनुरूप विश्वविद्यालय के विकास के लिए समर्थन और रखरखाव निधि की उपलब्धता एक प्रमुख पूर्व अपेक्षित तत्व है। विश्वविद्यालय कोषों के लिए मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं:

१. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान
२. आन्तरिक आय
३. निवेशों पर ब्याज

विश्वविद्यालय को वित्तीय अनुदान भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से प्राप्त होता है। यह अनुदान ब्लाक अनुदान के रूप में भी जाना जाता है। विश्वविद्यालय का अनुरक्षण कोष निम्नलिखित क्षेत्रों के वार्षिक व्यय को पूरा करता है:

वर्ष २०१४-१५ के लिए राजस्व खाता के प्रमुख मदों के अन्तर्गत व्ययों का विवरण निम्नानुसार है :

संस्थापन :

१. वेतन व भत्ते	रु.४४,७१२.११ लाख
२. सेवानिवृत्ति लाभ और पेंशन	रु.१७,१२३.४८ लाख
कुल संस्थापन	रु.६१,८३५.५९ लाख
गैर-संस्थापन	रु. ८,६०१.२१ लाख
सम्पूर्ण व्यय (संस्थापन + गैर-संस्थापन)	रु.७०,४३६.८० लाख

विश्वविद्यालय के खाते की आय में लेने के बाद अनुरक्षण अनुदान के अंतर्गत विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति (२०१४-१५) निम्नवत् है:

१. ०१-०४-२०१४ तक प्रारम्भिक शेष	रु.३,६२१.२८ लाख
२. २०१४-१५ में यू.जी.सी. से प्राप्त धनराशि	रु. ७२,४०१.८४ लाख
३. आन्तरिक आय	रु. ४,५२९.५१ लाख
कुल अनुदान	रु. ८०,५५२.६३ लाख
२०१४-१५ में व्यय	रु. ७०,४३६.८० लाख
३१-०३-२०१५ तक अंतिम रोकड़	रु. १०,११५.८३ लाख

पूंजीगत मद

ग्रंथालय-पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ, अन्य पूँजी (भवन एवं मशीनें), कार्यालय उपकरण, शिक्षण सम्बन्धी वस्तुएँ इत्यादि सहायता के आधार पर उपरोक्त व्यय में सम्मिलित की गई हैं जिनकी निगरानी की जाती है।

(ब) विशिष्ट निधि

१. विशेष उद्देश्यों से दिए गए दान व उसके ब्याज जिसके अन्तर्गत पीठों हेतु वृत्ति, छात्रवृत्तियों, पुरस्कारों व पदकों के लिए स्थायी निधि है।

२. जमा निधियों जैसे- जी.आई.एस., शिक्षक कल्याण कोष, जमानत राशि, सुरक्षा जमाराशि, संघ कोष शुल्क, इत्यादि।

३. विशेष शुल्क जैसे- क्रीड़ा शुल्क, सार्वजनिक कक्ष, शैक्षणिक यात्रा शुल्क इत्यादि।

४. संगणक केन्द्र, भारत कला भवन, सर सुन्दरलाल चिकित्सालय का आवर्ती कोष, परामर्श शुल्क, इत्यादि द्वारा अर्जित आय को विभागीय विशिष्ट कोष में रखा गया है।

५. इन मदों के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि का उपयोग केवल विशेष कार्यों के लिए ही किया जाता है और इनके खर्च को आय के अन्दर ही नियंत्रित रखा जाता है।

वर्ष २०१४-१५ के अन्तर्गत सम्पूर्ण आय व व्यय इस प्रकार है :

आय	-	रु.१८,१५८.२६ लाख
व्यय	-	रु.११,२१०.०२ लाख

(स) परियोजना कोष

विशेष कार्यों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य अभिकरणों यथा-जैव रसायन विभाग, विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् इत्यादि से वित्तीय सहायता, जैसे-

१. शोध परियोजना
२. यात्रा अनुदान
३. संगोष्ठी व सम्मेलन
४. छात्रवृत्तियाँ

ये अनुदान शिक्षकों को विशिष्ट क्षेत्रों में शोध कार्य करने हेतु प्रदान किए गए। वर्ष २०१४-१५ की अवधि में आय व व्यय की स्थिति नीचे दी गयी है -

आय	-	रु.८७८१.०३ लाख
व्यय	-	रु.६५८४.७८ लाख

(द) सामान्य विकास निधि :

- योजना अवधि के अन्तर्गत विभागों के विकास हेतु भवनों, उपकरणों, सामानों व फर्नीचर इत्यादि के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अनुदान।
- चयनित विभागों के लिए आधारभूत सुविधाओं की समृद्धि के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता।
- कुछ निर्दिष्ट पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अनुदान।
- अनुसूचित जाति व जन-जाति की विकलांग महिलाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुदान।

विभाग वित्त प्रदायी अभिकरणों को प्रस्ताव प्रेषित करते हैं जो इन प्रस्तावों का सीधे तौर पर अथवा विशेषज्ञ समितियों के माध्यम से परीक्षण करवाते हैं।

वर्ष २०१४-१५ की अवधि में आय व व्यय की स्थिति नीचे दी गयी है :

अनावर्ती

आय	:	-
व्यय	:	रु.७,११०.०९ लाख

आवर्ती

आय	:	रु.५,२६१.६३ लाख
व्यय	:	रु.३,९४०.९९ लाख

प्रमुख उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय में खरीद हेतु अपेक्षित राशि विभिन्न शीर्षों जैसे- फर्नीचर, संगणक, उन्नत व कीमती उपकरण, भारी मशीनरी व विद्युत उपकरण इत्यादि के अंतर्गत व्यय की जाती है। खरीद प्रक्रिया को और अधिक सक्षम बनाने के लिए विश्वविद्यालय ने इस वर्ष से ई-खरीद प्रणाली अपनाने के लिए कदम उठाए हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष २०१४-१५ से जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय ने दोहरी लेखा प्रणाली अपनाई है। इस प्रणाली से और अधिक वैज्ञानिक व उत्तरदायी तरीके से आय-व्यय का लेखा-जोखा सुनिश्चित किया जा सकेगा।

विश्वविद्यालय की वित्तीय प्रणाली की प्रक्रिया और प्रकार्य को उच्चीकृत करने के लिए कई सुधारात्मक उपाय किए गए हैं जैसे चालू खातों में सावधि जमा, परिसम्पत्तियों का बाह्य सत्यापन आदि। आगामी वर्षों में विश्वविद्यालय की प्रणाली में इसका प्रभाव परिलक्षित होगा। विश्वविद्यालय ३३४ विस्तरों वाला ट्राम सेन्टर लगभग बनकर तैयार हो चुका है। इसके लिए आवश्यक अति आधुनिक स्व उच्चीकृत यंत्रों का संकलन पूर्ण हो चुका है। यह परिचालन देश के सबसे बड़े ट्रॉमा सेन्टरों में से एक होगा।

भारत रत्न

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी

२५ दिसम्बर, १८६१-१२ नवम्बर, १९४६

३० मार्च, २०१५ को राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी जी द्वारा पण्डित मदन मोहन मालवीय जी को भारत रत्न (मृत्योपरान्त) अलंकरण से सम्मानित किया गया

७.संकाय सदस्यों द्वारा अर्जित पुरस्कार, अध्येतावृत्ति, विशिष्टताएँ (अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय) एवं पेटेन्ट

पुरस्कार

पुरस्कारों का नाम व अधिनिर्णय प्रधिकारी	विभाग एवं प्राप्तकर्ता
रिसर्च अवार्ड, यू.जी.सी., नई दिल्ली	डॉ. निधि शर्मा अर्थशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय
रिसर्च अवार्ड, यू.जी.सी., नई दिल्ली	डॉ. श्वेता प्रसाद सामाजिक विज्ञान इकाई, म.म.वि.
रिसर्च अवार्ड, यू.जी.सी., नई दिल्ली '	डॉ. मिताली देब संस्कृत इकाई, महिला महाविद्यालय
बनारस रत्न, भारत सुरक्षा परिषद, नई दिल्ली	डॉ. संजय कुमार वर्मा वाद्य विभाग, वी.सी.डब्ल्यू.
संगीत साधक सम्मान, करूणा उत्सव कला समागम, श्री करूणामई माँ शक्ति पीठ, सोहाना, गुड़गाँव, हरियाणा	डॉ. संजय कुमार वर्मा वाद्य विभाग, वी.सी.डब्ल्यू.
कैश अवार्ड (५०००) - २०१५, 'अग्निपीठ'-(एन आर्टिस्ट ग्रुप फॉर नेशनल इंटरेस्टिन पीसफुल एक्शन फॉर हारमोनी), नई दिल्ली	डॉ. प्रवीण सुल्ताना पेंटिंग विभाग, वी.सी.डब्ल्यू.
आईयूसीएए, भारत पुणे का दौरा एसोसिएट सम्मानित	डॉ. आर. चौबे डी.एस.टी.- (सी.आई.एम.एस.)
अन्तर्राष्ट्रीय प्राइड एशिया पुरस्कार, इकोनॉमी ग्रोथ सोसाइटी ऑफ इंडिया, काठमाण्डू।	प्रो. एस.आर. सोनी गायन विभाग
कौस्तुभ समन, लोक कला संस्कृत, उत्तराखण्ड-२०१५	डॉ. राम शंकर गायन विभाग
संगीत समारोह पुस्कार-२०१४, चिंतामणि गणेश मंदिर	डॉ. के. शशि कुमार गायन विभाग
कृष्ण द्ववैपायाना व्यास पुरस्कार द्वारा उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान	डॉ. कमला पाण्डेय संस्कृत विभाग, व.क.वि.
शैवा भारती पुरस्कार द्वारा जंगमबाड़ी ज्ञान सिंहासन पीठम	डॉ. कमला पाण्डेय संस्कृत विभाग, व.क.वि.
मलाला सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार	डॉ. रेवती सकलकार शिक्षा संकाय
राजहंस चोंच सम्मान, डॉ. लक्ष्मीनारायण कुशवाहा स्मृति सेवा	डॉ. रेवती सकलकार शिक्षा संकाय
यंग सोसिओलाजिस्ट अवार्ड, इंडियन सोसिओलॉजिकल सोसाइटी, नई दिल्ली	डॉ. स्वाती एस. मिश्रा सामाजिक विज्ञान विभाग, आ.म.पी.जी.
सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार, भारतीय डेरी संघ, नई दिल्ली	प्रो. अनिल कुमार चौहान खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र
१०वाँ आर.सी. डेलेटा ओरेशन अवार्ड, अकादमी ऑफ इन्वायरमेंटल बॉयोलॉजी, इण्डिया	प्रो. एम. अग्रवाल वनस्पति विज्ञान
'गंगा रत्न' (जीएमएस आईएनडी), गंगा महासभा के १००वें वार्षिक उत्सव पर	प्रो. राणा पी.बी. सिंह भूगोल विभाग

एम.आर. श्रीनिवास राय अवार्ड, जी.एस.आई. बंगलुरू	डॉ. दिव्य प्रकाश भूविज्ञान विभाग
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शोध पुरस्कार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	डॉ. एन.वी.सी. राव भूविज्ञान विभाग
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शोध पुरस्कार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	डॉ. ए.एस. नायक भूविज्ञान विभाग
पी.आर.एल. (अहमदाबाद) पुरस्कार, पी.आर.एल.	डॉ. एन.वी.सी. राव भूविज्ञान विभाग
आई.टी.एस. पुरस्कार, डी.एस.टी.	डॉ. वी. श्रीवास्तव भूविज्ञान विभाग
अवार्डेड विज़िटिंग एसोसिएट ऑफ आई.यू.सी.ए.ए., पुणे फॉर थ्री इयर्स सिंस अगस्त १, २०१३, आई.यू.सी.ए.ए., भारत	डॉ. आर. दूबे डीएसटी-सीआईएमएस
प्रेसिडेंट अवार्ड (महर्षि वद्रायन व्यास सम्मान-२०१५), भारत सरकार	डॉ. विनय कुमार पाण्डेय ज्योतिष विभाग
प्रेसिडेंट अवार्ड (महर्षि वद्रायन व्यास सम्मान-२०१५), भारत सरकार	डॉ. एम. जनार्दन रटाटे ज्योतिष विभाग
विशेष सम्मान, उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ	डॉ. विनय कुमार पाण्डेय ज्योतिष विभाग
शास्त्र सम्मान, श्रीविद्या मठ केदारनाथ, वाराणसी	प्रो. एन.आर. श्रीनिवासन धर्मशास्त्र एवं मिमांसा विभाग
शास्त्र सम्मान, अहोबाल मठ श्रीरंगम	प्रो. एन.आर. श्रीनिवासन धर्मशास्त्र एवं मिमांसा विभाग
शास्त्र सम्मान, श्री निधि ट्रस्ट, कांची	प्रो. एन.आर. श्रीनिवासन धर्मशास्त्र एवं मिमांसा विभाग
विविध पुरस्कार, उ.प्र. संस्कृत संस्थान	डॉ. एम. जनार्दन रटाटे ज्योतिष विभाग
व्यास पुरस्कार, उ.प्र. संस्कृत संस्थान	डॉ. शंकर कुमार मिश्रा धर्मशास्त्र एवं मिमांसा विभाग
सिलवर अवार्ड, सिलवर अवार्ड इन द इंडियन मैंनेजमेंट कान्क्लेव २०१४	प्रो. एच.सी. चौधरी प्रबंधशास्त्र संकाय
बेस्ट प्रोफेसर इन इंशूरेंश, २२ देवांग मेहता अवार्ड २०१४	प्रो. राजकुमार प्रबंधशास्त्र संकाय
बेस्ट प्रोफेसर इन इंटरप्रेन्योरशिप, २२ देवांग मेहता अवार्ड २०१४	प्रो. पी.एस. त्रिपाठी प्रबंधशास्त्र संकाय
२२वाँ देवांग मेहता अवार्ड, बी-स्कूल विथ बेस्ट एकाडेमिक इनपुट (सलेबस) इन इंटरनेशनल बुसिनेश	प्रबंधशास्त्र संकाय
इंडियन मैनेजमेंट कान्क्लेव अवार्ड २०१४, सिलवर अवार्ड इन द इंडियन मैनेजमेंट कान्क्लेव २०१४	प्रबंधशास्त्र संकाय
द इकोनॉमिक्स टाइम्स एफएमएस बीएचयू इज वन एमांग द टॉप २१-बी स्कूल्स बेस्ड ऑन कैम्पस प्लेसमेंट्स	प्रबंधशास्त्र संकाय
बी-स्कूल विथ एक्सलेंट इंडस्ट्री इंटरफेस अवार्ड, एबीपी न्यूज-बी स्कूल अफेयर	प्रबंधशास्त्र संकाय

आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (पी जी लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	डॉ. ओ.पी. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (यू जी लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	प्रो. राकेश सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
श्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार, २०१४, भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	प्रो. वी.के. श्रीवास्तव कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (पी जी लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	डॉ. प्रवीण प्रकाश कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (पी जी लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	डॉ. आर एन मीणा कृषि विज्ञान संस्थान
बायोवेद फेलो पुरस्कार, बायोवेद रिसर्च सोसाइटी, भारत	प्रो. डी.सी. राय कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (पी जी लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	प्रो. रमेश चन्द कृषि विज्ञान संस्थान
श्रेष्ठ पेपर प्रस्तुतीकरण, ई.एस.आई., नई दिल्ली	डॉ. एम. रघुरमन कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	प्रो. अरूण कुमार सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
लाइफ टाइम अचिवमेंट पुरस्कार, महिमा रिसर्च फाउनडेशन	प्रो. रवि प्रताप सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
बायोवेद फेलो पुरस्कार, बायोवेद रिसर्च सोसाइटी	प्रो. रवि प्रताप सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
डीटिंगविस वैज्ञानिक पुरस्कार, आस्था फाउनडेशन	प्रो. रवि प्रताप सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
महीमा किसान मित्र पुरस्कार, महिमा रिसर्च फाउनडेशन	प्रो. रवि प्रताप सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार, भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	प्रो. अनिल कुमार सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
विज्ञान रत्न पुरस्कार, सी एस टी, उत्तर प्रदेश	प्रो. एच.बी. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
प्रो. जे पी वर्मा मेमोरिल व्याख्यान पुरस्कार २०१४, इंडियन पौथोलाजीकल सोसाइटी	प्रो. रमेश चन्द कृषि विज्ञान संस्थान
बायोड फेलोशिप पुरस्कार, बायोड रिसर्च सोसाइटी, इलाहाबाद	डॉ. राम चन्द कृषि विज्ञान संस्थान
द्वितीय श्रेष्ठ पेपर पुरस्कार, अन्तर्राष्ट्रीय कॉनफ्रेन्स	प्रो. वन्दना बोस कृषि विज्ञान संस्थान
लाइफ टाइम अचिवमेंट पुरस्कार, महिमा रिसर्च फाउनडेशन	प्रो. ए. हेमंतरंजन कृषि विज्ञान संस्थान
सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार, १९वॉं विश्व काग्रेस ऑन क्लनीकल न्यूट्रीटन	प्रो. ए. हेमंतरंजन कृषि विज्ञान संस्थान
राष्ट्रमंडल अकादमिक स्टाफ फैलोशिप २०१४ पुरस्कार, राष्ट्रमंडल स्कॉलरशिपक कमीशन, यूनाईटेड किंगडम	प्रो. पद्मनाभ द्विवेदी कृषि विज्ञान संस्थान
श्रेष्ठ पेपर पुरस्कार	प्रो. पद्मनाभ द्विवेदी कृषि विज्ञान संस्थान

श्रेष्ठ परियोजना सम्नव्यक पुरस्कार, उपकार, लखनऊ	प्रो. बी.आर. मौर्या कृषि विज्ञान संस्थान
आई सी ए आर श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार (पी जी लेवल), भा.कृ.अ.प. एवं कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	प्रो. बी.आर. मौर्या कृषि विज्ञान संस्थान
अभिनव युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, पी जी पी आर सोसाइटी, आइसीआरआइएसएटी, हैदराबाद	डॉ. ए. रक्षित कृषि विज्ञान संस्थान
श्रेष्ठ पेपर प्रस्तुती पुरस्कार, महिमा रिसर्च फाउडेशन	डॉ. वाई.वी. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
श्रेष्ठ पेपर पुरस्कार, महिमा रिसर्च	डॉ. राम अवतार मीणा कृषि विज्ञान संस्थान
भारतीय रसायन समिति के द्वारा अंजनीयुल्लाह पुरस्कार एएसजी	डॉ. वी.के. तिवारी रसायनशास्त्र विभाग
इंटरनेशनल बेस्ट टीचर अवार्ड २१३ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन	प्रो. एल.डी. मिश्रा निश्चेतन विज्ञान विभाग
आईएएस नेशनल अवार्ड फॉर एकेडमिक एक्सेलेंस २०१४	प्रो. एल.डी. मिश्रा निश्चेतन विज्ञान विभाग
''प्रो. सी.एन.रॉव एजूकेशन फाण्डेशन अवार्ड फॉर एक्सेलेंस इन सांइटिफिक'' इन २०१४ बाई सी.एन.आर. रॉव एजूकेशन फाण्डेशन एण्ड बी.एच.यू.	प्रो. डी. दास जैव रसायन विभाग
''वाइस चांसलर्स अवार्ड फॉर एक्सेलेंस इन रिसर्च'' फॉर पब्लिकेशन इन हाई इम्पैक्ट फैक्टर जर्नल	प्रो. डी. दास जैव रसायन विभाग
प्रो. बी.एम. श्रीवास्तव आर.एस.एस.डी.आई अवार्ड २०१४ (राष्ट्रीय)	प्रो. एस.के. सिंह इंडोक्रिनोलॉजी एण्ड मेटाबोलिज़्म
बेस्ट पोस्टर अवार्ड (करन गुप्ता अवार्ड एआईसीओजी-२०१४)	प्रो. मधु जैन प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान
कोरिऑन अवार्ड फेडरेशन ऑफ ऑब्सटेट्रिकल एण्ड ग्यनकोलॉजिकल सोसाइटीज़ ऑफ इण्डिया २०१५	प्रो. मधु जैन प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान
लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड बाई यू.पी. आर्थोपेडिक एसोसिएशन	प्रो. एस.सी. गोयल विकलांग विभाग
के.टी. ढोलकिया गोल्ड मेडल बाई इंडियन आर्थोपेडिक एसोसिएशन	प्रो. एस.के. सर्राफ विकलांग विभाग
प्रो. नाग चौधरी ओरियंटेशन अवार्ड फॉर क्लिनिकल न्यूट्रेशन इन २०१४	प्रो. उषा रोग विज्ञान विभाग
इमिनेंट सिनियर टीचर अवार्ड (अण्डर ताराचन्द सर्जिकल एजूकेशन एण्ड आर.एफ)	प्रो. वी. भट्टाचार्या प्लास्टिक शल्य विभाग
बेस्ट पेपर अवार्ड एट आईडीआर एण्ड आर.सी.टी. २०१४	डॉ. आशीष वर्मा विकिरण निदान विभाग
बेस्ट स्पीकर अवार्ड ए.एस.पी.एन.ए.	प्रो. जे.एस. त्रिपाठी कायचिकित्सा विभाग
महिमा आयुर्वेदिक एक्सेलेंस अवार्ड २०१४	प्रो. जे.एस. त्रिपाठी कायचिकित्सा विभाग
बेस्ट पेपर अवार्ड	डॉ. मंगला गौरी वी. रॉव स्वास्थ्यवृत्ता एवं योगा विभाग
एक्सेलेंस इन आयुर्वेद बेस्ट पेपर अवार्ड	डॉ. पी.एस. व्यादगि विकिरण विज्ञान विभाग
बी.सी.आर.एल., पेपर अवार्ड, इंटरनेशनल डेवलेपमेंट रिसर्च फाउण्डेशन, नई दिल्ली	प्रो. एस.सी. दास वाणिज्य संकाय
वासुदेव शास्त्री अवार्ड २०१४	प्रो. के.के. मिश्रा राजनीति विज्ञान विभाग

अध्येतावृत्तियाँ/ एसोसियेटशिप/ प्रायोजन

अध्येतावृत्ति का नामप्राप्तकर्ता एवं विभाग	
आईएनएसए विज़िटिंग साइंटिस्ट फेलोशिप, आईएनएसए, नई दिल्ली	डॉ. नीलम श्रीवास्तव भौतिक इकाई, महिला महाविद्यालय
पोस्ट डाक्टोरल फलोशिप, इण्डियन काउंसिल ऑफ हिजटोरिकल रिसर्च, नई दिल्ली	एस ए पोस्ट डाक्टोरल फेलोशिप, प्रा.भा.इ.सं. तथा पुरातत्व, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एसोसिएट फेलो, नेशनल अकादमी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (एनएएएस)	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
फेलो, नेशनल अकादमी ऑफ साइंस २०१४, इलाहाबाद	प्रो. एन.के. चौबे वनस्पति विज्ञान विभाग
फेलो, इंडियन फायटोपैथोलाजिकल सोसाइटी, नई दिल्ली	प्रो. आर.एन. खरवार वनस्पति विज्ञान विभाग
आईएनएसए विज़िटिंग फेलोशिप, जे.एस.पी.एस. फेलोशिप	डॉ. एस. के. दूबे वनस्पति विज्ञान विभाग
फेलो ऑफ द नेशनल अकादमी ऑफ साइंस ऑफ इण्डिया (एफएनएएससी), राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	प्रो. आर.के. श्रीवास्तव भूविज्ञान विभाग
टू फेलोशिप फॉर रिसर्चर ऑफ एमसीपीआर लिन्नाइअस-पालमे एक्सचेंज प्रोग्राम, स्वीडन फॉर एडवांस कोर्स इन पीस एण्ड कांफ्क्टि एट कार्लस्टड यूनिवर्सिटी	सुश्री ज्योति त्रिपाठी मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
टू फेलोशिप फॉर रिसर्चर ऑफ एमसीपीआर लिन्नाइअस-पालमे एक्सचेंज प्रोग्राम, स्वीडन फॉर एडवांस कोर्स इन पीस एण्ड कांफ्क्टि एट कार्लस्टड यूनिवर्सिटी	श्री सुनील सोनकर मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
टू इंटरनेशनल फेलोशिप फॉर रिसर्चर ऑफ एमपीसीआर फ्राम पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट, ओसलो (नार्वे)	सुश्री आरती खातनानी मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
टू इंटरनेशनल फेलोशिप फॉर रिसर्चर ऑफ एमपीसीआर फ्राम पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट, ओसलो (नार्वे)	श्री गौरव शाह मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
कोचरन फेलोशिप, २०१४, यू.एस.डी.ए.	डॉ. वी.के. पासवान कृषि विज्ञान संस्थान
ए जेड ए आर ए होनोरेरी फेलोशीप, ए जेड ए आर ए, कटक	प्रो. सी.पी. श्रीवास्तव कृषि विज्ञान संस्थान
रमन फेलोशिप, यू. जी. सी.	डॉ. कल्यॉण गड़ई कृषि विज्ञान संस्थान
कॉमनवेल्थ अकादमी स्टाफ फेलोशिप २०१४ अवार्ड, कॉमनवेल्थ फेलोशिप कमिशन, यूनाइटेड किंगडम	प्रो. पद्मनाथ द्विवेदी कृषि विज्ञान संस्थान
जे.एस.पी.एस इन्विटेशन फेलोशिप	प्रो. डी.एस. पाण्डेय रसायनशास्त्र विभाग
यूके-आईईआरआई फेलोशिप	प्रो. एम.एस. सिंह रसायनशास्त्र विभाग
यूके-आईईआरआई फेलोशिप	डॉ. इदा तिवारी रसायनशास्त्र विभाग
कॉमनवेल्थ एकैडेमिक स्टाफ फेलोशिप	डॉ. वी. गनेशन रसायनशास्त्र विभाग
फेलोशिप ऑफ इण्डियन अकादमी ऑफ साइंसेज, बंगलुरू, एफ.ए.एस.सी. इन २०१५	प्रो. डी. दास जैव रसायन विभाग

फेलो ऑफ एसोसिएशन ऑफ कोलोरेक्टल सर्जियंस ऑफ इण्डिया (एफ.ए.सी.आर.एस.आई. हॉनी)	प्रो. ए.के. खन्ना सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
फेलो ऑफ एसोसिएशन ऑफ मिनिरल सर्जियंस ऑफ इण्डिया (एफ.ए.सी.आर.एस.आई. हॉनी) ऑफ इण्डिया २०१४	प्रो. ए.के. खन्ना सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
फेलोशिप ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ सर्जियंस (एफ.आई.सी.एस.)	डॉ. सत्येन्द्र कुमार तिवारी सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
फेलोशिप ऑफ मिनिरल एसेस सर्जरी (एफ.एम.ए.एस.)	डॉ. सत्येन्द्र कुमार तिवारी सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
फेलोशिप (एफ.ए.एम.एस.) ऑफ एन.ए.एम.एस.-के.सी. सोगनी गोल्ड मेडल (आइ.ए.पी.एस. २०१४)	प्रो. ए.एन. गंगोपाध्याय बाल शल्य चिकित्सा विभाग
कॉमनवेल्थ एकेडमिक स्टॉफ फेलोशिप इन बोन मैरो ट्रांसप्लांटेशन इन यू.के.	डॉ. विनीता गुप्ता बाल चिकित्सा विभाग
फेलोशिप इन पेडियाट्रिक आंकोलॉजी ऑफ वन इयर ड्यूरेशन इन आस्ट्रेलिया	डॉ. ए.के. गुप्ता बाल चिकित्सा विभाग
फेलो ऑफ एन.ए.एम.एस.	प्रो. वी. भट्टाचार्या प्लास्टिक शल्य चिकित्सा विभाग
इंटरनेशनल फेलोशिप एट साउथ कोरिया	डॉ. अमित द्विवेदी विकिरण निदान विभाग
एआरओआई-किर्लोस्कर थेराप्युटिक्स फेलोशिप एट एम.डी. एण्ड्रेशन कैंसर सेंटर, हॉस्टल, यू.एस.ए. १४.१०.२०१४ से ३१.१०.२०१४	प्रो. एस. प्रधान विकिरण चिकित्सा एवं विकिरण आयुर्विज्ञान विभाग
यूरोपियन सोसाइटी ऑफ सर्जिकल आंकोलॉजी फेलोशिप	डॉ. मल्लिका तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
यू.आई.सी.सी., आई.सी.आर.ई.टी.टी. फेलोशिप	डॉ. मल्लिका तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
आयुष स्पांर्स्ड वैद्य साइंटिस्ट फेलोशिप एण्ड वैद्य साइंटिस्ट फेलोशिप	डॉ. किशोर पटवर्धन क्रियाशरीर विभाग
इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी फेलोशिप	प्रो. अलका अग्रवाल मेडिसिनल केमेस्ट्री विभाग
आई.ए.एस.डी.	प्रो. वी.के. दीक्षित जठरांत्र शोथ विज्ञान विभाग
फेलो ऑफ इण्डियन अकादमी ऑफ एप्पलाइड साइकोलॉजी, २०१५	डॉ. योगेश कुमार आर्य मनोविज्ञान विभाग

सम्मान/श्रेष्ठता

सम्मान/श्रेष्ठता की प्रकृतिप्राप्तकर्ता एवं विभाग	
*** व्यवसायिक संगठनों के चयनित अध्यक्ष/उपाध्यक्षध/सचिव/मानद कोषाध्यक्ष**	
सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर-२०१४ (रिकग्नाइज) हंगावा इन्फार्मेशन एण्ड कल्चरल सेंटर (एचआईसीसी), नई दिल्ली आई कोलाबोरेशन विथ फैक्ट इंडिया आर्ट आर्गनाइजेशन-२०१४, नई दिल्ली	डॉ. प्रवीण सुल्ताना पेंटिंग विभाग,वी.सी.डब्ल्यू.
प्रेसिडेंट, आईएएसआर-इंडियन एसोसिएशन ऑफ स्टडी ऑफ रिलिजियन, आईएएसआर, बॉडी ऑफ आईएएचआर, नई दिल्ली एण्ड कोपेनहेगन	प्रो. राणा पी.बी. सिंह भूगोल विभाग
गेस्ट ऑफ ऑनर इन सीएमई एट चण्डीगढ़	प्रो. वी. रस्तोगी निश्चेतन विभाग

*** सभापति/उप-सभापति**

सभापति/उप-सभापति	प्राप्तकर्ता एवं विभाग
वाइस प्रेसिडेंट, माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया-२०१४	प्रो. आर.एन. खरवार वनस्पति विभाग
आई.सी.सी.आर. चेयर प्रोफेशरशिप एट डुबलिन सिटी यूनिवर्सिटी, आयरलैण्ड, इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स, नई दिल्ली।	प्रो. प्रियंकर उपाध्याय मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
उपाध्यक्ष, इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री इकोनॉमिक्स	प्रो. राकेश सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
उपाध्यक्ष ए जेड ए आर ए, ए जेड ए आर ए, भुवनेश्वर	प्रो. सी.पी. श्रीवास्तव कृषि विज्ञान संस्थान
उपाध्यक्ष, इंडियन सोसाइटी ऑफ मृदा विज्ञान, नई दिल्ली	प्रो. एस.के. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
आईएनएसए-डीएफजी बाइलेटरल एक्स्चेंज प्रोग्राम, जर्मनी	प्रो. एल. मिश्रा रसायनशास्त्र विभाग
आईएनएसए-डीएफजी बाइलेटरल एक्स्चेंज प्रोग्राम, जर्मनी	प्रो. एम.एस. सिंह रसायनशास्त्र विभाग
प्लाटिनम जुबली अवार्ड लेक्चर बाई इंडियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन	प्रो. डी.एस. पाण्डेय रसायनशास्त्र विभाग
इलेक्टेड प्रेसिडेंट, एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इण्डियन, यू.पी. चेप्टर, २०१४-१५	प्रो. राहुल खन्ना सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
चेयरमैन, चेयरमैन बेसिस साइंस एण्ड आर्थोपेडिक रिसर्च कमेटी ऑफ इंडियन आर्थोपेडिक एसोसिएशन	प्रो. एस.के. सराफ विकलांग विज्ञान विभाग
वाइस चेयरमैन, आईएनडी. कॉलेज रोड, ओएनसीओ.	प्रो. एस. प्रधान विकिरण चिकित्सा और विकिरण आयुर्विज्ञान विभाग
चेयरमैन, आईसीएमआर टास्क फोर्स कैंसर गॉल ब्लेडर	प्रो. एच.एस. शुक्ला सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
चेयरमैन, आयुर्वेदिक फार्माकोपिया कमेटी, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ आयुष, नई दिल्ली	प्रो. वी.के. जोशी द्रव्यगुण विभाग
चेयरमैन, साइंटिफिक एडवायज़री कमेटी ऑफ सी.सी.आर.ए.एस. आयुष विभाग, भारत सरकार	प्रो. आर.एच. सिंह कायाचिकित्सा विभाग

*** राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य**

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य	प्राप्तकर्ता एवं विभाग
कार्यकारिणी परिषद के सदस्य, न्यूमिजमाटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी	डॉ. मुकेश कुमार सिंह प्रा.भा.इ.सं. तथा पुरातत्व विभाग, डीएवी
भारतीय गणितीय सोसाइटी, परिषद के सदस्य	डॉ. बी. तिवारी डी.एस.टी.-(सी.आई.एम.एस.)
फाउण्डर मेम्बर ऑफ द इंडियन नेशनल यंग एकाडेमी ऑफ साइंस (आईएनवाईएएस), इंडियन नेशनल साइंस एकाडेमी (आईएनवाईएएस)	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
इडिटोरियल बोर्ड मेम्बर, साइंटिफिक रिपोर्ट्स, नेचर पब्लिलिशिंग ग्रुप	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
मेम्बर, एडवाइज़री कमेटी, इंडो ग्लोबल एग्री एक्सपो एण्ड सुमित २०१५	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान

इडिटोरियल बोर्ड मेम्बर, इंवायरमेंटल प्रोसेसेज, यूरोपियन वॉटर रिसोर्स एसोशिएन एण्ड स्प्रींगर	डॉ. प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
इडिटोरियल बोर्ड मेम्बर, जर्नल ऑफ इंवायरमेंटल केमिस्ट्री एण्ड इकोटोक्सीकोलॉजी, एकाडेमी जर्नल्स	डॉ. प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
मेम्बर, इण्डो-हेल्लुसिनिक सोसाइटी, एथेंस, आईएचएससी, ग्रीस	प्रो. राणा पी.बी. सिंह भूगोल विभाग
मेम्बर, ईडब्ल्युआरए, यूरोपियन वॉटर रिर्सोस एसोसिएट, ग्रीस	डॉ. एम.एल. मीणा भूगोल विभाग
काउंसिल मेम्बर फॉर थ्री इयर्स सिंस मार्च १, २०१५ इंडियन मैथेमेटिकल सोसाइटी	डॉ. बी. तिवारी डीएसटी-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र
कार्यकारिणी सदस्य, इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री इकोनॉमिक्स	डॉ. ओ.पी. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
समाचार पत्र के एक्सर्पट कमेटी के सदस्य	प्रो. आर.एन. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
संपादकीय सदस्य फफूंद जीवविज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी	प्रो. एच.बी. सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
एडीटोरियल बोर्ड ''इण्डियन जे. केमेस्ट्री के तौर पर शामिल किया गया	प्रो. डी.एस. पाण्डेय रसायनशास्त्र विभाग
इलेक्टेड इक्जिक्यूटिव मेम्बर इण्डियन एसोसिएशन ऑफ सर्जिकल आंकोलॉजी	डॉ. मल्लिका तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
प्रेसिडेंट इलेक्टेड मेम्बर, आईएसएनसीसी-नैक पीर रिव्यू टीम	प्रो. एल.डी. मिश्रा निश्चेतन विज्ञान विभाग
मेम्बर, इंस्टीट्यूट रिसर्च बॉडी, भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर। इथिकल कमेटी, भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर	प्रो. डी.के. सिंह निश्चेतन विज्ञान विभाग
मेम्बर, एडवाइज़र बोर्ड, ओएम कार्डियक कोर्स, एसजीपीजीआईएमएस, लखनऊ	प्रो. एस.के. माथुर निश्चेतन विज्ञान विभाग
इलेक्टेड मेम्बर, सीएसआईआर टास्क फोर्स ऑन 'एनिमल साइंसेस एण्ड बॉयोटेक्नोलॉजी रिसर्च कमेटी'	प्रो. डी. दास जीव रसायन विभाग
लाइफ मेम्बर, आईएडीवीएल, आईएएल, एनएएमएस, आईएसडब्ल्युएम	प्रो. एस.एस. पाण्डेय त्वचा एवं रति रोग विज्ञान विभाग
लाइफ मेम्बर, आईएडीवीएल, एनएएमएस	प्रो. (श्रीमती) लता शर्मा त्वचा एवं रति रोग विज्ञान विभाग
लाइफ मेम्बर, आईएडीवीएल,डब्ल्युएएमई, आईएएसए	प्रो. संजय सिंह त्वचा एवं रति रोग विज्ञान विभाग
लाइफ मेम्बर, आईएडीवीएल	डॉ. एस.के. सिंह त्वचा एवं रति रोग विज्ञान विभाग
लाइफ मेम्बर, आईएडीवीएल, एसीएसआई	डॉ. मनीष बंसल त्वचा एवं रति रोग विज्ञान विभाग
मेम्बर, इक्जीक्यूटिव कमेटी, ईएसआई	डॉ. एन.के. अग्रवाल इंडिक्रिनोलॉजी एण्ड मेटाबोलिज़्म विभाग
लाईफ मेम्बर, आईएसजी, एपीआई,एसजीईआई, आईएएसएल	प्रो. ए.के. जैन जठरांत्र शोथ विज्ञान विभाग
प्रेसिडेंट, एसजीइआई, आईएनएएसएल २०१३-१४	प्रो. वी.के. दीक्षित जठरांत्र शोथ विज्ञान विभाग

लाईफ मेम्बर, आईएसजी, एपीआई, एसजीइआई, आईएएसएल	डॉ. एस.के. शुक्ला जठरांत्र शोथ विज्ञान विभाग
मेम्बर, जीओयूटीडब्ल्युएन	डॉ. वी.के. शुक्ला सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
गवर्निंग काउंसिल मेम्बर, एसोसिएशन ऑफ सर्जियांस ऑफ इण्डिया	प्रो. ए.के. खन्ना सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
वाईस प्रेसिडेंट, एसोसिएशन ऑफ कोलोन एण्ड इक्जिक्यूटिव रेक्टल सर्जियांस ऑफ इण्डिया मेम्बर वेनस एसोसिएशन ऑफ इण्डिया	प्रो. ए.के. खन्ना सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
मेम्बर, यूरोपियन प्रेज़र अल्सर एडवाइज़री पैनल साइंटिफिक कमेटी, इंटरनेशनल ऑनलाइन मेडिकल कांफ्रेंस २०१४	डॉ. एस.पी. वसु सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
मेम्बर, मूवमेंट डिस्आर्डर सोसाइटी एशियन एण्ड ओसेएनियन सबसेक्शन एण्ड एनएसआई, आईएएन एण्ड एएएन	प्रो. दीपिका जोशी तंत्रिकीय चिकित्सा विभाग
मेम्बर, आईएमए, आईएजी, आईइए, एपीआई, आईएएन, एनएसआई, वीएनए एण्ड एमडीए	डॉ. वी.एन. मिश्रा तंत्रिकीय चिकित्सा विभाग
मेम्बर, एनएसआई, आईएएन, आईइए, एपीआई, आईएजी, एण्ड आईएमए	डॉ. आर.एन. चौरसिया तंत्रिकीय चिकित्सा विभाग
मेम्बर, एक्जिक्यूटिव टीचिंग कमेटी ऑफ एनएसएसाआई	प्रो. विवेक शर्मा तंत्रिकीय शल्य चिकित्सा विभाग
मेम्बर, आरएसी, डायरेक्ट्रोरेट ऑफ कोल्ड वॉटर फिशरिज़ रिसर्च, भीमताल, नैनीताल	डॉ. सुनीत कुमार सिंह मोलेकुलर बायोलॉजी यूनिट
मेम्बर, गवर्निंग काउंसिल, इण्डियन मेनोपाउज़ल सोसाइटी	प्रो. अनुराधा खन्ना प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान विभाग
मेम्बर, इक्जिक्यूटिव काउंसिल, आईओए	प्रो. अमित रस्तोगी विगलांग विज्ञान विभाग
मेम्बर इक्जिक्यूटिव, मेम्बर नेशनल एसोसिएशन ऑफ इक्जिक्यूटिव इंटरलाकिंग सर्जियांस	प्रो. अमित रस्तोगी विगलांग विज्ञान विभाग
मेम्बर, आईएपीएस, एएसआई, एनएएमएस	प्रो. ए.एन. गंगोपाध्याय बाल शल्य चिकित्सा विभाग
मेम्बर, आईएपीएस	प्रो. एस.पी. शर्मा विगलांग विज्ञान विभाग
मेम्बर, बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ऑफ एपीएसआई	प्रो. वी. भट्टाचार्या प्लास्टिक शल्य चिकित्सा विभाग
मेम्बर, गवर्निंग बॉडी ऑफ सेन्ट्रल जोन ऑफ एनएनएफ	प्रो. अशोक कुमार बाल चिकित्सा विभाग
लाईफ मेम्बर, आईआरआईए, आईसीआरआई, आईएसएनआर, आईएसएनओ, आईएसवीआईआर, आईएमए	डॉ. अशीष वर्मा विकिरण निदान विभाग
करेस्पांड मेम्बर, एसआईआर, ईएसआर	डॉ. अशीष वर्मा विकिरण निदान विभाग
लाईफ मेम्बर, आईआरआईए, आईसीआरआई, आईएसवीआईआर, आईएमए	डॉ. अमित द्विवेदी विकिरण निदान विभाग
करेस्पांड मेम्बर, ईएसआर	डॉ. अमित द्विवेदी विकिरण निदान विभाग
इक्जिक्यूटिव मेम्बर, एएमपीआई	डॉ. एल.एम. अग्रवाल विकिरण चिकित्सा और विकिरण आयुर्विज्ञान विभाग

बोर्ड मेम्बर, सीएमपीआई	डॉ. एल.एम. अग्रवाल विकिरण चिकित्सा और विकिरण आयुर्विज्ञान विभाग
मेम्बर, आईसीएमआर कैंसर टॉस्क फोर्स बुकॉल मुकोसा कैंसर	प्रो. मनोज पाण्डेय सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
इक्जिक्यूटिव मेम्बर, आईएएसओ, डब्ल्युएफएसओएस	डॉ. मल्लिका तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
मेम्बर, आईएचपीबीए आईसीएमआर कैंसर टॉस्क फोर्स आईएचपीबीए इण्डिया	डॉ. मल्लिका तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
मेम्बर, फार्माकोपेएल कमिशन ऑफ इण्डिया मेडिसिन, भारत सरकार, आयुष मंत्रालय, नई दिल्ली	प्रो. वी.के. जोशी द्रव्यगुण विभाग
मेम्बर, साइंटिफिक एडवाज़री ग्रुप, सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज, भारत सरकार, आयुष मंत्रालय	प्रो. वी.के. जोशी द्रव्यगुण विभाग
मेम्बर, एक्सपर्ट ग्रुप ऑन क्वालिटी स्टैण्डर्ड ऑफ इण्डियन मेडिसिनल प्लांट्स, इण्डियन काउंसिल फॉर मेडिसिनल रिसर्च (आईसीएमआर), नई दिल्ली	प्रो. वी.के. जोशी द्रव्यगुण विभाग
मेम्बर, सीसीआईएम विजिटेशन कमेटी	प्रो. जे.एस. त्रिपाठी कायचिकित्सा विभाग
लाईफ मेम्बर, एसबीसी, आईएसआरबी, आईएससीए, आईएसएआर, आईएससीबी	प्रो. याई.बी. त्रिपाठी औषधीय रसायन विभाग
मेम्बर, सोसाइटी फॉर न्यूरोसाइंस (यूएसए)	प्रो. टी.डी. सिंह औषधीय रसायन विभाग
मेम्बर, इंटरनेशनल ब्रेन रिसर्च आर्गेनाइजेशन (आईबीआरओ)	प्रो. टी.डी. सिंह औषधीय रसायन विभाग
मेम्बर, इण्डियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन इण्डिया	प्रो. टी.डी. सिंह औषधीय रसायन विभाग
लाईफ मेम्बर, आईएससी, आईएपीएस	प्रो. अल्का अग्रवाल औषधीय रसायन विभाग
मेम्बर, रिसेनबर्ग यूरोपियन अकादमी ऑफ आयुर्वेदा	प्रो. आनन्द कुमार चौधरी रसशास्त्र विभाग
मेम्बर, एआईएसी, एएपीआई, आईएवाई, एमएमएफ, एपीजीएपीआई	डॉ. नीरू नथानी स्वास्थ्यवृत्त एवं योग विभाग
मेम्बर, एआईएसी, आईएवाई, एएपीआई, एमएमएफ	डॉ. मंगला गौरी वी. राव स्वास्थ्यवृत्त एवं योग विभाग
लाईफ मेम्बर, एएपीआई, एआईएएम, वीएपी	प्रो. ए.सी. कर विकृत्ति विज्ञान विभाग
एडवाईज़र, एएपी	प्रो. ए.सी. कर विकृत्ति विज्ञान विभाग
लाईफ मेम्बर, बीएसए, एनएपीआर, एएपीआई, आईएवाई	डॉ. पी.एस. व्यादगि विकृत्ति विज्ञान विभाग
ईसी मेम्बर, एओएमएसआई	प्रो. नरेश कुमार दंत चिकित्सा विभाग
मेम्बर, डीसीआई	प्रो. टी.पी. चतुर्वेदी दंत चिकित्सा विभाग

***शोध पत्रिकाओं के सम्पादक/समीक्षक**

शोध पत्रिकाओं के सम्पादक/समीक्षक	प्राप्तकर्ता एवं विभाग
एकाडेमी इडिटर, पीएलओएस वन, पीएलओएस पब्लिशर्स	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
हैंडलिंग इडिटर, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, वेली पब्लिशर्स	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
एक्पर्ट रिविवर फॉर प्रोजेक्ट इवैल्युशन, यूरोपियन साइंस फाउण्डेशन (इएसएफ)	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
रिक्गनाइज्ड एमांगस्ट टॉप रिव्यूवर फॉर द प्रोसिडिंग ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइंसेज (बायोलॉजिकल साइंसेस), नेशनल अकादमी ऑफ साइंसेस-२०१४, इलाहाबाद	प्रो. एन.के. दुबे वनस्पति विज्ञान विभाग
एसोसिएट संम्पादक	प्रो. पद्मनाभ द्विवेदी कृषि विज्ञान संस्थान

***अन्य विशेष सम्मान**

अन्य विशेष सम्मान	प्राप्तकर्ता एवं विभाग
यू.पी. उर्दू एकाडेमी, उत्तर प्रदेश सरकार	डॉ. मोहम्मद अख्तर उर्दू विभाग, वी.सी. डब्ल्यू
परफार्म्ड इन सुबह-ए-बनारस, रीजनल कल्चरल, ८ दिसम्बर, २०१४	सुश्री बिलमबिता बानीसुधा गायन विभाग, वी.सी. डब्ल्यू
संगीत साधक करूणामयी, शक्तिपीठ आशाराम, गुड़गाँव, हरियाणा २०१५	डॉ. रमाशंकर गायन विभाग
संगीत विद्या भारती, श्री भारती गंगा सभा, अमलपुरम, आंध्र प्रदेश	डॉ. के. शशि कुमार गायन विभाग
ट्रावेल ग्रांट फॉर इनवाइटेड पार्टिसिपेंट, डीएसटी, इंडिया एण्ड एलेक्जेंडर वानहम्बोल्ट फाउण्डेशन, जर्मनी	डॉ. कृपाराम पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
सार्ट वर्किंग विजिट टू जर्मनी अंडर कनेक्ट प्रोग्राम, एलेक्जेंडर वानहम्बोल्ट फाउण्डेशन, जर्मनी	डॉ. कृपाराम पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
विजिटिंग प्रोफेसर, साव पाउलो स्टेट यूनिवर्सिटी, ब्राजील	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
विजिटिंग एसोशिएट प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ हॉगकॉग	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
विजिटिंग फैक्लटी, बीससी एनओएए.सीआरइएसटी जियोस्पाटियल सेंटर, द सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यार्क, न्यू यार्क, एनयाई, यूएसए	डॉ. प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
इंटरनेशनल एक्पर्ट फॉर इवैल्युशन द परफार्मा ऑफ रिसर्च इंस्टीट्यूट्स, चेक एकाडेमी ऑफ साइंस	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान
बनारस श्री द्वारा भारत सुरक्षा परिषद	डॉ. मीनू पाठक वाद्य विभाग, व.क.वि.
कन्या, शिक्षा एवं सुरक्षा, उत्तर प्रदेश सरकार	डॉ. रेवती सकलकर शिक्षा संकाय
मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त, बिहार सरकार	प्रो. साकेत कुशवाहा कृषि विज्ञान संस्थान

श्रेष्ठ परफार्मिंग स्टेशन, ए. आई. सी. आर. पी. ऑन आई एफ एस हेल्ड एट कम्वेटोर	प्रो. जे.एस. बोहरा कृषि विज्ञान संस्थान
नैक टीम के नामित सदस्य, नैक, नई दिल्ली	प्रो. डी.सी. राय कृषि विज्ञान संस्थान
कॉउनसीलर (ए जेड ए आर ए), ए जेड ए आर ए, भुवनेश्वर	प्रो. आर.एन. सिह कृषि विज्ञान संस्थान
अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेस में पोस्टर प्रस्तुतीकरण, तृतीय स्थान प्राप्त,	डॉ. एम.रघुरमन कृषि विज्ञान संस्थान
महीमा कृषि उत्कृष्टता, एम आर एफ एस डब्लू, वाराणसी	डॉ. पी. के. शर्मा कृषि विज्ञान संस्थान
पार्षद, इंडियन सोसाइटी ऑफ स्वॉयल सांइस	डॉ. वाई वी सिंह कृषि विज्ञान संस्थान
डॉ. के.एन. उडुपा इन्डावमेंट लेक्चर ऑफ एसोसिएशन ऑफ सर्जियांस ऑफ इण्डिया फॉर द ईयर २०१४	प्रो. आनन्द कुमार सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
इन्वाइटेड फैक्ल्टी-वाउण्डकॉन २०१४, ६-७ दिसम्बर, २०१४, पुणे	डॉ. सोमप्रकाश वसु सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
इन्वाइटेड फैक्ल्टी-एसीकॉन २०१४, २५-३० दिसम्बर, २०१४	डॉ. सोमप्रकाश वसु सामान्य शल्य चिकित्सा विभाग
एफआईसीएमसीएच	प्रो. सुलेखा पाण्डेय प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग
एफएमएएसआई	डॉ. लविना चौबे प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग
एफएमएएसआई	डॉ. अंजली रानी प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग
एफएमएएसआई	डॉ. संगीता राय प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग
एफएमएएसआई	डॉ. ममता प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग
एफआरसीओजी २०१४	डॉ. उमा पाण्डेय प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग
रिसिव्ड स्टैण्डिंग ओवेएशन फॉर द प्रेजेंटेशन ड्यूरिंग एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ एएसआई	प्रो. वी. भट्टाचार्या प्लास्टिक शल्य चिकित्सा विभाग
अमेरिकन कॉलेज ऑफ सर्जियांस इंटरनेशनल गेस्ट स्कालरशिप	डॉ. मल्लिक तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
अवार्डेड ओरेटेशन डॉ. एस.पी. श्रीवास्तव आंकोलॉजी मेमोरियल ओरेटेशन बाई यू.पी. चेप्टर ऑफ द एसोसिएशन ऑफ सर्जियांस ऑफ इण्डिया	डॉ. मल्लिक तिवारी सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
आयुर्वेद भूषण बाई एआईएएसए	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कायचिकित्सा विभाग
बेस्ट स्पीकर अवार्ड	डॉ. के.एन. मूर्ति कायचिकित्सा विभाग
आयुर्वेद मर्तंड	प्रो. वी.के. द्विवेदी सिद्धांत दर्शन विभाग
आयुर्वेद शोध विभूति	डॉ. रानी सिंह सिद्धांत दर्शन विभाग

एक्सेलेंस इन योगा	डॉ. निरू नथानी स्वास्थ्यवृत्त एवं योग
गवर्न, काउंसिल आईएसीएम, आईसीपी, एसजीईआई	प्रो. वी.के. दीक्षित जठरांत्र शोथ विज्ञान विभाग
मेम्बर, यू.पी. चेप्टर ऑफ आईएएमएम (इण्डियन एसोसिएशन ऑफ मेडिकल बायोलाजिस्ट्स)	प्रो. गोपालनाथ सूक्ष्मजीविकी विभाग
प्रेसिडेंट, वीओजीएस	प्रो. मधु जैन प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान विभाग
ट्रेज़र्र, वीओजीएस	डॉ. अंजली रानी प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान विभाग
एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ नेपाल आर्थोपेडिक्स एसोसिएशन धर्न, नेपाल यूपोरथोकॉन-२०१४, जिमकार्बेट, नेल्सकॉन-२०१४ वाराणसी	प्रो. जी.एन. खरे विकलांग विज्ञान विभाग
सेक्रेटरी, सेंट्रल जोन ऑफ आईओए	प्रो. अमित रस्तोगी विकलांग विज्ञान विभाग
प्रेसिडेंट, यूपी एपीएसआई	प्रो. वी. भट्टाचार्या प्लास्टिक शल्य चिकित्सा विभाग
प्रेसिडेंट, एनएनएफ यूपी चेप्टर	प्रो. अशोक कुमार बाल चिकित्सा विभाग
वाइस प्रेसिडेंट, एआरओआई	प्रो. यू.पी. शशि विकिरण चिकित्सा और विकिरण आयुर्विज्ञान विभाग
वाइस प्रेसिडेंट, एएमपीआई एनसी	डॉ. एल.एम. अग्रवाल विकिरण चिकित्सा और विकिरण आयुर्विज्ञान विभाग
प्रेसिडेंट, एएपीआई	प्रो. आर.एच. सिंह कायचिकित्सा विभाग
विजिटिंग प्रोफेसर, वाकवांग डिजिटल यूनिवर्सिटी, रिपब्लिक ऑफ कोरिया एण्ड माउण्ट मदोना इंस्टीट्यूट ऑफ यूएसए	प्रो. आर.एच. सिंह कायचिकित्सा विभाग
सेक्रेटरी, एएपीआई	प्रो. जे.एस. त्रिपाठी कायचिकित्सा विभाग
सेक्रेटरी, सेंट्रल बॉडी एआईएएस आट दिल्ली	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कायचिकित्सा विभाग
जनरल सेक्रेटरी, एआईएएसए, वाराणसी ब्रांच	डॉ. अजय कुमार पाण्डेय कायचिकित्सा विभाग
ज्वाइंट सेक्रेटरी, एएपीआई	डॉ. वी. श्रीवास्तव कायचिकित्सा विभाग
कन्वेनर, एजुकेशन एण्ड रिसर्च कमेटी-एनआईएमए-इण्डिया	प्रो. के.के. पाण्डेय संज्ञाहरण विभाग
इंटरनेशनल मेम्बरशिप पियरे फउचार्ड अकादमी	डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव दंत चिकित्सा विज्ञान विभाग

पेटेन्ट

क्र.सं.	आवेदक का नाम	पेटेंट का विषय	आवेदन पत्र का वर्ष	वर्तमान स्थिति
१.	डॉ. एस.के. चौधरी, डॉ. एस.एन. ओझा एवं डॉ. वी. रामास्वामी	"डवलेपमेंट ऑफ वेल्डिंग इलेक्ट्रोड्स फॉर स्पाइरली वेल्डेड लाइन पाइप स्टील्स"	आरडीसीआईए स, सेल द्वारा प्रस्तुत	१९९२ में प्रदत्त
२.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे; डॉ. अरुना अग्रवाल	"ए प्रासेस फॉर द प्रेपरेशन ऑफ ए हर्बल कम्पोजिशन युज्ड फॉर द ट्रीटमेंट ऑफ रियूमेटायड आर्थराइटिस"	१९९८	ग्रान्टेड पेटेन्ट नं. १९०४३९ (ए१)
३.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे; डॉ. अरुना अग्रवाल	"ए प्रॉसेस फॉर द प्रिपेयरेशन ऑफ ए हर्बल कम्पोजिशन यूजफुल फॉर द ट्रीटमेंट ऑफ सीज़र डिसआर्डर्स"	१९९८	ग्रान्टेड पेटेन्ट नं. १८९७३४ (ए१)
४.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल	"ए प्रासेस फार द प्रिपेयरेशन ऑफ ए हर्बल कम्पोजिशन यूज़फुल फार द ट्रीटमेंट आफ नान-अल्सर डिसपेप्सिया"	१९९८	ग्रान्टेड पेटेन्ट नं. १८९९६६ (ए१)
५.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल	"ए प्रासेस फार द प्रिपेयरेशन ऑफ ए न्यू फार्मुलेशन एडवोकेटेड फार द मैनेजमेंट आफ एलर्जिक रिनाइटिस "	१९९८	ग्रान्टेड पेटेन्ट नं. १८९७२५ (ए१)
६.	डॉ. प्रेमचन्द्र पाण्डेय एवं अन्य, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय,का.हि.वि.वि.	"एन इम्प्रूव्ड आयन-सेलेक्टिव इलेक्ट्रोल्ड यूजफुल फॉर सेंसिंग पोटैशियम आयन फ्लूड्स"	१९९९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१५५१२
७.	डॉ. प्रेमचन्द्र पाण्डेय एवं अन्य, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	"ए प्रॉसेस फॉर द प्रिपरेशन ऑफ ए सालिड-एस्टेटेड बॉयोसेंसर फॉर यूरिया"	१९९९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१५३८३
८.	प्रो. अनिल कुमार राय, आर्थोपेडिक्स विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	"बाइसेंट्रिक हिप रिप्लेसमेंट डिवाइस" कामन्ली नो एज़ बीएचयू हिप डिवाइस	१९९९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१६८०००
९.	डॉ. प्रेमचन्द्र पाण्डेय एवं अन्य, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय	"ए डिवाइस यूजफूल फॉर सेंसिंग कॉपर (I) आयन इन फ्लूड्स"	१९९९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२१६०१
१०.	डॉ. प्रेमचन्द्र पाण्डेय एवं अन्य, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय	"ए प्रॉसेस फॉर द प्रिपरेशन ऑफ ए सालिड-एस्टेटेड मेटल बेस्ड पी.एच. इलेक्ट्रोल्ड"	१९९९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१८३४०
११.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल	"ए प्रासेस फार प्रोड्यूसिंग हर्बल कम्पोजिशन फार यूज़ इन इरिटेबल बावेल सिन्ड्रोम"	१९९९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. १९०९७३ (ए१)
१२.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे एवं अन्य	"ए प्रासेस फार द प्रिपेयरेशन ऑफ हर्बल कम्पोजिशन फार इम्प्रूवींग मेंटल कैपाविलिटिंज़"	१९९९	ग्रान्टेड इण्डिया पेटेंट नं. १९१४८४ (ए१)
१३.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, प्रो. प्रेमवती तिवारी, डॉ. अरुना अग्रवाल	"प्रासेस फार द प्रिपेयरेशन ऑफ हर्बल ऑफ फार्मास्यूटिकल् कम्पोजिशन फार द मैनेजमेंट मिनोपॉज़ल सिन्ड्रोम "	२०००	ग्रान्टेड पेटेंट नं. १९०८५० (ए१)

१४.	डॉ. एन.सी. करमाकर एवं अन्य, धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.	''एप्पलीकेशन ऑफ ग्राफ्टेड एमिलोपेक्टीन फॉर वेस्ट वॉटर ट्रीटमेंट''	२००१	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २००१२५
१५.	श्री राजेश्वर प्रसाद, डॉ. केशर प्रसाद यादव, श्री अनिल कुमार राय, श्री गौरी शंकर प्रसाद सिंह* एवं श्री गौतम बनर्जी	''डिवाइस फॉर सीलिंग इन्साइड एन अपवार्ड ड्रील्ड बोरहोल फॉर हाई प्रेसर वॉटर इंजेक्शन इन अंडरग्राउण्ड माइन्स''	२००१	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२०६६०
१६.	डॉ. बिपीन कुमार गुप्ता, भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''ए प्रॉसेस फॉर द प्रीपरेशन ऑफ ग्राफिटिक नैनो फाइबर्स एण्ड एपैरेट्स देयरफॉर''	२००१	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२२८२६७
१७.	श्री अनिल कुमार राय, श्री राजेश्वर प्रसाद, श्री गौरी शंकर प्रसाद सिंह*, डॉ. केशर प्रसाद यादव, श्री गौतम बनर्जी	''एन इम्प्रूव्ड केविंग लॉंगवॉल मेथड फॉर विनिंग ऑफ कोल फ्रॉम थिक सीम इन सिंगल लिफ्ट अंडर मैसिव एण्ड हार्ड रूफ कंडिशनस इन अंडरग्राउण्ड माइन्स''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१९३०५
१८.	डॉ. प्रेमचन्द्र पाण्डेय, डॉ. गोविन्द सिंह और अन्य, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय	''ए डिवाइस फॉर क्वांटिटेटिव इस्टीमेशन ऑफ क्रिटनिन''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२३६२१
१९.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल कम्पोजिशन फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेंट आफ लोस ऑफ कागनिटिव डेकलीन एमंग द एजड पापुलेशन एण्ड ए प्रासेस फार प्रिपेयरेशन देयरआफ''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २३२५०७
२०.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल प्रिपेयरेशन एण्ड ए प्रासेस फार द प्रिवेन्शन एण्ड ट्रीटमेन्ट ऑफ हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया एण्ड हाइपरट्राईग्लाइसरडाइमिया''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२६२४२
२१.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल प्रिपेयरेशन एण्ड ए प्रासेस फार द प्रिवेन्शन आफ लीवर साइरोसिस आफ वेरिंग इटियोलॉजी''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२०८०६
२२.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल फार्मुलेशन फार प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेंट आफ कोरिज़ा एण्ड ए प्रासेस देयरआफ''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२०७८६
२३.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल कम्पोजिशन फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेंट ऑफ पोटेनंशियल डियावेट्स एण्ड ए प्रासेस फार प्रिपेयरेशन देयरआफ''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२०७४९
२४.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल कम्पोजिशन हैविंग एन्टी-स्ट्रेस एण्ड एडाप्टोजेनिक प्रापर्टीज़ एण्ड ए प्रासेस फार द प्रिपेयरेशन देयरआफ''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२०६८८
२५.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए हर्बल फार्मुलेशन फार द मैनेजमेन्ट आफ आस्टियो-आर्थराइटिस एण्ड ए प्रासेस फार द प्रिपेयरेशन देयरआफ''	२००२	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२०६८३

२६.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे,	''हर्बल प्रिपेयरेशन फॉर मैनेजमेंट आर्फ कार्डियोवेस्कुलर एण्ड न्यूरोलॉजिक डिसआडर्स''	२००२	ग्रान्टेड यू.एस.: ७,२७३,६२६ बी२; यूरोपियन यूनियन : १५६९६६६ ब्रिटेन : ०८८५७१३८००१ फ्रांस : ०२८०८२४७.७ इटली : ८५०६२ बीई/२००६, आस्ट्रेलिया : डब्ल्यू.ओ. २००४/०५४५९२ ए१
२७.	प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रो. माण्डवी सिंह, डॉ. रवि विक्रम सिंह, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	''ए प्रॉसेस ऑफ प्रीपरेशन ऑफ एंटीजेमा एजेण्ट फ्रॉम ड्राइमेच्योर सीड्स ऑफ माइरिस्टिका फ्रेगरेंस (नटमेग)''	२००३	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २३५९९०
२८.	डॉ. प्रेमचन्द्र पाण्डेय, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय	''इलेक्ट्रोकेमिकल सेंसर फॉर डिटरमाइनिंग डोपामाइन लेवेल्स''	२००३	ग्रान्टेड पेटेंट नं. १९६७६३
२९.	प्रो. ओमकार नाथ श्रीवास्तव, डॉ. बिनोद कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार पाण्डेय, भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''ए नावेल एबी५ टाइप हाइड्रोजन स्टोरेज मैटेरियल एण्ड प्रोसेस ऑफ प्रीपरेशन देयरऑफ	२००४	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २४३९३८
३०.	प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रो. माण्डवी सिंह, डॉ. रवि विक्रम सिंह, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	''ए प्रॉसेस ऑफ प्रीपरेशन ऑफ एंटीकैंडीडायसिस एजेण्ट फ्रॉम ड्राइमेच्योर सीड्स ऑफ माइरिस्टिका फ्रेगरेंस''	२००४	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२७३६४
३१.	प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रो. माण्डवी सिंह, डॉ. रवि विक्रम सिंह, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	''ए प्रॉसेस ऑफ फारमुलेशन ऑफ नीम (एजाडिरक्टा इंडिका) रूट बेस्ड नेचुरल फंगीसिडाल प्रोड्क्ट''	२००४	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २२६२१३
३२.	प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रो. माण्डवी सिंह, डॉ. रवि विक्रम सिंह, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	'प्रीपरेशन ऑफ ए ड्रग फ्रॉम ड्राई मेच्यूर सीड्स ऑफ माइरिस्टिका फ्रेगरेंस फॉर द ट्रीटमेंट एण्ड कंट्रोल ऑफ सोराइसिस इन ह्यूमन बीइंग्स बाई एक्सटर्नल एप्लीकेशन्स''	२००४	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१७८३१
३३.	डॉ. भीमबली प्रसाद, डॉ. धनलक्ष्मी, डॉ. पियूष सिंधू शर्मा, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''ए नॉवेल मॉलेक्यूलरली इम्प्रींटेड पॉलीमर (एम.पी.)-इमोबिलाइज्ड सिलिका जेल सॉर्बेंट प्रीपरेशन एण्ड ए प्रासेस फॉर डिटरमिनेशन ऑफ बारबाईट्यूरिक एसिड यूजिंग द सेम मिप-बेस्ड सॉर्बेंट''	२००५	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २१५३५५
३४.	प्रो. रमेश चन्द्र, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	''ए प्रासेस फॉर प्रोड्यूसिंग रियूजेबुल फॉर द प्रिवेंशन ऑफ अथौरोस्लेरोसिस एण्ड हाइपरलिपिडेमिया''	२००५	ग्रान्टेड पेटेंट नं. २३६३८३

३५.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''हर्बल फॅामुर्लेशन फॅार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ डायबिटीज़ मेलिटस् एण्ड डायबिटिक माइक्रो-वेसकुलर काम्प्लीकेशन्स''	२००५	आवेदन नं. भारत १३९७/डीईएल/२००५ यूएस २००९/०२१४६७८ (ए१) यूरोपियन यूनियन डब्ल्यूओ २००६१२९३२५ (ए१) ई.पी.१९०१६९७ (ए१)
३६.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल एवं अन्य	''ए हर्बल प्रिपेयरेशन इफेक्टिव इन द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ रियूमेट्रायड आर्थराइटिस एण्ड असोसिएटेड कम्पलेन्टस्''	२००७	आवेदन सं. १९३/सीएचई/२००७
३७.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	''ए हर्बल प्रिपेयरेशन इफेक्टिव इन द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ ल्यूकोडर्मा''	२००७	आवेदन सं. १९४/सीएचई/२००७
३८.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	''रोल आफ सालसिया ओबलोन्जा इन द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ इन्डोथेलॉल डिसफंक्शन इन टाईप-दो डाइबिटीज़ मेलिटस्''	२००७	आवेदन सं. ३१४/सी.एच.ई./२००७
३९.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	'आग्रेनिक एक्सट्रैक्टस् आफ हिप्पोफाए रेएनोएड्स फॉर द प्रिवेशन एण्ड मैनेमेंट ऑफ हायपरहोमोबनटेनेमिया, डायसलिपिडेमियां एसोसिएटेड विथ सीएचडी''	२००७	आवेदन सं. ३१५/सी.एच.ई./२००७
४०.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	''ए नोवेल हर्बल फार्मुलेशन एडवोकेटेड एण्ड टू ए प्रासेस देयरआफ फार द प्रेवेंशन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ न्यूरोसायक्लॉजिकल चेंजस एसोसिएटेड विथ मेनोपाउज़ल वुमेन''	२००७	आवेदन सं. ८५१/डी.ई.एल./२००७
४१.	प्रो. यामिनी भूषण त्रिपाठी, डिपार्टमेंट ऑफ मेडिसिनल केमिस्ट्री, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	''ए नॉवल पोली-हर्बल प्रीप्रेशन फार द प्रीवेन्शन ऑफ एथेरोस्क्लेरोसीस एण्ड हाइपरइपिडेमिया	२००७	एनओसी निर्गत भारतीय पेटेंट फिल्ड नं०२३८२५८
४२.	प्रो.डी.दास, बायोकेमिस्ट्री विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	''नॉवेल एण्टी – प्लेटलेट एण्ड एन्टी-थ्रोम्बोटिक प्रोपर्टीज़ ऑफ नैनो सिल्वर विद पोटेन्शियल थेराप्यूटिक एप्पलीकेशन्स''	२००८	एनओसी निर्गत भारतीय पेटेंट फिल्ड नं०२३८२५८ दिनांक २७.०१.२०१०
४३.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	''ए हर्बल फार्मुलेशन फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ फ्रिक्वेंट कॉमन कोल्ड एण्ड कफॅ एण्ड असोसिएटेड प्राब्लम्स''	२००८	आवेदन सं. ६४/के.ओ.एल./२००८
४४.	डॉ.नीलम श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.	''फेनोमेनन ऑफ हयूमिडिटी कन्ट्रोल्ड रिगेनिंग ऑफ मोबाइल आयोनिक चार्ज कैरियर्स इन स्टार्च बेस्ड इलेक्ट्रोलाइट''	२००९	एन.ओ.सी. निर्गत/पेटेंट की अनुमति के लिए आवेदन प्रस्तुत किया गया

४५.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''आयुर्वेदिक फॉमुर्लेशन एडवोकेटेड फॅार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ कोरोनेरी हार्ट डिज़ीज''	२००९	ग्रान्टेड पेटेंट नं. यू.एस. ८३१८२१६ (बी२) ईपी २३९३५०३ (ए१)
४६.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे	''ए नोवल हर्बल फार्मुलेशन एण्ड ए प्रासेस फार प्रिपेयरेशन देयरआफ फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ मेटाबॉलिक सिन्ड्रोम-एक्स''	२००९	आवेदन सं. १९९६/डी.ई.एल./२००९
४७.	डॉ. श्याम सुन्दर, मेडिसिन विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	''(क) डायग्नोसिस ऑफ इण्डियन विसेरल लिशमेनिएशिस (वीएल) बाइ न्यूक्लिक एसिड डिटेक्शन यूजिंग पीसीआर (ख) आइडेन्टीफिकेशन एण्ड करेक्टराइज़ेशन ऑफ एल. डोनोवानी स्पेसीफिक एण्टीजेन''	२०१०	एन.ओ.सी. निर्गत/ प्रतिक्रिया नहीं
४८.	प्रो. एन.के. दूबे, वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''ए केमिकली स्टैण्ड्राइज्ड कम्पोजिशन कंटेनिंग प्लांट इसेंसिएल ऑयल इफिकेशियस ऐज एंटीफंगल, एफ्लाटॉक्सीन सप्रेसर, इनसेक्टीसाइडल एण्ड एन्टी-ऑक्सीडेंट'' मॉडीफाइड टाइटिल – ''ए नॉवल प्लांट इसेंसिएल ऑयल साइनरजेस्टिक कम्पोजिशन एण्ड इट्स प्रीपरेशन।''	२०१०	आवेदन संख्या २३३/डेल/२०११ टी.आई.एफ.ए.सी., डी.एस.टी., नई दिल्ली के माध्यम से प्रस्तुत।
४९.	डॉ. (श्रीमती) आशा लता सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''रिमूवल ऑफ आरसेनिक फ्रॉम वेस्ट वाटर यूज़िंग लेक्टोबेसिलस एसिडोफाइलस''	२०१०	प्रक्रिया अन्तर्गत
५०.	डॉ. ए.सी. पाण्डेय, डॉ. राजीव प्रकाश एवं अन्य	''अल्ट्रा फास्ट फेसिल मेथड फॉर द फॉरमेशन ऑफ कार्बन नैनो शीट्स एण्ड इट्स पॉलीमर कम्पोसाइट्स''	२०१०	पेटेंट आवेदन संख्या २९१५/डेल/२०१०
५१.	राजीव प्रकाश एवं अन्य	''केमिकल सिंथेसिस प्रॉसेस फॉर फॉरमेशन ऑफ पॉलीइंडोल कंडक्टिंग पॉलीमर, डेरिवेटिव्स एण्ड कम्पोजिट्स विथ कंट्रोल्ड मॉरफोलॉजी''	२०१०	पेटेंट आवेदन संख्या २९१४/ डेल/२०१०
५२.	डॉ. राजीव प्रकाश एवं अन्य	''अस्टेरासेई एण्ड पेपवेरेएइ प्लांट्स एक्स्ट्रैक्ट्स ऐज इफिसिएंट कोरोसिऑन इनहिबिट्र्स ''	२०१०	पेंट आवेदन संख्या २९१३/ डेल/२०१०
५३.	प्रो. पी.सी. पाण्डेय, डॉ. राजीव प्रकाश एवं अन्य	''कैल्सियम आयन-सेंसर कम्प्राइज़िग आइनोफोर/ कैरियर-फ्री पॉलीइंडोल-केंफर सल्फोनिक एसिड कम्पोजिट''	२०१०	पेटेंट आवेदन संख्या २३८३/डेल/२०१० (परीक्षण प्रतिक्षारत)
५४.	डॉ. राजीव प्रकाश एवं अन्य	''केमिकल सिंथेसिस प्रोसेस फॉर फॉरमेशन ऑफ पोलीकारबोजोल कन्डक्टिंग पॉलीमर, डेरिवेटिव्स एण्ड कम्पोजिट्स विथ कंट्रोल्ड मारफोलॉजी''	२०१०	पेटेंट आवेदन संख्या १२८९/डेल/२०१०
५५.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''रोल ऑफ एन हर्बल फॅामुर्लेशन इन द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ एज़ रिलेटेड न्यूरोजेनरेटिव डिसआर्डर्स विथ स्पेशल रेफरेन्स टू सिनाइल डिमेन्शिया''	२०१०	यू.एस.२०१२०३४ ३२४ (ए१) डब्ल्यू.ओ.२०१२०२ ०४२३ (ए१) डब्ल्यू.ओ.२०१२०२

५६.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''रोल आफ एन हर्बल फार्मुलेशन इन द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ एज़ रिलेटेड न्यूरोडिजेनरेटिव डिसआर्डर्स विथ स्पेशल रेफरेन्स टू सिनाइल डिमेन्शिया''	२०१०	आवदेन सं. २२७१/सी.एच.ई./२०१० यू.एस.२०१२०३४३२४ (ए१) डब्ल्यू.ओ.२०१२०२०४२३ (ए१)
५७.	प्रो. डी. पाण्डेय, डॉ. राजीव प्रकाश एवं अन्य, स्कूल ऑफ मैटेरियल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी	''ए प्रोसेस फॉर प्रीप्रेशन ऑफ ए होमोजिनियस पॉलीमर ब्लेंड्स पार्टीकुलर्ली ब्लेंड्स ऑफ पॉलीकार्बोनेट (पीसी) एण्ड पॉली (मेथाइलमेथाक्राइलेट) (पीएमएमए)''	२०११	पेटेंट आवेदन संख्या १४१/डेल/२०११
५८.	प्रो. वकील सिंह, डॉ. राजेश बंसल एवं अन्य, दंत चिकित्सा संकाय, चि.वि.सं.	''इफेक्ट ऑफ सरफेश नैनोक्रिस्टलाइज़ेशन ऑन ओसिओइंटेग्रेशन ऑफ सीपी-टाइटेनियम''	२०११	आवेदन संख्या १४८६/डेल/२०११ (परीक्षण प्रतिक्षारत)
५९.	प्रो. गोपालनाथ, माइक्रोबॉयोलॉजी विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	''नॉवेल स्यूडोमोनास एरुजिनोसा बेक्टेरियोफेज़ेश एण्ड देयर यूसेज़ेज इन सेप्टीसिमिया''	२०११	प्रारूप पेटेंट परीक्षक को भेजने के लिए प्रक्रिया में है।
६०.	डॉ.के.आर.सी.रेड्डी, ऐसोसिएट प्रोफेसर, रसशास्त्र विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	''फार्मास्यूटिक्ल स्टडी एण्ड फार्माकोलॉजीकल इवैल्यूयेशन ऑफ ब्राह्मी घृता : ए प्रीक्लीनीकल स्टडी''	२०११	आवेदन पत्र निर्गत
६१.	डॉ.आर.एन.राय, एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय	''सिन्थेसिस ऑफ प्रोमिसिंग नॉवल बाइनरी आरगेनिक व्हाइट लाइट एमिटिंग मेटेरियल''	२०११	एन.ओ.सी. निर्गत
६२.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''हर्बल फॉमुर्लेशन एडवोकेटेड फॅार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ कोरोनेरी हार्ट डिज़ीज''	२०११	प्रदत्त पेटेन्ट संख्या यू.एस. : २०१२००३४३२६ ए१ दिनांक १७ दिसम्बर २०१३ भारत में प्रकाशन आवदेन सं. २२७०/सीएचई/२०१०
६३.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''हर्बल फॉमुर्लेशन फॅार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ टाईप-२ डायबिटीज़ मेलिटस् एण्ड वेसकुलर काम्प्लीकेशन्स एसोसिएटेड विथ डायबिटीज़''	२०११	प्रदत्त पेटेन्ट संख्या यू.एस. : ८,३३७,९११ बी२ दिनांक २५ दिसम्बर २०१२ प्रकाशित आवदेन सं. १७८०/सीएचई/ २०१०
६४.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''ए नोवेल हर्बल फॅामुर्लेशन फॅार द माड्यूलेशन ऑफ इम्यून सिस्टम ऑफ एच.आई.वी. इन्फेक्टेड पेशेन्ट्स एण्ड ए प्रासेस ऑफ प्रिपेयरेशन देयरआफ''	२०११	यू.एस.२०१३०७१४३५ (ए१) डब्ल्यू.ओ.२०१३०४२१३२ (ए१) ई.पी.२७५८०६४(ए१)

६५.	डॉ. (श्रीमती) आशा लता सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, पर्यावरण विज्ञान इन्वायरमेंन्टल साइंस, वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''डीसल्फराइज़ेशन ऑफ कोल विद रेल्सटोनिया एसपी. एण्ड स्यूडोजेन्थेमोनास एसपी''	२०१२	एन.ओ.सी. निर्गत। आवेदन पत्र भारतीय पेटेंट कार्यालय में प्रस्तुत।
६६.	डॉ. स्वर्ण लता, एसोसिएट प्रोफसर, प्राणि विज्ञान विभाग, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.	''हेपोटोप्रोटेक्टीव इफेक्ट ऑफ फाइलेन्ट्स फ्रेटर्नस अगेन्सट साइक्लोफॉसफामिडिया पोटेन्ट एण्टी कैंसर ड्रग''	२०१२	आवेदन पत्र निर्गत
६७.	डॉ. कविता शाह, एसोसिएट प्रोफसर, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.	''प्रॉसेस फॉर आइसोलेशन एण्ड प्यूरिफिकेशन ऑफ पेरौक्सीडेज़ एन्जाइम फ्राम राइस प्लांट्स एण्ड एप्लीकेशन''	२०१२	प्रक्रिया के अंतर्गत
६८.	डॉ. करूणा सिंह, एसिस्टेंट प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.	''एक्वेअस एक्स्ट्रेक्ट ऑफ होल फ्रूट्स ऑफ अजाडिरक्ता इंडिया एल. ऐज एंटी फंगल एजेंट फॉर द् ट्रीटमेंट ऑफ सप्रोलेग्निएसिस विद रिफरेंस टू फ्रेस वाटर फिशेस''	२०१२	आवेदन संख्या १९७२/डेल/२०१३ दिनांक ०३/०७/२०१३
६९.	प्रो. डी. दास, हेड, जैव-रसायन विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.	''डेवलपमेंट ऑफ नैनो गोल्ड- बेस्ड डायग्नोस्टीक मार्कर फॉर कार्डिओवैस्कूलर डिसोआडर्स''	२०१२	एन.ओ.सी. निर्गत
७०.	डॉ. पी. के. सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, भू-विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''रिमूवल ऑफ टॉक्सिक ट्रेस मेटल्स फ्राम कोल विद मिक्सड बेक्टेरियल कोर्न्सोटीया''	२०१२	एन.ओ.सी.निर्गत। भारतीय पेटेंट कार्यालय में आवेदित।
७१.	डॉ. कविता शाह, एसोसिएट प्रोफसर, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.	''ए मोडिफाइड कार्बन पेस्ट इलेक्ट्रोड विथ पैरोक्साइडेसेस''	२०१२	आवेदन संख्या ४७८/डेल/२०१३
७२.	प्रो. एस.के. तिवारी, विभागाध्यक्ष, कायाचिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.	''स्टडी ऑफ एंटी अस्थमेटिक इफेक्ट ऑफ स्टैण्डर्डाइज एक्स्ट्रैक्ट ऑफ आयुर्वेदिक कंपाउण्ड वाया नसल स्प्रे एक्युएशन इन ऐरोसोल फार्म इन रोडेन्ट्स एण्ड इट्स कम्परेटिव क्लिनिकल स्टडी''	२०१२	एन.ओ.सी. निर्गत
७३.	डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव	''ए नोवल पॉलीहर्बल फॉरमुलेशन फॉर रिडक्शन इन ओबेसिटी एण्ड प्रोसेस फॉर इट्स प्रीपरेशन देअर ऑफ ...''	२०१२	आवेदित
७४.	डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव	''ए नोवल पॉलीहर्बल फॉरमुलेशन फॉर ट्रीटमेंट ऑफ मेनोपाउस सिड्रोम एण्ड प्रॉसेस फॉर इट्स प्रीपरेशन देअर ऑफ ...''	२०१२	आवेदित
७५.	डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव	''ए नोवल पॉलीहर्बल फॉरमुलेशन ऐज एंटी फैटिग एण्ड प्रोसेस फॉर इट्स प्रीपरेशन देअर ऑफ ...''	२०१२	आवेदित
७६.	डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव	''ए नोवल पॉलीहर्बल फॉरमुलेशन फॉर ग्रोइंग एडोलसेंट गर्ल एण्ड प्रॉसेस फॉर इट्स प्रीपरेशन देअर ऑफ ...''	२०१२	आवेदित

७६.	प्रो. एस.के. तिवारी, विभागाध्यक्ष, कायचिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.कि.वि.सं.,का.हि.वि.वि.	स्टडी ऑफ एंटी-एस्थमेटिक इफेक्ट ऑफ स्टेंर्डडाइज़ एक्सट्रेक्ट ऑफ आयुर्वेदिक कम्पाउंडस विआ नासल स्प्रे एक्टूऐशन इन एरोसल फारल इन रोडेन्ट्स एण्ड इट्स कम्पेरेटिव क्लीनिकल स्टडी	२०१२	आवेदन पत्र निर्गत/ प्रतिक्रिया नहीं
७७.	डॉ. निलम श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर-भौतिकी, महिला महाविद्यालय और अन्य	इलेक्ट्रालायसीस ऑफ स्ट्रेच वेस्ड इलेक्ट्रालायट	२०१२	आवेदन सं. १६६४/डीईएल/२० १२ दिनांक ३१.०५.२०१२ को जारी
७८.	डॉ.कविता शाह, एसोसिएट प्रोफसर, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.	''टाइटिल इज नाट डिस्क्लोज़ड''	२०१३	आवेदन पत्र निर्गत
७९.	डॉ.के.एन. तिवारी, एसोसिएट प्रोफसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.	''एंटीफंगल एक्टीविटी ऑफ फयलान्ट्स फ्रेटेरन्स अगेन्स्ट क्रिप्टोकाकस स्पेसिंस फॉर पोटेंट एंटिफंगल ड्रग''	२०१३	आवेदन पत्र निर्गत/ प्रतिक्रिया नहीं
८०.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''ए प्लान्ट बेस्ड फार्मुलेशन फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट इरिटेबल बॉवेल सिन्ड्रोम (आई.बी.एस.)''	२०१३ २०१४	आवेदन पत्र प्रस्तुत ३७९७/डी.ई.एल./ २०१३ १४/४६८,२७६ यू.एस.
८१.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''ए प्लान्ट बेस्ड फार्मुलेशन फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ मेटॉबोलिक सिन्ड्रोम बाई इटस् एडिपोनेटिन इनहान्सिंग प्रापर्टी''	२०१३ २०१४	आवेदन पत्र प्रस्तुत १४/४६८,२८५ यू.एस.
८२.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''मेटॉबालिक सिन्ड्रोम एण्ड कार्डियोवेस्कुलर डिज़ीज मार्टेलिटी रिस्क - इटस् प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट बाई ए प्लान्ट बेस्ड ड्रग''	२०१३ २०१४	आवेदन पत्र प्रस्तुत १४/४६८,२८१ यू.एस.
८३.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे, डॉ. अरुना अग्रवाल और अन्य	''ए प्लान्ट बेस्ड फार्मुलेशन फार द प्रिवेन्शन एण्ड मैनेजमेन्ट आफ ओबेसिटी एण्ड असोसिएटेड काम्प्लीकेशन्स''	२०१३ २०१४	आवेदन पत्र प्रस्तुत १४/४६९,२७२ यू.एस.
८४.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	''रेगूलेशन ऑफ ब्रेन बायोजेनिक एमिनस एसोसिएटेड विथ ड्रिप्रेशन बाई ए फारमुलेशन फ्राम बोटेनिकल सोर्स''	२०१४	प्रस्तुत, भारत, यूएस और यूरोपियन यूनियन
८५.	प्रो. गोविन्द प्रसाद दूबे और अन्य	''एसोसिएशन बिटविन नियोपटेरिन कॉनसेप्ट्रशन एण्ड न्यूरोवास्कुलर चेंजेस इन टाइप-२ डायबिटीज़ पेटेंट्स –इफेक्ट ऑफ एन आयुर्वेदिक फार्मूलेशन मेनली कानटेंनिंग बेरबेरिस अरिसताला''	२०१४	एन.ओ.सी. निर्गत पत्र न. १९ दिनांक १३.०५.२०१५/ प्रतिक्रिया नहीं
८६.	डॉ. गीता राय, आणविक एवं मानव जनन विज्ञान, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	''ए पेटर्न रिकागनाजेशन रेसेप्टर पार्टिकुलरली ए टोल लाइक रिसेप्टर विच हेज ए यूनिक एसोसिएशन विथ द प्रेसेंस ऑफ ग्लोमेरूलोनेफ्रिटिज़ इन सिस्टम लूपस''	२०१४	एन.ओ.सी. निर्गत

८७.	डॉ. गीता राय, आणविक एवं मानव जनन विज्ञान, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	"ए पेटर्न रिकागनाजेशन रेसेप्टर पार्टिकुलरली ए टोल लाइक रिसेप्टर विच हेज ए यूनिक एसोसिएशन विथ द प्रेसेंस ऑफ ग्लोमेरूलोनेफ्रिटिज़ इन सिस्टम लूपस"	२०१४	एन.ओ.सी. निर्गत
८८.	डॉ. सूर्य प्रताप सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, जैव रसायन विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	"मेकुना प्रुरिंस शीड एक्सट्रेक्ट देयरऑफ फॉर द ट्रिटमेंट ऑफ न्यूरोलॉजिकल डिसआर्डर"	२०१४	एन.ओ.सी. निर्गत पत्र न. ०३ दिनांक १०.०४.२०१४/ प्रतिक्रिया नहीं
८९.	डॉ. अरविन्द कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.	"एंटी केन्सरस इनहेंसमेंट बाई सीजीए टू कूर"	२०१४	एन.ओ.सी. निर्गत पत्र न. ०५ दिनांक १०.०४.२०१४/ प्रतिक्रिया नहीं
९०.	प्रो. जी.पी. दूबे, डिस्टिगविस्ट प्रोफेसर, स्टडी डायरेक्टर एण्ड कोरिर्डिनेटर, एनएफटीएचएम, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.	"इनवेशन ऑफ ए न्यू टेक्नोलॉजी पी००७ टू मेज़र डेंसीटी इन न्यूरोडेजेनरेटिंव एण्ड न्यूरोसायट्रीक"	२०१४	एन.ओ.सी. निर्गत पत्र न. १६ दिनांक १३.०५.२०१४/ प्रतिक्रिया नहीं
९१.	डॉ. रश्मि सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राणी विज्ञान, महिला महाविद्यालय	"फस्ट रिपोर्ट ऑन इन्ट्रेन्सल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ सरकम एण्ड इट्स एंटी-एस्थामेटिक पोटेंशियल इन माउस मोडल ऑफ अस्थमा: एचपीएलसी स्टडी आन इट्स एबसोरप्सन थ्रो नसल मूकोसा टू द लंग्स"	२०१५	पेटेंट आवेदन पत्र 1, २ और ३ निर्गत एन.ओ.सी. निर्गत दिनांक ०६.११.२०१५ पत्र नं. टी.पी.आर. सेल/३९
९२.	प्रो. एच.बी. सिंह, विभागाध्यक्ष, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.	बोर्ड स्पेक्ट्रम एंटिफंगल इफिकेसी ऑफ सिलवर नेनोफारमूलेशन सिंथेजाइड यूजिंग कलचर सूपरनेशन ऑफ नोवल बेक्टेरियल इसोलेट	२०१५	पेटेंट आवेदन पत्र 1, २ और ३ निर्गत/ प्रतिक्रिया नहीं
९३.	प्रो. अरूणा अग्रवाल, प्रो. और समन्वयक, एसीटीजीएम, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं.	मार्केट ऑफ न्यूरो-इन्फलामेशन एसोसिएटेड विथ न्यूरोडेजेनेरेटिंव डिसआर्डर इन टाइप-२ डिवेटस मेलिट्स पेटेंट्स – रोल ऑफ मोरिंगा ओलेइफेरा एक्स्ट्रेक्ट	२०१५	प्रक्रिया के अंतर्गत
९४.	डॉ. निलम श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर – भौतिकी विभाग, महिला महाविद्यालय और अन्य	लॉ कॉस्ट इलेक्ट्रोलायट मेमब्रेस फॉर माइक्रोबायल फूयेल सेल एप्लीकेशन सिंथेजाइड बाई कम्प्लेक्शींग स्ट्रेच (वीट, कार्न एण्ड राइस) विथ साल्ट	२०१५	प्रक्रिया के अंतर्गत

८. छात्रवृत्तियाँ/अध्येतावृत्ति (छात्रों के लिये) २०१४-१५

क्र.सं.	छात्रवृत्ति का नाम	संख्या
१.	XII प्लान स्कीम नं. ५०१२ से ५०१४ के अन्तर्गत यू.जी.सी. अध्येतावृत्ति	९२१
२.	विज्ञान में यू.जी.सी. (किसी भी देय समय में) नेट - जे.आर.एफ.	१३६४
३.	विज्ञान में सी.एस.आई.आर. नेट-जे.आर.एफ.	१८२
४.	प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान व इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी विभागों में सी.ए.एस./एस.ए.पी. में विलय की जा चुकी कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति और रिसर्च एसोशिएटशिप्स	१२
५.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान में मानविकी स्नातकोत्तरों को आयुर्वेद कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति	१३
६.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान में प्रायोगिक चिकित्सा केन्द्र एवं शल्य शोध प्रयोगशाला में विज्ञान स्नातकोत्तरों के लिए कनिष्ठ व वरिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति	१५
७.	राजीव गाँधी राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में जे.आर.एफ.	२८१
८.	प्रतिभावान छात्रों के लिए विज्ञान में यू.जी.सी. शोध अध्येतावृत्ति	१०३
९.	नेपाल अध्ययन केन्द्र में शोध अध्येतावृत्ति	०४
१०.	जैव प्रौद्योगिकी विभाग, पूना विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त डी.बी.टी.-जे.आर.एफ.	०९
११.	एक मात्र संतान लड़की के लिए इन्दिरा गाँधी स्नातकोत्तर छात्रवृत्ति।	०५
१२.	पुलिस शोध व विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय के अन्तर्गत भारत सरकार छात्रवृत्ति।	०१
१३.	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए एस.सी./एस.टी. को यू.जी.सी.-स्नातकोत्तर (छात्रवृत्ति)	००
१४.	यू.जी.सी.-डॉ. डी.एस. कोठारी पोस्ट डाक्टोरल अध्येतावृत्ति/डॉ. एस. राधा कृष्णनन पी.डी.एफ	६२
१५.	यू.जी.सी.-महिला पोस्ट डाक्टोरल अध्येतावृत्ति	३२
१६.	मौलाना आजाद नेशनल फेलोशिप के अन्तर्गत विज्ञान वर्ग के शोधार्थियों को कनिष्ठ शोधवृत्ति (जे.आर.एफ.)	१७
१७.	यू.जी.सी.-पोस्ट डाक्टोरल अध्येतावृत्ति एस.सी./एस.टी.	१३
१८.	सी.एस.आई.आर. - आर.ए. को अध्येतावृत्ति	०८
१९.	आई.सी.ए.आर. - जे.आर.एफ. (पी.जी.)	६७
२०.	आई.सी.एम.आर. अध्येतावृत्ति	७५
२१.	आई.सी.पी.आर. अध्येतावृत्ति	२६
२२.	नेट रहित के लिए आई.सी.एच.आर. अध्येतावृत्ति	२८
२३.	ए.आई.सी.टी.ई. राष्ट्रीय डाक्टोरल अध्येतावृत्ति	१०
२४.	आई.सी.एस.एस.आर. अध्येतावृत्ति	६२
२५.	राष्ट्रीय बौद्धिक खोज योजना/एन.सी.ई.आर.टी. छात्रवृत्ति।	३०
२६.	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय छात्रवृत्ति शास्त्री तथा आचार्य	९४
२७.	जैव प्रौद्योगिकी विभाग के स्कीम नं. ८२७ के अन्तर्गत एमएससी प्रीवियस एवं फाइनल वर्ष के छात्रों के लिये वृत्तिक	२९
२८.	एमएचए-बीपीआर एण्ड डी/ आई एस आर ओस/ आईएनबीपीआईआरई/ एनएसीओ/ एमएनआरई	८६
२९.	अनु.जाति/अनु.जनजाति/अन्य पिछड़ी जाति/सामान्य श्रेणी/अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति (उ. प्र.)	९२१५
३०.	उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त अन्य राज्यों से अनु.जाति/अनु.जनजाति/अन्य पिछड़ी जाति छात्रवृत्ति	४५०
कुल		**१३२१४**

विद्ययाऽमृतमश्नुते
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY

९. सुविधाएँ

९. सुविधाएं
- ९.१. आवास
- ९.२.१. छात्रावास (बालक)
- ९.२.२. छात्रावास (बालिका)
- ९.२.३. छात्रावास (विवाहित/विदेशी छात्र)
- ९.२.४. विश्वविद्यालय कर्मचारियों के निवास हेतु आवास सुविधाएँ

९.२. अतिथि गृह संकुल
९.३. इन्टरनेट एवं संगणक
९.४. सम्मेलन कक्ष
९.५. पुरातन छात्र प्रकोष्ठ
९.६. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्
९.७. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
९.८. अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र
९.९. समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ
९.१०. विद्युत, जल और दूरभाष केन्द्र
९.११. अनुरक्षण (भवन एवं उपकरण)
९.१२. स्वास्थ्य देखभाल (अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्र)
९.१३. विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद्
९.१४. छात्र अधिष्ठाता द्वारा आयोजित कार्यक्रम
९.१५. अभिरुचि केन्द्र
९.१६. जलपान गृह
९.१७. राष्ट्रीय सेवा योजना
९.१८. नेशनल कैडेट कोर
९.१९. बैंक एवं डाक घर
९.२०. रेल आरक्षण पटल
९.२१. एयर स्ट्रीप एवं हेलीपैड
९.२२. विपणन संकुल
९.२३. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क्लब
९.२४. छात्र कल्याण
- ९.२४.१. संस्थापन सेवा
- ९.२४.२. विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र
- ९.२४.३. छात्र परिषद्
- ९.२४.४. नगर छात्र निकाय
- ९.२४.५. पाठ्येतर क्रियाकलाप

९.२५. हिन्दी प्रकाशन समिति

९. सुविधाएँ

९. सुविधाएँ

९.१. आवास

९.१.१. छात्रों के लिये छात्रावास

क्र.सं.	छात्रावासों के नाम	संस्थान/संकाय	कमरों की संख्या	क्षमता	कुल छात्रावासी	सार्वजनिक कक्ष	भण्डार कक्ष
१.	बाल गंगाधर तिलक छात्रावास	कृषि विज्ञान संस्थान	१९९	३९८	३९८	२	५
२.	डॉ. एस. राधाकृष्णन् छात्रावास	कृषि विज्ञान संस्थान	१२०	२४०	२४०	१	१
३.	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र छात्रावास	कला संकाय	५०	९०	८४	१	४
४.	बिरला 'अ' छात्रावास	कला संकाय	२५६	१४८	१२४	२	३
५.	बिरला 'ब' छात्रावास	कला संकाय	१२४	१३९	१३९	१	६
६.	बिरला 'स' छात्रावास	कला संकाय	१३६	२५९	२५९	३	२
७.	लाल बहादुर शास्त्री छात्रावास	कला संकाय	३१२	४५६	४५६	१	१०
८.	डॉ. आई. एन. गुर्टू छात्रावास	वाणिज्य संकाय	१२०	२३८	२३८	१	-
९.	डॉ. ए. बी. हास्टल (कमच्छा)	शिक्षा संकाय	९८	१७८	१७८	१	११
१०.	डॉ. आर .पी. हास्टल (कमच्छा)	शिक्षा संकाय	५७	६६	७७	२	३
११.	धनवन्तरी छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	२१६	२१०	१९३	१	६
१२.	नागार्जुन छात्रावास (आयु.)	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	९४	१००	१००	२	१
१३.	पुनर्वसु आत्रेय छात्रावास (आयु.)	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	८१	१२६	१२६	१	२
१४.	रूइया छात्रावास (मेडिकल ब्लाक)	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	८९	१९२	१९२	२	१
१५.	रूइया छात्रावास एनेक्सी	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	११२	१४२	१४२	१	४
१६.	सुशुराता छात्रावास (ट्रामा सेंटर)	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	४१०	३८६	१८७	२	४
१७.	डॉ. बी. आर .अम्बेडकर छात्रावास	विधि संकाय	७२	७१	७१	-	२
१८.	डॉ. भगवान दास छात्रावास	विधि संकाय	१२३	२३८	२२८	१	२
१९.	चाणक्य छात्रावास	विधि संकाय	९९	१८६	१८१	१	५
२०.	मेनेजमेंट छात्रावास	प्रबन्धशास्त्र संकाय	६४	१२८	११०	-	-
२१.	रीवा कोठी छात्रावास, अस्सी	मंच कला संकाय	४६	५०	५०	१	१
२२.	सरदार बल्लभ भाई पटेल छात्रावास	शोध छात्रों के लिए	७८	९२	७२	२	३
२३.	अरावली ब्वायज़ छात्रावास	आरजीएससी	२११	४१०	२२०	२	६
२४.	न्यू ब्वायज छात्रावास नं.-२	आरजीएससी	३१	५६	५५	१	१
२५.	शिवालिक ब्वायज़ छात्रावास,	आरजीएससी	१५५	३२५	३२५	२	२
२६.	विन्ध्याचल ब्वायज़ छात्रावास,	आरजीएससी	१५५	३२०	३२०	१	४
२७.	भाभा छात्रावास	विज्ञान संकाय	२०१	३८६	३२९	२	८
२८.	ब्रोचा छात्रावास	विज्ञान संकाय	३२२	६५२	६५२	६	७
२९.	डॉ. सी. पी. आर .अय्यर छात्रावास	विज्ञान संकाय	१३४	२०२	१४३	१	३
३०.	डालमिया छात्रावास	विज्ञान संकाय	२३४	४५४	४५३	१	७
३१.	रामकृष्ण छात्रावास	विज्ञान संकाय	१३०	२५५	२५०	१	२
३२.	आचार्य नरेन्द्र देव छात्रावास	सामाजिक विज्ञान संकाय	१०६	२०२	१९२	१	४
३३.	राजा राममोहन राय छात्रावास	सामाजिक विज्ञान संकाय	२३३	४५६	३५१	३	५
३४.	रूईया छात्रावास (संस्कृत ब्लाक)	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय	६७	२१३	२१३	१	४
३५.	राम किंकर छात्रावास	दृश्य कला संकाय	२०	३८	३८	१	३

सत्र २०१४-१५ के दौरान नवनिर्मित छात्रावास

९.१.२.छात्राओं के लिये छात्रावास

क्र.सं.	छात्रावासों के नाम	संस्थान/संकाय	कमरों की संख्या	क्षमता	कुल छात्रावासी	सार्वजनिक कक्ष	भण्डार कक्ष
१.	एग्रीकल्चर गर्ल्स हास्टल बी.-१	कृषि विज्ञान संस्थान	१३	२२	२२	१	१
२.	रानी लक्ष्मी बाई गर्ल्स हास्टल	कृषि विज्ञान संस्थान	१००	२००	१५४	२	६
३.	कस्तूरबा गर्ल्स हास्टल	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	११४	२१०	२०९	१	६
४.	न्यू पी.जी. डॉक्टर्स छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	९९	१४३	११६	२	२
५.	सुकन्या गर्ल्स हास्टल (आयु)	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	४०	७०	७०	२	१
६.	फ्लोरेंस नाइटेंगल	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	६९	२०९	२०९	-	-
७.	महिला डॉक्टर्स हास्टल	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	६४	८५	७८	१	१
८.	ज्योति कुंज गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	१४१	२८२	२८२	१	९
९.	कीर्ति कुंज गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	६६	२७८	२७८	२	४
१०.	कुन्दन देवी गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	७४	११३	११३	१	२
११.	पाउगी हाउस गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	६	२२	१८	१	१
१२.	प्रज्ञा कुंज गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	८७	१७४	१७४	१	१
१३.	स्वस्ति कुंज गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	५०	२०२	२०२	२	२
१४.	नवीन गर्ल्स हास्टल	महिला महाविद्यालय	१८	११२	८०	१	३
१५.	नीलगिरी गर्ल्स हास्टल	आर.जी.एस.सी.	१२०	१८४	१४९	१	५
१६.	विन्ध्यवासिनी गर्ल्स हास्टल	आर.जी.एस.सी.	११६	२३२	२२३	१	३
१७.	गार्गी गर्ल्स हास्टल	विज्ञान संकाय	५९	११०	१०७	२	२
१८.	डॉ. जे. सी. बोस गर्ल्स हास्टल	विज्ञान संकाय	९३	१९६	१९६	१	१
१९.	मैत्रेयी गर्ल्स हास्टल	विज्ञान संकाय	-	-	-	१	१
२०.	एस. एन. पी. जी. गर्ल्स हास्टल	विज्ञान संकाय	७५	११२	११२	२	२
२१.	गंगा गर्ल्स हास्टल	त्रिवेणी परिसर	८५	१६२	१५२	२	-
२२.	गोदावरी गर्ल्स हास्टल	त्रिवेणी परिसर	७५	१५०	१४०	१	-
२३.	गोमती गर्ल्स हास्टल	त्रिवेणी परिसर	-	-	-	-	-
२४.	कावेरी गर्ल्स हास्टल	त्रिवेणी परिसर	७५	१४८	१२२	१	-
२५.	सरस्वती गर्ल्स हास्टल	त्रिवेणी परिसर	८६	१८७	१६३	१	१
२६.	यमुना गर्ल्स हास्टल	त्रिवेणी परिसर	६९	१३८	१३८	१	९

९.१.३. विवाहित/विदेशी छात्र/छात्राओं के लिये छात्रावास

क्र.सं.	छात्रावासों के नाम	संस्थान/संकाय	कमरों की संख्या	क्षमता	कुल छात्रावासी	सार्वजनिक कक्ष	भण्डार कक्ष
१.	इन्टरनेशनल हाउस काम्प्लेक्स	विदेशी	९०	१३०	१३०	१	९
२.	सिद्धार्थ विहार	विदेशी	१९	३०	३०	१	०
३.	इन्टरनेशनल हाउस एनेक्सी	विदेशी	१८	२३	२३	१	२
४.	इन्टरनेशनल गर्ल्स हास्टल न्यू	विदेशी	३६	६२	६२	१	१

९.१.४. विश्वविद्यालय कर्मचारियों के निवास हेतु आवास सुविधाएँ (शिक्षण एवं गैर-शिक्षण)

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना एक आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में इस उद्देश्य के साथ हुई थी कि यहाँ शिक्षक, छात्र एवं कर्मचारी शैक्षणिक वातावरण में परस्पर सहयोग से व्यक्तित्व का विकास कर सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु छात्र/छात्राओं के लिए छात्रावासों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु क्रमश: ६६२ एवं ७२९ आवासों का निर्माण किया गया है।

जोधपुर कॉलोनी में १० मंजिलों के फ्लैट का निर्माण प्रगति पर है। इस भवन में कुल ४० फ्लैट होंगे, जो विश्वविद्यालय के शिक्षकों के आवास के लिए होगा।

९.२. अतिथि गृह संकुल

अतिथि गृह समूह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत लक्ष्मणदास अतिथि गृह, लक्ष्मण दास अतिथि गृह विस्तार, विश्वविद्यालय अतिथि गृह एवं फैकल्टी अतिथिगृह आता है। लक्ष्मणदास अतिथि गृह में कुल छ: सूट एवं एक कक्ष (प्रत्येक में दो बेड) तथा एक तीन बेड वाला डारमिटरी हाल है। इसी अतिथि गृह में एक सुव्यवस्थित भोजन कक्ष के साथ एक बैठक एवं सम्मेलन कक्ष भी है। लक्ष्मणदास अतिथि गृह एनेक्सी में भूतल एवं चार अतिरिक्त तल बनाए गए हैं जो पूरी तरह वातानूकूलित हैं। भूतल पर चार सूट एवं एक छ: विस्तर वाला डारमिटरी हाल हैं। प्रथम तल पर नौ कक्ष, भोजन कक्ष, सेमिनार हाल एंव रसोई स्थित है। द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ तल, प्रत्येक तल पर १६-१६ कक्ष हैं। इस प्रकार एनेक्सी में कुल कमरों की संख्या ५७ हैं।

विश्वविद्यालय अतिथि गृह में ११ दो बेड वाले कक्ष, ०३ तीन बेड वाले कक्ष, छ: सूट (प्रत्येक में दो बेड) तथा एक १२ बेड वाला बड़ा डारमिटरी हाल तथा छ: बेड वाला छोटा डारमिटरी हाल है, साथ ही साथ एक सुव्यवस्थित भोजनकक्ष भी है। दोनों अतिथि गृह में सभी सूट, कमरे व भोजनकक्ष पूर्णरूप से वातानुकूलित है। फैकल्टी अतिथि गृह में तीन बेड वाला बारह कक्ष, पाँच बेड वाले सात कक्ष के साथ छ: बेडों वाले दो डारमिटरी हाल तथा एक भोजनकक्ष है। इनमें पाँच बेड वाला दो कक्ष एवं तीन बेड वाले छ: कक्ष पूर्णरूप से वातानुकूलित है तथा एक नया भोजनकक्ष भी तैयार है। सभी अतिथि गृह में आधुनिक सुविधायुक्त रसोईघर है जो विश्वविद्यालय के अतिथियों की जरूरत को पूरा करते हुए भोजन उपलब्ध कराता है। अतिथि गृह समूह विश्वविद्यालय, संस्थानों एवं विभागों में समय-समय पर होने वाले विभिन्न प्रकार के आयोजनों, शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यक्रमों में भोज्य/अल्पाहार सम्बन्धित पदार्थो की भी व्यवस्था करता आ रहा है। अतिथि गृह भारत के विभिन्न उच्चपदाधिकारियों एवं अन्य देशों के लोगों को भी श्रेष्ठ सेवा प्रदान करने का अवसर प्राप्त कर चुका है। भारत के महामहिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं विभिन्न राज्यों के राज्यपाल की भी सेवा करता आ रहा है। अतिथि गृह समूह में चार कार्यालयी कर्मचारी, दस रसोई कर्मचारी, सात सुरक्षा कर्मचारी एवं सात सेवा एवं सफाई कर्मचारी तैनात हैं। कुछ कर्मचारियों का वेतन एवं अतिथि गृह का रखरखाव स्पेशल फंड-यू.जी.एच. रिवाल्विंग फंड से किया जाता है। अतिथि गृह समूह ने वर्ष २०१४-१५ में भी विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यक्रमों तथा अति गोपनीय बैठकों में मांग के अनुसार अपनी सेवाएं बेहतर एवं सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत की है।

९.३. इन्टरनेट सुविधा एवं संगणक केन्द्र (संगणक केन्द्र)

संगणक केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विकास में एक उपयोगी भूमिका में सतत् प्रयासरत है। केन्द्र महामना के मूल्यों और आदर्शों पर कायम है तथा उसी दिशा में उसके उन्नयन में प्रयासरत है। केन्द्र ज्ञान तथा लाभार्थी के बीच में एक सुन्दर सेतु की तरह काम कर रहा है।

संगणक केन्द्र इंटरनेट एवं संगणना की सुविधाएँ विश्वविद्यालय के छात्रों और अध्यापकों को प्रदान करा रहा है। विदित हो कि मेल सेवा जी-मेल के सहयोग से शोध विकास के लिए उपलब्ध करायी जा रही है। लगभग ४०,००० लाभार्थी विश्वविद्यालय की इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

केन्द्र १ जीबीपीएस की लाइनें क्रमश: बी.एस.एन.एल., रिलायंस, रेलटेल तथा एनकेएन के द्वारा विश्वविद्यालय परिवार को सेवा प्रदान कर रहा है।

केन्द्र, संगणक विज्ञान विभाग को प्रयोगशाला की सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ प्रशिक्षण प्रदान करने का भी कार्य कर रहा हैं। कार्य कुशलता के विकास के लिए केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न पदों पर आसीन लोगों को प्रशिक्षण प्रदान करा रहा है, जिससे कार्यालयी प्रबंधन में सुविधा हो। केन्द्र, विश्वविद्यालय तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (बी.एच.यू.) की चयन प्रक्रियाओं में सतत् सहायता प्रदान कर रहा है।

केन्द्र ने ग्रीष्मावकाश प्रशिक्षण द्वारा एम.सी.ए. एवं एम.एस.सी. (कम्प्यूटर साइंस) तथा अन्य प्राविधिक शिक्षण संस्थानों से आये छात्रों को प्रशिक्षण दिया। संगणक केन्द्र विश्वविद्यालय की शिक्षा उन्नयन में सतत् योगदान दे रहा है।

संगणक केन्द्र के अधिकारीगण अनुसंधान तथा अन्य संस्थानों के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक परीक्षाओं तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आन्तरिक परीक्षाओं में अहम भूमिका निभा रहे हैं। संगणक केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को विश्वपटल पर कुशलतापूर्वक शिक्षण प्रतिस्पर्धा में बनाये रखने के लिए सतत् सेवा प्रदान कर रहा है।

९.४. सम्मेलन कक्ष

प्रेक्षागृहों/सभागारों का विवरण

विश्वविद्यालय में विभिन्न संकायों/संस्थानों तथा महाविद्यालय के कई प्रेक्षागृह हैं तथा सभाओं के लिये कई सभागार है, जिनका मरम्मत एवं रख-रखाव भी विश्वविद्यालय निर्माण विभाग सम्पादित करता है। जिनका विवरण निम्नलिखित है:-

- स्वतन्त्रता भवन (विश्वविद्यालय का मुख्य प्रेक्षागृह)
- के. एन. उडुप्पा प्रेक्षागृह (चिकित्सा विज्ञान संस्थान)
- कला संकाय का प्रेक्षागृह
- हरिहरनाथ त्रिपाठी सभागार (समाज विज्ञान संकाय)
- पं. ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह (संगीत एवं मंच कला संकाय)
- राधाकृष्णन सभागार (कला संकाय)
- प्रदर्शनी कक्ष (दृश्य कला संकाय)
- सभागार संख्या-१ (केन्द्रीय कार्यालय)
- सभागार संख्या-२ (केन्द्रीय कार्यालय)
- सभागार भवन (प्रौद्योगिकी संस्थान)
- महिला महाविद्यालय प्रेक्षागृह

वित्तीय वर्ष २०१४-१५ के दौरान कई गणमान्य अतिथि और आगन्तुक इस विश्वविद्यालय में आये।

९.५. पुरातन छात्र-प्रकोष्ठ

फरवरी, २००६ में तत्कालीन माननीय कुलपति जी के आदेशानुसार पुरातन-छात्र प्रकोष्ठ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसके अन्तर्गत सभी पुरातन छात्रों की सूची तैयार करना, महामना द्वारा किये गये कार्यों एवं उन पर हुए कार्यों को प्रकाशित करना, क्षेत्रीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरातन-छात्र समागम आयोजित करना तथा पुरातन छात्र-प्रकोष्ठ द्वारा समाचार-पत्र प्रकाशित करना है।

पूर्वछात्र-प्रकोष्ठ जनवरी, ३१ से फरवरी २, २०१५ तक तीन दिन का अन्तर्राष्ट्रीय बी.एच.यू. पुरातन-छात्र समागम एवं सेमिनार ''विज्ञान एवम् धर्म: मालवीय जी की दृष्टि'' का आयोजन करने जा रहा है।

पूर्वछात्र-प्रकोष्ठ इस वर्ष अपने यहाँ से महामना जी के ऊपर प्रकाशन कार्य आरम्भ करने का प्रयत्न कर रहा है जिसका विमोचन अन्तर्राष्ट्रीय पुरातन-छात्र समागम समारोह के समय ही माननीय मुख्य अतिथि के द्वारा कराया जायेगा।

९.६. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्

क्षितिज श्रृंखला के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम

अप्रैल २०१४ से मार्च २०१५ के बीच भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा क्षेत्रीय सांस्कृतिक संस्थाएँ, राज्य सरकार एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में क्षितिज श्रृंखला के अन्तर्गत निम्न लिखित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

क्र.स.	दिनांक	कलाकार	विद्या
१	१८.०५.२०१४	सुश्री सुचरिता गुप्ता, बनारस	गायन
२	२९.०६.२०१४	श्री अभिषेक लहरी, कोलकाता	सरोद वादन
३	२१.०७.२०१४	सुश्री श्रुती बनर्जी एवं ६ सदस्य, कोलकाता द्वारा नृत्य नाटिका की प्रस्तुति। ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, संगीत एंव मंचकला संकाय, बी.एच.यू. में आयोजित।	गीतांजली
४	२७.०७.२०१४	श्री पी जया भाष्कर एवं ५ सदस्य हैदराबाद। ओमकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, संगीत एंव मंचकला संकाय, बी.एच.यू. में आयोजित।	ताल वाद्य कचहरी
५	१५.०८.२०१४	श्री धनंजय हेगड़े, मुम्बई	गायन
६	१४.०९.२०१४	श्री राजीव जनार्दन, दिल्ली	सितार वादन
७	२८.१०.२०१४	सुश्री सनिया पाटनकर, पूना	गायन
८	२९.११.२०१४	सुश्री देबअंजना राय, कोलकाता	मणिपुरी नृत्य
९	२१.१२.२०१४	श्री स्मित तिवारी, नैनीताल	सरोद वादन
१०	२५.०१.२०१५	सुश्री संगीता बंधोपाध्याय	गायन
११.	१४.०२.२०१५	श्री रविशंकर उपाध्याय	पखावज वादन
१२.	२६.०३.२०१५	श्री उद्धोवराव कोठेकर, धारवार। ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, संगीत एंव मंचकला संकाय, बी.एच.यू. में आयोजित।	गायन

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रस्तुति की मेजबानी

अप्रैल २०१४ से मार्च २०१५ के बीच भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा वाराणसी में अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक कलाकारों की प्रस्तुति का आयोजन किया गया, जिसका विवरण निम्न प्रकार है:

क्रम सं.	दिनांक	विवरण	कार्यक्रम
१	२५.०२.२०१५	१३ सदस्यीय ग्रुप इण्डोनेशिया से	रामायण पर आधारित नृत्य और नाटक
२	०४.०३.२०१५	१४ सदस्यीय ग्रुप थाईलैण्ड से	रामायण पर आधारित नृत्य और नाटक

'आईसीसीआर' एवं 'शिल्पायन' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगीत सभा

आगंतुक गैर-निष्पादित

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (विदेश मंत्रालय, भारत सरकार) क्षेत्रीय कार्यालय, बी.एच.यू. वाराणसी द्वारा इस वर्ष २०१४-१५ में दिनांक १-२ अप्रैल, २०१४ को डॉ. आस्कर एरिस सेचज, पूर्व राष्ट्रपति, कोस्टारिका की गैर-निष्पादित जनों को मेजबानी की गयी

छात्रवृत्ति

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (विदेश मंत्रालय, भारत सरकार) क्षेत्रीय कार्यालय, बी.एच.यू. वाराणसी द्वारा वर्ष २०१४-१५ में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद की विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के तहत बी.एच.यू. एवं वाराणसी के अन्य विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रहे विदेशी छात्रों/छात्राओं को रू. ९१,५६,९४८/- की छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। वर्तमान में १८ देशों से, बी.एच.यू. एवं वाराणसी के अन्य विश्वविद्यालयों में ५८ छात्र/छात्राएं अध्ययन कर रहे है।

९.७. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी की स्थापना इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की बोर्ड आफ मैनेजमेन्ट की ९३वीं बैठक के द्वारा ०७.०१.२००८ को की गई। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी में ५० अध्ययन केन्द्र हैं। वर्तमान में इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वारणसी में लगभग ८१००० (जनवरी २०१५ सत्र तक) विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यक्रमों में पंजीकृत हैं। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी का कार्य क्षेत्र उ.प्र. के इलाहाबाद, प्रतापगढ़, अमेठी, सुल्तानपुर, अम्बेडकर नगर, कुशीनगर, आजगमढ़, महराजगंज, बलिया, मऊ, चंदौली, मिर्जापुर, देवरिया, सन्त कबीर नगर, गाजीपुर, सन्त रविदास नगर, गोरखपुर, सोनभद्र, जौनपुर एवं वाराणसी जनपद हैं।

अध्ययन केन्द्रों में वृद्धि

वर्तमान समय में इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश की २० जनपदों में लगभग ५० अध्ययन केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

अध्ययन केन्द्रों की संख्या

अध्ययन केन्द्र	:	२४
कार्यक्रम अध्ययन केन्द्र	:	१७
मान्यता प्राप्त अध्ययन केन्द्र	:	२
विशेष अध्ययन केन्द्र	:	७
योग	**:**	**५०**

मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ

- क्षेत्रीय केन्द्र के समस्त कर्मचारी संयुक्त रूप से विद्यार्थियों की समस्याओं का निदान टेलीफोन, पत्र, एसएमएस एवं ईमेल द्वारा करते हैं।
- क्षेत्रीय केन्द्र पर विद्यार्थियों की सहायता हेतु एकल खिड़की स्थापित की गयी है जिसमें सभी प्रकार से संबंधित प्रपत्र, सूचना, विवरणिका एवं अन्य सूचनाएँ उपलब्ध करायी जाती है।
- इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ एक कम्प्यूटर स्थापित किया गया है जिससे विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान ईमेल के द्वारा किया जाता है एवं जिसकी सूचना इग्नू की वेबसाइट www.ignou.ac.in पर उपलब्ध है।
- विद्यार्थियों की जानकारी हेतु 'मे आई हेल्प यू' काउण्टर पर एक डेडीकेटेड टेलीफोन इन्सटाल किया गया है। इसके द्वारा विद्यार्थियों के समस्याओं का निस्तारण किया जाता है।
- 'मे आई हेल्प यू, काउन्टर पर एक सुझाव/शिकायत बाक्स रखा गया है ताकि विद्यार्थी एवं सामान्य जन के सुझाव एवं उनकी शिकायतों के समर्थन से प्रणाली में सुधार किया जा सके।
- 'मे आई हेल्प यू' काउन्टर पर विद्यार्थियों हेतु एक रजिस्टर उपलब्ध है जिसमें अपनी समस्याओं को दर्ज कर सकें एवं उन्हें अपने

४ मार्च, २०१५ को थाईलैण्ड के १४ सदस्यीय अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक दल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

टेलीफोन नम्बर एवं ईमेल आईडी को भी लिखने के लिये कहा जाता है जिससे कि उनकी समस्याओं का समाधान कर उनके टेलीफोन अथवा ईमेल आईडी पर बताया जा सके।

- क्षेत्रीय केन्द्र के वरिष्ठ अधिकारी भी उनकी समस्याओं के समाधान हेतु क्षेत्रीय केन्द्र पर मौजूद रहते हैं।

परीक्षा

वर्तमान में क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी के अन्तर्गत ६९ अध्ययन केन्द्र है। सभी अध्ययन केन्द्रों पर परीक्षा केन्द्र नहीं है। केवल कुछ चुनिंदा अध्ययन केन्द्रों को ही परीक्षा केन्द्र बनाया गया है।

अन्य

- परिचय सभा एवं प्रेसवार्ता का आयोजन दिनांक २८.०५.२०१५ को इग्नू अध्ययन केन्द्र ४८०१२, माईक्रोटेक, वाराणसी
- जागरूकता शिविर का आयोजन दिनांक २९.०५.२०१५ को इग्नू अध्ययन केन्द्र २७७४, ज्ञानपुर, भदोही
- जागरूकता शिविर का आयोजन दिनांक १७.०७.२०१४ को मुस्लिम एकेडमी, लल्लापुरा, वाराणसी
- प्रवेश शिविर का आयोजन दिनांक ३०.०७.२०१४ को इग्नू के विशेष अध्ययन केन्द्र ४८०१३ डी, केन्द्रीय कारागार, वाराणसी
- १५ अगस्त २०१४ को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, उप निदेशक, क्षेत्रीय सेवा प्रभाग, इग्नू, नई दिल्ली इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए।
- इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी ने दिनांक १५ सितम्बर २०१४ से ३० सितम्बर २०१४ तक हन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया।
- स्वच्छता अभियान के दौरान इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता का शपथ दिलाते हुए डॉ. अश्विनी कुमार, क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)।

९.८. अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र

अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र , काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को विभिन्न एवं उचित पाठ्यक्रमों और उनके लिए अन्य संबंधित गतिविधियों को चुनने के लिए मदद करता है। अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए विश्वविद्यालय में उपलब्ध पाठ्यक्रमों और आवदेन पत्र डाउनलोड करने इत्यादि संबंधी पूरी जानकारी बीएचयू पोर्टल पर उपलब्ध है। अमेरिका, कनाडा, चीन, जापान, रूस, फ्रांस, जर्मनी, इराक, ईरान, आयरलैंड, जोर्डन, मंगोलिया, इथियोपिया, फिलीपींस, रवांडा, यूनाइटेड किंगडम और सिंगापुर सहित ५६ देशों के अंतर्राष्ट्रीय छात्र सत्र २०१४-१५ में पंजीकृत किए गए।

कुल ६२२ (४३२ पुरुष और १९० महिला) नामांकनों में से २४८ विभिन्न पाठ्यक्रमों और संकायों में नवीन छात्र के रूप में पंजीकृत किये गये जिनमें से १६८ पुरूष और महिलाऐं थीं।

उक्त अवधि में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थाओं के बीच २ शैक्षणिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। उपरोक्त के अलावा, विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों के प्रतिनिधियों/ अधिकारियों एवं छात्रों जिनमें सिमाने विश्वविद्यालय,

अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के नवीनीकृत भवन का कुलपति द्वारा शुभउद्घाटन

जापान एवं मैकमास्टर विश्वविद्यालय, अमरीका सम्मिलित थे, ने अपने शैक्षणिक गतिविधियों को मजबूत करने तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ शैक्षणिक सहयोग की संभावनाएं तलाशने के क्रम में विश्वविद्यालय का दौरा किया।

इसके अलावा, सांस्कृतिक संबंध परिषद्, भारत सरकार, अमेरिकन इंस्टीट्यूट आफ इंडियन स्टडीज, यूनाइटेड-स्टेट्स-इंडिया फाउंडेशन इत्यादि संस्थानों द्वारा प्रायोजित (फुलब्राइट स्कॉलरशिप इत्यादि) विदेशी विद्वानों /छात्रों की एक अच्छी संख्या विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों/ संकायों में उनके लघु अवधि अनुसंधान/ अध्ययन कार्यक्रमों हेतु संबद्ध किए गए।

९.९. समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ

पत्रकारवार्ताएं भी शामिल है। इसके अतिरिक्त इसमें अन्य बैठकें भी हुई।

पूछताछ : सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में लगभग १६०० लोगों ने पूछताछ की, जबकि दूरभाष से लगभग ३५०० व्यक्तियों ने विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यकलापों से संबन्धित जानकारी प्राप्त की।

प्रेस विज्ञप्ति :गत वर्ष स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर के संचार माध्यमों के लिए विश्वविद्यालय के कार्यकलापों से सम्बन्धित ३५०० से ज्यादा विज्ञप्तियां लिखित, फैक्स तथा ईमेल द्वारा जारी की गयी।

प्रकाशित समाचार : विभिन्न मुद्रित माध्यमों में विश्वविद्यालय की विकासात्मक गतिविधियों से सम्बन्धित ७००० समाचार विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित किए गए तथा इन्हें इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा भी प्रसारित किया गया।

साक्षात्कार : विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा माननीय कुलपति जी का आठ बार एवं विभिन्न अधिकारियों का व्यक्तिगत तौर पर लगभग २० बार साक्षात्कार लिया गया।

विज्ञापन : विश्वविद्यालय से संबंधित विभिन्न विज्ञापन जो शैक्षणिक, वित्तीय एवं प्रशासनिक विषयों के राष्ट्रीय तथा स्थानीय समाचार पत्रों में इस कार्यालय द्वारा संदर्भ वर्ष में लगभग १६० विज्ञापन प्रथम एडवरटाइजिंग एजेंसी, कानपुर जो वर्तमान में विश्वविद्यालय की विज्ञापन एजेंसी है, को प्रकाशन हेतु जारी किया गया।

विशेष कार्य : डॉ. जी. माधवन नायर, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष, ९७बेवें दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि थे, ने छात्रों को विभिन्न उपाधियाँ प्रदान की। प्रकोष्ठ ने देश के माननीय शिक्षाविदों तथा ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों के आगमन तथा विश्वविद्यालयों के विभिन्न प्रसिद्ध वार्षिक कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय मीडिया सहयोग प्रदान किया जिससे का.हि.वि.वि. की वृहद् छवि को देश में स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई।

बैठकें : सहायक सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, बी.एच.यू. स्तर की कई महत्वपूर्ण बैठकों में शामिल हुए तथा इसमें लिए गए निर्णयों को प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक प्रचार प्रसार किया और विश्वविद्यालय की छवि निर्माण में विशेष योगदान दिया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रेस

बी.एच.यू. प्रेस अपने स्थापना वर्ष १९३६ से ही विश्वविद्यालय के विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, पंजिकाओं, फार्मो एवं सर सुन्दरलाल चिकित्सालय, परीक्षा नियन्ता कार्यालय के अतिआवश्यक मुद्रण कार्यो में अपना योगदान करता आ रहा है। बी.एच.यू. प्रेस के चहारदीवारी का क्षेत्रफल ८०,००० वर्ग फीट तथा भवन का क्षेत्रफल २५,००० वर्ग फीट में फैला है। स्थापना वर्ष में ही ७ लेटर प्रेस की मशीने लगायी गयी थीं। वर्तमान में चार सिंगल कलर आफसेट मशीनों एवं एक डबल कलर ऑफसेट मशीन पर कार्य हो रहा है। बी.एच.यू. प्रेस २ स्थायी, १ पुनर्नियुक्ति व १४ अस्थायी कर्मचारियों के माध्यम से विश्वविद्यालय की सेवा कर रहा है।

वित्तीय वर्ष २०१४-२०१५ में सम्पादित मुख्य प्रिंटिंग कार्य

'युवा आवाज' रचनात्मक जर्नल, छात्र कल्याण केन्द्र	२०० प्रतियाँ	
'प्रगति' पत्रिका अंक-२ राजभाषा प्रकोष्ठ	१२०० प्रतियाँ	पृष्ठ१९६
बी.एच.यू. जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन स्टडीज अंक-२	१०५ प्रतियाँ	पृष्ठ१११६
जर्नल ऑफ साइन्टिफिक रिसर्च अंक-५८	१०४ प्रतियाँ	पृष्ठ१३२
'दृष्टि' शोध पत्रिका अंक १ छात्र कल्याण केन्द्र	२०१ प्रतियाँ	पृष्ठ२०४
'दृष्टि' शोध पत्रिका अंक २ एवं ३, छात्र कल्याण केन्द्र	२०१ प्रतियाँ	पृष्ठ३१६
विश्व पंचांग २०७२	३७००० प्रतियाँ	पृष्ठ ५०
'प्रज्ञा' अंक ६० भाग १ १४१५	२००० प्रतियाँ	पृष्ठ२००
'भारती' जर्नल प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व अंक ३७	२५३ प्रतियाँ	पृष्ठ ६४
मोनोग्राफ प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व	१०० प्रतियाँ	पृष्ठ३१६
'प्रगति' पत्रिका अंक ३,राजभाषा प्रकोष्ठ	१२०० प्रतियाँ	पृष्ठ१७६
'अपूर्वा' जर्नल (कला संकाय)	२५० प्रतियाँ	पृष्ठ२०४
'आन्विक्षिकी' जर्नल (दर्शन शास्त्र अंक ८)	२०३ प्रतियाँ	पृष्ठ२००
'आन्विक्षिकी' जर्नल (दर्शन शास्त्र अंक ९)	३०० प्रतियाँ	पृष्ठ१७६
वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा परीक्षा, आई.आई.टी. (बी.एच.यू.)	१०० प्रतियाँ	पृष्ठ४०
छात्र पासबुक	१५००० प्रतियाँ	
छात्र दैनन्दिनी (से.हि.ग.स्कूल)	१८२० प्रतियाँ	
स्टूडेन्ट फाईल (शिक्षण)	५००० प्रतियाँ	
ग्यान्कोलॉजिकल केस रिकार्ड	५०० प्रतियाँ	पृष्ठ ११२
लेबर केस रिकार्ड, ग्यानकोलॉजी	५०८ प्रतियाँ	पृष्ठ१६०
आवेदन पत्र एवं सूचना पुस्तिका , प्रबंधशास्त्र संकाय	१००० प्रतियाँ	पृष्ठ१२
पेन्शन पेमेन्ट आर्डर बुक (वित्त)	१०२० प्रतियाँ	पृष्ठ४०
वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा परीक्षा (वित्त)	२०० प्रतियाँ	
स्वास्थ्य पुस्तिका, कर्मचारी स्वास्थ्य केन्द्र	५०००० प्रतियाँ	पृष्ठ३६

ओ.पी.डी. प्रेसक्रिप्शन स्लिप आधुनिक चिकित्सा	३७०० प्रतियाँ	पृष्ठ१००
ओ.पी.डी. प्रेसक्रिप्शन स्लिप भारतीय चिकित्सा	४५० प्रतियाँ	पृष्ठ१००
ओ.पी.डी. प्रेसक्रिप्शन स्लिप पेड ओ.पी.डी.	२४२ प्रतियाँ	पृष्ठ१००
ए.आर. -१ सामान्य रसीद	१०००० किताब	
लेटर पैड, यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टॉफ कालेज	१००२ पैड	पृष्ठ ५०
ट्रेनिंग डायरी, टी.पी.ओ., आई.आई. टी.	१२१५ डायरी	पृष्ठ ८०
सीट कार्ड (सी.एच.एस. ब्वायज)	५२०००	
सीट कार्ड, यू.ई.टी.	४५००००	
हिस्टोपैथालॉजी रिपोर्ट रजिस्टर	६०	
एल.टी.सी.आवेदन पत्र	१०००	
कम्पाटिबिलिटी रिपोर्ट ऑफ ब्लड बैंक	२०० किताब	
छात्र उपस्थिति एवं फीस रजिस्टर (से.हि.ग. स्कूल)	२०० प्रतियाँ	पृष्ठ २००
टी.ए. बिल रजिस्टर	१० रजिस्टर	
मेडिको कैन्टीन कूपन	२०० किताब	
एम.आर.आई रिक्विजिशन फार्म (रेडियोलॉजी)	१६२ पैड	पृष्ठ ५०
कलर डाप्लर स्टडी रिपोर्ट (रेडियोलॉजी)	१०० पैड	पृष्ठ ५०
एल.टी.सी., टी.ए. बिल फार्म	१०००	
हॉस्टल एलॉटमेन्ट फार्म	११०००	
२डी इको एन्ड कलर डॉप्लर	१००००	
ओ.पी.डी. स्लिप, छात्र स्वास्थ्य केन्द्र	२५०००	
डिप्लोमा प्रवेश फार्म, कला संकाय	४०२३	
उत्तर पुस्तिका (परीक्षा नियंता कार्यालय व अन्य)	६२४७५०	
गाय दूध कूपन (डेयरी फार्म)	१०००० किताब	पृष्ठ १०
फीड बैक फार्म (आई.आई.टी.)	५००००	
हार्मोन इम्युनोलॉजी लैब फार्म	१८२५०	
माइग्रेशन इत्यादि के लिए आवेदन पत्र	२००००	
प्रोजेक्ट प्रश्नावली (अर्थशास्त्र)	१०२० प्रतियाँ	पृष्ठ ४०
सेशनल क्लास टेस्ट कापी	१०३७१	पृष्ठ ८

बी.एच.यू. प्रेस की आय

स्टेशनरी का विक्रय	रु. ५९७८९६.००
स्टेशनरी का विक्रय (नगद)	रु. ३४३१२९.००
प्रिंन्टिग का बिल	रु. ८९३९५३१.००
योग :	रु. ९८८०५५६.००

९.१०.विद्युत, जल और दूरभाष केन्द्र

मुख्य परिसर

वर्तमान में पुराने सर सुन्दरलाल चिकित्सालय स्थित ३५०० के.वी.ए., नरियाँ उपकेन्द्र स्थित २५०० के.वी.ए., चिकित्सा विज्ञान संस्थान स्थित २५०० के.वी.ए., श्री विश्वनाथ मन्दिर स्थित २५०० के.वी.ए., धनराजगिरी छात्रावास स्थित १५०० के.वी.ए., भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान स्थित ३५०० के.वी.ए. एवं विज्ञान संकाय के अन्तर्गत ४५०० के.वी.ए. के उपकेन्द्रों का निर्माण कराकर संचालित कराया गया।

३३ के.वी. का द्वितीय का निर्माण १३२ के.वी. उपकेन्द्र पर तीसरे का निर्माण ३३ के.वी. पी.एस.एस. पर कराया गया। परिसर अन्तर्गत विभिन्न परिक्षेत्रों फीडर पिलर तथा केबलिंग कार्य कराया गया। महिला महाविद्यालय स्थित ५०० किलो लीटर का शिरोपरि जलाशय का निर्माण कराया गया। गैर शिक्षण क्लब के पास नया ट्यूबवेल का निर्माण कर संचालित कराया गया। २ ६ १००० के क्षमता वाला एक नया उपकेन्द्र सर सुन्दरलाल चिकित्सालय स्थित विश्वविद्यालय निर्माण विभाग के समीप कराया जा रहा है।

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मिर्जापुर

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मिर्जापुर में ४००० किलो लीटर का रॉ वॉटर रिजर्वर का निर्माण कार्य कराया गया। पाईप लाइन कार्य क्लियर वॉटर रिर्जवायार (बरकछा गाँव का जल) एवं वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट के मध्य कराया गया। नये ३३ के.वी. का निर्माण मड़िहान लाइन से स्टैण्ड बाई के तहत कराया गया। २ ६५०० के क्षमता वाले एक नया उपकेन्द्र का निर्माण वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट के पास कराया गया।

दूरभाष केन्द्र

बी. एस. एन. एल. के पुराने एक्सचेन्ज के स्थान पर एक नया टेलीफोन एक्सचेन्ज स्थापित किया है, इसका रख-रखाव बी. एस. एन. एल. द्वारा किया जा रहा है, जो कि पूर्ण रूप से इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से संचालित है। वर्तमान में एक्सचेन्ज में १००० लाइन का टेलीफोन कनेक्शनों का कार्य चल रहा है, जो कि समस्त संस्थानों/ संकायों/ विभागों/ कार्यालयों को टेलीफोन की सुविधा प्रदान करेगा। इसी प्रकार संस्थानों व सर सुन्दर लाल चिकित्सालय में अपने एक्सचेन्ज लगे हुए हैं।

- सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में ४०० लाइनों का एक्सचेन्ज कार्यरत है।
- केन्द्रीय ग्रन्थागार में ७२ लाइनों का एक्सचेन्ज कार्यरत है।

इसी प्रकार विभिन्न विभागों में सुविधानुसार एक्सचेंज लगे हुए हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा टेलीकम्यूनिकेशन सुविधा हेतु दिन प्रतिदिन अत्याधुनिक प्रयासों का विकल्प विचाराधीन है, जिसके परिणाम स्वरूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को नित्य अपने प्रयासों से बेहतर से बेहतर बनाने की दिशा में सन् २००८ में टाटा इन्डिकॉम ने २०७० कनेक्शनों की टेलीफोन सुविधा विश्वविद्यालय के कार्यालयों, विभागों में उपलब्ध करायी गई है।

९.११. अनुरक्षण (भवन एवं उपकरण)

''विश्वविद्यालय निर्माण विभाग'' का गठन विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से ही किया है। यह विश्वविद्यालय स्थित समस्त भवनों की वार्षिक मरम्मत के साथ-साथ, सड़क, मल एवं जल निकासी की लाइनों का अनुरक्षण, बरसाती पानी की निकासी हेतु नालों का निर्माण एवं पुराने नालों की मरम्मत, सफाई इत्यादि के साथ-साथ विभिन्न संस्थानों, संकायों, विश्वविद्यालय की बाहरी चहारदीवारी एवं आंतरिक चहारदीवारी का निर्माण एवं अनुरक्षण का कार्य करता है। साथ ही साथ विश्वविद्यालय के चिरईगाँव, नरायनपुर एवं टिकरी स्थित स्वास्थ्य केन्द्रों के भवनों का अनुरक्षण कार्य सम्पादित करता है। विश्वविद्यालय के राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मीरजापुर के भवनों की मरम्मत तथा नवीन भवनों, सड़क, सीवर, चहारदीवारी इत्यादि का निर्माण कार्य भी सम्पादित करता है।

विभाग मुख्य परिसर एवं राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मीरजापुर में स्वीकृत नवीन भवनों का निर्माण कार्य भी अपने स्तर पर तथा केन्द्र व प्रदेश सरकार के उपक्रमों द्वारा सम्पादित कराता है। विभाग विभिन्न मदों में स्वीकृत अतिरिक्त निर्माण कार्य, भवनों के नवीनीकरण के कार्य के साथ-साथ विशेष मरम्मत का कार्य भी करता है। विभाग आंतरिक साज-सज्जा, योजना निर्माण के साथ-साथ विभिन्न छात्रावासों, विभागों, संकायों, अस्पतालों के लिये फर्नीचर के खरीद, निर्माण एवं मरम्मत का भी कार्य करता है।

विश्वविद्यालय निर्माण विभाग, विश्वविद्यालय में आयोजित सभी मुख्य राष्ट्रीय पर्वों जैसे गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस एवं गाँधी जयन्ती के साथ विश्वविद्यालय के विभिन्न आयोजनों जैसे विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह, सरस्वती पूजन समारोह, कृष्ण जन्माष्टमी समारोह के साथ-साथ विभिन्न संस्थानों, संकायों, महाविद्यालय, विद्यालयों एवं छात्रावासों के वार्षिक समारोहों तथा स्थापना समारोहों में भी व्यापक भूमिका निभाता है। यह विभाग विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह, विभिन्न सेमिनारों एवं संगोष्ठियों में भी आयोजकों के आवश्यकतानुसार कार्य सम्पादित करता है। विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों के नियामक संस्थाओं के निरीक्षण के समय विभाग उनकी मान्यता प्राप्त करने के लिए एवं जारी रखने के लिए अपने संसाधनों द्वारा सहायता प्रदान करता है। यह विभाग विश्वविद्यालय के मुख्य भवनों जैसे- मालवीय भवन, टैगोर भवन, सुन्दरम लाज, भारत कला भवन, स्वतन्त्रता भवन, उडुप्पा प्रेक्षागृह, पं. ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, कला संकाय प्रेक्षागृह, श्री विश्वनाथ मन्दिर का अनुरक्षण एवं वातानुकूलन का कार्य भी सम्पादित करता है।

विभाग द्वारा सभी छात्रावासों, शैक्षिक भवनों व आवासीय भवनों की मरम्मत के साथ-साथ इनकी छतों का जल अवरोधी उपचार, रसोईघरों व शौचालयों का नवीनीकरण व बाहरी दीवारों की रंगाई-पुताई इत्यादि का कार्य भी सम्पादित कराया गया।

विभाग ने सत्र २०१४-१५ में अतिरिक्त स्वीकृत व भवनों के रखरखाव के लिए स्वीकृत नियमित बजट रू.१०.०० करोड़ का भी पूरा सदुपयोग विभिन्न भवनों के रखरखाव में किया।आवश्यकतानुसार कार्य सम्पादित करता है। विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों के नियामक संस्थाओं के निरीक्षण के समय विभाग उनकी मान्यता प्राप्त करने के लिए एवं जारी रखने के लिए अपने संसाधनों द्वारा सहायता प्रदान करता है। यह विभाग विश्वविद्यालय के मुख्य भवनों जैसे- मालवीय भवन, टैगोर भवन, सुन्दरम लाज, भारत कला भवन, स्वतन्त्रता भवन, उडुप्पा प्रेक्षागृह, पं० ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, कला संकाय प्रेक्षागृह, श्री विश्वनाथ मन्दिर का अनुरक्षण एवं वातानुकूलन का कार्य भी सम्पादित करता है।

विभाग द्वारा सभी छात्रावासों, शैक्षिक भवनों व आवासीय भवनों की मरम्मत के साथ-साथ छतों पर जल अवरोधी उपचार, रसोईघरों व शौचालयों का नवीनीकरण व बाहरी दीवारों की रंगाई-पुताई इत्यादि का कार्य भी व्यापक तौर पर कराया गया।

विभाग ने सत्र २०१४-१५ में अतिरिक्त स्वीकृत के साथ-साथ भवनों के रख-रखाव के लिए स्वीकृत नियमित बजट रु. ६.२९ करोड़ का भी पूरा सदुपयोग विभिन्न भवनों के रख-रखाव में किया।

कमच्छा कम्पलेक्स, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कमच्छा कम्पलेक्स में शिक्षा संकाय, सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल, सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल, रणवीर संस्कृत पाठशाला, कोल्हुआ प्राईमरी स्कूल, बैजनत्था कालोनी, डॉ. ए. बी. छात्रावास व डा. आर. पी. छात्रावास इत्यादि सम्मिलित है।

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मीरजापुर

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा लगभग २७०० एकड़ भूमि में फैला हुआ है। यहाँ पर शैक्षणिक कार्य का शुभारम्भ सन् २००६ ई. में हुआ। अधिक संख्या में भवन, छात्रावास, व्याख्यान कक्ष, महिला छात्रावास, प्रशासनिक, भवन, केन्द्रीय पुस्तकालय भवन, किसान

वित्तीय वर्ष २०१४-१५ में विभिन्न मदों में स्वीकृत धनराशि का विवरण निम्नलिखित है:-

१.	विशेष मद	रू. ३,४५,९४,३६५.००
२.	विश्वविद्यालय परिसर में भवनों की मरम्मत हेतु आवर्ती मद	रू. ९०,००,०००.००
३.	विकास मद (XIIth योजना (२०१४-१५)	रू. २३,३५,९९,६६९.००

उपर्युक्त धनराशि का वित्तीय वर्ष २०१४-१५ में पूर्ण उपयोग किया गया। निम्नांकित विशेष मेगा प्रोजेक्ट हैं, जिनके निर्माण की प्रक्रिया क्रम संख्या ५ को छोड़कर प्रशासनिक/तकनीकी कारणों से शुरू नहीं हो सकी है।

क्र. सं.	**प्रोजेक्ट का नाम**	**अनुमानित लागत**	**स्थिति**
१.	८० फलैटों का निर्माण कार्य।	५१.९२६१४ करोड़	केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को आवंटित कर दिया गया है और शीघ्र ही कार्य शुरू होने वाला है।
२.	सेन्ट्रल डिस्कवरी केन्द्र का निर्माण कार्य।	६७.७९७४२ करोड़	
३.	५०० कमरों वाले अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास का निर्माण कार्य।	५८.२०५ करोड़	
४.	पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय (प्रथम चरण)।	१२६.८१२९४ करोड़	
५.	मालवीय मूल्य एवं अनुशीलन केन्द्र के भवन का निर्माण कार्य ।	१४.९५२५८ करोड़	केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को आवंटित कर दिया गया है और कार्य शुरू हो गया है।

नीचे दिये गये कुछ बड़े (कैरी-ओवर) कार्य वित्तीय वर्ष २०१४-१५ में कराये जा रहे हैं। जिनके नाम एवं अनुमानित लागत का विवरण निम्न सारिणी में दिये गये हैं।

क्र.सं.	भवन/कार्य का नाम	प्लिंथ एरिया	आंकलन कीमत	कार्य स्थिति
	कला संकाय			
१.	बिरला हास्टल के पीछे एवं धन्वन्तरि हास्टल के बगल में २२५ कमरे के तीन मंजिले छात्रावास का निर्माण कार्य।	८००० वर्ग मीटर	१२००.०० लाख	कार्य प्रगति पर है।
	सामाजिक विज्ञान संकाय			
२.	आचार्य नरेन्द्र देव हास्टल के पीछे दो मंजिले ५८ कमरों का निर्माण कार्य	२५८४ वर्ग मीटर	३६०.०० लाख	कार्य प्रगति पर है।
३.	राजा राममोहन राय हास्टल के पीछे ५८ कमरों का निर्माण कार्य	२५८४ वर्ग मीटर	३६०.०० लाख	कार्य प्रगति पर है।
	पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान			
४.	पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान के लिए भवन का निर्माण कार्य।		१८८३.६५ लाख	कार्य प्रगति पर है।
	शिक्षा संकाय			
५.	६१९ व्यक्तियों के बैठने की क्षमता वाले आडिटोरियम, शिक्षा संकाय, कमच्छा, का निर्माण कार्य।	२०८८ वर्ग मीटर	७७३.२८ लाख	कार्य प्रगति पर है।
६.	साइकिल स्टैण्ड, दो भवनों के बीच में पैसेज बनाने का निर्माण कार्य, शिक्षा संकाय, कमच्छा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।		४८.०० लाख	कार्य प्रगति पर है।

आवास, टिसू कल्चर भवन, अतिथि गृह, बीज भण्डार, जलपान गृह इत्यादि पूर्णरूप से तैयार हैं। कुछ पहले से पूर्ण हो चुके हैं और वर्तमान में इस्तेमाल भी हो रहा है। प्रशिक्षण क्रिया-कलाप २००५-०६ से चल रहा है। राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा में बहुत ही तीव्र गति से विकास कार्य चल रहा है। वर्तमान में भवन निर्माण, रोड, जल-आपूर्ति और विद्युतीकरण का कार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय- डाइवर्सिटी पार्क तथा बड़ा बीज भण्डार के निर्माण का कार्य युद्ध स्तर पर किया गया। वित्तीय वर्ष २०१४-१५ में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा में पूर्ण हुये कार्यो का विवरण निम्नलिखित है।

क्र.सं.	भवन/कार्य का नाम	आंकलन कीमत	स्थिति
१.	महिला छात्रावास के प्रथम और द्वितीय तल का निर्माण कार्य।	४७५.७६ लाख	कार्य पूर्ण
२.	पुरूष छात्रावास के प्रथम, द्वितीय और तृतीय तल का निर्माण कार्य।	६३९.५६ लाख	कार्य पूर्ण

विश्वविद्यालय यंत्र समुच्चय विज्ञान केन्द्र

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्र समुच्चय केन्द्र (यूसिक) लेवल-II वर्ष १९८० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में केन्द्रीय सुविधा के रूप में स्थापित किया गया। यूसिक लेवल-II एक गैर-शैक्षणिक विभाग के अन्तर्गत आता है। भवन का निर्माण सन् १९८२-८३ तथा तकनीकि कर्मचारियों की नियुक्ति वर्ष १९८५ के अन्त में पूरी हुयी।

क्रिया-कलाप

विश्वविद्यालय यंत्र समुच्चय विज्ञान केन्द्र सम्बन्धित सेवाएं त्वरित प्रदान करता है

- इलेक्ट्रानिक्स / इलेक्ट्रिकल / मैकेनिकल / एनलिटिकल यंत्रों/ उपकरणों/मशीनों का मरम्मत एवं रख-रखाव करना।
- विश्वविद्यालय एवं भा. प्रौ. सं. में शोधरत छात्रों का प्रोजेक्ट सम्बन्धित कार्य करना।
- यू.वी. विसिवुल स्पेक्ट्रोफोटोमीटर तथा डबल डिस्टिल्ड वाटर इत्यादि।

- संकायों/संस्थानों तथा इकाईयों इत्यादि की सूची जहाँ यूसिक कर्मचारी सेवाएं देते हैं -
- विज्ञान संकाय
- बी.एच.यू. प्रेस
- भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान
- चिकित्सा विज्ञान संस्थान
- कृषि विज्ञान संस्थान
- विद्युत एवं जलआपूर्ति विभाग, इत्यादि

१ अप्रैल २०१४ से ३१ मार्च २०१५ के अंतर्गत यूसिक द्वारा किये गये मरम्मत कार्यो का विवरण तालिका तथा बार ग्राफ के माध्यम से दिया जा रहा है -

क्रम. सं.	**विभाग/संकाय का नाम**	**कार्यों की संख्या**
१.	विज्ञान संकाय	२७
२.	बी.एच.यू. प्रेस	१५
३.	भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान	९
४.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	५
५.	कृषि विज्ञान संस्थान	४
६.	विद्युत एवं जलआपूर्ति विभाग	४
७.	अन्य	३
कुल		**६७**

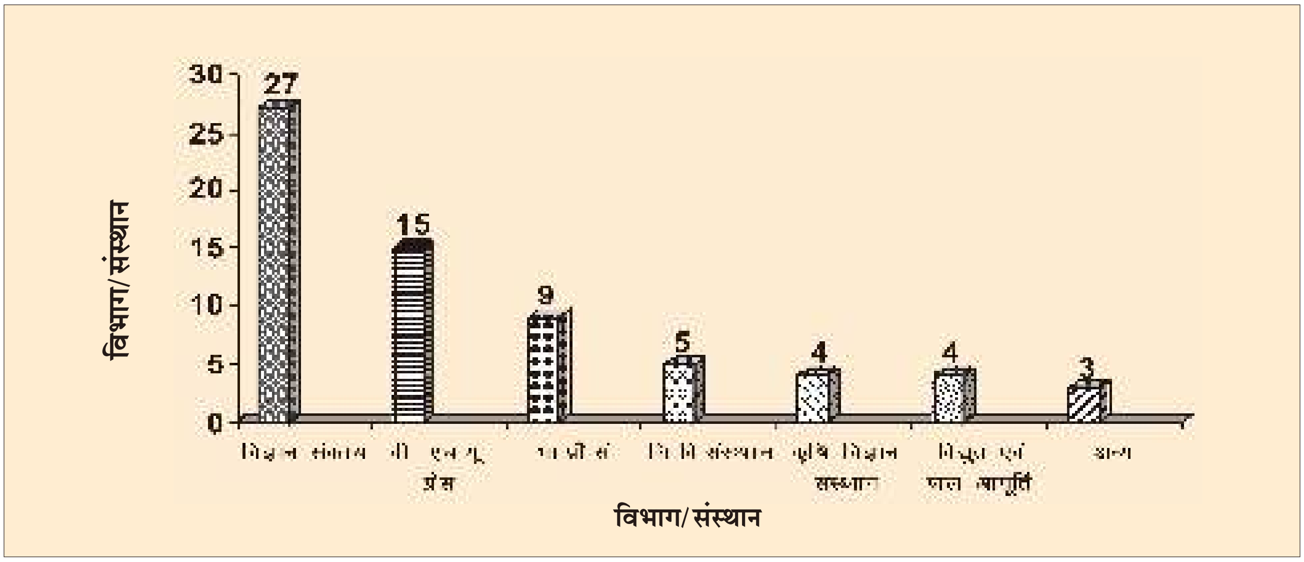

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा संकुल का नवनिर्मित भवन

९.१२. स्वास्थ्य देखभाल

सर सुन्दर लाल चिकित्सालय

सर सुन्दर लाल चिकित्सालय एवं ट्रामा सेंटर ९६ शैय्या के साथ सन् १९२६ में यह अस्पताल स्थापित हुआ। वर्तमान में यह १२०० शैय्या युक्त आधुनिक अस्पताल है। दिल्ली और कोलकाता के बीच एस.जी.पी.जी.आई. लखनऊ के अलावा यह पूर्वांचल का एक मात्र रेफरल हास्पिटल है। यह अस्पताल पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश और पड़ोसी देश नेपाल सहित लगभग २० करोड़ जनसंख्या की स्वास्थ्य सुरक्षा को आच्छादित करता है।

शीघ्र ही एक नया प्रखण्ड ट्रामा सेन्टर जो निर्माणाधीन है, सेवा के लिए उपलब्ध होगा। यह प्रधानमन्त्री स्वास्थ्य सुरक्षा सेवा योजना के अधीन सहायतित है। इसमें ४४ क्लीनिक एवं ओ.पी.डी. है। ५१ अन्तरंग वार्ड है जिसमें ३२४ शैय्या है। इसमें २२ ऑपरेशन थिएटर एवं अलग से प्रसूति गृह है। अस्पताल शिक्षण, प्रशिक्षण एवं क्लीनिकल संसाधनों से सुसज्जित है। यहां पर अनुभवी एवं योग्यता प्राप्त चिकित्सक हैं। अस्पताल आधुनिक मशीनों से सुसज्जित है, जहां पर उपचार की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ पर विशेष विशेषज्ञता वाली सेवाएं चिकित्सकीय एवं सर्जिकल भी उपलब्ध है। यहां पर २४ घण्टे चलने वाली आपात चिकित्सा सेवाएं, जांच सुविधा, दवा दुकान, ६४ स्लाइस सीटी स्कैन सुविधा भी उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त बहुत सी स्पेशल क्लीनिक विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। वेल बेबी क्लीनिक, टीका करण केन्द्र, जेरियाट्रिक क्लीनिक, डी-एडिक्शन क्लीनिक, वोण्ड क्लीनिक, डाट्स क्लीनिक, एडोलसेन्ट एण्ड मेनोपाजल क्लीनिक, हेमाटोलॉजी क्लीनिक, ग्लूकोमा क्लीनिक, क्षार सूत्र क्लीनिक, ए.आर.टी. क्लीनिक, पोस्ट पार्टम क्लीनिक, डायबेटिक काम्प्लीकेशन क्लीनिक, पेडियाट्रिक हेमाटोलॉजी, आंकोलॉजी यूनिट एवं थैलेसेमिया डे केयर यूनिट, हेमैटोलॉजी क्लीनिक एण्ड डायटेटिक क्लीनिक।

अस्पताल में असंख्य चिकित्सकीय एवं नैदानकीय सुसज्जित सुविधाएं उपलब्ध है-जैसे कैंसर रोगियों के लिए रेडियोथिरेपी सेवा, किडनी फेल रोगियों के लिए हेमोडायलिसिस, यूरिनरी स्टोन के लिए लीथोट्रिप्सी, आधुनिक सघन चिकित्सा यूनिट में १६ शय्या, कार्डिएक पेस मेकर लैब, नियोनेटोलाजी, नियोनेटल सर्जरी, आई.सी.यू., दन्त चिकित्सा सेवाएं, फिजियोथिरेपी एण्ड रिहैविलिटेशन यूनिट, पेडियाट्रिक आई.सी.यू., इण्डोस्कोपी एवं पेडियाट्रिक यूरोलाजी यूनिट, पेडियाट्रिक आई.सी.यू., लेजर ओटी इन सर्जिकल आंकोलाजी, न्यूरोनेकीगेसन सिस्टम, न्यूरो इण्डोस्कोपी, ए.आर.टी. सेन्टर, पोस्ट पार्टम प्रोग्राम, आयुर्वेदिक पंचकर्म थिरेपी, लीयथिरेपी एवं क्षार सूत्र थिरेपी, आई बैंक एवं कोरनियत ट्रान्सप्लाण्ट यूनिट।

अस्पताल सांख्यिकी

सर सुन्दरलाल चिकित्सालय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विद्यार्थियों के पठन-पाठन एवं प्रशिक्षण हेतु सम्बद्ध चिकित्सालय है, जो अपने स्थापना वर्ष १९२६ से ही निरन्तर इस क्षेत्र में रोगियों की सेवा करता हुआ उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर गतिमान है। इस वर्ष के दौरान चिकित्सालय द्वारा निम्नवत् चिकित्सा सेवाएँ प्रदान की गयीं -

कुल बहिरंग रोगी	-	१२२९७२६
भर्ती रोगी	-	५४७०७
कुल सर्जिकल ऑपरेशन	-	२९९४८
कुल जन्म	-	२७४८
कुल मृत्यु	-	३४५१

आपात चिकित्सा बहिरंग रोगी	-	३७७०१
कुल जाँच	-	१४१६६४५
कुल शैया	-	१२५०

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल

विश्वविद्यालय के पास सभी छात्रावासीयों और नगर में निवास करने वाले छात्रों के लिए एक सशक्त और बहुआयामी स्वास्थ्य निगरानी सेवा प्रणाली उपलब्ध है। छात्रों के स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के लिए एक स्वतंत्र ईकाई ''यूनिवर्सिटी स्टूडेण्ट हेल्थकेयर कॉम्प्लेक्स'' विश्वविद्यालय परिसर के लगभग मध्य भाग में छात्रावास मार्ग पर स्थित है। इसके माध्यम से छात्रों को स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है। वस्तुत: यहाँ विभिन्न चिकित्सा विषयों में स्नातकोत्तर योग्यता वाले विशेषज्ञ चिकित्सकों के माध्यम से छात्रों के स्वास्थ्य की देखरेख की जाती है। यह व्यवस्था मुख्य चिकित्साधिकारी की प्रशासकीय नियंत्रण एवं निगरानी में प्रशिक्षित एवं समर्पित पैरामेडिकल और नर्सिग स्टाफ के सहयोग से पूरी की जाती है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य देखभाल संकुल में समस्त छात्रों को अवकाश के दिनों के अलावा सर सुन्दरलाल चिकित्सालय के स्वास्थ्य सेवायें संचालित की जाती है। सभी छात्रों को बहुआयामी स्वास्थ्य सुविधायें दानों ही बहिरंग और अन्तरंग रोगियों के रूप में प्रदान की जाती है, जिसमें शल्य विधियाँ, उच्चस्तरीय जाँच जैसे एम आर आई, सी.टी. स्केन, इसीजी इत्यादि सम्मिलित हैं। सन्दर्भित चिकित्सा नि:शुल्क की जाती है। प्रत्येक छात्र से उनकी चिकित्सीय निगरानी के निमित्त स्टूडेन्ट हेल्थ वेलफेयर स्कीम के अन्तर्गत वार्षिक शुल्क के रूप में मात्र रु.३५०/- लिया जाता है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल की मुख्य इकाई एवं कार्यालय विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में स्थित है। इसके साथ ही दक्षिणी परिसर के छात्रों के लिए रा.गा.द. परिसर, बरकछा में तथा शिक्षा संकाय के छात्रों के लिए कमच्छा (नगर में) एक डिस्पेन्सरी स्थित है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल द्वारा उपलब्ध की जाने वाली सेवाएं/सुविधायें

- नैदानिकी सेवाएं
- सामान्य बहिरंग रोगी परामर्श
- दैनिक आपातकालीन सुविधा रात्रि ८ बजे तक
- शल्य सेवाएं (लघु)
- आर्थोपेडिक सेवाएं अस्थिरोग स्वास्थ्य सेवाएं जैसे प्लास्टरिंग इत्यादि
- श्वास रोग क्लीनिक
- विशिष्ट चिकित्सा परामर्श
- फार्मेसी एवं दवा वितरण सेवाएं
- ड्रेसिंग सेवाएं
- हेपेटाइटि्स-बी, टिटेनस, टाइफाइड, रैबीज इत्यादि टिकाकरण सेवाएं
- इंजेक्शन और टीकाकरण सेवाएं
- दंत नैदानिक
- होमियोपैथी क्लीनिक
- योग क्लिनिक
- फिज़ियोथेरेपी सेंटर
- डिज़िटल एक्सरे की सुविधा
- स्वास्थ्य परामर्श सेवाएं

२. चिकित्सीय जाँच केन्द्र - रुधिर से संबंधित परीक्षण, लिवर से संबंधित परीक्षण, जैव रसायन, मूत्र (दिनचर्या+माइक्रास्कोपी) और) जैव रसायन, मूत्र (दिनचर्या + माइक्रोस्कोपी) और पैराचेक सहित रैपिड टेस्ट, टायफाइड आदि।

चिकित्सीय जाँच केन्द्र आधुनिक उच्च तकनीकी से युक्त स्वत: विश्लेषक और अन्य सम्बन्धित उपकरणों के साथ-साथ कर्मचारीगण जो कि छात्रों को नियमित परीक्षण करने में दक्ष है, सुसज्जित है।

३.अन्य सुविधाएं

- मेडिकल फिट्नेश प्रमाण पत्र
- आपातकालीन दवाओं की स्थानीय खरीद
- इंडोर आधार पर चिकित्सा दवा प्रतिपूर्ति
- सभी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं और खेल/प्रतिस्पर्धा में दवा पूर्ति

नवीन संयोजन - अंतरंग सुविधा (४० बेड)

माननीय कुलपति जी द्वारा इसके नींव की पत्थर रखी गयी है, जिसका निर्माण एक वर्ष के अन्दर पूर्ण हो जाने की सम्भावाना है।

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य निगरानी संकुल उपलब्ध सेवायें

कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा में विश्वविद्यालय के नियमित व सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं उनके आश्रितों, रेसिडेन्ट डाक्टर व केन्द्रीय विद्यालय (बी.एच.यू.) के कर्मचारियों को चिकित्सकीय सुविधा प्रदान की जाती है। स्वास्थ्य केन्द्र में ८ चिकित्सकों के माध्यम से औसतन प्रतिदिन ५००-६०० रोगियों को चिकित्सा परामर्श उपलब्ध कराया जाता है। स्वास्थ्य केन्द्र में मार्डन मेडिसिन के साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधियों का भी वितरण किया जाता है।

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा संकुल में निम्न सेवाएँ उपलब्ध हैं -

- सामान्य बहिरंग रोगी परामर्श
- शल्य परामर्श
- आर्थोपेडिक सेवायें
- विशेष चिकित्सा परामर्श
- स्त्री रोग परामर्श
- फार्मेसी सेवायें
- ड्रेसिंग सुविधा
- वयस्क टीकाकरण
- इंजेक्शन व टीकाकरण की सुविधा
- चिकित्सा प्रमाण पत्र
- चिकित्सकीय दावाप्रतिपूर्ति

- महिलाओं में होने वाले गर्भाशय कैंसर की जाँच सुविधा
- ई.सी.जी. जाँच की सुविधा, नेबुलाईजेशन व ऑक्सीजन की सुविधा
- क्लिनिकल आब्जर्वेशन रूम में इलाज की सुविधा
- एक्सरे सुविधा
- बेसिक फिजियोथेरेपी सुविधा

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा संकुल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (प्रभारी) की योजनाओं में आने वाले समय में स्वास्थ्य केन्द्र में रक्त एवं मूत्र इत्यादि परीक्षण सुविधा, फिजियोथेरेपी, डेन्टल क्लिनिक तथा आयुर्वेदिक बहिरंग रोगी परामर्श की सुविधा करने की योजना है।

क्रियाकलाप :

- ओपीडी : ११०६५४ पेसेंट प्रेजेंट (कर्मचारी, पेंशनर, सुपर पेंशनर, जे.आर. रेजिडेंट, एस.आर. रेजिडेंट, के.वी. बी.एच.यू. एवं उनके/उनकी परिवार
- ईसीजी : ८९४
- एक्स-रे : ४९५ (१ जून, २०१५ से जुलाई, २०१५)
- ड्रेसिंग : ३८१४
- दवाप्रतिपूर्ति : १२१६९ प्राप्त बिल रु.६८९०५८०१.००
- दवा : १,३५,००,०००.०० स्थित है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल में उपलब्ध सेवाये/ सुविधायें

१. नैदानिकी सेवायें

(क) सामान्य बहिरंग रोगी परामर्श
(ख) दैनिक आपातकालीन सुविधा रात्रि ८ बजे तक
(ग) शल्य सेवायें
(घ) आर्थोपेडिक सेवायें
(ड़) श्वसन क्लीनिक
(च) विशिष्ट चिकित्सा परामर्श
(छ) शल्य कक्ष चिकित्सा सेवायें
(ज) फार्मेसी सेवायें
(झ) ड्रेसिंग सेवायें
(ञ) इंजेक्शन और टीकाकरण सेवायें
(ट) दंत नैदानिक
(ठ) सेन्टर ऑफ क्लीनिकल इन्वेस्टिगेशन
(ड) होमियोपैथी क्लीनिक
(ढ) योग क्लिनिक
(ण) फिज़ियोथेरेपी सेंटर
(च) डिज़िटल एक्सरे की सुविधा

२. चिकित्सीय जाँच केन्द्र अच्छे आधुनिक उच्च तकनीकी स्वत: विश्लेषक और अन्य उपकरण के साथ सुसज्जित हैं, इनमें से अधिकतर का परीक्षण हो चुका है।

नया संयोजन- अंतरंग सुविधा (४० बेड)

माननीय कुलपति जी द्वारा इसके नींव की पत्थर रखी गयी है, जिसकी एक वर्ष के अन्दर पूरा होने की उम्मीद है।

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य निगरानी संकुल उपलब्ध सेवायें

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा संकुल माननीय कुलपति महोदय के द्वारा दिनांक २२.०८.२०१३ को उद्घाटित नवनिर्मित भवन में स्थानांतरित हो चुका है। स्वास्थ्य सेवा संकुल में विश्वविद्यालय के नियमित व सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं उनके आश्रितों, रेसिडेन्ट डाक्टर व केन्द्रीय विद्यालय (का.हि.वि.वि.) के कर्मचारियों को चिकित्सकीय सुविधा प्रदान की जाती है। स्वास्थ्य केन्द्र में ८ चिकित्सकों के माध्यम से औसतन प्रतिदिन ५००-६०० रोगियों को चिकित्सा परामर्श उपलब्ध कराया जाता है। स्वास्थ्य केन्द्र में मॉडर्न मेडिसिन के साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधियों का भी वितरण किया जाता है और जल्द ही होमियोपैथिक औषधि का वितरण भी शुरू होने जा रहा है।

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा संकुल में निम्न सेवाएँ उपलब्ध हैं

(क) सामान्य बहिरंग रोगी परामर्श
(ख) शल्य परामर्श
(ग) विशेष चिकित्सा परामर्श
(घ) फार्मेसी सेवायें
(ङ) ड्रेसिंग सुविधा
(च) इंजेक्शन व टीकाकरण की सुविधा
(छ) चिकित्सा प्रमाण पत्र
(ज) चिकित्सकीय दावा प्रतिपूर्ति
(झ) महिलाओं में होने वाले गर्भाशय कैंसर की जाँच सुविधा
(ञ) ई.सी.जी.जाँच की सुविधा,नेबुलाईज़ेशन व ऑक्सीजन की सुविधा
(ट) क्लिनिकल आब्ज़र्वेशन रूम में इलाज की सुविधा
(ठ) होमियोपैथिक परामर्श

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य सेवा संकुल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (प्रभारी) की योजनाओं में आने वाले समय में स्वास्थ्य केन्द्र में एक्स-रे सुविधा, रक्त एवं मूत्र इत्यादि परीक्षण सुविधा, फिज़ियोथेरेपी, डेन्टल क्लिनिक तथा आयुर्वेदिक बहिरंग रोगी परामर्श की सुविधा प्रारम्भ करने की योजना है।

९.१३. विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद्

कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद का गठन वर्ष १९७५ में किया गया, जिसका मूल नाम विश्वविद्यालय एथलेटिक संघ था। क्रीड़ा परिषद् का उद्देश्य सहायक निदेशकों/उपनिदेशकों एवं उच्च स्तरीय प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करना था। जिससे कि विश्वविद्यालय की टीम अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में एवं राज्य स्तरीय/राष्ट्रीय स्तर में प्रतिभागिता कर उच्च स्तर को प्राप्त करे। परिषद् आवश्यकतानुसार अतिरिक्त प्रशिक्षकों, जो कि राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान से प्रशिक्षित हों, की सेवाएँ अल्पअवधि के लिए लेता रहता है।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद से सम्बद्ध खेल

अखिल भारतीय एवं अन्तर जोनल विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भागीदारी सत्र २०१३-१४

१. तीरन्दाजी (पु. एवं मं.)
२. ट्रेक एण्ड फील्ड (पु. एवं मं.)
३. बैडमिन्टन (पु. एवं मं.)
४. बास्केटबॉल (पु. एवं मं.)
५. मुक्केबाजी (पु. एवं मं.)
६. शतरंज (पु. एवं मं.)
७. क्रिकेट (पु. एवं मं.)
८. फुटबॉल (पु. एवं मं.)
९. जिम्नास्टिक्स एवं मलखम्भ (पु. एवं मं.)
१०. हैण्डबॉल (पु. एवं मं.)
११. हॉकी (पु. एवं मं.)
१२. कबड्डी (पु. एवं मं.)
१३. खो-खो (पु. एवं मं.)
१४. भारोत्तोलन एवं शरीर सौष्ठव (पु. एवं मं.)
१५. स्क्वैश रैकेट (पु.)
१६. तैराकी (पु. एवं मं.)
१७. टेबल टेनिस (पु. एवं मं.)
१८. टेनिस (पु. एवं मं.)
१९. वॉलीबॉल (पु. एवं मं.)
२०. कुश्ती (पु. एवं मं.)
२१. क्रास कन्ट्री दौड़ (पु. एवं मं.)
२२. नेट बाल (पु. एवं मं.)
२३. ताइक्वान्डो (पु. एवं मं.)

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद के खेल प्रांगण

१.एम्फिथियेटर मैदानः	**संख्या**
१. ४०० मी० ८ लेन मिट्टी का ट्रेक एण्ड फील्ड	१
२. सीमेंटेड एवं फ्लडलाइटेड बास्केट बॉल कोर्ट	१
३. मैटिंग पिच क्रिकेट मैदान	१
४. सीमेंटेड नेट प्रैक्टिस क्रिकेट पिच	१
५. ओपेन फुटबॉल स्टेडियम	१
६. हैन्ड बॉल मैदान	१
७. नेट बॉल मैदान	१
८. ग्रास हाकी मैदान	१
९. कबड्डी मैदान (पु.एवं म.)	१ + १
१०. खो-खो मैदान	१
११. बजरी एवं सिंथेटिक टेनिस कोर्ट फ्लडलाइटेड	२१
१२. फ्लडलाइटेड वॉलीबॉल कोर्ट	२

२. महाराजा डा० विभूतिनारायण सिंह अन्तरंग क्रीड़ांगन

१. सीमेन्टेड बैडमिंटन कोर्ट	४
२. मुक्केबाजी रिंग	२
३. टेबुल टेनिस	१ + १
४. पोर्टेबल (हाइड्रोलिक) बास्केटबॉल पोस्ट	१

३. छत्रपति शिवाजी व्यायामशाला

१. कुश्ती एव जूडो मैट	१ + १
२. रोमन रिंग	१ + १
३. हारज़ेन्टल बाल	१ + १
४. अनइवेन बार	१ + १
५. पैरलर बार	१ + ४
६. भारोत्तोलन वूडेन प्लेट फार्म	१
७. भारोत्तोलन स्टेंड स्टेशन ज़िम	२ + ८

४. जम्मू कश्मीर बैडमिन्टन हाल

१. वूडेन बैडमिन्टन कोर्ट (पु. एवं मं.) १

जम्मू कश्मीर बैडमिंटन हाल में विश्वविद्यालय कर्मचारी (शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक सभी छात्रों हेतु हर सम्भव सुविधा प्रदान की जाती है)

५.तरण-ताल

१. ६ लेन ५० मी. तरण-ताल	१
२. डाइविंग बोर्ड एवं वॉटर पोलो	१
३. निर्माणाधीन प्रशिक्षुक तरण-ताल	१

इसमे विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों उनके वाड तथा विद्यार्थियों हेतु समय समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाये जाते है।

६. स्क्वैश कोर्ट **६**

- वूडेन स्क्वैश कोर्ट ४

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद द्वारा सत्र २०१४-१५ में आयोजित की गयी प्रतियोगिताएं अन्तर संकाय प्रतियोगिता

क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता का दिन
१.	अन्तर संकाय फुटबॉल (पु.) प्रतियोगिता	१४-०९-२०१४ से २८-०९-२०१४
२.	अन्तर संकाय वालीबाल (पु. एवं म.)	१५१७-०९-२०१४
३.	अन्तर संकाय बास्केटबाल (पु.)	२४-२९.०९.२०१४
४.	अन्तर संकाय क्रिकेट (पु.)	२०.०९.२०१४-०५.१०.२०१४
५.	अन्तर संकाय बैडमिंटन (पु. एवं म.)	११-१३-११-२०१४
६.	अन्तर संकाय हैंडबाल (पु.)	अक्टूबर २०१४
७.	७ एसाइड हाकी टूर्नामेन्ट	२६-२९.०८.२०१४

इस विश्वविद्यालय की टीम ने ०२ अक्टुबर से ०६ अक्टूबर २०१४ तक आयोजित उत्तर प्रदेश सीनियर बास्केटबाल (म.), अलीगढ़में प्रतिभाग किया।

पूर्वी क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालयी प्रतियोगिता २०१४-१५ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाली टीमों का विवरण:

क्रंम संख्या	खेल का नाम	पुरूष/ महिला	अवधि	प्रतियोगिता का स्थान
१	हाकी	पुरूष	१६-२१.१०.२०१४	काशी विद्यापीठ, वाराणसी
२	फुटबाल	पुरूष	२०-२५.१०.२०१४	मिजोरम विश्वविद्यालय
३.	बास्केटबाल	महिला	०३-०७.११.२०१४	काशी विद्यापीठ, वाराणसी
४	कबड्डी	महिला	२७.०९.२०१४-०१.१०.२०१४	के.आई.आई.टी. भुवनेश्वर
५	बैडमिंटन	पुरूष	२०-२४.१२.२०१४	
६	बास्केटबाल	पुरूष	१५-१९.१२.२०१४	
७	वालीबाल	पुरूष	२७.०९.२०१४-०१.१०.२०१४	के.आई.आई.टी. भुवनेश्वर
८	कबड्डी	पुरूष	०१-०५.	बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर
९	क्रिकेट	पुरूष	०९-३०.११.२०१४	वी.बी.एस. पुर्वान्चल वि.वि. जौनपुर
१०	टेनिस	पुरूष	२७.०९.२०१४-०१.१०.२०१४	के.आई.आई.टी. भुवनेश्वर
११	फुटबाल	महिला	१८.०२.२०१५-२७.०२.२०१५	आर.जी.एस.सी. बरकछा

वर्तमान सत्र में अखिल भारतीय एवं अन्तर जोनल विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भागीदारी

क्रं. सं.	खेल का नाम	पुरूष/महिला	अवधि	प्रतियोगिता का स्थान
१	स्वीमिंग	पु. एवं म.	२६-३०.१०.२०१४	जैन विश्वविद्यालय, बंगलोर
२	क्रास कन्ट्री	पु. एवं म.	१८-१०-२०१४	एम.जी. विश्वविद्यालय, कोटायम
३.	हाकी	पु.	२४-०२-२०१५ & ०२-०३-२०१५	वर्कतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
४	बास्केटबाल	म.	११-१५ ११. २०१४	वनस्थली विद्यापीठ
५	एथलेटिक्स	पु. एवं म.	१६-२० ०१. २०१५	यू.एच.एस., मैंगलोर
६	कुश्ती	पु.	२२-२५ ०१. २०१५	कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र
७	ताइक्वान्डो	पु. एवं म.	१३-१७ ०३. २०१५	अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई
८	बाक्सिंग	पु. एवं म.	१९.०२. २०१५-०४.०३.२०१५	लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय
९	शुटिंग	पु. एवं म.	०२-०६ ०१. २०१५	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
१०	बैंडमिंटन	पु.	३१.१२.२०१४-०३.०१.२०१५	बखितयार विश्वविद्यालय, कोयंम्बटूर
११	हैंडबाल	पु. एवं म.	१६-१९. ११. २०१४	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
१२	फुटबाल	म.	२८.०२.२०१५-०३.०३.२०१५	आर.जी.एस.सी. बरकछा
१३	योगा	पु. एवं म.	१७-२० ०३.२०१५	कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद द्वारा आयोजित अन्य गतिविधियाँ

अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ नई दिल्ली द्वारा निम्नलिखित प्रतिष्ठापरक खेल प्रतियोगिताएं इस विश्वविद्यालय को आवंटित की गई:

१. पूर्वीक्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय बास्केटबाल (महिला)
२. पूर्वीक्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय बैडमिंटन (पुरूष एवं महिला)
३. पूर्वीक्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय फुटवाल (महिला)
४. अन्तर्क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय फुटवाल (महिला)

उपर्युक्त के अतिरिक्त विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद को हॉकी का एस्ट्रो टर्फ एवं सौ बिस्तरों का खेलकूद छात्रावास भी स्वीकृत किया गया हो।

९.१४ छात्र अधिष्ठाता कार्यालय द्वारा आयोजित समारोह

शैक्षणिक सत्र 2014-15 का शुभारम्भ (30.06.2014) : विश्वविद्यालय की परम्परा के अनुरूप दिनांक 30 जून 2014 को प्रातः 9.00 बजे परिसर स्थित श्री विश्वनाथ मंदिर में नये शैक्षणिक सत्र के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने रुद्राभिषेक एवं पूजन किया। इस समारोह में विश्वविद्यालय परिवार के अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी व विद्यार्थीगण उपस्थित रहे तथा नये शैक्षणिक सत्र की सफलता हेतु भगवान विश्वनाथ से प्रार्थना की गयी।

स्वतंत्रता दिवस समारोह (15.08.2014) : भारत के 66वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एम्पीथियेटर मैदान में एन.सी.सी. के कैडेटों द्वारा भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय कुलपति महोदय ने प्रातः 9 बजे राष्ट्रध्वज फहराया व राष्ट्रगान के साथ तिरंगे को सलामी दी। एन.सी.सी. के ग्रुप कमांडर ने माननीय कुलपति जी का स्वागत किया एवं कुलपति जी ने एन.सी.सी. कैडेटों की परेड का निरीक्षण किया। तत्पश्चात समारोह में उपस्थित दर्शकों को कुलपति महोदय ने संबोधित किया। एन.सी.सी. के आर्मी, नेवी, व एयरविंग के कैडेटों ने विविध प्रदर्शन किये। राष्ट्रगान व वन्देमातरम् की प्रस्तुति संगीत व मंचकला संकाय द्वारा की गयी। उक्त अवसर पर राष्ट्रभक्ति गीत व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह (17.08.2014) : दिनांक 17 अगस्त 2014 को मालवीय भवन में सायं 5 बजे से श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य शिवजी उपाध्याय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। विधिवत पूजन के उपरान्त कुलपति महोदय ने सभी को प्रसाद वितरित किया। हर वर्ष की भाँति छात्रावासों में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर झांकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व जिससे प्रबन्ध शास्त्र छात्रावास को प्रथम पुरस्कार, रानी लक्ष्मी बाई छात्रावास को द्वितीय पुरस्कार तथा त्रिवेणी संकुल को तृतीय पुरस्कार मिला। प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप से महिला महाविद्यालय व रुईया (संस्कृत ब्लाक) छात्रावास को प्रदान किया गया। राजीव गांधी दक्षिणी परिसर स्थित छात्रावासों की प्रतियोगिता में ओवरआल चैम्पियन अरावली ब्वायज छात्रावास एवं प्रोत्साहन पुरस्कार विन्ध्यवासिनी महिला छात्रावास को प्रदान किया गया। इसी क्रम में विद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में सेंट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल प्रथम, सेंट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल द्वितीय व श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

शिक्षक दिवस समारोह (05.09.2014) : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर 5 सितंबर 2014 को विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस समारोह मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. सुशान्त दत्तागुप्ता, कुलपति, विश्वभारती, शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) ने विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त शिक्षकों को अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह तथा सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। प्रो. के.एन. उडुप्पा प्रेक्षागृह में समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति महोदय ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।

निबन्ध प्रतियोगिता (25.09.2014) : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के उच्च शिक्षा विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं भाषा संभाग द्वारा देश के सभी 39 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में 'शिक्षा का दर्शन शास्त्र' विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता के आयोजन का प्रस्ताव दिया गया। इसके तहत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 25 सितम्बर 2014 को स्वतंत्रता भवन सभागार में किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों यथा आयुर्वेद, विधि, कृषि विज्ञान, कला, विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में श्री संजय दत्त शुक्ला, विधि संकाय को प्रथम पुरस्कार के रूप में रु. 2500/-, श्री पंकज यादव, कला संकाय को द्वितीय पुरस्कार रू.1500/- एवं श्री बंशीधर, कृषि विज्ञान संकाय को तृतीय पुरस्कार रु0 1000/- नकद प्रदान किया गया।

गांधी जयन्ती (02.10.2014) : 2 अक्टूबर 2014 को गांधी जयन्ती के अवसर पर विश्वविद्यालय का मुख्य आयोजन पूर्वाह्न 10.30 बजे से मालवीय भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक श्री प्रकाश एन. शाह ने अपने विचार व्यक्त किये। समारोह में सर्वधर्म प्रार्थना के साथ ही राष्ट्रपिता का प्रिय भजन 'वैष्णव जन ....' की प्रस्तुति की गयी। गांधी जयन्ती के अवसर पर कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय के 74 प्रज्ञाचक्षु विद्यार्थियों को शिक्षण सहायता के रूप में रु.5000/- (पाँच हजार), 19 अतिविकलांग विद्यार्थियों को तिपहिया साईकिल क्रय करने हेतु रू.4000/- (चार हजार) तथा 12 मूकबधिर विद्यार्थियों को रु. 3000/- (तीन हजार) प्रत्येक को नगद प्रदान किया।

राष्ट्रीय एकता दिवस (31.10.2014) : सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर ''राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सुरक्षा में सरदार पटेल का योगदान'' विषय पर एक विचार गोष्ठी एवं एकता हेतु दौड़ (ए रन फार यूनिटी) का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की पुण्य तिथि (10.11.2014) : राष्ट्रीय हिन्दी पंचांग के अनुसार मार्गशीर्ष, कृष्णपक्ष, चतुर्थी, दिनांक 10 नवम्बर 2014 को मालवीय भवन सभागार में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की पुण्य तिथि आयोजित की गयी। इस अवसर पर संस्थानों के निदेशक, संकायों के प्रमुख, प्राचार्या, महिला महाविद्यालय, छात्र अधिष्ठाता, मुख्य आरक्षाधिकारी सहित अध्यापकों व विद्यार्थियों द्वारा महामना की प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजली अर्पित की साथ ही शांति एवं गीता का पाठ किया गया तथा दो मिनट का मौन रखा गया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद जन्म दिवस

(11.11.2014) : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के उच्चत्तर शिक्षा विभाग के निर्देश पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा कला संकाय के डॉ. एस. राधाकृष्णन सभागार में दिनांक 11 नवम्बर 2014 को 'मौलाना अबुल कलाम आजादः जीवन एवं कार्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के सदस्य, अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय छात्र दिवस (17.11.2014) : दिनांक 17 नवम्बर 2014 को अन्तर्राष्ट्रीय छात्र दिवस के अवसर पर 'शिक्षित भारत, सक्षम भारत-क्वालिटी एजुकेशन फार आल' विषय पर संकाय स्तरों पर स्टूडेन्ट पार्लियामेंट का आयोजन किया गया। प्रत्येक संकाय के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को फाईनल राउण्ड के लिये विधि संकाय के सभागार में स्टूडेन्ट पार्लियामेंट का आयोजन किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम स्थान पाने वाले छात्र श्री सुभ्यान चटर्जी, विधि संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का नाम संसद की कार्यवाही देखने हेतु प्रेषित किया गया।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जयंती (19.12.2014-25.12.2014) : विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जयंती पखवाड़ा दिनांक 19 से 25 दिसंबर 2014 तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 07.12.2014 को देवादिपूजन के साथ सप्ताहव्यापी श्रीमद्भागवतपारायण एवं श्रीमद्भागवत् प्रवचन का शुभारम्भ एवं 14.12.2014 को हवन पूर्णाहुति एवं प्रसाद वितरण माननीय कुलपतिजी द्वारा किया गया। मालवीय जयंती पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ - तत्काल चित्र कला, फैन्सी ड्रेस, लोकगीत व समूहगान, तत्काल स्लोगन, शास्त्रार्थ, संगीतमय कण्ठस्थ गीतापाठ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान भजन, भक्ति संगीत व वेदशाखास्वाध्याय का भी आयोजन किया गया। 25 दिसंबर 2014 को उपर्युक्त प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण एवं मालवीय दीपावली का उद्घाटन माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी जी द्वारा किया गया। मालवीय जयंती के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में भी आयोजित की गईं।

सुशासन दिवस (25.12.2014) : पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस को सुशासन दिवस के रूप में दिनांक 25 दिसम्बर 2014 को मनाया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार इस अवसर पर ''सुशासन **को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी एवं नवीन खोज का उपयोग**'' विषय पर एक सेमिनार एवं भाषण शैली प्रतियोगिता का आयोजन जन्तु विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय के सभागार में किया गया। उक्त दोनों शैलियों के विजेताओं (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) को अलग-अलग क्रमशः 15000/-, 10000/- एवं 5000/- रुपये का नकद पुरस्कार विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी जी द्वारा दिनांक 27 अप्रैल 2015 को के.एन. उडुपा सभागार में आयोजित समारोह में दिया गया। उक्त प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल के सदस्यों एवं भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी कुलपति महोदय द्वारा प्रदान किया गया।

स्थापना दिवस समारोह (24.01.2015) : परम्परा के अनुसार बसंत पंचमी के अवसर पर विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 24 जनवरी 2015 को स्थापना स्थल पर किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम स्थापना स्थल पर हवन-पूजन करने के उपरान्त माननीय कुलपति महोदय द्वारा सरस्वती पूजन किया गया। विश्वविद्यालय परिवार के अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी तथा विद्यार्थी भी पूजन समारोह में उपस्थित रहे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त संकायों, संस्थानों एवं अन्य विभागों द्वारा अलग-अलग मनमोहक झाँकियों का प्रदर्शन विश्वविद्यालय परिसर में किया गया।

विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न छात्रावासों में भी माँ सरस्वती की पूजा का आयोजन किया गया। कुलपति, कुलसचिव, छात्र अधिष्ठाता तथा मुख्य आरक्षाधिकारी महोदय भी छात्रावासों में आयोजित पूजन में उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस समारोह (26.01.2015) : दिनांक 26 जनवरी 2015 को एम्फीथियेटर मैदान में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। प्रातः 8.45 बजे एन.सी.सी. के ग्रुप कमांडर ने समारोह के मुख्य अतिथि माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी जी का स्वागत किया। तदुपरान्त राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा राष्ट्रगान के उपरान्त कुलपति जी ने परेड का निरीक्षण किया।

श्री पार्थ जेठवानी, एम.बी.बी.एस., चिकित्सा विज्ञान संस्थान को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक ज्ञान, उत्तम साधारण बोध

सर्वोत्तम आचरण के लिये पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा स्वर्ण पदक 2013-14 तथा प्रमाण-पत्र द्वारा अलंकृत किया गया।

श्री धीरज कुमार पाण्डेय, आचार्य द्वितीय वर्ष, वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय को संस्कृत में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर महामना संस्कृत पुरस्कार 2014-15 तथा प्रमाण-पत्र द्वारा अलंकृत किया गया।

श्री ऋषि पल्लव राय, पी.जी. डिप्लोमा (फ्रेंच), कला संकाय को सर्वोत्तम एथलीट के रूप मे मेज़र एस.एल. दर स्वर्ण पदक 2014-15 तथा प्रमाण-पत्र द्वारा अलंकृत किया गया।

89 यू.पी. बटालियन एन.सी.सी, का.हि.वि.वि. के UPSD/13/271232 कैडेट सौरभ कुमार श्रीवास्तव को सर्वोत्तम एन.सी.सी कैडेट के रूप मे मेज़र एस.एल. दर रजत पदक 2014-15 तथा प्रमाण-पत्र द्वारा अलंकृत किया गया।

समारोह में निम्नलिखित गैर शिक्षण कर्मचारियों को उनके सराहनीय सेवाओं के लिये ''सर्वोत्तम कर्मचारी पुरस्कार'' प्रदान किया गया :

- श्री बीरेन्द्र कुमार सिंह, स्वास्थ्य निरीक्षक, चिकित्सा विज्ञान संस्थान।
- श्री हंसनाथ यादव, वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, आयुर्वेद संकाय।
- श्री शिवधनी, अनुसेवक, कृषि विज्ञान संस्थान।
- श्री सहतू राम, प्रयोगशाला परिचारक, आयुर्वेद संकाय।

छात्रों के बहुमुखी व्यक्तित्व विकास एवं कल्याण के कार्यक्रम

पूर्वी क्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालयीय युवा महोत्सव (05.01.2015- 09.01.2015) : पूर्वी क्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालयीय युवा महोत्सव 2014-15 भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड में दिनांक 05 से 09 जनवरी 2015 तक आयोजित किया गया जिसमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 40 सदस्यीय दल ने भाग लिया।

अन्तार्विश्वविद्यालयीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव (12.02.2015 - 16.02.2015): अन्तर्विश्वविद्यालयीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2014-15 भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा युवा

सत्र २०१४-१५ में छात्र अधिष्ठाता द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

मामले एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में दिनांक 12 से 16 फरवरी 2015 तक आयोजित किया गया जिसमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 24 सदस्यीय दल ने भाग लिया।

अन्तर संकाय युवा महोत्सव ''स्पंदन-2015'' (27.02.2015 - 03.03.2015): दिनांक 27 फरवरी से 03 मार्च 2015 तक अंतर संकाय युवा महोत्सव ''स्पंदन-2015'' का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सभी 16 संकाय, महिला महाविद्यालय, राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर व संबद्ध महाविद्यालयों के कुल 22 टीमों के लगभग 2000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु इस अयोजन में संगीत, नृत्य, नाट्य, दृश्य कला व साहित्यिक स्पर्धाओं की कुल 31 प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया। दिनांक 28 फरवरी 2015 को औपचारिक उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि ख्यातिलब्ध सिने अभिनेता श्री अनिल कपूर ने अपनी प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया। माननीय कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

दिनांक ०३ मार्च २०१५ को सायं एम्फीथियेटर प्रांगण में आयोजित स्पंदन-२०१५ समापन समारोह की मुख्य अतिथि प्रसिद्ध भरतनाट्यम् नृत्यांगना पद्मश्री गीता चन्द्रन ने अपने संस्मरण सुनायें तत्पश्चात् पुरस्कार वितरित किये।

छात्र-अधिष्ठाता कार्यालय द्वारा सह आयोजित कार्यक्रम

लाला लाजपत राय पाठशाला में नि:शुल्क गर्म वस्त्रों का वितरण

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी व उनके तत्कालीन सहयोगियों द्वारा विश्वविद्यालय में समाज के पिछड़े व दलित वर्ग के उत्थान हेतु सुन्दर बगिया में संचालित लाला लाजपत राय पाठशाला में विश्वविद्यालय व आसपास रहने वाले गरीब परिवारों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। सभी विद्यार्थियों को पाठशाला में नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। गत २३ जनवरी २०१५ को माननीय कुलपति महोदय द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों को नि:शुल्क स्वेटर वितरित किये गये।

छात्र कल्याण योजना के अधीन विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाएँ

- छात्र कल्याण योजना के अन्तर्गत दिनांक २ अक्टूबर २०१४ को मालवीय भवन में आयोजित गाँधी जयंती के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत ७४ प्रज्ञाचक्षु विद्यार्थियों को पठन सामग्री क्रय किये जाने हेतु रु.५०००/- प्रति विद्यार्थी प्रदान किये।
- इस वर्ष गाँधी जयंती के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने 19 अतिविकलांग विद्यार्थियों को तिपहिया साईकिल क्रय किये जाने हेतु रु.4000/- प्रति विद्यार्थी प्रदान किये।
- गाँधी जयंती के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय द्वारा 12 मूकबधिर विद्यार्थियों को भी रु. 3000/- प्रति विद्यार्थी नगद प्रदान किया गया।
- छात्रावासों में रहने वाले समस्त प्रज्ञाचक्षु विद्यार्थियों को उनके संबंधित मेसों में 2 अक्टूबर 2014 से 30 अप्रैल 2015 तक निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया गया। विकलांग विद्यार्थियों को भी उनके संबंधित मेसों में रियायती भोजन प्रदान किया गया। निर्धन व मेधावी विद्यार्थियों को 'छात्र कल्याण योजना' के अधीन विश्वविद्यालय स्थित श्री अन्नपूर्णा भोजनालय में निःशुल्क मध्याह्न एवं रात्रि भोजन प्रदान किया गया। इस योजना के अन्तर्गत मुख्य परिसर व राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर के लगभग 400 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।
- विभाग स्तर पर विद्यार्थियों के लिये आयोजित किये जाने वाले सेमिनार, कार्यशाला व व्याख्यान हेतु विभिन्न संबंधित विभागों को रु.5000/- का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।
- शोधार्थी एवं परास्नातक विद्यार्थियों को कान्फ्रेन्स, सेमिनार, कार्यशाला आदि में शामिल होने व पंजीकरण हेतु छात्र कल्याण योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता प्रदान की गई।
- केन्द्रीय ग्रन्थालय में प्रज्ञाचक्षु विद्यार्थियों से संबंधित पठन सामग्री की आडियो रिकार्डिंग के कार्य में संलग्न विद्यार्थियों को 'अर्न वाइल लर्न' योजना के समान रु. 69200/- पारिश्रमिक प्रदान किया गया।

९.१५. अभिरुचि केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संस्थापना का मूल मंत्र है कि अध्ययन के साथ-साथ इसके छात्रों में चरित्र निर्माण भी हो। संस्थापक पूज्य पंडित मदन मोहन मालवीयजी के अनुसार ज्ञान व चरित्र दोनों का मेल होने पर संसार में मान होगा और गौरव प्राप्त होगा। जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र है। शिक्षा की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि विद्यार्थी अपनी भावनात्मक, शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का विकास करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सके, कलापूर्ण सौहार्द जीवन व्यतीत कर सके, समाज में आदरणीय व विश्वासपात्र बन सके। देश भक्ति व राष्ट्रीयता से, जो मनुष्य को उच्चकोटि की सेवा को प्रेरित करती हो, अपने जीवन को अलंकृत कर राष्ट्र की सेवा कर सके।

तदनुरूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अनेक विधाओं से उत्सव, समारोह एवं विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की जाती हैं, जिससे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को उचित प्रोत्साहन मिले तथा वे एक चरित्रनिष्ठ युवा के रूप में देश की सेवा कर सकें।

९.१६. जलपान गृह

मैत्री जलपान गृह की कई शाखाएँ हैं, जो कि विश्वविद्यालय के विभिन्न स्थानों पर स्थित है, जिनका संचालन विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त प्रबंध समिति द्वारा होता है। मैत्री जलपान गृह का संचालन लाभार्जन के उद्देश्य से नहीं किया जाता है। यहाँ पर खाद्य पदार्थों की पूर्ति साफ-सफाई को ध्यान में रखकर ही की जाती है। जलपान गृह के द्वारा विश्वविद्यालय के शिक्षकों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों एवं छात्रों को नाश्ता, दोपहर का भोजन तथा अन्य खाद्य पदार्थों की पूर्ति की जाती है। ये सुविधाएँ विश्वविद्यालय के प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित अभ्यर्थियों को भी दी जाती है। जब कभी विश्वविद्यालय में सेमिनार, कान्फ्रेंस होते हैं, तब इसके लिए आवश्यकता के अनुरूप नाश्ते एवं भोजन की व्यवस्था भी मैत्री जनपान गृह के द्वारा की जाती है।

इस समय का.हि.वि.वि. परिसर में निम्न कैन्टीन कार्यरत हैं:

१.मैत्री जलपान गृह एवं इसकी निम्नलिखित शाखाएँ

- चिकित्सा विज्ञान संस्थान जलपान गृह
- विश्वविद्यालयी चिकित्सालय जलपान गृह
- चिकित्सा ऑपरेशन थियेटर जलपान गृह

२५ दिसम्बर, २०१४ को मालवीय भवन में आयोजित मालवीय स्मृति पुष्प प्रदर्शनी का कुलपति द्वारा उद्घाटन

लाला लाजपत राय पाठशाला के छात्रों को कुलपति द्वारा स्वेटर का वितरण

- रूचिरा, महिला महाविद्यालय जलपान गृह
- मधुबन जलपान गृह
- केन्द्रीय कार्यालय जलपान गृह
- केन्द्रीय विद्यालय जलपान गृह

२. एग्रो जलपान गृह

९.१७. राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)

- **''मतदान क्यों जरूरी है'' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन (२५-०४-२०१४) :** २५ अप्रैल को ''मतदान क्यो जरूरी है'' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन रा.से.यो. की ओर से सामाजिक विज्ञान संकाय में समपन्न हुआ, अध्यक्षता प्रो. रजनी रंजन झा (संकाय प्रमुख, सामाजिक विज्ञान संकाय) ने मतदान का महत्व व स्वस्थ लोकतंत्र के लिए इसकी उपयोगिता पर स्वयंसवकों व अन्य को जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. आर.एस यादव, प्रो. अशोक कौल, डॉ. पी.के.शर्मा ने विचार व्यक्त दिया। कार्यक्रम में अन्य गणमान्य व शिक्षक गणों की भी सहभागिता रहीं। कार्यक्रम का संचालन डा. अमरनाथ व धन्यवाद ज्ञापन एवं डा.बी. राम ने दिया।
- **वाराणसी में संयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिनिधि मण्डल का आगमन (११मई -१२ मई २०१४) :** ११ मई को वाराणसी संसदीय क्षेत्र की चुनाव प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए सयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिनिधि मण्डल का आगमन हुआ । सयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिनिधि मण्डल में सयुक्त राष्ट्र संघ की भारतीय प्रतिनिधि सुश्री लीसा ग्रेनेडे, उपनिदेशक मिस एलेक्जेन्ड्रीया सोलोविया, सुमिता बनर्जी अध्यक्ष, संघीय राष्ट्र, जानं बोग्रे प्रोजेक्ट मैनेजर एवं मारीशस के मुख्य चुनाव आयुक्त श्री एम आई अब्दुल रहमान थे । मुख्य चुनाव अधिकारी उत्तर प्रदेश एवं राज्य सम्पर्क अधिकारी के निर्देशनुसार कार्यक्रम समन्वयक डा. प्रमोद कुमार शर्मा ने संयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिनिधि मण्डल के साथ कार्य किया। उन्होंने विभिन्नीकरण एवं इ.वी.एम. मशीन का वितरण विभिन्न केन्द्रों में देखा, इस दौरान उन्होंने विभिन्न मतदान कर्मियों से चुनाव प्रक्रिया के बारे में जानकारी ली। सयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिनिधि प्रमुख लीसा ग्रेनेडे ने कार्यक्रम समन्वयक द्वारा चुनाव प्रक्रिया निरिक्षण के दौरान किये गये सहायता की सराहना किया एवं एक प्रंशसा पत्र भेजा ।
- **जलपुरूष राजेंद्र सिंह ने गंगा की दशा पर जताई चिंता, नदियों की मृत्यु का कारण नीतियां :** बीएचयू के कृषि विज्ञान संस्थान में गुरूवार को राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से 'गंगा पुनर्जीवन: एक संवाद' का आयोजन किया गया। जलपुरूष डा. राजेन्द्र सिंह ने कहा कि नदियों की मृत्यु का कारण आजादी के बाद की विकास नीतियां हैं। खेती के आधुनिक तरीकों, प्रकृति का दोहन हमारी नदियों के अस्तित्व पर खतरा बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कि जल ही जीवन है, यह सब जानते हैं बावजूद इसके न कोई स्वयं में सुधार ला रहा है। निदेशक प्रो. रवि प्रताप सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में गंगा राजनीति का हिस्सा बनती जा रही है। सेवा योजना के स्वयंसेवकों को गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए अलख जगानी चाहिए। स्वागत इकाई समन्वयक डा. पी.के शर्मा ने किया। संचालन डा. वी राम और धन्यवाद ज्ञापन डा. अमरनाथ ने किया। इस मौके पर डा. संजय, डा. प्रतिमा गौंड आदि ने विचार व्यक्त किये।
- **''मेरी धरती मेरा कर्तव्य'' कार्यक्रम का आयोजन जी मीडिया लिमिटेड के सहयोग :** राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, द्वारा **''मेरी धरती मेरा कर्तव्य''** कार्यक्रम का आयोजन जी मीडिया लिमिटेड के सहयोग से दिनांक २१.०८.२०१४ को उडप्पा सभागार में किया गया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ आयुर्वेद संकाय के स्वयं सेवको द्वारा रैली निकालने के साथ हुआ रैली में धरती को बचाने के लिये विभिन्न उपयोग के पोस्टर प्रदर्शित किये गये। मुख्य अतिथियों द्वारा उडप्पा सभागार के परिसर में पोध रोपण किया गया, इस कार्यक्रम का सजीव प्रसारण जी न्यूज टी.वी. चैनल द्वारा किया गया, मुख्य कार्यक्रम शुभारम माननीय अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। पुष्प गुच्छ द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। जी न्यूज मीडिया के प्रतिनिधि श्री अनुज कुमार चौधरी ने **''मेरी धरती मेरा कर्तव्य''** कार्यक्रम के आयोजन पर प्रकाश डाला तथा उन्होने बताया कि जी मीडिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम का आज अंन्तिम दिन है, राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम अब तक के कार्यक्रमों में सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम रहा,उन्होंने आयुर्वेद संकाय के स्वयं सेवकों की कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता के लिये प्रशंसा की. मुख्य अतिथि प्रो. राणा गोपाल सिंह ने सभी छात्रों को प्रत्येक वर्ष वृक्षा रोपण की शपथ दिलायी एवं इस तरह के पर्यावरण सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित करने के लिये जी मिडिया एवं राष्ट्रीय सेवा योजना आयुर्वेद संकाय को बधाई दिया। प्रो. एम.साहू, संकाय प्रमुख, आयुर्वेद द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन में आयुर्वेद में वृक्षों की औषधीय महत्व पर प्रकाश डाला, प्रो. वी.के. जोशी विशिष्ट वक्ता के रूप में ऋतुओं के अनुसार औषधीय पौधों को लगाने पर बल दिया। अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। छात्रों द्वारा

एनएसएस द्वारा आयोजित स्वच्छ भारत अभियान

पर्यावरण संरक्षण के लिये वृक्षा रोपण करें विषय पर एक लघु नाटिका की प्रस्तुति की गयी। कार्यक्रम के अन्त में कार्यक्रम आयोजक डॉ. बी.राम ने धन्यवाद दिया, कार्यक्रम का संचालन छात्र प्रतिनिधि अनिमेष मोहन ने किया। कार्यक्रम के अन्तिम चरण में अतिथियों एवं स्वयंसेवको द्वारा ट्रामा सेन्टर में पौधा रोपण किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न संकाय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अमरनाथ, डॉ. उपेन्द्र, डॉ. स्वेता, डॉ. अर्चना तिवारी, डॉ. राजेश चौरसिया, डॉ. ओ.पी. भारतीय एवं डॉ फिलीप्स, डॉ. अखिलेश मिश्रा आदि उपस्थित थे।

- **स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम (१५ अगस्त, २०१४) :** राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक १५ अगस्त, २०१४ को राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय पर स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभांरभ डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना ने झण्डे को फहरा कर किया। कार्यक्रम में उपस्थित कार्यक्रम अधिकारियों एवं स्वयंसेवकों ने शहीदों के बलिदान को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम के अन्त में स्वयंसेवको को मिष्ठान वितरित किया गया। उक्त अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. अखिल मेहरोत्रा, डा. बी. राम, डा. राधेश्याम मीना आदि कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित थे।
- **अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस आयोजित** : राष्ट्रीय सेवा योजना, एवं रेड रिबन क्लब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, द्वारा अन्तराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर दिनांक १९ अगस्त २०१४ को, दृश्य कला संकाय के मूर्तिकला विभाग में मुर्ति शिल्प (आर्ट वर्क) प्रतियोगिता का आयोजन विभागाध्यक्ष श्री विनोद सिंह के अध्यक्षता में एवं श्री संजीव किशोर गौतम (कार्यक्रम अधिकारी) के संयोजन में किया गया इस अवसर पर संकाय के करीब - करीब ५० विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं **युवा है जिन्दगी-शेपिंग ए बेटर फ्यूचर** विषय पर कलाकृतियों का निर्माण किया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में श्री विजय सिंह एसोसिएट प्रोफेसर, श्री ब्रह्मस्वरूप असि. प्रोफेसर, श्री विनोद सिंह, विभागाध्यक्ष, मुर्तिकला विभाग थे। इस अवसर पर रा.से.यो. के समन्वयक डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने संयोजक सहित सभी प्रतिभागियो को बधाई एवं धन्यवाद दिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमश: उपेन्द्र कुमार महतो बी.एफ.ए. द्वितीय वर्ष, मूर्तिकला, सौरभ सिंह, बी.एफ.ए. तृतीय वर्ष, हरि ओम को दिया गया।
- राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रेड रिबन क्लब, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक २७.०८.२०१४ को आयोजित कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष में आयोजित पोस्टर, मूर्तिकला एवं स्लोगन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. रवि प्रताप सिंह, निदेशक कृषि विज्ञान संस्थान ने छात्रों का उत्साह वर्धन करते हुये उनके कर्तव्यों का याद दिलाया विशिष्ट अतिथि प्रो. वैशम्पायन, संकाय प्रमुख कृषि संकाय ने राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा मनाये जाने वाले कार्यक्रमों की सराहना की। अतिथियों का स्वागत डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया तथा आयोजित कार्यक्रमों के रूप रेखा के बारे में बताया। पोस्टर प्रतियोगिता एवं मूर्ति कला प्रतियोगिता डॉ. संजीव किशोर गौतम कार्यक्रम अधिकारी के संयोजन में दृश्य कला संकाय में आयोजित हुई, निणायक मंडल में डॉ. मनीश अरोडा एवं डॉ. नायर थे। स्लोगन प्रतियोगिता कृषि संकाय में डॉ. राधे श्याम मीणा द्वारा आयोजित की गयी, जिसमें निर्णायक मंडल के सदस्य डॉ. जी.सी.मिश्रा एवं आर.एन.मीना थें। मुख्य अतिथि प्रो. रवि प्रताप सिंह, ने प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार दे कर सम्मानित किया, अतिथियों एवं निणायक मंडल के सदस्यों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. राधेश्याम मीना द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न संकायों के कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित थे।
- **गांधी एवं शास्त्री की जयन्ती के अवसर पर स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम आयोजित (०२-१०-१४) :** राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्र पिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती दिनांक २ अक्टूबर, २०१४ को लाला लाजपत राय प्राथमिक पाठशाला, सुन्दर बगिया, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरूआत गांधी, शास्त्री एवं मालवीय जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया, तत्पश्चात, स्वच्छता अभियान का शुभारंभ मुख्य अतिथि महोदय द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति डॉ. राजीव संगल ने छात्रो को स्वच्छता शपथ ग्रहण कराया तथा छात्रों को अपने घर से महाविद्यालय तक स्वच्छ रखने पर जोर दिया।इस कार्यक्रम में कुलसचिव डा के.पी. उपाध्याय, कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. रवि प्रताप सिंह, छात्र अधिष्ठाता भी उपस्थित थे। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गांधी जी से संबंधित अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राधेश्याम मीना डा. विरेन्द्र कमलवर्शी, डा. रामशंकर, डा. अखिल कुमार मिश्रा डॉ. बी राम एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन लाला लाजपत राय प्राथमिक पाठशाला के प्रधानाचार्य डॉ. अवधेश श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी स्वयंसेवको द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय तक रैली निकाली गयी।
- **राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (२४ सितम्बर २०१४) :** सभागार, वाणिज्य संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. आशा राम त्रिपाठी थे, उन्होने अपने विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस पर स्वयंसेवको को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में लोगों को जागरूक करने की बात कही। विशिष्ट अतिथि प्रो. ओपी राय ने स्वयंसेवकों द्वारा किए गए कार्यो पर उन्हें बधाई दी। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियो द्वारा मालवीय जी

के चित्र पर माल्र्यापण से हुआ, उसके बाद डा. अमरनाथ द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया । रा.से.यो. के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पी.के. शर्मा द्वारा सत्र २०१३-१४ का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया। उन्होने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना की समस्त इकाईयों द्वारा लगभग २२० एक दिवसीय कैम्प ५५ विशेष शिविर एवं ३० विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी का पुरस्कार डा. प्रतिभा गोंड और डा. मुक्ता सिंह को दिया गया सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेविका अनामिका सिंह चुनी गई।।

- **प्री.आर.डी. हेतु चयन शिविर का आयोजन** : नई दिल्ली में आयोजित होने वाली गणतंत्र दिवस परेड में प्रति वर्ष राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा सहभागिता की जाती है। प्री.आर.डी. शिविर हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर स्वयंसेवकों/ स्वयंसेविकाओं के चयन हेतु एक दिवसीय चयन शिविर का आयोजन डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में दिनांक २ सितम्बर, २०१४ को पूर्वान्ह ११ बजे किया गया। इस शिविर में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के स्वयंसेवकों/ स्वयंसेविकाओं ने भाग लिया। स्वयंसेवकों के चयन में एन.सी.सी. के सुबेदार सुनील कुमार सिंह द्वारा सहयोग किया गया, जिसमें ८ स्वयंसेवकों का चयन किया गया। चयन शिविर में युवा अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ (भारत सरकार) एवं डॉ. बंसीधर पाण्डेय कार्यक्रम समन्वयक, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ उपस्थित थे।
- **रन फॉर यूनिटी में बी.एच.यू. एकजुट** : लौह पुरूष सरदार पटेल की जंयती पर शुक्रवार को बीएचयू में सुबह दौड़ का आयोजन किया गया। रन फार यूनिटी के लिए मालवीय भवन के सामने सुबह अध्यापक, छात्र, अधिकारी व कर्मचारी एकत्र हुए। माननीय कुलपति प्रो. राजीव संगल ने हरी झंडी दिखा दौड़ की शुरूआत की। दौड़ हॉस्टल मार्ग से स्वतंत्रता भवन, विधि संकाय होते होते पुनः मालवीय भवन पहुंची। राष्ट्रीय सेवा योजना ने इस दौड़ का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में रा.से.यो. के कार्यक्रम अधिकारियों एवं स्वयंसेवको ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।
- **स्वच्छ भारत अभियान** : राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कृषि विज्ञान संस्थान में एक- दिवसीय शिविर का आयोजन १५.११.२०१४ को किया गया। जिसके अन्तर्गत ईकाई छात्र-छात्राओं ने डा. राधेश्याम मीना एवं डा. सुनील वर्मा के नेतृत्व में साफ- सफाई की तथा माननीय प्रधानमंत्री जी के महत्वाकांक्षी मिशन 'स्वच्छ भारत अभियान' में सहयोग प्रदान किया। शिविर के अंत में कार्यक्रम समन्वयक महोदय डॉ. पी.के. शर्मा ने छात्रों को स्वच्छ भारत रखने का संकल्प दिलाया।
- स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत महिला महाविद्यालय के छात्रावास की साफ सफाई स्वयं सेविकाओं द्वारा किया गया। छात्राओं ने दस-दस का समूह बनाया एवं परिसर की साफ-सफाई के कार्य में एकजुट होकर लग गयी। सभी स्वयं सेविकाओं ने पूरे उत्साह एवं हर्ष के साथ साफ-सफाई के कार्य में हिस्सा लिया तथा बड़ी लगन एवं मेहनत से घास की कटाई-छटाई की तथा क्यारियों में पानी दिया। परिसर में फैले हुए कूड़े को उठा-उठा कर कूड़े दान में डाला एवं पूरे प्रांगण को झाड़ू लगाकर साफ किया। द्वितीय चरण में सभी स्वयं सेविकाओं ने साफ-सफाई अभियान को जारी रखा। इसी बीच सभी ने स्वल्पाहार ग्रहण किया, छात्राएँ इस शिविर में बहुत उत्साहित एवं हर्षित थी, उन्होंने कहा राष्ट्रीय सेवा योजना जैसी संस्था से जुड़ने पर पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य विषयों के बारे में सोचने और उस पर विचार करने का अवसर मिलता है।
- **एड्स दिवस पर एक संगोष्ठी का आयोजन** : राष्ट्रीय सेवा योजना, द्वारा दिनांक ०१ दिसम्बर २०१४ को पूर्वाह्न १० बजे एड्स दिवस पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि डा.टी.बी. सिंह चिकित्सा विज्ञान संस्थान थे, उन्होंने एड्स रोग के कारणो एवं निदान पर चर्चा की।राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने अतिथियो का स्वागत किया तथा डॉ. बी. राम एवं अन्य स्वयंसेवकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में रेड रिबन क्लब के छात्रों ने सहभागिता की।
- **मालवीय दीपावली कार्यक्रम का आयोजन (दिनांक २५.१२.२०१४)** : राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयन्ती के अवसर पर २५-१२-२०१४ को मालवीय दीपावली का आयोजन मालवीय भवन पर किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने माल्यार्पण कर मुख्य अतिथि प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, माननीय कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का स्वागत किया। उसके पश्चात् प्रो. त्रिपाठी ने मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया एवं ११ दीपक जलाकर मालवीय दीपावली कार्यक्रम का उद्घाटन किया।मालवीय दिपावली कार्यक्रम में लगभग पन्द्रह हजार दीपक से विश्वविद्यालय परिसर को सजाया गया, उक्त कार्यक्रम में रा.से.यो. के कार्यक्रम अधिकारी एवं लगभग १००० स्वयंसेवकों ने सिंह द्वार तक१५ हजार दीपमालाएं सजायी। महामना पं. मदन मोहन मालवीय की जंयती पर बरकच्छा स्थित बीएचयू के राजीव गांधी दक्षिणी परिसर में भी रा.से.यो. के स्वयंसेवको द्वारा १० हजार दीपक जलाये गये। एक दिन पहले ही भारत रत्न सम्मान देने की घोषणा के बाद इस साल महामना की जयंती का उल्लास कई गुना ज्यादा दिखा।
- **चिकित्सको ने किया पौधरोपण** : काशी हिन्दू विश्वद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वधान में चिकित्सा विज्ञान संस्थान की इकाई की ओर से नागार्जुन डा. छात्रावास में वृक्षा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए निदेशक प्रो. राणा गोपाल सिंह ने छात्रावास के प्रांगण में पहला पौधा लगाकर कार्यक्रम की शरूआत की। इस अवसर पर उन्होंने कहा की। इस प्रकार के आयोजन हमें प्रकृति के ओर करीब ले जाति पौधों के प्रति हमारे स्नेह को बढ़ाते हैं। आयुर्वेद संकाय के प्रो. मनोरंजन साहू ने

विश्वविद्यालय के 'स्वच्छ भारत अभियान' में भाग लेते छात्र

कहा कि ऐसे आयोजन हमें केवल शिक्षित पुरूष हीं नहीं बल्कि बेहतर इंसान बनाने में मद्द करते हैं। परिसर में चिकित्सकों और भावी डाक्टरों के सहयोग से ५० पौधों को रोपा गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डा. पी. के. शर्मा समेत प्रो. प्रधान डा. बी. राम आदि इस कार्यक्रम में शामिल थे।

- **एड्स रोग पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन :** राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा पाँच दिवसीय प्रशिक्षण २४ मार्च से आयोजित किया गया, इस प्रशिक्षण में रा.से.योजना के ४ रेड रिबन क्लब के सदस्यों को एड्स की उत्पति, एड्स सें बचाव एवं समाज में एड्स से सम्बन्धित फैली भ्रातियों को दूर करने के बारे में सम्बन्धित विशेषज्ञो द्वारा लेक्चर दिये गये । प्रशिक्षण में प्रो. अनिल कुमार सिंह, द्रब्य गुण विभाग द्वारा एड्स के विषाणु के बारे में एड्स संक्रमण, एड्स के लक्षणों एवं निदान के बारे में विस्तृत चर्चा किया। प्रो. सिंह ने छात्रों का आहवान किया कि वे समाज को एड्स के बारे में शिक्षित करें। इसी क्रम में डॉ. सुदामा यादव, आयुर्वेद संकाय द्वारा एड्स के विभिन्न प्रकार के निदान के बारे में अपने विचार व्यक्त किया गया। डॉ. बी.राम कार्यक्रम अधिकारी द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया गया , उन्होंने एड्स रोग के संक्रमण एवं बचाव के विषय पर चर्चा की। इसी क्रम में डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक द्वारा रेड रिवन क्लब की स्थापना एवं उद्देश्य के बारे में बताया। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. अमरनाथ द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।
- **आसाम में आयोजित १९वां राष्ट्रीय युवा उत्सव -२०१५** (०७-०१-२०१५) : गुवाहाटी ,आसाम में आयोजित १९वां राष्ट्रीय युवा उत्सव -२०१५ में प्रतिभागिता करने हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना ,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सानू यादव एवं अरूणिका ज्योत्सना हेम्ब्राम राजीव गाधी दक्षिण परिसर ने प्रतिभागिता किया।
- **विशेष शिविर कार्यक्रम**

इस वर्ष ५५ इकाई विशेष शिविरों का आयोजन अधिगृहीत ग्रामों एवं शहर की मलिन बस्तियों में किया गया। शिविर के दौरान प्रमुखत: निम्नलिखित कार्यक्रम किये गये :-

(अ) अधिग्रहीत गावों में सम्बन्धित संकायो/महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा भ्रमण किया गया और वहाँ की गलियों तथा कुओं/तालाबों की सफाई की गई। सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरार्थियों द्वारा विशेषकर कन्दवा, सुसुवाही, आदित्य नगर, अस्सी आदि के कुओं, तालाबों और घाटों की सफाई की गयी। विश्वनाथ मन्दिर तथा ब्रोचा छात्रावास की कुरूक्षेत्र, पुष्कर तालाब की सफाई की गयी।

(ब) विशेष शिविर के दौरान एड्स जागरूकता, मतदाता जागरूकता, जल संरक्षण एवं साम्प्रदायिक सद्भाव रैलियों का आयोजन महिला महाविद्यालय, बसन्त कन्या महाविद्यालय, वसन्त महिला महाविद्यालय राजघाट, आर्य महिला एवं डी.ए.वी. डिग्री कालेज विज्ञान संकाय, कला एवं समाज विज्ञान संकाय द्वारा किया गया।

(स) शिविरों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता जागरूकता एवं अन्य कई प्रकार के कार्यक्रम भी किये गये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने युवाओं का आह्वान किया है वे स्वच्छ भारत के लिए अभियान में सहभागी बनें। अस्सी घाट पर गुरूवार को राष्ट्रीय सेवा योजना की बीएचयू इकाई के सात दिनी शिविर के समापन में उन्होंने कहा कि युवा ही देश को आगे ले जा सकते हैं। स्वयंसेवकों ने घाट पर सफाई अभियान भी चलाया। सामाजिक विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो. रंजनी रंजन झा ने कार्यक्रम क अध्यक्षता की। छात्र अधिष्ठाता प्रो. एमके सिंह ने कहा कि बीएचयू के छात्र राष्ट्रीय सरोंकारों से हमेशा से जुड़े रहे है। कई उल्लेखनीय कार्य किये गये है। खेल, साहित्य, सांस्कृतिक गतिविधियों में इनकी सहभागिता उल्लेखनीय रही है। अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक डा. अनुराधा सिंह ने किया। समारोह में प्रो. राकेश पांडेय, डॉ मालविका पांडेय, डॉ. मालविका रंजन, डॉ. ओम प्रकाश भारती, डॉ. लहरी, प्रो. रीता सिंह, डॉ. उपेन्द्र त्रिपाठी, डॉ. राजीव श्रीवास्तव, उपेन्द्र विक्रम सिंह, बिट्टू, अंनन्त, आदित्य, प्रकाश, मुकेश आदि थे। उधर राष्ट्रीय सेवा योजना की कला संकाय इकाई के शिविर का समापन भदैनी स्थित माता आनन्दमयी आश्रम में हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी देवेशानन्द ने कहा कि अपना मन स्वच्छ नजर आयेगा। विशिष्ट अतिथि डॉ. दिवाकर प्रधान ने कहा कि स्वयंसेवकों को राष्ट्रकार्य के लिए तैयार रहना चाहिये। संयोजक डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय ने अंत में आभार व्यक्त किया। वाराणसी। राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े बीएचयू के सामाजिक विज्ञान संकाय के स्वयंसेवको ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं का आह्वान किया है। सात दिवसीय शिविर के चौथे दिन गुयवार को कार्यक्रम अधिकारी डा. अमरनाथ पासवान के नेतृत्व में सिंहद्वार से रैली निकाली गयी ।यह अससी घाट होकर नगवा मलिन बसती तक पहुंची। रैली के समापन पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में अमन, अर्जुन, सूरज, हेमंत, अभिषेक, रोहित साहिल तथा एनएसएस समन्वयक डा. पीके शर्मा शामिल थे।

९.१८. राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

कृषि विज्ञान संस्थान

एन.सी.सी. ग्रुप हेडक्वार्टर 'ए' की स्थापना काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में १४ फरवरी १९६३ को हुई। ग्रुप हेडक्वार्टर की नौ यूनिटें हैं जिसमें से पाँच यूनिटें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में, दो यूनीटें बलिया, एक गाजीपुर तथा एक मुगलसराय में है। उपरोक्त सभी यूनिटों का भी उदय वर्ष १९६३ में ही हुआ। उक्त ग्रुप हेडक्वार्टर के प्रथम ग्रुप कमान्डर लेफ्टिनेन्ट कर्नल बृजपाल सिंह राजपूत थे, तब से अब तक २४ ग्रुप कमांडर अपनी सेवा उक्त ग्रुप हेडर्क्वाटर को दे चुके हैं। १४ जनवरी, २०१५ से ब्रिगेडियर बी.एस. ठाकर ग्रुप कमांडर हैं।

राष्ट्रीय कैडेट कोर का विस्तार

ग्रुप हेडक्वाटर में वाराणसी, चन्दौली, गाजीपुर तथा बलिया जनपद के कुल ६२३४ बालक तथा २५०० बालिकाएँ कैडेट के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। इस मुख्यालय का विस्तार ३ विश्वविद्यालयों १६ विद्यालयों, ६३ इण्टर तथा डिग्री कालेजों में है। इस मुख्यालय तथा

गणतंत्र दिवस समारोह
२६ जनवरी, २०१५

उसके अधीनस्थ एनसीसी इकाईयों में १२ सैन्य कमीशंड अधिकारी, ३३ कनिष्ठ कमीशंड अधिकारी, ८८ नॉन कमीशंड अधिकारी, ४८ वरिष्ठ डिवीजन सहयोगी एनसीसी अधिकारी, २५ कनिष्ठ डिवीजन सहयोगी एनसीसी अधिकारी तथा १२९ असैन्य कर्मचारी है।

उपलब्धियाँ

प्रशिक्षण वर्ष २०१४-१५ में इस मुख्यालय द्वारा निम्नलिखित उपलब्धियां अर्जित की गई -

- १५ कैडेटों ने थल सैनिक शिविर, दिल्ली में भाग लिया।
- १० कैडेटों ने नौ सैनिक शिविर, विशाखापट्टनम में भाग लिया।
- ०७ कैडेटों ने गणतंत्र दिवस शिविर, नई दिल्ली में भाग लिया।
- ०२ कैडेटों को उत्तर प्रदेश के वेस्ट एथलीट का अवार्ड दिया गया।
- इंटर ग्रुप फुटबाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- १० संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए जिसमें ३४०२ कैडेटों ने भाग लिया।
- १ कैडेट ने भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में २३ जून से ४ जुलाई, २०१४ तक विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- ५ राष्ट्रीय एकीकरण शिविर एवं २ विशेष राष्ट्रीय एकीकरण शिविर में १२१ कैडेटों ने भाग लिया, जिनका आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर हुआ था।
- १२१ कैडेटों ने आर्मी अटैचमेन्ट कैम्पों के माध्यम से सेना की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।
- ९२ कैडेटों तथा २ सहयोगी एनसीसी अधिकारियों ने ९ अलग-अलग ट्रैकों में भाग लिया।
- ३२ भूतपूर्व एनसीसी कैडेटों ने एनसीसी के ए, बी तथा सी प्रमाणपत्र के आधार पर सेना में एवं केन्द्र एवं राज्य सरकार की नौकरियां प्राप्त की।
- साईकिल रैली - ९२ उ.प्र. वाहिनी एनसीसी को २० कैडेटों ने साईकिल रैली में भाग लेकर लोगों को एनसीसी के महत्व तथा स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।

सम्मान एवं पुरस्कार

- कैडेट सौरभ कुमार श्रीवास्तव, ८९ उ.प्र. एनसीसी वाहिनी को मेजर एस.एल.दार रजत पदक से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया।
- कैडेट सौरभ कुमार श्रीवास्तव को निशानेबाजी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राज्यपाल का प्रशंसा पदक प्राप्त हुआ।
- कैडेट सौरभ कुमार श्रीवास्तव ने अखिल भारतीय जी वी मावलंकर निशानेबाजी प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन कर राष्ट्रीय निशानेबाजी परीक्षण में प्रथम तथा द्वितीय चक्र को पार कर तृतीय तथा चतुर्थ में भाग लेगा।
- कैडेट पूजा चौधरी को निशानेबाजी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मुख्यमंत्री स्वर्णपदक प्रदान किया गया।
- कैडेट मोहम्मद शामी एवं कैडेट सोनी सोहानी को निशानेबाजी में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए मुख्यमंत्री रजतपदक प्रदान किया गया।
- कनिष्ठ सहायक पवन कुमार यादव, एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय 'अ' को एन.सी.सी. महानिदेशक, नई दिल्ली का प्रशंसा पत्र उनके सर्वोत्तम कार्य के लिए दिया गया।

अतिमहत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन

मेजर जनरल एस.एस. ममक, अपर महानिदेशक, एनसीसी निदेशालय, लखनऊ के द्वारा २ मार्च, २०१५ को इस मुख्यालय तथा अधीनस्थ इकाईयों का निरीक्षण किया गया।

विविध

- स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर कैडेटों द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति को गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया।
- स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत इस मुख्यालय के द्वारा जनजागरूकता अभियान चलाया गया, जिससे लोगों को अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ एवं सुन्दर रखने की प्रेरणा मिली।
- एनसीसी प्रमाण-पत्र परीक्षा : १२९३ कैडेटों ने इस निम्नलिखित एनसीसी प्रमाणपत्र परीक्षाएं उत्तीर्ण की - 'ए' प्रमाणपत्र ६२४ कैडेट, 'बी' प्रमाण पत्र ५७७ कैडेट, 'सी' प्रमाण पत्र ९२ कैडेट।

९.१९. बैंक एवं डाक घर बैंक

विश्वविद्यालय परिसर में दो राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखाएँ हैं जो छात्रों, कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

१. भारतीय स्टेट बैंक की निम्नलिखित चार शाखाएँ परिसर में कार्यरत हैं:

(अ) बी.एच.यू. मुख्य शाखा
(ब) शापिंग सेन्टर बी.एच.यू. शाखा
(स) आई.एम.एस. बी.एच.यू. शाखा
(द) आई.टी. शाखा (बी.एच.यू.)

२. बैंक आफ बड़ौदा, सर सुन्दरलाल चिकित्सालय परिसर, का.हि.वि.वि. उपरोक्त बैंकों के ४ एटीएम केन्द्र भी विश्वविद्यालय परिसर में कार्यरत हैं।

डाकघर

विश्वविद्यालय परिसर में डाकघर निम्नलिखित तीन शाखाएँ कार्यरत हैं:

(अ) मुख्य विश्वविद्यालय डाकघर
(अ) बी.एच.यू. चिकित्सालय डाकघर (कोर बैंकिंग सर्विस)
(ब) मालवीयनगर डाकघर

एच.वी.वी. डाकघर में उपलब्ध सुविधाएँ :

१. सभी तरह की बचत बैंक सुविधाएँ
२. मेघदूत मिलेनियम
३. बिजनेस पोस्ट
४. खुदरा पोस्ट
५. बी.एन.पी.एल. सर्विस
६. डाक जीवन बीमा पॉलिसी
७. वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर (केवल एच.वी.वी. पर)
८. मनीग्राम (केवल एच.वी.वी. पर)
९. वर्ल्ड नेट एक्सप्रेस (डीएचएल) (केवल एच.वी.वी. पर)

९.२०. बी.एच.यू. कम्प्यूटरीकृत रेलवे आरक्षण केन्द्र

बी.एच.यू. परिसर स्थित उत्तर रेलवे के आरक्षण केन्द्र ने १३ जून, २००६ से कार्य प्रारम्भ किया। इस केन्द्र द्वारा वित्तीय वर्ष २०१४-२०१५ की कुल आय रु. ३,१७,५१,१२० थी। इस केन्द्र में प्रात: ९ बजे से अपराह्न ३ बजे तक (रविवार को छोड़कर) परिसर एवं परिसर के बाहर के लोगों को रेलवे आरक्षण की सुविधा प्राप्त होती है। इस केन्द्र द्वारा समाप्त हुए वित्तीय वर्ष २०१४-१५ में कुल रु. ६४,७३६ यात्रियों का आरक्षण हुआ एवं रु. ४६३२२ मांग-पत्रों का निस्तारण किया गया।

९.२१. एयर स्ट्रिप एवं हेलीपैड

विश्वविद्यालय के छात्रों के बहुआयामी व्यक्तित्व को निखारने के उद्देश्य से परिसर में एक हवाई पट्टी/हेलीपैड की भी व्यवस्था है, जहाँ ७ यू.पी. एयर स्क्वाड के सहयोग से ९०० एयर फ्लाईट कैडेटों (७०० सीनियर डिविजन एवं २०० जूनियर डिविजन) को हवाई जहाज उड़ाने एवं इससे सम्बन्धित तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाता है। ३३% सीटें महिला कैडेट के लिए आरक्षित है।

९.२२. विपणन संकुल

मरीजों एवं उनके सहयोगियों, आगन्तुओं, छात्रों एवं विश्वविद्यालय कर्मचारियों को उच्च गुणवत्तायुक्त अल्पाहार, शीतल पेय, कॉफी, चाय इत्यादि प्रदान करने के लिए ५ नेस्ले कोइस्क (जिसमें से एक मधुबन काइस्क का प्रसार है जो कि साईबर ग्रन्थालय में स्थित है) एवं ५ अमूल पार्लर (जिनमें से एक राजीव गांधी दक्षिणी परिसर बरकछा) है।

९.२३. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क्लब

विश्वविद्यालय क्लब की स्थापना विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. मदन मोहन मालवीय के द्वारा सन् १९३४ में किया गया था। विश्वविद्यालय क्लब का उद्देश्य सांस्कृतिक, सामाजिक, खेलकूद सम्बन्धी गतिविधियों तथा सदस्यों के बीच बौद्धिक विचार-विमर्श को प्रोत्साहन देना है।

सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक गतिविधियाँ

१७ मार्च, २०१४ को होली मिलन समारोह मनाया गया। १६ नवम्बर २०१४ को भारत के वीर सपूत/वीरांगनायें, स्वच्छ अभियान, नमामि गंगे एवं नैतिक शिक्षा एवं मानव मूल्य विषय पर चित्रकारी प्रतियोगिता आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय क्लब के सदस्यों ने सपरिवार इस कार्यक्रम में सहभागिता सुनिश्चित की। १९ नवम्बर, २०१४ को प्रो. राण गोपाल, निदेशक, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि. की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी महारानी लक्ष्मीबाई की १७९वीं जयंती मानाई गई। साहित्य समारोह के दौरान डॉ. ए.एन. लाल एवं श्रीमती आशा श्रीवास्तव द्वारा लिखित चार पुस्तकों गायत्री मधु कलश का विमोचन किया गया। नवम्बर २३, २०१४ को दास कैपिटल मैनेजमेंट एवं एडवाजर प्रा. लि., बंगलोर के निदेशक श्रीमान् मृण्मय दास द्वारा ''व्यक्तिगत वित्तीय प्रबन्धन एवं निवेश के अवसरों'' पर अतिथि व्याख्यान दिया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों, प्रशासनिक कर्मचारियों एवं उनके परिवार के बीच राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा देने के लिए एवं सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों के निमित्त विश्वविद्यालय क्लब निरंतर कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है। स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त २०१४ और २६ जनवरी, २०१५ को गणतंत्र दिवस मनाया गया। संसदीय चुनावों के पहले मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित करने का अभियान आयोजित किया गया।

सामुदायिक विकास और सामाजिक सेवा योजना

१.	विश्व पर्यावरण दिवस	१२५ कैडेटों ने भाग लिया
२.	पल्स पोलिया अभियान	१४० कैडेटों ने भाग लिया
३.	स्वच्छता अभियान	१०६७ कैडेटों ने भाग लिया
४.	साईकिल रैली द्वारा सामाजिक जागरूकता	२० कैडेटों ने भाग लिया
५.	तंबाकू निषेध दिवस	७५ कैडेटों ने भाग लिया
६.	इन्टरनेशनल डे अगेंस्ट ड्रग एब्यूस एवं इलिक्ट ट्रैफिकिंग	२५० कैडेटों ने भाग लिया
७.	राष्ट्रीय मतदाता दिवस	१४५ कैडेटों ने भाग लिया
८.	पृथ्वी दिवस	१०० कैडेटों ने भाग लिया
९.	राष्ट्रीय एकता दिवस	६४ कैडेटों ने भाग लिया
१०.	गंगा जागरण यात्रा का स्वागत	५० कैडेटों ने भाग लिया

खेलकूद

विश्वविद्यालय क्लब के सदस्यों और उनके परिवार के सदस्यों ने सम्पूर्ण वर्ष विभिन्न खेलों जैसे-बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड और ताश आदि खेलों में भाग लिया। यह टूर्नामेंट १४ अगस्त को आयोजित हुआ।

९.२४ छात्र कल्याण

९.२४.१ संस्थापन सेवा

९.२४.१. संस्थापन सेवा

कृषि विज्ञान संस्थान

कृषि विज्ञान संस्थान का अपना प्रशिक्षण और प्लेंसमेट सेल है जो कि विश्वविद्यालय के प्लेंसमेट कोओरडिनेसन सेल के साथ सामंजस्य से काम करती हैं। इसने कैम्पस साक्षात्कार के माध्यम से कई विद्यार्थियों का निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में भर्ती करवाने का अच्छा रिकार्ड बना रखा हैं। पिछले शैक्षणिक सत्र में अच्छा प्लेसमेंट हुआ है। इस संस्थान ने शैक्षणिक जीवन की कठोर चुनौतियों की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने एवं कॉरपोरेट जगत द्वारा अपेक्षित बहुमुखी पदों एवं जिम्मेदारी को लेने के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया हैं।

विभिन्न संगङ्गनों, संस्थाओं ने हमारे स्नातकों, स्नात्तकोत्तर एवं पीएच.डी. के विद्यार्थियों के लिए कैम्पस इन्टरव्यू का आयोजन किया है। लगभग ४०, विद्यार्थियों का प्लेसमेंट हो चुका हैं और अभी कई कम्पनियों का परिणाम आना बाकी है। इन ४० विद्यार्थियों का कैम्पस प्लेंसमेंट इन कम्पनियों में हुआ है। - (१) धानुका एग्रीटेक (२) इण्डो गल्फ फर्टिलाइजर (३) झारखण्ड स्टैट लिवलिहुड प्रमोशन सोसाइटी (४) जिओलाइफ (५) श्रीजन (६) एक्शन फार सोसल एडवासमेंट (७) काशपोर (८) युनाईटेड फासफोरस लि. (९) पेन सीड्स (१०) प्रदान (११) सिनोचेम (१२) जीविका इत्यादि। कुछ प्रमुख नियोक्ता जो कि हमारे संस्थान का अप्रैल व मई माह में दौरा प्रस्तावित है – पीसीआईएल, बेसीक्स बिहार रूरल लिवेलिहुड प्रमोशन सोसाइटी एण्ड कैमसन बायोटेक्नोलॉजीस लिमिटेड।

कैम्पस प्लेसमेंट के अलावा अभी लगभग ८० पीजी विद्यार्थियों का बैंक में कृषि अधिकार की पोस्टों पर चयन हुआ है। इसलिए प्लेसमेंट के लिए अभी बहुत कम विद्यार्थी शेष है।

प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने आई.सी.ए.आर. संस्थानों में १०० से अधिक छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था की हैं। सभी यू.जी. एवं पी.जी. विद्यार्थियों का ई-लर्निंग और ऑनलाइन लर्निंग एण्ड टिचिंग के लिए प्रशिक्षण दिया गया हैं।

छात्रों के प्रशिक्षण के अलावा कृषक समुदाय के लिए लगभग ८९ क्षमता निर्माण कार्यक्रम, विभिन्न क्षेत्रों में जैसे उत्पादन, विपणन, प्रसंस्करण एवं पोस्ट हार्बेस्ट इत्यादि में आयोजित किए गए।

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान

सत्र २०१४-१५ में एम.एस.सी. टेक. इन इन्वायरन्मेंटल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के ११ छात्रों का चयन पीसीएफ टेक्सटाईल ट्रेडिंग कम्पनी में हुआ।

प्रबन्धशास्त्र संकाय

संकाय के छात्रों ने प्रतिवर्ष अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया है। सभी छात्र संकाय की प्रबल शैक्षणिक संस्कृति को सुदृढ़ता प्रदान करते हुए भारतीय एवं विश्वस्तर के प्रतिष्ठित संगठनों द्वारा भर्ती किए गए है। संकाय सदस्यों की समन्वित चेष्टाएँ छात्रों के परिसर स्थापन में भलीभांति प्रतिबिंबित हुई है। संकाय की उद्योग जगत में पहुंच बढ़ रही है हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक भी संकाय के प्रतिष्ठित एंव अग्रणी स्थापन संस्थाओं में जुड़ गया है।

लगभग चालीस संगठनों ने सत्र २०१४-१५ के दौरान संकाय का भ्रमण किया। छात्रों द्वारा प्राप्त किये गए औसत वेतनमान की सीमा ६.५ लाख रूपये वार्षिक तक बढ़ गई है। छात्रों को प्रस्तावित कार्य प्रालेख भी विस्तृत हो रहा है।

भौमिकी विभाग

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी.एस.आई.), तेल व प्राकृतिक गैस कार्पोरेशन लिमिटेड (ओ.एन.जी.सी.), कोल इंडिया लिमिटेड, एस्सार लिमिटेड, मोनेट इस्पात, डाटा कोड इत्यादि दिग्गज कंपनियों में द्वारा इस वर्ष हमारे विद्यार्थियों का चयन किया गया है। यह प्रयास किया जा रहा है कि भविष्य में और भी मल्टीनेशनल कम्पनियों से सम्पर्क कर अपने विद्यार्थियों के चयन का द्वार खोला जाए।

विभाग के ७० प्रतिशत से अधिक एम.एस.सी. (टेक) विद्यार्थियों को ओ.एन.जी.सी., कोल इंडिया, ए.एम.डी., एम.ई.सी. एल., बार्क, एच.जेड.एल. मोनेट इस्पात, विप्रो, टाटा स्टील जैसी कम्पनियों से नौकरी के प्रस्ताव प्राप्त हो चुके है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रतिष्ठित शोध संस्थान तथा निजी कम्पनियां विद्यार्थियों को ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण प्रदान करती हैं।

संगणक विज्ञान विभाग

विभाग के एम.सी.ए. के ११ छात्रों और एम.एससी. के ४ छात्रों ने कैम्पस प्लेसमेंट के माध्यम से नौकरियाँ प्राप्त की। तीन छात्र क्रमश: बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ महाराष्ट्रा और विजया बैंक में प्रोबेशनरी अधिकारी नियुक्त हुए।

खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

- छात्रों को ख्याति प्राप्त खाद्य उद्योगों में नौकरी मिली
- छात्र विभिन्न सरकारी सेवाओं जैसे खाद्य सुरक्षा अधिकारी, कनिष्ठ विश्लेषक, भारतीय खाद्य निगम आदि के लिए चुने गए।
- शिक्षकों ने किसानों के प्रशिक्षण क्रार्यक्रम में भाग लिया तथा उन्हें खाद्य प्रसंस्करण, खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरुक किया।

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर

अनुस्थापन सेवा प्रशिक्षण का कार्यक्रम

परिसर में एक अनुस्थापन समिति का गठन किया गया है जो विद्यार्थियों को सत्र के दौरान प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु आवश्यक अवसरों को उपलब्ध कराती है।

- एम.बी.ए. (ए.बी.) के छात्र एवं छात्राओं की नियुक्ति औसत वार्षिक पैकेज ४.५ लाख रूपये के साथ इण्डोगल्फ फर्टिलाइजर, अंसल ए पी आइ, ड्यू प्वाइंट, सावन सीड, महिंद्रा टेक, पैन सीड, धनुका, बंधन माइक्रोफाइनेस सिनोचेम चम्बल फर्टिलाइजर, एवं पर्ल अकादमी द्वारा की गई।
- बी.फार्म. आयुर्वेद के छात्र एवं छात्राओं की नियुक्ति श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लिमिटेड, इमामी प्राइवेट लिमिटेड, चरक फार्मा जैसी प्रतिष्ठित कंपनीयों में हुई।

९.२४.२. विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र

'माडल ब्यूरो' के नाम से ख्याति-प्राप्त विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मन्त्रणा केन्द्र देश का सम्भवत: प्रथम केन्द्र है, जिसकी स्थापना जून १९५९ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रुइया हॉस्टल के मेडिकल ब्लाक में की गयी थी। राष्ट्रीय नियोजन सेवा की ऐसी इकाईयां इस समय देश के लगभग ८२ विश्वविद्यालयों में कार्यरत हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का प्रयास है कि देश के सभी विश्वविद्यालयों में सेवायोजन सूचना एवं मन्त्रणा केन्द्रों की स्थापना की जाय। विश्वविद्यालय जीवन में इस केन्द्र की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा चुनौतियों से भरपूर है। शिक्षित नवयुवकों तथा युवतियों को समुचित शैक्षणिक और व्यावसायिक मार्ग निर्देशन देकर, उनका भविष्य निर्माण करना, इन केन्द्रों का प्रमुख दायित्व है।

विश्वविद्यालय के छात्रों तथा छात्राओं को परिसर में ही शैक्षणिक तथा व्यावसायिक मार्ग निर्देशन सेवाएं उपलब्ध की जा सकें, इस उद्देश्य से इस केन्द्र का सूत्रपात किया गया था। विश्वविद्यालय की प्राचीन परम्पराओं तथा गरिमा के अनुकूल छात्रोपयोगी सेवाएं अर्पित करने की दिशा में केन्द्र सर्वथा सन्नद्ध रहा है।

१. पंजीयन, सम्प्रेषण और प्लेसमेण्ट
२. कॅरियर स्टडीज एंव व्यावसायिक शोध
३. रोजगार एवं स्वरोजगार सम्बन्धी सूचना
४. शिक्षण-प्रशिक्षण, छात्रवृत्ति/अधिवृत्ति से सम्बन्धित सूचना
५. व्यावसायिक निर्देशन एवं कैरियर काउंसिलिंग : व्यक्ति एवं सामूहिक
६. कैम्पस भर्ती

व्यावसायिक सूचना कक्ष की स्थापना एक बड़े हाल में की गयी है। इस कक्ष को केन्द्र की सूचना सेवाओं का मेरूदण्ड कहना अधिक उपयुक्त होगा। कक्ष में कुल ८० फोल्डर है जिनका वर्गीकरण संकाय, उद्योग, संस्था तथा विभिन्न अनुभागों में किया गया है। कक्ष का महिला

अनुभाग, अपना रोजगार अनुभाग, चिकित्सा तथा प्रावैधिक शिक्षा अनुभाग प्रतियोगितात्मक अनुभाग, राष्ट्रीय विकास और प्रतिरक्षा अनुभाग, रोजगार क्षेत्र सूचना अनुभाग आदि छात्रों में विशेष लोकप्रिय है। देश तथा विदेशों में उपलब्ध शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार, छात्रवृत्ति, अधिवृत्ति आदि सम्बन्धित सूचना वर्गीकृत रूप से कक्ष में उपलब्ध की गयी है।

व्यावसायिक सूचनाओं का संकलन, अध्ययन, अनुशीलन, संदर्शन, वर्गीकरण तथा संरक्षण करना केन्द्र का प्रमुख दायित्व है। केन्द्र की समस्त सूचना तथा निर्देशन सेवाएं उपयुक्त सूचना साहित्य की उपलब्धि तथा उपादेयता पर ही आधारित है। छात्रों की व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं के अनुसार ही सूचना साहित्य का संग्रहण तथा सन्दर्शन किया जाता है। वांछित सूचना तत्काल उपलब्ध न होने पर सम्बन्धित स्थानों से मंगा कर अभ्यर्थियों को उपलब्ध करायी जाती है।

व्यावसायिक परामर्श इकाइयों का संचालन केन्द्र के निर्देशन में, विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में किया जा रहा है। ऐसी इकाईयां हमारी सेवाओं को लघु रूप में अपने छात्रों को उपलब्ध कराती है। किशोरावस्था में निर्देशन की महत्ता का अनुभव करते हुए केन्द्र इन इकाइयों को अधिकाधिक सूचना सम्पन्न तथा सुदृढ़ बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है। केन्द्र इन्हीं के माध्यम से सम्बन्धित संस्थाओं में व्यावसायिक वार्ताओं का आयोजन कर, छात्रों को भावी जीवन की ठोस व्यावसायिक योजना बनाने में सहायता करता है।

केन्द्र के पुस्तकालय में कीमती तथा उपयोगी सन्दर्भ साहित्य उपलब्ध है। पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम, नियमावली, प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के निर्देशन-साहित्य, स्वत: नियोजन, व्यवसाय प्रोन्नयन, व्यावसायिक मार्ग निर्देशन, आत्मविकास आदि से सम्बन्धित छात्रोपयोगी साहित्य पुस्तकालय में एकत्रित किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा व्यावसायिक शोध, अध्ययन, साहित्य सृजन तथा प्रकाशन सम्बन्धी कार्य अनवरत रूप से किया जा रहा है। प्रकाशन की तीन मालाओं 'प्लान ए कैरियर सीरीज' 'नो योर सब्जेक्ट सीरीज' तथा 'गाइडेन्स लीफ्लेट सीरीज' मे अब तक कुल **५१** पुस्तकों, पुस्तिकाओं तथा विवरणिकाओं का प्रकाशन किया जा चुका है। समय-समय पर रोजगार सर्वेक्षण आयोजित कर प्रतिवेदन प्रकाशित किए जाते है। केन्द्र के प्रकाशन बेजोड़ माने जाते है। देश के कोने-कोने से प्राप्त मांग पत्रों से इन प्रकाशनों की लोकप्रियता स्वयं सिद्ध होती है।

प्लान ए कॅरियर सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित साहित्य का विषय-वस्तु अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत तथा सारगर्भित होता है। ये पुस्तकें विविध पाठ्य-विषयों से सम्बन्धित उच्चशिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार, स्वत: रोजगार आदि के साथ-साथ विदेशों में उपलब्ध विशेषीकरण और व्यावसायिक अवसरों की जानकारी देती है। व्यक्तिगत निर्देशन के अवसर पर छात्रों तथा अभ्यर्थियों को उनकी आवश्यकतानुसार इन पुस्तकों की प्रतियां उपलब्ध की जाती है। केन्द्र के सभी प्रकाशन नि:शुल्क रूप से देश के समस्त व्यवसाय निर्देशन से सम्बन्धित अभिकरणों, प्रमुख पुस्तकालयों, संस्थाओं आदि को प्रेषित किए जाते है।

पत्राचार निर्देशन सेवा केन्द्र की विशिष्ट सेवाओं में एक है। देश के सभी भूभागों से छात्रों, अभ्यर्थियों, संस्थाओं तथा अभिभावको से पृच्छायें प्राप्त होती रहती है, जिनका समुचित उत्तर दिया जाता है। कभी-कभी बड़ी जटिल तथा समस्यापरक पृच्छाओं का भी निराकरण केन्द्र को करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में केन्द्र तथा अभ्यर्थी के बीच बराबर पत्राचार सम्पर्क बना रहता है।

विदेशों में उच्चाध्ययन तथा रोजगार के प्रति विश्वविद्यालय के छात्रों तथा अध्यापकों में विशेष आकर्षण दृष्टिगत होता है। सूचना कक्ष में अमेरिका, कनाडा, इंगलैण्ड, अस्ट्रेलिया, जर्मनी, फ्रांस, रूस, जापान, आदि देशों से सम्बन्धित शिक्षा, छात्रवृत्ति, प्रवेश नियम, भौगोलिक परिस्थितियाँ आदि सम्बन्धी सूचना अलग-अलग पत्रावलियों में सन्दर्शित की गई है। विदेशी विनिमय, पारपत्र, वीसा, पूर्व परीक्षा आदि में भी अद्यावधिक जानकारी दी जाती है।

रोजगार सूचना सहायता सभी इच्छुक अभ्यर्थियों को दी जाती है किन्तु पंजीयन की सुविधा केवल स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक स्नातकों (कृषि, चिकित्सा, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, कानून, शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान, प्रबन्ध शास्त्र आदि) तक ही सीमित हैं।

नियोजन हेतु पंजीकृत अभ्यर्थियों के विवरण तथा आवेदन पत्र सम्बन्धित नियोजको को, उनकी मांगों के सन्दर्भ में, प्रेषित किए जाते है। ऐसी रिक्तियों की सूचना केन्द्र को सीधे नियोजक से, स्थानीय तथा देश के अन्य सेवायोजन कार्यालयों तथा केन्द्रीय सेवायोजन कार्यालय, नई दिल्ली से प्राप्त होती है।

प्लेसमेन्ट सेल : केन्द्र में स्थापित प्लेसमेन्ट सेल द्वारा समय-समय पर विभिन्न कम्पनियों के लिए कैम्पस प्लेसमेन्ट पर कार्य किया जा रहा है।

इण्टरनेट की सुविधा केन्द्र में आने वाले आगन्तुकों एवं अभ्यर्थियों को उनकी आवश्यकता अनुसार सेवायोजन, प्रवेश से सम्बंन्धित जानकारी, छात्रवृत्ति/अधिवृत्ति आदि से सम्बन्धित सूचना इण्टरनेट के माध्यम से प्रदत्त की जाती हैं।

अपना व्यवसाय चुनिये पखवाड़ा : केन्द्र द्वारा **''अपना व्यवसाय चुनिये पखवाड़ा''** दिनांक १६.०८.२०१४ से ३०.०८.२०१४ तक मनाया गया। पखवाड़े के दौरान देश-विदेश में रोजगार एवं स्वरोजगार, उच्च शिक्षा, शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधा, छात्रवृत्ति/ अधिवृत्ति आदि से सम्बन्धित विशेषज्ञों की व्यावसायिक वार्ता विभिन्न विभागों, संस्थानों/विद्यालयों में करायी गयी।

१. गोपी राधा बालिका इण्टर कालेज, रविन्द्रपुरी, वाराणसी

कॅरियर काउंसिलिंग तथा व्यक्तित्व विकास (अवसर शिविर): केन्द्र द्वारा ''कॅरियर काउंसिलिंग तथा व्यक्तित्व विकास (अवसर शिविर)'' मनाया गया। काउंसिलिंग के दौरान विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र, बीएचयू एवं बसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा वाराणसी में देश-विदेश में रोजगार एवं स्वरोजगार, उच्च शिक्षा, शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधा, छात्रवृत्ति/ अधिवृत्ति आदि से सम्बन्धित विशेषज्ञों की व्यावसायिक वार्ता करायी गयी।

वर्तमान सत्र में किये गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है:

पंजीयन	----	१५८
सजीव पंजी	----	२५७१
व्यक्तिगत सूचना	----	५३६९
पंजीयन मार्गदर्शन	----	१५८
व्यक्तिगत मार्गदर्शन	----	३७
पुनरावलोकन	----	३७
सामूहिक मार्गदर्शन	----	१२५
स्कूल/कॉलेज में वार्ता	----	२८
सूचनाकक्ष में आने वाले आगंतुक	----	५२०५
विशिश्ट आगंतुक	----	२५
साहित्य का वितरण	----	२३
सूचना के संकलन से सम्बन्धित सम्पर्क	----	३८
सेवायोजन से सम्बन्धित सम्पर्क	----	३९
व्यावसायिक मार्गदर्शन से सम्बन्धित सम्पर्क	----	३९
कैम्पस प्लेसमेन्ट	----	५९
कैम्पस साक्षात्कार में भाग लेने वाले अभ्यर्थी	----	१०२८

९.२४.३. छात्र परिषद् कार्यालय

छात्र परिषद् द्वारा सत्र २०१४-१५ में निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये

''अर्न व्हाइल लर्न'' कार्यक्रम- ५०० जरूरतमंद एवं मेघावी छात्रों को विश्वविद्यालय परिसर के अन्दर विभिन्न स्थानों पर केवल धनअर्जित करने के लिए ही नहीं बल्कि अनुभव प्राप्त करने के लिए भी विभिन्न स्थानों पर जैसे-लाइब्रेरी, अस्पताल, साइबर कैफे, इत्यादी पर कार्य प्रदान किये गये।

'दृष्टि' शोध पत्रिका एवं रचनात्मक पत्रिका 'युवा आवाज' का पंचम संस्करण - ''दृष्टि'' शोध पत्रिका का पंचम संस्करण प्रकाशित किये जाने हेतु तैयारी कर रहा है। इस संस्करण में शोध पत्र तीन भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रजी) में प्रकाशित किये जायेंगे। सभी पत्रों को पुन: पढ़ा गया है और उसमें आवश्यक संशोधन हेतु लेखकों को भेज दिया गया है। लगभग सभी शोध पत्रों को लेखकों से प्राप्त करने के बाद प्रेस में प्रकाशन हेतु भेज दिया गया है।

छात्र परिषद द्वारा विश्वविद्यालय के युवाओं के लिए एक अतिरिक्त पत्रिका भी ''युवा आवाज'' के नाम से प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका में मुख्य रूप से कविता एव लघु कथा जो की काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा रचित होती है प्रकाशित की जाती है, इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को लिखने हेतु प्रेरित करना है।

कवि सम्मेलन- दिनांक २६/०४/२०१५ को एम्फीथियेटर मैदान में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वप्रसिद्ध १० कवियों जिनके नाम निम्नलिखित है- श्री विकल साकेती, श्री हरि नारायण 'हरिश', श्री तारकेश्वर मिश्र 'राही', श्री वाहिद अली 'वाहिद', श्री मनमोहन मिश्र, श्री प्रकाश उदय, मिथिलेश गहमरी द्वारा अपनी रचनात्मक कविताओं को प्रस्तुत किया गया। उन सभी छात्रों को भी कविता पाठ के लिए निमंत्रित किया गया जिन्होंने 'स्पंदन' में अपनी कृतियों को प्रस्तुत किया था तथा उसे वहाँ सराहा गया था।

९.२४.४. नगर छात्र निकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ऐसे सभी छात्र जो छात्रावास में न रह कर शहर के विभिन्न अंचलों या विश्वविद्यालय परिसर में निवास करते हैं, उनका पंजीकरण नगर छात्र-निकाय के संरक्षण में किया जाता है। ऐसे छात्रों के शैक्षिक, सांस्कृतिक व बौद्धिक विकास के दायित्व का निर्वहन नगर छात्र-निकाय विभिन्न इकाइयों के मुख्य संरक्षक एवं संरक्षकों की देख-रेख में किया जाता है। नगर छात्र निकाय की कुल पाँच इकाइयाँ निम्नलिखित है :

१. उत्तरी निकाय
२. दक्षिणी एवं रामनगर निकाय
३. पश्चिमी एवं डी.एल.डब्ल्यू. निकाय
४. पूर्वी निकाय
५. महिला महाविद्यालय इकाई (केवल छात्राओं के लिए)

नगर छात्र निकाय नगरीय छात्रों के लिए टेबल-टेनिस, शतरंज, कैरम, फुटबॉल, बालीबॉल, व क्रिकेट इत्यादि खेलकूद के अतिरिक्त स्तरीय प्रतियोगी पत्रिकायें, दैनिक समाचार पत्र (हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में) आदि छात्रों के अध्ययनार्थ हेतु उपलब्ध कराता है।

नगर छात्र निकाय द्वारा प्रतिवर्ष बहुउद्देश्यीय क्रिया-कलापों तथा विभिन्न प्रकार के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक ढनिबन्ध लेखन, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, सुभाषण, कार्टूनिंग पेंटिंग, फोटोग्राफी, पोस्टर मेकिंग, मेंहदी, रंगोली, वादन (सितार, तबला, बॉसुरी एकल गायन व काव्य पाठ) इत्यादिल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में सत्र २०१४-२०१५ में नगर छात्र निकाय द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में ७६२ छात्रों ने सक्रियता से भाग लिया। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विशेष समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया है। वर्तमान सत्र वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह १७ अप्रैल, २०१५ को आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. रवि प्रताप सिंह, निदेशक, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि. ने किया। ८२ विजेता प्रतिभगियों को निदेशक जी द्वारा पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इस समारोह के मौके पर छात्र अधिष्ठाता के अलावा बहुतेरे प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

९.२४.५. छात्र कल्याण: समान अवसर एवं समावेशी पद्धति

(क) अनु.जाति/अनु.जनजाति के लिए विशेष प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय में सम्पर्क अधिकारी के रूप में उपकुलसचिव के प्रभार के अन्तर्गत, अनु.जाति/अनु.जनजाति समुदाय के कर्मचारियों, छात्रों एवं शिक्षकों के हितों के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। जिसका कार्य भारत सरकार की आरक्षण सम्बन्धित नीतियों के क्रियान्वयन की देखरेख और सम्बन्धित सरकारी मंत्रालयों/ कार्यालयों को समय-समय पर सूचनाएँ उपलब्ध कराना है। कुलपति जी के निर्देश पर उप कुलसचिव, सामान्य प्रशासन के परिपत्र सं. आर/ जीएडी/ एससी/एसटी ग्रीवांस सेल/६७१०/६७२३ दिनांक ११-०५-२०१३ के द्वारा निम्नलिखित प्रकोष्ठ का गठन किया गया है:

(१) अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति विश्वविद्यालय स्तर पर शिकायत प्रकोष्ठ

(२) अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति संकाय स्तर पर शिकायत समिति

(३) अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति विभागीय स्तर पर शिकायत समिति

(ख) अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित विश्वविद्यालय स्तर पर क्रियान्वित की गयी आरक्षण नीति

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार द्वारा अधिसूचित अनिवार्य प्राविधानों को दृष्टिगत रखते हुये विश्वविद्यालय द्वारा अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिये क्रमश: १५ प्रतिशत एवं ७.५ प्रतिशत की दर से निम्नलिखित हेतु आरक्षण लागू किया गया है:

१. विभिन्न पाठयक्रमों में प्रवेश हेतु
२. छात्रावासों में कमरों के आवंटन हेतु
३. शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों के आवासों के आवंटन हेतु
४. शिक्षकों के चयन (असिसटेंट प्रोफेसर से प्रोफेसर स्तर तक) हेतु
५. गैर शिक्षण कर्मचारियों के चयन हेतु

(ग) अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति हेतु स्थायी समिति

माननीय कुलपति के आदेशानुसार अधिसूचना सं.एससीटी/II/११.१२/२८८ दिनांक ०८.१०.२०११ द्वारा एक स्थायी समिति का पुनर्गठन किया गया है। माननीय कुलपति जी के आदेशानुसार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की स्थायी समिति की एक उप समिति भी गठित की गयी है, जो विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों की प्रवेश समितियों द्वारा अग्रसारित संदिग्ध जाति प्रमाण-पत्रों की जाँच एवं सत्यापन का कार्य करती है। उप-समिति के निर्देशानुसार संदिग्ध जाति प्रमाण-पत्रों को सक्षम अधिकारियों के पास सत्यापन के लिए मुख्य आरक्षाधिकारी, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के माध्यम से भेजा जाता है।

(घ) अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति पर्यवेक्षक

विश्वविद्यालय में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय के हितों की रक्षा के लिए विभिन्न प्रवेश समितियों/चयन समितियों/ छात्रावास आवंटन समिति/नियुक्ति सहित पदोन्नति हेतु गठित समितियों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति श्रेणी के अध्यापकों में से एक व्यक्ति को पर्यवेक्षक के रूप में नामित किया जाता है। इस वर्ग से सम्बन्धित अध्यापकों की सूची इस प्रकोष्ठ द्वारा प्रत्येक वर्ष जुलाई माह में जारी की जाती है।

(ङ) आंकड़ों (डाटा) का संकलन

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ नियमित रूप से छात्रों के प्रवेश, छात्रावास सुविधा, अध्येतावृत्ति/छात्रवृत्ति एवं शिक्षण तथा गैर शिक्षण कर्मचारियों के आवासों से सम्बन्धित सांख्यिकीय आंकड़ों को उपलब्ध कराता रहता है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुवीक्षण समिति द्वारा अनुसूचित जातियों/ अनुसूचित जनजातियों के लिये निर्धारित आरक्षण नीति के क्रियान्वयन के लिए उपयोग किया जाता है।

(च) शिकायत पंजिका

इस प्रकोष्ठ द्वारा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय के छात्रों, कर्मचारियों तथा शिक्षकों से प्राप्त शिकायतों को प्रकोष्ठ में उपलब्ध शिकायत पुस्तिका में पंजीकृत कर, सम्बन्धित ईकाइयों को आख्या/आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित किया जाता है तथा प्रकरण पर की गयी प्रत्येक कार्यवाही का विवरण भी दर्ज होता है तथा समय-समय पर प्रकोष्ठ उपलब्ध इन आकड़ों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग एवं राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग को प्रेषित करता है।

अन्य पिछड़ा वर्ग

(क) अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए विशेष प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय में सम्पर्क अधिकारी के रूप में संयुक्त कुलसचिव के प्रभार के अन्तर्गत अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए निर्धारित आरक्षण नीति के क्रियान्वयन की निगरानी हेतु एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है। यह प्रकोष्ठ पहले अ.जा./अ.ज.जा. प्रकोष्ठ का ही अंग था परन्तु वर्तमान् में कुलपति जी के आदेशानुसार एवं सामान्य प्रशासन के परिपत्र संख्या आर/जीएडी/क्रीएशन आफ सेल्स/६६९९ दिनांक ११-५-२०१३ के अनुसार **पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ** स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा है साथ ही वर्तमान में यह प्रकोष्ठ **अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ** का भी कार्य देख रहा है।

(ख) अन्य पिछड़ी जाति से सम्बन्धित आरक्षण नीति

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी अधिसूचनाओं के क्रियान्वयन फलस्वरूप विश्वविद्यालय द्वारा चयन एवं प्रवेश प्रक्रियाओं में अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए २७ प्रतिशत आरक्षण के अनिवार्य प्रावधान को विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित हेतु क्रियान्वित किया गया है:-

१. विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश
२. शिक्षक सदस्यों का चयन (असिसटेंट प्रोफेसर स्तर तक)
३. गैर-शिक्षण कर्मचारी पदों पर चयन

(ग) आंकड़ा (डाटा) संकलनः

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार यह प्रकोष्ठ छात्रों के प्रवेश, अध्येतावृत्ति/ छात्रवृत्ति, शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों के चयन, जैसे-विभिन्न मामलों पर नियमित रूप से सांख्यकीय आंकड़े उपलब्ध करता है।

(घ) शिकायत पंजिका

अन्य पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ में एक शिकायत पंजिका उपलब्ध है, जिसमें अन्य पिछड़ी जाति के अभ्यर्थियों से प्राप्त शिकायतों को पंजीकृत कर इन शिकायतों को संबंधित ईकाइयों में आख्या/आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजता है। इन शिकायतों का नियमानुसार निस्तारण एवं तद्नुसार जबाब प्रेषित करता है।

(ङ) रेमेडियल कोचिंग सेन्टर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नि:शुल्क कोचिंग योजना के अन्तर्गत निर्धारित निर्देशों के अनुसार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति (नान क्रीमी लेयर), अल्पसंख्यक समुदाय के लिए नेट (NET) परीक्षा की तैयारी के लिए माननीय कुलपति

महोदय ने एक सात सदस्यीय सलाहकार समिति का गठन किया है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति (नान क्रीमी लेयर) तथा अल्पसंख्यक छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान संकाय के मनोविज्ञान विभाग में एक रेमेडियल कोचिंग सेन्टर का संचालन हो रहा है।

रिमेडियल कोचिंग के तहत २०१४-१५ में नेट परीक्षा हेतु कुल ७७२ छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित किया गया। जिसमें ५३९ अन्य पिछड़ा वर्ग (नान क्रीमी लेयर), १५७ अनुसूचित जाति, ५३ अनुसूचित जनजाति जाति एवं २३ अल्प संख्यक वर्ग के छात्र-छात्राओं ने सकुशल प्रशिक्षण प्राप्त किया।

वर्ष २०१४-१५ में सिविल सेवा परीक्षा हेतु कुल १३१ छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित किया गया जिसमें ८५ अन्य पिछड़ा वर्ग (नान क्रीमी लेयर), ३२ अनुसूचित जाति, ०७ अनुसूचित जनजाति जाति एवं ०७ अल्प संख्यक वर्ग के छात्र-छात्राओं ने सकुशल प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विकलांगता प्रकोष्ठ

उप सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली से प्राप्त पत्र संख्या एफ.६-१/२००२ (सीपीसी-द्वितीय) दिनांक २ मार्च, २००५ के अनुपालन में विकलांगजनों को संवैधानिक सुविधाओं को लागू करने हेतु विश्वविद्यालय में ''विकलांगता ईकाई'' का गठन किया गया। सामान्य प्रशासन के पत्र संख्या आर/जीएडी/प्रथम-विकलांग ईकाई/२६३७७ दिनांक २२.०९.२००६ द्वारा उपकुलसचिव (शिक्षण) को उक्त ईकाई का प्रभार सौंपा गया था। वर्तमान समय में इस प्रकोष्ठ के सम्पर्क अधिकारी संयुक्त कुलसचिव स्तर के अधिकारी हैं। भारत सरकार के नियमानुसार विकलांगजनों को ३% प्रतिशत (१% दृष्टि बाधित के लिये, १% श्रवण बाधित के लिये तथा १% प्रतिशत अस्थि बाधित के लिये) शिक्षण, गैर-शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति तथा प्रवेश परीक्षाओं में क्षैतिज आरक्षण दिया जाता है। भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुरूप अन्य छूट (जो उन्हें प्रदत्त है) भी दिया जाता है।

समान अवसर प्रकोष्ठ

कुलपति महोदय के निर्देशानुसार उपकुलसचिव, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति को समान अवसर प्रकोष्ठ का प्रभारी भी बनाया गया है (पत्र संख्या आर/डेव/मर्ज्ड स्किम/इ.ओ.सी./४१७४ दिनांक २९.०३.२०१०)। वर्तमान समय में उक्त प्रकोष्ठ के सम्पर्क अधिकारी विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव स्तर के अधिकारी हैं।

समान अवसर प्रकोष्ठ का उद्देश्य/कार्य

इस प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक,विकलांग एवं अन्य पिछड़े वर्ग (नान क्रीमी लेयर) के छात्रों को सफल एवं रोजगारपरक बनाने हेतु विशिष्ट योजना के तहत कोचिंग चला कर उन्हें मुख्य धारा में लाना है।

नि:शुल्क कार्यशाला का आयोजन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्नातक (अन्तिम वर्ष) एवं स्नात्तकोत्तर वर्ग में अध्ययनरत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, विकलांग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग (नान क्रीमी लेयर) के छात्र/छात्राओं एवं बेरोजगार स्नातकों के लिए अंग्रेजी भाषा के ज्ञान, कम्प्यूटर संचालन में दक्षता, आत्मविश्वास बढ़ाने की कला तथा कारपोरेट जगत के नीति नियमों से अवगत कराने एवं नियोजन के लिए उनकी क्षमता में सुधार हेतु कुलपति जी के निर्देश पर प्लेसमेन्ट कोआर्डिनेशन सेल, प्रबन्ध शास्त्र संकाय द्वारा प्रत्येक वर्ष एक दस दिवसीय नि:शुल्क कार्यशाला ''सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का आयोजन टाटा कन्सल्टेन्सी सर्विसेज लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में किया जाता है।

इस दस दिवसीय नि:शुल्क **''सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम''** में प्रशिक्षकों द्वारा अंग्रेजी तथा कम्प्यूटर ज्ञान के साथ-साथ छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के बारे में भी प्रशिक्षित किया जाता है। जिसमें से करीब ६० घण्टे का अंग्रेजी प्रशिक्षण, १० घंटे का कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं १० घंटे का प्रशिक्षण विश्लेषणपरक विचार से संबंधित होता है।

इस दस दिवसीय नि:शुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के पश्चात् टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज लिमिटेड के सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में सफल छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये जाते हैं।

इस वर्ष भी स्थानन समन्वय प्रकोष्ठ ने टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज लिमिटेड के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक ११.०३.२०१५ से २१.०३.२०१५ तक दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था। कार्यशाला में कुल १४७ अ.जा./ज.जा./ अल्पसंख्यक/विकलांग/ अ.पि.व. (नान क्रीमी लेयर) के अभ्यर्थियों ने सफलता पूर्वक कार्यशाला पूर्ण की तथा उन्हें प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया।

अन्नदान योजना काशी

हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर स्थित श्री विश्वनाथ मंदिर की स्थापना चैत्र कृष्ण अष्टमी तद् दिनांक ११ मार्च १९३१ को कृष्णाश्रम जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। श्री कृष्णश्रम जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पं. मदन मोहन मालवीय के निवेदन पर आये थे। श्री कृष्णश्रमजी गंगोत्री से और आगे तपस्यारत थे। सफेद संगमरमर से निर्मित इस मंदिर को बिरला मंदिर के नाम से भी जाना जाता हैं क्योंकि इस मंदिर के निर्माण में बिरला परिवार का योगदान सर्वाधिक है। इस मंदिर की ऊँचाई २५२ फीट है। इस मंदिर में प्रतिदिन हजारों की संख्या में देश-विदेश से दर्शनार्थी आते हैं। श्रावण मास, श्री महाशिवरात्रि, कार्तिक मास में दर्शन करने आने वाले दर्शनार्थियों की संख्या अधिक रहती है। श्री विश्वनाथ मंदिर द्वारा अन्नदान नामक एक योजना संचालित की जाती है। इस योजना के अन्तर्गत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्धन एवं मेधावी छात्र को नि:शुल्क दोपहर एवं रात्रि का भोजन दिया जाता है। वर्ष २०१४-१५ में इस योजना का लाभ ५० छात्रों को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष २०१४-१५ में मंदिर में श्रावण महोत्सव, नवरात्र, दीपावली एवं अन्नकूट, मालवीय जयन्ती, श्री महाशिवरात्रि, श्री विश्वनाथ मंदिर का स्थापना दिवस, हनुमान जयन्ती आदि महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

९.२४.६.पाठ्येतर गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान संस्थान

सत्र के दौरान स्नातक एवं स्नातकोत्तर विधार्थियों के साथ-साथ कुछ

हद तक शिक्षकों के लिए भी विभिन्न प्रकार के खेल एवं खेल गतिविधियां आयोजित की गई है। छात्रों को प्रतिक्षित एवं प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वो विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं, अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग ले सके।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर के तीन विधार्थियों का फुटबाल, योग एवं एथेलटिकस में विश्वविद्यालय की टीम के सदस्यों के रूप में चयन किया गया हैं। हमारे संस्थान की टीमें इंटर हॉस्टल क्रीकेट एवं इंटर फैक्ल्टी क्रीकेट एवं फुटबाल टूर्नामेंट में भी भाग ले चुकी है। २०१४-२०१५ में संस्थान की टीमें इंटर फैक्ल्टी क्रीकेट टूर्नामेंट में रनर रही है।

हमारे खेल के मैदान में सेंनथेटिक टेनिस कोर्ट हैं, जो न केवल कृषि विज्ञान संस्थान के विधार्थियों के लिए बल्कि आई.आई.टी. एवं अन्य संस्थान के विधार्थियों के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। संस्थान में खेल गतिविधियों को आयोजित करने की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री की अर्जी प्रस्तावित की गई है।

अन्य परिपत्र क्रियाकलाप

कृषि विज्ञान संस्थान का वार्षिक एथलेटिक मीट २०१४-२०१५, १९ से २१ मार्च, २०१५ के बीच मनाया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. रवि प्रताप सिहं थे। संस्थान प्रशासन की सहायता, विश्वविद्यालय स्पोट बोर्ड के तकनिकी सहयोग, संस्थान के छात्रों के स्वैच्छिक सहयोग तथा प्रो.एन.एन. सिहं, माननीय सचिव, एथेलेटिक संघ, कृषि विज्ञान संस्थान तथा प्रो. ए.के. नीमा, अध्यक्ष, एथेलेटिक संघ, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की देखरेख में इस वर्ष भी खेलकूद गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस वर्ष वार्षिक एथेलेटिक मीट में १६ विभिन्न एथेलेटिक खेलो (पुरूष /महिला) का आयोजन किया गया। संस्थान के लगभग २७५ (छात्र/छात्राओं) ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में जोश व खेल भावना से भाग लिया। व्यक्तिगत प्रतियोगिता जैसे - १०० मीटर दौड़, २०० मीटर दौड़, ४०० मीटर दौड़, ८०० मीटर दौड़, १५०० मीटर दौड़, ५००० मीटर दौड़, १००० मीटर दौड़, उँची कूद, लम्बी कूद, ट्रिपल कूद, ११० मीटर हर्डल, भाला फेक, चक्का फेक, गोला फेक तथा समूह प्रतियोगिता जैसे ४́१०० मी० रिले दौड़, ४́४०० मी. रिले दौड़ इत्यादि का आयोजन किया गया।

स्नातक, परास्नातक, एवं शोध कक्षाओं के विभिन्न छात्र-छात्राओं ने इन प्रतियोगिताओं में जोश व खेल भावना से भाग लिया। एथलेंटिक खेलो के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पदक प्रदान किये गये। संस्थान के एथलेटिक खेलों के इतिहास में पहली बार शिक्षिकाओं ने रस्साकशी में भाग लिया जिसकी विजेता छात्राओं की रस्साकशी टीम रही जिससे शिक्षिकाओं ने खेलों में जोश एवं सहभागिता दर्शाई, इसके अतिरिक्त गैर शिक्षण व शिक्षण संकाय के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

विभिन्न पदों तथा पदक विजेताओं द्वारा प्राप्त स्कोर के आधार पर बी.एससी. (कृषि) तृतीय वर्ष, समग्र कक्षा विजेता रही जिसने श्री बैजनाथ त्यागी ट्राफी प्राप्त की। इस शिक्षण सत्र के दौरान विभिन्न अन्तः कक्षा खेल प्रतियोगिता जैसे - क्रिकेट, वॉलीबाल तथा कबड्डी सफलतापूर्वक आयोजित किये गये जिसमें सभी कक्षाओं के छात्रों ने जोश तथा खेल भावना के साथ हिस्सा लिया। अन्तः कक्षा फुटबाल टूर्नामेन्ट में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बी.एससी. (एजी.) भाग-२ की विजेता टीम के आधार पर श्री एस.एन. सिहं मेमोरियल ट्राफी दी गया। अन्तः कक्षा क्रिकेट टीम को भी विजेता बी.एससी. (कृषि) भाग-३ टीम ही रही जिसे श्री आर.एन. देसाई मेमोरियल ट्राफी प्रदान की गयी।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

मानवीय संसाधन का गुणवत्ता के साथ विकास हमारे संस्थान का मुख्य विषय हैं। यह गुणवत्ता शिक्षा के अलावा, बिना जेबिक, सांस्कृतिक उपदेशों के नही हासिल किया जा सकता है। संस्थान अपने संकायों के सक्षम सदस्यों के इच्छुक व वेधशाला मार्ग दर्शन में छात्रों को सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रचुर अवसर प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें प्रेरित भी करती हैं।

शिक्षण सत्र २०१४-१५ के दौरान अपने अन्तः कक्षा सांस्कृतिक प्रतियोगिता (सृष्टि-२०१५) के अलावा, संस्थान ने स्पन्दन-२०१५ (अन्तः संकाय स्तर) तथा एग्रीयूनिफेस्ट-२०१५ (अन्तः विश्वविद्यालय स्तर) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया जिसका संक्षिप्तिकरण निम्न है:-

सृष्टि - २०१५ (संस्थान/अन्तः कक्षा स्तर) : संस्थान का वार्षिक अन्तः कक्षा प्रतियोगिता सृष्टि - २०१५, ०७-१० फरवरी, २०१५ को स्वतन्त्रता भवन में आयोजित किया गया। स्नातक, परास्नातक तथा शोध कक्षा के २५० से अधिक छात्रों ने साहित्यिक, रंगमंच, सूक्ष्म कला, संगीत तथा नृत्य गतिविधियों में हिस्सा लिया। नव आगमित बी.एससी. (एजी.) भाग - १ ने विभिन्न प्रतियोगिता जैसे- सूक्ष्म कला, संगीत, नृत्य तथा रंगमच गतिविधियों में अपने सीनियरों को कड़ी टक्कर दी तथा अपनी निहित प्रतिभा को दिखाया।

स्पन्दन (विश्वविद्यालय स्तर)

संस्थान टीम ने अन्तः संकाय युवा महोत्सव (स्पन्दन - २०१५) में हिस्सा लिया। युवा महोत्सव में साहित्यिक, रंगमंच, सूक्ष्म कला, संगीत तथा नृत्य जो पुरानी तथा नई भारतीय संस्कृति को दर्शाते है, सम्मिलत थे। प्रतिभागी छात्रों ने अपने निहित प्रतिभा तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न रंगो को दर्शाया। टीम का नेतृत्व अशोक कुमार, एम.एससी. (एजी.) - १, शशि शेखर, बी.एससी. (एजी.) - ४ और सागर जायसवाल बी.एससी. (एजी.) - ३ ने किया और विभिन्न प्रतियोगिता में ०२ सिल्वर व ०२ ब्रोंज पदक हासिल किया।

AGRI UNIFEST - २०१५ (अन्तः विश्वविद्यालय स्तर): आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय कृषि विश्वविद्यालय युवा महोत्सव का आयोजन १८ से २१ मार्च, २०१५ को एन.डी.आर.आई., करनाल, हरियाणा में किया गया। इसमे हिस्सा लेने के लिए १४ लड़को तथा ०९ लड़कियों की चयनित टीम भेजी गयी। युवा महोत्सव के दौरान ०२ (दो) संकाय सदस्य डॉ. बी जिर्ली और डॉ. एम. रघुरमन ने टीम का साथ दिया। वहाँ विभिन्न प्रतियोगिता के दौरान हमारी टीम के प्रदर्शन को दर्शकों ने खूब सराहा और साबुज गागुंली (एम.एससी. (एजी.) अंतिम वर्ष) द्वारा ऑन स्पाट पेटिंग में प्रथम पुरस्कार, तनुष्का ओझा (बी.एससी (एजी.)) द्वितीय वर्ष द्वारा

एक्सटेक्पोर में द्वितीय पुरस्कार तथा आदित्य सिहं (बी.एससी (एजी.)) द्वितीय वर्ष द्वारा मोनो एक्टिंग में कान्सोलेशन पुरस्कार अर्जित किया।

निवासीय सुविधाओं की दृष्टि से छात्रों के लिए दो छात्रावास (बाल गंगाधर तिलक छात्रावास, पी. जी. छात्रो के लिए व राधाकृष्णन छात्रावास, यू.जी. छात्रों के लिए) तथा लड़कियों के लिए दो महिला छात्रावास (कृषि महिला छात्रावास तथा रानी लक्ष्मी बाई महिला छात्रावास) हैं जो उनकी जरूरतों को पूरी करती हैं तथा घर से दूर घर जैसा आराम देते है। वार्डन तथा अन्य छात्रावास कर्मचारियों द्वारा विशेष महत्व तथा देखभाल की जाती है जिससे वे अपने घर जैसा महसूस करें।

निर्धारित पाठयक्रम के साथ-साथ शास्त्रों के ज्ञान का व्याख्याान करवाया गया जो छात्रों में उच्च नैतिक मूल्य तथा चारित्रिक गुण पैदा करते है।

इस संस्था का उद्देश्य और आत्मसमर्पण हमारे संस्थापक पं. मदन मोहन मालवीय जी के दृष्टिकोण की ओर केन्द्रित है जिसे अनुकरण करने में विश्वविद्यालय हमेशा गौरवान्वित महसूस करता है।

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान

- आईईएसडी दक्षिणी परिसर में इको क्लब का आयोजन हुआ।
- १७ जून, २०१४ को राजेन्द्र प्रसाद घाट पर गंगा बचाओं अभियान का आयोजन।
- २ अक्टूबर, २०१४ को प्रधानमंत्री द्वारा चलाये गये स्वच्छ भारत, सुन्दर भारत का संस्थान में आयोजन।
- विश्वविद्यालय स्थापना दिवस २४ फरवरी २०१५ को झाँकी कार्यक्रम में संस्थान के शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं छात्रों द्वारा झाँकी निकाली गयी।
- यूथ फेस्टिवल (स्पन्दन २०१५) में १३ छात्र भाग लिये जिसमें कु. कोमल शुक्ला को वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार एवं कु. मानसी बक्शी को अंग्रेजी कविता लेखन में तृतीय पुरस्कार मिला।

प्रबन्धशास्त्र संकाय

संकाय द्वारा प्रत्येक सत्र पर्यन्त सह पाठयक्रम एवं पाठयक्रमेतर गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इनमें राष्ट्रीय पर्वो पर छात्रों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्मिलित है। शैक्षणिक आयोजन जैसे कि सम्मेलन, संगोष्ठी, संकाय के वार्षिकोत्सव के साथ 'भूमा' का वार्षिक सम्मेलन भी मुख्य है। छात्र इनमें बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं तथा पुरस्कार प्राप्त करते है।

छात्र विश्वविद्यालय स्तर के कार्यक्रम स्पन्दन, स्पर्धा, जन्माष्टमी पर्व आदि अवसरों पर भी प्रतियोगिताओं में भाग लेते है तथा पुरस्कार प्राप्त करते है। भूमा के प्रादेशिक सम्मेलन भी आयोजित किए जाते है।

भौमिकी विज्ञान विभाग

प्रतिवर्ष छः अक्टूबर को जियोलॉजी दिवस पर एक प्रसिद्ध भूवैज्ञानिक के आमंत्रित व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। द्वितीय सत्र में इस दिवस पर विद्यर्थियों एवं अध्यापकों द्वारा सम्मिलित रूप से शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विभाग में वाद-विवाद, निबंध, तात्कालिक भाषण, पोस्टर एवं क्विज जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा ''वाराणसी में खाद्य प्रंसस्करण की संभावना'' शीर्षक से दो दिवसीय का किसानों का प्रशिक्षण क्रार्यक्रम १०-११ अक्टूबर, २०१४ को आयोजित किया गया।

- प्रोफेसर मार्क एटमेन तथा प्रोफेसर डी.सी. सेन को अतिथि वक्ता के रुप आमंत्रित किया गया।
- खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र के भवन के उपर दो मंजिलों का निर्माण किया गया।

महिला महाविद्यालय

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

२०१४-१५ अकादमिक सत्र के दौरान कई सांस्कृतिक कार्यक्रम का संयोजन किया गया। 'मन्थन सप्ताह' (३०.०१.२०१४ से ०६.०२.२०१५ तक) में छात्राओं ने प्रतिदिन दो सत्रों में आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में अत्यन्त उत्साह के साथ भागीदारी की। हिन्दी, अंग्रेजी और विज्ञान वाद-विवाद, संस्कृत स्तोत्र, पोस्टर, पेंटिग, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत भाषाओं में निबन्ध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। प्रत्येक सत्र में विषय से संबद्ध विशेषज्ञ निर्णायक मण्डल को आमंत्रित किया गया। उन्होंने विजेता छात्राओं के नाम घोषित करते हुए उनकी खामियों के साथ खूबियों की भरपूर सराहना की। प्रत्येक कार्यक्रम के संबद्ध प्राध्यापिका और प्राध्यापकों ने प्रतिभागियों के चयन में बड़े श्रम से कार्यक्रम को सम्पूर्णता प्रदान की। कार्यक्रम के प्रबन्धन में परोक्ष रूप से कार्य करने वाली छात्राओं को प्रोत्साहन करने के लिए प्रमाण पत्र दिया गया। निर्णायकों को प्राचार्या द्वारा स्मृति चिह्न सम्मान के साथ दिया गया और विजेता छात्राओं एवं प्रतिभागी छात्राओं को भी प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

- एक दिवसीय शिविर : श्रमदान, स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर, मालवीय जयन्ती के शुभ अवसर पर दीप प्रज्वलन
- दिनांक १२.०१.२०१५ को स्वामी विवेकानन्द जयन्ती समारोह के अवसर पर स्वामी जी के जीवन से सम्बद्ध वृत्तचित्र छात्राओं को दिखाया गया।
- सप्त दिवसीय विशिष्ट शिविर (१४.०२.२०१५ से २०.०२.२०१५ तक) आयोजित किया गया।

खेलकूद गतिविधियाँ

महिला महाविद्यालय के ऐथलेटिक एसोसिएशन ने विविध अन्तकक्षा टूर्नामेन्ट बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, खोखो, बास्केट बॉल, वॉलीबॉल, टग ऑफ वार, क्रिकेट आयोजित किया।

आर्य महिला महाविद्यालय

तेजस्विनी : दिनांक ५ सितम्बर, २०१४ को पोस्टर प्रदर्शनी लगाई गई। २० मार्च, २०१५ को समूह चर्चा का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'भारत में महिला सुरक्षा की चुनौतियाँ'। ३१ मार्च, २०१५ को व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था 'राजनीति में महिलाएं चुनौतियाँ और सुझाव'।

राष्ट्रीय सेवा योजना

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की पाँच ईकाइयां डॉ. मीनाक्षी चतुर्वेदी, डॉ. कविता आर्या, डॉ. प्रीति, डॉ. वीना सुमन एवं डॉ. श्रुति दूबे के निर्देशन में कार्य कर रही हैं। प्रत्येक इकाई एक दिवसीय एवं सप्तदिवसीय शिविर का आयोजन समाज के विभिन्न उपेक्षित गरीब बच्चों के लिए करती है। शिविर के अन्तर्गत महाविद्यालय की स्वच्छता, फूल-पौधे लगाना जैसे कार्य किये गये। रक्दान शिविर, राष्ट्रीय युवा दिवसर पर शैली का आयोजन एवं महिला स्वास्थ्य जागरूकता, महिला सशक्तीकरण तथा पर्यावरणीय सुरक्षा पर विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

एन.सी.सी.

महाविद्यालय में एन.सी.सी. की एक इकाई कार्यरत है। १५ जून-२५ जून, २०१४ को हिमाचल ट्रेकिंग कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य महिला के तीन विद्यार्थी चयनित हुए।७ १४ अगस्त, २०१४ की अवधि में सी.ए.टी.सी. कैंप का समापन का.हि.वि.वि. में किया गया जिसमें ६ प्रतिभागी चयनित हुये। आर्य महिला पी.जी. कॉलेज में १५ दिनों का योग शिविर १८ अप्रैल, २०१५-२ मई, २०१५ की अवधि में आयोजित किया गया।

स्पिक मैके

दिनांक १४.१०.२०१४ को पद्मश्री गीता चन्दन का भरत नाट्यम् नृत्य प्रस्तुत हुआ। दिनांक ३०.०८.२०१४ को सरफराज़ चिश्ती एवं साथियों द्वारा कव्वाली का गायन किया गया। २३ अप्रैल, २०१४ को पद्मश्री आनन्दा शंकर का भरत नाट्यम नृत्य आयोजित किया गया।

जागृति सेन्टर

महाविद्यालय में छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए जागृति सेन्टर कार्यरत है जिसमें समय-२ पर छात्राओं की काउन्सलिग कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

खेलकूद

छात्राओं के शारीरिक एवं मानसिक परिष्कार एवं परिवर्द्धन हेतु महाविद्यालय में बैडमिंटन, टेबिल टेनिस, बेसबाल, बास्केटबाल, योग इत्यादि की सुविधा प्रदान की जाती है।

वसन्त महिला महाविद्यालय

व्यावसायिक परामर्श

१४ मार्च, २०१५ को कम्युनिकेशन स्किल और व्यक्तित्व विकास विधायक कार्यक्रम आयोजित किया गया। ८ अक्टूबर, २०१४ को श्रेयस सक्सेना, आई.सी.ए. तथा श्रीकांत दुबे द्वारा वाणिज्य संकाय की लगभग ९० छात्राओं की कॅरिअर काउन्सिलिंग की गई। ७ फरवरी, २०१५ को सुश्री उषा अय्यर, पर्ल ऐकेडमी (दिल्ली, नोएडा, जयपुर, मुम्बई) ने अपॉर्चुनिटी इन क्रिएटीव कॅरिअर्स विषय पर शिक्षार्थियों से बातचीत की। २५ अक्टूबर, २०१४ को रिलायंस मनी इन्फ्रास्ट्रक्चर एल.टी.डी. द्वारा छः दिवसीय समर इन्टर्नशिप में महाविद्यालय की दस छात्राओं ने भाग लिया जिसमें सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट आइमन सिद्दिकी को प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

१४ अगस्त, २०१४ को हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र की टीम ने 'हिन्दुस्तान डायलॉग' कार्यक्रम में वसंत महिला महाविद्यालय की छात्राओं से शिक्षा, महिलाओं की समाज में स्थिति, समानता, कानून व्यवस्था, आरक्षण, सोशल मीडिया और शिक्षा व्यवस्था जैसे विषयों पर बातचीत की। ये कार्यक्रम डॉ. आरती निर्मल तथा डॉ. मंजरी शुक्ल के निर्देशन में हुआ। ३० अगस्त, २०१४ को महाविद्यालय की पन्द्रह छात्राओं ने पुलिस लाइन्स, वाराणसी में 'महिला सुरक्षा' विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया। ०१ सितम्बर, २०१४ को जोधपुर राजस्थान से पधारे सुरेश राव ने 'वेस्ट मैटीरियल' से कलात्मक वस्तुओं के निर्माण का प्रदर्शन किया। १६ सितम्बर, २०१४ को प्रो.एस.के. त्रिगुन, अध्यक्ष, एण्टी रैगिंग स्क्वायड, का.हि.वि. ने छात्राओं को रैगिंग के विषय में बताया। १८ सितम्बर, २०१४ को प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, इतिहास, ट्रैवेल एण्ड टूरिज़्म मैनेजमेण्ट तथा मास कम्युनिकेशन की छात्राओं ने श्री संजीव कुमार, डॉ. श्रेया पाठक, डॉ. प्रियंका सिंह के साथ 'ज्ञान प्रवाह' द्वारा आयोजित 'हेरिटेज ऑफ वाराणसी' कार्यक्रम में भाग लिया। २७ सितम्बर, २०१४ को विश्व पर्यटन दिवस पर नारा (स्लोगन), सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता हुई जिसमें स्लोगन में हिन्दी माध्यम से साक्षी बरनवाल को प्रथम, शिवानी सिंह को द्वितीय, रुचि पाण्डेय को तृतीय, कविता रावत को सांत्वना, अंग्रेजी माध्यम से आकांक्षा शर्मा को प्रथम, सोनम वर्मा को द्वितीय तथा शेफाली श्रीवास्तव को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। क्विज़ प्रतियोगिता में प्रतीक्षा रानी, जया उपाध्याय, सोनम वर्मा तथा विष्णुप्रिया को सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए। हिस्ट्री ऑफ आर्ट, कला संकाय, का.हि.वि.वि. द्वारा विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की छात्रा अंजली जायसवाल को एप्रिशिएशन प्रमाण पत्र दिया गया। २८ सितम्बर, २०१४ रोटरी क्लब द्वारा आयोजित 'सन् २०२० तक भारत एक विकसित राष्ट्र होगा' विषयक वाद-विवाद प्रतियोगिता में साक्षी बरनवाल और शिवानी सिंह को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री रामचन्द्र मिशन एवं संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र भारत व भूटान द्वारा आयोजित 'सत्यनिष्ठ होना मानवीय होना है' विषयक अखिल भारतीय निबन्ध लेखन में छात्राओं ने भाग लिया। १८ अक्टूबर, २०१४ आर.एस. बनारस लॉ कॉलेज द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में शिवांगी पाठक को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। २० अक्टूबर, २०१४ सनबीम कॉलेज फॉर वूमेन द्वारा आयोजित विविध कार्यक्रम में 'माइम' में चेलानी केसरवानी को द्वितीय स्थान तथा 'लोकनृत्य' में निष्ठा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। १० नवम्बर, २०१४ के एस०एम०एस०, वाराणसी द्वारा आयोजित 'आधारशिला-२०१४' के विविध कार्यक्रमों में छात्राओं ने भाग लिया। राजनीति विज्ञान की छात्रायें १४ नवम्बर, २०१४ को 'स्वच्छ भारत अभियान' की समूह चर्चा में सम्मिलित हुई। राजनीति विज्ञान की छात्राओं के लिए 'वूमेन इनपावरमेण्ट इज़ रिजर्वेशन' विषयक भाषण प्रतियोगिता (२८-११-२०१४) विभागीय संगोष्ठी डिफरेन्ट आसपेक्ट का आयोजन २४ अप्रैल २०१५ और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता भारतीय संविधान (१०-०४-१५), भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (२३-०४-१५)

विषयों पर हुई। १४ नवम्बर, २०१४ को हिन्दी-विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा स्वरचित काव्य-पाठ प्रस्तुत किया गया। २१ नवम्बर, २०१४ को संगीत एवं मंच कला संकाय के वाद्य विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला में संगीत-विभाग की छात्राओं ने भाग लिया। ३१ जनवरी, २०१५ को संस्कृत गंगा कार्यक्रम में सामूहिक गान प्रतियोगिता में भागमनी यादव, सोनिका यादव, वर्षा ने भाग लिया। ११ फरवरी, २०१५ को अग्रसेन महिला महाविद्यालय में आयोजित 'जापान की संस्कृति' विषयक निबन्ध प्रतियोगिता में प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व ऑनर्स की छात्रा सौम्या श्रीवास्तव को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

शैक्षणिक भ्रमण

शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत छात्रायें मसूरी, देहरादून, ऋषिकेश, हरिद्वार गईं। स्थानीय शैक्षणिक भ्रमण के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने पुरास्थल सारनाथ का अवलोकन किया। बी.ए. तृतीय वर्ष हिन्दी और एम.ए. हिन्दी की छात्रायें 'आदिकेशव घाट', 'प्रेमचन्द स्मारक', लमही तथा 'सारनाथ' गईं। अर्थशास्त्र विभाग द्वारा भी छात्राओं के लिए आई.आई.सी.टी. भदोही में एक औद्योगिक भ्रमण का आयोजन किया गया ।

पुस्तकालय

महाविद्यालय के पुस्तकालय का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है। शिक्षक और शिक्षार्थियों को एक लाख पुस्तकें और पैंतीस सौ पत्र-पत्रिकायें पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध करायी जाती हैं। छात्राओं के लिए कम्प्यूटर के माध्यम से पुस्तकों की खोज तथा इंटरनेट की जानकारी सम्बन्धी कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

विदाई समारोह

महाविद्यालय की सभी कक्षाओं की अन्तिम वर्ष की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन अप्रैल माह में किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के ज्वाइन्ट डायरेक्टर श्री एस.एन. दुबे ने छात्राओं के मंगलमय भविष्य की कामना की। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. रंजना सेठ ने छात्राओं के भीतर मानवीय मूल्यों के प्रति सजग रहने की बात की। उन्होंने छात्राओं को आगे बढ़ने के लिए सूत्र दिए। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ।

वसंत आश्रम छात्रावास

छात्रावास में श्रीकृष्णजन्माष्टमी, क्रिसमस, वसंत पंचमी उत्सव मनाये गये। छात्राओं के लिए पाठ्य सहगामी कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्तित्व विकास सम्बन्धी कार्यशाला, बैग मेकिंग, ब्यूटीशियन कोर्स, बेकिंग, कुकिंग जैसे प्रशिक्षण दिये गये।

वसन्त कन्या महाविद्यालय

खेलकूद

शिक्षणेत्तर कार्यकलापों के अन्तर्गत दिनांक ११.०२.२०१५ व १२.०२.२०१५ को महाविद्यालय परिसर में दो-दिवसीय खेल-समारोह का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत १०० मीटर दौड़, शॉटपुट, बैडमिंटन, शतरंज, लंबीकूद, वॉलीबाल, खो-खो एवं कबड्डी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। खेल-समारोह में कुल ३०० छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। खेल आयोजन के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. डी.के. दुरेहा (विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग, का.हि.वि.वि.) थे।

छात्राओं ने महाविद्यालय को विभिन्न क्रीड़ा-स्पर्धाओं में गौरव दिलाते हुए अंतर्महाविद्यालयीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता, चौखण्डी, अंतर्महाविद्यालयीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता, पड़ाव तथा डी.रे.का. द्वारा आयोजित जिला-स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता में तथा सीनियर चैम्पियनशिप राज्य-स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता, रायबरेली में सहभागिता की। महाविद्यालय की कुमारी गुंजन पटेल ने राज्यस्तरीय तथा जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता जो एन.सी.सी. नवल विंग, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित थी, सहभागिता की। इस वर्ष नौ छात्राओं का चयन एन.सी.सी., का.हि.वि.वि. में हुआ। जिसमें ६ छात्राएं एन.सी.सी. की नवल इकाई, २ छात्राएं एन.सी.सी. की एयर विंग तथा १ छात्रा का चयन आर्मी इकाई के लिए हुआ। २ छात्राओं का चयन आल इंण्डिया नौ-सैनिक कैम्प २०१५ के लिए हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना

वसन्त कन्या महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की पाँच ईकाइयों द्वारा वर्तमान सत्र में कुल तीन एक दिवसीय एवं एक विशेष सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

पहला एक दिवसीय शिविर दिनांक २४.०९.२०१४ को महाविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. कमला पाण्डेय जी ने संस्कृत साहित्य में पर्यावरण विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

दूसरा एक दिवसीय शिविर का आयोजन राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में ३१.१०.२०१४ को आयोजित किया गया। जिसमें स्वयं सेविकाओं को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलायी गई।

तीसरा एक दिवसीय शिविर का आयोजन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में दिनांक १२.०१.२०१५ को (स्वामी विवेकानन्द जी की जन्म तिथि) आयोजित किया गया। जिसमें स्वयं सेविकाओं ने साईकिल रेस, फेश पेन्टिंग एवं युवा जागृति रैली में प्रतिभागिता की।

इसी क्रम में सात दिवसीय शिविर का आयोजन २७.०१.२०१५ से ०२.०२.२०१५ तक किया गया। जिसके अन्तर्गत पाँचों ईकाइयों ने क्रमशः बिरदोपुर, खोजवाँ, जवाहर नगर, सरायनन्दन एवं सुदामापुर की मलिन बस्तियों में सफाई जागरूकता का संदेश दिया एवं विभिन्न स्थानों पर स्वयं सेविकाओं ने साफ-सफाई एवं श्रमदान किया।

सात दिवसीय शिविर के अन्तर्गत योग प्रशिक्षण कार्यशाला, सांगीतिक साहित्यिक फाइन आर्टस प्रतियोगिताएं जनजागरण रैली एवं नुक्कड़ नाटक आयोजित किये गये। स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत प्रख्यात स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रियम्बदा तिवारी द्वारा 'स्वास्थ्य एवं दैनिक स्वच्छता' पर व्याख्यान, डॉ. अंशु शुक्ला द्वारा 'अध्यापन के क्षेत्र में सभी स्तरों पर रोजगार की उपलब्धता' विषयक व्याख्यान, बी.ई.एफ. के अध्यक्ष श्री एस. सुन्दरम द्वारा 'गाँधी जी का जीवन मूल्य' प्रो. आर.पी. द्विवेदी, निदेशक, गाँधी अध्ययन पीठ (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ) द्वारा 'गाँधी जी के जीवन के विविध रोचक उद्धरण एवं उनके जीवन की चुनौतियां' विषयक व्याख्यान आयोजित किये गये।

शिविर का समापन समारोह दिनांक ०२.०२.२०१५ को मुख्य

अतिथि डॉ. पी.के. शर्मा कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं प्राचार्या, डॉ. कुसुम मिश्रा, वसन्त कन्या महाविद्यालय की उपस्थिति में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर में पाँचो ईकाइयों की २५० स्वयंसेविकाओं ने सहभागिता की।

सर्जना

रचनात्मक विस्तार-क्रम में वर्तमान सत्र में महाविद्यालय के साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के मंच 'सर्जना' के अन्तर्गत कुल १५ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्राओं के सर्वांगिण विकास की ओर केन्द्रित इस मंच में अक्टूबर २०१४ से फरवरी २०१५ के मध्य २ चरणों में आयोजित स्पर्धाओं में लगभग ५०० छात्राओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

संस्कृत मातृ मण्डलम

शैक्षणिक, सहशैक्षणिक तथा शिक्षणेतर गतिविधियों के अतिरिक्त यह संस्था छात्राओं में व्यक्तित्व-विकास, अनुशासन तथा मानव-मूल्यों व आदर्शों के जागरण के प्रति भी संकल्पित है।

छात्राओं में सांस्कृतिक अभिज्ञान के उद्देश्य से संस्कृत-मातृ-मंडलम् के अंतर्गत सत्र-पर्यन्त ६ वाग्वर्धिनी सभाएँ, एक सांस्कृतिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता दिनांक ०७.०९.२०१४ को तथा एक व्याख्यान का आयोजन दिनांक १८.०४.२०१५ को किया गया। इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में ४ समूहों में २० छात्राओं ने भागीदारी की।

महिला-प्रकोष्ठ 'उड़ान'

नारी-संचेतना के विविध आयामों पर सार्थक चिंतन करते हुए महाविद्यालय के महिला-प्रकोष्ठ 'उड़ान' के अंतर्गत दिनांक २५.०३.२०१५ को चार श्रुति नाटकों का प्रभावपूर्ण मंचन किया गया जिसमें छात्राओं ने नारी-शिक्षा, समानता के लिए संघर्ष तथा स्त्री-अस्मिता जैसे महत्वपूर्ण विषयों को अपने अभिनय से जीवंत कर दिया।

९.२५ हिन्दी प्रकाशन समिति (भौतिकी प्रकोष्ठ)

हिन्दी प्रकाशन समिति (भौतिकी प्रकोष्ठ), विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार व उत्थान में अग्रसर है। इसकी स्थापना विश्वविद्यालय के महान संस्थापक महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सन् १९३० में की गयी। इसकी स्थापना के पीछे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि एवं चिकित्सा शिक्षा की पुस्तकों को छात्र/छात्राओं के लिए हिन्दी में उपलब्ध कराना था। इस दिशा में प्रकोष्ठ द्वारा विज्ञान के विभिन्न विषयों पर अनेक मौलिक व हिन्दी में अनुवादित पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं। यह प्रकोष्ठ हिन्दी में विज्ञान लेखन, पुस्तक लेखन एवं अंग्रेजी में लिखी पुस्तकों के अनुवाद में संलग्न है। प्रकोष्ठ द्वारा पिछले पाँच वर्षों से *विज्ञान-गंगा* (ISSN २२३१-२४५५) का प्रकाशन किया जा रहा है। यह विज्ञान पत्रिका वर्ष में दो बार प्रकाशित की जाती है। अब तक *विज्ञान-गंगा* के नौ अंक प्रकाशित किए जा चुके हैं। विज्ञान-गंगा अंक ०९ का लोकार्पण गत २३ नवंबर, २०१५ को अध्यात्म गुरु श्री श्री रविशंकर एवं कुलपति माननीय प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी जी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इसमें विज्ञान, कृषि, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी से जुड़े लोकप्रिय वैज्ञानिक लेख रोचक व सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित किये जाते हैं। इसके साथ ही प्रकोष्ठ द्वारा समय-समय पर संगोष्ठी/परिसंवाद/कार्यशालाओं का भी आयोजन किया जाता है तथा विज्ञान को लोकप्रिय बनाने हेतु, वाराणसी और समीपवर्ती जनपदों के विद्यालयों में वाद-विवाद एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता के साथ लोकप्रिय वैज्ञानिक व्याख्यान का भी आयोजन करता है।

समिति द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तक निर्माण योजना के अन्तर्गत पिछले वर्षों में *ओजोन प्रदूषण* - वनस्पतियों एवं मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, *पर्यावरण विज्ञान के विविध आयाम* तथा *भारतीय वैज्ञानिक पुनर्जागरण की आधुनिक महाविभूतियाँ* पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है, जो छात्र-छात्राओं में अपना स्थान बना रही है। इनके साथ ही विज्ञान एवं पर्यावरण के प्रति रुझान पैदा करने के उद्देश्य से दो पुस्तिकाओं *जल संरक्षण – समस्याएँ एवं समाधान* तथा *पर्यावरण सुरक्षा – समस्याएँ एवं निदान* का भी प्रकाशन किया गया है। दो पुस्तकें *मधुमेह के कारण एवं निवारण* तथा *तरलन - एक सामान्य परिचय* मुद्रणाधीन हैं। कुछ अन्य पुस्तकों का लेखन कार्य भी प्रगति पर है।

भाग - २

वार्षिक रिपोर्ट २०१४-२०१५

परिशिष्ट - १

I - बी.एच.यू. कोर्ट के सदस्य

१. प्रो. वाई.सी. सिम्हाद्री
२. प्रो. इंदिरा हार्वे
३. प्रो. पंजाब सिंह
४. प्रो. डी. बालसुब्रह्मणयम
५. प्रो. डी.आर. गोयल
६. प्रो. आर.एन. सरन
७. प्रो. ए.पी. साहू
८. प्रो. के.पी. सिंह
९. प्रो. एम.के. मिश्रा
१०. श्री पंकज मिश्रा
११. प्रो. संजय धांडे
१२. जस्टिस लीला सेठ
१३. डॉ. अशोक सेन
१४. प्रो. रामचन्द्र गुहा
१५. श्रीमती अरूणा राय
१६. प्रो. एम.एस. वालिएथन
१७. श्री एस.डी. शिबुलाल
१८. डॉ. पृथ्वीश नाग
१९. श्री सुनील शर्मा
२०. डॉ. अरूण निगावेकर
२१. श्रीमती विभा पार्थसारथी
२२. श्रीमती विनिता कौल
२३. प्रो. बी.बी. भट्टाचार्या
२४. डॉ. मंगला राय
२५. डॉ. वी.एम. कटोच
२६. डॉ. एस. अय्याप्पन
२७. डॉ. रूपा साह
२८. डॉ. के.के. तलवार
२९. श्री जी.एस. अग्रवाल
३०. प्रो. चन्द्रमौलि उपाध्याय
३१. प्रो. संध्या सिंह कौशिक
३२. प्रो. आर.पी. सिंह
३३. प्रो. सिद्धार्थ सिंह
३४. प्रो. आनन्द कुमार
३५. प्रो. वी.के. कुमरा
३६. डॉ. अरविंद कुमार सिंह
३७. डॉ. डी के ओझा

II - कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य

१. **प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी**
कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
(कार्यकारिणी परिषद् के पदेन अध्यक्ष)

२. **डॉ. जगमोहन सिंह राजपूत**
पूर्व निदेशक,
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

३. **डॉ. महेश चन्द्र मिश्रा**
निदेशक,
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

४. **प्रो. डी.पी. सिंह**
निदेशक,
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्, बंगलूरू

५. **प्रो.वी. कुटुम्ब शास्त्री**
पूर्व कुलपति
सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय

६. **प्रो. सी.आर. ज्योतिषि**
पूर्व विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

७. **प्रो. मिशेल डेनीनो**
आई.आई.टी., गॉधीनगर

८. **प्रो. धनन्जय पाण्डेय**
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल
भा.प्रौ.सं. (बी.एच.यू.)

९. **डॉ.नचिकेता तिवारी**
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर

III - विद्वत् परिषद् के सदस्य

कुलपति [परिनियम १७ (१) (i) के अन्तर्गत]
(विद्वत् परिषद् के पदेन अध्यक्ष)
प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी
(२७.११.२०१४ से)
प्रो. राजीव संगल
(०३.०९.२०१४ से २७.११.२०१४ तक)
प्रो. विनय कुमार सिंह
(२२.०८.२०१४ से ०३.०९.२०१४ तक)
डॉ. लालजी सिंह
(२२.०८.२०१४ तक)

रेक्टर [परिनियम १७ (१) (ii) के अन्तर्गत]
प्रो. कमलशील
(१२.०९.२०१४ से)

संस्थानों के निदेशक [परिनियम १७ (१) (iii) के अन्तर्गत]

१. कृषि विज्ञान संस्थान
प्रो. आर.पी. सिंह

२. चिकित्सा विज्ञान संस्थान
प्रो. राना गोपाल सिंह

३. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान
प्रो. ए.एस. रघुबंशी

संकायों के प्रमुख
[परिनियम १७ (१) (iv) के अन्तर्गत]

आयुर्वेद संकाय
प्रो. सी.बी.झा (३०.०६.२०१४ तक)
प्रो. मनोरंजन साहू (०१.०७.२०१४ से)

चिकित्सा संकाय
प्रो. माण्डवी सिंह (३०.०६.२०१४ तक)
प्रो. आर.के. गोयल (०१.०७.२०१४ तक)

कला संकाय
प्रो. एम.एन. राय (३१.०१.२०१५ तक)
प्रो. कुमार पंकज (०१.०२.२०१५ से)

कृषि विज्ञान संकाय
प्रो. सूबेदार सिंह (१२.०८.२०१४ तक)
प्रो. ए. वैशम्पायन (१३.०८.२०१४ से)

वाणिज्य संकाय
प्रो. ए.आर. त्रिपाठी

दन्त विज्ञान संकाय
प्रो.टी.पी.चतुर्वेदी (०९.०९.२०१४ तक)
प्रो. नरेश कुमार (१०.०९.२०१४ से)

शिक्षा संकाय
प्रो. एच.सी.एस. राठौर

विधि संकाय
प्रो. बी.एन. पाण्डेय

प्रबन्ध शास्त्र संकाय
प्रो. आर.के. पाण्डेय

मंच कला संकाय
प्रो. लिपिका दास गुप्ता बोस (२०.०२.२०१५ तक)
प्रो. वि. बालाजी (२१.०२.२०१५ से १४.०३.२०१५तक)
प्रो. सरयू आर. सोनी (१४.०३.२०१५ से)

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय
प्रो. चंद्रमा पाण्डेय (०९.१२.२०१४ तक)
प्रो.जी.ए.शास्त्री (१०.१२.२०१४ से)

विज्ञान संकाय
प्रो. ए.के. श्रीवास्तव

समाजिक विज्ञान संकाय
प्रो. आर.आर. झा

दृश्य कला संकाय
प्रो. रविन्द्र नाथ मिश्रा (३१.०५.२०१४ तक)
प्रो. हीरा लाल प्रजापति (०१.०६.२०१४ से)

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय
प्रो. ए.एस.रघुबंशी (१२.०८.२०१४ तक)

प्रो. कविता शाह (१३.०८.२०१४ से)

शैक्षणिक विभागों के अध्यक्ष

[परिनियम १७ (१) (v) के अन्तर्गत]

१. कला संकाय

१. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
प्रो. मो. नसीम

२. अरबी
प्रो. (सुश्री) नसीमा फारूकी

३. बंगाली
प्रो.(सुश्री) बी.चक्रवर्ती (३१.०७.२०१४ तक)
प्रों. प्रकाश कुमार मैती (०१.०८.२०१४ से)

४. अंग्रेजी
प्रो. (सुश्री) वनश्री

५. विदेशी भाषाएँ
प्रो. विनोदा नंद तिवारी

६. फ्रांसीसी
प्रो. डी.के. सिंह

७. जर्मन अध्ययन
डॉ. एम.के. नटराजन

८. हिन्दी
प्रो. बलिराज पाण्डेय

९. कला इतिहास
प्रो. अजय कुमार सिंह

१०. भारतीय भाषाएँ
डॉ. दिवाकर प्रधान

११. पत्रकारिता एवं जनसम्प्रेषण
प्रो. ए.के. सिंह

१२. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
प्रो. एच.एन. प्रसाद

१३. भाषा विज्ञान
प्रो. राजनाथ भट

१४. मराठी
प्रो. एम.एन. राय

१५. पालि एवं बौद्ध अध्ययन
प्रो. सिद्धार्थ सिंह (२५.०९.२०१४ तक)
प्रो. पी. दूबे (२६.०९.२०१४ से)

१६. फारसी
प्रो.(सुश्री) समीन अख़्तर

१७. दर्शन एवं धर्म
प्रो. श्रीप्रकाश पाण्डेय

१८. शारीरिक शिक्षा
प्रो. डी.के. दुरेहा

१९. संस्कृत
प्रो. गोपाबंधु मिश्रा

२०. तेलगू
प्रो. बी. विश्वानाथ

२१.उर्दू
डॉ.याकुब अली खान

२. आयुर्वेद संकाय

१. द्रव्य गुण
प्रो.वी.के.जोशी (३०.०९.२०१४ तक)
प्रो. अनिल कुमार सिंह (०१.१०.२०१४ से)

२. कौमारभृत्य/बाल रोग
डॉ. बृज मोहन सिंह

३. काय चिकित्सा
प्रो. एन.पी. राय

४. क्रिया शरीर
डॉ. (सुश्री) संगीता गहलोत

५. औषधीय रसायन
प्रो. महेन्द्र सहाय

६. **प्रसूति तंत्र**
प्रो. (सुश्री) नीलम (१९.१०.२०१४ तक)
प्रो. (सुश्री) मंजरी द्विवेदी (२०.१०.२०१४ से)

७. **रचना शरीर**
डॉ. एच.एच. अवस्थी

८. **रस शास्त्र**
प्रो. आनन्द कुमार चौधरी

९. **संहिता एवं संस्कृत**
डॉ. प्रदीप कुमार गोस्वामी

१०. **शालक्य तंत्र**
डॉ. बी.एन. मुखोपाध्याय

११. **शल्य तंत्र**
प्रो. एम. साहू (१६.०१.२०१५ तक)
प्रो. लक्ष्मन सिंह (१७.०१.२०१५ से)

१२. **सिद्धांत दर्शन**
डॉ.बी.के.द्विवेदी

१३. **स्वास्थ्यवृत एवं योग**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष)

१४. **विकृत विज्ञान**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष)

१५. **संज्ञाहरण**
प्रो.डी.एन.पाण्डेय (१६.०१.२०१५ तक)
प्रो. के.के. पाण्डेय (१७.०१.२०१५ से)

३. कृषि विज्ञान संकाय

१. **कृषि अर्थशास्त्र**
प्रो. हरिन्द्रा प्रसाद सिंह

२. **शस्य विज्ञान**
प्रो. अविजीत सेन

३. **पशु पालन एवं दुग्ध विज्ञान**
प्रो. डी.सी. राय

४. **कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान**
प्रो. सी.पी. श्रीवास्तव

५. **प्रसार शिक्षा**
प्रो. अरूण कुमार सिंह

६. **कृषि अभियांत्रिकी**
प्रो. वी.के. चंडोला

७. **आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन**
प्रो. आर.पी. सिंह (२३.११.२०१४ तक)
प्रो. ए. वैशम्पायन (२४.११.२०१४ से)

८. **उद्यान विभाग**
प्रो. ए.के. सिंह

९. **कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान**
प्रो. (सुश्री) आशा सिन्हा (३०.०९.२०१४ तक)
प्रो. हरिकेश बी. सिंह (०१.१०.२०१४ से)

१०. **पादप कार्यिकी विज्ञान**
प्रो. (सुश्री) बन्दना बोस

११. **मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन**
प्रो. बी.आर. मौर्या

४. वाणिज्य संकाय
वाणिज्य
प्रो. ए.आर. त्रिपाठी

५. दन्त विज्ञान संकाय
दन्त विज्ञान
प्रो. टी.पी.चतुर्वेदी (०९.०९.२०१४ तक)
प्रो. नरेश कुमार (१०.०९.२०१४ से)

६. शिक्षा संकाय
शिक्षा
प्रो. एच.सी.एस. राठौर

७. विधि संकाय
विधि
प्रो. बी.एन. पाण्डेय

८. प्रबन्ध शास्त्र संकाय
प्रबन्ध शास्त्र
प्रो. आर.के. पाण्डेय

९. चिकित्सा संकाय

१. **निःसंज्ञा विज्ञान**
प्रो. एल.डी. मिश्रा

२. **शरीर रचना विज्ञान**
प्रो. जी.एल. साह (०९.०९.२०१४ तक)
प्रो. एस.एन. शामल (१०.०९.२०१४ से)

३. **जीव रसायन शास्त्र**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष)

४. **जैव भौतिकी**
प्रो. विमल किशोर पाण्डा

५. **हृदय रोग**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष)

६. **हृदय वक्ष शल्य चिकित्सा**
डॉ.(सुश्री) दमयन्ती अग्रवाल

७. **त्वचा एवं रति रोग विज्ञान**
प्रो. (सुश्री) लता शर्मा (३०.०६.२०१४ तक)
प्रो. श्याम सुंदर पाण्डेय (०१.०७.२०१४ से)

८. **अत:स्त्राव विज्ञान**
प्रो. एस.के. सिंह

९. **फॉरेंसिक मेडिसिन**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष) (०५.०५.२०१४ तक)
डॉ. मनोज कुमार (०६.०५.२०१४ से)

१०. **जठरांत्र शोथ विज्ञान**
प्रो. ए.के. जैन (३१.०८.२०१४ तक)
प्रो. वी.के. दीक्षित (०१.०९.२०१४ से)

११. **सामान्य चिकित्सा**
प्रो. मधुकर राय

१२. **सूक्ष्मजीव विज्ञान**
प्रो.गोपाल नाथ (३१.०१.२०१५ तक)
प्रो. (सुश्री) रागिनी तिलक (०१.०२.२०१५ से)

१३. **वृक्क रोग विज्ञान**
प्रो. जय प्रकाश ओझा

१४. **तंत्रिकीय चिकित्सा**
डॉ. विवेक नाथ मिश्रा

१५. **तंत्रिकीय शल्य चिकित्सा**
डॉ.विवेक शर्मा

१६. **प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान**
प्रो.(सुश्री)एन.आर अग्रवाल (३१.०१.२०१५ तक)
प्रो. (सुश्री) मधु जैन (०१.०२.२०१५ से)

१७. **नेत्र विज्ञान**
प्रो. वीरेन्द्र प्रताप सिंह

१८. **विकलांग विज्ञान**
प्रो.जी.एन.खरे (२२.१२.२०१४ तक)
प्रो. अमित रस्तोगी (२३.१२.२०१४ से)

१९. **कर्ण नासा कण्ठ विज्ञान**
प्रो. आर.के. जैन

२०. **बाल चिकित्सा**
प्रो. अशोक कुमार

२१. **बाल शल्य-चिकित्सा**
प्रो. शिव प्रसाद शर्मा

२२. **पैथालाजी**
प्रो.(सुश्री) उषा (०३.०२.२०१५ तक)
प्रो. मोहन कुमार (०४.०२.२०१५ से)

२३. **भैषजकी विज्ञान**
प्रो. आर.के. गोयल

२४. **शरीर विज्ञान**
प्रो.मलय बिकास मंडल (१९.०७.२०१४ तक)
प्रो. उदय प्रकाश (२०.०७.२०१४ से)

२५. **प्लास्टिक शल्य चिकित्सा**
प्रो. वी. भट्टाचार्या

२६. **सामुदायिक चिकित्सा (पी एस एम)**
प्रो. सी.पी. मिश्रा (११.०७.२०१४ तक)
प्रो. एस.पी. सिंह (१२.०७.२०१४ से)

२७. **मनोरोग चिकित्सा**
प्रो. संजय गुप्ता

२८. **विकिरण-निर्धारण छायांकरण (विकरण विज्ञान)**
प्रो. राम चंद्रा शुक्ला

२९. **विकिरण उपचार व विकिरण औषधि**
प्रो. एस. प्रधान

३०. **सामान्य शल्य चिकित्सा**
प्रो. राहुल खन्ना

३१. **यक्ष्मा एवं वक्ष रोग**
प्रो. जे.के. सामरिया

३२. **मूत्ररोग विज्ञान**
प्रो. यू.एस. द्विवेदी

३३. **सर्जिकल ऑकोलाजी**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष) (२७.०५.२०१४ तक)
डॉ. (सुश्री) मल्लिका तिवारी (२८.०५.२०१४ से)

१०. मंच कला संकाय

१. **नृत्य**
श्री पी.सी. होम्बल

२. **वाद्य संगीत**
डॉ. प्रह्लाद नाथ (३१.०७.२०१४ तक)
प्रो. राजेश शाह (०१.०८.२०१४ से)

३. **संगीत शास्त्र**
डॉ. (सुश्री) लिपिका दासगुप्ता बोस (२०.०२.२०१५ तक)
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष) (२१.०२.२०१५ से)

४. **कण्ठ संगीत**
प्रो. शारदा वेलंकर

११. विज्ञान संकाय

१. **जैवरसायन**
प्रो. (सुश्री) सुषमा राठौर

२. **वनस्पति विज्ञान**
प्रो. एल.सी. राय

३. **रसायन विज्ञान**
प्रो. लल्लन मिश्रा (३१.०१.२०१५ तक)
प्रो. वी.बी. सिंह (०१.०२.२०१५ से)

४. **संगणक विज्ञान**
डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा

५. **भूगोल**
प्रो. आर.पी.बी. सिंह

६. **भूविज्ञान**
प्रो. सत्येन्द्र सिंह

७. **भू-भौतिकी**
प्रो. के.एम. श्रीवास्तव

८. **गृह विज्ञान**
डॉ. इंद्रा बिसोनी

९. **गणित**
प्रो. एन.के. सिंह

१०. **भौतिक विज्ञान**
प्रो. एस.बी. राय (३१.०७.२०१४ तक)
प्रो. आर.एस. तिवारी (०१.०८.२०१४ से)

११. **सांख्यिकी**
प्रो. एस.के. उपाध्याय

१२. **प्राणि विज्ञान**
प्रो.(सुश्री) सी.एम.चतुर्वेदी (०३.०६.२०१४ तक)
प्रो. (सुश्री) चंदना हल्दर (०४.०६.२०१४ से)

१३. **आण्विक एवं मानव आनुवांशिकी विज्ञान**
प्रो.गोपेश्वर नारायन

१२. सामाजिक विज्ञान संकाय

१. **अर्थशास्त्र**
प्रो. एम.पी. सिंह

२. **इतिहास**
प्रो. ए.एस. सिंह

३. **राजनीति विज्ञान**
प्रो. के.के. मिश्रा

४. **मनोविज्ञान**
प्रो. राकेश पाण्डेय

५. **समाजशास्त्र**
प्रो. सोहन राम यादव

१३. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

१. **बौद्ध एवं जैन दर्शन**
डॉ.ए.के.जैन

२. **धर्मागम**
डॉ. कमलेश झा

३. **धर्मशास्त्र एवं मीमांसा**
प्रो. एन.आर. श्रीनिवासन

४. **ज्योतिष**
प्रो. चन्द्रमौलि उपाध्याय

५. **साहित्य**
प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय

६. **वेद**
संकाय प्रमुख (विभागाध्यक्ष)

७. **वैदिक दर्शन**
प्रो. राजाराम शुक्ल

८. **व्याकरण**
प्रो. आर.सी. पण्डा (१०.०२.२०१५ तक)
प्रो. बी.एस. शुक्ला (११.०२.२०१५ से)

१४. दृश्य कला संकाय

१. **प्रयुक्त कला**
प्रो. हीरा लाल प्रजापति

२. **चित्रकारी**
प्रो. (सुश्री) मृदुला सिन्हा

३. **प्लास्टिक कला**
श्री एम.एल.गुप्ता (३०.०६.२०१४ तक)
श्री बिनोद कुमार सिंह (०१.०७.२०१४ से)

१५. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास विभाग
प्रो. ए.एस.रघुबंशी (१२.०८.२०१४ तक)
प्रो. (सुश्री) कविता शाह (१३.०८.२०१४ से)

अन्तर्विषयी स्कूल के समन्वयक

१. **जैव प्रौद्योगिकी स्कूल**
प्रो. ए.एम. कायस्था

२. **खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी केन्द**
प्रो. आलोक झा (०१.०५.२०१४ तक)
प्रो. एस.पी. सिंह (०२.०५.२०१४ से)

प्राचार्या, महिला महाविद्यालय

(परिनियम १७(१) (vi) के अन्तर्गत)
प्रो. संध्या कौशिक

विश्वविद्यालय की सुविधाओं के लिए स्वीकृत महाविद्यालयों के प्राचार्य

(परिनियम १७ (१) (vii) के अन्तर्गत)

१. प्राचार्या, वसन्त कन्या महाविद्यालय
डॉ. (सुश्री) कुसुम मिश्रा

२. प्राचार्या, वसन्त महिला महाविद्यालय
डॉ. (सुश्री) विजयी शिवपुरी

३. प्राचार्या, आर्य महिला पीज़ी. महाविद्यालय
डॉ. (श्रीमती) रचना दूबे

४. प्राचार्य, दयानन्द पोस्ट ग्रेजुएट महाविद्यालय
डॉ. एस.डी. सिंह

समस्त प्रोफेसर (आचार्य) जो शैक्षणिक विभागों के अध्यक्ष नहीं हैं (परिनियम १७ (१) (viii) के अन्तर्गत):

१. कृषि विज्ञान
१. डॉ. सूबेदार सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. निर्मल डे
असोसिएट प्रोफेसर
३. डॉ. बी.के. शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

२. कला संकाय
१. डॉ. कमल शील
प्रोफेसर
२. डॉ. प्रयास चतुर्वेदी
असोसिएट प्रोफेसर
४. डॉ. अनुराग देव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

३. आयुर्वेद संकाय
१. डॉ. वी. के. जोशी
प्रोफेसर
२. डॉ. ओम प्रकाश सिंह
असोसिएट प्रोफेसर
३. डॉ. शिव जी गुप्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

४. वाणिज्य संकाय
१. डॉ. एस.पी.श्रीवास्तव
प्रोफेसर
२. श्री राम स्वरूप मीणा
असोसिएट प्रोफेसर
३. डॉ. बृजेश प्रताप सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

५. दन्त चिकित्सा संकाय
१. डॉ. (सुश्री) नीलम मित्तल
प्रोफेसर
२. डॉ. फ़रहान दुर्रानी
असोसिएट प्रोफेसर
३. डॉ. सतेन्द्र कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

६. शिक्षा संकाय
१. डॉ. हरिकेश सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. (सुश्री) मधु कुशवाहा
असोसिएट प्रोफेसर
३. सुश्री. दीपा मेहता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

७. विधि संकाय
१. डॉ. एम.पी. सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. एस.पी. राय
असोसिएट प्रोफेसर
३. श्री विजय कुमार सरोज
असोसिएट प्रोफेसर

८. प्रबन्धशास्त्र संकाय
१. डॉ. एच.सी. चौधरी
प्रोफेसर
२. डॉ. पी.वी. राजीव
असोसिएट प्रोफेसर
३. श्री. मदन लाल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

९. चिकित्सा संकाय
१. डॉ. (सुश्री) माण्डवी सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. ए.एस.श्रीवास्तव
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. रवि शंकर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१०. मंच कला संकाय

१. डॉ.(सुश्री) कृष्णा चक्रवर्ती
प्रोफेसर

२. श्री पी.सी. होमबल
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. (सुश्री) संगीता पंडित
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

११. विज्ञान संकाय

१. डॉ. ए.के. श्रीवास्तव
प्रोफेसर

२. डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. एस. श्रीकृष्णा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१२. सामाजिक विज्ञान संकाय

१. डॉ. (सुश्री) सी.पाडिया
प्रोफेसर

२. डॉ. राकेश पाण्डेय
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. (सुश्री) उर्मिला रानी श्रीवास्तव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१३. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

१. डॉ. एन.आर. श्रीनिवासन
प्रोफेसर

२. डॉ. श्यामानन्द मिश्रा
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. श्री कृष्णा त्रिपाठी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१४. दृश्य कला संकाय

१. डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्रा
प्रोफेसर

२. डॉ. विधु भूषण सिंह
असोसिएट प्रोफेसर

३. श्री. विजयी सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१५. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय

१. डॉ. ए.एस. रघुवंशी
प्रोफेसर

२. श्री जय प्रकाश वर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१६. महिला महाविद्यालय

१. डॉ. (सुश्री) संध्या सिंह कौशिक
प्रोफेसर

२. डॉ. (सुश्री) एस. सेनगुप्ता
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. सुश्री श्वेता प्रसाद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

विद्वत परिषद के बाह्य सदस्य (परिनियम १७ (१) (ix) के अन्तर्गत)

१. प्रो. ए.के. बक्शी
कुलपति
उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

२. प्रो. सुन्दर लाल
कुलपति
वी.बी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय

३. पद्म श्री डॉ. सुनील कोठारी
प्रमुख नृत्य इतिहासकार, विद्वान,
भारतीय शास्त्रीय नृत्य के लेखक और आलोचक

४. डॉ. जी.एन. सिंह
भारत और सचिव के दवा नियंत्रक-सह-इंडियन फार्माकोपिया कमीशन के वैज्ञानिक निदेशक

५. डॉ. के.पी.सी. गांधी
पूर्व पुलिस महानिरीक्षक और निदेशक,
आंध्र प्रदेश फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला अपराध नियंत्रक और संस्थापक फाउंडेशन भारत और टूथ
फाउंडेशन

६. डॉ. डब्ल्यू.एस. लकरा
निदेशक/कुलपति, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मत्स्य केन्द्रीय शिक्षा संस्थान

७. डॉ. कृति सिंह
पूर्व कुलपति, कृषि एवं प्रौद्योगिकी नरेन्द्र देव विश्वविद्यालय, फैजाबाद; हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर और इन्दिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर

८. डॉ. वाई.के. गुप्ता
अध्यक्ष, औषध विज्ञान एवं चिकित्सा विज्ञान के अखिल भारतीय संस्थान के मुख्य प्रवक्ता विभाग, नई दिल्ली

९. प्रो. टिका राम शर्मा
पूर्व निदेशक, जीवन विज्ञान केन्द्र, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय एवं प्रोफेसर एस.पी. राय चौधरी स्मारक फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष

१०. प्रो. आर.बी. सिंह
अध्यक्ष, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान एकेडमी, नई दिल्ली

इमेरिटस प्रोफेसर (विशेष आमंत्रित)
(अध्यादेश १२ के प्रावधनों के अन्तर्गत)

१. **प्रो. गजेन्द्र सिंह**
शरीर रचना विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

२. **प्रो. जे. पी. लाल**
अनुवंशिकी और पादप प्रजनन, चि.वि.सं.

३. **डॉ. मारूति नन्दन प्रसाद तिवारी**
कला इतिहास

४. **डॉ. विभा त्रिपाठी**
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय

५. **प्रो. सी.बी. झा**
रसशास्त्र विभाग, आयुर्वेद संकाय

६. **प्रो. एम.एस. श्रीनिवासन**
भूविज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

७. **प्रो. जे.एस. सिंह**
वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

८. **प्रो. ओ.एन. श्रीवास्तव**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

९. **प्रो. टी.वी. रामाकृष्णन्**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

१०. **प्रो. के.पी. सिंह**
वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय

११. **प्रो. सी.पी. सिंह**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

१२. **प्रो. श्री सिंह**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

१३. **प्रो. एस.सी. लखोटिया**
जीव विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

१४. **प्रो. बी.डी. सिंह**
जैव प्रौद्योगिकी स्कूल, विज्ञान संकाय

१५. **प्रो. बी.एन.सिंह**
प्राणी विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

१६. **प्रो. टी. लाल**
भूभौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

१७. **प्रो. एस.के. सेनगुप्ता**
रसायनशास्त्र, विज्ञान संकाय

१८. **प्रो. लल्लन मिश्रा**
रसायनशास्त्र, विज्ञान संकाय

१९. **प्रो. के.डी. त्रिपाठी**
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

२०. **प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी**
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

२१. **प्रो.सुशीला सिंह**
महिला महाविद्यालय

डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर (विशेष आमंत्रित)

१. **प्रो. टी.के.लाहिरी**
हृदय वक्ष शल्य चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

२. **प्रो. एच.एस. शुक्ला**
सर्जिकल ऑनकालॉजी, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

३. **प्रो. (श्रीमती) एस. चूड़ामणी गोपाल**
बाल शल्य चिकित्सा विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

४. **प्रो. टी.एम. महापात्रा**
सूक्ष्म जीविकी विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

५. **प्रो. आर.जी. सिंह**
वृक्क रोग विज्ञान

६. **प्रो. पी.के. अग्रवाल**
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय

७. **प्रो. आर.एच.सिंह**
कायचिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं.

८. **प्रो. जी.पी. दूबे**
द्रव्यगुण विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं.

९. **प्रो. यशवंत सिंह**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

विश्वविद्यालय के अधिकारी

विजिटर
भारत के राष्ट्रपति

कुलाधिपति
डॉ. कर्ण सिंह

कुलपति
प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी (२७.११.२०१४ से)
प्रो. राजीव संगल (०३.०९.२०१४ से २७.११.२०१४ तक)
प्रो. विनय कुमार सिंह (२२.०८.२०१४ से ०३.०९.२०१४ तक)
प्रो.लालजी सिंह (२२.०८.२०१४ तक)

रेक्टर
प्रो. कमलशील (१२.०९.२०१४ से)

कुलसचिव
डॉ. के. पी. उपाध्याय (०५.०९.२०१४ से)
प्रो. विनय कुमार सिंह (०८.०७.२०१४ से ०५.०९.२०१४ तक)
प्रो. जी.एस. यादव (०४.०९.२०१४ तक)

वित्त अधिकारी
श्री अभय कुमार ठाकुर

परीक्षा नियन्ता
डॉ. के.पी.उपाध्याय

पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. ए.के. श्रीवास्तव

छात्र अधिष्ठाता
प्रो. विनय कुमार सिंह (०८.०७.२०१४ तक)
डॉ. एम.के. सिंह (०८.७.२०१४ से)

मुख्य कुलानुशासक
प्रो. अरविन्द कुमार जोशी (२०.११.२०१४ तक)
प्रो. सत्येन्द्र सिंह (२१.११.२०१४ से)

चिकित्सा अधीक्षक
प्रो. यू.एस. द्विवेदी (१४.१०.२०१४ तक)
प्रो. के.के. गुप्ता (१५.१०.२०१४ से)

संस्थानों के निदेशक

१. कृषि विज्ञान
प्रो. आर.पी. सिंह

२. चिकित्सा विज्ञान
प्रो. राणा गोपाल सिंह

३. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास
प्रो. ए.एस.रघुबंशी

संकायों के संकाय प्रमुख

१. आयुर्वेद संकाय
प्रो. सी.बी.झा (३०.०६.२०१४ तक)
प्रो. मनोरंजन साहू (०१.०७.२०१४ से)

२. चिकित्सा संकाय
प्रो.(सुश्री.) माण्डवी सिंह (३०.०६.२०१४ तक)
प्रो. आर. के. गोयल (०१.०७.२०१४ से)

३. कला संकाय
प्रो. एम.एन. राय (३१.०१.२०१५ तक)
प्रो. कुमार पंकज (०१.०२.२०१५ से)

४. कृषि संकाय
प्रो. सूबेदार सिंह (१२.०८.२०१४ तक)
प्रो. ए. वैशम्पायन (१३.०८.२०१४ से)

५. वाणिज्य संकाय
प्रो. ए.आर. त्रिपाठी

६. दन्त विज्ञान संकाय
प्रो.टी.पी.चतुर्वेदी (०९.०९.२०१४ तक)
प्रो. नरेश कुमार (१०.०९.२०१४ से)

७. शिक्षा संकाय
प्रो. एच.सी.एस. राठौर

८. विधि संकाय
प्रो. बी.एन. पाण्डेय

९. प्रबन्ध शास्त्र संकाय
प्रो. आर.के. पाण्डेय

१०. मंच कला संकाय
प्रो. (सुश्री) लिपिका दास गुप्ता बोस (१३.०३.२०१५ तक)
प्रो. (सुश्री) सरयू आर. सोनी (१४.०३.२०१५ से)

११. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय
प्रो. चंद्रमा पाण्डेय (०९.१२.२०१४ तक)
प्रो.जी.ए.शास्त्री (१०.१२.२०१४ से)

१२. विज्ञान संकाय
प्रो. ए.के. श्रीवास्तव

१३. समाजिक विज्ञान संकाय
प्रो. आर.आर. झा

१४. दृश्य कला संकाय
प्रो. रविन्द्र नाथ मिश्रा (३१.०५.२०१४ तक)
प्रो. हीरा लाल प्रजापति (०१.०६.२०१४ से)

१५. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय
प्रो. ए.एस.रघुबंशी (१२.०८.२०१४ तक)
प्रो. (सुश्री) कविता शाह (१३.०८.२०१४ से)

१६. महिला महाविद्यालय (प्राचार्या)
प्रो. एस.एस. कौशिक

परिशिष्ट - २

विश्वविद्यालय के शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान का विवरण (सत्र २०१४-२०१५)

संस्थान/संकाय/विभाग	प्रकाशनों की संख्या								
	शोध-पत्र		लेख		प्रकाशित पुस्तकें		मोनोग्राफ	मैन्युल	अन्य
	राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय			
कृषि विज्ञान संस्थान	२९६	४२	५७	११	१२६	२४	-	८	-
खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र									
प्रो. अनिल कुमार चौहान	३	५	४	-	१	-	-	-	-
डॉ. अभिषेक दत्त त्रिपाठी	-	३	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. अरविन्द	२	१	-	-	-	-	-	-	-
ई. दुर्गा शंकर बुनकर	१	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अमृता पूनिया	१	१	१	-	-	-	-	-	-
चिकित्सा विज्ञान संस्थान									
चिकित्सा संकाय									
निश्चेतन विज्ञान	४	८	-	-	१	-	-	-	२ चैप्टर
शरीर रचना विज्ञान	८	४	-	-	-	-	-	-	-
जीवरसायन	७	१३	-	-	-	-	-	-	-
सीवीटीएस	५	-	-	-	-	-	-	-	-
त्वचा एवं रतिरोग विभाग	१३	-	-	-	-	-	-	-	-
इन्डोक्रिनोलॉजी एण्ड मेटाबोलिज्म	३	११	-	-	-	-	-	-	४ चैप्टर
फारेन्सिक मेडिसिन	४	११	-	-	-	-	-	-	२ चैप्टर
जनरल सर्जरी	२८	३६	-	-	१	-	-	-	६ चैप्टर
माइक्रोबायोलाजी	११	२७	-	-	-	-	-	-	-
मलिक्यूलर बॉयोलॉजी इकाई	३	५	-	-	१	-	-	-	१ चैप्टर
न्यूरोलाजी	३	८	-	-	-	-	-	-	-
न्यूरो सर्जरी	३	-	-	-	-	-	-	-	-
प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग	३५	-	-	-	-	-	-	-	-
नेत्र रोग विभाग	-	४	-	-	-	-	-	-	-
हड्डी रोग	७	१	-	-	-	-	-	-	४ चैप्टर
बाल सर्जरी	२	४	-	-	-	-	-	-	-
बाल रोग	३१	४८	-	-	-	-	-	-	१० चैप्टर
प्लास्टिक सर्जरी	३	-	-	-	-	-	-	-	१ चैप्टर
पैथोलाजी	५	१८	-	-	-	-	-	-	-
रेडियो डायग्नोसिस एण्ड इमेजिंग	११	४	-	-	-	-	-	-	१ चैप्टर
आर.टी.आर.एम	५	४	-	-	-	-	-	-	-
सर्जिकल आंकोलाजी	३	१	-	-	-	-	-	-	-
आयुर्वेद संकाय									
द्रव्यगुण	७	१२	-	-	-	-	-	-	-
कौमार भृत्य	१६	-	-	-	-	-	-	-	५ चैप्टर
काय चिकित्सा	८०	-	-	-	-	-	-	-	३ चैप्टर
क्रिया शरीर	२४	-	-	-	१	-	-	-	१६ चैप्टर
मेडिसिनल कमेस्ट्री	३	१०	-	-	-	-	-	-	-

रस शास्त्र	१६	-	-	-	१	-	-	-	१ चैप्टर
संहिता एवं संस्कृत	१२	९	-	-	२	-	-	-	-
संज्ञाहरण	-	६	-	-	-	-	-	-	-
सिद्वान्त दर्शन	१२	-	-	-	-	-	-	-	-
स्वस्थ वृत्त व योग	१	१५	१६	-	१	-	-	-	२ चैप्टर
विकृति विज्ञान	१६	१	३	-	२	-	-	-	-
दन्त चिकित्सा विज्ञान	४४	१०	-	-	-	-	-	-	-
पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय									
प्रो. ए. एस. रघुबंशी	-	८	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. के. शाह	१	११	२	-	-	-	-	-	३
डॉ. जी. एस. सिंह	-	१	-	-	-	-	-	-	२
डॉ. आर .के. मल्ल	-	४	-	-	-	१	-	-	-
डॉ. जे. पी. वर्मा	२	४	-	-	-	१	-	-	-
डॉ. आर .पी. सिंह	-	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. पी. सी. अभिलाष	-	५	३	३	-	३ (इडिटिंग)	-	-	-
डॉ. टी. बनर्जी	-	५	-	-	-	१	-	-	-
डॉ. वी. प्रसाद	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. के. राम	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. श्रीवास्तव	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव	-	३	-	-	-	-	-	-	-
वाणिज्य संकाय									
प्रो. ए.के. मिश्रा	-	-	-	-	१	-	-	-	-
प्रो. के.के. मिश्रा	१	-	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस.एन. झा	१	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. (सुश्री) प्रियंका गीते	४	-	१	-	-	-	-	-	-
प्रो. बी.के. मोहन्ती	१	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस.सी. दास	४	-	-	-	२	-	-	-	-
डॉ. आर.एस. मीना	४	२	४	४	३	-	-	-	-
डॉ. (सुश्री) टी. प्रस्टे	-	९	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. बी.पी. सिंह	१	७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एल.बी. जायसवाल	-	१	१	-	१	-	-	-	-
डॉ. वैभव	२	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. (सुश्री) वी. सोनकर	१	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. चिन्मय राय	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए. सिंह	-	३	-	१	-	-	-	-	-
डॉ. (सुश्री) वि. श्रीवास्तव	-	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. (सुश्री) राखी गुप्ता	-	७	-	-	-	-	१५	-	-
डॉ. ए.के. चौधरी	१	२	१	-	-	-	-	-	-

शिक्षा संकाय									
प्रो. बी.डी. सिंह	-	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. पी.एन. सिंह	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सीमा सिंह	४	१	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. अंजली बाजपेयी	१	-	-	-	-	-	-	-	१ किताब में अध्याय
डॉ. रश्मि चौधरी	१	-	-	१	-	-	-	-	-
डॉ. नागेन्द्र कुमार	-	-	२	-	-	-	-	-	-
डॉ. आलोक गार्डिया	-	१	३	-	-	-	-	२	-
डॉ. रेवती सकलकार	-	-	२	-	-	-	-	-	७ (परफार्मेंश)
डॉ. सुनीता सिंह	३	३	३	१	३ किताब में अध्याय	-	-	-	-
डॉ. अजीत कुमार राय	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. आर.एन. शर्मा	-	-	-	१	३	-	-	-	-
डॉ. पूनम सिंह खरवार	३	-	-	-	२ किताब में अध्याय	-	-	-	-
डॉ. छाया सोनी	१	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रबंध शास्त्र संकाय									
प्रबंध विभाग	४२	२३	१०	१	२	१	-	-	१९ सम्मेलन
मंच कला संकाय									
गायन विभाग									
प्रो. शारदा वालेंकर	-	-	१	-	-	-	३	-	-
प्रो. ऋत्विक सान्याल	१	-	१	-	१	-	-	-	-
डॉ. सरयू आर. सोत्री	-	-	३	-	-	-	१	-	-
डॉ. के. शशि कुमार	-	-	३	-	१	-	२	-	-
डॉ. संगीता पंडित	-	-	२	-	१	-	-	-	-
डॉ. के.एन. चंचल	-	-	२	१	-	-	२	-	-
डॉ. ज्ञानेशचन्द्र पाण्डेय	-	-	-	१	-	-	२	-	-
डॉ. रामशंकर	२	-	३	-	-	-	२	-	-
वाद्य विभाग									
डॉ. वी. बालाजी	-	-	-	-	-	-	१	-	-
डॉ. विरेन्द्रनाथ मिश्रा	-	-	-	-	-	-	४	-	-
डॉ. राजेश शाह	-	१	-	-	-	-	१	-	-
डॉ. संगीता सिंह	१	-	१	१	१	-	-	-	-
डॉ. प्रवीण उद्धव	-	-	३	-	-	-	१०	-	-
डॉ. प्रेम किशोर मिश्रा	२	-	१	-	-	-	३	-	-
डॉ. स्वर्णा खुण्टिया	१	-	-	-	-	-	३	-	-
डॉ. सुप्रिया शाह	-	-	-	-	-	-	१	-	-

विज्ञान संकाय									
जैवरसायन विभाग									
प्रो. रमा शंकर दूबे	१	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. सुषमा राठौर	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. ओम प्रकाश	-	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. प्रमोद कुमार श्रीवास्तव	-	३	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सूर्य प्रताप सिंह	१	७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सरेपेल्ला श्रीकृष्णा	-	५	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. राकेश कुमार सिंह	-	३	-	-	-	-	-	-	-
जैवप्रौद्योगिकी स्कूल									
प्रो. अशोक कुमार	-	४	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. सुखमहेन्द्र सिंह	-	२	-	१	-	-	-	-	-
प्रो. अरविंद मोहन कायस्थ	-	८	-	-	-	-	-	-	-
डा. अरविन्द कुमार	-	२	-	-	-	-	-	-	-
वनस्पति विज्ञान विभाग									
प्रो एल.सी. राय	-	९	-	-	-	-	-	-	२ किताब में अध्याय
प्रो जे.पी. गौण	२	-	-	-	-	-	-	-	-
प्रो एम. अग्रवाल	-	१२	१	१	-	-	-	-	-
प्रो आर.एस. उपाध्याय	-	९	-	-	-	-	-	-	४ संपादित पुस्तक
प्रो एन.के. दूबे	२	८	-	२	-	२	-	-	-
प्रो आर.के. अस्थाना	-	४	-	-	-	-	-	-	-
प्रो एस.बी. अग्रवाल	१	१६	-	-	-	-	-	-	१ किताब में अध्याय
प्रो सुरेन्द्र सिंह	६	१२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो नन्दिता घोषाल	२	-	-	-	-	-	-	-	-
प्रो आर.पी. सिन्हा	४	१२	-	-	१	-	-	-	९ किताब में अध्याय
प्रो ए.के. मिश्रा	-	७	-	१	-	-	-	-	-
प्रो जे. पाण्डेय	१	१०	-	१	-	-	-	-	-
प्रो आर.एन. खरवार	२	१०	-	-	-	-	-	-	-
डॉ एस.के. दूबे	१	१२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ आर. सागर	-	५	-	-	-	-	-	-	-
डॉ शशि पाण्डेय	१	३	-	-	-	-	-	-	-
डॉ हेमा सिंह	३	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो बी.आर.चौधरी (री. इम्प्लॉयड)	-	१	-	-	-	-	-	-	-

रसायनशास्त्र विभाग									
प्रो. टी.आर. राव	-	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. बी. सिंह	-	१०	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एल. मिश्रा	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. वि.बी. सिंह	-	५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. यु. एस. राय	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर.एन. सिंह	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. लाल बहादुर	-	१०	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एन. सिंह	-	१३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. डी. एस. पाण्डेय	-	२०	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एम.एस. सिंह	-	२६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर.एम. सिंह	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. बी.बी. प्रसाद	-	५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. के.एन. सिंह	-	१५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. बलि राम	-	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर. एस. खन्ना	-	७	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर. एल. प्रसाद	-	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. वी.पी. सिंह	-	८	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. बी. रे	-	७	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर.एन. राय	-	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. के.के. उपाध्याय	-	५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस. भट्टाचार्या	-	८	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. इदा तिवारी	-	१०	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अरविन्द मिश्रा	-	१४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. राजेश कुमार	-	६	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वी. गनेशन	-	१४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए.के. तिवारी	-	६	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. कृष्णामूति	-	६	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वी.के. तिवारी	-	१९	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सत्येन साहा	-	२०	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एम. के. भारती	-	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एल.बी. प्रसाद	-	७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. पी. श्रीवास्तवा	-	६	-	-	-	-	-	-	-
संगणक विज्ञान विभाग									
डॉ. पी. के. मिश्रा	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. कार्तिकेयन	-	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मंजरी गुप्ता	-	२	-	-	-	-	-	-	-
श्रीमती वंदना कुशवाहा	-	१	-	-	-	-	-	-	-
भूगोल विभाग	६७	५	१३	४	४	-	१	-	-

भौमिकी विज्ञान विभाग									
प्रो. एम. जोशी	१	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एम.पी. सिंह	-	१२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. ए.के. जैटली	-	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर.के. श्रीवास्तव	-	५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. बी.पी. सिंह	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. ए.डी. सिंह	१	५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. यू.के. शुक्ला	८	४	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. पी.के. सिंह	१	१२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. बी. पाण्डेय	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एन.वी.सी. राव	-	७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वी. श्रीवास्तव	२	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. डी. प्रकाश	-	३	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए.एस. नायक	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. के. प्रकाश	१	-	-	-	-	-	-	-	-
भू-भौतिकी विभाग									
प्रो. जी.एस. यादव	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर.एस. सिंह	२	-	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर. भाटला	४	१		-	-	-	-	-	-
प्रो. जी.पी. सिंह	३	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ एम.के. श्रीवास्तव	१	१	-	-	-	-	-	-	१
गृह विज्ञान विभाग									
प्रो. इंदिरा विश्नोई	४	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. ए. चक्रवर्ती	-	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. कल्पना गुप्ता	-	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मुक्ता सिंह	३	२	-	-	३	-	-	-	-
डॉ. पुष्पा कुमारी	-	-	-	-	-	१	-	-	-
गणित विभाग									
प्रो. ए.के. श्रीवास्तव	-	४	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. नवीन कुमार	-	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. अब्दुस्सत्तार	-	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस.आर. सिंह	-	४	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. ए.के. सिंह	-	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. श्यामलाल	-	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एम.एम. त्रिपाठी	-	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. हरीश चन्द्र	-	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. डी.आर. साहू	-	७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए.के. मिश्रा	-	१४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. बी.एस. भदौरिया	-	१७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस.के. मिश्रा	-	५	-	-	-	-	-	-	-

आणविक एवम् मानव अनुवंशिक विभाग									
प्रो. गोपेश्वर नारायण	-	९	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. असीम मुखर्जी	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. किरन सिंह	-	१२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मौसुमी मुत्सुद्दी	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. गीता रॉय	-	९	-	-	१ चैप्टर	-	-	-	-
भौतिकी विभाग	१०	१८५	-	-	-	-	-	-	-
सांख्यिकी विभाग	१५	५०	६	-	१	-	-	-	२
अनुवांशिकी विकास केन्द्र									
प्रो. राजीव रमन	-	५	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. परिमल दास	-	७	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए.के. राय	२	३	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए. अली	२	३	-	-	-	-	-	-	-
जन्तु विज्ञान विभाग									
प्रो. सी.एम. चतुर्वेदी	-	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. सी.हालदार	-	१२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. के.जी. जोए	-	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. डी. कुमार	-	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. जे.के. राय	-	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एम.के. ठाकुर	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस.के. सिंह	-	२	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एम. विनायक	-	८	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस.के. त्रिगुन	-	३	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस. प्रसाद	-	५	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. बी. लाल	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ए.के. सिंह	-	६	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. अरबिन्द आचार्या	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एम.जी. टपाडिया	-	५	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस.के. चौबे	-	९	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. आर. मिश्रा	-	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एम. सिंगरावेल	-	३	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. स्वाती मित्तल	-	५	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. पी.एस. सक्सेना	-	३	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. बी. कोच	-	५	-	-	-	-	-	-	-
डॉ.. बी. माहापात्रा	-	१	-	-	-	-	-	-	-
इमेरिटस प्रो. एस.सी. लखोटिया	-	४	-	-	-	-	-	-	-
इमेरिटस प्रो. बी.एन. सिंह	-	११	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर. रमन सी.एस.आई.आर. इमेरिटस साइंटिस्ट	-	४	-	-	-	-	-	-	-

अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र									
डीएसटी सी.आई.एम.एस. (शिक्षक)	२	६	-	-	-	-	-	-	-
डीएसटी सी.आई.एम.एस. (पी.आई.)	२	१०	-	-	-	-	-	-	-
डीएसटी सी.आई.एम.एस. (अ.स.)	११	३३	-	-	-	-	-	-	-
सामाजिक विज्ञान संकाय									
अर्थशास्त्र विभाग	१२		-	-	१०		-	-	-
इतिहास विभाग	४		२		२		-	-	-
राजनीति विज्ञान विभाग	२७		-	-	५		-	-	-
मनोविज्ञान विभाग	३९		-	-	२		-	-	-
समाजशास्त्र विभाग	४		-	-	२		-	-	-
नेपाल अध्ययन केन्द्र	३		-	-	-	-	-	-	-
सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति	४		-	-	-	-	-	-	-
महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र	४		-	-	१		-	-	-
मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र	५		-	-	३		-	-	-
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय									
वेद विभाग									
डॉ. पी.के. मिश्रा	१	-	-	-	२	-	-	-	-
डॉ. यू.के. त्रिपाठी	१६	२	३	-	३	-	-	-	-
डॉ. एस. कात्यायन	२	-	-	-	-	-	-	-	-
व्याकरण विभाग									
डॉ. बी. शरण शुक्ला	३	-	-	-	२	-	-	-	-
डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	५	१	२	-	१	-	-	-	-
साहित्य विभाग									
डॉ. एस. मिश्रा	-	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. आर. पाण्डेय	-	३	-	-	२	-	-	-	-
डॉ. एस.एल. साल्वी	-	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. उमाकान्त चतुर्वेदी	-	२	-	-	२	-	-	-	-
प्रो. के. पाण्डेय	-	-	-	-	२	-	-	-	-
ज्योतिष विभाग									
प्रो. चन्द्रमौलि उपाध्याय	-	-	६	-	१	-	-	-	-
डॉ.सी. पाण्डेय	५	-	२	-	-	-	-	-	-
प्रो. एस.मिश्रा	५	-	५	-	२	-	-	-	-
प्रो. आर.मिश्रा	५	-	५	-	२	-	-	-	५ लेक्चर
डॉ.वी.के. पाण्डेय	५	-	५	-	२	-	-	-	-
डॉ. एस त्रिपाठी	४	-	५	-	२	-	-	-	३ लेक्चर
डॉ. एस. पाण्डेय	४	-	५	-	१	-	-	-	-

वैदिक दर्शन विभाग									
प्रो. के. के. शर्मा	२	-	१	-	-	-	-	-	-
प्रो. जी. ए. शास्त्री	३	-	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. वी. पी. मिश्रा	३	१	-	-	-	-	-	-	-
प्रो. आर .आर .शुक्ल	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. डी. के. पाण्डेय	५	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. के. त्रिपाठी	४	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. के. द्विवेदी	५	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. आर .गंगोपाध्याय	५	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस. के. पाढ़ी	६	-	-	-	-	-	-	-	-
जैन बौद्ध दर्शन विभाग									
डॉ. अशोक कुमार जैन	३	-	-	-	-	-	-	-	-
धर्मागम विभाग									
प्रो. बी. झा	३	-	२	-	-	-	-	-	-
डॉ. बी. रोहतम	७	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस.पी. पाण्डेय	४	-	४	-	-	-	-	-	-
धर्मशास्त्र तथा मीमांसा विभाग									
प्रो. एन. आर . श्रीनिवासन	४	२	३	-	-	-	-	-	-
डॉ. माधव जर्नादन रटाटे	६	२	५	-	१	-	-	-	-
डॉ. शंकर कुमार मिश्रा	६	३	३	-	-	-	-	-	-
दृश्य कला संकाय									
चित्र कला विभाग									
डॉ. विश्वनाथ	४	-	३	-	-	-	-	-	-
डॉ. डी.पी. मोहन्ती	३	-	३	-	-	-	-	-	-
डॉ. उत्तमा	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. जसमिन्दर कौर	२	-	-	-	-	-	-	-	-
श्री एस.के. गौतम	१	-	-	-	-	-	-	-	-
व्यावहारिक कला विभाग									
प्रो. हीरालाल प्रजापति	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मनीष अरोड़ा	१	-	९	-	३	-	-	-	-
इतिहास कला एवं डिजाइन									
प्रो. अंजन चक्रवर्ती	३	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. एस.एस. सिन्हा	४	-	१	-	१	-	-	-	-
महिला महाविद्यालय									
प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्त्व विभाग	२	-	-	-	-	-	-	-	-
बंगाली विभाग	१	३	-	-	-	-	-	-	-
बायोइंफॉरमेटिक्स विभाग	२	४	-	-	-	-	-	-	-
वनस्पति विज्ञान विभाग	९	२२	२	-	२	-	-	१	-
रसायनशास्त्र विभाग	२	१	-	-	-	-	-	-	-
संगणक विज्ञान विभाग	-	५	-	-	-	-	-	-	२
गृह विज्ञान विभाग	४	-	-	-	-	-	-	-	-
अर्थशास्त्र विभाग	१	-	-	-	-	-	-	-	-
शिक्षा विभाग	३	-	-	-	-	-	-	-	-

हिन्दी विभाग	४	५	-	-	-	-	-	-	-
कला इतिहास विभाग	१	-	-	-	-	-	-	-	-
गणित विभाग	-	१	-	-	-	-	-	-	-
गायन संगीत विभाग (वी/आई)	३	-	२	-	-	-	-	-	-
पेंटिंग	१	-	-	-	-	-	-	-	-
दर्शनशास्त्र विभाग	१	-	-	-	-	-	-	-	-
भौतिकी विभाग	५	६	-	-	-	-	-	-	-
राजनीति शास्त्र	१	-	-	-	-	-	-	-	-
मनोविज्ञान	६	६	१	-	२	-	-	-	-
संस्कृत विभाग	१	-	-	-	-	-	-	-	-
सामाजिक विज्ञान विभाग	४	-	-	-	-	-	-	-	-
सांख्यिकी विभाग	१	-	-	-	-	-	-	-	-
उर्दू	६	-	१	-	-	-	१	-	-
जीव विज्ञान विभाग	२	-	-	-	-	-	-	-	-
राजीव गांधी दक्षिणी परिसर									
डॉ. भलेन्द्रा सिंह राजपूत	४	४	-	-	-	-	-	-	१ किताब में अध्याय
श्री महेन्द्र सिंह	२	-	१	-	-	-	-	-	-
श्री सौरभ कुमार पाण्डेय	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. रविन्द्र प्रसाद	४	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. दिलीप कुमार (बीएनयाईएस)	-	१	-	-	-	-	-	-	-
श्री कृष्णकान्त	-	-	२	-	-	-	-	-	-
श्री नवीन कुमार	-	-	२	-	-	-	-	-	-
डॉ. आशीष सिंह	-	-	५	१	-	१	-	-	-
डॉ. सौरभ प्रताप सिंह	१	१	-	-	-	-	-	-	-
श्री द्रिगवेन्द्रमनी त्रिपाठी	-	-	१	-	-	-	-	-	-
श्री विवेक रंजन सिंह	-	-	१	-	-	-	-	-	-
सुश्री श्वेता सिंह	-	-	१	-	१	-	-	-	-
डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय	१	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. रजनी श्रीवास्तव	-	२	-	-	-	-	-	-	-
श्री विजय कृष्ण	१	४	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अचिन्त्य सिंघल	-	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. राजेश कुमार सिंह	-	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. आनन्द देव राय	-	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. आनन्द सिंह	-	-	३	-	-	-	-	-	-
विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत									
आर्य महिला महाविद्यालय									
डॉ. रंजना मालवीय	३	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. प्राची विराग सोनटक्के	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. बिन्दु लहरी	४	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. झुमर सेन गुप्ता	२	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. स्वपना बंधोपाध्याय	१	१	-	-	२	-	-	-	-

डॉ. उमा पन्त	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. ममता गुप्ता	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. कृष्ण कुमारी वर्मा	४	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अंशुल जयसवाल	४	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. गरिमा गुप्ता	४	-	-	-	-	-	१	-	-
डॉ. बृजबाला सिंह	४	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सुचिता त्रिपाठी	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. चन्द्रकान्त राय	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. जया मिश्रा	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. पुष्पा त्रिपाठी	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. कंचन	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मनीष तिवारी	१	-	-	-	-	-	-	-	२
डॉ. कविता आर्य	४	-	-	-	-	-	-	-	१
डॉ. भानुमति मिश्रा	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. जितेन्द्र कुमार	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अमित कुमार शुक्ला	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. भावना त्रिपाठी	२	-	-	-	-	-	-	-	-
सुश्री अरि श्रीवास्तव	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अनिता अग्रवाल	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. कौशलेन्द्र सिंह	२	-	-	-	-	-	-	-	१
वसन्त महिला महाविद्यालय									
डॉ. प्रीति सिंह	३	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. योगिता बेरी	४	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अंजना सिंह	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मीनू अवस्थी	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. शशिकला त्रिपाठी	३	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मोहम्मद अख्तर	७	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. श्रेया पाठक	३	-	-	-	-	१	-	-	-
डॉ. प्रीति पाण्डेय	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अंशुला कृष्णा	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सीमा श्रीवास्तव	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. रिचा सिंह	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वेद प्रकाश रावत	१	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. उषा दीक्षित	-	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अर्चना तिवारी	-	-	२	-	-	-	-	-	-
डॉ. राजेश कुमार चौधरी	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वंदना झा	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. प्रवीण सुल्ताना	-	२	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. आरती निर्मल	४	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. बिलमबिता बानिसुधा	१	१	-	१	-	-	-	-	-
डॉ. अमृता कत्यायनी	१	-	-	-	-	-	-	-	-
वसन्त कन्या महाविद्यालय									
डॉ. पूनम पाण्डेय	२	-	-	-	-	-	-	-	-

डॉ. स्वरवंदना शर्मा	-	-	-	-	-	-	-	-	६ परफार्मेंश
डॉ. रचना श्रीवास्तव	१	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. ममता मिश्रा	२	२	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. सुमन सिंह	-	-	-	-	-	-	-	-	१ इंटरनेशनल वर्कशाप
डॉ. नंदिनी वर्मा	-	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. सीमा वर्मा	२	१	४	-	-	-	-	-	-
डॉ. शशिकला	४	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. इंदु उपाध्याय	३	-	२	-	-	-	-	-	चैप्टर बुक
डॉ. अशीष सोनकर	२	१	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. राजेश वर्मा	३	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. कल्पना आनन्द	३	-	५	-	-	-	-	-	-
डॉ. सपना भूषण	२	१	-	-	-	-	-	-	२वर्कशाप
डॉ. नैरंजना श्रीवास्तव	३	-	-	-	-	-	-	-	-
सुश्री पूर्णिमा सिंह	१	१	३	१	-	-	-	-	-
डॉ. सुनीता दिक्षित	२	-	२	-	२	-	-	-	-
सुश्री प्रियंका	१	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. संगीता देओदिया	३	२	८	२	-	-	-	-	-
डॉ. अंशु शुक्ला	६	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. उषा कुशवाहा	१	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. अनुराधा बापुली	३	१	-	-	-	-	-	-	२१डे ओरियंटेशन कोर्स ए.एस.सी. का.हि.वि.वि .
डॉ. सुप्रिया सिंह	१	२	-	-	-	-	-	-	-
दयानन्द पी.जी. कॉलेज									
वाणिज्य विभाग									
डॉ. प्रदीप कमल	१	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वी.के.एल. श्रीवास्तव	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. राहुल	१	-	-	-	-	-	-	-	-
श्री संजय कुमार शाह	१	१	-	-	१	-	-	-	-
श्री राहुल त्रिपाठी	-	-	२	-	-	-	-	-	-
डॉ. आनन्द सिंह	-	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. तरू सिंह	२	१	-	-	-	-	-	-	-
मनोविज्ञान विभाग									
डॉ. सत्यगोपाल जी	१	-	-	-	-	-	१	-	-
डॉ. रिचा रानी यादव	-	-	-	-	-	-	१	-	-
डॉ. शैलजा सिंह	-	-	१	१	-	-	-	-	-
डॉ. अखिलेन्द्र कुमार सिंह	३	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. कमालुद्दीन शेख	१	-	-	-	-	-	-	-	-

इतिहास विभाग									
डॉ. प्रवेश भारद्वाज	१	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. वी.के. चौधरी	२	-	२	-	२	-	-	-	-
डॉ. प्रतीभा मिश्रा	-	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. एस.के. सिंह	-	-	१	-	-	-	-	-	-
सामाजिक विज्ञान विभाग									
डॉ. वी. राय	-	-	-	-	-	१	-	-	-
डॉ. मधु सिसोदिया	३	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. जियाउद्दीन	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. हसन बानो	-	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. नेहा चौधरी	-	१	-	-	-	-	-	-	-
राजनीतिक विज्ञान विभाग									
डॉ. एस.बी. सिंह	-	-	-	-	१	-	-	-	-
डॉ. एस.एस. नन्दा	१	-	१	-	-	-	-	-	-
अर्थशास्त्र विभाग									
डॉ. विमल शंकर सिंह	३	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. पी.के. सेन	३	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. अनूप कुमार मिश्रा	९	-	९	-	१	-	-	-	२
डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. पारूल जैन	२	१	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. उर्जस्विता सिंह	१	३	-	-	१	-	-	-	-
हिन्दी विभाग									
डॉ. प्रवेश कुमार सिंह	१४	-	३	-	-	-	-	-	-
डॉ. राकेश कुमार द्विवेदी	३	-	२	-	४	-	-	-	-
डॉ. राकेश कुमार राम	१	-	२	-	४	-	-	-	-
डॉ. अखिलेश कुमार दूबे	१	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. समीर कुमार पाठक	३	-	-	-	१	-	-	-	-
अंग्रेजी विभाग									
डॉ. इन्द्रजीत मिश्रा	-	१	-	-	-	-	-	-	-
श्री अभय लेयोनार्ड इक्का	२	१	-	२	-	-	-	-	-
डॉ. बन्दना बालचन्दानी	१	-	-	-	-	-	-	-	-
श्री निजामुल हसन	२	-	-	-	-	-	-	-	-
संस्कृत विभाग									
डॉ. मिस्री लाल	-	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. पूनम सिंह	-	-	१	-	-	-	-	-	-
दर्शनशास्त्र विभाग									
डॉ. एच.सी. यादव	३	१	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. सरिता रानी	२	-	-	-	-	-	-	-	-
उर्दू विभाग									
डॉ. हबीबुल्ला	-	-	१	-	-	-	-	-	-

प्रा.भा.इ.सं. तथा पुरातत्व									
डॉ. प्रशान्त कश्यप	२	-	-	-	-	-	-	-	-
सुश्री सीमा	२	-	-	-	-	-	-	-	-
डॉ. मुकेश कुमार सिंह	२	-	१	-	-	-	-	-	-
डॉ. विकास कुमार सिंह	१	-	-	-	-	-	-	-	-
शारीरिक शिक्षा विभाग									
सुश्री मिनु लकरा	१	१	-	-	-	-	-	-	-

परिशिष्ट - ३

विभिन्न अभिकरणों द्वारा वित्तपोषित शोध परियोजनाओं की सूची

सत्र २०१४-१५ में स्वीकृति नयी शोध परियोजनाएँ

संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओं की संख्या	स्वीकृत धनराशि
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, यू.पी.		
उद्यान विभाग	१	१७,९८,५००.००
अनुवंशिकी और पादप प्रजनन	१	२४,४१,४५०.००
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	१	२३,२८,८९०.००
कृषि अर्थशास्त्र	१	२३,३५,१००.००
मृदा और कृषि विज्ञान	१	१४,९७,३००.००
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद		
आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	३९,७५,४००.००
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद		
अनुवंशिकी और पादप प्रजनन	१	१,४१,०००.००
परमाणु ऊर्जा विभाग		
भूविज्ञान	१	३३,५६,०००.००
जैव प्रौद्योगिकी विभाग		
आणविक जीव विज्ञान इकाई	१	२७,६५,०००.००
आणविक एवं मानव जनन विज्ञान	२	९४,०६,५००.००
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग,नई दिल्ली		
शरीर रचना विज्ञान	१	३१,७९,२००.००
वनस्पति विज्ञान	२	७२,३८,०००.००
रसायनशास्त्र	१	२७,७०,०००.००
दंत चिकित्सा विज्ञान	१	५५,५३,५८५.००
भूविज्ञान	१	२७,७०,०००.००
पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	१	१८,००,०००.००
क्रिया शरीर, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	१,१३,७२,४५०.००
भौतिकी	१	४४,३२,९२३.००
मृदा और कृषि विज्ञान	१	२७,८१,४७०.००
जीव विज्ञान	२	८०,७६,०००.००
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद		
वनस्पति विज्ञान	२	११,७७,१८८.००
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	१	४,१०,४४४.००
जैव प्रौद्योगिकी स्कूल	१	४,५४,१९१.००
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद		
जीव विज्ञान	१	२२,८६,७४०.००
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी		
भौतिकी	२	६,५१,६६७.००

रक्षा मंत्रालय		
रसायनशास्त्र	१	४०,०३,०४५.००
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय		
भूविज्ञान	१	२४,२६,८२०.००
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग		
जीव विज्ञान	२	७,२५,०००.००
संस्कृत, महिला महाविद्यालय	१	८,८९,६००.००
सामुदायिक चिकित्सा, चि.वि.सं.	१	५,४५,०००.००
विदेशी एजेंसियाँ		
शस्य विज्ञान	१	१,९४,९७९.००
अनुवंशिकी और पादप प्रजनन	१	१,४६,२३५.००
आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	यूएस $ ९५२११
मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र	१	५०,००,०००.००
निजी एजेंसियाँ		
कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान	१	३,३०,०००.००
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	१	२,७५,०००.००

जारी शोध परियोजनाएँ

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद		
प्रबंधशास्त्र	२	२१,००,०००.००
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग		
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व	१	३,४०,०००.००
जीव रसायन, विज्ञान संकाय	१	१४,०२,८००.००
वनस्पति विज्ञान	४	४४,०१,६००.००
वनस्पति विज्ञान, महिला महाविद्यालय	१	१५,०७,८००.००
रसायनशास्त्र	६	४५,०६,२००.००
वाणिज्य	४	१२,९१,६००.००
धर्मागम	१	७,३१,२००.००
अर्थशास्त्र	४	३२,३०,०००.००
शिक्षा	१	५,६०,३००.००
इन्डोक्रिनोलॉजी एण्ड मेटाबोलिज्म	१	१०,१२,०००.००
अंग्रेजी	३	२०,६८,६००.००
अंग्रेजी, महिला महाविद्यालय	१	३,५३,४००.००
जठरांत्र शोथ विज्ञान	१	९,५१,८००.००
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजजन	२	१८,०७,६००.००
भूगोल	३	२८,४२,९००.००
हिन्दी	१	४,८३,०००.००
इतिहास	१	४,८३,०००.००
कला इतिहास	३	१७,८५,४००.००
पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	५	४३,६४,२००.००
ज्योतिष	१	४,९६,२००.००
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान	१	१०,३४,६००.००
भाषा विज्ञान	१	६,४३,४००.००

प्रबंधशास्त्र	९	५६,७४,२००.००
आणविक एवं मानव जनन विज्ञान	१	११,७०,०००.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	२	१६,२१,३००.००
मनोविज्ञान	१	५,८०,८००.००
भौतिकी	५	५३,६६,४००.००
भौतिकी, महिला महाविद्यालय	१	१४,०३,८००.००
राजनीतिशास्त्र	२	१६,०१,८००.००
साहित्य, सं.वि.ध.वि.सं.	१	६,०२,८००.००
मृदा और कृषि विज्ञान	४	३३,१४,९००.००
शल्य चिकित्सा	१	१०,६८,८००.००
उर्दू	२	१४,७१,८००.००
वैदिक दर्शन, सं.वि.ध.वि.सं.	१	४,००,२००.००
दृश्य कला	१	४,३२,०००.००
व्याकरण, सं.वि.ध.वि.सं.	१	३,७२,१५०.००
जीव विज्ञान	१६	१,३९,५८,०००.००
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग		
पशुपालन एवं डेयरी उद्योग	१	३१,५०,०००.००
शस्य विज्ञान	१	३१,७९,२००.००
जैव रसायन (विज्ञान)	२	८३,७९,०००.००
जैव रसायन (चिकित्सा)	६	२,६६,९८,२३५.००
वनस्पति विज्ञान	११	१,५९,८५,४४०.००
सेन्टर फार एक्सपेरिमेंटल मेडिसीनल एण्ड सर्जरी	२	७७,९९,०००.००
अनुवांशिक विकार केन्द्र	१	२२,५०,०००.००
रसायनशास्त्र	१४	४,६५,६३,४२०.००
डी.एस.टी. अंतर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र	२	२१,९८,२४०.००
दंत चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	५५,५३,५८५.००
कृषि अभियांत्रिकी, कृ.वि.सं.	१	४,५०,०००.००
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	२	१,२२,३१,०००.००
भूविज्ञान	७	१५,२६,९६,७००.००
भूभौतिकी	२	५७,००,०००.००
उद्यान विज्ञान	१	२०,१८,०००.००
पर्यावरणीय एवं धारणीय विकास संस्थान	४	९२,३५,६००.००
क्रिया शरीर, आयुर्वेद, चि.कि.वि.सं.	१	१,१३,७२,४५०.००
गणितीय विज्ञान	१	३०,८००.००
गणित	१	१५,५९,२००.००
औषधीय रसायन, चि.वि.सं.	१	२९,५०,०००.००
सूक्ष्म जीव विज्ञान, चि.वि.सं.	१	२९,३०,०००.००
आण्विक एवं मानव अनुवांशिकी विज्ञान	६	१,९१,५०,५००.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	६	१,३४,२१,८००.००
औषध रोग विज्ञान, चि.वि.सं.	१	२४,५०,०००.००
भौतिकी विज्ञान	१६	२४,३१,९५,३९१.००
पादप शरीर क्रिया विज्ञान	१	३३,५६,०००.००
जैव-प्रौद्योगिकी स्कूल	३	१,१२,८५,०००.००
मृदा और कृषि विज्ञान	२	३३,८१,४७०.००
जीव विज्ञान	२२	८,५१,०६,९२०.००
जीव विज्ञान, महिला महाविद्यालय	२	४७,८६,०००.००

भारतीय चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान परिषद्		
जीव-रसायन (चि.वि.सं.)	१	४२,८८,३२०.००
वनस्पति विज्ञान	१	१०,८२,४२४.००
सामुदायिक चिकित्सा	२	१८,८६,२४०.००
आयुर्विज्ञान	१	१४,२५,४००.००
सूक्ष्म जीव विज्ञान	१	१,८१,८४६.००
जीव विज्ञान	५	९१,१८,४०७.००
भारत सरकार -आयुस		
औषध रोग विज्ञान	१	२१,७८,५५०.००
द्रव्य गुण	१	६०,००,०००.००
वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी परिषद्		
कृषि अर्थशास्त्र	१	२३,३५,१००.००
शस्य विज्ञान	१	१९,७७,८००.००
पशुपालन एवं डेरी उद्योग	१	१७,५०,०००.००
वनस्पति विज्ञान	१	६,९६,०००.००
कृषि अभियांत्रिकी	१	१,१५,०००.००
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	१	२४,४१,०००.००
उद्यान विभाग	१	१७,९८,५००.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	३	१,१७,७८,८९०.००
बाल चिकित्सा	१	४,८८,०००.००
मृदा एवं कृषि विज्ञान	३	३२,५५,३००.००
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्		
जीव रसायन (विज्ञान)	१	२,८१,०००.००
जीव रसायन (चिकित्सा)	१	१३,६४,०००.००
वनस्पति विज्ञान	९	७७,७९,९८४.००
रसायनशास्त्र	२०	१,४४,०३,४६९.००
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	२	१८,५६,५०१.००
पर्यावरणीय एवं धारणीय विकास संस्थान	१	१६,६४,०००.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	१	२१,५०,२८०.००
भौतिकी विज्ञान	३	३९,४३,५००.००
जीव विज्ञान	८	९१,०८,५००.००
केन्द्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्		
आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	३९,७५,४००.००
मनोरोग चिकित्सा	१	३१,२१,५८०.००
शल्य तंत्र, आयुर्वेद, चि.वि.सं.	१	१०,४०,०००.००
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्		
कृषि अर्थशास्त्र	१	३५,९४,०००.००
शस्य विज्ञान	४	२,३५,१६,३१८.००
वनस्पति विज्ञान	३	३६,९४,१८८.००
कार्डियोथोरेसिक सर्जरी, चि.वि.सं.	१	१,०२,३७५.००
कीट विज्ञान एवं कृषि जीव विज्ञान	२	१०,६०,५९,६५०.००
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	१	१,३८,००,०००.००
कृषि विज्ञान केन्द्र, बरकछा, का.हि.वि.वि.	१	९१,५०,०००.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	३	३५,६०,०००.००
जैव प्रौद्योगिकी स्कूल	२	१५,१८,०००.००
मृदा एवं कृषि विज्ञान	१	२,८०,०००.००

परमाणु ऊर्जा विभाग		
रसायनशास्त्र	२	३६,५२,९००.००
भूविज्ञान	२	५२,१३,०००.००
औषधीय रसायन	१	१६,०८,७५०.००
आण्विक एवं मानव अनुवांशिकी विज्ञान	१	२७,१२,०००.००
भौतिकी विज्ञान	५	३,१३,२७,१५०.००
जीव विज्ञान	४	६५,९४,८५०.००
जैव-प्रौद्योगिकी विभाग		
जैव-रसायन (विज्ञान)	१	५०,८६,०००.००
वनस्पति विज्ञान	१	१७,८५,०००.००
प्रायोगिकी चिकित्सा केन्द्र	१	१७,९५,०००.००
अनुवांशिकी और पादप प्रजजन	२	१,२३,५४,८००.००
आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	१,०५,३७,०००.००
सूक्ष्म जीविकी, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	२५,००,०००.००
आण्विक एवं मानव अनुवांशिकी विज्ञान	२	९४,०६,५००.००
आण्विक जीव विज्ञान इकाई	१	२७,६५,०००.००
भौतिकी	१	१,४४,७९८५०.००
जीव विज्ञान	४	१,४४,९०,२००.००
रक्षा मंत्रालय		
रसायनशास्त्र	५	१,२५,८९,८४६.००
भौतिकी	२	४६,००,०००.००
पादप शरीर क्रिया विज्ञान, चि.वि.सं.	१	२६,७८,१९०.००
मृदा विज्ञान	१	१९,३७,०२२.००
जीव विज्ञान	१	१०,१४,०००.००
अन्तर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ सुधार केन्द्र (सी.आई.एम.एम.आई.टी.)		
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	१	८,०७,१९५.००
केस्पर माइक्रो क्रेडीट		
प्रबन्धशास्त्र संकाय	१	९,४८,७५०.००
तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम लिमिटेड		
भूविज्ञान	१	२,८६,०००.००
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन		
रसायनशास्त्र	१	२४,७०,८००.००
प्राणि विज्ञान	१	१०,००,०००.००
भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध परिषद्		
वाणिज्य	१	८६,६२६.००
अर्थशास्त्र	१	७,००,०००.००
प्रबंधशास्त्र	१	३,३३,३२६.००
शारीरिक शिक्षा	२	१०,२०,१७५.००
मनोविज्ञान	१	४,२४,६२५.००
समाजशास्त्र	१	४,००,०००.००
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी		
वनस्पति विज्ञान	२	१४,५७,४१९.००
भौतिकी विज्ञान	२	६,५१,६६७.००
भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन		
वनस्पति विज्ञान	१	२१,००,००१.००
भूभौतिकी	१	६,००,०००.०१
भौतिकी विज्ञान	१	१०,७९,३९०.०१

उत्तर प्रदेश एड्स नियंत्रण सोसाइटी		
ब्लड बैंक, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	२०,०००.००
आयुर्विज्ञान	२	६०,९४,८७७.००
प्रसूति विज्ञान एवं स्त्रीरोग विज्ञान	१	१३,०५,६८८.००
कृषि अनुसंधान परिषद उत्तर प्रदेश		
पशुपालन और डेयरी उद्योग	१	१४,७६,६४०.००
कृषि अभियांत्रिकी	१	१,४८,८९०.००
अनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन	२	१९,१९,३५१.००
प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, यू.पी.		
पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र	१	२४,०३,५००.००
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय		
भूविज्ञान	३	७४,०२,२२०.००
भू-भौतिकी विज्ञान	१	११,८०,३२०.००
संस्कृति मंत्रालय		
वाणिज्य	१	५,९३,४००.००
इतिहास (मा.मू.अं.केन्द्र के अन्तर्गत)	१	१,०७,००,०००.००
मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र	१	१४,९०,०००.००
मानव संसाधन विकास मंत्रालय		
वाणिज्य	१	५,९३,४००.००
विदेशी एजेंसी		
शस्य विज्ञान	२	४,६२,८३०.००
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व	१	४,३२,२९९.००
जैव रसायन (विज्ञान)	२	२९,०९,५६८.००
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	३	८,०५,०००.००
मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र	२	३८,२२,४३७.५८
आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	३	४,३६,१४,७७३.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	२	५०,१३,६२४.००
प्रसूति तंत्र, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	२५,९२४.००
अन्य सरकारी एजेंसी		
जैव रसायन (विज्ञान संकाय)	१	१,००,०००.००
सामुदायिक चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	७,००,०००.००
शिक्षा	१	८,१४,०००.००
अंत:स्राव और पादप विज्ञान रोग, चि.वि.सं.	१	८,१०,०००.००
भूविज्ञान	१	८,१७,४२०.००
मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र	१	१४,७४,०००.००
प्रबंधशास्त्र	२	११,२३,७५०.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	१	११,२२,७५०.००
भौतिकी	२	७०,१६,०००.००
मृदा एवं कृषि विज्ञान	१	१४,१५,९२०.००
जीव विज्ञान	१	१९,२०,०००.००

निजी संस्थाएँ		
नर्सिंग महाविद्यालय, चि.वि.सं.	१	२६,७९,१५०.००
इन्डोक्रिनोलॉजी एण्ड मेटाबोलिज्म, चि.वि.सं.	२	१५,१५,८००.००
इन्टोमोलॉजी एण्ड एग्रील जूलॉजी	२	४,४०,०००.००
सामान्य चिकित्सा, चि.वि.सं.	१	२१,००,०००.००
प्रबंधशास्त्र	१	९,४८,७५०.००
आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	१,१८,४०४.००
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	३	६,९५,०००.००
विकलांग विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	१	१०,२२,८००.००

परिशिष्ट -४

संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला का आयोजन

(अप्रैल २०१४ से मार्च २०१५ तक)

अप्रैल २०१४		
०१.०४.२०१४ से ०७.०४.२०१४	''शोध पद्धति'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. इंदिरा बिश्नोई, संयोजक, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान, म.म.वि., का.हि.वि.वि.
०४.०४.२०१४ से ०५.०४.२०१४	''सुप्रामॉलिक्यूलर केमेस्ट्री- अवधारण एवं परिप्रेक्ष्य'' पर विज्ञान अकादमी व्याख्यान कार्यशाला	डॉ. शैलजा एस. सुनकरी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर रसायन शास्त्र अनुभाग, म.म.वि., का.हि.वि.वि.
०४.०४.२०१४ से ०५.०४.२०१४	''री-इमेजिनिंग इंडियन फारेन पॉलिसी : इमर्जिंग चैलेन्जेस और स्ट्रेटेजिस'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और पॉलिटिकल साइंस एलुमनि एसोसिएशन	प्रो. के.के. मिश्रा, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
०४.०४.२०१४ से १०.०४.२०१४	''जैविक विज्ञान के लिए लागू सांख्यिकी तरीके'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	डॉ. जी.पी. सिंह, कम्यूनिटि मेडिसिन विभाग, चि.वि.सं. एवं डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
१५.०४.२०१४ से १६.०४.२०१४	तीन विशेष व्याख्यान	प्रो. भारती चक्रवर्ती, बंगाली विभाग, का.हि.वि.वि.
१९.०४.२०१४ से २५.०४.२०१४	भरतनाट्यम पर कार्यशाला	श्री पी.सी. होम्बल, संयोजक, नृत्य विभाग, मंच कला संकाय, का.हि.वि.वि.
२१.०४.२०१४	''सिमुलेशन मॉडलिंग एवं क्लाइमेट चेन्ज'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. आर. के. मल, आयोजन सचिव, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.
मई २०१४		
३१.०५.२०१४ से ०१.०६.२०१४	''आई.सी.यू. ओरिएन्टेशन ऑन क्रिटिकली इल पेशेन्ट सफरिंग विथ ट्रोपिकल फीवर'' पर सी.एम.ई.	डॉ. गौरव जैन, आयोजन सचिव, निश्चेतन विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि
१५.०५.२०१४ से १९.०५.२०१४	''रिमोट सेंसिंग और जी.आई.एस. विथ स्पेशल इम्फैसिस टू स्वाइल एवं वाटर कन्जर्वेशन और मैनेजमेंट'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	विभागाध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी विभाग, कृ.वि.सं., का.हि.वि.वि.
जून २०१४		
०१.०६.२०१४ से ०२.०६.२०१४	योगा खेल एवं शारीरिक शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. एन.बी. शुक्ला, आयोजन सचिव, सी.एच.सी. एथलेटिक एसोसिएशन, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
११.०६.२०१४ से २०.०६.२०१४	''अनुसंधान के क्षेत्र में सॉफ्टवेयर के उपयोग'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. इंदिरा बिश्नोई, संयोजक, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान, म.म.वि., का.हि.वि.वि.
१४.०६.२०१४ से १८.०६.२०१४	आई.एन.एस.पी.आई.आर.ई. इन्टर्नशिप साइंस कैम्प	प्रो. दिनेश चन्द्र राय, समन्वयक-डी.एस.टी. आई.एन.एस.पी.आई.आर.ई. इन्टर्नशिप साइंस कैम्प, पशुपालन और डेरी उद्योग, कृ.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२३.०६.२०१४ से २७.०६.२०१४	''पांडुलिपियों/दुलर्भ समर्थन सामग्री/सचित्र पांडुलिपियों के निवारक संरक्षण'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय लाइब्रेरियन, केन्द्रीय पुस्तकालय, का.हि.वि.वि.
२८.०६.२०१४	''वीडियो एसिस्टेड एनल फिस्टुला ट्रीटमेन्ट (वी.ए.ए.एफ.टी.)'' पर कार्यशाला	प्रो. एम. साहू, विभागाध्यक्ष, शल्य तंत्र विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि

जुलाई २०१४		
०७.०७.२०१४ से १९.०७.२०१४	जियोमेट्रिक टोपोलॉजी पर व्याख्याताओं के लिए शिक्षण स्कूल्स	प्रो. एम. एम. त्रिपाठी, संयोजक, गणित विभाग और डॉ. बनकटेश्वर तिवारी, संयोजक, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
२१.०७.२०१४ से ०१.०८.२०१४	संकेत, छवि, भाषण और भाषा संसाधन पर द्वितीय स्कूल	डॉ. एम. के. सिंह , डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
अगस्त २०१४		
०८.०८.२०१४ से ०९.०८.२०१४	"२१ वीं सदी की हिन्दी भाषाः चुनौतियाँ और संभावनाएँ" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. रामकली सर्राफ, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.
१६.०८.२०१४ से १७.०८.२०१४	पी.ए.एल.एस. कोर्स	प्रो. अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष, बाल चिकित्सा विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२२.०८.२०१४ से २४.०८.२०१४	"ए.डी.आर. शिक्षण और अभ्यास" पर कार्यशाला	प्रो. बी. एन. पाण्डेय, विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख, संयोजक, लॉ स्कूल, का.हि.वि.वि.
२८.०८.२०१४ से २९.०८.२०१४	पंचम अखिल भारतीय महाकवि श्री हर्ष समारोह (महाकवि श्री हर्ष के कवित्व एवं प ाण्डित्य) पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय, संयोजक, साहित्य विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
सितम्बर २०१४		
०७, १४, २१ एवं २८.०९.२०१४	लॉ टेक्स प्रशिक्षण कार्यक्रम - २०१४	प्रो. उमेश सिंह, संयोजक एवं समन्वयक, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
११.०९.२०१४ से १३.०९.२०१४	"पारिस्थितिकी मॉडलिंग में चुनौतियों" पर मिनी कार्यशाला	डॉ. ए. के. मिश्रा, संयोजक, गणित विभाग एवं डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
१४.०९.२०१४	"एन.आर.पी.-इंडिया" पर टी.ओ.टी. कार्यशाला	प्रो. अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष, बाल चिकित्सा विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१९.०९.२०१४ से २८.०९.२०१४	सामाजिक विज्ञान में पी.एच.डी. छात्रों के लिए शोध पद्धति कार्यक्रम	डॉ. ओम प्रकाश भारतीय, समाजशास्त्र विभाग, का.हि.वि.वि.
२३.०९.२०१४ से २५.०९.२०१४	"दक्षिण एशियाई विरासत और क्षेत्रवाद के विकास की खोज में" पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. बी. वी. सिंह, संयोजक, नेपाल अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२५.०९.२०१४	"एकात्म मानव दर्शन : सर्व समावेशी विकेन्द्रित अर्थनीति का आधार" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. कौशल किशोर मिश्रा, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२१.०९.२०१४ से २४.०९.२०१४	"रिसेन्ट ट्रेन्ड्स इन साइटो-जेनेटिक्स" पर वैज्ञानिक संगोष्ठी और कार्यशाला	डा. रोयना सिंह, आयोजन सचिव, शरीर रचना विज्ञान विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
अक्टूबर, २०१४		
०६.१०.२०१४ से २०.१०.२०१४	पंचांग ज्ञान विषय पर पन्द्रह दिवसीय कार्यशाला	डॉ. सत्येन्द्र कुमार मिश्र, जूनियर पब्लिकेशन ऑफीसर, पंचांग अनुभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
०७.१०.२०१४ से ०८.१०.२०१४	एशियन पी.जी.पी.आर. पर कार्यशाला	प्रो. एस. बी. सिंह, संयोजक, कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान विभाग, कृ.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१३.१०.२०१४ से १५.१०.२०१४	"संस्कृत वाड्मय एवं काशी-शास्त्रीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिप्रेक्ष्य" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय, संयोजक, साहित्य विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.

१७.१०.२०१४ से १९.१०.२०१४	एसोसिएशन ऑफ ऑब्स्टेट्रिक एनेस्थिसिया पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. पुष्कर रंजन, आयोजन सचिव, निश्चेतन विज्ञान विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१७.१०.२०१४ से १८.१०.२०१४	''फ्यूचर ट्रेन्ड्स इन बायोमेडिकल इंजीनियरिंग एवं हेल्थ केयर टेक्नॉलॉजी'' पर राष्ट्रीय स्तर सम्मेलन	डॉ. शीरू शर्मा, आयोजन सचिव, जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल, आई.आई.टी. (बी.एच.यू.),वाराणसी
२९.१०.२०१४ से ३१.१०.२०१४	''मॉडलिंग एंड सिमुलेशन ऑफ डिफ्यूसिव प्रोसेस एंड इट्स एप्लीकेशन्स'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. नवीन कुमार, विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
नवम्बर-२०१४		
०१.११.२०१४ से ०५.११.२०१४	''क्षेत्र सिद्धांत में नई प्रवृत्तियों'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. आर. पी. मलिक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
०७.११.२०१४ से ०९.११.२०१४	''व्यवहार पारिस्थितिकी : अणुओं से जीवों'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. नीलकमल रस्तोगी, संयोजक एवं डॉ. एम. सिंगरावेल, आयोजन सचिव, जीवविज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
०७.११.२०१४ से ०८.११.२०१४	अन्तर्राष्ट्रीय वीरशैवागम संगोष्ठी	प्रो. कमलेश झा, अध्यक्ष, धर्मागम विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
०९.११.२०१४ से ११.११.२०१४	''आधुनिक जीवन में योग, शारीरिक शिक्षा'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. एन. बी. शुक्ला, आयोजन सचिव, सी.एच.सी. एथलेटिक एसोसिएशन, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१०.११.२०१४ से १६.११.२०१४	हैन्ड्स ऑन ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन एम.ए.टी.एल.ए.बी.	डॉ. राघवेन्द्र चौबे, संयोजक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
११.११.२०१४ से ३०.११.२०१४	''पन्द्रह दिवसीय साहित्य शास्त्र'' पर कार्यशाला	डॉ. उमाकान्त चतुर्वेदी, संयोजक, साहित्य विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
११.११.२०१४ से १३.११.२०१४	आई.ए.एस.टी.ए. सम्मेलन	डॉ. एम. के. श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, भू-भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१२.११.२०१४	''सामाजिक विज्ञान में समकालीन अनुसंधान'' पर कार्यशाला	डॉ. सोनाली सिंह, आयोजन सचिव, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
१४.११.२०१४ से १६.११.२०१४	चीन अध्ययन की सातवीं अखिल भारतीय सम्मेलन	प्रो. आनन्द शंकर सिंह, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१५.११.२०१४ से १६.११.२०१४	''डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक दर्शन'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. ओम प्रकाश भारतीय, एसोसिएट प्रोफेसर एवं संगोष्ठी संयोजक, समाज शास्त्र विभाग, का.हि.वि.वि.
१५.११.२०१४ से १६.११.२०१४	''राष्ट्रीय प्रत्यारोपण शव कार्यक्रम'' पर कार्यशाला	डॉ. फरहान दुर्रानी, दंत विज्ञान संकाय, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१५.११.२०१४ से २१.११.२०१४	उत्तर भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत (सितार, वायलिना, बांसुरी, तबला) पर अंतर-विषयी कार्यशाला	प्रो. राजेश शाह, विभागाध्यक्ष, वाद्य संगीत विभाग, मंच कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१५.११.२०१४ से २१.११.२०१४	अनुसंधान प्रस्ताव लेखन – २०१४ पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. शिशिर बसु, कार्यशाला समन्वयक, पत्रकारिता तथा जनसंचार विभाग, का.हि.वि.वि.
१७.११.२०१४ से १८.११.२०१४	नेशनल कांग्रेस ऑफ स्टेकहोल्डर्स फार ए डायलोग ऑन टीचर एजुकेशन	प्रो. सुनील कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, का.हि.वि.वि.
२२.११.२०१४ से २३.११.२०१४	''जैन धर्म में आध्यात्मिक और रहस्यवादी अनुभव'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. मुकुल राज मेहता, संगोष्ठी समन्वयक, दर्शन एवं धर्म विभाग, का.हि.वि.वि.

२५.११.२०१४ से २७.११.२०१४	''योगशास्त्र के विविध आयाम'' पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. शशिकान्त द्विवेदी, संयोजक, वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२९.११.२०१४ से ३१.११.२०१४	''सेलिब्रेटिंग मल्टीपल आईडेन्टीटिस इन इंडिया'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. प्रियंकर उपाध्याय, समन्वयक, मालवीय शांति एवं अनुसंधान केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
दिसम्बर २०१४		
०१.१२.२०१४ से १२.१२.२०१४	उद्यमिता पर एफ.डी.पी. (डी.एस.टी.-एन.आई.एम.ए.टी.)	प्रो. राज कुमार, समन्वयक, प्रबंध शास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०८.१२.२०१४ से १२.१२.२०१४	''परमाणु भौतिकी '' पर बी.आर.एन.एस. संगोष्ठी	डॉ. बी. के. सिंह, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१९.१२.२०१४ से २१.१२.२०१४	''अनुभूति और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हाल की के लाभ'' पर तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. आई. एल. सिंह, निदेशक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, मनोविज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२०.१२.२०१४	''बौद्ध संस्कृति/साहित्य एवं भारत का संविधान'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. इन्दु चौधरी, संयोजक, अंग्रजी विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
२९.१२.२०१४ से ३१.१२.२०१४	राजनीति विज्ञान के छप्पनवीं अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन	प्रो. कौशल किशोर मिश्रा, विभागाध्यक्ष, आयोजन सचिव, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
जनवरी २०१५		
०२.०१.२०१५ से १६.०१.२०१५	'दलित वैचारिकी और निर्गुण संत' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. बिपिन कुमार, संयोजक, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.
०५.०१.२०१५ से १७.०१.२०१५	उद्यमिता पर एफडी.पी. (डी.एस.टी.-एन.आई.एम.ए.टी.)	प्रो. राज कुमार, समन्वयक, प्रबंध शास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०८.०१.२०१५ से ०९.०१.२०१५	''स्पेक्ट्रोस्कोपी में सीमाओं'' पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. एस.बी. राय, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१०.०१.२०१५ से १२.०१.२०१५	''स्पेक्ट्रोस्कोपी में सीमाओं'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. एस.बी. राय, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१२.०१.२०१५ से २१.०१.२०१५	'जीवन मूल्य और अकादमिक क्षमता का विकास' विषयक पर कार्यशाला	प्रो. रमेश चन्द पण्डा, सह-समन्वयक, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, का.हि.वि.वि.
१६.०१.२०१५ से १७.०१.२०१५	धर्मो के अध्ययन के लिए भारतीय संध (आई.ए.एस.आर.) पर सम्मेलन	प्रो. प्रवीन कुमार श्रीवास्तव, समन्वयक/स्थानीय सचिव, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, का.हि.वि.वि.
२१.०१.२०१५ से २२.०१.२०१५	''एप्लीकेशन ऑफ दोष-धतु-माला इन फिजियो-पैथोलॉजी ऑफ प्रनवाह स्रोतस्थ व्याधि'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. बी.एम. सिंह, अध्यक्ष, कौमारभृत्य/बालरोग एवं प्रो. संगीता गहलोत, आयोजन सचिव, क्रिया शरीर, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं, का.हि.वि.वि.
२३.०१.२०१५ से २४.०१.२०१५	उद्योग शिक्षा शिखर सम्मेलन २०१५ (आई.ए. समिट २०१५)	प्रो. एच.पी. माथुर, समन्वयक, प्लेसमेंट समन्वय सेल, का.हि.वि.वि.
२५.०१.२०१५	एनुअल एलुमिनि मीट	प्रो. आर.के. पाण्डेय,संकाय प्रमुख एवं प्रो. एच.पी. माथुर, समन्वयक, प्रबंध शास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
२७.०१.२०१५ से ३१.०१.२०१५	''कणों, नाभिक और संबंधित उपकरण की भौतिकी'' पर कार्यशाला	प्रो. बी.के. सिंह, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.

२७.०१.२०१५ से ०२.०२.२०१५	हैन्ड्स ऑन ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन सी. एवं एम.ए.टी.एल.ए.बी.	डॉ. मनोज कुमार सिंह, संयोजक, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
३०.०१.२०१५ से ३१.०१.२०१५	"गणितीय विश्लेषण एवं अनुप्रयोगों" विषय पर गणितीय सोसाइटी की ३०वीं वार्षिक सम्मेलन	डॉ. अरविंद कुमार सिंह, संयोजक, गणित विभाग, का.हि.वि.वि.
३०.०१.२०१५ से ०१.०२.२०१५	"दक्षिण एशियाई विरासत और क्षेत्रवाद के विकास की खोज में" पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. बी.वी. सिंह, संयोजक, नेपाल अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
३१.०१.२०१५ से ०१.०२.२०१५	एन.एम.ओ.सी.ओ.एन.-२०१५ राष्ट्रीय डॉक्टर्स संगठन की अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन	डॉ. विश्वम्बर सिंह, आयोजन सचिव, बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
फरवरी २०१५		
०२.०२.२०१५ से ०३.०२.२०१५	२१वीं सदी की चुनौतियाँ: बाल साहित्य की संभावनाएँ विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, रिसर्च साइंटिस्ट-सी (प्रोफेसर) हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.
०२.०२.२०१५ से १४.०२.२०१५	रिमेनियन ज्यामितिय पर रामानुजन गणितीय सोसाइटी के एक कार्यक्रम	डॉ. बी. तिवारी, संयोजक, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
०४.०२.२०१५ से १३.०२.२०१५	"पी.एच.डी. छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान में शोध पद्धति" पर कार्यशाला	डॉ. मुरारी लाल मीना, कोर्स निदेशक, भूगोल विभाग, का.हि.वि.वि.
०२.०२.२०१५ से २२.०२.२०१५	"मैनुस्क्रीप्टोलॉजी एवं पैलियोग्राफी" पर बुनियादी स्तर कार्यशाला	प्रो. स्येद हसन अब्बास, समन्वयक, फारसी विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
०६.०२.२०१५ से ०७.०२.२०१५	"वर्तमान समाज और मानव मूल्य" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा, सह-समन्वयक, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, का.हि.वि.वि.
०७.०२.२०१५	चिकित्सा सूक्ष्म जीव वैज्ञानिकों के भारतीय संघ की ११वीं वार्षिक सम्मेलन (यू.पी. चेप्टर)	डॉ. गोपाल नाथ, विभागाध्यक्ष, आयोजन अध्यक्ष एवं डॉ. प्रद्योत प्रकाश, आयोजन सचिव, सूक्ष्म जीविकी विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
०७.०२.२०१५	"रिसेन्ट ट्रेंड इन रिसर्च" पर सम्मेलन	डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१०.०२.२०१५ से १२.०२.२०१५	"द्वितीयम् अन्ताराष्टियं संस्कृत साहित्य सम्मेलनम्"	प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय, संयोजक, साहित्य विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१३.०२.२०१५ से १५.०२.२०१५	"लिंग समानता, बिजली और महिलाओं के खिलाफ हिंसा : मिथकों का मुकाबला और कानूनी प्रावधानों को समझना" पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. संध्या सिंह कौशिक, प्राचार्या, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.
१४.०२.२०१५ से १५.०२.२०१५	"कृषि में मृदा स्वास्थ्य एवं प्रजनन प्रबंधन के माध्यम से सतत ग्रामीण विकास" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. जी. पी. सिंह एवं डॉ. एस. एन. सिंह, आयोजन सचिव, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृ.वि.सं., का.हि.वि.वि., बरकच्छा, मिर्जापुर
१४.०२.२०१५ से १५.०२.२०१५	मानव संसाधन विकास पर राष्ट्रीय सम्मेलन (एन.सी.एच.आर.डी.-२०१५) विषय : "सतत विकास के लिए मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में उत्कृष्टता"	प्रो. एस. सी. दास, संयोजक, वाणिज्य विभाग, का.हि.वि.वि.
१८.०२.२०१५ से १९.०२.२०१५	"डॉ. अम्बेडकर का सर्वसमावेशी चिंतन (इनक्लूसिव थिंकिंग ऑफ डॉ अम्बेडकर)" पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. कौशल किशोर मिश्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.

२१.०२.२०१५ से २२.०२.२०१५	अस्थि एवं खनिज अनुसंधान की भारतीय सोसाइटी के यू.पी. चेप्टर की द्वितीय वार्षिक सम्मेलन	प्रो. एस. के. सिंह, अंत:स्राव एवं उपापचय विज्ञान विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१९.०२.२०१५ से २१.०२.२०१५	विश्व वेदांता सम्मेलन	प्रो. राजाराम शुक्ल, विभागाध्यक्ष, वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१९.०२.२०१५ से २०.०२.२०१५	''संयंत्र विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में उभरती प्रवृत्तियों और चुनौतियों'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन 'ई.टी.सी.पी.एस.आर. – २०१५'	प्रो. आर.एन. खरवार, संयोजक, वनस्पति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२०.०२.२०१५ से २४.०२.२०१५	''रिसेन्ट डेवलपमेन्ट इन क्वांटम थ्योरिज'' पर कार्यशाला	प्रो. बी.पी. मंडल, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
२५.०२.२०१५ से २७.०२.२०१५	''प्रजनन जीव विज्ञान एवं तुलनात्मक अंत:स्राव विज्ञान'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. शिओ कुमार सिंह, संयोजक एवं डॉ. राधा चौबे, आयोजन सचिव, जीव विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२७.०२.२०१५ से २८.०२.२०१५	''पर्यावरण एवं संपोष्य विकास'' पर द्वितीय स्नातक संगोष्ठी	डॉ. सुधाकर श्रीवास्तव, आयोजन सचिव एवं डॉ. विशाल प्रसाद, संयुक्त आयोजन सचिव, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.
मार्च २०१४		
०९.०३.२०१५ से ११.०३.२०१५	''दक्षिण एशिया में गरीबी और अभाव'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. बी.वी. सिंह, संयोजक, प्रो. एन.के. मिश्रा एवं डॉ. एन.पी. सिंह, आयोजन सचिव, नेपाल अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
०९.०३.२०१५ से १३.०३.२०१५	''कैरेक्टराइजेशन एंड फंक्शनलाइजेशन ऑफ नैनोमैटेरियल्स'' पर कार्यशाला	प्रो. अनूप कुमार घोष, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
०९.०३.२०१५ से १२.०३.२०१५	''लिंग : राजनीति, श्रम, कानून और विकास'' पर युवा शोधकर्ताओं के लिए १७वीं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. रंजना शील, संयोजक एवं प्रो. बिन्दा परनजापे, सह-संयोजक, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१०.०३.२०१५ से ११.०३.२०१५	''अमूर्त सांस्कृतिक विरासत : समुदाय, भागीदारी और विकास'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. उषा रानी तिवारी, संयोजक, संग्रहालय अनुभाग, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१२.०३.२०१५ से १३.०३.२०१५	''भारत में लिंग असमानता और महिलाओं की सुरक्षा'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. रीता सिंह, समन्वयक, महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१२.०३.२०१५ से १४.०३.२०१५	''जीनोम विश्लेषण एवं आणविक तकनीक'' पर कार्यशाला	डॉ. मधु जी. तपाडिया, इंटरडिसिप्लीनरी स्कूल ऑफ लाइफ साइंस, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१२.०३.२०१५	विश्व गुर्दा दिवस उत्सव	प्रो. ओ.पी. मिश्रा, बाल चिकित्सा विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१३.०३.२०१५ से १५.०३.२०१५	''क्लीनिकल न्यूट्रीशन – २०१५ पर १९वीं विश्व कांग्रेस''	प्रो. (डॉ) रतन कुमार श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, कम्यूनिटि मेडिसिन विभाग, चि.वि.सं. एवं डॉ. मुक्ता सिंह, आयोजन सचिव, गृह विज्ञान विभाग, एम.एम.वी., का.हि.वि.वि.

१३.०३.२०१५ से १५.०३.२०१५	''वर्तमान मानव संसाधन प्रबंधन के तरीकों'' पर तृतीय राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. इन्द्रमनी एल. सिंह, सम्मेलन निदेशक, मनोविज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
१४.०३.२०१५ से १५.०३.२०१५	नेशनल सी.एम.ई ऑन ट्रॉमा एनेस्थिसिया एंड क्रिटिकल केयर	प्रो. एल.डी. मिश्रा, विभागाध्यक्ष, निश्चेतन विज्ञान विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
१४.०३.२०१५ से १६.०३.२०१५	पी.ए.एम.सी. की ७वीं बैठक के साथ ''भू-विज्ञान में नई दिशा पर चर्चा''	प्रो. राजेश कुमार श्रीवास्तव, भू-विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
१६.०३.२०१५ से २५.०३.२०१५	''एम.एस.-एक्सेल और एस.पी.एस.एस. से सांख्यिकी को समझना'' पर कार्यशाला	डॉ. जी. पी. सिंह, संयोजक, कम्यूनिटि मेडिसिन विभाग, चि.वि.सं. एवं डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
१७.०३.२०१५ से २०.०३.२०१५	''ब्रम्हांड के अंधकार की ओर से प्रकाश'' पर कार्यशाला	डॉ. वेंकटेश सिंह, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१७.०३.२०१५ से १८.०३.२०१५	प्रो. राजमोहन उपाध्याय संस्मृति (षष्ठ) अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन	प्रो. चन्द्रमौली उपाध्याय, अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१८.०३.२०१५	''मनोदैहिक विकारों प्रबंधन में वर्तमान दृष्टिकोण'' पर राष्ट्रीय सेमिनार	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आयोजन सचिव, काय चिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२१.०३.२०१५	बाल चिकित्सा रुधिर ऑन्कोलाजी में सीएमई	डॉ. विनीता गुप्ता, बाल चिकित्सा विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२१.०३.२०१५ से २२.०३.२०१५	सामुदायिक नेत्र विज्ञान पर राष्ट्रीय सीएमई (काशी एकोइन २०१५)	डॉ. आर. पी. मौर्या, आयोजन सचिव, नेत्र विज्ञान विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२१.०३.२०१५ से २२.०३.२०१५	''नैनोमेटेरियलस और सतत सिंथेटिक रणनीतियाँ'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. के. एन. सिंह, संयोजक एवं डॉ. बी. मैती, सह-संयोजक, रसायन शास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२६.०३.२०१५ से २८.०३.२०१५	आनो में फिस्टुला के नैदानिक मूल्यांकन और प्रबंधन के लिए अग्रिम प्रशिक्षण	प्रो. प्रदीप कुमार एवं डॉ. एस.जे. गुप्ता, शल्य तंत्र विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२८.०३.२०१५ से २९.०३.२०१५	''समकालीन में कराका संहिता और उसके व्यवहार की प्रासंगिकता'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. पी.के. गोस्वामी, विभागाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव, सम्हिता एवं संस्कृत विभाग, आयुर्वेद संकाय, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२८.०३.२०१५ से ३०.०३.२०१५	बायोमैथमेटिक्स पर एक छोटी कार्यशाला	डॉ. ए. के. मिश्रा, संयोजक, गणित विभाग एवं डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
२९.०३.२०१५	नवजात शिशु की विकासात्मक सहायक देखभाल	प्रो. अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष, बाल चिकित्सा विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.
२९.०३.२०१५	एक्यूट एब्डोमेन पर सी.एम.ई.	डॉ. एस.जे. गुप्ता, शल्य तंत्र विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.

परिशिष्ट - ५

वर्ष २०१४-१५ के अन्तर्गत शैक्षणिक विचार गोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षकों की संख्या का विवरण

क्र.सं.	विभाग/संकाय	शिक्षक का नाम	कार्यक्रम का विवरण एवं अवधि
अ. भारत में			
1.	नेत्र विज्ञान विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. राजेन्द्र प्रकाश मौर्या	"२०वाँ एनिवर्सरी कांग्रेस ऑफ आई एडवांस' २०१४" २०-२२ जून, २०१४ के दौरान मुम्बई में आयोजित हुआ।
2.	आर्थोपेडिक्स विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. श्याम कुमार सर्राफ	"५९वाँ एन्नुएल कांफ्रेस ऑफ इंडियन आर्थोपेडिक्स एसोशिएशन (आईओएसीओएन २०१४)" १९-२३ नवम्बर, २०१४ के दौरान हैदराबाद में आयोजित हुआ।
3.	दन्त चिकित्सा विज्ञान विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव	"एफडीआई २०१४ : एन्नुएल वर्ल्ड डेन्टल कांग्रेस" ११-१४ सितम्बर, २०१४ के दौरान गेटर नोएडा में आयोजित हुआ।
4.	नेत्र विज्ञान विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. राजेन्द्र प्रकाश मौर्या	निम्न में भाग लिए : १. "एपीएसओपीआरएस-ओपीएआई २०१४ : ए टू जेड आक्टूप्लास्टिकफेस्ट ज्वाइंट मीटिंग आफॅ एशिया पैसफिक सोसाइटी ऑफ आप्थाल्मिक प्लास्टिक एण्ड रिकन्स्ट्रक्टिव सर्जरी एण्ड सिलवर जुबली मीटिंग आक्टूप्लास्टिक एसोसिएशन ऑफ इण्डिया" २६ -२८ सितम्बर, २०१४ के दौरान इंडिया हेबिटल सेन्टर, नई दिल्ली में आयोजित हुआ। २. ५वाँ एन्नुअल कॉन्फ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ कम्युनिटी आप्थॉलमोलोजिस्ट्स ऑफ इण्डिया (एसीओआईएन) एण्ड इंटरनेशनल एसेम्बली ऑफ कम्युनिटी आप्थॉलमोलोजिस्ट्स" ३१ अक्टूबर से १ नवम्बर, २०१४ के दौरान आयोजित हुआ।
5.	दंत चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. रोमेश सोनी	"४२वाँ इण्डियन प्रोस्थोडोंटिक सोसाइटी कान्फ्रेंस २०१४" ६ -९ नवम्बर, २०१४ के दौरानी चंडीगढ़ में आयोजित हुआ।
6.	दंत चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. अजीत विक्रम परिहार	"४९ वाँ इण्डियन ओर्थोडोंटिक कान्फ्रेंस" २१ -२३ नवम्बर, २०१४ के दौरान साइंस सिटी, कोलकाता में आयोजित हुआ।

7.	दंत चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. हरखचंद बरनवाल	"२१वाँ आईएसीडीई और २२वाँ आईईएस राष्ट्रीय सम्मेलन" ५ -७ दिसम्बर, २०१४ के दौरानी बी.एम. बिरला साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी सेंटर, जयपुर में आयोजित हुआ।
8.	जीव रसायन, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. डी. दास	"२२वाँ एन्नुअल नेशनल कांफ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ मेडिकल बायोकेमिस्ट्स ऑफ इंडिया (एएमबीआईसीओएन) २०१४" १४ -१६ नवम्बर, २०१४ के दौरान श्री वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, त्रिरुपति में आयोजित हुआ।
9.	शरीर विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. एस.बी. देशपाण्डे	"६०वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ फिजियोलॉजिस्ट्स एण्ड फॉर्माकोलोजिस्ट्स ऑफ इण्डिया" २०-२२ नवम्बर, २०१४ के दौरान ब्लू लिलि बीच रिसोर्ट, पुरी में आयोजित हुआ।
10.	शल्य चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. राहुल खन्ना	"४०वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ, यूपी चेप्टर (यूपीएएसआईसीओएन-२०१४)" १४-१६ नवम्बर, २०१४ के दौरान अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में आयोजित हुआ।
11.	स्वास्थ्यवृत्त एवं योग , आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. (सुश्री) मंगलागौरी वी. राय	"६वाँ वर्ल्ड आयुर्वेद कांग्रेस" ८ -९ नवम्बर, २०१४ के दौरान प्रगति मैदान में आयोजित हुआ।
12.	दंत चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव	निम्न में भागीदारी १. "३६वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ इण्डियन सोसाइटी ऑफ पेडोडोंटिक्स एण्ड प्रीवेंटिव डेनटिस्ट्री" १४ -१६ अक्टूबर, २०१४ के दौरान लखनऊ में आयोजित हुआ। २. "नेशनल कैडवर वर्कशाप ऑन ओरल इंपलांटोलॉजी (एनसीडब्ल्युओआई-२०१४) १५-१६ नवम्बर, २०१४ के दौरान दंत चिकित्सा विज्ञान, का.हि.वि.वि. में आयोजित हुआ। ३. "३७वाँ उ.प्र. दंत कांफ्रेंस -२०१४ " १९-२१ दिसम्बर, २०१४ के दौरान का.हि.वि.वि., वाराणसी में आयोजित हुआ। ४. २८वाँ एन्नुअल कॉन्वोकेशन एण्ड अवार्ड सेरेमनी ऑफ द पियरे फाचार्ड अकादमी, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
13.	दंत ा चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. आशीष अग्रवाल	"एन्नुअल वर्ल्ड डेंटल कांग्रेस (एफडीआई -२०१४)" ११ -१४ सितम्बर, २०१४ के दौरान ग्रेटर नोएडा, एनसीआर, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।

14.	निश्चेतन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. एल.डी. मिश्रा	''१६वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ इण्डियन सोसाइटी न्यूरो एनिस्थिसियोलॉजी एण्ड क्रिटिकल केयर २०१५ (आई एसएनएसीसी-१५) ३० जनवरी से १ फरवरी, २०१५ के दौरान एसजीपीजीआईएमएस, लखनऊ में आयोजित हुआ।
15.	विकिरण चिकित्सा और विकिरण आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. ललित मोहन अग्रवाल	''इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन मेडिकल फिजिक्स, रेडिएशन प्रोटेक्शन एण्ड रेडियाबायालॉजी -आईसीएमपीआरपीआर-२के१५'' २० -२२ फरवरी, २०१५ के दौरान जयपुर में आयोजित हुआ।
16.	संज्ञाहरण, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. देवेन्द्रनाथ पाण्डेय	''एआईएमसीओएन-२०१५ एण्ड एन्नुअल साइंटिफिक सेमिनार'' १०-११ अप्रैल, २०१५ के दौरान कंगरा (एचपी) में आयोजित हुआ।
17.	संज्ञाहरण, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव	''नेशनल साइंटिफिक सिम्पोजियम एण्ड वर्कशाप ऑन ऐस्थिटिक रेस्टोरेशन ऑन ह्यूमन एक्स्ट्रेक्टेड टूथ -२०१५'' ११ -१२ अप्रैल, २०१५ के दौरान के.एन. उडुपा हॉल, का.हि.वि.वि. में आयोजित हुआ।
18.	प्रसार शिक्षा विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. दीपक डे	''आईएएमसीआर २०१४ कांफ्रेंस'' १५ -१९ जुलाई , २०१४ के दौरान हैदराबाद में आयोजित हुआ।
19.	पशुपालन और डेरी उद्योग, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. विनोद कुमार पासवान	''ग्लोबल एनिमल न्यूटीशन कांफ्रेंस'' २०-२२ अप्रैल, २०१४ के दौरान बंगलुरू में आयोजित।
20.	वेटनरी फिजियोलॉजी एण्ड बायोकेमिस्ट्री, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. मनीष कुमार	''२१वाँ एन्नुअल कान्वेशन ऑफ इण्डिया सोसाइटी फॉर वेट ेरिनरी इम्युनोलॉजी एण्ड बायोटेक्नोलॉजी एण्ड इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ''लाइवस्टॉक डिसीज एफेक्टिंग लाइवलीहूड ऑप्सन्स एण्ड ग्लोबल ट्रेड-स्ट्राट्रेजी एण्ड साल्यूशन्स'' १७ -१९ जुलाई, २०१४ के दौरान मद्रास वेटेरिनरी कॉलेज, चेन्नई में आयोजित हुआ।
21.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. मनोज कुमार सिंह	''नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चरल डाइवर्सिफिकेशन फॉर सस्टेनेबल लाइबहूड एण्ड इन्वायरोन्म ेंटल सिक्यूरिटी'' १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना में आयोजित हुआ।
22.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह	''नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चरल डाइवर्सिफिकेशन फॉर सस्टेनेबल लाइबहूड एण्ड इन्वायरोन्मेंटल सिक्यूरिटी'' १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना में आयोजित हुआ।

23.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्त्व, कला संकाय	डॉ. अशोक कुमार सिंह	‘‘द ज्वाइंट एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ द इण्डियन आर्चीयोलॉजीकल सोसाइटी (आइएएस), इंडियन सोसाइटी फॉर प्रीहिस्टोरिक एण्ड क्वांटेनरी स्ट्डीज (आईएसपीक्यूएस) एण्ड इंडियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर सोसाइटी (आईएच ासीएस)’’ ६ -९ अक्टूबर, २०१४ के दौरान, डिक्कन कॉलेज, पुणे में आयोजित हुआ।
24.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. एम. रघुरमन	‘‘नेशनल सिम्पोजियम ऑन इंटोमोलॉजी एज ए साइंस एण्ड आईपीएम एज ए टेक्नोलॉजी-द वे फारवर्ड’’ १४-१५ नवम्बर, २०१४ के दौरान, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, पासीघाट में आयोजित हुआ।
25.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. सरोज कुमार प्रसाद	‘‘द नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चर डाइवर्सिफिकेशन, फॉर सस्टेनेबल लाइलीहूड एण्ड इन्वायारोमेंट ल सिक्योरिटी’’ १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना में आयोजित हुआ।
26.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. जे.एस. बोहरा	‘‘द नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चर डाइवर्सिफिकेशन, फॉर सस्टेनेबल लाइलीहूड ए ण्ड इन्वायारोमेंटल सिक्योरिटी’’ १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना में आयोजित हुआ।
27.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. राम नारायण मीणा	‘‘द नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चर डाइवर्सिफिकेशन, फॉर सस्टेनेबल लाइलीहूड एण्ड इन्वायारोमेंटल सिक्योरिटी’’ १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना में आयोजित हुआ।
28.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. राधेश्याम मीणा	‘‘नेशनल कांफ्रेंस ऑन चेजिंग सिनारियो ऑफ पेस्ट प्रोब्लम्स इन एग्री -होर्टी इकोसिस्टम एण्ड देयर मैनेजमेंट’’ २७ -२९ नवम्बर, २०१४ के दौरान कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, उदयपुर में आयोजित हुआ।
29.	वेटेनरी एण्ड एनिमल साइंस आरजीएससी, बरकछा, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. प्रिय रंजन कुमार	‘‘३०वाँ एन्नुअल कन्वोकेशन ऑफ द इण्डियन सोसाइटी फॉर स्ट्डीज ऑफ एनिमल रिप्रोडक्शन (आईएसएसएआर) ए ण्ड नेशनल सिम्पोजियम ऑन रिसर्च एण्ड इन्नोवेशन टू इम्प्रूव एनिमल फर्टिलिटि एण्ड फेकंडिटी’’ २० -२२ नवम्बर, २०१४ के दौरान डीयूवीएएसयू, मथुरा में आयोजित हुआ।
30.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. मनोज कुमार	‘‘द नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चर डाइवर्सिफिकेशन, फॉर सस्टेनेबल लाइलीहूड एण्ड इन्वायारोमेंटल सिक्योरिटी’’ १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, ल ुधियाना में आयोजित हुआ।

31.	कृषि अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. ओमप्रकाश सिंह	"द ७४वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ द सोसाइटी" १८ -२० दिसम्बर, २०१४ के दौरान डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर मार्थवाड़ा यूनिवर्सिटी में आयोजित हुआ।
32.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. अविजीत सेन	"द नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रीकल्चर डाइवर्सिफिकेशन, फॉर सस्टेनेबल लाइलीहूड एण्ड इन्वायारोमेंटल सिक्योरिटी" १८ -२० नवम्बर, २०१४ के दौरान पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना में आयोजित हुआ।
33.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. यदवीर सिंह	"७९वाँ एन्नुअल कन्वोकेशन ऑफ द इण्डियन सोसाइटी ऑफ स्वाइल साइंस" २४ -२७ नवम्बर, २०१४ के दौरान आचार्य एन.जी. रंगा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।
34.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. बी.आर मौर्या	"७९वाँ एन्नुअल कन्वोकेशन ऑफ द इण्डियन सोसाइटी ऑफ स्वाइल साइंस" २४ -२७ नवम्बर, २०१४ के दौरान आचार्य एन.जी. रंगा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।
35.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. पी.के. शर्मा	"७९वाँ एन्नुअल कन्वोकेशन ऑफ द इण्डियन सोसाइटी ऑफ स्वाइल साइंस" २४ -२७ नवम्बर, २०१४ के दौरान आचार्य एन.जी. रंगा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।
36.	प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. ओ.पी. मिश्रा	"नेशनल सेमिनार ऑन रि -ओरियंटेशन ऑफ एग्रीकल्चरल एजूकेशन" १४-१५ नवम्बर, २०१४ के दौरान बिहार एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, सैबर, भागलपुर में आयोजित हुआ।
37.	पादप शरीर क्रिया विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. पद्मनाथ द्विवेदी	"३७वाँ ऑल इण्डिया कांफ्रेंस ऑफ द इण्डियन बोटानिकल सोसाइटी एण्ड नेशनल सिम्पोजियम ऑन बायोडायवर्सि टी एण्ड क्लाइमेट चेंज" ७-९ नवम्बर, २०१४ के दौरान, वी.जी. वाजे कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एण्ड कामर्स में आयोजित हुआ।
38.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. रामचन्द्र	"८वाँ इंटरनेशनल ० फ्रांफ्रेंस ऑन मशरूम बायोलॉजी एण्ड मशरूम प्रोडक्ट्स" १९-२२ नवम्बर, २०१४ के दौरान पूसा, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
39.	आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. राजेश सिंह	"७वाँ नेशनल एक्स्टेंशन एजूकेशन कांग्रेस -२०१४" ८-११ नवम्बर, २०१४ के दौरान आईसीएआर रिसर्च काम्प्लेक्स फॉर एनइएच रिजन, उमैम, मेघालय में आयोजित हुआ।
40.	कृषि अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. राकेश सिंह	"द ७४वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ द सोसाइटी" १८ -२० दिसम्बर, २०१४ के दौरान डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर मार्थवाड़ा यूनिवर्सिटी में आयोजित हुआ

41.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. राम केवल	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन चेंजिंग सिनारियो ऑफ पेस्ट प्रोब्लम्स इन एग्री -होर्टी इकोसिस्टम एण्ड देयर मैनेजमेंट" २७ -२९ नवम्बर, २०१४ के दौरान कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, उदयपुर में आयोजित हुआ।
42.		डॉ. बसवप्रभु जिर्ली	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन मैनेजमेंट ऑफ सस्टेनेबल लाइलीहूड सिस्टम्स" १४-१७ फरवरी, २०१५ के दौरान भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
43.	वेटेनरी एण्ड एनिमल साइंस, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अजय प्रकाश	"३०वाँ एन्नुअल कान्वोकेशन ऑफ इण्डियन एसोसिएशन ऑफ वेटेरिनरी एनॉटोमिस्ट्स एण्ड नेशनल सिम्पोजियम ऑन रिसेंट कांसेप्ट एण्ड एप्लीकेशन्स ऑफ वेटेरिनरी एनॉटोमी फॉर इम्प्रूवमेंट ऑफ लाइवस्टॉक हेल्थ एण्ड प्रोडक्शन" ११ -१३ के दौरान अंजोरा दुर्ग में आयोजित हुआ।
44.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अमलान कुमार घोष	"एआईसी वर्कशाप ऑन स्वाइल एण्ड वॉटर नेटवर्किंग" ४-७ जनवरी, २०१५ के दौरान आईआईटी खड़गपुर में आयोजित हुआ।
45.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. एम. रघुरमन	"नेशनल इंटोमोलॉजिस्ट्स मीट" ५-७ फरवरी, २०१५ के दौरान राँची में आयोजित हुआ।
46.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. प्रियंकर राहा	"नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रोकेमिकल्स फॉर फूड एण्ड इन्वायरोन्मेंट सेफ्टी" २८ -३० जनवरी, २०१५ के दौरान, आईएआरआई, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
47.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	प्रो. रमेश चन्द्र	"६७वाँ एन्नुअल मीटिंग ऑफ द सोसाइटी एण्ड नेशनल सिम्पोजियम ऑन अंडरस्टैंडिंग होस्ट पॉथगान इंटरेक्शन थ्रो साइंस ऑफ ओमिक्स" १६-१७ मार्च, २०१५ इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पाइसेज रिसर्च, केरला में आयोजित हुआ।
48.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	डॉ. रामचन्द्र	"२वाँ नेशनल सेमिनार ऑन हाई -टेक हॉर्टीकल्चर : चैलेन्जेस एण्ड ऑपरचुनिटीज (एचआई -टीएचसीओ-२०१५)" २६ -२७ फरवरी, २०१५ के दौरान बाबा भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ में आयोजित हुआ।
49.	डीएसटी- अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र, विज्ञान संकाय	डॉ. बंकटेशवर तिवारी	"रामानुजन मैथमेटिक्ल्स सोसाइटी २९वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस" २३ -२७ जून, २०१४ के दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एण्ड रिसर्च (आईआईएसईआर), पुणे में आयोजित हुआ।

50.	भूविज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ. बिंध्याचल पाण्डेय	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन सेडिमेंटेशन एण्ड स्ट्राटीग्राफी एण्ड ३१वाँ कान्वेंशन ऑफ इंडिया एसोसि एशन ऑफ सेंडिमेंटोलॉजिस्ट्स" १२-१४ नवम्बर, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे में आयोजित हुआ।
51.	रसायनशास्त्र, विज्ञान संकाय	डॉ. सत्येन साहा	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एडवांसमेंट्स इन मैटेरियल्स, हेल्थ एण्ड सेफ्टी टूवार्ड्स सस्टेनेबल एनर्जी एण्ड इन्वायरोमेंट (एमएचएस - २०१४)" ७-८ अगस्त, २०१४ के दौरान कोहिनूर आशियान होटल, चेन्नई में आयोजित हुआ।
52.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. एस. प्रसाद	"१७वाँ बाइन्नियल कांफ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ जिरोंटोलॉजी, इंडिया (एजीआई) एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन इंगैजिंग एण्ड इम्पारमेंट द इलडर्ली" १५ -१६ सितम्बर, २०१४ के दौरान सेंटर ऑफ डेवलपमेंट स्ट्डीज तिरुवंथपुरम, केरला में आयोजित हुआ।
53.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. सुरेन्द्र कुमार	"इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ट्रांसलेशन न्यूरोसाइंस एण्ड ३२वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ इंडियन एकादमी ऑफ न्यूरोसाइंस" १ -३ नवम्बर, २०१४ के दौरान नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइंस, बंगलूरू में आयोजित हुआ।
54.	रसायनशास्त्र, विज्ञान संकाय	प्रो. नन्हई सिंह	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन स्ट्रक्चरल एण्ड इनऑर्गनिक केमिस्ट्री" ४ -५ दिसम्बर, २०१४ के दौरान सी एसआई आर-एनसीएल, पुणे में आयोजित हुआ।
55.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. एम.के. ठाकुर	निम्न में भाग लिए : 1. "इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ट्रांसनेशनल न्यूरोसाइंस एण्ड ३२वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑन इण्डियन अकादमी ऑफ न्यूरोसाइंस" १ -३ नवम्बर, २०१४ के दौरान बंगलुरू, कर्नाटक में आयोजित हुआ। 2. "वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ गिरोंटोलॉजी एण्ड गिरिएट्रिक्स : ३रा इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन हेल्दी एजेंसी इन द चेंजिंग वर्ल्ड २०१४" १७ -१९ नवम्बर, २०१४ के दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलुरू में आयोजित हुआ।
56.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री) मंजुला विनायक	"४था एन्नुअल कांफ्रेंस ऑन इण्डियन अकादमी ऑफ बायामेडिकल साइंस एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिसेंट एडवांस इन रिसर्च एण्ड ट्रीटमेंट ऑफ ह्यूमन डिसीज" ९ -११ जनवरी, २०१५ के दौरान हैदराबाद में आयोजित हुआ।

57.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. चन्दना हल्दर	निम्न में भाग लिए : ''इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन बायोएक्टिव केमिकल्स फॉर रिप्रोडक्शन एण्ड ह्युमन हेल्थ एण्ड ३३वाँ एन्नुअल मीटिंग ऑफ द सोसाइटी एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन बायाएक्टिव केमिकल्स फॉर रिप्रोडक्शन एण्ड ह्युमन हेल्थ'' २६-२८ फरवरी, २०१५ के दौरान दावणगेरे, कर्नाटक में आयोजित हुआ।
58.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. शिव कुमार सिंह	''२५वाँ एन्नुअल मीटिंग ऑफ द इण्डियन सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ रिप्रोडक्शन एण्ड फर्टिलाइजर एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिप्रोडक्टिव हेल्थ'' १४ -१७ फरवरी, २०१५ के दौरान मुम्बई में आयोजित हुआ।
59.	जीव रसायन, विज्ञान संकाय	डॉ. श्रीकृष्णा	''११वाँ वर्कशाप ऑन टीचिंग एण्ड लर्निंग जेनेटिक्स विथ ड्रोसोफिला'' २९ दिसम्बर से १० जनवरी के दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलुरू में आयोजित हुआ।
60.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री) नीलकमल रस्तोगी	''नेशनल सेमिनार ऑन वर्चुअल स्टडी एण्ड वर्चु अल लेबोरेटोरी : ए बून इन डिस्टेंश लर्निंग'' २० फरवरी २०१५ को कोलकाता में आयोजित हुआ।
61.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. स्वर्णलता	''इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन युथ जेंडर एण्ड एचआई वी'' १२ -१३ अगस्त, २०१४ के दौरान एमिटी यूनिवर्सिटी, लखनऊ में आयोजित हुआ।
62.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. त्र्यम्बक तिवारी	''१०२वाँ इंडियन साइंस कांग्रेस'' ३ -७ जनवरी, २०१५ के दौरान साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी फॉर ह्युमन डेवलेपमेंट, मुम्बई में आयोजित हुआ।
63.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. योगेश कुमार आर्य	''२४वाँ एन्नुअल कान्वेंशन ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी (एनएओपी) १२ -१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान एनआईटीटीआर कैम्पस, भोपाल में आयोजित हुआ।
64.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. अनिल कुमार जैन (रि - एम्प्लॉयी)	''इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन कान्टेम्पोरेरी ग्लोबल इकोनामिक्स इशूज '' १२-१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, इलाहाबाद में आयोजित हुआ।
65.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. संदीप कुमार	''इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन वेल-बिंग एण्ड ह्यूमन डेवेलपमेंट'' २४-२६ नवम्बर, २०१४ के दौरान अलिगढ़ मुस्लिम युनिवर्सि टी, अलिगढ़ में आयोजित हुआ।

66.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. दिनेश कुमार सिंह	''इंडियन सोसियोलॉजी सोसाइटी ४०वाँ ऑल इण्डिया सोसियोलॉजिकल कांफ्रेंस ऑन डेवलेपमेंट, डावर्सिटी एण्ड डेमोक्रेसी'' २९ -३० नवम्बर एवं १ दिसम्बर, २०१४ के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ यूनिवर्सिटी, वाराणसी में आयोजित हुआ।
67.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) सुस्मिता सिंह	''इंडियन सोसियोलॉजी सोसाइटी ४०वाँ ऑल इण्डिया सोसियोलॉजिकल कांफ्रेंस ऑन डेवलेपमेंट, डावर्सिटी एण्ड डेमोक्रेसी'' २९ -३० नवम्बर एवं १ दिसम्बर, २०१४ के दौरान महात्मा गांधी काशी ि वद्यापीठ यूनिवर्सिटी, वाराणसी में आयोजित हुआ।
68.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. तुषार सिंह	''२४वाँ एन्नुअल कान्वेंशन ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी (एनएओपी)'' १२-१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान एनआईटीटीटीआर कैम्पस, भोपाल में आयोजित हुआ।
69.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) शबाना बानो	निम्न में भाग लिए : १. ''२४वाँ एन्नुअल कान्वेंशन ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी (एनएओपी) १२ -१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान एनआईटीटीटीआर कैम्पस, भोपाल में आयोजित हुआ। २. ''१०२वाँ इण्डियन साइंस कांग्रेस'' ३ -७ जनवरी, २०१५ के दौरान युनिवर्सिटी ऑफ मुम्बई में आयोजित हुआ।
70.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) उर्मिला रानी श्रीवास्तव	''५०वाँ नेशनल एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ आइएएपी २०१५'' २३-२५ जनवरी, २०१५ के दौरान तिरुपति में आयोजित हुआ।
71.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. घनश्याम	''इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन इंडियन डायस्पोरा एण्ड कल्चरल हेरिटेज : पास्ट, प्रजेंट एण्ड फूचर'' ११ -१३ फरवरी, २०१५ के दौरान आईसीसीआर, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
72.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. आर.सी. मिश्रा	''कांफ्रेंस ऑन एडोलसेंट डेवलेपमेंट इश्यूज एण्ड चैलेंजेस (एडीआईसी-२०१५'' २९-३० जनवरी, २०१५ के दौरान कोलकाता में आयोजित हुआ।
73.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) शबाना बानो	''कांफ्रेंस ऑन एडोलसेंट डेवलेपमेंट इश्यूज एण्ड चैलेंजेस (एडीआईसी-२०१५'' २९-३० जनवरी, २०१५ के दौरान कोलकाता में आयोजित हुआ।
74.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. संदीप कुमार	''५०वाँ नेशनल एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ आईएएपी, २०१५'' २३-२५ जनवरी, २०१५ के दौरान तिरुपति में आयोजित हुआ।
75.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. ए. गंगाधरन	नेशनल सेमिनार ऑन – ''नार्थ-ईस्ट इंडिया बिफोर एण्ड आफटर पार्टिशन विथ स्पेशल रिफरेंशन टू त्रिपुरा'' १४ -१५ फरवरी, २०१५ के दौरान स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय, मोहनपुर, त्रिपुरा में आयोजित हुआ

76.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. मृत्युंजय मिश्रा	"इंटरनेशनल सेमिनार ऑन नेचुरल रिसोर्स एण्ड नेशनल एकाउण्ट्स इन साउथ एशिया" ५ -६ फरवरी, २०१५ के दौरान बंगलुरू में आयोजित हुआ।
77.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. बिंदा डी. प्राणजपे	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन ओमन एण्ड लीडरशिप इन इंडिया : डेसिफेरिंग द परसिसटिंग जेंडर गैप" १२ -१३ मार्च, २०१५ के दौरान आईटी कॉलेज, लखनऊ में आयोजित हुआ।
78.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. स्वर्णलता	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन कागनिटिव विहैवियरल इंटरवेंशन – एआईएमएस २०१५ (आईसीसीबीआई आईएएमएस २०१५" २ -४ मार्च, २०१५ के दौरान आईएएमएस, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
79.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	प्रो. बी.एन. शुक्ला	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिसेंट ट्रेंड्स इन फिटनेस, हेल्थ एण्ड स्पोर्ट साइंस" १ -४ अगस्त, २०१४ के दौरान ओसमानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।
80.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	प्रो. दिलीप कुमार दुरेहा	"इंटरनेशनल कांग्रेस ऑन स्पोर्ट्स साइकोलॉजी : आई सीएसपी २०१४ एण्ड २५वाँ नेशनल कांफ्रेंस ऑन स्पोर्ट्स साइकोलॉजी" १५ -१८ अक्टूबर, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ देलही में आयोजित हुआ।
81.	भाषा विज्ञान, कला संकाय	डॉ. (सुश्री) संजुक्ता घोष	"११वाँ इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन नेचुरल लैंगुएज प्रोसेसिंग (आईसीओएन-२०१४)" १८-२१ दिसम्बर, २०१४ के दौरान गोआ युनिवर्सिटी, गोआ में आयोजित हुआ।
82.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	डॉ. (सुश्री) शीतल राणा	"इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस : दे सेवेंटी-फिफ्थ सेशन" २८-३० दिसम्बर, २०१४ के दौरान जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
83.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	प्रो. (सुश्री) ऊषा रानी तिवारी	"२३वाँ सेसन : इंडियन आर्ट हिस्ट्री कांग्रेस इन कोलाबरेशन विथ नेशनल म्यूजियम एण्ड नेशनल म्यूजियम इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्ट्री ऑफ आर्ट, कंजरवेशन एण्ड म्युजियोलॉजी" ११ -१३ नवम्बर, २०१४ के दौरान नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
84.	दर्शन एवं धर्म, कला संकाय	डॉ. दुर्गेश चौधरी	"वर्कशाप ऑन मेकर्स ऑफ एनालाइटिक फिलोसोफी" ८ -१७ अक्टूबर, २०१४ के दौरान आईसीपीआर अकादमी सेंटर, लखनऊ में आयोजित हुआ।
85.	अंग्रेजी, कला संकाय	प्रो. (सुश्री) वानश्री	इंटरनेशनल सेमिनार ऑन "विच वे द ह्यूमन राईट्स : ट्रीटमेंट ऑफ चिल्ड्रेन, ओमन एण्ड ओल्ड पिपुल इन इण्डियन इंग्लिस एण्ड अमेरिकन लिटरेचर्स" १७-१९ दिसम्बर, २०१४ के दौरान ओसामिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।

86.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	प्रो. (सुश्री) ऊषा रानी तिवारी	"३८वाँ इण्डियन सोसियल साइंस कांग्रेस" २८ मार्च से २ अप्रैल, २०१५ के दौरान आयोजित हुआ।
87.	कला इतिहास, कला संकाय	डॉ. सायजु पी.जे.	"७वाँ इंटरनेशनल टूरिज्म कांफ्रेंस" ६ -८ फरवरी, २०१५ के दौरान मनाली में आयोजित हुआ।
88.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	डॉ. राजीव व्यास	"नेशनल वर्कशाप ऑन इम्पावरिंग फिजिकल एजुकेशन परसोनल थ्रो स्पोर्ट्स साइंस-२०१५" ३० मार्च से ५ अप्रैल, २०१५ के दौरान आयोजित हुआ।
89.	अंग्रेजी, कला संकाय	डॉ. देवेन्द्र कुमार	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन न्यू ट्रेंड्स इन २०वाँ -२१वाँ सेंचुरी इंग्लिस लिट्रेचर एण्ड लैंग्वेज (एनटीइएलएल २०१५) १३ -१४ मार्च, २०१५ के दौरान खानपुर कलाँ, सोनपत में आयोजित हुआ।
90.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. स्वर्णलता	"कांफ्रेंस ऑन सेलुलर एण्ड मैकेनिज्म्स ऑफ डाइसीज प्रोसेसेज -२०१४" १३ -१६ अप्रैल, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर, श्रीनगर में आयोजित हुआ।
91.	रसायनशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) दीक्षा कटियार	"२५वाँ नेशनल कांग्रेस ऑफ पारासिटोलॉजी ऑन ग्लोबल चैलेंज इन द मैनेजमेंट ऑफ पारासिटिक डिसिजेज" १६ -१८ अक्टूबर, २०१४ के दौरान लखनऊ में आयोजित हुआ।
92.	रसायनशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. कानिका कुंदु	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन स्टीम सेल रिसर्च, कैंसर बायोलॉजी, बायोमेडिकल साइंसेज, बायोइंफार्मेटिक्स एण्ड एप्लाईड बायोटेक्नोलॉजी" १-२ नवम्बर, २०१४ के दौरान ज ावाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
93.	रसायनशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. संदीप पाखोरिया	"१७वाँ सीआरएसआई नेशनल सिम्पोजियम इन केमिस्ट्री" ६ -८ फरवरी, २०१५ के दौरान सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे में आयोजित हुआ।
94.	गणित इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) पार्वती साहू	"नेशनल सेमिनार ऑन एनालाइसिस एण्ड इट्स एप्लीकेशन्स" २१ -२२ मार्च, २०१५ के दौरान, उत्कल यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
95.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) रश्मि सिंह	"२१वाँ इंटरनेशनल कांफ्रेंस (आईएससीबीसी -२०१५) करेंट ट्रेंड इन ड्रग डिस्कवरी एण्ड डेवलेपमेंट (सीटीडीडीडी)" २५ -२८ फरवरी, २०१५ के दौरान लखनऊ में आयोजित हुआ।

96.	अंग्रेजी इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. एन.आर. महान्ता	"नेशनल सेमिनार ऑन फेमिनिज्म एण्ड बियाण्ड : आईडेंटिटि, जेण्डर एण्ट पॉलिटिक्स" २६ -२७ फरवरी, २०१५ के दौरान डीडीयू यूनिवर्सिटी, गोरखपुर में आयोजित हुआ।
97.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) सुनिता सिंह	"आईएआरसी २०१५, द ३४वाँ एन्नुअल कॉन्वेंशन ऑफ इण्डियन एसोसिएशन फॉर कैंसर रिसर्च" १९ -२१ फरवरी, २०१५ के दौरान जयपुर में आयोजित हुआ।
98.	वाणिज्य संकाय	प्रो. वी. शुनमुगा सन्दरम्	"६७वाँ ऑल इण्डिया कामर्स कांफ्रेंस ऑफ इण्डियन कामर्स एसोसिएशन एण्ड इंटरनेशनल सेमिनार ऑन कार्पोरेट सोसिएल रिस्पॉसिबिलिटि एण्ड सस्टेनेबिलिटि" २७-२९ दिसम्बर, २०१५ के दौरान आईआईटी यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
99.	वाणिज्य संकाय	प्रो. बिजय कुमार मोहन्ती	"६७वाँ ऑल इण्डिया कामर्स कांफ्रेंस ऑफ इण्डियन कामर्स एसोसिएशन एण्ड इंटरनेशनल सेमिनार ऑन कार्पोरेट सोसिएल रिस्पॉसिबिलिटि एण्ड सस्टेनेबिलिटि" २७ -२९ दिसम्बर, २०१५ के दौरान आईआईटी यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
100.	शिक्षा संकाय	डॉ. पंकज सिंह	"द इंटरनेशनल रिसर्च वर्कशाप इन क्लाउड कम्पुटिंग" २६ -२७ सितम्बर, २०१४ के दौरान जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
101.	प्रयुक्त कला, दृश्यकला संकाय	डॉ. मनीष अरोड़ा	"३८वाँ इण्डियन सोसिएल साइंस कांग्रेस" २९ मार्च से २ अप्रैल २०१५ के दौरान आंध्र यूनिवर्सिटी विशाखापट्टनम में आयोजित हुआ।

क्र.सं.	विभाग/संकाय	शिक्षक का नाम	कार्यक्रम का विवरण एवं अवधि
ब. विदेश में			
१.	जठरांत्र शोथ विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. अशोक कुमार जैन	"लिवर के अध्ययन के लिए ४९वें वार्षि क बैठक, यूरोप संघ के अंतर्राष्ट्रीय लिवर कांग्रेस २०१४" ०९ -१३ अप्रैल, २०१४ के दौरान लंदन, यू.के. में एक्सेल सम्मेलन केन्द्र में आयोजित हुआ।
२.	शल्य तंत्र, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	"९वाँ एनुअल मीट एमएसपीएफडी अपडेट्स इन कोलाप्रोक्टोलॉजी एण्ड पेलविक फ्लोर" २४ -२६ अप्रैल, २०१४ के दौरान काहिरा, इजेप्ट में आयोजित हुआ।
३.	तंत्रिकीय चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. विजय नाथ मिश्रा	"११वाँ यूरोपीय कांग्रेस इपीलेप्थोलॉजी २०१४" २९ जून २ जुलाई अप्रैल, २०१४ के दौरान स्टॉकहोम, स्वीडन में आयोजित हुआ।
४.	विकिरण निदांन, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. अमित नंदन धर द्विवेदी	"६वाँ एशियाई कैंसर विज्ञान शिखर सम्मेलन और १०वाँ वार्षिक सम्मेलन" ११-१३ अप्रैल, २०१४ के दौरान कुआलालंपुर, मलेशिया में आयोजित हुआ।
५.	शल्य तंत्र, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	"१६वाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए चीन एसोसिएशन सम्मेलन" २३-२६ मई, २०१४ के दौरान यूनान, चीन में आयोजित हुआ।
६.	काय चिकित्सा, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. ज्योति शंकर	"पारम्परिक चिकित्सा पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" २४ -२६ जुलाई, २०१४ के दौरान कैंडी सिटी सेन्टर, कैंडी (श्रीलंका) में आयोजित हुआ।
७.	शल्य तंत्र, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	"पारम्परिक ज्ञान और चिकित्सा पर शैक्षिक बैठक" २७ -३० जुलाई, २०१४ के दौरान कुनमिंग वनस्पति विज्ञान संस्थान, चीनी विज्ञान अकादमी, चीन में आयोजित हुआ।
८.	विकृति विज्ञान आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. परमेस्वरप्पा शिवप्पा ब्यादगी	"१६वाँ अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेद संगोष्ठी और अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संगोष्ठी" १२-१५ सितम्बर, २०१४ के दौरान जर्मनी में आयोजित हुआ।
९.	संज्ञाहरण आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. कुलदीप कुमार पाण्डेय	"आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और पारम्परिक दवा पर दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीएयूएसटी-२०१४ और एवाईयू ईएक्सपीओ)" १६ -१८ दिसम्बर, २०१४ के दौरान कोलम्बो विश्वविद्यालय, राजगिरिया , श्रीलंका में आयोजित हुआ।
१०.	वृक्क रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. राणा गोपाल सिंह	"१८वाँ क्लीनिकल न्यूट्रीशन पर वर्ल्ड सम्मेलन: स्वास्थ्य और कल्याण के लिए कृषि, खाद्य एवं पोषण" १-३ दिसम्बर, २०१४ के दौरान उबोन रत्चथनि, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
११.	रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो.(सुश्री) उषा	"१८वाँ क्लीनिकल न्यूट्रीशन पर वर्ल्ड सम्मेलन: स्वास्थ्य और कल्याण के लिए कृषि, खाद्य एवं पोषण" १ -३ दिसम्बर, २०१४ के दौरान उबोन रत्चथनि, थाईलैंड में आयोजित हुआ।

१२.	शल्य तंत्र, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	"आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और पारम्परिक दवा पर दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीएयूएसटी -२०१४ और एवाईयू ईएक्सपीओ)" १६ - १८ दिसम्बर, २०१४ के दौरान कोलम्बो विश्वविद्यालय, राजगिरिया, श्रीलंका में आयोजित हुआ।
१३.	कार्डियाथोरेसिक सर्जिरी, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. संजय कुमार	"कार्डियोथोरेसिक सर्जरी के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए स्कैडिनेवियाई सोसायटी की २५वीं वार्षि क बैठक" १२ -१४ फरवरी, २०१५ के दौरान गैलो, नार्वे में आयोजित हुआ।
१४.	रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. जय प्रकाश	"स्थिरता और विविधता पर रोग विज्ञान की विश्व सम्मेलन -२०१५" १३-१७ मार्च, २०१५ के दौरान केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित हुआ।
१५.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. राम स्वरूप मीना	"इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी (एससीईटी २०१४) पर वसंत विश्व सम्मेलन २०१४" १६-१८ अप्रैल, २०१४ के दौरान शंघई, चीन में आयोजित हुआ।
१६.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. जनार्दन यादव	"मृदा विज्ञान (२० डब्ल्यूसीएसएस) २०वाँ विश्व सम्मेलन २०१४" ०८-१३ जून, २०१४ के दौरान जेजू, कोरिया में आयोजित हुआ।
१७.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. यू.पी. सिंह	"चौथा अंतर्राष्ट्रीय चावल सम्मेलन (आईआरसी २०१४)" २७ अक्टूबर - १ नवम्बर, २०१४ के दौरान बैकॉक, थाइलैंड में आयोजित हुआ।
१८.	आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. जय प्रकाश शाही	"भोजन, दूध, पोषण और पर्यावरण सुरक्षा के लिए मक्का पर १२वीं एशियाई मक्का सम्मेलन और विशेषज्ञ परामर्श" ३० अक्टूबर – १ नवम्बर, २०१४ के दौरान बैकॉक, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
१९.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. रमेश चन्द	"बीएमजेड और सीएसआईएसए गेहूं प्रजनन (ओवजेक्टीव ४) पर वार्षिक समीक्षा और कार्य योजना की बैठक" १०-१४ सितम्बर २०१४ के दौरान काठमांडू, नेपाल में आयोजित हुआ।
२०.	आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. विनोद कुमार मिश्रा	"बीएमजेड और सीएसआईएसए गेहूं प्रजनन (ओवजेक्टीव ४) पर वार्षिक समीक्षा और कार्य योजना की बैठक" १०-१४ सितम्बर २०१४ के दौरान काठमांडू, नेपाल में आयोजित हुआ।
२१.	उद्यान विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अनिल कुमार सिंह	"एशियाई संयंत्र विज्ञान सम्मेलन" ०१ -०३ नवम्बर २०१४ के दौरान लुम्बिनी, नेपाल में आयोजित हुआ।

२२.	उद्यान विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अखिलेश कुमार पाल	''एशियाई संयंत्र विज्ञान सम्मेलन'' ०१ -०३ नवम्बर २०१४ के दौरान लुम्बिनी, नेपाल में आयोजित हुआ।
२३.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. हरिकेश बहादुर सिंह	''विकासशील देशों में चीनी और एकीकृत इंडस्ट्रीज के सतत विकास के लिए हरित प्रौद्योगिकियों पर ५वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आईएपीएसआईटी सम्मेलन'' २५ -२८ नवम्बर २०१४ के दौरान नाननींग, चीन में आयोजित हुआ।
२४.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. सी.पी. श्रीवास्तव	''गेहूं एफिड और उनके जैविक नियंत्रण पर कार्यशाला'' २६ -२७ नवम्बर २०१४ के दौरान नेपाल कृषि अनुंसंधान (एनएआरसी) काठमांडू, नेपाल में आयोजित हुआ।
२५.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. रमेश चन्द	''दूसरे चरण में गेहू ग्लोबल पार्टनर बैठक'' ९ -९ दिसम्बर २०१४ के दौरान इस्तांबुल, तुर्की में आयोजित हुआ।
२६.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. रवि शंकर सिंह	''आई जी यू क्षेत्रीय सम्मेलन'' १८ -१२ अगस्त २०१४ के दौरान क्राको, पोलैंड में आयोजित हुआ।
२७.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. शशी भूषण अग्रवाल	''ओजोन और पौधों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १८-२१ मई २०१४ के दौरान बीजिंग, चीन में आयोजित हुआ।
२८.	भूविज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. अरूण देव	''२ आईओडी ३३९ पोस्ट -क्रूज बैठक'' ०१ -०६ जून २०१४ के दौरान काडिज़, स्पेन में आयोजित हुआ।
२९.	रसायन, विज्ञान संकाय	प्रो. वी.बी. सिंह	''सामग्री विनिर्माण और प्रसंस्करण २०१४ के लिए ग्रीन तकनीकी पर एक संगोष्ठी'' १२ -१६ अक्टूबर २०१४ के दौरान पिट्सबर्ग, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुआ।
३०.	जीव रसायन, विज्ञान संकाय	प्रो. सूर्य प्रताप सिंह	''अंत:स्रावी सोसायटी की ९६वीं वार्षिक बैठक'' २१-२४ जून २०१४ के दौरान शिकागो, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुआ।
३१.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. राणा पी.बी. सिंह	''सीमाओं और सीमा : दक्षिण पूर्व एशिया को बदलने में भूराजनीति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २०-२३ जुलाई २०१४ के दौरान कुनमिंग, चीन में आयोजित हुआ।
३२.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. रवि एस. सिंह	निम्नलिखित में भाग लेने के लिए : क) ''सीमाओं और सीमा : दक्षिण पूर्व एशिया को बदलने में भूराजनीति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २०-२३ जुलाई २०१४ के दौरान

३३.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. ए.के. घोष	"सामग्री विज्ञान और इंजीनियरिंग सम्मेलन २०१४" २३-२५ सितम्बर २०१४ के दौरान दरमस्टड, जर्मनी में आयोजित हुआ।
३४.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. मोहम्मद आबू शाज	"स्फटिक रूप-विधा की इंटरनेशनल यूनियन की सम्मेलन और महासभा" ०५-१२ अगस्त २०१४ के दौरान मॉन्ट्रियल, कनाडा में आयोजित हुआ।
३५.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. वी गनेशन्	"इलेक्ट्रोकेमिस्ट्री की इंटरनेशनल सोयटी की ६२वीं वार्षिक बैठक" ३१.०८.२०१४ से ०५.०९.२०१४ के दौरान लॉज़ेन, स्विट्जलैंड में आयोजित हुआ।
३६.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. बी.के. सिंह	"फोटोडेअेक्टेंशन में नए घटनाक्रम पर ७वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ३० जून, २०१४ से ०४ जुलाई, २०१४ के दौरान टूर, फ्रांस में आयोजित हुआ।
३७.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. राणा पी.बी. सिंह	क) "जल शहर के अध्ययन के लिए एक थ्योरी स्यूटोगाकू पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" ४-५ अक्टूबर २०१४ के दौरान होसई विश्वविद्यालय, टोक्यो, जापान में आयोजित हुआ। ख) "तट एशियाई सांस्कृतिक परिदृश्य पर २०१४ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" ०७-०९ अक्टूबर २०१४ के दौरान सियोल नेशनल विश्वविद्यालय, सोल, कोरिया में आयोजित हुआ। ग) "एशिया में कला के प्रतिनिधत्व : विजुअलीटि, प्रदर्शन और सौंदर्यशास्त्र, सातवीं एकेडमिक्स पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" पर २३-२६ अक्टूबर २०१४ के दौरान मिलान, इटली में आयोजित हुआ।
३८.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. मुरारी लाल मीना	"चौथा नील नदी बेसिन विकास मंच (एनबीडीएफ)" ६-७ अक्टूबर २०१४ के दौरान नैरोबी, केन्या में आयोजित हुआ।
३९.	भूगोल, एडवांस स्टडी सेन्टर, विज्ञान संकाय	प्रो. वैभव श्रीवास्तव	"१२वीं आईएईजी सम्मेलन" १५-१९ सितम्बर २०१४ के दौरान टोरिनो, इटली में आयोजित हुआ।
४०.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	प्रो. आर.के. मल्ल	"मौसम और जलवायु चरम सीमाओं, खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २०-२४ अक्टूबर २०१४ के दौरान जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय, सुयक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुआ।
४१.	डी.एस.टी. – अंतर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र, विज्ञान संकाय	प्रो. बनकटेश्वर तिवारी	"फिनस्लेर रेखागणित और अनुप्रयोग पर समर स्कूल/सम्मेलन" २२-३० सितम्बर २०१४ के दौरान एजियन विश्वविद्यालय, ग्रीस में आयोजित हुआ।
४२.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. आनन्द प्रसाद मिश्रा	"विचारों और भौगोलिक ज्ञान के इतिहास का संचालन : पदानुक्रम, बातचीत और नेटवर्क पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" १६-२० दिसम्बर २०१४ के दौरान रियो डे जानेरिओ, ब्राजील में आयोजित हुआ।

43.	वेटेनरी एण्ड एनिमल साइंस, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अजय प्रकाश	"३०वाँ एन्नुअल कान्वोकेशन ऑफ इण्डियन एसोसिएशन ऑफ वेटेरिनरी एनॉटोमिस्ट्स एण्ड नेशनल सिम्पोजियम ऑन रिसेंट कांसेप्ट एण्ड एप्लीकेशन्स ऑफ वेटेरिनरी एनॉटोमी फॉर इम्प्रूवमेंट ऑफ लाइवस्टॉक हेल्थ एण्ड प्रोडक्शन" ११ -१३ के दौरान अंजोरा दुर्ग में आयोजित हुआ।
44.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अमलान कुमार घोष	"एआईसी वर्कशाप ऑन स्वाइल एण्ड वॉटर नेटवर्किंग" ४-७ जनवरी, २०१५ के दौरान आईआईटी खड़गपुर में आयोजित हुआ।
45.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. एम. रघुरमन	"नेशनल इंटोमोलॉजिस्ट्स मीट" ५-७ फरवरी, २०१५ के दौरान राँची में आयोजित हुआ।
46.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. प्रियंकर राहा	"नेशनल सिम्पोजियम ऑन एग्रोकेमिकल्स फॉर फूड एण्ड इन्वायरोन्मेंट सेफ्टी" २८ -३० जनवरी, २०१५ के दौरान, आईएआरआई, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
47.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	प्रो. रमेश चन्द्र	"६७वाँ एन्नुअल मीटिंग ऑफ द सोसाइटी एण्ड नेशनल सिम्पोजियम ऑन अंडरस्टैडिंग होस्ट पॉथगान इंटरेक्शन थ्रो साइंस ऑफ ओमिक्स" १६-१७ मार्च, २०१५ इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पाइसेज रिसर्च, केरला में आयोजित हुआ।
48.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	डॉ. रामचन्द्र	"२वाँ नेशनल सेमिनार ऑन हाई -टेक हॉर्टीकल्चर : चैलेन्जेस एण्ड ऑपरचुनिटीज (एचआई -टीएचसीओ-२०१५)" २६ -२७ फरवरी, २०१५ के दौरान बाबा भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ में आयोजित हुआ।
49.	डीएसटी- अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र, विज्ञान संकाय	डॉ. बंकटेशवर तिवारी	"रामानुजन मैथमेटिक्ल्स सोसाइटी २९वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस" २३ -२७ जून, २०१४ के दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एण्ड रिसर्च (आईआईएसईआर), पुणे में आयोजित हुआ।
50.	भूविज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ. बिंध्याचल पाण्डेय	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन सेडिमेंटेशन एण्ड स्ट्राटीग्राफी एण्ड ३१वाँ कान्वेंशन ऑफ इंडिया एसोसि एशन ऑफ सेंडिमेंटोलॉजिस्ट्स" १२-१४ नवम्बर, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे में आयोजित हुआ।
51.	रसायनशास्त्र, विज्ञान संकाय	डॉ. सत्येन साहा	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एडवांसमेंट्स इन मैटैरियल्स, हेल्थ एण्ड सेफ्टी टूवार्ड्स सस्टेनेबल एनर्जी एण्ड इन्वायरोमेंट (एमएचएस -२०१४)" ७-८ अगस्त, २०१४ के दौरान कोहिनूर आशियान होटल, चेन्नई में आयोजित हुआ।

52.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. एस. प्रसाद	“१७वाँ बाइन्नियल कांफ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ जिरोंटोलॉजी, इंडिया (एजीआई) एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन इंगैजिंग एण्ड इम्पारमेंट द इलडर्ली” १५ -१६ सितम्बर, २०१४ के दौरान सेंटर ऑफ डेवलपमेंट स्ट्डीज तिरुवंथपुरम, केरला में आयोजित हुआ।
53.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. सुरेन्द्र कुमार	“इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ट्रांसलेशन न्यूरोसाइंस एण्ड ३२वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑफ इंडियन एकादमी ऑफ न्यूरोसाइंस” १ -३ नवम्बर, २०१४ के दौरान नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइंस, बंगलूरू में आयोजित हुआ।
54.	रसायनशास्त्र, विज्ञान संकाय	प्रो. नन्हई सिंह	“इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन स्ट्रक्चरल एण्ड इनऑर्गनिक केमिस्ट्री” ४ -५ दिसम्बर, २०१४ के दौरान सी एसआई आर-एनसीएल, पुणे में आयोजित हुआ।
55.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. एम.के. ठाकुर	निम्न में भाग लिए : 1. “इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ट्रांसनेशनल न्यूरोसाइंस एण्ड ३२वाँ एन्नुअल कांफ्रेंस ऑन इण्डियन अकादमी ऑफ न्यूरोसाइंस” १ -३ नवम्बर, २०१४ के दौरान बंगलुरू, कर्नाटक में आयोजित हुआ। 2. “वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ गिरोंटोलॉजी एण्ड गिरिएट्रिक्स : ३रा इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन हेल्दी एजेंसी इन द चेंजिंग वर्ल्ड २०१४” १७ -१९ नवम्बर, २०१४ के दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलुरू में आयोजित हुआ।
56.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री) मंजुला विनायक	“४था एन्नुअल कांफ्रेंस ऑन इण्डियन अकादमी ऑफ बायामेडिकल साइंस एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिसेंट एडवांस इन रिसर्च एण्ड ट्रीटमेंट ऑफ ह्यूमन डिसीज” ९ -११ जनवरी, २०१५ के दौरान हैदराबाद में आयोजित हुआ।
57.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. चन्दना हल्दर	निम्न में भाग लिए : “इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन बायोएक्टिव केमिकल्स फॉर रिप्रोडक्शन एण्ड ह्यूमन हेल्थ एण्ड ३३वाँ एन्नुअल मीटिंग ऑफ द सोसाइटी एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन बायाएक्टिव केमिकल्स फॉर रिप्रोडक्शन एण्ड ह्यूमन हेल्थ” २६-२८ फरवरी, २०१५ के दौरान दावणगेरे, कर्नाटक में आयोजित हुआ।
58.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. शिव कुमार सिंह	“२५वाँ एन्नुअल मीटिंग ऑफ द इण्डियन सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ रिप्रोडक्शन एण्ड फर्टिलाइजर एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिप्रोडक्टिव हेल्थ” १४ -१७ फरवरी, २०१५ के दौरान मुम्बई में आयोजित हुआ।

59.	जीव रसायन, विज्ञान संकाय	डॉ. श्रीकृष्णा	"११वाँ वर्कशाप ऑन टीचिंग एण्ड लर्निंग जेनेटिक्स विथ ड्रोसोफिला" २९ दिसम्बर से १० जनवरी के दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलुरू में आयोजित हुआ।
60.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री) नीलकमल रस्तोगी	"नेशनल सेमिनार ऑन वर्चुअल स्टडी एण्ड वर्चु अल लेबोरेटोरी : ए बून इन डिस्टेंश लर्निंग" २० फरवरी २०१५ को कोलकाता में आयोजित हुआ।
61.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. स्वर्णलता	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन युथ जेंडर एण्ड एचआई वी" १२ -१३ अगस्त, २०१४ के दौरान एमिटी यूनिवर्सिटी, लखनऊ में आयोजित हुआ।
62.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. त्र्यम्बक तिवारी	"१०२वाँ इंडियन साइंस कांग्रेस" ३ -७ जनवरी, २०१५ के दौरान साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी फॉर ह्युमन डेवलेपमेंट, मुम्बई में आयोजित हुआ।
63.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. योगेश कुमार आर्य	"२४वाँ एन्नुअल कान्वेंशन ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी (एनएओपी) १२ -१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान एनआईटीटीआर कैम्पस, भोपाल में आयोजित हुआ।
64.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. अनिल कुमार जैन (रि - एम्प्लॉयी)	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन कान्टेम्पोरेरी ग्लोबल इकोनामिक्स इशूज " १२-१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, इलाहाबाद में आयोजित हुआ।
65.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. संदीप कुमार	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन वेल-बिंग एण्ड ह्युमन डेवेलपमेंट" २४-२६ नवम्बर, २०१४ के दौरान अलिगढ़ मुस्लिम युनिवर्सि टी, अलिगढ़ में आयोजित हुआ।
66.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. दिनेश कुमार सिंह	"इंडियन सोसियोलॉजी सोसाइटी ४०वाँ ऑल इण्डिया सोसियोलॉजिकल कांफ्रेंस ऑन डेवलेपमेंट, डावर्सिटी एण्ड डेमोक्रेसी" २९ -३० नवम्बर एवं १ दिसम्बर, २०१४ के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ यूनिवर्सिटी, वाराणसी में आयोजित हुआ।
67.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) सुस्मिता सिंह	"इंडियन सोसियोलॉजी सोसाइटी ४०वाँ ऑल इण्डिया सोसियोलॉजिकल कांफ्रेंस ऑन डेवलेपमेंट, डावर्सिटी एण्ड डेमोक्रेसी" २९ -३० नवम्बर एवं १ दिसम्बर, २०१४ के दौरान महात्मा गांधी काशी वि द्यापीठ यूनिवर्सिटी, वाराणसी में आयोजित हुआ।
68.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. तुषार सिंह	"२४वाँ एन्नुअल कान्वेंशन ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी (एनएओपी)" १२-१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान एनआईटीटीआर कैम्पस, भोपाल में आयोजित हुआ।

69.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) शबाना बानो	निम्न में भाग लिए : १. "२४वाँ एन्नुअल कान्वेंशन ऑफ नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी (एनएओपी) १२ -१४ दिसम्बर, २०१४ के दौरान एनआईटीटीआर कैम्पस, भोपाल में आयोजित हुआ। २. "१०२वाँ इण्डियन साइंस कांग्रेस" ३ -७ जनवरी, २०१५ के दौरान युनिवर्सिटी ऑफ मुम्बई में आयोजित हुआ।
70.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) उर्मिला रानी श्रीवास्तव	"५०वाँ नेशनल एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ आइएएपी २०१५" २३-२५ जनवरी, २०१५ के दौरान तिरुपति में आयोजित हुआ।
71.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. घनश्याम	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन इंडियन डायस्पोरा एण्ड कल्चरल हेरिटेज : पास्ट, प्रजेंट एण्ड फ्यूचर" ११ -१३ फरवरी, २०१५ के दौरान आईसीसीआर, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
72.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. आर.सी. मिश्रा	"कांफ्रेंस ऑन एडोलसेंट डेवलेपमेंट इश्यूज एण्ड चैलेंजेस (एडीआईसी-२०१५" २९-३० जनवरी, २०१५ के दौरान कोलकाता में आयोजित हुआ।
73.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. (सुश्री) शबाना बानो	"कांफ्रेंस ऑन एडोलसेंट डेवलेपमेंट इश्यूज एण्ड चैलेंजेस (एडीआईसी-२०१५" २९-३० जनवरी, २०१५ के दौरान कोलकाता में आयोजित हुआ।
74.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. संदीप कुमार	"५०वाँ नेशनल एण्ड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ आईएएपी, २०१५" २३-२५ जनवरी, २०१५ के दौरान तिरुपति में आयोजित हुआ।
75.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. ए. गंगाधरन	नेशनल सेमिनार ऑन – "नार्थ-ईस्ट इंडिया बिफोर एण्ड आफ्टर पार्टिशन विथ स्पेशल रिफरेंशन टू त्रिपुरा" १४ -१५ फरवरी, २०१५ के दौरान स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय, मोहनपुर, त्रिपुरा में आयोजित हुआ।
76.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. मृत्युंजय मिश्रा	"इंटरनेशनल सेमिनार ऑन नेचुरल रिसोर्स एण्ड नेशनल एकाउण्ट्स इन साउथ एशिया" ५ -६ फरवरी, २०१५ के दौरान बंगलुरू में आयोजित हुआ।
77.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. बिंदा डी. प्राणजपे	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन ओमन एण्ड लीडरशिप इन इंडिया : डेसिफेरिंग द परसिसटिंग जेंडर गैप" १२ -१३ मार्च, २०१५ के दौरान आईटी कॉलेज, लखनऊ में आयोजित हुआ।
78.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. स्वर्णलता	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन कागनिटिव विहैवियरल इंटरवेंशन – एआईएमएस २०१५ (आईसीसीबीआई आईएएमएस २०१५" २ -४ मार्च, २०१५ के दौरान आईएएमएस, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।

79.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	प्रो. बी.एन. शुक्ला	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिसेंट ट्रेंड्स इन फिटनेस, हेल्थ एण्ड स्पोर्ट साइंस" १ -४ अगस्त, २०१४ के दौरान ओसमानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।
80.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	प्रो. दिलीप कुमार दुरेहा	"इंटरनेशनल कांग्रेस ऑन स्पोर्ट्स साइकोलॉजी : आई सीएसपी २०१४ एण्ड २५वाँ नेशनल कांफ्रेंस ऑन स्पोर्ट्स साइकोलॉजी" १५ -१८ अक्टूबर, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ देलही में आयोजित हुआ।
81.	भाषा विज्ञान, कला संकाय	डॉ. (सुश्री) संजुक्ता घोष	"११वाँ इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन नेचुरल लैंगुएज प्रोसेसिंग (आईसीओएन-२०१४)" १८-२१ दिसम्बर, २०१४ के दौरान गोआ युनिवर्सिटी, गोआ में आयोजित हुआ।
82.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	डॉ. (सुश्री) शीतल राणा	"इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस : दे सेवेंटी-फिफ्थ सेशन" २८-३० दिसम्बर, २०१४ के दौरान जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
83.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	प्रो. (सुश्री) ऊषा रानी तिवारी	"२३वाँ सेसन : इंडियन आर्ट हिस्ट्री कांग्रेस इन कोलाबरेशन विथ नेशनल म्यूजियम एण्ड नेशनल म्यूजियम इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्ट्री ऑफ आर्ट, कंजरवेशन एण्ड म्युजियोलॉजी" ११ -१३ नवम्बर, २०१४ के दौरान नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
84.	दर्शन एवं धर्म, कला संकाय	डॉ. दुर्गेश चौधरी	"वर्कशाप ऑन मेकर्स ऑफ एनालाइटिक फिलोसोफी" ८ -१७ अक्टूबर, २०१४ के दौरान आईसीपीआर अकादमी सेंटर, लखनऊ में आयोजित हुआ।
85.	अंग्रेजी, कला संकाय	प्रो. (सुश्री) वानश्री	इंटरनेशनल सेमिनार ऑन "विच वे द ह्यूमन राईट्स : ट्रीटमेंट ऑफ चिल्ड्रेन, ओमन एण्ड ओल्ड पिपुल इन इण्डियन इंग्लिस एण्ड अमेरिकन लिटरेचर्स" १७-१९ दिसम्बर, २०१४ के दौरान ओसामिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।
86.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	प्रो. (सुश्री) ऊषा रानी तिवारी	"३८वाँ इण्डियन सोसियल साइंस कांग्रेस" २८ मार्च से २ अप्रैल, २०१५ के दौरान आयोजित हुआ।
87.	कला इतिहास, कला संकाय	डॉ. सायजु पी.जे.	"७वाँ इंटरनेशनल टूरिज्म कांफ्रेंस" ६ -८ फरवरी, २०१५ के दौरान मनाली में आयोजित हुआ।
88.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	डॉ. राजीव व्यास	"नेशनल वर्कशाप ऑन इम्पावरिंग फिजिकल एजुकेशन परसोनल थ्रो स्पोट्र्स साइंस-२०१५" ३० मार्च से ५ अप्रैल, २०१५ के दौरान आयोजित हुआ।

89.	अंग्रेजी, कला संकाय	डॉ. देवेन्द्र कुमार	"नेशनल कांफ्रेंस ऑन न्यू ट्रेंड्स इन २०वाँ -२१वाँ सेंचुरी इंग्लिस लिट्रेचर एण्ड लैंग्वेज (एनटीइएलएल २०१५) १३ -१४ मार्च, २०१५ के दौरान खानपुर कलाँ, सोनपत में आयोजित हुआ।
90.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. स्वर्णलता	"कांफ्रेंस ऑन सेलुलर एण्ड मैकेनिज्म्स ऑफ डाइसीज प्रोसेसेज -२०१४" १३ -१६ अप्रैल, २०१४ के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर, श्रीनगर में आयोजित हुआ।
91.	रसायनशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) दीक्षा कटियार	"२५वाँ नेशनल कांग्रेस ऑफ पारासिटोलॉजी ऑन ग्लोबल चैलेंज इन द मैनेजमेंट ऑफ पारासिटिक डिसिजेज" १६ -१८ अक्टूबर, २०१४ के दौरान लखनऊ में आयोजित हुआ।
92.	रसायनशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. कानिका कुंदु	"इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन स्टीम सेल रिसर्च, कैंसर बायोलॉजी, बायोमेडिकल साइंसेज, बायोइंफार्मेटिक्स एण्ड एप्लाईड बायोटेक्नोलॉजी" १ -२ नवम्बर, २०१४ के दौरान ज ावाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
93.	रसायनशास्त्र इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. संदीप पाखोरिया	"१७वाँ सीआरएसआई नेशनल सिम्पोजियम इन केमिस्ट्री" ६ -८ फरवरी, २०१५ के दौरान सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे में आयोजित हुआ।
94.	गणित इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) पार्वती साहू	"नेशनल सेमिनार ऑन एनालाइसिस एण्ड इट्स एप्लीकेशन्स" २१ -२२ मार्च, २०१५ के दौरान, उत्कल यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
95.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) रश्मि सिंह	"२१वाँ इंटरनेशनल कांफ्रेंस (आईएससीबीसी -२०१५) करेंट ट्रेंड इन ड्रग डिस्कवरी एण्ड डेवलेपमेंट (सीटीडीडीडी)" २५ -२८ फरवरी, २०१५ के दौरान लखनऊ में आयोजित हुआ।
96.	अंग्रेजी इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. एन.आर. महान्ता	"नेशनल सेमिनार ऑन फेमिनिज्म एण्ड बियाण्ड : आईडेंटिटि, जेण्डर एण्ट पॉलिटिक्स" २६ -२७ फरवरी, २०१५ के दौरान डीडीयू यूनिवर्सिटी, गोरखपुर में आयोजित हुआ।
97.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) सुनिता सिंह	"आईएआरसी २०१५, द ३४वाँ एन्नुअल कॉन्वेंशन ऑफ इण्डियन एसोसिएशन फॉर कैंसर रिसर्च" १९ -२१ फरवरी, २०१५ के दौरान जयपुर में आयोजित हुआ।

98.	वाणिज्य संकाय	प्रो. वी. शुनमुगा सन्दरम्	"६७वाँ ऑल इण्डिया कामर्स कांफ्रेंस ऑफ इण्डियन कामर्स एसोसिएशन एण्ड इंटरनेशनल सेमिनार ऑन कार्पोरेट सोसिएल रिस्पॉसिबिलिटि एण्ड सस्टेनेबिलिटि" २७-२९ दिसम्बर, २०१५ के दौरान आईआईटी यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
99.	वाणिज्य संकाय	प्रो. बिजय कुमार मोहन्ती	"६७वाँ ऑल इण्डिया कामर्स कांफ्रेंस ऑफ इण्डियन कामर्स एसोसिएशन एण्ड इंटरनेशनल सेमिनार ऑन कार्पोरेट सोसिएल रिस्पॉसिबिलिटि एण्ड सस्टेनेबिलिटि" २७ -२९ दिसम्बर, २०१५ के दौरान आईआईटी यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ।
100.	शिक्षा संकाय	डॉ. पंकज सिंह	"द इंटरनेशनल रिसर्च वर्कशाप इन क्लाउड कम्पुटिंग" २६ -२७ सितम्बर, २०१४ के दौरान जेएनयू, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
101.	प्रयुक्त कला, दृश्यकला संकाय	डॉ. मनीष अरोड़ा	"३८वाँ इण्डियन सोसिएल साइंस कांग्रेस" २९ मार्च से २ अप्रैल २०१५ के दौरान आंध्र यूनिवर्सिटी विशाखापट्टनम में आयोजित हुआ।

क्र.सं.	विभाग/संकाय	शिक्षक का नाम	कार्यक्रम का विवरण एवं अवधि
ब. विदेश में			
१.	जठरांत्र शोथ विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. अशोक कुमार जैन	''लिवर के अध्ययन के लिए ४९वें वार्षि क बैठक, यूरोप संघ के अंतर्राष्ट्रीय लिवर कांग्रेस २०१४'' ०९ -१३ अप्रैल, २०१४ के दौरान लंदन, यू.के. में एक्सेल सम्मेलन केन्द्र में आयोजित हुआ।
२.	शल्य तंत्र, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	''९वाँ एनुअल मीट एमएसपीएफडी अपडेट्स इन कोलाप्रोक्टोलॉजी एण्ड पेलविक फ्लोर'' २४ -२६ अप्रैल, २०१४ के दौरान काहिरा, इजेप्ट में आयोजित हुआ।
३.	तंत्रिकीय चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. विजय नाथ मिश्रा	''११वाँ यूरोपीय कांग्रेस इपीलेप्थोलॉजी २०१४'' २९ जून २ जुलाई अप्रैल, २०१४ के दौरान स्टॉकहोम, स्वीडन में आयोजित हुआ।
४.	विकिरण निदांन, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. अमित नंदन धर द्विवेदी	''६वाँ एशियाई कैंसर विज्ञान शिखर सम्मेलन और १०वाँ वार्षिक सम्मेलन'' ११-१३ अप्रैल, २०१४ के दौरान कुआलालंपुर, मलेशिया में आयोजित हुआ।
५.	शल्य तंत्र, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	''१६वाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए चीन एसोसिएशन सम्मेलन'' २३-२६ मई, २०१४ के दौरान यूनान, चीन में आयोजित हुआ।
६.	काय चिकित्सा, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. ज्योति शंकर	''पारम्परिक चिकित्सा पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी'' २४ -२६ जुलाई, २०१४ के दौरान कैंडी सिटी सेन्टर, कैंडी (श्रीलंका) में आयोजित हुआ।
७.	शल्य तंत्र, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	''पारम्परिक ज्ञान और चिकित्सा पर शैक्षिक बैठक'' २७ -३० जुलाई, २०१४ के दौरान कुनमिंग वनस्पति विज्ञान संस्थान, चीनी विज्ञान अकादमी, चीन में आयोजित हुआ।
८.	विकृति विज्ञान आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. परमेस्वरप्पा शिवप्पा ब्यादगी	''१६वाँ अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेद संगोष्ठी और अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संगोष्ठी'' १२-१५ सितम्बर, २०१४ के दौरान जर्मनी में आयोजित हुआ।
९.	संज्ञाहरण आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. कुलदीप कुमार पाण्डेय	''आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और पारम्परिक दवा पर दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीएयूएसटी-२०१४ और एवाईयू ईएक्सपीओ)'' १६ -१८ दिसम्बर, २०१४ के दौरान कोलम्बो विश्वविद्यालय, राजगिरिया , श्रीलंका में आयोजित हुआ।
१०.	वृक्क रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. राणा गोपाल सिंह	''१८वाँ क्लीनिकल न्यूट्रीशन पर वर्ल्ड सम्मेलन: स्वास्थ्य और कल्याण के लिए कृषि, खाद्य एवं पोषण'' १-३ दिसम्बर, २०१४ के दौरान उबोन रत्चथनि, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
११.	रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो.(सुश्री) उषा	''१८वाँ क्लीनिकल न्यूट्रीशन पर वर्ल्ड सम्मेलन: स्वास्थ्य और कल्याण के लिए कृषि, खाद्य एवं पोषण'' १ -३ दिसम्बर, २०१४ के दौरान उबोन रत्चथनि, थाईलैंड में आयोजित हुआ।

१२.	शल्य तंत्र, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. मनोरंजन शाहू	''आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और पारम्परिक दवा पर दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीएयूएसटी-२०१४ और एवाईयू ईएक्सपीओ)'' १६ - १८ दिसम्बर, २०१४ के दौरान कोलम्बो विश्वविद्यालय, राजगिरिया, श्रीलंका में आयोजित हुआ।
१३.	कार्डियाथोरेसिक सर्जिरी, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ. संजय कुमार	''कार्डियोथोरेसिक सर्जरी के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए स्कैंडिनेवियाई सोसायटी की २५वीं वार्षि क बैठक'' १२ -१४ फरवरी, २०१५ के दौरान गैलो, नार्वे में आयोजित हुआ।
१४.	रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो. जय प्रकाश	''स्थिरता और विविधता पर रोग विज्ञान की विश्व सम्मेलन -२०१५'' १३-१७ मार्च, २०१५ के दौरान केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित हुआ।
१५.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ. राम स्वरूप मीना	''इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी (एससीईटी २०१४) पर वसंत विश्व सम्मेलन २०१४'' १६-१८ अप्रैल, २०१४ के दौरान शंघई, चीन में आयोजित हुआ।
१६.	मृदा और कृषि विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. जनार्दन यादव	''मृदा विज्ञान (२० डब्ल्यूसीएसएस) २०वाँ विश्व सम्मेलन २०१४'' ०८-१३ जून, २०१४ के दौरान जेजू, कोरिया में आयोजित हुआ।
१७.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. यू.पी. सिंह	''चौथा अंतर्राष्ट्रीय चावल सम्मेलन (आईआरसी २०१४)'' २७ अक्टूबर - १ नवम्बर, २०१४ के दौरान बैकॉक, थाइलैंड में आयोजित हुआ।
१८.	आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. जय प्रकाश शाही	''भोजन, दूध, पोषण और पर्यावरण सुरक्षा के लिए मक्का पर १२वीं एशियाई मक्का सम्मेलन और विशेषज्ञ परामर्श'' ३० अक्टूबर – १ नवम्बर, २०१४ के दौरान बैकॉक, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
१९.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. रमेश चन्द	''बीएमजेड और सीएसआईएसए गेहूं प्रजनन (ओवजेक्टीव ४) पर वार्षिक समीक्षा और कार्य योजना की बैठक'' १०-१४ सितम्बर २०१४ के दौरान काठमांडू, नेपाल में आयोजित हुआ।
२०.	आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. विनोद कुमार मिश्रा	''बीएमजेड और सीएसआईएसए गेहूं प्रजनन (ओवजेक्टीव ४) पर वार्षिक समीक्षा और कार्य योजना की बैठक'' १०-१४ सितम्बर २०१४ के दौरान काठमांडू, नेपाल में आयोजित हुआ।
२१.	उद्यान विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अनिल कुमार सिंह	''एशियाई संयंत्र विज्ञान सम्मेलन'' ०१ -०३ नवम्बर २०१४ के दौरान लुम्बिनी, नेपाल में आयोजित हुआ।

२२.	उद्यान विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. अखिलेश कुमार पाल	"एशियाई संयंत्र विज्ञान सम्मेलन" ०१ -०३ नवम्बर २०१४ के दौरान लुम्बिनी, नेपाल में आयोजित हुआ।
२३.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. हरिकेश बहादुर सिंह	"विकासशील देशों में चीनी और एकीकृत इंडस्ट्रीज के सतत विकास के लिए हरित प्रौद्योगिकियों पर ५वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आईएपीएसआईटी सम्मेलन" २५ -२८ नवम्बर २०१४ के दौरान नाननींग, चीन में आयोजित हुआ।
२४.	कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. सी.पी. श्रीवास्तव	"गेहूं एफिड और उनके जैविक नियंत्रण पर कार्यशाला" २६ -२७ नवम्बर २०१४ के दौरान नेपाल कृषि अनुंसंधान (एनएआरसी) काठमांडू, नेपाल में आयोजित हुआ।
२५.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो. रमेश चन्द	"दूसरे चरण में गेहू ग्लोबल पार्टनर बैठक" ९ -९ दिसम्बर २०१४ के दौरान इस्तांबुल, तुर्की में आयोजित हुआ।
२६.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. रवि शंकर सिंह	"आई जी यू क्षेत्रीय सम्मेलन" १८ -१२ अगस्त २०१४ के दौरान क्राको, पोलैंड में आयोजित हुआ।
२७.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. शशी भूषण अग्रवाल	"ओजोन और पौधों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" १८-२१ मई २०१४ के दौरान बीजिंग, चीन में आयोजित हुआ।
२८.	भूविज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. अरूण देव	"२ आईओडी ३३९ पोस्ट -क्रूज बैठक" ०१ -०६ जून २०१४ के दौरान काडिज़, स्पेन में आयोजित हुआ।
२९.	रसायन, विज्ञान संकाय	प्रो. वी.बी. सिंह	"सामग्री विनिर्माण और प्रसंस्करण २०१४ के लिए ग्रीन तकनीकी पर एक संगोष्ठी" १२ -१६ अक्टूबर २०१४ के दौरान पिट्सबर्ग, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुआ।
३०.	जीव रसायन, विज्ञान संकाय	प्रो. सूर्य प्रताप सिंह	"अंत:स्रावी सोसायटी की ९६वीं वार्षिक बैठक" २१-२४ जून २०१४ के दौरान शिकागो, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुआ।
३१.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. राणा पी.बी. सिंह	"सीमाओं और सीमा : दक्षिण पूर्व एशिया को बदलने में भूराजनीति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २०-२३ जुलाई २०१४ के दौरान कुनमिंग, चीन में आयोजित हुआ।
३२.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. रवि एस. सिंह	निम्नलिखित में भाग लेने के लिए : क) "सीमाओं और सीमा : दक्षिण पूर्व एशिया को बदलने में भूराजनीति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २०-२३ जुलाई २०१४ के दौरान

३३.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. ए.के. घोष	''सामग्री विज्ञान और इंजीनियरिंग सम्मेलन २०१४'' २३-२५ सितम्बर २०१४ के दौरान दरमस्टड, जर्मनी में आयोजित हुआ।
३४.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. मोहम्मद आबू शाज	''स्फटिक रूप-विधा की इंटरनेशनल यूनियन की सम्मेलन और महासभा'' ०५-१२ अगस्त २०१४ के दौरान मॉन्ट्रियल, कनाडा में आयोजित हुआ।
३५.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. वी गनेशन्	''इलेक्ट्रोकेमिस्ट्री की इंटरनेशनल सोयटी की ६२वीं वार्षिक बैठक'' ३१.०८.२०१४ से ०५.०९.२०१४ के दौरान लॉज़ेन, स्विट्जलैंड में आयोजित हुआ।
३६.	भौतिकी, विज्ञान संकाय	प्रो. बी.के. सिंह	''फ़ोटोडेअक्टेंशन में नए घटनाक्रम पर ७वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ३० जून, २०१४ से ०४ जुलाई, २०१४ के दौरान टूर, फ्रांस में आयोजित हुआ।
३७.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. राणा पी.बी. सिंह	क) ''जल शहर के अध्ययन के लिए एक थ्योरी स्यूटोगाकू पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी'' ४-५ अक्टूबर २०१४ के दौरान होसई विश्वविद्यालय, टोक्यो, जापान में आयोजित हुआ। ख) ''तट एशियाई सांस्कृतिक परिदृश्य पर २०१४ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी'' ०७-०९ अक्टूबर २०१४ के दौरान सियोल नेशनल विश्वविद्यालय, सोल, कोरिया में आयोजित हुआ। ग) ''एशिया में कला के प्रतिनिधत्व : विजुअलीटि, प्रदर्शन और सौंदर्यशास्त्र, सातवीं एकेडमिक्स पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी'' पर २३-२६ अक्टूबर २०१४ के दौरान मिलान, इटली में आयोजित हुआ।
३८.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. मुरारी लाल मीना	''चौथा नील नदी बेसिन विकास मंच (एनबीडीएफ)'' ६-७ अक्टूबर २०१४ के दौरान नैरोबी, केन्या में आयोजित हुआ।
३९.	भूगोल, एडवांस स्टडी सेन्टर, विज्ञान संकाय	प्रो. वैभव श्रीवास्तव	''१२वीं आईएईजी सम्मेलन'' १५-१९ सितम्बर २०१४ के दौरान टोरिनो, इटली में आयोजित हुआ।
४०.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	प्रो. आर.के. मल्ल	''मौसम और जलवायु चरम सीमाओं, खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २०-२४ अक्टूबर २०१४ के दौरान जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय, सुयक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुआ।
४१.	डी.एस.टी. – अंतर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र, विज्ञान संकाय	प्रो. बनकटेश्वर तिवारी	''फिनस्लेर रेखागणित और अनुप्रयोग पर समर स्कूल/सम्मेलन'' २२-३० सितम्बर २०१४ के दौरान एजियन विश्वविद्यालय, ग्रीस में आयोजित हुआ।
४२.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. आनन्द प्रसाद मिश्रा	''विचारों और भौगोलिक ज्ञान के इतिहास का संचालन : पदानुक्रम, बातचीत और नेटवर्क पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १६-२० दिसम्बर २०१४ के दौरान रियो डे जानेरिओ, ब्राजील में आयोजित हुआ।

४३.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. मधुलिका अग्रवाल	"दक्षिण एशिया की लवणता से प्रभावित क्षेत्रा में बेहतर ग्रीन हाउस गैस लाभ के साथ सबसे अच्छा कृषि प्रबंधन के तरीकों की पहचान पर कार्यशाला" १९-२० जनवरी २०१५ के दौरान कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित हुआ।
४४.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री) सुमन सिंह	"मानविकी और सामाजिक विज्ञान (आईसी-हुसो) २०१४ पर १०वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २०-२१ नवम्बर २०१४ के दौरान खॉन केन विश्वविद्यालय, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
४५.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. मुरारी लाल मीना	"मानविकी और सामाजिक विज्ञान (आईसी-हुसो) २०१४ पर १०वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २०-२१ नवम्बर २०१४ के दौरान खॉन केन विश्वविद्यालय, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
४६.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो. सरफराज़ आलम	"जल एवं बाढ़ प्रबंधन (आईसीडब्ल्यूएफएम-२०१५) पर ५वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ०६-०८ मार्च २०१५ के दौरान ढाका, बांग्लादेश में आयोजित हुआ।
४७.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	प्रो. जय प्रकाश वर्मा	"पर्यावरण माइक्रोबायोलॉजी (आईएमएसईएम१) पर पहला अंतर्राष्ट्रीय छोटा संगोष्ठी" ०६ मार्च २०१५ के दौरान चीन,शंघाई में आयोजित हुआ।
४८.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	प्रो. पी.सी. अभिलाष	"पर्यावरण माइक्रोबायोलॉजी (आईएमएसईएम१) पर पहला अंतर्राष्ट्रीय छोटा संगोष्ठी" ०६ मार्च २०१५ के दौरान चीन,शंघाई में आयोजित हुआ।
४९.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो. के.पी. जॉय	आईएनएसए एक्सचेंज के तहत इज़राइल की यात्रा के लिए वैज्ञानिकों ने कार्यक्रम की २२ मार्च से २ अप्रैल २०१५ के दौरान इज़राइल में आयोजित हुआ।
५०.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ. संदीप कुमार	"प्रयुक्त मनोविज्ञान का २८वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ८-१३ जुलाई २०१४ के दौरान पेरिस, फ्रांस में आयोजित हुआ।
५१.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. योगेश कुमार आर्या	"प्रयुक्त मनोविज्ञान का २८वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ८ -१३ जुलाई २०१४ के दौरान पेरिस, फ्रांस में आयोजित हुआ।
५२.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. तुषार सिंह	"प्रयुक्त मनोविज्ञान (आईसीएपी) का २८वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ८ - १३ जुलाई २०१४ के दौरान पेरिस, फ्रांस में आयोजित हुआ।
५३.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री.) रंजना शील	"एशिया इन मोशन: हेरिटेज एण्ड ट्रांसफॉरमेशन पर आस-इन-एशिया सम्मेलन २०१४" १७ -१९ जुलाई २०१४ के दौरान सिंगापुर में आयोजित हुआ।

५४.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो. (सुश्री.) अनुराधा सिंह	"मानविकी और सामाजिक विज्ञान (आईसी -हूसो) १०वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन २०१४" २०-२१ नवम्बर २०१४ के दौरान खॉन केन विश्वविद्यालय, थाईलैंड में आयोजित हुआ।
५५.	पालि तथा बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो. सिद्धार्थ सिंह	"११वीं वर्षगांठ समारोह और वेसाक २०१४ के संयुक्त राष्ट्र दिवस के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन" ०७-११ मई २०१४ के दौरान वियतनाम में आयोजित हुआ।
५६.	पालि तथा बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो. बिमलेन्द्र कुमार	"११वीं वर्षगांठ समारोह और वेसाक २०१४ के संयुक्त राष्ट्र दिवस के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन" ०७-११ मई २०१४ के दौरान वियतनाम में आयोजित हुआ।
५७.	पालि तथा बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो. हरी शंकर शुक्ला	"११वीं वर्षगांठ समारोह और वेसाक २०१४ के संयुक्त राष्ट्र दिवस के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन" ०७-११ मई २०१४ के दौरान वियतनाम में आयोजित हुआ।
५८.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	प्रो. रविन्द्र नाथ सिंह	"दक्षिण एशियाई पुरातत्व और कला- २०१४ के लिए यूरोपीय संघ के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ३० जून से ४ जुलाई २०१४ के दौरान स्टॉकहोम, स्वीडन में आयोजित हुआ।
५९.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	प्रो. सुषमा घिलदयाल	"एशियाई-दक्षिण प्रशांत ऐसोसिएशन – २०१४ का ७वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ०७-१० अगस्त २०१४ के दौरान टोक्यो, जापान में आयोजित हुआ।
६०.	कला इतिहास, कला संकाय	प्रो. अजय कुमार सिंह	"सुरक्षा लो मंथग और अपर मस्तंग के सांस्कृतिक परिदृश्य पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला" २७ अप्रैल से २१ मई, २०१४ के दौरान अपर मसटंग, नेपाल में आयोजित हुआ।
६१.	अंग्रेजी, कला संकाय	प्रो. दिप्तीरंजन पटनायक	"नियमवद्ध आत्मकथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ०२-०४ अक्टूबर २०१४ के दौरान अंग्रेजी विभाग, सोडरटोर्न विश्वविद्यालय, स्टॉकहोम, स्वीडन में आयोजित हुआ।
६२.	पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान, कला संकाय	प्रो. अजय प्रताप सिंह	"विश्व पुस्तकालय और सूचना कांग्रेस : ८०वाँ आईएफएलए सामान्य सम्मेलन और विधानसभा" १६-२२ अगस्त २०१४ के दौरान फ्रांस, ल्योन में आयोजित हुआ।
६३.	उर्दू, कला संकाय	प्रो. याकूब अली खान	"साहित्य, समाज और पुनर्निमाण (वर्तमान एवं भविष्य अतीत) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" १३-१४ जनवरी २०१५ के दौरान उर्दू शाह अब्दुल लतीफ विश्वविद्यालय खैरपुर, सिंध पाकिस्तान में आयोजित हुआ।
६४.	पालि तथा बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो. लाल जी	"अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध कॉलेज की १०वीं दीक्षांत संगोष्ठी" ०६-०७ सितम्बर २०१४ के दौरान कुआलालंपुर और पेनांग में आयोजित हुआ।

६५.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	प्रो. दिलीप कुमार दुरेहा	"राष्ट्रीय ओलंपिक मेमोरियल युवा केंद्र पर आयोजित ७वीं एएसपीएएसपी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" ७-१० अगस्तर २०१४ के दौरान टोक्यो , जापान में आयोजित हुआ।
६६.	हिन्दी, कला संकाय	प्रो. सदानन्द शाही	"मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया आप्रवासियों के आगमन का १८०वीं स्मरणोत्सव" ३० अक्टूबर से १० नवम्बर २०१४ के दौरान मोका, मॉरीशस में आयोजित हुआ।
६७.	हिन्दी, कला संकाय	प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी	"मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया आप्रवासियों के आगमन का १८०वीं स्मरणोत्सव" ३० अक्टूबर से १० नवम्बर २०१४ के दौरान मोका, मॉरीशस में आयोजित हुआ।
६८.	हिन्दी, कला संकाय	प्रो. अवधेश प्रधान	"मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया आप्रवासियों के आगमन का १८०वीं स्मरणोत्सव" ३० अक्टूबर से १० नवम्बर २०१४ के दौरान मोका, मॉरीशस में आयोजित हुआ।
६९.	हिन्दी, कला संकाय	प्रो. वशिष्ठ द्विवेदी	"मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया आप्रवासियों के आगमन का १८०वीं स्मरणोत्सव" ३० अक्टूबर से १० नवम्बर २०१४ के दौरान मोका, मॉरीशस में आयोजित हुआ।
७०.	कला इतिहास, कला संकाय	प्रो. अतुल त्रिपाठी	"बौद्ध स्तूप के विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २२ नवम्बर २०१४ के दौरान श्रीलंका के भिक्षु विश्वविद्यालय, में आयोजित हुआ।
७१.	प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, कला संकाय	प्रो. गौतन कुमार लामा	"बौद्ध स्तूप के विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" २२ नवम्बर २०१४ के दौरान श्रीलंका के भिक्षु विश्वविद्यालय, में आयोजित हुआ।
७२.	पालि तथा बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो. लालजी	"संवर्धन, संरक्षण एवं बौद्ध संस्कृति और विरासत के संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" १५ -१८ नवम्बर २०१४ के दौरान लुम्बिनी-नेपाल में आयोजित हुआ।
७३.	पालि तथा बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो. बिमलेन्द्र कुमार	"संवर्धन, संरक्षण एवं बौद्ध संस्कृति और विरासत के संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" १५ -१८ नवम्बर २०१४ के दौरान लुम्बिनी-नेपाल में आयोजित हुआ।
७४.	विदेशी भाषा कला संकाय	प्रो. कमल शील	१. "आधुनिक विश्व में चीन और भारत पर कार्यशाला" ७ -८ अगस्त २०१४ के दौरान कैनबरा, आस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ। २. "अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध कॉलेज की १०वीं दीक्षांत संगोष्ठी" ०६ -०७ सितम्बर २०१४ के दौरान कुआलालंपुर और पेनांग में आयोजित हुआ।
७५.	जीव विज्ञान इकाई महिला महाविद्यालय	डॉ. (सुश्री) राधा चौबे	"प्रजनन शरीर क्रिया विज्ञान की १०वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" २५ -३० मई २०१४ के दौरान ओलहाओ, पुर्तगाल में आयोजित हुआ।

७६.	महिला महाविद्यालय की मनोविज्ञान इकाई और प्राचार्य, महिला महाविद्यालय	प्रो. संध्या सिंह कौशिक	१. ''देखभाल और वसूली पर धर्म का प्रभाव विषय पर एक व्याख्यान देने लिए जाएं : भारतीय परिप्रेक्ष्य'' ०६ -१० अक्टूबर २०१४ के दौरान कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, रिवरसाइड, संयुक्त राज्य मिरीका के विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ। २. ''मनोविज्ञान पेशेवरों के लिए २०१४ के पतन नेटवर्किंग संगोष्ठी'' १०-११ अक्टूबर २०१४ के दौरान लॉस एंजिल्स, संयुक्त राज्य अमरीका में आयोजित हुआ। ३. ''आध्यात्मिक और मानसिक स्वास्थ्य विषय पर एक व्याख्यान'' १०-११ अक्टूबर २०१४ के दौरान ग्लासगो ब्रिटेन के विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ।
७७.	जीव विज्ञान इकाई, महिला महाविद्यालय	प्रो. (सुश्री) राधा चौबे	''न्यूरोइन्डोक्रिनोलॉजी २०१४ का ८वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १७-२० अगस्त २०१४ के दौरान सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ।
७८.	महिला महाविद्यालय की मनोविज्ञान इकाई और प्राचार्य, महिला महाविद्यालय	प्रो. संध्या सिंह कौशिक	१. ''दंत भय और तनाव प्रबंधन के प्रबंधन पर लोकप्रिय व्याख्यान'' २४ अक्टूबर २०१४के दौरान ग्लासगो, स्कॉटलैंड, ब्रिटेन में आयोजित हुआ। २. ''शिक्षा (आईआईसीई-२०१४) पर आयरलैंड अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २७-२९ अक्टूबर २०१४ के दौरान डबलिन, आयरलैंड में आयोजित हुआ।
७९.	भूगोल इकाई, महिला महाविद्यालय	प्रो. अरूण कुमार सिंह	''जल और बाढ़ प्रबंधन पर ५वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ६-८ मार्च २०१५ के दौरान ढाका, बांग्लादेश में आयोजित हुआ।
८०.	वाणिज्य संकाय	प्रो. एस.सी. दास	''मानव संसाधन विकास अनुसंधान और यूरोप भर में प्रैक्टिस पर १५वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ४-६ जून २०१४ के दौरान एडिनबर्ग नेपियर विश्वविद्यालय, एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड में आयोजित हुआ।
८१.	विधि संकाय	प्रो. डी.पी. वर्मा	''२५ साल सीआरसी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १७-१९ नवम्बर २०१४ के दौरान लीडेन लॉ स्कूल, लीडेन विश्वविद्यालय, नीदरलैंड में आयोजित हुआ।
८२.	वाणिज्य संकाय	प्रो. सूर्य प्रकाश	''व्यापार और वित्त पर ६वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १४-१६ अक्टूबर २०१४ के दौरान विन्डहॉक, नामीबिसर में आयोजित हुआ।
८३.	प्रबंध शास्त्र संकाय	प्रो. पी.वी. राजीव	१. ''सेवा अनुसंधान एवं नवाचार पर चौथा ऑस्ट्रेलेशियाई संगोष्ठी'' २४-२५ नवम्बर २०१४ के दौरान कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ। २. ''२९वाँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अनुसंधान सम्मेलन'' २४-२५ नवम्बर २०१४ के दौरान सिडनी, आस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ। ३. ''शैक्षिक सहयोग पर चर्चा के लिए बैठक'' २६ नवम्बर, २०१४ पर दक्षिणी क्रॉस विश्वविद्यालय गोल्ड कोस्ट, ऑस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ।
८४.	प्रबंध शास्त्र संकाय	डॉ. आशुतोष मोहन	१. ''सेवा अनुसंधान एवं नवाचार पर चौथा ऑस्ट्रेलेशियाई संगोष्ठी'' २४-२५ नवम्बर २०१४ के दौरान कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ। २. ''२९वाँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अनुसंधान सम्मेलन'' २४-२५ नवम्बर २०१४ के दौरान सिडनी, आस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ। ३. ''शैक्षिक सहयोग पर चर्चा के लिए बैठक'' २६ नवम्बर, २०१४ पर दक्षिणी क्रॉस विश्वविद्यालय गोल्ड कोस्ट, ऑस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ।

परिशिष्ट - ६

सीधी नियुक्ति और पदोन्नति
(१ अप्रैल, २०१४ से ३१ मार्च, २०१५)

शिक्षण कर्मचारी की नियुक्ति

पद का नाम	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	अल्पसंख्यक	योग
आचार्य	-	-	-	-	-	-
संयुक्त आचार्य	-	-	-	-	-	-
सहायक आचार्य	-	-	-	-	-	-

गैर-शिक्षण कर्मचारी की नियुक्ति

पद का नाम	निर्मित नियुक्ति
ग्रुप 'ए'	००
ग्रुप 'बी'	००
ग्रुप 'सी'	२७५
ग्रुप 'डी'	८०
योग	**३५५**